॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्योतिष ज्ञान प्रचारार्थ आर्य संस्कृति पोषके
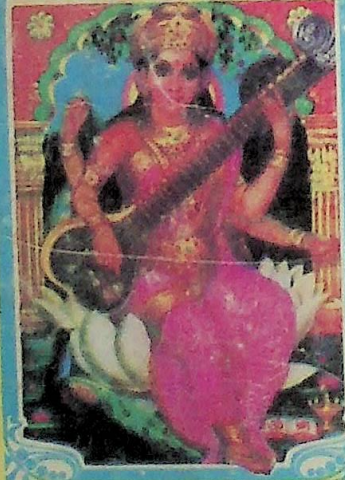
ॐ श्री सरस्वत्यैमया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे।।

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट पंचांगम् विद्वद् वृन्द समर्पिते

भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट - पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५८ शकः- १९२३ सन्-२००१-२००२ भारतीय गणराज्य संवत् ५२-५३

प्रधान सम्पादक : पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
सम्पादकः धर्मपाल अग्रवाल, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

धर्मसन प्रकाशन नई सड़क दिल्ली-११०००६

मूल्यः 27.95 रु.

वर्ष १६

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५८ शकः- १९२३ सन्-२००१-२००२ भारतीय गणराज्य संवत् ५२-५३

प्रधान सम्पादक :
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली-२८

सम्पादकः
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, २/४५-ए, वैस्ट
ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

प्रकाशक : **धर्मसन प्रकाशन**
नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 3285234, 3264986

विषय सूची

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त' सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रातः ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग),
अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

❖ **बालकृष्ण इन्दोरिया, चुरु, राजस्थान से-** 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' परिपूर्ण व विस्तृत पंचांग है। अतः सर्वोत्कृष्ट है। आप निरन्तर प्रगति कर सफल हों ऐसी कामना है।

❖ **प्रो. आचार्य चन्द्रहास शर्मा, शिक्षा शास्त्र विभागाध्य एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय प्रमुख, जीवन पार्क, पंखा रोड, नई दिल्ली से-** यह पंचांग साधारण व्यक्ति से लेकर विद्वत्समुदाय तक सभी के लिए उपादेय है। औषधि प्रयोग, तंत्र-मंत्र तथा फलादेश आदि व्यवहारिक जनजीवनोपयोगी प्रकरणों का सन्निवेश सोने में सुहागे का काम करता है।

❖ **ब्रह्म ऋषि कश्मीरी लाल शास्त्री, संकीर्तनाचार्य, ज्योतिष रत्न, बस्ती गुंजा, जालन्धर से-** माँ वीणा पाणी की कृपा से श्री आर्यभट्ट पंचांग की ज्योतिष जगत में ज्योतिर्विदों ने प्रशंसा की है। भारत के हर प्रान्त में यह प्राप्त है।

❖ **डॉ. कुंज बिहारी तिवारी ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष भूषण, मानस रत्न, ज्यो. तीर्थ पर्यावरण मनीषि, महाराजपुर (म.प्र.) से-** यह पंचांग अपने आप में परिपूर्ण है, साथ ही सुगंधित पुष्पों की एक माला है, जिसमें भांति-भांति की गुंथे हुए सुगंधित पुष्प अनूठे हैं, जो अपनी सुगंध से इस देश को ही नहीं विश्व को सुगंधित करेंगे।

❖ **बी.पी. उपाध्याय, टीचर्स कॉलोनी, उदयपुर, राजस्थान से-** आपके द्वारा प्रकाशित 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' अत्यन्त ही उपयोगी पंचांग है। इसकी जितनी भी प्रशंसा करेंगे कम ही होगी। इतनी मूल्यवान सामग्री देकर तथा कम मूल्य लेकर आप ज्योतिषी की महान सेवा कर रहे हैं।

❖ **डॉ. सत्येन्द्र सर्राफ, लक्ष्मीपुरा, सागर (म.प्र.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में संकलित सामग्री। तालिकाएं ज्योतिष कर्मियों के लिए निरन्तर उपयोगी है। सर्वजनोपयोगी सामग्री जैसे व्रत-पर्व-त्यौहारादि का संकलन इसे सामान्य पाठक, गृहस्थ को भी उपयोगी बना देता है, जहाँ मासिक राशि-फलादेश उनके आकर्षण का विषय बनता है।

❖ **प्रो. जवाहर मुथा, सम्पादक एवं अध्यक्ष ज्योतिष पत्रिका, नवीं पेठ, अहमद नगर से-** यह कहने में भी सानंद हर्ष होता है कि आर्यभट्ट पंचांग सर्वांग सुन्दर और पूर्णरूपेण है। भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद होना चाहिए, ऐसा हम समझते हैं। यह पंचांग गणित में अत्यंत शुद्ध होने के कारण विश्वसनीय एवं लोकोपयोगी है।

❖ **सुरेश चन्द्र तिवारी, भीमगोडा-हरिद्वार (उ.प्र.) से-** पंचांग में अत्यधिक सामग्री एवं जानकारी होने से लगभग सब प्रकार की शंकाओं का समाधान आपके प्रकाश व मंडल एवं विद्वानों द्वारा किया गया जिससे मन प्रसन्न हो उठा।

❖ **श्री जितेन्द्र जोशी, ज्योतिष, दहिसर (पश्चिम.) मुंबई से-** पंचांग बहुत उपयोगी रहेगा, सर्व चीजें इसमें उपलब्ध हैं।

❖ **S.Mathu Ratnam From BEML Layout, Bangalore-** We are very much impressed by your Panchang which also includ monthly forecasts for different Rashi.

❖ **पं. श्यामनन्दन मिश्र, ज्योतिष सा. आचार्य), अजमेर विश्वविद्यालय से-** आपने आधुनिक प्रकार में पंचांग विषयों का समावेश करते हुए जनता जनार्दन को शास्त्रोचित दिशा निर्देश देने का प्रयास किया है। एतदर्थ मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

❖ **अचलेश्वर त्रिपाठी, साहित्य शास्त्री, ब्यावर (राज.) से-** पंचांग में आपने अनेक ज्योतिष के लिए ज्ञानवर्द्धन तथा सरलीकरण का प्रयास किया है। ज्योतिष अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त करते हुए सफल व कारगर जीवन में हो सकते हैं।

❖ **प्रो. आर. सी. दिवाकर (एम.ए.बी. एस. सी) गणित, ज्योतिष, हस्त रेखा विशेषज्ञ तथा तान्त्रिक, ब्यावर राज. से-** आपका पंचांग पढ़ने के बाद मुझे अब अन्य पंचांगों की आवश्यकता मालूम नहीं पड़ती है।

❖ **चिन्तामणि रा. केलकर, बासगांव, गोवा से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही उपयुक्त है, इसमें कोई शंका नहीं।

❖ **रोशन लाल दुकानदार, शिमला से-** पंचांग बहुत ही उपयोगी है। क्योंकि इसकी भाषा शैली आधुनिक तथा सरल है।

❖ **पं. नन्दकुमार जमुनाधर त्रिपाठी, ज्योतिष साहित्य आयुर्वेद विशारद, संस्कृत प्रथमा, संगीत, सत्यनारायण कथा वाचक, जलगाँव, महाराष्ट्र से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग आदि से अंत तक देखा तो पाया कि पंचांग परिपूर्ण है। सू.उ. सारणी, अंक विचार, लग्न विचार, सू.उ. परिवर्तन पद्धति, यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना, रत्नों का प्रभाव, उपयोगी विषयों का समालोचन कर समावेश किया है।

❖ **पं. शान्ता प्रसाद पाराशर, एम.ए. साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति, ग्वालियर, म.प्र. से-** पंचांग का गणित एवं विस्तृत कलेवर निश्चय ही श्रेष्ठ एवं सराहनीय है।

❖ **परमानन्द शास्त्री, राजस्थान संस्कृत विद्यालय, तारानगर चुरू से-** आप लोगों ने आर्यभट्ट की विस्मृति को फिर स्मरण करा कर अनुकरणीय कार्य किया है तथा कुछ अहंकारू पंचांगकारों की मूर्खता को भी उजागर किया है।

❖ **पं. प्रेमसुख ओझा, शास्त्री, एम.ए. संस्कृत, बी.एड., तारानगर, चुरु, राजस्थान से-** पंचांग की सामग्री बहुत ही उपयुक्त एवं लाभदायक है। आपका प्रयास सराहनीय है। गागर में सागर भरने का प्रयास है।

❖ **सुजानमल जैन ज्योतिष, अर्थ टू स्टार ज्योतिष एवं शिक्षा केन्द्र, बियाबानी, इन्दौर (म.प्र.) से-** पंचांग अवलोकन के बाद हमें कोई त्रुटी नहीं लगी तथा साथ ही-टू-इन-वन तथा कीमत भी दूसरे पंचांगों के मुकाबले कम है।

❖ **मधुकर गोविंद हुपरीकर-ज्योतिर्विद्या भूषण, कोल्हापुर से-** पंचांग का अभ्यास किया, इसमें जो जानकारी है बहुत ही उपयुक्त है। इसका गणित विभाग अत्यंत शुद्ध है। जानकारी उपयोगी तथा सरल है।

❖ **मधुकर मुकंदराव हिरे-इंजीनियर, ज्यों. विशारद, बांदे पूर्व मुंबई से-** आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही शास्त्र शुद्ध जानकारी देता है। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

❖ **अरुण सदाशिव जोशी-ज्यो.भास्कर, नासिक, महाराष्ट्र** से-ज्योतिष शास्त्र और पंचांग के साहित्य में आपके प्रयास सराहनीय हैं। अक्षांशादि सारणी का उपयोग तथा ज्योतिर्विदों को बहुत होगा। सर्वदृष्टि से आपका पंचांग बहुत अच्छा है। इस काम में आपको सफलता मिले, यही भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

❖ **एम.एम.श्रीवास्तव, भवेश ज्यो अनुसंधान केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)** से-पंचांग की छपाई और इसमें दी गई जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है।

❖ **डॉ. बी. शामसखा-डायरेक्टर, मोतीबाग, नई दिल्ली** से-अपने दैनिक कार्यों में उपयोग के लिए मुझे ऐसे ही संक्षिप्त पंचांग की खोज थी। इस उपयोगी सुन्दर, संक्षिप्त और जानकारी पूर्ण पंचांग के प्रकाशन के लिए बधाई।

❖ **वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, प्रधान सम्पादक (अवैतनिक) वेदांग ज्योति एवं श्री सालासर पंचांग मेड़ता सिटी नागौर** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग गागर में सागर युक्त अतुलित ज्योतिषी सामग्री की जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम पंचांग दृष्टिगोचर हुआ। इसकी प्रशंसा एवं उपादेयता स्वत: उजागर होती है।

❖ **संतोष राम (हस्त रेखा विशेषज्ञ) मॉडल टाउन, दिल्ली** से-आपका पंचांग भारतीय ज्योतिष विद्या की प्राचीन परंपरा को बनाए रखने का सराहनीय प्रयास है। पंचांग के प्रकाशन हेतु कोटि-कोटि सधन्यवाद।

❖ **रामजीलाल शर्मा, रतलाम (म.प्र.)** से-आपके द्वारा निर्मित पंचांग देखा व काम में लिया आपका प्रयास व साहित्य सराहनीय है।

❖ **पं. गिरि मोहन गुरु-गोस्वामी सेवाश्रम-होशंगाबाद (म.प्र.)** से-पंडितों के हितार्थ अनेक अन्य सामग्री देकर गागर में सागर वाली उक्ति चरितार्थ कर दी है।

❖ **निशिकान्त जोशी (ज्यो. शास्त्री), ठाणा (महाराष्ट्र)** से-आपका पंचांग आम जनता तथा ज्योतिष के लिए कुंडली बनाने के लिए भी उपयुक्त है। पंचांग चन्द्र-सूर्य की तरह पृथ्वी पर चमकता रहे यही हमारी शुभ कामना है।

❖ **डॉ. राजकुमार रत्नप्रिय, सम्पा.-कॉस्मो इण्डिया-कानपुर** से-अधिकाधिक विषयों का श्रेष्ट समायोजन निश्चय ही पंचांग को सर्वोपयोगी और लोकप्रिय बनाता व इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरी शुभ कमनाएं।

❖ **किशन लाल उपाध्याय शास्त्री, मन्थन ज्यो. कार्यालय, चुरू (राज.)** से-यह पंचांग वर्ष की अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति होती है। विस्तृत क्रमबद्ध होड़ाचक्र इसी पंचांग की अतुलनीय विशिष्ट विशेषताएं है।

❖ **डॉ.भालचन्द्र शंकर शास्त्री (ज्योतिषाचार्य, ज्यो. अलंकार, ज्यो. तीर्थ, राज ज्यो. म.प्र. शासन, लश्कर ग्वालियर** से-पंचांग ज्योतिष के लिए परमोपयोगी है। छपाई अति सुन्दर, स्वच्छ एवं स्पष्ट होने से बाल-वृद्ध मानवों को पठनीय है। मुख्य-मुख्य सभी विषय इस पंचांग में आपने भर दिए हैं। जैसे गागर में सागर।

❖ **पं. चन्द्रिका प्रसाद वाजपेयी-भोपाल, मध्य प्रदेश** से-आर्यभट्ट पंचाग के अतिरिक्त ग्रहों की स्थिति, मुहूर्त्त की शुद्धता, ज्यो. संबंधी विविध जानकारी का संग्रह यहाँ उपलब्ध अन्य पंचांगों में नहीं मिलता है।

❖ **प्रकाश नाथ चौहान (तंत्र ज्योतिषाचार्य साहित्य कला सरस्वती प्राच्य विद्या महामहोपाध्याय तांत्रिक मार्तण्ड आदि उपाधि से विभूषित तथा रजत एवं स्वर्ण पदक से सम्मानित, ब्यावर (अजमेर) राज.** से-'श्री आर्यभट्ट पंचांग' में ज्योतिष विषयक भव्य सामग्री देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। पंचांग का आलोक विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो यह मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

❖ **पं. शिवचरण लाल शर्मा, ज्यो. कुम्भराजज-गुना (म.प्र.)** से-यह पंचांग निर्माणात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिपादन करते हुए भारत की समस्याओं का समाधान व उत्थान का काम करेगा। आपके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएँ।

❖ **लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता (तांत्रिक एवं पत्रकार, बी.ए. विद्यारत्न, ज्यो. तन्त्र मार्तण्ड, बी.ए. एम.एस. (कल), आयुर्वेद रत्न (प्रयाग), फार्मासिस्ट एवं परामर्शदाता चिकित्सक), पीलीभीत (उ. प्र.)** से-पंचांग कुछ नवीनताएं लिए हुए हैं जो अन्यों में नहीं मिलती जैसे ग्रहों का भावानुसार, गोचर फल, वर्ष फल, जन्म कुण्डली फल (पु. स्त्री का इसके अतिरिक्त इसकी पाठ्य सामग्री व सारणियां भी कम उपयोगी नहीं है।

❖ **भालचन्द म. लेम्भ, एम.ए. (साहित्य विशारद (मराठी), रा.भा. रत्न, शनिवार पेढ, पुणे** से-दैनंदिनी घरेलू जीवन में जितनी बातों की आवश्यकता होती है उन सभी का इस पंचांग में अंतर्भाव किया है। ज्योतिष के लिए तो यह अत्यंत उपयुक्त है।

❖ **इन्दरमल चौधरी (ज्यो. भूषण, ज्यो. मनीषी, ज्यो. मार्तण्ड, ज्यो. दिवाकर, जो. श्री, दैवज्ञ श्री उपाधियां एवं रजत पदक प्राप्त), समया. एवं प्रकाशक, 'ज्यो.रत्न' पत्रिका, सादड़ी-राजसमन्द (राज.)** से-आर्यभट्ट पंचांग की गणित शुद्ध है, सारगर्भित विषय वस्तु ज्योतिष प्रेमियों के लिए सुबोध है। पंचांग का प्रारूप तैयार करने में आपका श्रम सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका पंचांग देश में प्रथम स्तर का पंचांग साबित होकर ज्योतिष जगत में अक्षम ख्याति प्राप्त करेगा।

❖ **कपिल देव मिश्र (साहित्य रत्न, भा. रत्न, फेस रीडर, ज्योतिर्विद, मंत्र-तंत्र-यज्ञ विशेषज्ञ), कुलावा, मुंबई** से-भारत के कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषियों के लिए यह पंचांग सहायक ही नहीं पूर्णरूप से मार्गदर्शन करने वाला है। इसका एक-एक पृष्ठ ज्यो. जगत के लिए वरदान सावित होगा।

❖ **महर्षि पं. मदन मोहन एस. जोशी (स्वर्ण पदक से विभूषित, ज्योतिषाचार्य, रमलाचार्य)** -श्री आर्यभट्ट पंचांग में सूक्ष्म गणित वास्तव में ज्योतिषियों के गणित भाव हेतु पूर्ण लाभप्रद साबित हो रहा है। ❑

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णो को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचाग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों की भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्जन इसके मुद्रण औ साज सज्जा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्जन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

विक्रम संवत् २०५८ (दिनांक २६ मार्च से १२ अप्रैल २००२ ई. तक)

❒ इस वर्ष के राजा, मंत्री, दुर्गेशादि के साथ मंगल, शनि व गुरु-शुक्र के सम्यक विचार में इनके योग प्रतियोग तथा वर्ष लग्न, जगल्लग्न का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि सम्ववत् २०५८ वि. औद्योगिक व वैज्ञानिक दृष्टि से प्रगति कारक किन्तु अशुभ योग प्रतियोगों में भूकम्प, महामारी, बम विस्फोट, रेल-यान दुर्घटना, भूस्खलन से जन-धन की हानि होगी।

❒ मंहगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार में वृद्धि, विश्व के अनेक देशों में आर्थिक मंदी से संकट का दौर बढ़ेगा। योजना व्यय में कटौती करने पर सरकार को विवश होना पड़ेगा।

❒ भारत के प्रधानमंत्री के लिए अगस्त से दिसम्बर तक पांच माह का समय विशेष संकटप्रद। शारीरिक व सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान देना आवश्यक होगा।

❒ वर्ष मध्य में विश्व में कहीं सत्ता परिवर्तन, प्रधान शासक का असामयिक निधन से जनता स्तब्ध रहेगी।

❒ संसद व राज्यों की विधान सभाओं में प्रजा के उत्थान के लिए नवीन प्रस्ताव पारित होंगे, किन्तु भ्रष्टाचार बढ़ने से आम जनता को लाभ कम मिलेगा। कुछ विधान सभाओं में अशोभनीय दृश्य भी उपस्थित होंगे।

❒ अरब राष्ट्र, ईरान, रोम, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इजरायल, श्रीलंका, ब्रह्मा, इटली के प्रधान शासकों के लिए वर्ष राजनैतिक उथल-पुथल कारक, कहीं गृह-युद्ध, भूकम्प, महामारी तथा विध्वंसक गतिविधियों से जनधन की हानि होगी।

❒ पेट्रोलियम पदार्थों में मूल्य वृद्धि होने से मंहगाई के साथ रेल व बस यात्रा करना आम जनता के लिये दूभर होगा।

❒ भारत औद्योगिक विकास की ओर निरन्तर अग्रसर होता रहेगा। भूगर्भ वेत्ताओं को भू-गर्भीय सम्पत्ति की खोज में सफलता मिलेगी।

विगत डेढ़ दशक से "**श्री आर्यभट्ट पंचांग**" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गईं उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा हैं। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैवविद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैवविद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है अत: समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा।

ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह महिराचार्य कृत "बाराही संहिता" के आधार पर "दैवज्ञ" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

नवीन विक्रम संवत् २०५८ का फल जानने के लिए ग्रहों की सूक्ष्म स्थिति का विवेचन एवं पर्यवेक्षण होना आवश्यक होता है। अत: हम यहां प्रमुख ग्रहों की वर्षारंभ तथा वर्ष की अन्त की स्थिति का उल्लेख कर रहे हैं। जो चित्रापक्षीय निरयन मान से इस प्रकार रहेगी।

वर्ष प्रारंभ २६ मार्च २००१ ई. प्रात: ५.३० बजे, वर्षान्त दिनांक १२ अप्रैल २००२ ई. प्रात: ५.३० बजे

राशि	अंश	कला	विकला	वक्री/मार्गी	प्रमुख ग्रह	राशि	अंश	कला	विकला	वक्री/मार्गी
वृश्चिक	२४	३१	०४	मार्गी	← मंगल →	वृष	४	५५	५०	मार्गी
वृष	१२	४३	३२	मार्गी	← गुरु →	मिथुन	१४	२२	१९	मार्गी
वृष	३	१९	०३	मार्गी	← शनि →	वृष	१७	३३	४५	मार्गी
मिथुन	१७	२२	१५	वक्री	← राहु →	वृष	२७	७	४१	वक्री
धनु	१७	२२	१५	वक्री	← केतु →	वृश्चिक	२७	७	४१	वक्री
मकर	२९	२१	१६	मार्गी	← हर्शल →	कुंभ	३	५३	०९	मार्गी
मकर	१४	२०	२८	मार्गी	← नेपच्यून →	मकर	१६	४९	४०	मार्गी
वृश्चिक	२१	२३	२९	वक्री	← प्लूटो →	वृश्चिक	२३	३६	३०	वक्री

मंगल—वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि में, १० अप्रैल से धनु राशि में, १२ मई से धनु राशि में वक्री होकर १० जून से वृश्चिक राशि में, २० जुलाई को मार्गी, २६ अगस्त को रात से धनु राशि में, १८ अक्टूबर रात से मकर राशि में, ३० नवम्बर से कुंभ राशि में, सन् २००२ ई. में १० जनवरी से मीन राशि में, २१ फरवरी से मेष राशि में, ४ अप्रैल रात से वृष राशि में प्रवेश कर वर्षान्त तक इसी राशि में विचरण करेंगे। मंगल वर्ष पर्यन्त उदय ही रहेगा। वर्षारम्भ में १२ मई से २० जुलाई तक वक्री रहेगा।

गुरु—वर्ष प्रारम्भ से १५ जून तक वृष राशि में तथा १६ जून से वर्ष समाप्ति तक मिथुन राशि में गुरु विचरण करेगा। जिसमें २ नवम्बर २००१ से २८ फरवरी २००२ ई. तक वक्री तथा ४ से २७ जून २००१ तक अस्त रहेगा।

शनि—वर्षारम्भ से अन्त तक वृष राशि में विचरण करेंगे। जिसमें २७ सितम्बर २००१ ई. से ७ फरवरी २००२ ई. तक वक्री रहेंगे तथा वर्षारम्भ में ७ मई सायं से १२ जून तक अस्त रहेगा।

हर्षल—वर्ष प्रारम्भ में मकर राशि में, १० अप्रैल से कुंभ राशि में प्रवेश कर ३० मई को रात में वक्री होगा। २० जुलाई को वक्र चाल से पुन: मकर राशि में प्रवेश करेगा। ३१ अक्टूबर से मार्गी होकर सन् २००२ ई. के जनवरी मास की २८ तारीख को कुंभ राशि में प्रवेश कर वर्षान्त तक इसी राशि में रहेगा।

नेपच्यून—वर्ष पर्यन्त मकर राशि में रहेगा। नेपच्यून वर्ष प्रारम्भ में ११ मई से १८ अक्टूबर तक वक्री रहेगा।

प्लूटो—वर्ष प्रारम्भ से अन्त तक वृश्चिक राशि में प्लूटो विचरण करता रहेगा। जिसमें वर्षारम्भ से २३ अगस्त तक वक्री रहेगा। इसी रात मार्गी होकर वर्षान्त में २० मार्च २००२ से पुन: वक्री होगा।

राहु-केतु—वर्ष प्रारम्भ से १६ फरवरी २००२ ई. तक राहु मिथुन राशि में तत्पश्चात् वर्षान्त तक वृष राशि में राहु विचरण करेगा। केतु वर्ष प्रारम्भ से १६ फरवरी तक धनु राशि में तथा इसी रात्रि को वृश्चिक राशि में प्रवेश कर वर्ष समाप्ति तक इसी राशि में विचरण करेगा।

वर्ष के अनिष्ट योग

वर्षारम्भ में १० अप्रैल तक मंगल-शनि का सम सप्तम योग, १२ मई से मंगल धनु राशि में वक्री तथा शुभ ग्रह गुरु अतिचारी होने की ओर अग्रसर, आषाढ़ी पूर्णिमा को खण्डग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण, श्रावण कृष्ण में मिथुन राशि में चतुर्ग्रही योग, ५ व ६ अगस्त को गुरु-शुक्र का अंश शाम्य योग, आश्विन अधिक मास, मार्गशीर्ष मास में धनु संक्रांति व राक्षस गण के नक्षत्र में शुक्र अस्त होना, अंग्रेजी नव वर्ष के प्रारम्भ में राहु केतु के अन्तर्गत सभी ग्रह आने से ५० दिन तक कालसर्प योग।

नवीन वर्ष के शुभाशुभ फल

संवत् २०५८ विक्रमी में ग्रहों की आकाशी कौंसिल में आठ अधिकार सौम्य ग्रहों को तथा शेष दो अधिकार क्रूर ग्रहों को मिले हैं। तेजस्वी सूर्य देव को इस वर्ष केवल एक अधिकार धनेश का प्राप्त हुआ है, जबकि चन्द्रमा को तीन अधिकार राजा, सस्येश एवं नीरसेश के प्राप्त हुए हैं। मंगल को इस वर्ष भी कोई अधिकार नहीं मिला है। बुध को रसेश का तथा गुरु को मेघेश, फलेश एवं दुर्गेश के तीन अधिकार मिले हैं। जबकि शुक्र को मंत्री पद तथा शनि को धान्येश का पद मिला है। इस प्रकार सौम्य ग्रहों को आधे से अधिक अधिकार मिलने से श्रेष्ठ फलों का संचार होगा। शांति वार्ताओं से नये आयामों की शुरुआत होगी। नवीन अनुसंधानों में आशातीत सफलता मिलने से सामरिक साधनों में बढ़ोत्तरी होगी। किन्तु अशुभ योग-प्रतियोग के कारण विश्व के कुछ भागों में युद्धादि भय, प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, रेलयान दुर्घटना, महामारी से प्रजा को कष्ट व हानि होगी। कुछ देशों की आर्थिक स्थिति कमजोर व मंहगाई-बेरोजगारी समस्या उग्र होती दिखाई देगी।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

१ | २ गु. श. | ३ रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ प्लू. मं. | ९ के. | १० ह. ने. | ११ बु. | १२ शु. सू. चं.

विक्रम संवत् २०५८ का प्रारम्भ संवत् २०५७ वि. के अन्तिम दिन चैत्र कृष्ण अमावस्या रविवार दिनांक २५ मार्च २००१ ई. को प्रात: ६ बजकर ५० मिनट इष्ट घट्यादि १।०२ पर मीन लग्न में हो रहा है। जिसकी तत्कालीन कुण्डली सामने दी जा रही है। नवीन वर्ष के लग्न का स्वामी गुरु तृतीय भाव में दशमेश का भी स्वामी बनकर शनि के साथ बैठा है। जिस पर मंगल-प्लूटो की पूर्ण दृष्टि आ रही है। वर्ष का राजा चन्द्रमा भी सूर्य के साथ बैठकर क्षीण बना हुआ है। अत: विश्व के अनेक भागों में युद्धादि उन्माद, प्रकृति-प्रकोप, महामारी, लूटपाट व उपद्रवों से जनता पीड़ित होगी। चतुर्थ घर में राहु की स्थिति नेष्ट फलों में बढ़ोत्तरी करेगा। पाकिस्तान, ईरान, ईराक, चीन, जापान, श्रीलंका, अफगानिस्तान, अमेरिका,
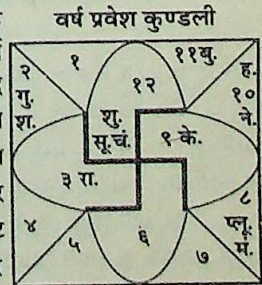
न्यूजीलैण्ड में राजनैतिक, उथल-पुथल के साथ कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, बम विस्फोट से जनधन की हानि होगी। लग्न में उच्च राशिस्थ शुक्र जो इस वर्ष मंत्री का पद लिये हुए है, स्थित है अतः नवीन अन्वेषण व अनुसंधान में वैज्ञानिक लोगों को अधिक सफलता प्रदान करेगा। भारत विश्व के महान देशों में आने के प्रयास में आगे बढ़ता दिखाई देगा किन्तु मंहगाई व बेरोजगारी की समस्या यहां की मूल समस्या बनेगी। काश्मीर समस्या का पूर्ण समाधान नहीं होने से भारत सरकार को सीमा सुरक्षा पर विशेष खर्चा कर कड़ी निगरानी की आवश्यकता महसूस होगी।

नवीन वर्ष का राजा चन्द्रमा व मंत्री शुक्र बना है। जिससे अनेक देशों की विकास दर में बढ़ोत्तरी होने से जनता का जीवन स्तर ऊंचा होगा। किन्तु वर्ष में "**जय**" नाम का सम्वत्सर होने से शासकों के सामने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी जिससे वे एक दूसरे देश को नीचा दिखाने की होड़ में आणुविक शस्त्रों का निर्माण व प्रदर्शन करेंगे। कहीं युद्धादि भय से प्रजा को कष्ट भी होगा। चैत्र मास के एक पक्ष में ही शुक्र का अस्त होकर उदय होना भी अच्छा नहीं है जिससे विश्व के अनेक देशों में अशान्ति व प्रकृति-प्रकोप का बोलबाला रहेगा। एशिया के पश्चिमी देश पाकिस्तान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान के अलावा चीन, जापान, आस्ट्रिया व रूस में आन्तरिक विद्रोह, हत्याकांड, भूकम्प से जन-धन की हानि संभव है। वैशाख मास में पांच सोमवार व सोमवती अमावस्या भारत के लिए श्रेष्ठ फलों में वृद्धिकारक है। शासकों द्वारा आम जनता के हित में नवीन विकाशोन्मुखी कार्यक्रम की घोषणा की जायेगी। मांगलिक उत्सवों व वैज्ञानिक अनुसंधान में सफलता मिलने से प्रजा में उत्साह का वातावरण बनेगा। शांति व्यवस्था के लिए विशेष चर्चाओं का आयोजन किया जायेगा।

ज्येष्ठ मास में १२ मई को धनु राशिगत मंगल वक्री होने से तथा सौम्य ग्रह बृहस्पति अतिचारी गति की तरफ अग्रसर होने से आगामी दो मास विश्व के अनेक देशों में विशेष घटनाचक्र वाले बनते दिखाई देंगे। विश्व में भ्रष्टाचार, अनैतिकता, हिंसाकांड के अलावा राजनैतिक उथल-पुथल भी संभव है। कहीं सत्ता अपहरण, असामयिक मृत्यु, विमान दुर्घटना, दुर्भिक्ष से राज प्रजा को कष्ट होगा। आस्ट्रेलिया, अरब राष्ट्र, चीन, पाकिस्तान, ईरान, ईराक, तुर्की, बगदाद के साथ-साथ भारत में भी कहीं अग्निकाण्ड, बम विस्फोट,यान दुर्घटना, भूकम्प से जन-धन की हानि होगी। ता. १० जून को वक्री मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश कर गुरु-शनि से प्रतियोग बनायेगा। प्राचीन आचार्यों ने मंगल-गुरु व शनि के प्रतियोग का फल इस प्रकार लिखा है—

"यदारशौरी सुरराज मन्त्री यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्यलंकापुर मध्य देशे क्षुधा भयं शस्त्रभयं करोति॥"

आषाढ़ मास में गुरु का उदय तथा पूर्णिमासी को खण्डग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होना अच्छा नहीं है। अनेक देशों के प्रधान शासकों के सामने विपरीत परिस्थितियों की अधिकता रहेगी। कुछ शक्तिशाली राष्ट्र अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए छोटे राष्ट्रों पर अपना दबाव बनायेंगे। आयात-निर्यात का संतुलन बिगड़ने के साथ आर्थिक संकट में बढ़ोत्तरी होगी। अफगानिस्तान, फिलीपाइन्स, ईरान, ईराक, अमेरिका, रूस के साथ-साथ भारत में भी राजनैतिक सत्तालिप्सा, राजनैतिक दलों में परस्पर संघर्ष के कारण राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बनेगा। प्रजा कहीं दुर्भिक्ष भय से तो कहीं भूकम्प, रोग पीड़ा से पीड़ित रहेगी। यहां विश्व के किसी देश को प्रमुख नेता को सत्ताच्युत या असामयिक मृत्यु होने से राजनैतिक संकट का सामना करना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं। प्राचीन ग्रन्थों में ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण का फल इस प्रकार लिखा है—

**"ग्रस्तौदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्य भूपाल नाशकौ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्ष मरण प्रदौ॥"**

श्रावण मास में भी मिथुन राशि में चार ग्रहों का योग तथा बुध-गुरु की गति अतिचारी बनने से शुभ फलों की आशा नहीं की जा सकती। दिनांक ५ व ६ अगस्त को गुरु-शुक्र का मिथुन राशि में ही अंश-साम्य योग बनेगा। जिससे ताईवान, वियतनाम, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, फ्रांस, अफ्रीका, चीन आदि देशों में प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प व राजनैतिक उथल-पुथल से जनता पीड़ित रहेगी। भारत में भी यत्र-तत्र अशुभ फलों का वर्चस्व दिखाई देगा। आश्विन मास इस वर्ष अधिक मास बना है, यह भी नेष्ट फलों में वृद्धि कारक बनेगा। कार्तिक मास में पांच शुक्रवार तथा देव गुरु वृहस्पति के वक्री होने से अशुभ फलों पर रोक लगेगी। प्रजा में सुख शांति का वातावरण बनेगा। अनेक देशों में व्यापारिक समझौतों पर हस्ताक्षर होंगे। भारत अपनी साख विश्व में बढ़ाने में सफल होगा। पौष मास के शुक्ल पक्ष में मकर राशिगत सूर्य आने से इस राशि में पांच ग्रहों का योग बनेगा। जिससे पश्चिमी यूरोप, जर्मनी, इटली, इजरायल, ईरान, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, वर्मा में कहीं धार्मिक, साम्प्रदायिक दंगे तो कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, समुद्री तूफान से हानि होगी। वर्षान्त में मंगल-शनि राहु से वृष राशि में योग स्थापित करेगा। जिससे विश्व में अशांति का वातावरण बढ़ता दिखाई देगा। कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, अतिवृष्टि से कृषि में हानि होगी।

संवत् २०५८ विक्रमी में सूर्य भगवान सप्ताश्वजुत रथ पर वैशाख कृष्ण ६ शुक्रवार दिनांक १३ अप्रैल २००१ ई. को मध्य रात्रि ११ बजकर ४२ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। मेष राशि में प्रवेश के समय जगत् कुण्डली धनु लग्न की बनी है। जो नीचे दी जा रही है।

अयोध्यलंकापुर मध्य देशे क्षुधा भयं शस्त्रभयं करोति ॥''

जगत् लग्न का स्वामी गुरु शत्रु भाव में शनि के साथ बैठा है। लग्नस्थ मंगल-केतु व चन्द्रमा हैं। सप्तम भाव में राहु होने से सभी ग्रह राहु-केतु के अन्तर्गत आ गये हैं। अत: विश्व के अनेक भागों में अराजकता, प्रकृति-प्रकोप, बम-विस्फोट, भूकम्प, युद्धादि भय की अधिकता रहेगी। सत्ताधारी पार्टियों में आन्तरिक गतिरोध बढ़ेगा, जिससे कुछ देशों व राज्यों में सत्ता परिवर्तन होगा। वर्ष के राजा चन्द्रमा व मंत्री शुक्र की स्थिति सानुकूल होने से शासित पार्टियों द्वारा जन कल्याण की नवीन योजनाओं को अन्तिम रूप दिया जायेगा। भाग्येश सूर्य उच्च राशि का पंचम भाव में तथा चतुर्थ स्थान में उच्चस्थ शुक्र औद्योगिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में आशातीत सफलता प्रदान करेगा। शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रांति का दौर सामने आयेगा। अनेक देशों के मध्य नवीन व्यापारिक समझौते होंगे। किन्तु आणुविक प्रतिस्पर्धा बढ़ने से विश्व शांति के उपायों को खतरा उत्पन्न होता दिखाई देगा।

जगत् लग्न कुण्डली

भारतीय गणतन्त्र का ५२वाँ वर्ष

भारतीय गणतंत्र का ५२वाँ वर्ष संवत् २०५७ वि. में माघ शुक्ल २ शुक्रवार दिनांक २६ जनवरी २००१ को भारतीय स्टैं.टा. १२।०७ पर मेष लग्न के सत्रहवें अंश में प्रवेश होगा। ५२वें वर्ष प्रवेश की तत्कालीन ग्रह स्थिति की कुण्डली सामने दी गयी है। गणतंत्र वर्ष का लग्नेश मंगल सप्तमभाव में बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है साथ ही शनि-गुरु से षडाष्टक योग भी बना रहा है। अत: नवीन वर्ष में दलगत, जातिगत एवं धार्मिक समस्याओं का बोलबाला अधिक रहेगा।

कहीं भ्रष्टाचार व काले धन का भण्डाफोड़ होने से कुछ राजनैतिक लोगों की छवि धूमिल होगी। बेरोजगारी एवं मंहगाई की समस्या बढ़ती दिखाई देगी। वर्ष का राजा चन्द्रमा एवं मंत्री शुक्र लाभ घर में उत्तम है जिससे भारत अपनी ख्याति विश्व में बढ़ाने में सफल होगा। औद्योगिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी नवीन उपलब्धि हासिल होगी। किन्तु प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को अपने स्वास्थ्य व सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक प्रतीत होता है। पराक्रम स्थान मुंथा शासन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने में सहायक होगी किन्तु राहु के साथ होने से विपक्ष द्वारा कभी-कभी कड़ी चुनौती तथा सत्तारूढ़ पार्टी में आंशिक मनमुटाव सामने आयेगा। कहीं अपहरण, तोड़फोड़, बलात्कार, हिंसा की घटनाएं शासित पार्टी को परेशान करती रहेगी। अगस्त से दिसम्बर मास तक केन्द्र सरकार व अनेक प्रान्तीय सरकारों के सामने असमान्य परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। जिसमें सत्ता परिवर्तन, मंत्रिमंडल परिवर्तन, प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प से जनता पीड़ित होगी। प्रधानमंत्री को इस समयावधि में अपने स्वास्थ के प्रति और अधिक सचेत रहना होगा। जिससे भारत जैसे देश को उनके कुशल एवं स्वच्छ सरकार का लाभ अधिक प्राप्त हो सकेगा।
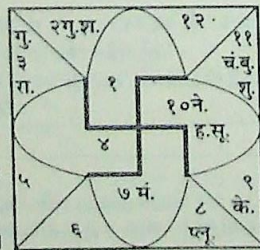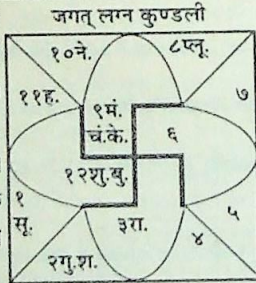
भारतीय वायु मंडल एवं वर्षादि योग

इस वर्ष के वायु मंडल एवं वर्षादि योग जानने के लिए भारतीय वायु शास्त्र के अनुसार प्रत्येक नगर व राज्य में प्रतिदिन की वायु, मेघ गर्जना, बादल वर्षा की परीक्षा द्वारा वृष्टि गर्भ लक्षण का उल्लेख मिलता है। जैसे आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा, अन्तरिक्ष लक्षण जहां-शुभ-शकुन का आभास करायेंगे वहां सुभिक्ष व सुवृष्टि का संचार होगा। इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा (४ जुलाई बुधवार) को पूर्व, उत्तर, पश्चिम व ईशान कोण की हवा चले तो सुभिक्ष माना गया है। जबकि शेष कोण की हवा दुर्भिक्ष, उत्पात, रोग व भयकारक मानी गई है। विद्वान विज्ञों को वर्ष भर के गर्भ लक्षण नोट करने चाहिए। वर्ष पर्यन्त नहीं कर सके तो आषाढ़ी पूर्णिमा को सायंकाल सूर्यास्त के समय खुले स्थान में जाकर ध्वजा की विधिवत् पूजा करके वायु परीक्षा कर अपने नगर, देश व राज्य के लिए शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

वर्षादि योग के लिए सूर्य आर्द्रा प्रवेश से आगामी दश नक्षत्र वर्षा के द्योतक माने जाते हैं। नवीन वर्ष में आर्द्रा प्रवेश आषाढ़ कृष्ण ३० अमावस्या गुरुवार तदनुसार दि. २१ जून २००१ ई. को मध्यरात्रि बाद २।४२ बजे हुआ है। जिसकी तत्कालीन कुण्डली सामने दी जा रही है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली का लग्न मेष बना है। जिसका स्वामी मंगल अष्टम भाव में प्लूटो के साथ स्थित होने से प्रजा में रोग पीड़ा बढ़े व समयानुकूल वर्षा का अभाव रहेगा। जिससे मंहगाई व बेरोजगारी में वृद्धि होगी। जून मास में २२ से ५ जुलाई तक राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., म.प्र. में सामान्य किन्तु दक्षिणी-पूर्वी भारत के राज्यों में सामान्य से अच्छी वर्षा के योग हैं। इससे आगे १९ जुलाई तक दिल्ली, राजस्थान, उ.प्र., म.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र के साथ सम्पूर्ण भारत में मानसून पूर्ण सक्रिय रहेगा। कहीं-कहीं अच्छी वर्षा के योग भी हैं। अगस्त मास में गुरु-शुक्र का अंश साम्य योग अतिवृष्टि कारक बनने से उत्तरी-पूर्वी राज्यों में बाढ़ की स्थिति बनेगी। ३० अगस्त से वर्षा का मध्यम तो कहीं-कहीं साधारण दौर चालू होगा। १६ सितम्बर से सिंह का शुक्र वर्षा में अवरोधकारक बनेगा और वायु की अधिकता बढ़ायेगा। यथा—''**सिंह शुक्र जब होय भवानी। चाले पवन नहीं बरसे पानी॥**'' अक्टूबर मास में साधारण वर्षा के योग हैं। शीतकाल में बुध शुक्र का योग, शुक्र का उदयास्त कहीं-कहीं श्रेष्ठ वर्षा करेगा किन्तु कहीं-कहीं ओलावृष्टि, भूकम्प, रोग पीड़ा से अशांति कारक रहेगा। कुछ स्थानों पर शीत लहर चलने से कृषि में हानि होगी। आगे सर्वज्ञ ईश्वर है। यतोधर्म स्ततो जय:॥ इति शुभम् भूयात्॥

❋ विक्रम संवत् २०५८ शाके १९२३ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ता: ❋

समय शुद्धि:

शुक्र अस्त—इस वर्ष सम्वत् २०५८ वि. में चैत्र शुक्ल ३ बुधवार दिनांक २८ मार्च २००१ ई. से चैत्र शुक्ल ८ रविवार दिनांक १ अप्रैल २००१ तक तथा मार्गशीर्ष शुक्ल ६ शुक्रवार दिनांक २१ दिसंबर २००१ ई. से माघ कृष्ण ११ गुरुवार दिनांक ७ फरवरी २००२ ई. तक शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु अस्त—इस वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल १३ सोमवार दिनांक ४ जून २००१ ई. से आषाढ़ शुक्ल ८ गुरुवार दिनांक २८ जून २००१ ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

आश्विन अधिक मास—इस वर्ष प्र. आश्विन शुक्ल १ मंगलवार दिनांक १८ सितम्बर से द्वि. आश्विन कृष्ण ३० अमा. मंगलवार दिनांक १६ अक्टूबर २००१ ई. तक आश्विन अधिक मास रहेगा। जो शुभ कार्यों के लिए वर्जित माना गया है।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्वकाल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए तदनुसार ही मुहूर्त्तादि लिखे गये हैं।

नोट:-नीचे लिखे विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं वे विवाह मुहूर्त भी लिखे गये हैं। यहां क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त

वैशाख कृष्ण पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
७ रवौ	१५ अप्रैल	उ.षा.	रे ६ऽमं. ॥॥ऽअ.ऽऽ॥ लग्न कुंभ, मीन २६।५९ से २९।५२ तक, मीन लग्ने राहु ४ मंगल १० पूज्य:
८ चन्द्रे	१६ "	"	रे. ६ऽमं. ॥॥ऽअ.ऽऽ॥ दिवा लग्न कर्क ११।३६ से १२।१९ तक, चन्द्र ७ पूज्य:
८ चन्द्रे	१६ "	श्रवण	रे. ६ऽशु.ऽ॥॥ऽऽ॥ लग्न अन्यगो., शुक्र ६ दोष:, रात्रौ २६।५५ से २९।४८ तक, कुंभ व मीन लग्ने मंगल १०, राहु ४ पूज्य:, गोधूलि रेखा ५ दोष:
९ भौमे	१७ "	"	रे. ६ऽशु.ऽ॥॥ऽऽ॥ दिवा लग्न ११।३२ से १३।५० तक कर्क, चन्द्र ७ पूज्य:
९ भौमे	१७ "	धनि.	रे. ९।।।।।॥ऽ॥ लग्न अन्य गो. शुक्र ६ दोष

वैशाख शुक्ल पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२ बुधे	२५ अप्रैल	रोहि.	रे. ८॥ऽगु.॥ऽम.॥॥ लग्न कुंभ, मीन २७।३३ से २९।११ तक, मीन लग्ने मं. १० राहु ४ पूज्य:
३ गुरौ	२६ "	"	रे.९॥ऽगु।।।।।। दिवा लग्न कर्क १०।५० से, रात्रौ २४।३१ से २५।४८ तक मकर, शुक्र ३ पूज्य:
३ गुरौ	२६ "	मृग.	रे. ८।।।।।ऽऽ।। लग्न कुंभ २७।०० से २७।५० तक
४ शुक्रे	२७ "	"	रे. ९ ।।।।। ऽनृ. ।।।। लग्न अन्यगो. शुक्र ६ दोष:
८ भौमे	१ मई	मघा	रे. ६ऽश. ।।।ऽरो.ऽ।ऽ। लग्न कुंभ २५।५३ से, गणितेन क्रांतिसाम्यऽभाव:
९ बुधे	२ "	"	रे. ७ ऽश. ।।।।ऽ।ऽ। दिवा लग्न १०।३० से १२।५० तक कर्क, सायं गोधूलि नक्षत्रांत दोष अति आवश्यके, क्षय तिथि दोष:
१२ शुक्रे	४ "	उ.फा.	रे. ८ ।।।।ऽअ.ऽ।।। दिवा लग्न कर्क १२।२७ से,
१२ शुक्रे	४ "	हस्त	रे. ५ ऽसू.ऽ।ऽशु.ऽऽअ. ।।।। लग्न अन्यगो. रात्रौ मीन २८।१२ से २८।३५ तक पादवेधात् शुक्रवेधाऽभाव:, रेखा ५ अल्पदोष: आवश्यके
१३ शनौ	५ "	"	रे.५ऽसू.ऽ।ऽशु.ऽऽ अ. ।।।। दिवा लग्न १०।१८ से १२।३७ तक कर्क, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभाव: रेखा ५ अल्पदोष आवश्यके।
१३ शनौ	५ "	चित्रा	रे. ८ ऽरा. ।।।।ऽ।।। लग्न अन्यगोधूलि, शुक्र ६ दोष, रात्रौ २३।५४ से मकर शुक्र ३ पूज्य:, कुम्भ लग्ने २६।५७ से २७।०७ तक
१४ रवौ	६ "	"	रे. ८ ऽरा. ।।।।ऽ।।। दिवा लग्न कर्क १०।२४ से १२।३३ तक

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
८ भौमे	१५ मई	धनि.	रे. ८ ऽशु. ।।।।।ऽ।। लग्न अन्य गोधूलि (रात्रौ स्टै. २१।२८ उप. मृत्युबाण)
१० शुक्रे	१८ "	उ.भा.	रे. ७ ऽशु. ।।।।ऽऽ।। दिवा लग्न कर्क ९।२८ स, सायं अन्यगोधूलि, रात्रौ मकर-कुंभ लग्ने २३।०४ से २६।१७ तक, मकरे शुक्र ३ पूज्य:, मेष २७।४१ से २९।१७ तक
११ शनौ	१९ "	रेवती	रे. ७।।ऽशु. ।।ऽनृ. ।ऽ।। दिवा लग्न १०।३१ से कर्क, सायं अन्यगोधूलि, रात्रौ मकर-कुंभ लग्ने २३।०१ से, मकरे शुक्र ३ पूज्य:, अग्रे मेष लग्ने २७।३८ से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
१ गुरौ	२४ मई	मृग.	रे. ८ ।।ऽबु.गु. ।।।ऽ।॥ लग्न अन्यगोधूलि, रात्रौ २४।२५ से २५।५४ तक कुंभ, मेष लग्न २७।१८ से २८।५४ तक, क्षय तिथि-गुरु युति दोष: आवश्यके
६ चन्द्रे	२८ "	मघा	रे. ६ऽगु. ।।।।ऽनृ.ऽऽ।। लग्न मेष २७।०३ से २८।३८ तक
७ भौमे	२९ "	"	रे. ६ ऽगु. ।।।ऽनृ.ऽऽ।।। दिवा लग्न ८।४५ से ११।०३ तक कर्क
८ बुधे	३० "	उ.फा.	रे. ८।।।।।ऽचो.ऽ।।। लग्न कुंभ २४।०२ से, चन्द्र ७ पूज्य:, मेषे २६।५४ से २८।२९ तक
९ गुरौ	३१ "	"	रे. ९ ।।।।।ऽ।।। दिवा लग्न ८।३६ से १३।१४ तक कर्क सिंह, सायं गोधूलि दिवा-कर्क लग्ने चोर पंचक दोष: रेखा ८
९ गुरौ	३१ "	हस्त	रे. ९।।।।।।।ऽ।।लग्न मकर २२।५२ से २३।५६ तक, मीन लग्ने २५।२५ से, चन्द्र ७, मंगल १०, राहु ४ पूज्य:

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
१२ चन्द्रे	२ जुला.	अनु.	रे ७ ऽसू.ऽ।।ऽशु. ।।।।। दिवा लग्न ६।३६ से १३।३१ तक, कर्क, सिंह, कन्या, सायं अन्यगोधूलि, रात्रौ मकर, कुंभ, मीन २०।०८ से २४।४५ तक, कुंभे मं. १०, मीने शुक्र ३, राहु ४ पूज्य:

श्रावण कृष्ण पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२ शनौ	७ जुला.	श्रव.	रे. ९ ।।।।।ऽ।।। लग्न गोधूलि सोग्रां. शुक्र ६ दोष:, रात्रौ २१।३१ से कुंभ-मं. १० पूज्य:, मीन लग्ने २३।०० से २४।२५ तक, शुक्र ३, राहु ४ पूज्य:
३ रवौ	८ "	"	रे. ८ ।।।।ऽनृ.ऽ।।। दिवा लग्न कर्क ६।०८ से ८।२८ तक, चं. ७ पूज्य:, कन्या १०।४५ से
४ चन्द्रे	९ "	धनि.	रे. १०।।।।।।।।।। दिवा लग्न ८।२४ से १०।४१ तक, सिंह, चन्द्र ७ पूज्य:
६ गुरौ	१२ "	उ.भा.	रे. ८ ऽबु. ।।।।ऽ।।। दिवा लग्न कर्क ५।५३ से ८।१३ तक
७ शुक्रे	१३ "	रेवती	रे. ७ ऽशु. ।।।।।ऽ।ऽ दिवा लग्न ५।४९ से कर्क, १०।२६ से १२।४४ तक कन्या-चंद्र ७ पूज्य:, सायं अन्यगो. सोग्रां. रात्रौ १९।२६ से २२।३७ तक, मकर कुंभ, दग्धा तिथि दोष परिहार, कुंभ लग्ने मंगल १० पूज्य
८ शनौ	१४ "	अश्वि.	रे. ७ ।।।।।ऽऽ।ऽ दिवा लग्न कर्क, सिंह ५।४५ से १०।२२ तक
११ भौमे	१७ "	रोहि.	रे. ७ ।ऽऽशु.श. ।।।ऽ।। दिवा लग्न ५।३३ से कर्क, सिंह, कन्या, शुक्र युति दोष: आवश्यके,. शनि युति दोष परिहार: (रात्रौ लग्ने मृत्युबाण)

श्रावण शुक्ल पक्ष

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
३ चन्द्रे	२३ जुला.	मघा	रे. ७ ।ऽ।।।ऽचो.ऽ।।। दिवा लग्न कन्या १०।२३ से १२।०५ तक
४ भौमे	२४ "	उ.फा.	रे. ८ ।।।।।।ऽऽ।। लग्न अन्यगो. रात्रौ २१।५४ से, २३।१९ तक मीन, चन्द्र ७, शुक्र ३ पूज्य:
५ बुधे	२५ "	उ.फा.	रे. ६ ।।।।।ऽरो.ऽऽ।ऽ दिवा लग्न ९।४० से ११।५७ तक कन्या, दग्धा तिथि दोष परिहार:
५ बुधे	२५ "	हस्त	रे. ८ ।।।।।ऽरो. ।।।ऽ लग्न अन्यगो. रात्रौ २१।५० से २३।१५ तक मीन चन्द्र ७, शुक्र ३ पूज्य:, दग्धातिथि दोष परिहार:

शेष पृष्ठ २३६ पर...

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०५७ विक्रमी (दिनांक ५ अप्रैल २००० से २५ मार्च २००१ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय का ज्ञानार्थ कोष्ठक (बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए ''सूर्य की पूजा'' तथा कन्या के लिए ''गुरु की पूजा'' वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उस राशिवाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें तथा बारहवें सूर्य व ४, ८ चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुलाई—७, ८, ९, १२, १३, १४, अग.—२०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सिताम्बर—१, अक्टू.—२५, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४, ११, फर.—१५, १७, २१, २२, २८, मार्च—१, ६, ७, १०।	१४ अप्रैल से १४ जून तक १६ अग. से १६ सितं. तक १७ अक्टू. से १५ नवं. तक	**मेष**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—७, ८, ९, १४, १७, २३, २४, २५, २६, अग.—२, ३, ४, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—२५, २६, ३१, नवं.—४, ११, २०, २१, २७, २८, ३०, दिसं.—१, २, ६, ८, ९, १०, फर.—१७, २१, २२, २८, मार्च—१, ६, ७, १०।	१६ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
वृष—मई—१८, १९, २४, ३१, जून—१, जुलाई—२, ७, ८, ९, १२, १३, १४, १७, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४, ११, २०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१, २, ८, ९, १०, फर.—१५, १७, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, १०।	१४ मई से १६ जुला. तक १६ सितं. से १६ अक्टू. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**वृष**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, ९, १२, १३, १७, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २१, २२, २३, २४, २९ (२८।५८ बाद), ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, नवं.—४, ११, २०, २१, २५, ३०, दिसं.—१, २, ८, ९, १०, फर.—१५, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, १०।	वर्षारम्भ से १५ जून तक सामान्य पूज्य
मिथुन—अप्रैल—२५, २६, २७, मई—१, २, ५ (२६।५७ बाद), ६, जुला.—२, ९, १२, १३, १४, १७, २३, २६ (२१।०५ बाद), २९, ३०, अग.—२, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २२ (२८।५८ बाद), २३, २४, २९ (२८।५८ तक), सितं. १ (१७।३८ बाद), अक्टू.—१९, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१, २, ६, १० (१८।०९ बाद), फर.—१५, १७, २१, २२, मार्च—१, ५, ६, ७।	१५ जून से १६ अग. तक १७ अक्टू. से १५ नवं. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**मिथुन**—अप्रैल—२७, मई—१, २, ५ (२६।५७ बाद), ६, १५, १८, २४ (२१।४९ बाद), २८, २९, ३०, जुला.—२, ९, १२, १३, १४, २३, २६ (२१।०५ बाद), २९, ३०, अग.—२, ८, ९, १०, २०, २२ (२८।५८ बाद), २३, २४, २९ (२८।५८ तक), सितं.—१ (१७।३८ बाद), अक्टू.—१९, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४ (२२।१५ बाद), २५, २७, २८, दिसं.—१ (२९।१६ बाद), २, ६, १० (१८।०९ बाद), फर.—१५, १७, २२ (१०।४८ बाद), मार्च—५, ६, ७।	वर्षारम्भ से १५ जून तक विशेष पूज्य तथा १६ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
कर्क—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ तक), १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—१७, २३, २४, २५, २६ (२१।०५ तक), २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२ (२८।५८ तक), २९, ३०, ३१, सितं.—१ (१७।३८ तक), नवं.—२०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१, २, ६, ८, ९, १० (१८।०९ तक)।	१६ जुलाई से १६ सितं. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक १६ जन. से १२ फर. तक	**कर्क**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ तक), १८, १९, २४ (२१।४९ तक), २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २३, २४, २५, २६ (२१।०५ तक), २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२ (२८।५८ तक), २९, ३०, ३१, सितं.—१ (१७।३८ तक), अक्टू.—१९, २५, २९, ३०, ३१, नवं.—४ (२२।१५ तक), ११, २०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१ (२९।१६ तक), ६, ८, ९, १० (१८।०९ तक), फर.—१५, १७, २१, २२ (१०।४८ तक), २८, मार्च—१, ५, ६, ७, १०।	१६ जून से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
सिंह—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—७, ८, ९, १४, अग.—२०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—२५, २६, ३१, नवं.—४, ११, फर.—१७, २१, २२, २८, मार्च—१, ६, ७, १०।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १६ अग. से १६ अक्टू. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**सिंह**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—७, ८, ९, १४, १७, २३, २४, २५, २६, अग.—२, ३, ४, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—२५, २६, ३१, नवं.—४, ११, २०, २१, २७, २८, ३०, दिसं.—१, २, ६, ८, ९, १०, फर.—१७, २१, २२, २८, मार्च—१, ६, ७, १०।	वर्षारम्भ से १५ जून तक सामान्य पूज्य
कन्या—मई—१५, १८, १९, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, ९, १२, १३, १७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, नवं.—४, ११, २०, २१, २५, ३०, दिसं.—१, २, ६, ८, ९, १०, फर.—१५, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, १०।	१४ मई से १४ जून तक १६ सितं. से १५ नवं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कन्या**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, ९, १२, १३, १७, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २१, २२, २३, २४, २९ (२८।५८ बाद), ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, नवं.—४, ११, २०, २१, २५, ३०, दिसं.—१, २, ८, ९, १०, फर.—१५, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, १०।	१६ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
तुला—अप्रैल—२७, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ बाद), ६, जुलाई.—२, ९, १२, १३, १४, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—२, ८, ९, १०, २०, २१, २२, २३, २४, २९ (२८।५८ तक), सितं.—१ (१७।३८ बाद), अक्टू.—१९, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—१, ४ (२२।१५ बाद), ११, २५, २७, २८, दिसं.—१ (२९।१६ बाद), २, ६, ८, ९, १०, फर.—१५, २२ (१०।४८ बाद), २८, मार्च—१, ५, ६, ७।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १५ जून से १६ जुला. तक १७ अक्टू. से १५ दिसं. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**तुला**—अप्रैल—२७, मई—१, २, ५ (२६।५७ बाद), ६, १५, १८, १९, २४ (२१।४९ बाद), २८, २९, ३०, जुला.—२, ९, १२, १३, १४, २३, २६ (२१।०५ बाद), २९, ३०, अग.—२, ८, ९, १०, २०, २२ (२८।५८ बाद), २३, २४, २९ (२८।५८ तक), सिंतं.—१ (१७।३८ बाद), अक्टू.—१९, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४ (२२।१५ बाद), २५, २७, २८, दिसं.—१ (२९।१६ बाद), २, ६, १० (१८।०९ बाद), फर.—१५, १७, २२ (१०।४८ बाद), मार्च—५, ६, ७।	वर्षारम्भ से १५ जून तक विशेष पूज्य
वृश्चिक—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ तक), ६, १८, १९, २४ (२१।४९ तक), २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—१७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१ (१७।३८ तक), नवं.—२०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१।	१४ मई से १४ जून तक १६ जुला. से १६ अग. तक १५ नवं. से १५ दिसं. तक	**वृश्चिक**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ तक), १८, १९, २४ (२१।४९ तक), २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २३, २४, २५, २६ (२१।०५ तक), २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२ (२८।५८ तक), २९, ३०, ३१, सितं.—१ (१७।३८ तक), अक्टू.—१९, २५, २९, ३०, ३१, नवं.—४ (२२।१५ तक), ११, २०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१ (२९।१६ तक), ६, ८, ९, १० (१८।०९ तक), फर.—१५, १७, २१, २२ (१०।४८ तक), २८, मार्च—१, ५, ६, ७, १०।	१६ जून से वर्षान्त तक विशेष पूज्य
धनु—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, ९, १४, अग.—२०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—१९, २५, २६, ३१, नवं.—४, ११, फर.—१५, १७, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, ६, ७, १०।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १५ जून से १६ जुलाई तक १६ अग. से १६ सितं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**धनु**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—१, २, ४, ५, ६, १५, २४, २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—७, ८, ९, १४, १७, २३, २४, २५, २६, अग.—२, ३, ४, १३, १४, २०, २१, २२, २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—२५, २६, ३१, नवं.—४, ११, २०, २१, २७, २८, ३०, दिसं.—१, २, ६, ८, ९, १०, फर.—१७, २१, २२, २८, मार्च—१, ६, ७, १०।	वर्षारम्भ से १५ जून तक सामान्य पूज्य
मकर—मई—१५, १८, १९, २४, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, ९, १२, १३, १७, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, नवं.—४, ११, २०, २१, २५, ३०, दिसं.—१, २, ८, ९, १०, फर.—१५, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, ६, ७, १०।	१४ मई से १४ जून तक १६ जुला. से १६ अग. तक १६ सितं. से १६ अक्टू. तक १४ जन. से १४ मार्च तक	**मकर**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, २७, मई—४, ५, ६, १५, १८, १९, २४, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, ९, १२, १३, १७, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, १७, २१, २२, २३, २४, २९ (२८।५८ बाद), ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, नवं.—४, ११, २०, २१, २५, ३०, दिसं.—१, २, ८, ९, १०, फर.—१५, २१, २२, २८, मार्च—१, ५, १०।	१६ जून से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
कुंभ—अप्रैल—१५, १६, १७, २७, मई—१, २, ५ (२६।५७ बाद), ६, जुला.—२, ७, ८, ९, १२, १३, १४, २३, २६ (२१।०५ बाद), २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, २०, २२ (२८।५८ बाद), २३, २४, २९, ३०, ३१, सितं.—१, अक्टू.—१९, २५, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४, २०, २१, २५, २७, २८, दिसं.—१ (२९।१६ बाद), २, ६, १० (१८।०९ बाद), फर.—१५, १७, २२ (१०।४८ बाद), मार्च—५, ६, ७, १०।	१५ जून से १६ जुला. तक १६ अग. से १६ सितं. तक १७ अक्टू. से १५ नवं. तक १३ फर. से १४ मार्च तक	**कुंभ**—अप्रैल—२७, मई—१, २, ५ (२६।५७ बाद), ६, १५, १८, १९, २४ (२१।४९ बाद), २८, २९, ३०, जुलाई—२, ९, १२, १३, १४, २३, २६ (२१।०५ बाद), २९, ३०, अग.—२, ८, ९, १०, २०, २२ (२८।५८ बाद), २३, २४, २९ (२८।५८ तक), सितं.—१ (१७।३८ बाद), अक्टू.—१९, २६, २९, ३०, ३१, नवं.—४ (२२।१५ बाद), २५, २७, २८, दिसं.—१ (२९।१६ बाद), २, ६, १० (१८।०९ बाद), फर.—१५, १७, २२ (१०।४८ बाद), मार्च—५, ६, ७।	वर्षारम्भ से १५ जून तक विशेष पूज्य
मीन—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ तक), १८, १९, २४ (२१।४९ तक), २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—१७, २३, २४, २५, २६, २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, २०, २१, २२ (२८।५८ तक), २९, ३०, ३१, सितं.—१, नवं.—२०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१, ६, ८, ९, १०।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १६ जुला. से १६ अग. तक १६ सितं. से १६ अक्टू. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक	**मीन**—अप्रैल—१५, १६, १७, २५, २६, मई—१, २, ४, ५ (२६।५७ तक), १८, १९, २४ (२१।४९ तक), २८, २९, ३०, ३१, जून—१, जुला.—२, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २३, २४, २५, २६ (२१।०५ तक), २९, ३०, अग.—२, ३, ४, ८, ९, १०, १३, १४, ३०, २१, २२ (२८।५८ तक), २९, ३०, ३१, सितं.—१ १७।३८ तक), अक्टू.—१९, २५, २९, ३०, ३१, नवं.—४ (२२।१५ तक), ११, २०, २१, २५, २७, २८, ३०, दिसं.—१ (२९।१६ तक), ६, ८, ९, १० (१८।०९ तक), फर.—१५, १७, २१, २२ (१०।४८ तक), २८, मार्च—१, ५, ६, ७, १०।	वर्षारम्भ से १५ जून तक सामान्य पूज्य तथा १६ जून से वर्षान्त तक विशेष पूज्य

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०५८ विक्रमी, शाके १९२३, सन् २००१-२००२ ई.

व्रत / उत्सव	तिथि
नववर्षारंभ, नवरात्रा प्रा., चेटीचंड	२६ मार्च
गुड़ी पड़वा, गौतम जयंती	२६ "
श्री झूलेलाल जयंती, मत्स्य जयंती	२७ "
सौभाग्य तृतीया व्रत	२८ "
गणगौर पूजन, मन्वादि	२८ "
हय व्रत पंचमी, स्कन्द षष्ठी	३० "
जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ	३१ "
दुर्गा ८, अन्नपूर्णा पूजा	१ अप्रै.
अशोकाष्टमी, दुर्गा पूजन प्रा.	१ "
श्री रामनवमी, नवरात्रा समाप्त	२ "
कामदा एकादशी व्रत	४ "
प्रदोष व्रत, हरिदमनोत्सव	५ "
अनंग १३ व्रत, महावीर जयंती	६ "
दमनक चतुर्दशी, सत्यव्रत	७ "
विश्व स्वास्थ्य दिवस	७ "
चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती	८ "
बैशाख स्नान प्रा., ओली समा.	८ "
भा. रेल सप्ताह प्रारम्भ	१० "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	११ "
बैशाखी (पं.), गुड फ्राईडे	१३ "
डॉ. अम्बेडकर जयंती, मेषादि	१४ "
विगुविधु, विशु, वैशाखादि	१४ "
शीतलाष्टमी	१६ "
वरूथिनी एकादशी व्रत	१९ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती	१९ "
शनि प्रदोष व्रत	२१ "
सोमवती अमावस्या, मेला पंजोर	२३ "
देवपितृकार्याऽमावस्या	२३ "
श्री शुकदेव जयंती	२३ "
देव दामोदर तिथि	२४ "
शिवाजी ज., परशुराम जयंती	२५ "
अक्षया तृतीया, मातंगी जंयती	२६ "
वैनायक चतुर्थी व्रत	२७ "
आद्य शंकराचार्य जयंती	२८ "
श्री रामानुजाचार्य जंयती	२९ "
गंगा सप्तमी पूजन	३० "
विश्व मजदूर दिवस	१ मई
दुर्गाष्टमी, बंगलामुखी जयंती	१ "
श्री सीता नवमी	२ "
मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.)	४ मई
परशुराम द्वादशी, राधा द्वादशी	४ "
शनि प्रदोष व्रत	५ "
श्री नृसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जयंती	६ "
वैशाखी पूर्णिमा, सत्यव्रत	७ "
बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती	७ "
टैगोर जयंती, वैशाख स्नान पूर्ति	७ "
श्री नारद जयंती	८ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	१० "
कालाष्टमी, मेला चानानी माताजी	१५ "
अपरा एका. व्रत, भद्रकाली एका.	१९ "
प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ	२० "
भावुका अमा., पितृकार्याऽमा.	२२ "
बड़ पूजन अमावस्या	२२ "
देवकार्य अमावस्या, शनि जयंती	२३ "
करवीर व्रत	२४ "
रंभा तृतीया व्रत, प्रताप जंयती	२५ "
श्रुति पंचमी, नेहरू पुण्य दिवस	२७ "
विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य छठ	२८ "
बुधाष्टमी, दुर्गाष्टमी	३० "
धूमावती जयंती	३० "
श्री माहेश्वरी नवमी	३१ "
गंगा दशहरा, मेला हरिद्वार	१ जून
निर्जला एका. व्रत, चम्पक द्वादशी	२ "
प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ गुज.	३ "
वट सावित्री व्रत समाप्त (गुजरात)	५ "
विश्व पर्यावरण दिवस	५ "
सत्यव्रत, ईद-ए-मिलाद	५ "
ज्येष्ठी पूर्णिमा, कबीर जयंती	६ "
गु. हरगोविन्द सिंह जयंती	७ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	९ "
कालाष्टमी, राजस संक्रांति	१४ "
योगिनी एकादशी व्रत	१७ "
भौम प्रदोष व्रत	१९ "
देवपितृकार्याऽमावस्या	२१ "
मनोरथ द्वितीया व्रत (बंगाल)	२२ "
श्री जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा)	२३ "
स्कन्द पंचमी, सोमवती पंचमी	२५ "
कुमार षष्ठी व्रत	२६
विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा	२७ जून
दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा)	२८ "
भड्डुली नवमी, मेला शरीफ भवानी	२९ "
देवशयनी एकादशी व्रत	१ जुला
सोम प्रदोष व्रत	२ "
जया पार्वती व्रतारंभ	३ "
चौमासी चौदश (जैन), वायु परीक्षा	४ "
गुरु पूर्णिमा, सत्यव्रत	५ "
आषाढ़ी पूर्णिमा, व्यास पूजा	५ "
खण्डग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण	५ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, वन सोमवार व्रत	९ "
नाग पंचमी, (बंगाल व राज.)	१० "
कालाष्टमी, मस्त्यर दिवस	१३ "
मनसा पूजा प्रा. (बंगाल में)	१६ "
वन सोमवार व्रत	१६ "
कामदा एकादशी व्रत	१७ "
प्रदोष व्रत	१८ "
देवपितृकार्या अमा., हरियाली अमा.	२० "
नक्त व्रत प्रारम्भ	२१ "
हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज	२३ "
श्री तिलक जयंती, वन सोमवार व्रत	२३ "
वरद् विनायक ४ व्रत	२४ "
नाग पंचमी, देशाचारे	२५ "
गो. तुलसीदास जयंती, वर्ण षष्ठी	२६ "
दुर्गा ८, मे. चिन्तपूर्णी व नयना देवी	२७ "
रवि दशमी	२९ "
पुत्रदा एका. व्रत, वन सोमवार व्रत	३० "
झूलन यात्रा प्रारम्भ	३० "
प्रदोष व्रत, तिलक पुण्य दिवस	१ अग.
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन	४ "
संस्कृत दिवस	४ "
अमरनाथ दर्शन, झूलन यात्रा समाप्त	४ "
सातूड़ी तीज, कज्जली तृतीया व्रत	७ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	७ "
रक्षा पंचमी (उड़ीसा)	९ "
चन्द्र षष्ठी व्रत	१० "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत	१२ "
गोगा नवमी, नन्दोत्सव	१३ "
अजा एकादशी व्रत	१५ "
भारतीय स्वतंत्रता दिवस	१५ अग.
प्रदोष व्रत, जैन पर्युषण प्रारम्भ	१६ "
मनसा पूजा समाप्त (बंगाल में)	१६ "
वत्स द्वादशी, बीछ बारस	१६ "
अघोरा चतुर्दशी व्रत	१७ "
पिठौरी ३०, पितृकार्या अमावस	१८ "
देवकार्य अमा., कुशोत्पाटनी अमा.	१९ "
मेला सुथरेशाह दिल्ली, सती पूजन	१९ "
नक्त व्रत समाप्त	१९ "
मेला रुणीचा (जैसलमेर)	२० "
हरितालिका ३ व्रत, वराह जयंती	२१ "
श्री गणेश चतुर्थी व्रत, साम श्रावणी	२२ "
ऋषि पंचमी, जैन सम्वत्सरी	२३ "
सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ	२४ "
मुक्ताभरण ७, सन्तान सप्तमी	२५ "
दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दूर्वा अष्टमी	२६ "
श्री दधीचि ज., महालक्ष्मी व्रत प्रा.	२६ "
श्री चन्द्र नवमी, अदु:ख नवमी व्रत	२७ "
पद्मा एका. व्रत, डोल ग्यारस म.प्र.	२९ "
मेला जलझूलनी चार भूजानाथ	२९ "
वामन जयंती, भुवनेश्वरी जयंती	३० "
प्रदोष व्रत, ओणम दिवस (केरल)	३१ "
गोत्रि रात्रि व्रतारंभ	३१ "
अनन्त चतुर्दशी व्रत	१ सितं.
सत्यव्रत, गोत्रि रात्रि व्रत समाप्त	२ "
शिक्षक दिवस	५ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	६ "
विश्व साक्षरता दिवस	८ "
कालाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत समाप्त	१० "
मातृ नवमी, भूदान जयंती	११ "
इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मार्त)	१३ "
इन्दिरा एकादशी व्रत (वैष्णव)	१४ "
शनि प्रदोष व्रत	१५ "
इन्जीनियर्स दिवस	१५ "
सोमवती, सर्वपितृ अमावस्या	१७ "
विश्वकर्मा पूजा	१७ "
अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रा.	१८ "
भानु सप्तमी	२३ "
दुर्गाष्टमी	२४ "
कमला एकादशी व्रत	२८ सितं.
शनि प्रदोष व्रत	२९ "
सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं	२ अक्टू.
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	६ "
वायु सेना दिवस	८ "
कमला एकादशी व्रत	१३ "
प्रदोष व्रत	१४ "
देवपितृकार्याऽमावस्या	१६ "
भौमवती अमा., अधिक मास समा.	१६ "
शारदीय नवरात्रा प्रा.,अग्रसेन जयंती	१७ "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	२१ "
श्री सरस्वती आवाहन, दुर्गा पूजा प्रा.	२१ "
श्री सरस्वती पू., अन्नपूर्णा परिक्रमा	२३ "
महाष्टमी व्रत पूजन, दुर्गाष्टमी	२४ "
बुधाष्टमी, अन्नपूर्णा परिक्रमा पूर्ण	२४ "
नवरात्रा समाप्त, महानवमी	२५ "
श्री सरस्वती विसर्जन	२५ "
विजया दशमी, माधवाचार्य जयंती	२६ "
पापांकुशा एकादशी व्रत (स्मा.-वै.)	२७ "
पापांकुशा एकादशी व्रत (निम्बार्क)	२८ "
वंजुली महाद्वादशी व्रत	२८ "
सोम प्रदोष व्रत	२९ "
शरद् पूर्णिमा, सत्यव्रत	३१ "
कोजागरी व्रत, सरदार पटेल जयंती	३१ "
इन्दिरा गांधी पुण्य दिवस	३१ "
बाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रा.	१ नवं.
करक, करवा चतुर्थी व्रत	४ "
अहोई अष्टमी, कालाष्टमी	८ "
रमा एकादशी व्रत	११ "
सोम प्रदोष व्रत, गोवत्स पूजा	१२ "
धन तेरस, धनवन्तरी जयंती	१२ "
नरक चतुर्दशी, रूप चतुर्दशी	१३ "
महालक्ष्मी पूजन, दीपावली	१४ "
पं. नेहरू जयंती, बाल मेला	१४ "
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट	१५ "
भैया दूज, चित्रगुप्त पूजा	१६ "
विश्वकर्मा दि., लाजपतराय पु. दि.	१७ "
पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी	२० "

सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट	२१ नवं.
गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी	२३ ''
कृष्मांड नवमी, आंवला नवमी	२४ ''
देव प्रबोधिनी एका., तुलसी विवाह	२६ ''
प्रदोष व्रत	२८ ''
वैकुण्ठ १४ व्रत, चौमासी चौदश	२९ ''
कार्तिक १५, सत्यव्रत, देव दिवाली	३० ''
गुरु नानक ज., कार्तिक स्ना. समा.	३० ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	४ दिसं.
श्री महाकाल भैरवाष्टमी, झंडा दि.	७ ''
उत्पत्ति एकादशी व्रत (स्मार्त)	१० ''
उत्पत्ति एकादशी व्रत (वैष्णव)	११ ''
प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य दि.	१२ ''
देव पितृकार्याऽमावस्या	१४ ''
कमला जयंती, जुमातुल विदा	१४ ''
ईदुलफितर (मु.)	१७ ''
स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पा षष्ठी	२१ ''
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती	२२ ''
महानन्दा नवमी	२४ ''
क्रिसमस डे, बड़ा दिन	२५ ''
मोक्षदा एका. व्रत, श्री गीता जयंती	२६ ''
प्रदोष व्रत	२८ ''
सत्यव्रत, अन्नपूर्णा जयंती	३० ''

सन् 2002 ई.

ईसाई नववर्ष प्रारम्भ	१ जन.
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२ ''
श्री पार्श्वनाथ जयंती	८ ''
सफला एकादशी व्रत	९ ''
प्रदोष व्रत	१० ''
देव पितृकार्याऽमावस्या	१३ ''
लोहड़ी उत्सव (पंजाब)	१३ ''
मकर संक्रांति, पौंगल पर्व	१४ ''
दुर्गाष्टमी, भौमाष्टमी व्रत	२२ ''
श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ ''
पवित्रा एकादशी व्रत	२५ ''
शनि प्रदोष व्रत, भा. गणतन्त्र दिवस	२६ ''
पौषी १५, सत्यव्रत, माघ स्नान प्रा.	२८ ''
महात्मा गांधी निधन दिवस	३० ''
संकष्ट चतुर्थी व्रत	३१ ''
स्वा. विवेकानन्द व रामानन्दाचार्य ज.	४ फर.
षटतिला एकादशी व्रत (स्मार्त)	७ ''
षट्तिला एकादशी व्रत (वैष्णव)	८ फर.
शनि प्रदोष व्रत	९ ''
भौमवती मौनी अमावस्या	१२ ''
बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन	१७ ''
आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी	१८ ''
जया एका. व्रत (स्मा.-वै.)	२३ व २४ ''
सोम प्रदोष व्रत, मेला डेजर्ट उत्सव	२५ ''
माघी पूर्णिमा, सत्यव्रत, रविदास ज.	२७ ''
माघ स्नान समाप्त, ईद-उल-जुहा	२७ ''
श्री सीताष्टमी	६ मार्च
स्वा. दयानन्द सरस्वती जयंती	८ ''
विजया एकादशी व्रत	९ ''
सोम प्रदोष व्रत	११ ''
महाशिवरात्रि व्रत	१२ ''
फुलरिया दोज, रामकृष्ण जयंती	१६ ''
मेला खाटू श्यामजी प्रारम्भ	२४ ''
आमला एकादशी व्रत	२५ ''
प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी	२६ ''
होली, सत्यव्रत, चैतन्य महाप्रभु ज.	२८ ''
छारेण्डी, धूलण्डी	२९ ''
भाई २, संत तुकाराम जयंती	३० ''
शीतलाष्टमी व पूजन	५ अप्रै.
पापमोचनी एकादशी व्रत	८ ''
प्रदोष व्रत	१० ''
देवपितृकार्याऽमावस्या	१२ ''
चान्द्र संवत्सर समाप्त	१२ ''

इस्लामी त्यौहार

मुहर्रम हिजरी सन् १४२२ प्रा.	२७ मार्च
ताजिया (मुहर्रम)	५ अप्रै.
चैहल्लम	१४ मई
शहादते इमाम हसन	२३ ''
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	५ जून
ईद-ए-मौलाद	१० ''
फतीहायजदहूम (११वीं शरीफ)	३ जुला
अजमेर का उर्स मेला शुरू	१९ सितं
जन्मदिन हजरत अली	१ अक्टू
शबे-ए-मिराज	१५ ''
शबे-ए-बारात (यवनोत्सव)	१ नवं.
रमजान, रोजा प्रारम्भ	१७ ''
शहादते हजरत अली	७ दिसं
शबे-ए-कदर	१३ दिसं
जुमातुल विदा	१४ ''
ईदुल-फितर	१७ ''
हज्ज (२००२ ई.)	२२ फर.
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	२७ ''
मुहर्रम हिजरी सन् १४२३ प्रा.	१६ मार्च
ताजिया (मुहर्रम)	२५ ''

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

मुनि सुमतिनाथ जयंती	४ अप्रै.
'' महावीर स्वामी ''	६ ''
'' सुव्रतनाथ ''	१८ ''
'' कुन्थनाथ ''	२४ ''
'' अनन्तनाथ ''	२० मई
'' शान्तिनाथ ''	२२ ''
'' सुपार्श्वनाथ ''	३ जून
'' नमिनाथ ''	१६ ''
'' नेमिनाथ ''	२५ जुला
'' पद्मप्रभुनाथ ''	१३ नवं.
'' सम्भवनाथ ''	३० ''
'' पुष्पदन्तनाथ ''	१५ दिसं.
'' मल्लिनाथ ''	२६ ''
'' अरहनाथ ''	२९ ''

सन् २००२ ई.

'' पार्श्वनाथ ''	८ जन.
'' चन्द्र प्रभु ''	११ ''
'' यतेन्द्र सुरिश्वरनाथ ''	१६ ''
'' राजेन्द्र सुरिश्वरनाथ ''	२१ ''
'' शीतलनाथ ''	८ फर.
'' विमलनाथ ''	१६ ''
'' अजितनाथ ''	२२ ''
'' अभिनन्दन नाथ ''	२४ ''
'' धर्मनाथ ''	२५ ''
'' श्रेयांशनाथ ''	९ मार्च
'' वासुपूज्यनाथ ''	१२ ''
'' ऋषभनाथ ''	२३ ''

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौतम जयंती	२६ मार्च
श्री झूलेलाल जयंती	२७ ''
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ अप्रै.
श्री वल्लभाचार्य जयंती	१९ अप्रै.
बाबू कुँअर सिंह जयंती	२३ ''
श्री शुकदेव जयंती	२३ ''
देव दामोदर जयंती	२४ ''
श्री शिवाजी जयंती	२५ ''
श्री परशुराम जयंती	२५ ''
श्री मातंगी जयंती	२६ ''
श्री आद्यशंकराचार्य जयंती	२८ ''
श्री रामानुजाचार्य जयंती	२९ ''
श्री नृसिंह जयंती	६ मई
छिन्नमस्ता जयंती	६ ''
श्री बुद्ध पूर्णिमा जयंती	७ ''
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ ''
देव ऋषि नारद जयंती	८ ''
श्री मां आनन्दमयी जयंती	१० ''
श्री महाराणा प्रताप जयंती	२५ ''
सन्त कबीर जयंती	६ जून
सरस माधुरी जयंती	२० जुला
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ ''
श्री कल्की जयंती	२५ ''
गो. तुलसीदास जयंती	२६ ''
संत ज्ञानेश्वर जयंती	१२ अग.
सन्त सुथरेशाह जयंती	१९ ''
श्री वराह जयंती	२१ ''
श्री दधीचि जयंती	२६ ''
डॉ. राधाकृष्ण जयंती	५ सितं
श्री विनोबाभावे जयंती	११ ''
श्री महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ अक्टू
श्री अग्रसेन जयंती	१७ ''
श्री माधवाचार्य जयंती	२६ ''
महर्षि बाल्मीकि जयंती	१ नवं.
श्री धनवन्तरि जयंती	१२ ''
श्री नेहरू जयंती	१४ ''
श्री विश्वकर्मा जयंती	१७ ''
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ ''
श्री जलाराम जयंती	२२ ''
श्री कवि कालीदास जयंती	२७ ''
गुरु नानक जयंती	३० ''
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३ दिसं
महामना मदनमोहन मालवीय ज.	२५ ''
श्री दत्तात्रेय जयंती	३० ''

सन् २००२ ई.

गु. गोबिन्द सिंह जयंती	२१ जन.
श्री नेताजी सुभाष जयंती	२३ ''
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८ ''
स्वा. विवेकानन्द जयंती	४ फर.
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	४ ''
श्री माधवाचार्य जयंती	११ ''
गुरु रविदास जयंती	२७ ''
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	८ मार्च
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	१६ ''
श्री दादूदयाल जयंती	२२ ''
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	२८ ''

प्राचीन मेला दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	२६ मार्च
'' चीमा नानक सर (पंजाब)	२६ ''
'' गणगौर जयपुर (राज.)	२८ ''
'' माई सरखाना (पंजाब)	३१ ''
'' मनसा देवी (हरियाणा)	१ अप्रै.
'' बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	१ ''
'' ज्वालामुखी (हरचोवाल)	१ ''
'' ज्वालामुखी (गुरदासपुर)	१ ''
'' रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	२ ''
'' कांसा देवी (रोपड़ कांसल)	६ ''
'' देवी थोहरा (कैथल)	७ ''
'' बाला सुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	७ ''
'' मानकपुर शरीफ (रोपड़)	८ ''
'' कशाधा नहयाणी सह-कुल्लू	१५ ''
'' पिंजोर (हरियाणा)	२३ ''
'' पीपल जातर (कुल्लू)	२८ ''
'' आनी आउडर सिराज (कुल्लू)	७ मई
'' डूंगरीजातर (मनाली)	१४ ''
'' बंजार (कुल्लू)	१४ ''
'' चनानी माताजी	१५ ''
'' शाढ़ी जातर नगर (हि.प्र.)	१८ ''
'' हल्दीघाटी (राज.)	२५ ''
'' क्षीरभवानी कश्मीर	३० ''
'' गंगादशहरा (हरिद्वार)	१ जून

स्वा. विवेकानन्द व रामानन्दाचार्य ज. ४ फर. | रमजान, रोजा प्रारम्भ १७ '' | डा. राजेन्द्र प्रसाद जयंती ३ दिसं | '' क्षीरभवानी कश्मीर ३० ''
षटतिला एकादशी व्रत (स्मार्त) ७ '' | शहादते हजरत अली ७ दिसं | डा. अम्बेडकर जयंती १४ अप्रै. | श्री दत्तात्रेय जयंती ३० '' | '' गंगादशहरा (हरिद्वार) १ जून

मेला	
मेला सपोर यात्रा धारलदा (बुधमपुर)	१ जून
'' बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	२ ''
'' पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	२ ''
'' शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	६ ''
'' भून्तर (हि.प्र.)	१४ ''
'' शरीफ भवानी (कश्मीर)	२९ ''
'' ज्वालामुखी (कश्मीर)	४ जुला
'' नैमिषारण्य (उ.प्र.)	५ ''
'' गुरु पूर्णिमा (कुराली)	५ ''
'' नानकसर (चीमा)	९ ''
'' हरियाली अमा. (उदयपुर)	२० ''
'' चिन्तपूर्णी व नयना देवी-हि.प्र.	२७ ''
'' अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	४ अग.
'' द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	११ ''
'' जन्माष्टमी (मथुरा)	१२ ''
'' कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	१७ ''
'' सुथरेशाह (दिल्ली)	१९ ''
'' गुसांई आंणा (कुराली)	२० ''
'' रुणीचा रामदेव (जैसलमेर)	२० ''
'' गणेशोत्सव, मण्डी (हि.प्र.)	२२ ''
'' गणेशोत्सव (महाराष्ट्र)	२२ ''
'' पात (कश्मीर) प्रा.	२३ ''
'' ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	२४ ''
'' रामदेव (जैसलमेर)	२८ ''
'' चारभुजा नाथ (मेवाड़)	२९ ''
'' वामन द्वादशी (पटियाला)	३० ''
'' सोडल (जालन्धर)	१ सितं.
'' छपार (पंजाब)	१ ''
'' गोयन्दवाल (पंजाब)	२ ''
'' श्री आशापति यात्रा (का.)	१६ ''
'' ज्वाला मुखी (हि.प्र.)	२४ अक्टू
'' तारा देवी (हि.प्र.)	२४ ''
'' हरचोवाल (गुरदासपुर)	२४ ''
'' दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	२६ ''
'' शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	३१ ''
'' देवी थीहरा (कैथल)	३१ ''
'' दीपावली (अमृतसर)	१४ नवं.
'' बाल मेला (दिल्ली)	१४ ''
'' अन्नकूट (गोवर्धन)	१५ ''
मेला बाबा रुद्रानंद नारी ऊना, हि.प्र.	२६ नवं.
'' रेणुका नाहन (हि.प्र.)	२६ ''
'' वीरवैरागी नकोदर (पं.)	२८ ''
'' पुष्करराज (राज.)	३० ''
'' रामतीर्थ (अमृतसर)	३० ''
'' कपालमोचन (हरियाणा)	३० ''
'' गढ़गंगा (उ.प्र.)	३० ''
'' पुरमण्डल देविका स्ना. (ज.)	१३ दिसं.
'' जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	२६ ''
'' संगीत हरबल्लभ प्रा.	२७ ''

सन् २००२ ई.

मेला	
'' लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन.
'' मुक्तसर (पंजाब)	१४ ''
'' मस्तुआणां (पंजाब)	१ फर.
'' मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	१२ ''
'' बसंत पंचमी (हि.प्र.)	१७ ''
'' पंचखण्ड पीठ विराटनगर	२५ ''
'' डेजर्ट उत्सव जैसलमेर (रा.)	२५ ''
'' वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	२७ ''
'' महाशिवरात्रि मण्डी (हि.प्र.)	१२ मार्च
'' नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी)	१२ ''
'' श्यामजी खाटू (राज.)	२४-२६ ''
'' होलामेला आनन्दपुर सा. पं.	२९ ''
'' मानकपुर शरीफ (रोपड़)	२९ ''
'' पंखा (झझर)	२९ ''
'' बीरमदास बछौली (पटि.)	२ अप्रै.
'' गुरुरामराय (देहरादून)	२ ''
'' शीतला माता (कुराली)	४ ''
'' पिहोवा (हरियाणा)	११ ''

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
पाम सन्डे	८ अप्रै.
गुड फ्राइडे	१३ ''
इस्टर सन्डे	१५ ''
क्रिसमस डे	२५ दिसं
न्यू इयर इव	३१ ''
न्यू ईयर डे सन् २००२ प्रा.	१ जन.
पाम सन्डे	२४ मार्च
गुड फ्राइडे	२९ ''
इस्टर सन्डे	३१ मार्च

सिक्खों के गुरु पर्व (प्रा. मत)

गुरु		तिथि
गुरु तेगबहादुर जी	जन्म	१२ अप्रै.
'' अर्जुनदेव जी	''	१४ ''
'' अंगद देव जी	''	२४ ''
'' अमरदास जी	''	६ मई
'' हरगोविन्द जी	''	७ जून
'' हरकिशन जी	''	१५ जुला
'' रामदास जी	''	३ नवं.
'' नानकदेव जी	''	३० ''
'' गोविन्द सिंह जी	''	२१ जन.
'' हरराय जी	''	२५ फर.

गुरुयाई मिली (प्राचीन मत से)

गुरु	तिथि
गुरु अमरदास जी	२६ मार्च
'' तेगबहादुर जी	७ अप्रै
'' हरगोविन्द जी	१५ मई
'' अर्जुनदेव जी	२० अग.
'' रामदास जी	३१ ''
'' अंगद देव जी	८ सिंत
'' हरकिशन जी	९ नवं.
'' गोविन्द सिंह जो	१७ दिंस
'' हरराय जी २००२ ई.	१० अप्रै

ज्योति जोत समाऐ (प्रीन मत से)

गुरु	तिथि
गुरु अंगद देव जी	२९ मार्च
'' हरगोविन्द जी	३० ''
'' हरकिशन जी	७ अप्रै.
'' अर्जुनदेव जी	२६ मई
'' रामदास जी	२१ अग.
'' अमरदास जी	२ सितं
'' नानकदेव जी	१३ ''
'' हरराय जी	९ नंव.
'' गोविन्द सिंह जी	२० ''
'' तेग बहादुर जी	१९ दिसं.

नोटः—अमृतसर (पंजाब) की गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने गुरु पर्व, गुरुयाई मिली तथा ज्योति जोत समाऐ की तारीखें (अंग्रेजी) प्रत्येक वर्ष एक ही रखने का निर्णय लिया है। जिनके अनुसार गुरु पर्वादि की तारीखें इस प्रकार रहेंगी।

सिक्खों के गुरु पर्व (नवीन मतानुसार)

नाम गुरु	जन्म दिन	गुरुयाई मिली	ज्योति जोत समाऐ
गुरु नानकदेव जी	कार्तिकी पूर्णिमा	—	२२ सितम्बर
'' अंगद देव जी	१८ अप्रैल	१८ सितम्बर	१६ अप्रैल
'' अमरदास जी	२३ मई	१६ अप्रैल	१६ सितंबर
'' रामदास जी	९ अक्टूबर	१६ सितंबर	१६ सितंबर
'' अर्जुनदेव जी	२ मई	१६ सितंबर	१६ जून
'' हरगोविन्द जी	५ जुलाई	११ जून	१९ मार्च
'' हरराय जी	३१ जनवरी	१४ मार्च	२० अक्टूबर
'' हरकिशन जी	२३ जुलाई	२० अक्टूबर	१६ अप्रैल
'' तेगबहादुर जी	१८ अप्रैल	१६ अप्रैल	२४ नवम्बर
'' गोविन्द सिंह जी	५ जनवरी	२४ नवम्बर	२१ अक्टूबर
'' ग्रन्थ साहिब जी	१ सितंबर	२० अक्टू.	—

दशावतार जयन्तियाँ

जयंती	तिथि
श्री मत्स्य जयंती	२७ मार्च
श्री राम जयंती	२ अप्रै.
श्री परशुराम ज.	२५ ''
श्री नृसिंह जयंती	६ मई
श्री कूर्म जयंती	७ ''
श्री बुद्ध जयंती	७ ''
श्री कल्कि जयंती	२५ जुला
श्री कृष्ण जयंती	१२ अग.
श्री वराह जयंती	२१ ''
श्री वामन जयंती	३० ''

संक्रान्तियाँ

राशि	वार	तिथि
मेष	शुक्रवार	१३ अप्रै.
वृष	सोमवार	१४ मई
मिथुन	गुरुवार	१४ जून
कर्क	सोमवार	१६ जुला.
सिंह	गुरुवार	१६ अग.
कन्या	रविवार	१६ सितं.
तुला	बुधवार	१७ अक्टू
वृश्चि.	शुक्रवार	१६ नवं.
धनु	शनिवार	१५ दिसं.
मकर	सोमवार	१४ जन.
कुम्भ	मंगलवार	१२ फर.
मीन	गुरुवार	१४ मार्च

व्रत पूर्णिमा

मास	वार	तिथि
चैत्र	शनिवार	७ अप्रैल
वैशाख	सोमवार	७ मई
ज्येष्ठ	मंगलवार	५ जून
आषाढ़	गुरुवार	५ जुला.
श्रावण	शुक्रवार	३ अग.
भाद्रपद	रविवार	२ सितं.
प्र. आश्विन	मंगलवार	२ अक्टू.
द्वि. आश्विन	बुधवार	३१ अक्टू.
कार्तिक	शुक्रवार	३० नवं.
मार्गशीर्ष	रविवार	३० दिसं.
पौष	सोमवार	२८ जन.
माघ	बुधवार	२७ फर.
फाल्गुन	गुरुवार	२८ मार्च

गणेश चतुर्थी व्रत

मास	वार	तिथि
वैशाख	बुधवार	११ अप्रैल
ज्येष्ठ	गुरुवार	१० मई
आषाढ़	शनिवार	९ जून
श्रावण	सोमवार	९ जुला.
भाद्रपद	मंगलवार	७ अग.
प्र. आश्विन	गुरुवार	६ सितं.
द्वि. आश्विन	शनिवार	६ अक्टू.
कार्तिक	रविवार	४ नवं.
मार्गशीर्ष	मंगलवार	४ दिसं.

पौष	बुधवार	२ जन.
माघ	गुरुवार	३१ जन.
फाल्गुन	शनिवार	२ मार्च
चैत्र	रविवार	३१ मार्च

अमावस्याएं

वैशाख	सोमवती	२३ अप्रैल
ज्येष्ठ		२३ मई
आषाढ़		२१ जून
श्रावण		२० जुला.
भाद्रपद		१९ अग.
प्र. आश्विन	सोमवती	१७ सितं.
द्वि. आश्विन	भौमवती	१६ अक्टू.
कार्तिक		१५ नवं.
मार्गशीर्ष		१४ दिसं.
पौष		१३ जन.
माघ	भौमवती	१२ फर.
फाल्गुन		१३ मार्च
चैत्र		१२ अप्रैल

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

पूर्णिमा का श्राद्ध	२ सितं.
प्रतिपदा का श्राद्ध	३ ''
द्वितीया का श्राद्ध	४ ''
तृतीया का श्राद्ध	५ ''
चतुर्थी का श्राद्ध	६ ''
पंचमी का श्राद्ध	७ ''
षष्ठी का श्राद्ध	८ ''
सप्तमी का श्राद्ध	९ ''
अष्टमी का श्राद्ध	१० ''
नवमी का श्राद्ध	११ ''
दसमी का श्राद्ध	१२ ''
एकादशी का श्राद्ध	१३ ''
द्वादशी का श्राद्ध	१४ ''
त्रयोदशी का श्राद्ध	१५ ''

एकादशी व प्रदोष व्रत

मास व पक्ष	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत
चैत्र शुक्ल	४ अप्रैल	५ अप्रैल
बैशाख कृष्ण	१९ ''	२१ ''
'' शुक्ल	३-४ मई	५ मई
ज्येष्ठ कृष्ण	१९ ''	२० ''
'' शुक्ल	२ जून	३ जून
आषाढ़ कृष्ण	१७ ''	१९ ''
'' शुक्ल	१ जुलाई	२ जुलाई
श्रावण कृष्ण	१७ ''	१८ ''
'' शुक्ल	३०-३१ ''	१ अगस्त
भाद्रपद कृष्ण	१५ अगस्त	१६ ''
'' शुक्ल	२९ ''	३१ ''
प्र. आश्विन कृष्ण	१३-१४ सितं.	१५ सितं.
'' शुक्ल	२८ ''	२९ ''
द्वि. आश्विन कृष्ण	१३ अक्टू.	१४ अक्टू.
'' शुक्ल	२७-२८ ''	२९ ''
कार्तिक कृष्ण	११ नवंबर	१२ नवं.
'' शुक्ल	२६ ''	२८ ''
मार्गशीर्ष कृष्ण	१०-११ दिसंबर	१२ दिसं.
'' शुक्ल	२६ ''	२८ ''
पौष कृष्ण	९ जनवरी	१० जन.
'' शुक्ल	२५ ''	२६ ''
माघ कृष्ण	७-८ फर.	९ फर.
'' शुक्ल	२३-२४ ''	२५ ''
फाल्गुन कृष्ण	९ मार्च	११ मार्च
'' शुक्ल	२५ ''	२६ ''
चैत्र कृष्ण	८ अप्रैल	१० अप्रैल

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता. मास		घं.मि.	से	ता. मास		घं.मि.	तक
१८ अप्रैल	२००१ ई.	६।०८	''	२२ अप्रैल	२००१ ई.	२७।०३	''
१५ मई	''	१४।०८	''	२० मई	''	११।३९	''
११ जून	''	२१।५९	''	१६ जून	''	२०।४०	''
९ जुलाई	''	५।१०	''	१४ जुलाई	''	५।००	''
५ अगस्त	''	११।३६	''	१० अगस्त	''	११।५७	''
१ सितम्बर	''	१७।३८	''	६ सितम्बर	''	१७।४९	''
२८ ''	''	२३।५५	''	३ अक्टूबर	''	२३।३८	''
२६ अक्टूबर	''	७।०१	''	३१ ''	''	६।३२	''
२२ नवम्बर	''	१५।०१	''	२७ नवम्बर	''	१४।५०	''
१९ दिसंबर	''	२३।२३	''	२४ दिसम्बर	''	२३।४७	''
१६ जनवरी	२००२ ई.	[illegible]		[illegible]		[illegible]	''
१२ फरवरी	''	१४।०८	''	१७ फरवरी	''	१५।१२	''

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२५ मार्च	१८।३१	''	२७ मार्च	२०।४५	''
३ अप्रैल	१७।०४	''	५ अप्रैल	१३।०६	''
११ ''	२८।४२	''	१४ ''	७।५८	''
२१ ''	२६।००	''	२३ ''	२७।३७	''
३० ''	२२।५१	''	२ मई	१९।५५	''
९ मई	१३।५४	''	११ ''	१६।३७	''
१९ ''	१०।३१	''	२१ ''	१२।०९	''
२७ ''	२८।२३	''	२९ ''	२५।१९	''
५ जून	२२।००	''	७ जून	२४।४९	''
१५ ''	१९।१०	''	१७ ''	२१।२८	''
२४ ''	११।३६	''	२६ ''	७।२३	''
२ जुलाई	२८।३२	''	५ जुलाई	७।५५	''
१२ ''	२७।०१	''	१५ ''	६।२०	''
२१ ''	२१।०१	''	२३ ''	१५।३२	''
३० ''	१०।०९	''	१ अगस्त	१३।५७	''
९ अगस्त	९।३९	''	९ ''	१३।४७	''
१८ ''	७।४५	''	१९ ''	२५।४२	''
२६ ''	१६।०८	''	२८ ''	१९।४३	''
५ सितम्बर	१५।२९	''	७ सितम्बर	१९।४८	''
१४ ''	१८।०१	''	१६ ''	१२।३४	''
२२ ''	२३।४०	''	२४ ''	२६।१८	''
२ अक्टूबर	२१।३०	''	४ अक्टूबर	२५।२६	''
११ ''	२६।१६	''	१३ ''	२२।२३	''
२० ''	८।५७	''	२२ ''	१०।२३	''
२९ ''	२८।३४	''	१ नवम्बर	८।०३	''
८ नवम्बर	८।१५	''	१० ''	५।२६	''
१६ ''	१८।५४	''	१८ ''	१९।३७	''
२६ ''	१२।४७	''	२८ ''	१६।१९	''
५ दिसम्बर	१३।४३	''	७ दिसम्बर	१०।५३	''
१३ ''	२७।५०	''	१५ ''	२८।४४	''
२३ ''	२१।२५	''	२५ ''	२५।३६	''
१ जनवरी	२१।०४	''	३ जनवरी	१६।५८	''
१० ''	१०।४१	''	१२ ''	१२।२५	''
२० ''	५।२४	''	२२ ''	१०।२८	''
२९ ''	७।०५	''	३० ''	२५।४०	''
६ फरवरी	१६।०९	''	८ फरवरी	१८।२६	''
१६ ''	१२।१७	''	१८ ''	१७।५१	''
२५ ''	१८।२०	''	२७ ''	१२।३७	''
५ मार्च	२२।१७	''	७ मार्च	२४।०२	''
[illegible] ''	१८।२३	''	१७ ''	२३।५६	''
२४ ''	२८।३०	''	२६ ''	२३।५५	''

ग्रहण विवरण संवत् २०५८ वि.

इस वर्ष संवत् २०५८ विक्रमी में (दिनांक २६ मार्च २००१ से १२ अप्रैल २००२ तक) सम्पूर्ण भूमण्डल पर तीन ग्रहण दिखाई देंगे। जिनमें दो ग्रहण सूर्य के तथा एक ग्रहण चन्द्रमा का होगा। जिनका विवरण इस प्रकार है:—

(१) **खग्रास सूर्यग्रहण**—दिनांक २१ जून २००१ ई.

(२) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण**—दिनांक ५ जुलाई २००१ ई.

(३) **कंकण खग्रास सूर्यग्रहण**—दिनांक १४ दिसंबर २००१ ई.

इन ग्रहणों में से दोनों सूर्यग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। भारत में केवल एक खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।

भारत में दिखाई देने वाले एक मात्र चन्द्रग्रहण का विस्तृत विवरण

(१) **ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण**—यह ग्रहण आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार दिनांक ५ जुलाई २००१ ई. को सम्पूर्ण भारत के साथ-साथ आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, पेसिफिक महासागर, हिन्द महासागर, श्रीलंका, नेपाल, बर्मा में खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। भारत में पूर्वी-दक्षिणी राज्यों को छोड़कर राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, गुजरात तथा पश्चिमी महाराष्ट्र, म.प्र., उ.प्र. में ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा। अर्थात् इन राज्यों में चन्द्रमा ग्रहण लगा हुआ उदय होगा। इस ग्रहण के स्पर्श-मोक्ष आदि का काल भारतीय स्टैं.टा. में इस प्रकार है।

ग्रहण प्रारम्भ	सायं ७ घं. ६ मि.
ग्रहण मध्य	रात्रि ८ घं. २५ मि.
खग्रास ग्रहण समाप्त	रात्रि ९ घं. ४५ मि.

प. मोक्ष उ. द. स्प. पू.
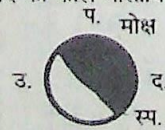
ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक पश्चिमी उत्तर भारत में ५ जुलाई २००१ ई. को प्रात: सूर्योदय के साथ ही प्रारम्भ हो जायेगा तथा पूर्वी उ.प्र., पूर्वी म.प्र., बिहार, पं. बंगाल, आसाम, उड़ीसा, मद्रास, केरल आदि राज्यों में प्रात: १० बजकर ०६ मिनट पर सूतक प्रारम्भ होगा। सूतक काल में वृद्ध, बालक व रोगियों को छोड़कर धार्मिक जनों को भोजनादि नहीं करना चाहिए।

नोट—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण उत्तरी-पश्चिमी भारत में ग्रस्तोदय दिखाई देगा। शास्त्र निर्देशानुसार जहां चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण ग्रस्तोदय होता है उसका पर्वकाल क्रमश: चन्द्रोदय या सूर्योदय होने पर ही माना जाता है। इसके अनुसार इस चन्द्रग्रहण का पर्वकाल भारत के उत्तरी-पश्चिमी राज्यों में चन्द्रोदय के समय ही शुरू होगा। इन राज्यों के प्रमुख नगरों में चन्द्रोदय काल व पर्वकाल इस प्रकार है।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र व धनुराशि में हो रहा है। अत: इस नक्षत्र एवं धनु राशि वालों को विशेष अनिष्ट फलप्रद रहेगा। इसके अतिरिक्त वृष, कन्या व मकर राशि वालों को भी अच्छा नहीं है। कर्क, तुला, कुंभ एवं मीन राशि वालों को उत्तम फलदायक रहने के साथ मेष, मिथुन, सिंह व वृश्चिक राशि वालों को मिले-जुले फलदायक रहेगा। अशुभ नक्षत्र व राशिवालों के अलावा गर्भिणी महिलाओं को भी ग्रहण का दर्शन नहीं करना चाहिए।

नगर	चन्द्रोदय सांय घं.मि.	पर्वकाल घं.मि.	नगर	चन्द्रोदय सांय घं.मि.	पर्वकाल घं.मि.
अम्बाला	७।२२	२।२३	जयपुर	७।१८	२।२७
अमृतसर	७।३२	२।१३	जालन्धर	७।२९	२।१६
अजमेर	७।२३	२।२२	जोधपुर	७।२८	२।१७
अनन्तनाग (काश्मीर)	७।३५	२।१०	दिल्ली	७।१६	२।२९
अलवर	७।१६	२।२९	नासिक	७।१५	२।३०
अलीगढ़ (उ.प्र.)	७।१२	२।३३	पटियाला	७।२५	२।२०
अहमदाबाद	७।२५	२।२०	पोरबन्दर (गुज.)	७।३५	२।१०
आगरा	७।०९	२।३६	मथुरा	७।१३	२।३२
इन्दौर	७।१२	२।३३	मुम्बई	७।१५	२।३०
उज्जैन	७।१३	२।३२	राजकोट	७।३०	२।१५
उदयपुर (राज.)	७।२२	२।२३	रोहतक	७।२०	२।२५
कपूरथला	७।३०	२।१५	शिमला	७।२३	२।२२
करनाल	७।२०	२।२५	श्रीनगर	७।३८	२।०७
कुरुक्षेत्र	७।२३	२।२२	सीकर	७।२१	२।२४
गाजियाबाद	७।१५	२।३०	सूरत	७।१९	२।२६
गुड़गांव	७।१७	२।२८	हरिद्वार	७।१६	२।२९
चण्डीगढ़	७।२३	२।२२	हिसार	७।२३	२।२२

ग्रहण के अन्य फल—चन्द्रग्रहण आषाढ़ मास में होने से वर्षा में कमी तथा धान्यों के साथ-साथ घृत व तेलों में तेजी होगी। पश्चिमी उत्तरी भारत में ग्रस्तोदय होने से इन राज्यों में भय व आतंक की वृद्धि होगी। शासित पार्टी को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़े। युद्धमय वातावरण से सीमा प्रान्तों पर अशांति रहे। व्यापारी व वैद्य वर्ग को कष्टकारक तथा गुरुवार का चन्द्रग्रहण होने से पीले रंग की वस्तुओं एवं सुगन्धित पदार्थों में तेजी की चाल निकलेगी।

भारत से बाहर दिखाई देने वाले ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(१) **खग्रास सूर्यग्रहण**—आषाढ़ कृष्ण अमावस्या गुरुवार दिनांक २१ जून २००१ ई. को दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी पूर्वी भाग में, दक्षिणी अफ्रीका तथा दक्षिणी अटलांटिक महासागर में खग्रास व खण्डग्रास रूप में सूर्य ग्रहण दिखाई देगा। यह ग्रहण भा.स्टैं.टा. अनुसार दोपहर बाद ३।०५ से रात्रि ८।०५ बजे तक दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण कहीं भी दिखाई नहीं देगा। अत: इसको मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह ग्रहण खग्रास रूप में अफ्रीका के अंगोला से मेडागास्कर तक दिखाई देगा। जांबिया में भी यह ग्रहण पूर्ण दिखाई देगा।

(२) **कंकण खग्रास सूर्य ग्रहण**—मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या शुक्रवार दिनांक १४ दिसम्बर २००१ ई. को उत्तरी अमेरिका, मेक्सिको, अटलांटिक महासागर में कंकण खग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा। यह ग्रहण भारतीय स्टैं.टा. अनुसार मध्य रात्रि ११।४५ से अर्द्धरात्रि पश्चात् ४।३० बजे के मध्य दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण भी दिखाई नहीं देगा। अत: इसको मानने की आवश्यकता नहीं है।

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५८ विक्रमी

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२७ मार्च	उ.भा.	४
३१ "	रेवती	१
३ अप्रैल	"	२
६ "	"	३
१० "	"	४
१३ "	अश्वि.	१ मेष
१७ "	"	२
२० "	"	३
२३ "	"	४
२७ "	भरणी	१
३० "	"	२
४ मई	"	३
७ "	"	४
११ "	कृत्ति.	१
१४ "	"	२ वृष
१८ "	"	३
२१ "	"	४
२५ "	रोहि.	१
२८ "	"	२
३१ "	"	३
४ जून	"	४
७ "	मृग.	१
११ "	"	२
१४ "	"	३मिथु.
१८ "	"	४
२१ "	आर्द्रा	१
२५ "	"	२
२८ "	"	३
२ जुलाई	"	४
५ "	पुन.	१
९ "	"	२
१२ "	"	३
१६ "	"	४ कर्क
१९ "	पुष्य	१
२३ "	"	२
२६ "	"	३
३० "	"	४
२ अगस्त	अश्ले.	१

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ अग.	आश्ले.	२
९ "	"	३
१३ "	"	४
१६ "	मघा	१ सिंह
२० "	"	२
२३ "	"	३
२७ "	"	४
३० "	पू.फा.	१
२ सितंबर	"	२
६ "	"	३
९ "	"	४
१३ "	उ.फा.	१
१६ "	"	२कन्या
२० "	"	३
२३ "	"	४
२६ "	हस्त	१
३० "	"	२
३ अक्टू.	"	३
७ "	"	४
१० "	चित्रा	१
१३ "	"	२
१७ "	"	३तुला
२० "	"	४
२३ "	स्वाति	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
२ नवम्बर	"	४
६ "	विशा.	१
९ "	"	२
१२ "	"	३
१६ "	"	४वृश्चि.
१९ "	अनु.	१
२२ "	"	२
२६ "	"	३
२९ "	"	४
२ दिसंबर	ज्ये.	१
५ "	"	२
९ "	"	३

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१२ दिसं.	ज्ये.	४
१५ "	मूल	१ धनु
१९ "	"	२
२२ "	"	३
२५ "	"	४
२८ "	पू.षा.	१
सन् २००२ ई.		
१ जन.	पू.षा.	२
४ "	"	३
७ "	"	४
१० "	उ.षा.	१
१४ "	"	२मकर
१७ "	"	३
२० "	"	४
२४ "	श्रवण	१
२७ "	"	२
३० "	"	३
२ फर.	"	४
६ "	धनि.	१
९ "	"	२
१२ "	"	३कुंभ
१६ "	"	४
१९ "	शत.	१
२२ "	"	२
२६ "	"	३
१ मार्च	"	४
४ "	पू.भा.	१
८ "	"	२
११ "	"	३
१४ "	"	४मीन
१८ "	उ.भा.	१
२१ "	"	२
२४ "	"	३
२८ "	"	४
३१ "	रेवती	१
३ अप्रैल	"	२
७ "	"	३
१० "	"	४

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३१ मार्च	ज्ये.	४ वृश्चि
१० अप्रैल	मूल	१ धनु
२३ "	"	२
१२ मई	वक्री	
२८ "	मूल	१
१० जून	ज्येष्ठा	४वृश्चि.
२० "	"	३
२ जुला.	"	२
१९ "	मार्गी	
६ अगस्त	ज्ये.	३
१८ "	"	४
२६ "	मूल	१ धनु
३ सितं.	"	२
९ "	"	३
१६ "	"	४
२२ "	पू.षा.	१
२७ "	"	२
३ अक्टू.	"	३
८ "	"	४
१३ "	उ.षा.	१
१८ "	"	२मकर
२३ "	"	३
२८ "	"	४
२ नवंबर	श्रवण	१
७ "	"	२
११ "	"	३
१६ "	"	४
२१ "	धनि.	१
२५ "	"	२
३० "	"	३कुंभ
५ दिसं.	"	४
९ "	शत.	१
१४ "	"	२
१८ "	"	३
२३ "	"	४
२७ "	पू.भा.	१

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
सन् २००२ ई.		
१ जनवरी	पू.भा.	२
६ "	"	३
१० "	"	४ मीन
१५ "	उ.भा.	१
१९ "	"	२
२४ "	"	३
२८ "	"	४
२ फर.	रेवती	१
७ "	"	२
११ "	"	३
१६ "	"	४
२१ "	अश्विन	१ मेष
२५ "	"	२
२ मार्च	"	३
७ "	"	४
११ "	भरणी	१
१६ "	"	२
२१ "	"	३
२६ "	"	४
३१ "	कृत्ति.	१
४ अप्रैल	"	२ वृष
९ "	"	३
१४ "	"	४

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२७ मार्च	पू.भा.	१ कुंभ
२९ "	"	२
३१ "	"	३
२ अप्रैल	"	४ मीन
४ "	उ.भा.	१
६ "	"	२
८ "	"	३
१० "	"	४
१३ "	रेवती	१

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१३ अप्रैल	रेवती	२
१५ "	"	३
१७ "	"	४
१८ "	अश्वि.	१मेष
२० "	"	२
२२ "	"	३
२३ "	"	४
२५ "	भरणी	१
२६ "	"	२
२८ "	"	३
२९ "	"	४
१ मई	कृति.	१
३ "	"	२वृष
४ "	"	३
६ "	"	४
८ "	रोहिणी	१
१० "	"	२
१२ "	"	३
१४ "	"	४
१६ "	मृग.	१
१९ "	"	२
२२ "	"	३मिथु.
२६ "	"	४
४ जून	वक्री	
१३ "	मृग.	३
१९ "	"	२ वृष
२८ "	मार्गी	
६ जुला.	मृग.	३ मिथु.
१० "	"	४
१३ "	आर्द्रा	१
१५ "	"	२
१८ "	"	३
२० "	"	४
२२ "	पुन.	१
२४ "	"	२
२५ "	"	३
[illegible] "	"	४कर्क

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२९ जुला.	पुष्य	१
३० "	"	२
१ अग.	"	३
२ "	"	४
४ "	अश्ले.	१
६ "	"	२
७ "	"	३
९ "	"	४
११ "	मघा	१सिंह
१२ "	"	२
१४ "	"	३
१६ "	"	४
१८ "	पू.फा.	१
१९ "	"	२
२१ "	"	३
२३ "	"	४
२५ "	उ.फा.	१
२८ "	"	२कन्या
३० "	"	३
१ सितं.	"	४
३ "	हस्त	१
६ "	"	२
८ "	"	३
११ "	"	४
१३ "	चित्रा	१
१७ "	"	२
२० "	"	३तुला
२४ "	"	४
१ अक्टू.	वक्री	
८ "	चित्रा	३
११ "	"	२कन्या
१४ "	"	१
१७ "	हस्त	४
२३ "	मार्गी	
२९ "	चित्रा	१
१ नवं.	"	२
३ "	"	३ तुला
५ "	"	४

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ नवं.	स्वाति	१
१० "	"	२
१२ "	"	३
१४ "	"	४
१६ "	विशा.	१
१८ "	"	२
२० "	"	३
२२ "	"	४वृश्चि.
२५ "	अनु	१
२७ "	"	२
२९ "	"	३
१ दिसं.	"	४
३ "	ज्ये.	१
५ "	"	२
७ "	"	३
९ "	"	४
११ "	मूल	१ धनु.
१४ "	"	२
१६ "	"	३
१८ "	"	४
२० "	पू.षा.	१
२२ "	"	२
२४ "	"	३
२६ "	"	४
२८ "	उ.षा.	१
३० "	"	२मकर
सन् २००२ ई.		
२ जन	उ.षा.	३
४ "	"	४
६ "	श्रवण	१
९ "	"	२
११ "	"	३
१६ "	"	४
१८ "	वक्री	
२१ "	श्रवण	३
२५ "	"	२
२८ "	"	१
३० "	उ.षा.	४

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५८ विक्रमी

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३ फर.	उ.षा.	३
८ ''	मार्गी	
१४ ''	उ.षा.	४
१९ ''	श्रवण	१
२२ ''	''	२
२५ ''	''	३
२८ ''	''	४
३ मार्च	धनि.	१
५ ''	''	२
७ ''	''	३कुंभ
१० ''	''	४
१२ ''	शत.	१
१४ ''	''	२
१६ ''	''	३
१८ ''	''	४
२० ''	पू.भा.	१
२२ ''	''	२
२४ ''	''	३
२६ ''	''	४मीन
२८ ''	उ.भा.	१
२९ ''	''	२
३१ ''	''	३
२ अप्रै.	''	४
४ ''	रेवती	१
५ ''	''	२
७ ''	''	३
८ ''	''	४
१० ''	अश्वि.	१मेष
१२ ''	''	२
१३ ''	''	३

गुरु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ मार्च	रोहिणी	२
१६ अप्रैल	''	३
२ मई	''	४
१७ ''	मृग.	१
२ जून	''	२
१६ ''	''	३मिथु.

गुरु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३० जून	मृग	४
१५ जुला.	आर्द्रा	१
३० ''	''	२
१६ अग.	''	३
४ सितं.	''	४
२९ ''	पुन.	१
२ नवं.	वक्री	
६ दिसं.	आर्द्रा	४
सन् २००२ ई.		
१ जन.	आर्द्रा	३
२९ ''	''	२
१ मार्च	मार्गी	
२ अप्रैल	आर्द्रा	३

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ मार्च	व.उ.भा.	४मीन
२ अप्रैल	''	३
९ ''	''	२
२० ''	मार्गी	
१ मई	उ.भा.	३
८ ''	''	४
१४ ''	रेवती	१
१८ ''	''	२
२२ ''	''	३
२६ ''	''	४
३० ''	अश्वि.	१मेष
३ जून	''	२
७ ''	''	३
१० ''	''	४
१३ ''	भरणी	१
१७ ''	''	२
२० ''	''	३
२३ ''	''	४
२६ ''	कृति.	१
२९ ''	''	२वृष
३ जुला.	''	३
६ ''	''	४
९ ''	रोहि.	१

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१२ जुला.	रोहि.	२
१५ ''	''	३
१८ ''	''	४
२१ ''	मृग.	१
२४ ''	''	२
२७ ''	''	३मिथु.
३० ''	''	४
१ अग.	आर्द्रा	१
४ ''	''	२
७ ''	''	३
१० ''	''	४
१३ ''	पुन.	१
१६ ''	''	२
१९ ''	''	३
२२ ''	''	४कर्क
२४ ''	पुष्य	१
२७ ''	''	२
३० ''	''	३
२ सितं.	''	४
५ ''	अश्ले.	१
७ ''	''	२
१० ''	''	३
१३ ''	''	४
१६ ''	मघा	१सिंह
१८ ''	''	२
२१ ''	''	३
२४ ''	''	४
२६ ''	पू.फा.	१
२९ ''	''	२
२ अक्टू.	''	३
५ ''	''	४
७ ''	उ.फा.	१
१० ''	''	२कन्या
१३ ''	''	३
१५ ''	''	४
१८ ''	हस्त	१
२१ ''	''	२
२३ ''	''	३

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२६ अक्टू.	हस्त	४
२९ ''	चित्रा	१
३१ ''	''	२
३ नवं.	''	३तुला
६ ''	''	४
८ ''	स्वाति	१
११ ''	''	२
१४ ''	''	३
१६ ''	''	४
१९ ''	विशा.	१
२२ ''	''	२
२४ ''	''	३
२७ ''	''	४वृश्चि.
३० ''	अनु.	१
२ दिसं.	''	२
५ ''	''	३
८ ''	''	४
१० ''	ज्येष्ठा	१
१३ ''	''	२
१६ ''	''	३
१८ ''	''	४
२१ ''	मूल	१धनु
२४ ''	''	२
२६ ''	''	३
२९ ''	''	४
सन् २००२ ई.		
२ जन.	पू.षा.	१
३ ''	''	२
७ ''	''	३
८ ''	''	४
११ ''	उ.षा.	१
१४ ''	''	२मकर
१६ ''	''	३
१९ ''	''	४
२२ ''	श्रवण	१
२४ ''	''	२
२७ ''	''	३
३० ''	''	४
१ फर.	धनि.	१

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
४ फर.	धनि.	२
७ ''	''	३कुंभ
९ ''	''	४
१२ ''	शत.	१
१५ ''	''	२
१७ ''	''	३
२० ''	''	४
२३ ''	पू.भा.	१
२५ ''	''	२
२८ ''	''	३
३ मार्च	''	४मीन
५ ''	उ.भा.	१
८ ''	''	२
११ ''	''	३
१३ ''	''	४
१६ ''	रेवती	१
१९ ''	''	२
२१ ''	''	३
२४ ''	''	४
२७ ''	अश्वि.	१ मेष
३० ''	''	२
१ अप्रैल	''	३
४ ''	''	४
७ ''	भरणी	१
९ ''	''	२
१२ ''	''	३

शनि नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२६ मार्च	कृत्ति.	३
२५ अप्रैल	''	४
२१ मई	रोहि.	१
१६ जून	''	२
१५ जुलाई	''	३
२२ अगस्त	''	४
२६ सितं.	वक्री	
१ नवं.	रोहि.	३
१५ दिसं.	''	२
सन् २००२ ई.		
८ फरवरी	मार्गी	
२ मार्च	रोहि.	३

राहु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ अप्रैल	आर्द्रा	३
१० जून	''	२
१२ अगस्त	''	१
१३ अक्टू.	मृग.	४
१५ दिसं.	''	३
सन् २००२ ई.		
१६ फरवरी	मृग.	२ वृष

केतु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ अप्रैल	पू.षा.	१
१० जून	मूल	४
१२ अग.	''	३
१३ अक्टू.	''	२
१५ दिसं.	''	१
सन् २००२ ई.		
१६ फर.	ज्ये.	४वृश्चि.

हर्षल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१० अप्रैल	धनि.	३ कुंभ
३० मई	वक्री	
१९ जुला.	धनि.	२ मकर
३० अक्टू.	मार्गी	
सन् २००२ ई.		
२८ जन.	धनि.	३ कुंभ
३० मार्च	''	४

नेपच्यून नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
११ मई	वक्री	
५ अग.	श्रवण	१
१८ अक्टू.	मार्गी	
२५ दिसं.	श्रवण	२
सन् २००२ ई.		
३ अप्रैल	श्रवण	३

प्लूटो नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ जून	वक्री ज्येष्ठा	१
२३ अगस्त	मार्गी	
३ नवं.	ज्येष्ठा	२

प्लूटो नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
सन् २००२ ई.		
१० फरवरी	ज्येष्ठा	३
२० मार्च	वक्री	

भौम उदयास्त

वर्ष पर्यन्त उदय

बुधोदयास्त

ता. मास	उदय/अस्त	दिशा
१० अप्रैल	अस्त	पूर्व
४ मई	उदय	पश्चिम
७ जून	अस्त	पश्चिम
२५ जून	उदय	पूर्व
२५ जुला.	अस्त	पूर्व
१९ अग.	उदय	पश्चिम
७ अक्टू.	अस्त.	पश्चिम
२० अक्टू.	उदय	पूर्व
१२ नवं.	अस्त	पूर्व
२८ दिसं.	उदय	पश्चिम
सन् २००२ ई.		
२१ जन.	अस्त	पश्चिम
२ फर.	उदय	पूर्व
२४ मार्च	अस्त	पूर्व

गुरु उदयास्त

ता. मास	उदय/अस्त	दिशा
४ जून	अस्त	पश्चिम
२८ जून	उदय	पूर्व

शुक्र उदयास्त

ता. मास	उदय/अस्त	दिशा
२८ मार्च	अस्त	पश्चिम
१ अप्रैल	उदय	पूर्व
२१ दिसं.	अस्त	पूर्व
सन् २००२ ई.		
७ फर.	उदय	पश्चिम

शनि उदयास्त

ता. मास	उदय/अस्त	दिशा
७ मई	अस्त	पश्चिम
१२ जून	उदय	पूर्व

मंगल वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में मंगल मार्गी

१२ मई वक्री

मंगल वक्री-मार्गी

२० जुला. मार्गी

वर्षान्त तक मार्गी

बुध वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में बुध मार्गी

४ जून वक्री

२८ जून मार्गी

१ अक्टू. वक्री

२३ अक्टू. मार्गी

१८ जन. २०००२ वक्री

८ फर. मार्गी

गुरु वक्री-मार्गी

२ नवं. वक्री

१ मार्च २००२ ई. मार्गी

शुक्र वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में शुक्र वक्री

२० अप्रैल मार्गी

वर्षान्त तक मार्गी

शनि वक्री-मार्गी

वर्षारम्भ में शनि मार्गी

२६ सितं. वक्री

८ फरवरी २००२ मार्गी

वर्षान्त तक मार्गी

हर्षल वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में हर्षल मार्गी

३० मई वक्री

३० अक्टू. मार्गी

नेपच्यून वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में नेपच्यून मार्गी

११ मई वक्री

१८ अक्टू. मार्गी

प्लूटो वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में प्लूटो वक्री

२३ अगस्त मार्गी

२९ मार्च २००२ ई. वक्री

विक्रम संवत् २०५८ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, [illegible] पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर [illegible] योगों का विवरण

प्रत्येक [illegible] र की अंग्रेजी तारीखों में बनने वाले भा.स्टैं. टाइम से शुभ योगों में किए गये सभी कार्य सफल होने की संभावना होती है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२७ मार्च	६।१९	से	२७ मार्च	२०।४५	तक
२८ "	२१।१९	"	२९ "	६।१६	"
२ अप्रैल	१८।४०	"	३ अप्रै.	६।११	"
३ "	१७।०४	"	४ "	६।०९	"
६ "	६।०७	"	६ "	१०।५४	"
८ "	६।०५	"	८ "	६।५६	"
११ "	६।०२	"	११ "	२८।४२	"
१५ "	१०।३३	"	१६ "	५।५६	"
१६ "	१३।३१	"	१७ "	५।५५	"
२२ "	२७।०३	"	२३ "	५।४९	"
२४ "	२७।४६	"	२६ "	५।४६	"
२९ "	२४।०९	"	३० "	२२।५१	"
१ मई	५।४२	"	१ मई	२१।२६	"
९ "	५।३६	"	९ "	१३।५४	"
१३ "	५।३३	"	१३ "	२१।३८	"
१४ "	५।३३	"	१४ "	२४।३७	"
२० "	११।३९	"	२१ "	५।२९	"
२२ "	१२।०३	"	२४ "	५।२८	"
२७ "	६।०१	"	२७ "	२८।२३	"
२ जून	२१।२३	"	३ जून	५।२५	"
४ "	२१।२१	"	५ "	५।२४	"
९ "	२९।३५	"	१० "	५।२४	"
११ "	५।२४	"	११ "	८।२९	"
१५ "	१९।१०	"	१६ "	५।२४	"
१७ "	५।२५	"	१७ "	२१।२८	"
१९ "	५।२५	"	१९ "	२०।५६	"
२० "	५।२५	"	२१ "	५।२५	"
२२ "	१६।०५	"	२३ "	५।२६	"
२४ "	५।२६	"	२४ "	११।३६	"
२७ "	२८।१८	"	२८ "	५।२७	"
३० "	५।२८	"	३० "	२६।५९	"
२ जुला.	५।२९	"	२ जुला.	२८।३२	"
७ "	१२।४९	"	८ "	५।३१	"
१२ जुला.	२७।०१	से	१४ जुला.	५।३४	तक
१५ "	५।३४	"	१५ "	६।२०	"
१७ "	५।३६	"	१७ "	६।४७	"
१८ "	५।३६	"	१८ "	२८।२०	"
१९ "	२६।१५	"	२० "	२३।४५	"
२५ "	११।०५	"	२६ "	५।४०	"
२८ "	५।४२	"	२८ "	८।३३	"
३० "	५।४३	"	३० "	१०।०९	"
३ अग.	१९।११	"	४ अग.	२२।०६	"
९ "	९।३९	"	११ "	५।४९	"
१३ "	१५।३२	"	१४ "	५।५१	"
१५ "	५।५२	"	१५ "	१४।२१	"
१६ "	१२।४१	"	१७ "	१०।२६	"
२२ "	५।५५	"	२२ "	१७।५१	"
३१ "	६।००	"	३१ "	२८।०७	"
४ सितं.	१२।५३	"	५ सितं.	६।०२	"
६ "	६।०३	"	७ "	१९।४८	"
१० "	६।०५	"	११ "	६।०५	"
१३ "	६।०६	"	१४ "	६।०७	"
२३ "	२४।३६	"	२४ "	६।१२	"
२८ "	६।१४	"	२८ "	१०।२४	"
२ अक्टू.	६।१६	"	२ अक्टू.	२१।३०	"
४ "	६।१७	"	४ "	२५।२६	"
६ "	२७।५७	"	७ "	६।१९	"
८ "	६।१९	"	८ "	२८।४८	"
११ "	६।२१	"	११ "	२६।१६	"
१४ "	१९।४५	"	१५ "	६।२३	"
२१ "	९।१५	"	२२ "	६।२८	"
२८ "	२६।१२	"	२९ "	६।३२	"
३० "	३०।३२	"	३१ "	६।३४	"
१ नवं.	६।३५	"	१ नवं.	८।०३	"
३ "	९।५२	"	४ "	६।३७	"
५ "	६।३८	"	५ "	१०।१३	"
८ "	६।४०	"	८ "	८।१५	"
११ "	६।४२	"	१२ "	६।४३	"
१५ "	१९।३०	"	१६ "	६।४६	"
१८ "	६।४८	"	१८ "	१९।३७	"
२५ "	१०।१७	"	२६ "	६।५४	"
२७ "	१४।५०	"	२८ "	६।५६	"
१ दिसं.	६।५८	से	१ दिसं.	१७।२९	तक
७ "	१०।५३	"	८ "	७।०३	"
९ "	७।०४	"	९ "	३०।४४	"
१२ "	२८।०४	"	१३ "	२७।५०	"
१६ "	२९।५९	"	१७ "	७।०९	"
२३ "	७।१२	"	२३ "	२१।२५	"
२५ "	७।१३	"	२५ "	२५।३६	"
२६ "	२६।४५	"	२७ "	७।१४	"
३१ "	२३।०२	"	१ जन.	७।१६	"
१ जन.	२१।०४	"	२ "	७।१६	"
४ "	७।१६	"	४ "	१५।०५	"
६ "	७।१७	"	६ "	१२।०७	"
९ "	१०।२६	"	१० "	१०।४१	"
१३ "	१३।५४	"	१४ "	७।१७	"
१४ "	१५।४६	"	१५ "	७।१७	"
२२ "	७।१५	"	२२ "	१०।२८	"
२३ "	१२।१०	"	२४ "	७।१५	"
२८ "	९।२९	"	२८ "	३१।०५	"
२९ "	७।१२	"	२९ "	२८।२६	"
६ फर.	७।०८	"	६ फर.	१६।०९	"
१० "	७।०५	"	१० "	२२।२४	"
११ "	७।०४	"	११ "	२४।५०	"
१७ "	१५।१२	"	१८ "	६।५९	"
१९ "	२०।०५	"	२१ "	६।५६	"
२४ "	२०।३१	"	२५ "	१८।२०	"
२६ "	६।५१	"	२६ "	१५।३८	"
२ मार्च	२५।१६	"	३ मार्च	६।४६	"
४ "	२२।३१	"	५ "	६।४४	"
९ "	२८।०८	"	१० "	६।३८	"
१५ "	१८।२३	"	१६ "	६।३२	"
१७ "	६।३०	"	१७ "	२३।५६	"
१९ "	६।२८	"	१९ "	२८।२१	"
२० "	६।२७	"	२१ "	६।२६	"
२४ "	६।२२	"	२४ "	२८।३०	"
३० "	११।४५	"	३१ "	६।१४	"
१ अप्रैल	७।३५	"	१ अप्रै.	३०।३२	"
६ "	१०।१५	"	७ "	६।०६	"
११ "	२४।२८	"	१३ "	६।००	"

अमृत-सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२७ मार्च	६।१९	से	२७ मार्च	२०।४५	तक
८ अप्रैल	६।०५	"	८ अप्रै.	६।५६	"
११ "	६।०२	"	११ "	२८।४२	"
९ मई	५।३६	"	९ मई	१३।५४	"
१५ जून	१९।१०	"	१६ जून	५।२४	"
१३ जुला.	५।३३	"	१३ जुला.	२९।००	"
१० अग.	५।४९	"	१० अग.	११।५७	"
१० सितं.	२२।५१	"	११ सितं.	६।०५	"
१३ "	२०।०९	"	१४ "	६।०७	"
६ अक्टू.	२७।५७	"	७ अक्टू.	६।१९	"
८ "	६।१९	"	८ "	२८।४८	"
११ "	६।२१	"	११ "	२६।१६	"
३० "	३०।३२	"	३१ "	६।३४	"
३ नवं.	९।५२	"	४ नवं.	६।३७	"
५ "	६।३८	"	५ "	१०।१३	"
८ "	६।४०	"	८ "	८।१५	"
११ "	२५।४९	"	१२ "	६।४३	"
२७ "	१४।५०	"	२८ "	६।५६	"
१ दिसं.	६।५८	"	१ दिसं.	१७।२९	"
९ "	८।०२	"	९ "	३०।४४	"
१२ "	२८।०४	"	१३ "	७।०७	"
२५ "	७।१३	"	२५ "	२५।३६	"
६ जन.	७।१७	"	६ जन.	१२।०७	"
९ "	१०।२६	"	१० "	७।१७	"
२२ "	७।१५	"	२२ "	१०।२८	"
६ फर.	७।०८	"	६ फर.	१६।०९	"
१५ मार्च	१८।२३	"	१६ मार्च	६।३२	"
१२ अप्रै.	६।०१	"	१२ अप्रै.	२७।१३	"

रवि पुष्य-गुरु पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग यंत्र, तंत्र, मंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरु पुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होते हैं।

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२९ अप्रै.	२४।०९	से	३० अप्रै.	५।४३	तक
२७ मई	६।०१	"	२७ मई	२८।२३	"
२४ जून	५।२६	"	२४ जून	११।३६	"
१३ सितं.	२०।०९	"	१४ सितं.	६।०७	"
[illegible]	[illegible]	"	१६ अक्टू.	२६।१६	"
८ नवं.	६।४०	से	८ नवं.	८।१५	तक
२४ फर.	२०।३१	"	२५ फर.	६।५२	"
२४ मार्च	६।२२	"	२४ मार्च	२८।३०	"

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित तथा त्रिगुणित फल प्रत्येक काम में दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
३१ मार्च	६।१४	से	३१ मार्च	२०।५०	तक
२ जून	९।२०	"	२ जून	२१।२३	"
१७ जुला.	२९।५३	"	१८ जुला.	५।३६	"
५ अग.	१३।५२	"	५ अग.	२५।०६	"
१८ सितं.	२८।०१	"	१९ सितं.	६।०९	"
२९ "	६।१४	"	२९ "	१२।४८	"
१ दिसं.	२५।२६	"	२ दिसं.	१६।५८	"
१५ जन.	१८।०१	"	१५ जन.	२२।१८	"
२६ जन.	७।१४	"	२६ "	१२।०१	"
३० मार्च	६।१५	"	३० मार्च	११।४५	"

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२४ अप्रै.	२७।४६	से	२५ अप्रै.	५।४७	तक
२९ "	१३।४१	"	२९ "	२४।०९	"
२३ जून	५।२६	"	२३ जून	११।४०	"
१ जुला.	१७।२२	"	१ जुला.	२७।३२	"
७ "	५।३१	"	७ "	१२।४९	"
२५ अग.	५।५७	"	२५ अग.	१३।३२	"
४ सितं.	६।०२	"	४ सितं.	१२।५३	"
९ "	१२।४४	"	९ "	२२।२४	"
२३ अक्टू.	१२।१४	"	२३ अक्टू.	१९।३१	"
२७ "	२९।०१	"	२८ "	२६।१२	"
३ नवं.	६।३६	"	३ नवं.	९।५२	"
११ "	२१।३७	"	११ "	२५।४९	"
११ दिसं.	२८।४१	"	११ दिसं.	२८।५४	"
२२ "	७।१२	"	२२ "	१३।१४	"
५ जन.	७।१६	"	५ जन.	१३।२६	"
१९ फर.	२०।०५	"	१९ फर.	२९।०२	"
२३ "	२७।३३	"	२४ "	२०।३१	"
९ मार्च	२२।१८	"	९ मार्च	२८।०८	"

द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०५८ विक्रमी

मेष–चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल—आशानुरूप लाभ के ग्रह योग नहीं बनने से मन में अशांति रहेगी। दौड़-धूप के साथ-साथ व्यय की अधिकता रहेगी। आलस्य-प्रमाद से उन्नति कम होगी। स्त्री-सन्तान सुख मध्यम प्राप्त होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मई—मध्यम ग्रह चाल के प्रभाव से आर्थिक हानि होगी। कोई अनायास कष्ट पहुंचाने का प्रयास करेगा। आमोद-प्रमोद में व्यय अधिक होगा। घर परिवार में स्वजनों से मनमुटाव होगा। अत: मनोमालिन्य से बचे रहें। सोचा हुआ काम विलम्ब से बनेगा।

जून—अव्यवस्थित दिनचर्या रोग का कारण बनेगी। प्रतियोगिता में सफलता संदिग्ध रहेगी। बढ़ती उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण रखें। पारिवारिक झन्झटों से मुक्ति मिलेगी। शुभाशुभ समाचार आयेगा। सोचा समझा काम सहयोग से बनेगा।

जुलाई—नवीन कार्य प्रारम्भ नहीं करें। ग्रह भाग्य विकास में बाधक है। छोटी यात्रा लाभप्रद रहेगी। घर-गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी। कानूनी विवाद में नहीं उलझें, स्वास्थ्य नियमों का पालन करें। रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा।

अगस्त—गोचर ग्रह मध्यम फलदायक है। पुराने रोग, ऋण, उपद्रवादि से छुटकारा मिलेगा। खरीद फरोख्त के धन्धे से लाभ होगा। राजनैतिक माहौल में सितारा चमकेगा। चोर, उचक्के, लफंगे, वाहनादि से सावधानी बरतें। उत्तरार्ध में श्रेष्ठ विचारों का उद्‌भव होगा।

सितम्बर—भाग्य सहारा मिलने वाले शुभफलों में सहायक है। बढ़ते जनसम्पर्क व ऐश्वर्य वृद्धि से पड़ौसी जलेंगे। आवश्यक-अनावश्यक भागदौड़ का चक्कर चलेगा। घर गृहस्थी में सरसता का संयोग बनेगा।

अक्टूबर—यशोपलब्धि प्राप्त होगी। व्यावसायिक क्षेत्र में उत्तरदायित्व बढ़ेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। युवा वर्ग की पठन-पाठन, साहित्य, संगीत में रुचि बढ़ेगी। अनजान से दोस्ती का हाथ ना मिलायें।

नवम्बर—नव निर्माण तथा लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। घर-गृहस्थी में सरसता बनी रहेगी। बदलते परिवेश का ध्यान रखें। इष्ट आराधना, संयम बरतना श्रेष्ठ रहेगा।

दिसम्बर—साथी फायदा पहुंचाने की चेष्टा करेंगे। राजनैतिक, सामाजिक जनसम्पर्क बढ़ेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आगमन प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। कानूनी विवाद ले देकर छूट जायेगा।

जनवरी २००२—मास में गोचर ग्रह तरक्की में सहायक हैं। अकर्मण्यता अदृश्य फलों में बाधक ही नहीं, भाग्यावरोधक भी हैं। प्रमाद, आलस्य, उच्चाकांक्षायें न बढ़ने दें। घर गृहस्थी की खुशी व्यापेगी। प्रत्येक कदम सोच विचार कर उठावें।

फरवरी—गोचर ग्रह मध्यम फलदायक हैं। उच्चाधिकारी की हां में हां मिलाते रहें। लोकोपवाद, मर्यादारहित व्यवहार, स्वास्थ्य हानि से बचे रहें। प्रत्येक कदम उठाते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

मार्च—ग्रह चाल भाग्य विकास में सहायक हैं। अच्छी खबर मन खुश करेगी। घर गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी। आशातीत लाभ की संभावना बनेगी। स्थान परिवर्तन, लम्बी यात्रा सुखद नहीं। दोस्तों में मटरगस्ती चलती रहेगी।

वृष–ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल—चल रहे सामयिक काम में आवश्यक भागदौड़ के चक्कर से स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा। विशुद्ध लाभ अधिक होगा। घर गृहस्थ की समस्या का समाधान मिलेगा। सामाजिक काम में धन खर्च होगा।

मई—सोचा हुआ काम देर से बनेगा। शत्रु नुकसान पहुंचाने की कुचेष्टा करेगा। स्वास्थ्य पर मौसम की प्रतिक्रिया होगी। खर्च की अधिकता से मन नित नई उधेड़ बुन में लगा रहेगा। दोस्तों के साथ अच्छी पटेगी।

जून—खरीद-फरोख्त के धन्धे से लाभ होगा। श्रीवृद्धि से पड़ौसियों को ईर्ष्या होगी। संयम बरतने पर काम बन जायेगा। देवदर्शन व धर्म के कामों में व्यय होगा। घर गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी। समय रहते समस्या को सुलझाने की कोशिश करें।

जुलाई—जमा खाता बढ़ेगा। कृषक तथा श्रमिक वर्ग खुशहाली महसूस करेगा। रुका हुआ धन मिलेगा। शरीर में स्फूर्ति का संचार होगा। अपने बल पौरुष से काम पूरा होगा। स्त्री कष्ट से मन में थोड़ी बेचैनी रह सकती है। मेहनत के चलते सेहत का ध्यान रखें।

अगस्त—स्थान परिवर्तन में यात्राजन्य पीड़ा से मन चिन्ताग्रस्त रहेगा। बन्धुजनों से सहयोग यथावत मिलता रहेगा। राजकाज में उलझे कामों का निपटारा होता दिखाई देगा। स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पुराने रोग, ऋण व विवाद से छुटकारा प्राप्त हो जायेगा।

सितम्बर—अधिक मेहनत करने पर भी फायदा कम प्राप्त होगा। स्त्री पुत्रादि से कष्ट प्राप्त होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में लाभ पूर्ववत प्राप्त रहेगा। दुष्टजनों की संगति से बचें वे आपको नुकसान पहुंचायेंगे। कानूनी विवाद से बचें। पड़ौसी की गतिविधियों पर भी नजर रखें।

अक्टूबर—गुप्त चिन्ता रहने से मन में असन्तोष रहेगा। इष्ट आराधना से लाभ होगा। भाग्यफल ठीक होने से पुराने कामों में लाभ प्राप्त होता रहेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा। यात्रा छोटी मगर लाभप्रद रहेगी। संतान सुख प्राप्त होने से मनोबल ऊंचा रहेगा।

नवम्बर—अव्यवस्थित दिनचर्या रोग का कारण बनेगी। व्यापार में स्थिरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में धनखर्चा होगा। देवदर्शन का लाभ प्राप्त होगा। शत्रु पक्ष से सचेत रहें। पड़ौसी से सरसतापूर्ण व्यवहार रखें।

दिसंबर—गुप्त चिन्ताओं में वृद्धि होगी। मस्तिष्क व नेत्र जन्य विकार उत्पन्न होंगे। मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। धार्मिक यात्रा होने का प्रबल योग बना है। कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। स्त्री सन्तान सुख मध्यम प्राप्त होगा।

जनवरी २००२ ई.—मर्यादारहित व्यवहार से नुकसान संभव है। आलस्य-प्रमाद ना बढ़ने दें। अनावश्यक यात्राएं करना हानिप्रद रहेंगी। समय का महत्व समझकर काम करने वाले भौतिक विकास में भागीदार बनेंगे। उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण रखें। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें।

फरवरी—चौपाए वाहन दुर्घटना से नुकसान संभव है। मान-सम्मान व यश वृद्धि से पड़ौसियों को जलन होगी। राजनैतिक क्षेत्र का विस्तार होगा। उच्चाधिकारी से स्नेहपूर्ण व्यवहार बनाये रखें। नवीन कार्य सोच समझकर ही प्रारम्भ करें।

मार्च—मास कुछ नवीन विशेषताएं लिए आ रहा है। लाभ अधिक होगा व व्यय की कमी रहेगी। समय का सही उपयोग करें। घरेलू वातावरण व स्वास्थ्य हानि के प्रति सावचेत रहें।

मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल—आय कम तथा व्यय कीअधिकता रहेगी। स्त्री पक्ष की चिन्ता बनी रहेगी। मन में खिन्नता रहेगी। व्यापारिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। उच्चपदस्थ अधिकारियों व राजनैतिक लोगों से मेलजोल बढ़ेगा।

मई—वाणी पर संयम रखें। क्रोध की अधिकता से बनते कार्यों में रुकावटें आयेंगी। पारिवारिक वातावरण कलहपूर्ण होगा। धन खर्चे में फिजूल वृद्धि होगी। सेहत में कमजोरी आयेगी। स्त्री कष्ट पूर्ववत रहेगा।

जून—मास में आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। व्यर्थ का विवाद होने का भय बना रहेगा। मानसिक तनाव से घबराहट बनी रहेगी। व्यवसाय में प्रगति के आसार बनेंगे। शत्रु उत्पन्न होंगे लेकिन आपकी सजगता के सामने परास्त होंगे। स्व विवेक से निर्णय लेकर काम करें।

जुलाई—कारोबार धंधे में स्थिरता बनी रहेगी। उच्च पदस्थ लोगों के सम्पर्क से रुके कार्य बनेंगे। दोस्त इच्छित सहायता करेंगे। धन का सही उपयोग करें। आर्थिक सहयोग मिलने से नवीन योजना का विचार बनेगा। दूरदराज की यात्रा संभव है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

अगस्त—सहपाठी, घनिष्ठ मित्र रचनात्मक काम में सहयोग करेंगे। परोपकार की भावना का विकास होगा। यश व कीर्ति बढ़ेगी। घर परिवार में नये मेहमान पर विशेष खर्चा होगा। अनावश्यक भागदौड़ का चक्कर चलेगा। स्त्री सहयोग मध्यम प्राप्त होगा।

सितम्बर—मास में वृद्धि की चातुर्यता से अधूरे काम पूरे होंगे। स्वजनों का सहयोग मिलेगा। अपव्यय की अधिकता रहेगी। शत्रु हानि न पहुंचाने से निराश होंगे। स्वास्थ्य सामान्य बना रहेगा। महिला वर्ग का अधिक समय बातचीत में व्यतीत होगा।

अक्टूबर—गोचर ग्रह मध्यम फलदायक हैं। विचारों में सामंजस्य की भावना बनाये रखें। विरोधी परास्त होंगे। मर्यादा रहित व्यवहार से दूर रहें। शारीरिक स्थिति में गिरावट आयेगी। स्त्री सुख मध्यम रहेगा।

नवम्बर—सज्जनों से मेलजोल बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी। स्वास्थ्य खराब रहने से मानसिक उद्विग्नता बनी रहेगी। यात्राओं में परेशानियाँ आयेंगी। शत्रु अपनी हार मानेंगे।

दिसम्बर—मनोबल में कमी आयेगी। घर पर मेहमानों पर विशेष धन व्यय होगा। स्त्री से मनमुटाव होगा। अनावश्यक दौड़-धूप की अधिकता से शारीरिक थकान होगी। आय व्यय का संतुलन बना रहेगा।

जनवरी २००२—मास में घूमने फिरने का विचार बनेगा। पदोन्नति का चांस मिलेगा। कोई तुम्हें गुमराह करने का प्रयास करेगा। पहले की तुलना में इस महिने विशुद्ध लाभ अधिक होगा। शुभाशुभ समाचार प्राप्त होंगे। उपयोगी सामान की खरीददारी की जायेगी।

फरवरी—सांसारिक सुखोपभोग की सुविधा मिलेगी। घर-गृहस्थी में मधुरता का वातावरण बनायें। नव-निर्माण व देवदर्शन की इच्छा बलवती होगी। इच्छित लाभ का सुयोग है। बढ़ते उत्तरदायित्व को निभायें।

मार्च—कानूनी कार्यवाही के चक्कर में ना पड़ें। चौपाया वाहन व सामाजिक उपद्रवों से दूर रहें। नित्य प्रति के कामों में आलस्य नहीं करें। धर्म के कामों में समय लगावें। स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल—ग्रह चाल प्रगति में सहायक है। व्यापार का विस्तार होगा। स्वजनों से सहयोग मिलेगा। विरोधी झुकेंगे। खर्च की अधिकता बनी रहेगी। न चाहते हुए भी यात्रा करनी पड़ेगी। यश भी मिलेगा।

मई—मान-सम्मान बढ़ने से मन में प्रसन्नता रहेगी। दाम्पत्य जीवन, बाल-बच्चों में हास्यरस चलेगा। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। वाहन से दुर्घटना हो सकती है। अतीत के संदर्भ में नई खोज का लाभ प्राप्त होगा। मासान्त में थोड़ा अपव्यय होगा।

जून—गोचर ग्रह मध्यम फलदायक हैं। कानूनी विवादों से बचने का प्रयास करें। शारीरिक भाग दौड़ की अधिकता रहेगी। आय का संतुलन बना रहेगा। स्त्री सुख सामान्य रहेगा। देश-विदेश से सुखद समाचार मिलेगा। स्थान परिवर्तन सुखद रहेगा।

जुलाई—नवनिर्माण व लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। शारीरिक भागदौड़ से नेत्र व सिर में पीड़ा होगी। मानसिक तनाव रहेगा। सामाजिक काम का यश मिलेगा। पुरातन अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। पुरानी निराशा का समापन होगा।

अगस्त—स्वजनों का सहयोग मिलने से नवीन कार्य शुरू कर सकते हैं। स्वास्थ्य में सुधार होगा। शत्रुओं की शक्ति का ह्रास होगा। खर्च की अधिकता से धन संचय कम होगा। व्यापारिक क्षेत्र का विस्तार होने से मन प्रफुल्लित रहेगा।

सितम्बर—अपने उच्चाधिकारियों से मेलजोल बढ़ेगा। कानूनी विवाद ले देकर सुलझ जायेगा। नवीन कार्यों की रूपरेखा तैयार होगी। देव दर्शन की इच्छा व धार्मिक रुचि बढ़ेगी। लाभ खर्च का समान योग है।

अक्टूबर—समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। कारोबार में लाभ अच्छा मिलने से दिल उत्साहित रहेगा। बन्धुजनों से मेलजोल बढ़ेगा। घर-गृहस्थी की योजना सफल होगी। स्त्री-पुत्रादि सुख ठीक मिलेगा। पास-पड़ौस में मधुरता का व्यवहार बनाये रखें।

नवम्बर—व्यापार में लाभ होगा किन्तु खर्च की भी अधिकता रहेगी। उपयोगी इच्छित वस्तु खरीदी जायेगी। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलने से मनोबल बढ़ेगा। यश और कीर्ति में वृद्धि होगी। नये मेहमान के आने से परिवार में प्रसन्नता का वातावरण बना रहेगा।

दिसम्बर—अनावश्यक भागदौड़ का चक्र चलेगा। शत्रु प्रबल होने से मन अशान्त रहेगा। कानूनी विवाद का भय बना रहेगा। स्त्री सुख सामान्य प्राप्त होगा। शारीरिक कमजोरी महसूस की जायेगी।

जनवरी २००२—मन अनावश्यक उलझनों से विचलित रहेगा। अपने नित्यप्रति के कार्य सुचारु रूप से करें। सेहत के प्रति सचेत रहें। खरीद फरोख्त के धन्धे से लाभ होगा।

फरवरी—मास की ग्रहचाल अनुकूल रहेगी। घर-परिवार की समस्या का समाधान हो जायेगा। शत्रुजनित लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें। पुराने दोस्तों से और अधिक घनिष्ठता बढ़ेगी। किसी अच्छी खबर से मन प्रसन्न रहेगा।

मार्च—गोचर ग्रह भाग्य विकास में सहायक हैं। राजनीति में आपसी तालमेल बनाकर लाभ उठावें। लोकोपवाद का संयोग भी बनेगा। प्रत्येक कार्य पूर्ण सोच विचार कर ही प्रारम्भ करें। बढ़ते जन सम्पर्क से धन प्राप्ति का रास्ता भी खुलेगा।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल—मास में अधिक काम होने से शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। यात्राजन्य पीड़ा से मन खिन्न रहेगा। धर्म में आस्था बढ़ने से तीर्थाटन व देवदर्शन में खर्चा लगेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा व यश का विस्तार होगा।

मई—नवीन योजना असफल होने से विवेक में कमी आयेगी। बुद्धि भ्रमित होने का भय रहेगा। धार्मिक आयोजनों में धन व्यय अधिक होगा। स्वजनों में सहयोग की भावना में कमी होगी। कुछ समय तक परिवार की चिन्ता सतायेगी।

जून—कानूनी मामलों में सुधार होने से मानसिक तनाव कम होगा। मान-सम्मान अच्छा मिलेगा। अचल सम्पत्तियों से लाभ प्राप्त होगा। मास में नये मेहमान का घर में आगमन होगा। यात्रा छोटी मगर लाभदायक होगी। बच्चो का खेलकूद में समय बीतेगा।

जुलाई—पारिवारिक उत्तरदायित्व बढ़ेंगे। सेहत ठीक रहेगी। सत्पुरुषों के मार्गदर्शन से ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। दफ्तर आदि के कामकाज की भी जिम्मेदारी बढ़ेगी। कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। आय व व्यय का संतुलन बना रहेगा।

अगस्त—बुद्धिमत्ता भाग्य विकास में गतिरोध पैदा करेगी। शुभ कार्यों में खर्चा होगा। भाग्य सहारा से रुके अधूरे काम पूरे होंगे। व्यापार यथावत चलता रहेगा। शारीरिक व्याधियों का सामना करना पड़ेगा।

सितम्बर—सुखोपभोग की सामग्री खरीदी जायेगी। सन्तान पक्ष द्वारा विशेष खर्चा करने से आर्थिक पक्ष कमजोर होगा। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। शरीर ठीक रहेगा। नये काम की इच्छा अधूरी रह जायेगी।

अक्टूबर—मास आर्थिक कार्यों के लिए अच्छा रहेगा। धार्मिक आयोजनों में भागीदारी बढ़ेगी। मन उत्साहित रहेगा। धन लाभ श्रेष्ठ होगा। धर्म के प्रति आस्था बढ़ेगी। सेहत में गिरावट होगी।

नवम्बर—विरोधी परास्त होंगे। पुराने रोग, ऋण, झंझट का समापन होगा। आर्थिक योजनाओं का विस्तार होगा। परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा। धर्म के प्रति आस्था बढ़ेगी। सेहत में गिरावट होगी।

दिसम्बर—गोचर ग्रह मध्यम फलदायक हैं। इस महीने सिंह राशि वालों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। गुप्त शत्रु हानि पहुंचायेंगे। लाभ व्यय का संतुलन बना रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

जनवरी २००२—मास में पदोन्नति की खुशी मिलेगी। अच्छी खबर से इच्छा पूरी होगी। आमोद-प्रमोद व मनोरंजन में समय व्यतीत होगा। आवश्यक सामग्री खरीदी जायेगी। नये लोगों से मेल-जोल कामयाब होगा। घर में प्रसन्नता का वातावरण बना रहेगा।

फरवरी—किसी व्यक्ति द्वारा आपको गुमराह करने का प्रयास किया जायेगा। आगम धन प्राप्ति का रास्ता खुलेगा। पूर्व निर्धारित काम कठिनाई से पूर्ण होगा। शुभ-अशुभ समाचार मिलेंगे।

मार्च—मास कुछ नवीन विशेषतायें लिए आ रहा है। बढ़ती उच्चाकांक्षाओं पर नियंत्रण रखें। आलस्य प्रमाद से हानि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। दिनचर्या को व्यवस्थित बनाये रखें।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल—कोध्र की अधिकता से शत्रु वृद्धि होगी। बनते कामों में परेशानी उत्पन्न होंगी। बड़े अधिकारी से अनबन हो सकती है। व्यापार में लाभ मध्यम प्राप्त होगा। परिवार जनों से आपसी मनमुटाव रहेगा।

मई—भाग्यावरोध से बनते कार्य रुकें। पारिवारिक क्लेश से मन बेचैन रहेगा। कानूनी विवाद में नहीं उलझें। रोजगार में स्थिरता बनी रहेगी। घर-गृहस्थी की समस्या नहीं सुलझेगी।

जून—मास में भौतिक सुविधाओं की वृद्धि होगी। प्रबुद्धजनों से सम्पर्क बढ़ेगा। आगम धन प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। यात्राओं में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

जुलाई—विचारों में स्थिरता आने से अधूरे कार्य पूरे होंगे, लेनदेन के मामले का निपटारा हो जायेगा। यश, कीर्ति का विस्तार होगा। बढ़ते जन सम्पर्क का फायदा उठावें। सेहत का ध्यान रखें।

अगस्त—पारिवारिक क्लेश से अशांति का वातावरण बनेगा। व्यापार में लाभ यथावत मिलता रहेगा। स्वजनों व इष्ट मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा। कोई तुम्हें गुमराह करने का प्रयास करेगा। मनोबल में गिरावट नहीं आयेगी।

सितम्बर—सिर व नेत्र पीड़ा से स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। व्यापार में लाभ होकर खर्च भी होगा। पारिवारिक क्लेश से मन में खिन्नता रहेगी। सत्पुरुषों के समागम से कुछ राहत महसूस होगी। बड़ा अधिकारी बेवजह परेशान करेगा। पड़ौसी से विवाद संभव है।

अक्टूबर—स्वास्थ्य में सुधार होगा। साहस व उत्साह बढ़ेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें। भाईयों से सहयोग की प्रवृत्ति पनपेगी। पुराने रोग व ऋण का समापन होगा। धार्मिक कर्मों में रुचि बढ़ेगी। देवदर्शन व नवनिर्माण की इच्छाशक्ति बढ़ेगी।

नवम्बर—यशोपलब्धि व श्रीवृद्धि से पड़ौसी ईर्ष्या करेंगे। स्वजनों व मित्रों के सहयोग से रुके काम पूर्ण होंगे। व्यावसायिक क्षेत्र का विस्तार होगा। स्वास्थ्य पर मौसम का प्रभाव पड़ेगा। घर पर नये मेहमान का आगमन होगा।

दिसम्बर—कार्य कुशलता में निखार आयेगा। भाईयों में भ्रातृत्व की भावना का विकास होगा। धार्मिक आयोजनों में भागीदारी बढ़ेगी। इस मास लाभदायक योजना की क्रियान्विती होगी। आपका समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा।

जनवरी २००२—नव निर्माण, लम्बी यात्रा का सुयोग बनेगा। पदोन्नति का समापन होगा। कोई तुम्हें दिग्भ्रमित करने की कुचेष्टा करेगा। राजनैतिक, सामाजिक जनसम्पर्क बढ़ेगा।

फरवरी—मर्यादारहित व्यवहार से हानि होगी। शुभ अशुभ दोनों तरह के समाचार प्राप्त होंगे। आर्थिक लाभ अधिक होगा। राजनैतिक क्षेत्र में साख जमेगी। पुरानी निराशा समाप्त होगी। घर का वातावरण सरसतापूर्ण बना रहेगा।

मार्च—पुराने रोग, ऋण व मुकदमादि से राहत मिलेगी। समय का सदुपयोग करें लाभ होगा। नये काम तथा घूमने फिरने की इच्छा प्रबल होगी। गृहस्थ जीवन के प्रति रुझान होगा।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल—आरोग्य सुख में कमी आयेगी। किसी अप्रिय समाचार मिलने से दुःख होगा। लम्बी दूरी की यात्रा से परेशान होंगे। व्यवसाय में प्रगति होगी। ऐश्वर्य व प्रसिद्धि बनी रहेगी। मनोबल में कमी नहीं आयेगी।

मई—मास में स्थानान्तरण का योग बना है। यात्रा प्रवास से अर्थ व्यय की अधिकता व सेहत में गिरावट आयेगी। संतानादि से वैचारिक तालमेल होगा। आत्मबल से कार्य की जिज्ञासा बनी रहेगी।

जून—मास में अच्छे व खराब दोनों तरह के समाचार प्राप्त होंगे। वाणी के प्रभाव से काम बनाने में सफल होंगे। आलस्य व प्रमाद से बचें। लम्बी यात्रा से थकावट बनी रहेगी। अर्थ पक्ष यथावत बना रहेगा।

जुलाई—भाग्य के सहारे लाभ की स्थिति बनी रहेगी। सेहत में गिरावट आयेगी। क्रोध की अधिकता से परिवार में कलह होगा। मित्रों से भी मनमुटाव होगा। रुका हुआ धन कठिनाई से प्राप्त होगा। किसी व्यक्ति द्वारा उद्देश्य से भ्रमित करने की कुचेष्टा की जायेगी।

अगस्त—संतान पक्ष से कहा सुनी होगी। मानसिक तनाव बढ़ेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा। अधिक परिश्रम से चल रहे कार्यों से अर्थलाभ होता रहेगा। उच्चाधिकारी अनावश्यक परेशान करेगा। आत्मबल व संयम बनाये रखने की जरूरत रहेगी।

सितम्बर—कार्य का विस्तार होने से मानसिक थकावट होगी। भाग्य साथ देने से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। सामाजिक काम का यश प्राप्त होगा। बढ़ती उच्चाकांक्षा पर नियंत्रण रखें। कर्म क्षेत्र में साथी लोगों से व्यवहार मधुर रहेगा। मान सम्मान बना रहेगा।

अक्टूबर—आर्थिक झगड़ों से मन में खिन्नता रहेगी। स्थान परिवर्तन के योग बने हैं। अन्तर्विरोध सहना पड़ेगा। यात्रा प्रवास में कठिनाईयां आयेंगी। फिजूल खर्च भी बढ़ेगा। घर गृहस्थी की समस्याओं का निपटारा नहीं होगा। शारीरिक व्याधि बनी रहेगी।

नवम्बर—पारिवारिक सुख सुविधाओं में बढ़ोत्तरी होगी। विचाराधीन काम सफल होंगे। भूमि, वाहनादि क्रय की जायेंगी। व्यापार में उत्तरोत्तर लाभ मिलेगा। मन में प्रसन्नता होगी। भाग्य साथ देने से नवीन लाभदायक योजनाओं की क्रियान्वित होगी।

दिसम्बर—मानसिक उत्साह से लोक में नये आयाम मिलेंगे। स्त्री सुख मिलेगा। साथ ही संतान पक्ष द्वारा खर्च की अधिकता रहेगी। व्यवसाय में मेहनत अधिक करनी होगी। शत्रु पक्ष का मनोबल टूट जायेगा।

जनवरी २००२—मास में भाग्य सितारा चमकेगा। मनोवांछित कार्य पूरे होंगे। बढ़ते जन सम्पर्क से लाभ उठावें। इष्ट मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। पुरानी बीमारी से मुक्ति प्राप्त होगी। सुखद समाचार से मन प्रसन्न रहेगा।

फरवरी—चौपाये वाहनों से दुर्घटना की संभावना बनी रहेगी। नवीन कार्य पूर्ण सोच विचारकर करें। आशातीत लाभ होगा। चल अचल सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा। एक दो प्रतिकूल नुकसान भी हो सकते हैं। यात्रा से बचें।

मार्च—अनावश्यक राजनैतिक प्रपंचों से बचें। यथेष्ट आराधना से लाभ होगा। अपव्यय अधिक होगा। सोची समझी योजना कारगर सिद्ध होगी। घर गृहस्थी का विचार पूर्ण होगा। तीव्र लाभ की जिज्ञासा फलीभूत होगी।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल—आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। धार्मिक भावना का उद्भव होगा। स्वजनों के सहयोग से आशातीत सफलता मिलेगी। संतान सुख मध्यम रहेगा। यात्रा व स्थान परिवर्तन से शारीरिक व मानसिक पीड़ा होगी।

मई—सद्विचारों से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ेगी। धन खर्चा में बढ़ोत्तरी होगी। मासान्त में उच्चाधिकारी के सहयोग से कार्य बनें। व्यापारिक सुख मध्यम रहेगा। दोस्तों से इच्छित सहयोग मिलेगा।

जून—मानसिक तनाव के बावजूद मनोबल बना रहेगा। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। घर परिवार में तालमेल बना रहेगा। बदले की भावना त्याग दें। अज्ञात कारणवश नुकसान होने की संभावना है।

जुलाई—आरोग्य सुख में कमी आयेगी। कार्य क्षेत्र में अनावश्यक विरोध का सामना करना पड़ेगा। व्यवसाय में नुकसान होगा। बनते कार्यों में रुकावटें आयेंगी। स्त्री सुख मध्यम बना रहेगा। मन में अशांति बनी रहेगी। संयम से काम लेवें।

अगस्त—आर्थिक संकट दूर करने वास्ते ऋण लेने की योजना बनायें। राजकीय कार्यों के हल होने के आसार बनेंगे। अचानक चोट लगने का भय बना रहेगा। इष्ट आराधना में समय लगावें। मान हानि होने का भय रहेगा। मानसिक तनाव में कमी आयेगी।

सितम्बर—अनियमित दिनचर्या से शारीरिक कष्ट बढ़ेगा। मन में चिन्ताओं का जंजाल रहेगा। व्यापार में लाभ साधारण प्राप्त होगा। स्वजनों से मेलजोल कम होगा। परिवार में नई उलझनों का सामना करना पड़ेगा।

अक्टूबर—मास में लाभ खर्च का समान योग है। स्त्री द्वारा विशेष व्यय किया जायेगा। मान सम्मान में यथेष्ठ वृद्धि होगी। भाईयों से कहा-सुनी होगी। सेहत ठीक रहेगी।

नवम्बर—मास के प्रारम्भ में क्रोध की अधिकता रहेगी। स्त्री को शारीरिक, मानसिक पीड़ा होगी। मास के उत्तरार्ध में नये कार्यों में प्रगति होगी। व्यवसाय में लाभ होगा। यश और कीर्ति में बढ़ोत्तरी होगी। खरीद फरोख्त में भी लाभ होगा। यात्रा छोटी मगर फायदेमंद रहेगी।

दिसम्बर—स्वास्थ्य सुख में कमी होगी। मानसिक उद्वेग बना रहेगा। लाभ कम तथा खर्चा अधिक होने से पारिवारिक अशांति बढ़ेगी। किसी की कहीं सुनी बातों में ना आवें। इच्छित कार्य पूर्ति के लिए भारी संघर्ष करना पड़ेगा। किसी से अनावश्यक मनमुटाव हो सकता है।

जनवरी २००२—स्थानान्तरण से परेशानियां बढ़ेंगी। यथेष्ठ लाभ होगा किन्तु अधिक श्रम व समय लगेगा। उच्च अधिकारी से तालमेल बनाकर चलें। मास विशेष उलझनपूर्ण रहेगा। राजनीतिक परिचर्चा में कम भाग लें। विरोधियों का ईर्ष्या भाव बढ़ेगा।

फरवरी—घर गृहस्थ की समस्या उलझने के बाद ही सुलझेगी। आमोद-प्रमोद व पर्यटन में समय बीतेगा। नैतिकता व सच्चरित्रता का महत्व समझें। सेहत ठीक रहेगी।

मार्च—अच्छी खबर से मन प्रसन्न होगा। जीवनोपयोगी सामग्री खरीदी जायेगी। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भ्रातृवर्ग व साथीजनों से प्रेम व्यवहार प्रगाढ़ होगा। पड़ौसियों से सहानुभूति मिलेगी। पुराना विवाद समाप्त हो जायेगा।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल —वाणी पर नियंत्रण नहीं रहेगा। मन अशांत रहेगा। धार्मिक खर्चे में वृद्धि होगी। घर गृहस्थी का वातावरण ठीक रहेगा। मान-सम्मान बना रहेगा। खरीददारी से लाभ मिलेगा।

मई—व्यर्थ विवादों से बचें। गुप्त शत्रु परेशान करेंगे। चलते व्यवसाय में नई योजना की क्रियान्विती होगी। व्यापारी वर्ग को कड़ी मेहनत करनी होगी। दैनिक कामों में आलस्य छोड़ें। अनावश्यक उच्चाकांक्षायें नियन्त्रित करें।

जून—स्वास्थ्य में गड़बड़ी होगी। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। आय से अधिक खर्चा होगा। नये मित्रों से मेलजोल बढ़ेगा। पारिवारिक सुख शांति बनाने का प्रयास करें। न चाहते हुए भी यात्रा प्रवास पर जाना पड़ेगा।

जुलाई—अव्यवस्थित दिनचर्या को सुधारें। पारिवारिक उत्तरदायित्व बढ़ेंगे। समाज में यश व कीर्ति बढ़ेगी। धार्मिक कार्यक्रमों में अधिक भाग लेंगे। अर्थ पक्ष मध्यम रहेगा। कार्य शैथिल्यता नुकसान पहुंचायेगी।

अगस्त—रक्त विकार से सेहत बिगड़ेगी। दुर्घटना का भय बना रहेगा। मन में अस्थिरता रहेगी। विरोधी परास्त होंगे। धर्म के प्रति निष्ठा बढ़ेगी। व्यापार में नई योजना बनेगी। सत्पुरुषों से समागम होगा।

सितम्बर—सामाजिक विरोध से मन में असन्तोष रहेगा। निजि जनों से धोखा खा सकते हैं। लक्ष्य प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। व्यापार में लाभ ठीक मिलेगा। अपने बाहुबल पर भरोसा रखें। सेहत पूर्ववत रहेगी।

अक्टूबर—मासफल में सुधार होगा, स्वजनों व मित्रों के सहयोग का लाभ मिलेगा। अधूरे कार्य पूरे होंगे। शत्रु हानि पहुंचाने की कुचेष्टा में असफल होंगे। लाभ की योजना बनेंगी। घर गृहस्थी में सरसता का संयोग बनेगा।

नवम्बर—व्यय की अधिकता रहेगी। ऋण लेने की योजना बनेगी। पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। स्त्री सहयोग से मनोबल बना रहेगा। मित्र परेशानी उत्पन्न करेंगे। बड़े अधिकारी से कहा सुनी संभव है।

दिसम्बर—पुरानी समस्याएं हल हो जायेंगी। मान प्रतिष्ठा पूर्ववत प्राप्त होगी। शत्रु आपका लोहा मानेंगे। आत्मबल बढ़ेगा। सहपाठी व साथियों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। सुखद समाचार प्राप्त होगा।

जनवरी २००२—मनोरथ सिद्धि की प्राप्ति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। पदोन्नति में रुकावट आयेगी। धन चोरी व दुर्घटना से सतर्क रहें। मनोरंजन का सुखद समाचार मिलेगा। मौसम के कारण स्वास्थ्य नरम रहेगा।

फरवरी—पारिवारिक समस्या का निवारण स्वविवेक से करें। दैनिक कार्य के प्रति सजग रहें। अकर्मण्यता से शुभ फलों में कमी होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे।

मार्च—लाटरी से धन लाभ हो सकता है। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। सृजनशक्ति का उपयोग होगा। यात्रा व देवदर्शन का विचार बनेगा। प्रतियोगिता में विजय प्राप्त होगी। बदले की भावना का परित्याग करें।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल—व्यापार में लाभ अच्छा होगा किन्तु खर्चे की भी अधिकता रहेगी। मित्रों से वैचारिक सामंजस्य बनेगा। शत्रु हानि पहुंचाने में कामयाब नहीं होंगे। इच्छित सहयोग प्राप्त होगा। रुका हुआ धन मिलेगा। लम्बी यात्रा का योग बनेगा।

मई—भाई बन्धुओं से सहयोग प्राप्त होगा। मान, प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धार्मिक कार्यक्रमों में भागीदारी से धन व्यय अधिक होगा। स्त्री सहयोग से आत्मविश्वास बना रहेगा। सुखद समाचार से मन प्रसन्न होगा। सोचने समझने की शक्ति बढ़ेगी। आरोग्य सुख प्राप्त होगा।

जून—सरकारी कार्य पूर्ण होंगे। रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। शत्रु उत्पन्न होकर परास्त होंगे। शरीर में नई स्फूर्ति का संचार होगा। पारिवारिक सुख शांति से मन में उत्साह रहेगा। धनोपार्जन के साधनों का विस्तार होगा।

जुलाई—व्यापारिक प्रतिष्ठानों में प्रगति से धन लाभ अधिक प्राप्त होगा। स्वजनों का सहयोग मिलेगा। बुद्धि की चातुर्यता व स्वविवेक से हर क्षेत्र में कामयाब होंगे। स्त्री सुख ठीक रहेगा। ऐश्वर्य व साहस से शत्रु परास्त होंगे। मान सम्मान में वृद्धि होगी।

अगस्त—मानसिक चिन्ता बढ़ने से स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। लाभ कम होगा लेकिन खर्चे में बढ़ोत्तरी होगी। स्त्री सहयोग से कुछ कार्य अवश्य बनेंगे। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरदायित्व बढ़ेगा। अधिक परिश्रम करने पर भी कम लाभ प्राप्त होगा।

सितम्बर—आगन्तुक मेहमानों पर अधिक खर्च होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा ठीक रहेगी। किसी सुखद समाचार प्राप्ति से मन हर्षित रहेगा। सेहत में सुधार होगा। पुरानी निराशा का समापन होगा।

अक्टूबर—भाग्य फल उत्तम रहने से मनोबल ऊंचा रहेगा। नये मित्रों का सहयोग प्राप्त होने से साहस बढ़ेगा। पुत्र से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। व्यापार में लाभ ठीक मिलेगा। आरोग्य सुख यथावत मिलता रहेगा। यात्रा छोटी किन्तु लाभदायक होगी।

नवम्बर—धार्मिक कार्यक्रमों पर अधिक खर्चा होगा। निर्णय लेने की क्षमता में कमी आयेगी। भ्रातृवर्ग व घनिष्ठ मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा। गुप्त शत्रु हानि पहुंचाने की कुचेष्टा करेंगे। सतर्क रहना ठीक रहेगा। अधिक दौड़ धूप से स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी।

दिसम्बर—आकस्मिक यात्रा से शारीरिक, मानसिक पीड़ा बढ़ेगी। संतान व स्त्री सुख मध्यम प्राप्त होगा। धन लाभ होगा लेकिन मास के अंत में अधिक व्यय होने से आर्थिक स्थिति कमजोर होगी।

जनवरी २००२—सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आत्मबल बना रहेगा। संतान द्वारा असहयोग किया जायेगा। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। साझे के काम व लेनदेन के मामले में सावधानी बरतें। लगन व निष्ठा से कार्य पूर्ण होंगे।

फरवरी—धर्म के प्रति आस्था बढ़ेगी। धार्मिक आयोजनों में धन व्यय होगा। सत्संगति का लाभ प्राप्त होगा। नई कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। स्त्री व संतानपक्ष द्वारा सहयोग मिलेगा। घर गृहस्थी, इष्ट मित्रों में सरसतापूर्ण वातावरण बना रहेगा।

मार्च—व्यवसाय में रुचि व निष्ठा से कार्य करेंगे। अच्छे लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। आरोग्य सुख प्राप्त होगा। सद्विचारों का उद्भव होगा। घर गृहस्थी में प्यार, प्रीति की प्रतिक्रिया होगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें, लाभ होगा।

कुंभ–गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल—अप्रैल मास में लाभार्जन का मौका मिलेगा। बुद्धि की चातुर्यता से श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। सेहत ठीक रहेगी। पुत्रादि से वैचारिक मिलान होगा। खर्च की अधिकता रहेगी। सोचा समझा काम पूर्ण होगा।

मई—नवीन कार्य योजना का निर्माण होगा। उच्चाधिकारियों से मेलजोल होगा। घर में मांगलिक उत्सवों से मन प्रसन्न रहेगा। सूझबूझ से काम करने पर सफलता मिलेगी। सृजन शक्ति बढ़ेगी। नौकरी में पदोन्नति के भी योग बने हैं।

जून—रोजगार धन्धों से लाभ मध्यम मिलेगा। सुखद समाचार से मन प्रसन्न रहेगा। व्यर्थ के प्रपंचों से बचें। घूमने फिरने का अवसर मिलेगा। स्त्री संतान सहयोग श्रेष्ठ रहेगा। इष्ट आराधना में समय लगावें। शत्रु की कुचाल से बचें।

जुलाई—रचनात्मक कार्यों की रुचि से सृजन शक्ति बढ़ेगी। जीवन सुख व संतोष से बीतेगा। मन में आत्मविश्वास बढ़ेगा। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। यश व कीर्ति विस्तार से दुश्मन ईर्ष्या करेंगे। चौपाया वाहन से बचें।

अगस्त—व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। अधिक परिश्रम करने पर रुके कार्य सम्पन्न होंगे। संतान पक्ष से सहयोग मिलेगा। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। लम्बी लाभप्रद योजना में धन खर्च होगा। जमीन, जायदाद, वाहन आदि वस्तु खरीदने का विचार बनेगा।

सितम्बर—वायुरोग व पित्त विकार से स्वास्थ्य डांवाडोल होगा। मानसिक अशांति बनी रहेगी। घर परिवार की समस्या को सुलझाने का प्रयास करें। लाभ यथावत मिलता रहेगा। स्वजनों से मेलजोल में प्रगाढ़ता आयेगी। पड़ौसियों से सहानुभूति मिलेगी।

अक्टूबर—वृथा वाद-विवाद होने का भय बना रहेगा। मन में घबराहट व उच्चाटन रहेगा। भाग्यफल कमजोर होने से कृषि क्षेत्र में परिश्रम अधिक होगा व लाभ कम मिलेगा। खर्चा की अधिकता रहेगी। पुराने दोस्त के साथ मनोरंजन का समय व्यतीत होगा।

नवम्बर—परिवारजनों से सहयोग मिलेगा। उच्चाधिकारियों से मतभेद होगा। बनते कार्यों में रुकावटें आयेंगी। व्यय अधिक होने से आर्थिक स्थिति में गिरावट आयेगी। मंगल काम का समाचार प्राप्त होगा।

दिसम्बर—मानसिक चिन्ताओं से स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। कार्यभार की अधिकता रहेगी। मित्रों व स्वजनों द्वारा बनते कार्यों में रुकावटें पैदा की जायेंगी। धार्मिक आस्था में कमी आयेगी। कार्य शैथिल्यता नुकसान पहुंचायेगी।

जनवरी २००२—मानसिक तनाव से उचित निर्णय नहीं ले पायेंगे। बन्धुजनों से मनमुटाव होगा। व्यापारिक लेनदेन में समय पालन नहीं हो पायेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। विरोधी नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करेंगे। पुराना दोस्त मदद करेगा।

फरवरी—मास में स्थानान्तरण का योग बना है। स्थान परिवर्तन से धन संचय में कमी आयेगी। भाग्यफल मध्यम रहने से मान सम्मान बना रहेगा। अपने कार्य के प्रति निष्ठावान व्यक्ति लाभ कमायेंगे। मेहनत के चलते स्वास्थ्य डांवाडोल होगा।

मार्च—धार्मिक जनों से मेलजोल बढ़ेगा। नये खर्चे की योजना बनने से धन संचय में कमी आयेगी। प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। साथी ईर्ष्याभाव रखेगा। राजनैतिक गठजोड़ फायदे में रहेगा। अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहें।

मीन–दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, च, ची

मीन

अप्रैल—भौतिक सुख साधनों में बढ़ोत्तरी होगी। रोजगार धंधों में मन कम लगेगा। समाज व परिवार के लोग सम्मान करेंगे। पत्नी संतान पक्ष से संतुष्टि मिलेगी। उत्साहजनक समाचार प्राप्त हो सकते हैं। पुराने मित्र से मिलने के आसार बनेंगे।

मई—नवीन योजना सफल होगी। उत्साह व पराक्रम में वृद्धि होगी। व्यापार धंधे में लाभ अधिक होगा। चल अचल सम्पत्ति का सुख मिलेगा। सुख संतानादि का पूर्ण सहयोग मिलेगा। मास के अंत में यात्रा से कष्ट होगा।

जून—विद्वान लोगों से सम्पर्क होगा। बुद्धि में प्रखरता आयेगी। सोची समझी योजना कारगर सिद्ध होगी। परिवार में सुख शांति के कारण मन में उत्साह बना रहेगा। अधूरे कार्य पूर्ण होने की योजना बनेगी। सेहत अनुकूल रहेगी।

जुलाई—आरोग्य सुख उत्तम रहेगा। स्वजनों से मेलजोल बढ़ेगा। विद्यार्थी वर्ग की शैक्षणिक अरुचि बढ़ेगी। कारोबार में अनुकूल स्थिति बनी रहेगी। संतान पक्ष की चिन्ता मिटेगी। पदोन्नति व स्थानान्तरण के आसार बनेंगे।

अगस्त—सत्पुरुषों से समागम होगा। दूरगामी सोच का विकास होगा। विवेक व ज्ञान बढ़ेगा। सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना पड़ेगा। शत्रुओं में कमी होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनती जायेगी। उत्साह व उमंग में वृद्धि होगी।

सितम्बर—अधूरे काम बनते दिखाई देंगे। कारोबारी यात्रा का अच्छा लाभ मिलेगा। पराक्रम व उत्साह बना रहेगा। रचनात्मक कार्य में प्रवृत्ति बनेगी। कार्य क्षेत्र की वृद्धि से आय का नवीन स्रोत बनेगा। आपकी रीति नीति की प्रशंसा होगी।

अक्टूबर—अधिक परिश्रम से सेहत में गिरावट आयेगी। बकाया धन की वसूली सुगमता से होगी। पत्नी संतानादि से संतुष्ट रहेंगे। भौतिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। यश व प्रतिष्ठा बनी रहेगी। लाभ की कार्य योजना बनेंगी।

नवम्बर—घर में मांगलिक उत्सव सम्पन्न होने से चित्त में खुशी रहेगी। देश विदेश से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। चल अचल सम्पत्ति के विवादों का निपटारा होगा। धार्मिक अभिरुचि बढ़ेगी। छात्रों का पढ़ाई में मन लगेगा।

दिसम्बर—व्यवसाय में निरन्तर उन्नति होगी। शारीरिक स्फूर्ति बढ़ेगी। पारिवारिक चिन्ता उभरेगी लेकिन उनका समाधान शीघ्र हो जायेगा। सत्पुरुषों से सत्परामर्श प्राप्त होगा। मिथ्याभियोग से बचे रहें। व्यय में वृद्धि होगी।

जनवरी २००२—हितैषी व मित्रों के सहयोग से कार्य शीघ्र सम्पन्न होंगे। सामाजिक इज्जत व प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शारीरिक स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा. नए उत्साह व उमंग में वृद्धि होगी। विरोधी पस्त होंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

फरवरी—आरोग्य सुख पूर्ण रहेगा। आपका मान सम्मान बढ़ेगा। व्यापार में निरन्तर उन्नति होगी। धन लाभ होगा किन्तु व्यय अधिक होने से संचय कम होगा। सामयिक सामाजिक विकास के मार्ग प्रशस्त होंगे। नवीन योजना हाथ में आ सकती है। सद्विचारों का उद्भव होगा।

मार्च—भाईयों से मनमुटाव होने से शांति भंग होगी। व्यसन व दुष्ट लोगों से दूरी बनाये रखें। बुद्धिभ्रम से विचारों में अस्थिरता आयेगी। निरर्थक दौड़धूप की अधिकता से धन व्यय होगा। मन में उद्विग्नता रहेगी।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र "**ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च**" मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४३२०० वर्ष है। इसमें ५१०२ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५३वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों को २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०५८ में कलियुग ५१०२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९८ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्युयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

सम्वत् २०५८ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् सम्वत्सर २०५८ वर्षे सृष्टितोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०२, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलि: ५१०२, भौग्यकलि: सौर वर्ष संख्या ४२६८९८, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दा: ५२३७, श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दा: २०५८, शकाब्दा: १९२३, बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम कार्तिक:, ईस्वीय सन् २००१-२००२, हिजरी सन् १४२१-२२, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत् २५२७-२८, भारतीय गणराज्य सम्वत् ५२-५३ प्रवर्तते।

समय विश्वा २०, समय वाहन मृग:, स्तम्भ दो जल तृणयो:, सोमवती अमावस्या २, सोमवती पंचमी १, अंगार की चतुर्थी २, बुधाष्टमी ३, भानुसप्तमी १, रवि दशमी ३, समय मुहूर्त्ता: ४२०, समय दिनानि ३८२, तिथि क्षय: १८, तिथि वृद्धि: ११, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ८४, वर्षा विश्वा ७, धान्यम् ७, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, ऐक्यम् १०३, सत्य आधा, धर्म ड्योढ़ा, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे नेष्टं, अस्मिन् वर्षे भारते ग्रहण १ चन्द्रमस:। वर्षनाम कार्तिक:, मेघनाम संवर्त:, रोहिणी निवासो तटे, समय निवासो रजक गृहे। शुभं नास्ति दैवज्ञ शुभाशुभ चिन्तनीयम्।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का "जय" नाम का सम्वत्सर है। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने इस प्रकार लिखा है:—**जय मंगल घोषाद्यैर्धरणी भाति सर्वदा। जयाब्दे धरणी नाथा: संग्रामे जय कांक्षिण:॥**

जय नाम का सम्वत्सर होने से पृथ्वी पर आनन्द उत्सवादि की अधिकता रहेगी। जनता सुख साधनों की ओर अधिक लालायत रहेगी। अनेक देशों के शासक एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए असंयमित भाषा का प्रयोग करेंगे। कहीं युद्धादि की ज्वाला में प्रजा व सैनिकों का नाश होगा।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा-मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। लेकिन राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा का स्वर्ग, भारत का ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान पूर्वोत्तर के मध्य विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कौंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग के साथ कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा चन्द्रस्तत्फलम्

चन्द्रे नृपे मंगल शोभनानि प्रभूत वृष्टि: प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनाना मुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्यधिजरा नराणाम्॥

राजा चन्द्र का फल—वर्ष का राजा चन्द्रमा होने से प्रजा में सुख शांति व मंगल कार्य, उत्सवादि की अधिकता रहेगी। वर्षा अच्छी होगी जिससे धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा। राजाओं का अभ्युदय होगा। पेड़ पौधों के फल फूल अधिक मात्रा में लगेंगे। रस कस पदार्थ में तेजी रहेगी।

मंत्री शुक्रस्तत्फलम्

भृगुसुते ननु मन्त्रीपदं गते शलभ मूषक-मूषक रौहिष:।
भवति धान्यं समर्घतया भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम्॥

मंत्री शुक्र का फल—मंत्री का पद शुक्र को मिलने से कृषि में टिड्डी, चूहे, कातरा आदि से नुकसान होगा। वर्षा की श्रेष्ठता धान्यादि में मन्दी की धारणा बनायेगी। नारियल, छुआरा, मेवा आदि का उत्पादन अच्छा होगा। कहीं वर्षा की अधिकता से लोग भयभीत होंगे।

सस्येशश्चन्द्रस्तत्फलम्

सस्याधिपे शीतकरे प्रजा सुखं मेघ: पयोमुञ्चति गोप गोधुक्।
देव द्विजाराधनतत्परा नृपा धरा भवेद्धान्यधनौघपूर्णा॥

सस्येश चन्द्र का फल—प्रजा में सुख शांति का वातावरण बने तथा बादलों से श्रेष्ठ वर्षा होने से अनाजादि की पैदावार बढ़ेगी। गाय, भैंस आदि दूध अधिक मात्रा में देंगी। धार्मिक आस्था के लोग देव आराधना में अधिक लगेंगे। पृथ्वी धन-धान्य से परिपूर्ण होगी।

धान्येश: शनिस्तत्फलम्

निर्धना: क्षिति भुजो रणादरा:
सस्यमल्पमति रोगिणो नरा:।
नैव वर्षति जलं सुरेश्वर:
स्याद्यदान्त्यकणप: शनैश्चर:॥

धान्येश शनि का फल—शासकों में अशान्ति का वातावरण बने। कहीं युद्धादि भय से आणविक अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग हो। वर्षा की कमी अनेक क्षेत्रों में बनने से अकाल की आशंका बढ़ेगी। प्रजा में रोग पीड़ा की वृद्धि हो।

मेघेशो गुरुस्तत्फलम्

गुरुरपि प्रियवृष्टिकर: सदाऽखिल
विलासवती धरणी तदा।
श्रुति विचार परा नरपालका:
रस समृद्धि युताखिल मानवा॥

मेघेश गुरु का फल—वर्षा पर्याप्त व समयानुसार होने से प्रजा में सुख-समृद्धि बढ़ेगी। पृथ्वी पर विलासिता मय वातावरण अधिक बढ़ेगा। शासकों में धर्मपरायणता अधिक बढ़ेगी। सभी लोग गोरस व गोधन से समृद्ध होंगे।

रसेशो बुधस्तत्फलम्

रसपतौ द्विजराज सुते मही सुलभ
धान्य घृतादि युता जना:।
प्रमुदिता वर नायक-पालिता बहु
जलाखिल देश सुरक्षिता:॥

रसेश बुध का फल—वर्षा अच्छी होने से धान्य की पैदावार बढ़ेगी। प्रजा को धन धान्य एवं घृतादि की सुलभता रहेगी। श्रेष्ठ जनों से सत्परामर्श प्राप्त होगा। शासक वर्ग शासन व्यवस्था को सुचारु रूप से देखेंगे।

नीरसेशश्चन्द्रस्तत्फलम्

शुक्ल वर्णादि वस्तूनां मुक्ता-रजत-वाससाम्।
अर्घवृद्धि: प्रजायेत शशांके नीरसाधिपे॥

नीरसेश चन्द्र का फल—सफेद रंग की वस्तुएं, मोती, चांदी, चावल तथा वस्त्रादि के मूल्यों में तेजी होगी। शासकों में सद्भावना बढ़ने के साथ-साथ प्रजा के हित में नवीन कार्यक्रमों की घोषणा करनी पड़ेगी।

फलेशो गुरुस्तत्फलम्

सुरगुरु: फल नायकतां गतो गतभया वन राशि महाद्रुमा:।
यजन-याजन कोत्सव मन्दिरा: श्रुति विचारपरा: द्विज पूर्वका:॥

फलेश गुरु का फल—फलेश गुरु होने से कृषि क्षेत्र में नवीन अनुसंधान में सफलता प्राप्त होगी। वृक्ष और बेलों के फल फूल अधिक मात्रा में लगेंगे। प्रजा में सुख-शांति बढ़ेगी। विप्र और विद्वान लोग वेद या शास्त्रोक्त मर्यादा में काम करेंगे।

धनेश: सूर्यस्तत्फलम्

द्रविणपो यदि वासरपो तदा वणिजतो बहु द्रव्य समागम:।
[illegible] विक्रयात्॥

धनेश सूर्य का फल—व्यापारियों को क्रय-विक्रय में लाभ के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। ऊंट, घोड़ा, हाथी, भेड़ आदि पशुओं के लेन-देन करने वालों को भी लाभ प्राप्त होगा। विश्व के अनेक देशों में आयात निर्यात के व्यापारिक समझौते होंगे।

दुर्गेशो गुरुस्तत्फलम्

सुरगुरौ गढ़पे नय शोभिता नरवरा: नरपा: कर पालिता:।
गिरिषु वै नगरेषु समं सुखं सुखमति द्विज शास्त्रवतोऽनिशम्॥

दुर्गेश गुरु का फल—दुर्गेश गुरु होने से प्रजा जनों को सभी प्रकार सुख प्राप्त होगा। शासकों में न्याय भावना बढ़ेगी। जिससे वे लोकप्रिय बनेंगे। आत्म रक्षार्थ प्रजा में शस्त्रों की संकलन भावना बढ़ेगी। जनता में बाग बगीचे व अयारण्य देखने की रुचि बढ़ेगी।

वर्षनाम कार्तिक फलम्

पाप बुद्धि:रता लोका भवंति कार्तिके सदा।
देवता नैव मन्यन्ते राज्यं च तस्करैर्हतम्॥

वर्षनाम कार्तिक का फल—कार्तिक नाम का वर्ष होने से लोगों का पाप कर्मों में अधिक मन लगेगा। जूआ, लाटरी, तस्करी, चोरी, डाका व लूटपाट की घटनाएं अधिक होंगी। धार्मिक आस्था कम होने से विप्र व संतजनों का सम्मान कम होगा।

मेघनाम संवर्त: फलम्—"संवर्ते जल पूरिता।" इस वर्ष संवर्त नाम का (चतुर्मेघों में) मेघ होने से सभी स्थानों पर पर्याप्त मात्रा में वर्षा होगी। नदी-नाले जल से परिपूर्ण होते दिखाई देंगे। कृषि में पैदावार भी अच्छी होगी।

रोहिणी निवासस्तटे फलम्—इस वर्ष भी रोहिणी का निवास "तट" पर है। जिसका फल—**"तटे वृष्टि: सुशोभना॥"** वर्षा उत्तम होने से आर्थिक एवं औद्योगिक विकास अनुकूल गति से बढ़ेगा। प्रजा में सुख शांति बढ़ेगी तथा धान्यादि में मंदी का संचार होगा।

समय निवासो रजक गृहे फलम्—समय का निवास धोबी के घर रहने से वर्षा की श्रेष्ठता, नदी, तालाब को जल से पूर्ण करेगी। कहीं-कहीं वायु प्रकोप भी रहे। **समय वाहन—"मृग" बना है।** अत: वर्षा कहीं कम, कहीं अधिक होगी। राजनैयकों में असन्तोष तथा कहीं-कहीं मंत्रिमण्डलों में परिवर्तन होगा। धान्यों में तेजी होगी।

अथ (विन्ध्य से दक्षिणवासियों के लिए) अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	२	११	८	८	२	८	११	२	११	५	५	११

अथ (विन्ध्य से उत्तरवासियों के लिए) विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

आय-व्यय देखने की विधि— अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें १ घटा दें, शेष में ८ का भाग देने पर यदि अंक १।२।६।७ शेष बचें तो उस वर्ष में लाभ उत्तम रहेगा। व्यापार धन्धों में बढ़ोत्तरी होगी। यदि अंक ३।४।५ या ८ (०) शेष रहे तो वर्ष नेष्ट फलप्रद रहेगा। लाभ कम खर्चा अधिक होगा। व्यापार में मन्दी का दौर चलेगा। दौड़धूप की अधिकता एवं अनावश्यक चिन्ताओं में बढ़ोत्तरी होगी।

शनि की साढ़ेसाती ढैय्या और लघु कल्याणी ढैय्या विचार

इस वर्ष के प्रारम्भ से अन्त तक शनि वक्री-मार्गी गति से वृष राशि में विचरण करता रहेगा। जिससे मेष, वृष एवं मिथुन राशि वालों को क्रमशः उतरती, मध्यकालीन एवं प्रारम्भिक साढ़ेसाती रहेगी। तुला एवं कुंभ राशि वालों को लघु कल्याणी ढैय्या शनि रहेगा। वृष राशि के शनि का गोचर फल आगे दिया जा रहा है।

मेष-शनि की पैरों पर उतरती साढ़ेसाती लोहे के पाये के शारीरिक पीड़ा के साथ धन खर्चा की बढ़ोत्तरी करेगी। शत्रु वृद्धि होने से बनते कार्यों में रुकावटें तथा लाभ मध्यम होगा। पारिवारिक अशांति से मन बेचैन रहेगा।

वृष-आपको शनि की मध्यकालीन साढ़ेसाती हृदय पर चालू होगी। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव के साथ पारिवारिक सुख में कमी की अनुभूति होगी। किन्तु तांबे के पाये से प्रवेश धर्म और धैर्यावलम्बन से रुका कार्य पूरा होने में सहायक होगा। श्रम व प्रयत्न से अनेक कार्यों में सफलता भी प्राप्त होगी।

मिथुन-राशिवालों को आरम्भिक शनि की साढ़ेसाती शिर पर रजत पाद से प्रारम्भ होगी। आर्थिक संकट के साथ शारीरिक रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। स्वजनों से मनमुटाव तथा शत्रु वृद्धि होने से मन विचलित रहेगा। पुराने व्यवसाय में लाभ यथावत् किन्तु नये कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी।

कर्क-आपको एकादश भाव में शनि श्रेष्ठ किन्तु स्वर्णपाद से श्रम-संघर्ष कारक रहेगा। धर्म व अध्यात्म में रुचि बढ़ने के साथ परिवार में आदर सम्मान बढ़ेगा। भाई बहिनों व स्वजनों का सुख सहयोग मिलेगा। वाद-विवाद, मुकदमा व परीक्षा प्रतियोगिताओं में सफलता मिलने के योग हैं।

सिंह-शनि सिंह राशिवालों को दशमभाव में लोहे के पाये से आने के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं की वृद्धि मानसिक चिन्ता का कारण बनेगी। उच्चाधिकारियों से मेलजोल तथा यात्रा से लाभ के चांस बढ़ेंगे किन्तु धन व्यय की अधिकता से ऋण लेने के अवसर बढ़ेंगे।

कन्या-आपको स्वर्ण पाद से नवम भाव का शनि साधारण फलदायक रहेगा। शारीरिक निर्बलता किसी भी काम में मन नहीं लगने देगी। पारिवारिक सुख में कमी रहेगी। परिश्रम प्रयत्न करने पर भी लाभ के चांस कम प्राप्त होंगे। धार्मिक भावना भी कम होती दिखाई देगी।

तुला-तुला राशिवालों को अष्टमभाव में लघु कल्याणी ढैय्या ताम्रपद से रहेगा। क्रोध व जोश बनते कार्यों में बाधक बनेंगे। गृह क्लेश, अनियमित दिनचर्या स्वास्थ्य को कमजोर बनायेगी। धन लाभ कम, खर्चा अधिक होगा। स्वजनों का सहयोग नाममात्र का प्राप्त होगा।

वृश्चिक-शनि आपको सप्तम भाव में रजत पाद से मध्यम फलप्रद रहेगा। लगन मेहनत से कार्य करने पर लाभ तथा मनोबल बना रहेगा। खर्चा की अधिकता, शरीर में कमजोरी के बावजूद सभी कार्य व्यवस्थित रूप से चलेंगे। नौकरी-व्यापार में साधारण सफलता के योग हैं।

धनु-आपको शनि छठे भाव में रचनात्मक कार्यों में सफलता के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ायेगा। पारिवारिक झंझटों को बुद्धि की चातुर्यता से निपटायेंगे। सहयोगियों के निर्णय को पूर्ण विचार कर अन्तिम निर्णय दें अन्यथा चिन्ता व अशान्ति तथा धन हानि के योग बन सकते हैं।

मकर-राशि वालों को तांबे के पाये से पंचम भाव में शनि विचरण करेगा। बुद्धि में न्यूनता धन का सदुपयोग कम करेगी। भाई बहिनों से सहयोग सामान्य तथा दौड़धूप की अधिकता रहेगी। घर गृहस्थी के निर्वाह में सफल होने से मनोबल अच्छा बना रहेगा।

कुंभ-आपको शनि का लघु कल्याणी ढैय्या स्वर्णपाद से अशांतिप्रद रहेगा। अधिक परिश्रम प्रयत्न करने से स्वल्प लाभ, पारिवारिक संघर्ष तथा पेट के रोग से कष्ट संभव है। व्यापार में लगे व्यक्तियों को दौड़धूप की अधिकता एवं चलते कामों में बाधा उपस्थित हो सकती है।

मीन-शनि पराक्रम स्थान में चांदी के पाये से भौतिक सुख साधनों के साथ मान-सम्मान में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों से मेलजोल तथा अधूर पड़े कार्यों में पुनः चालू करने का अवसर मिलेगा। व्यवसाय में प्रगति होने से धन लाभ तथा घर में मांगलिक उत्सवादि में मन प्रसन्न रहेगा।

गुरु संचार का फल

सम्वत् २०५८ वि. के प्रारंभ में गुरु वृष राशि में विचरण करते हुए दिनांक १६ जून २००१ को प्रातः मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। गतवर्ष गुरुदेव ने २ जून २००० ई. को सायं ६.५५ बजे वृष राशि में प्रवेश किया था। प्रवेश के समय तात्कालिक चन्द्रमा भी वृष राशि में ही रहा तदनुसार मेष, कन्या, मकर राशिवालों को वर्षारम्भ में रजतपाद से गुरु श्रेष्ठ, वृष, कर्क व धनु राशिवालें को स्वर्णपाद से परिश्रम प्रयत्न से सफलता देगा। मिथुन, तुला, कुंभ राशिवालों को वर्षारम्भ में गुरु लोहे के पाये से अच्छा नहीं है। जबकि सिंह, वृश्चिक व मीन राशिवालों को गुरु ताम्बे के पाये से सुख समृद्धि कारक रहेगा।

दिनांक १६ जून २००१ को गुरु मिथुन राशि में प्रातः ७ बजकर २६ मिनट पर प्रवेश करेगा। जो वर्षान्त तक वक्र मार्ग गति से इसी राशि में विचरण करता रहेगा। मिथुन राशि में प्रवेश करते समय तात्कालिक चन्द्रमा मीन राशि व रेवती नक्षत्र में रहेगा। अतः जून मध्य से वर्षान्त तक गुरु का आगमन मिथुन, कन्या व मकर राशिवालों को ताम्रपाद से सुख सौभाग्यवर्धक, वृष, तुला, मीन राशि वालों को स्वर्णपाद से परिश्रम प्रयत्न से सफलता प्रदान करायेगा। मेष, सिंह व धनु राशि वालों को गुरु का आगमन लोहे के पाये से कष्टप्रद रहेगा तथा कर्क, वृश्चिक व कुंभ राशि वालों को रजतपाद से उन्नतिशील और लाभ के अवसर प्रदान करेगा। वृष व मिथुन राशि के गुरु का गोचर फल आगे दिया जा रहा है।

दिनांक २ जून २००० ई. से वृष राशि के गुरु का गोचर फल

मेष— द्वितीय स्थान का गुरु रजतपाद से आर्थिक लाभ व भौतिक सुख-सुविधाओं को बढ़ाने वाला रहेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि व मान-सम्मान बढ़ेगा।

वृष— प्रथम भाव का गुरु स्वर्णपाद से श्रम संघर्ष से सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगा। दौड़-धूप की अधिकता स्वास्थ्य में कमजोरी प्रदान करेगी। राजकीय कार्यों में आंशिक सफलता मिले। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा।

मिथुन— गुरु खर्च स्थान में लोहे के पाये से मानसिक उच्चाटन, भाग्य अवरोधक स्थिति से बनते कार्यों में रुकावटें तथा धन खर्च की अधिकता रहेगी।

कर्क— एकादश भाव का गुरु स्वर्णपाद से होने के कारण चलते कार्यों में लाभ किन्तु नवीन कार्यों की सफलता के लिए विशेष दौड़-धूप करनी पड़ेगी। विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में सफलता, सत्कर्मों में रुचि बढ़ेगी।

सिंह— आपको दशमस्थ गुरु सामान्य किन्तु ताम्बे के पाये से श्रेष्ठफल है। प्रभावी लोगों से मेलजोल बढ़ने का मान-सम्मान बढ़ेगा। सुख समृद्धि और आर्थिक लाभ के चांस मिलेंगे। वक्रत्व गुरु में प्रियजनों से मनमुटाव होगा।

कन्या— भाग्यस्थ गुरु चांदी के पाये से पारिवारिक सुख की वृद्धि तथा अभीष्ट कार्यों में सफलता कारक रहेगा। व्यापार धन्धों में प्रगति तथा नवीन सम्पर्कों से जमीन जायदाद संबंधी काम बनते दिखाई देंगे।

तुला— गुरु आठवें भाव में लौहपाद से श्रम संघर्ष, परेशानियों व उलझन बढ़ाने वाला रहेगा। मानसिक चिन्ता व गृह क्लेश के साथ व्यय की अधिकता रहे।

वृश्चिक— राशिवालों को सप्तम भाव में ताम्बे के पाये से सहयोगियों से अधूरे काम बनाने में सहायक होगा। मांगलिक कार्यों में धन खर्चा बढ़ेगा। नौकरी वालों का अनुकूल जगह पर स्थानान्तरण होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

धनु—आपको गुरु छठे भाव में स्वर्णपाद से अच्छा नहीं है। पुराने विवाद तथा रोग की समस्यायें सामने आयेंगी। मन में अशांति तथा धन खर्चा बढ़ेगा।

मकर—पंचम भाव में गुरु रजत पाद से बुद्धि की चातुर्यता से सभी कार्य पूर्ण करने में सक्षम बनायेगा। आर्थिक पक्ष मजबूत तथा निजी साहस में बढ़ोत्तरी करेगा। विद्यार्थियों को परीक्षा में श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होगा।

कुम्भ—गुरु चतुर्थ भाव के साथ-साथ लोहे के पाये से भी अच्छा नहीं है। रोग, शत्रु वृद्धि, मनोबल कमजोर तथा व्यय की अधिकता से मन खिन्न रहेगा।

मीन—आपको गुरु ताम्रपाद से तृतीय स्थान में मिश्रित फलप्रद है। परिश्रम व परेशानियों के बावजूद आर्थिक काम बनते रहेंगे। व्यक्तित्व व स्वास्थ्य में श्रेष्ठता मनोबल को ऊंचा रखेगी। व्यापार धन्धों में लाभ के चांस यथावत् मिलेंगे।

दिनांक १६ जून २००१ ई. से वर्षान्त तक मिथुन के गुरु का गोचर फल

मेष—आपको गुरु लोहे के पाये से तृतीय भाव में अनावश्यक पीड़ा व चिन्ता के साथ आलस्य को बढ़ावा देगा। लोकापवाद से बचें वरना मानहानि संभव है।

वृष—वृष राशि वालों को द्वितीय भाव का गुरु स्वर्णपाद से श्रम व संघर्ष के साथ अधूरे काम बनते दिखाई देंगे। यात्रा में कष्ट तथा ऋण लेने की योजना बनेगी।

मिथुन—गुरु ताम्रपाद से लग्नस्थ आने से अनावश्यक चिन्ताओं का निवारण होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी तथा भाग्य फल से अधूरे काम बनते दिखाई देंगे।

कर्क—व्यय भाव में स्थिति गुरु रजतपाद से आने से घर परिवार में मांगलिक उत्सवादि में खर्चा बढ़ायेगा। स्वजनों व मित्रों से सहयोग मिलेगा।

सिंह—राशिवालों को लाभ भाव में श्रेष्ठ किन्तु लोहे के पाये से नेष्ट है। अनावश्यक झगड़ों से बचें तथा श्रेष्ठ भाव रखते हुए कार्य में लगे रहें, लाभ होगा।

कन्या—गुरु दशमभाव में पूज्य किन्तु ताम्रपाद से श्रेष्ठ फलप्रद हैं। मित्रों से मेलजोल, मकान, जमीन जायदाद सम्बन्धी कार्य बनने से मन प्रसन्न बना रहेगा।

तुला—आपको गुरु भाग्य स्थान में स्वर्ण पाद से आने के कारण चलते कामों में आंशिक रुकावटें महसूस होंगी। स्वजनों से मनमुटाव तथा दौड़धूप की अधिकता बनेगी। राजकीय कार्य किसी उच्चाधिकारी के सहयोग से बनेंगे।

वृश्चिक—अष्टमस्थ गुरु वाद विवाद, कुटुम्ब पीड़ा तथा शारीरिक कष्ट को बढ़ावा देगा किन्तु रजतपाद से आने के कारण व्यापार में लाभ व मनोबल ऊंचा करेगा।

धनु—मिथुन राशिस्थ गुरु आपको सप्तमभाव में लोहे के पाये से विचरण करेगा। पारिवारिक सुख में गतिरोध, अनावश्यक पीड़ा व खर्चे में वृद्धि करेगा।

मकर—आपको छठे भाव में गुरु ताम्रपाद से लम्बी दूरी की यात्रा से लाभ करायेगा। शत्रु उत्पन्न होकर कमजोर होंगे। व्यापार में लाभ की योजना बनेगी।

कुम्भ—कुंभ राशि वालों को पंचम भाव में रजतपाद श्रेष्ठ बुद्धि व संगति से सुख साधनों में वृद्धि करेगा। नये कार्य की योजना सफल होती दिखाई देगी।

मीन—राशिवालों को गुरु चतुर्थ भाव में स्वर्णपाद से पारिवारिक अशांति कारक रहेगा. पैतृक सम्पत्ति विवाद, दौड़-धूप की अधिकता, मन में अशांति रहेगी। लाभ कम खर्चा अधिक होगा। व्यापार में रुकावटें आने से प्रगति कम होगी।

राहु-केतु का गोचर फल

इस वर्ष सं. २०५८ वि. में वर्षारम्भ से १६ फरवरी २००२ ई. तक राहु मिथुन राशि में तथा केतु धनु राशि में विचरण करेगा। दिनांक १६-१७ फरवरी २००२ ई. की मध्य रात्रि से वर्षान्त तक राहु वृष राशि में तथा केतु वृश्चिक राशि में रहेंगे। जिसका गोचर फल इस प्रकार है।

वर्ष प्रारम्भ से १६ फरवरी २००२ ई. तक राहु-मेष, सिंह, कन्या व मकर राशि वालों को श्रेष्ठ, मिथुन, कर्क, वृश्चिक व मीन राशि वालों को नेष्ट फलप्रद रहेगा। शेष राशियों के लिए मिश्रित फलप्रद रहेगा। यहां केतु-कर्क, तुला, कुंभ व मीन राशि वालों को उत्तम व वृष, कन्या, धनु व मकर राशि वालों को अशुभ फलप्रद तथा शेष राशि वालों को मिले-जुले फलदायक रहेगा।

दिनांक १७ फरवरी २००२ ई. से वर्ष अन्त तक राहु कर्क, सिंह, धनु व मीन राशि वालों को उत्तम तथा वृष, मिथुन, तुला व कुंभ राशि वालों को अशुभ फलप्रद है। शेष राशिवालों को मिले-जुले फल प्राप्त होंगे। यहां केतु मिथुन, कन्या, मकर व कुंभ राशिवालों को श्रेष्ठ फलप्रद तथा मेष, सिंह, वृश्चिक व धनु राशिवालों को नेष्ट फलप्रद रहेगा। शेष राशि वालों को साधारण...

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (२६ मार्च से ८ अप्रैल)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
26	१	चं	७	४८	रे	१९	५२	ऐं	२७	४७	मे. १९।५२	कृतिका ३ में शनि प्र. ९।२६, नूतन संवत्सरारम्भ, A
27	२	मं	८	१७	अ	२०	४५	वै	२६	४८	मेष	पू.भा. में बुध प्र. १४।०५, मुहर्रम मु. मास १ हिजरी B
28	३	बु	८	२५	भ	२१	१९	वि	२५	३३	वृ. २७।२४	भद्रा २०।१९ से, वक्री उ.भा. में शुक्र प्र. १९।१७, शुक्र C
29	४	गु	८	०९	कृ	२१	३०	प्री	२४	००	वृष	भद्रा ८।०९ तक, रोहिणी २ में गुरु २२।२३, श्री लक्ष्मी D
30	५	शु	७	३०	रो	२१	२०	आ	२२	१३	वृष	कल्पादि ५, हयव्रत ५, स्कन्द षष्ठी D पूजनारम्भ E ओली प्रा.
31	६	श	६	३१	मृ	२०	५०	सौ	२०	०६	मि. ९।०८	भद्रा २९।१० से, रेवती में सूर्य १०।१६, जैन आयंबिल E
0	७	श	२९	१०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	सप्तमी क्षय F दुर्गाष्टमी, दुर्गा पू. प्रा., अप्रैल मा. ४ ता. ३०
A1	८	र	२७	२४	आ	१९	५६	शो	१७	४२	मिथुन	भद्रा १६।२० तक, शुक्र पूर्व में उ. १२।४२, श्री F
2	९	चं	२५	१९	पु	१८	४०	अ	१४	५८	क. १३।०२	मीन में बुध प्र. २२।०४, श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समा.
3	१०	मं	२२	५३	पु	१७	०४	सु	१२	००	कर्क	G बाल्यत्व समा. १२।४२, कामदा एका. व्रत (सबका)
4	११	बु	२०	१०	श्ले	१५	१०	धृ	८ / २०	४६ / २०	सिं. १५।१०	भद्रा ९।३४ से २०।१० तक, उ.भा. में बुध २१।४४, शुक्र G
5	१२	गु	१७	१७	म	१३	०६	गं	२५	४८	सिंह	प्रदोष व्रत, हरिदमनोत्सव, मु. ताजिया (मु.)
6	१३	शु	१४	२१	पू.फा	१०	५४	वृ	२२	१७	कं. १६।२३	श्री महावीर जयंती, अनंग त्रयोदशी, मीनाक्षी कल्याणम्
7	१४	श	११	३०	उ.फा	८	४८	ध्रु	१८	५२	कन्या	भद्रा ११।३० से २२।१० तक, दमनक चतुर्दशी, सत्यव्रत
8	१५	र	८	५३	ह	६ / २०	५६ / ३५	व्या	१५	४१	तु. १८।०७	आर्द्रा ३ में राहु पू.षा. १ में केतु १२।२५, चैत्री १५. H

A नवारात्र प्रा., घट स्थापनं, गुड़ी पड़वा, चन्द्रदर्शन मु. ३०, पंचक समा. १९।५२ B सन् १४२२ प्रा., श्री झुलेलाल ज., वैधृति पुण्यं C पश्चिम में अस्त ८।१२, वैनायक ४ व्रत H श्री हनुमान ज., जैन आयंबिल ओली समा.

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (९ से २३ अप्रैल)

अप्रैल	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
9	१	चं	६	४१	स्वा	२८	२८	ह	१२	५३	तुला	A १८।१५, बुध पूर्व में अस्त २१।३६, धनि. ३ कुंभ में B
0	२	चं	२९	०२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय: B हर्षल प्र. १२।४४
10	३	मं	२८	०३	वि	२८	१३	वज्र	१०	३६	वृ. २२।१३	भद्रा १६।२७ से २८।०३ तक, मूल धनु में मंगल प्र. A
11	४	बु	२७	५२	अनु	२८	४२	सि	८	५०	वृश्चिक	कृष्ण चतुर्थी व्रत C मु. ३०, बैशाखी (पं.), सौर D
12	५	गु	२८	२९	ज्ये	२९	५८	व्य	७	४४	ध. २९।५८	रेवती में बुध प्र. ८।१६, व्यतिपात पुण्यं
13	६	शु	२९	५१	मू	-		व	७	१५	धनु	भद्रा २९।५१ से, अश्विन मेष में सूर्य २३।४२, संक्रांति C
14	७	श	-	-	मू	७	५८	प	७	२१	धनु	भद्रा १८।४९ तक D मास वैशाख प्रा., गुड फ्राईडे
15	७	र	७	५२	पू.षा	१०	३३	शि	७	५५	म. १३।१७	कालाष्टमी, इस्टर सण्डे E पंचक प्रा. ६।०८ से,
16	८	चं	१०	१७	उ.षा	१३	३१	सि	८	४६	मकर	रोहिणी ३ में गुरु प्र. २०।४५, शीतलाष्टमी
17	९	मं	१२	५२	श्र	१६	३६	सा	९	४८	मकर	भद्रा २६।०८ से, F ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ
18	१०	बु	१५	२०	ध	१९	३३	शुभ	१०	४७	कुं. ६।०८	भद्रा १५।२० तक, अश्विन मेष में बुध प्र. २६।५१, E
19	११	गु	१७	३०	श	२२	११	शु	११	३१	कुंभ	वरूथिनी एकादशी व्रत (सबका)
20	१२	शु	१९	१२	पू.भा	२४	२३	ब्र	११	५७	मी. १३।५३	मार्गी शुक्र १४।४४, सायन वृष में सूर्य प्र. ६।०६, F
21	१३	श	२०	२०	उ.भा	२६	००	ऐं	११	५६	मीन	भद्रा २०।२० से, शनि प्रदोष व्रत, रा. वैशाख मासारंभ
22	१४	र	२०	५५	रे	२७	०३	वै	११	३१	मे. २७।०३	भद्रा ८।४२ तक, पंचक समाप्त २७।०३, वैधृति पुण्यं
23	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	[illegible]	३९	मेष	सोमवती अमावस्या, देवपितृकार्ये अमावस्या

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (२४ अप्रैल से ७ मई)

अप्रैल	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
24	१	मं	२०	३०	भ	२७	४६	प्री	९	२४	मेष	A अगस्त्य (तारा) अस्त २४।४७, चन्द्रदर्शन मु. ३०
25	२	बु	१९	४१	कृ	२७	३३	आ	७	४८	वृ. ९।३६	भर. में बुध प्र. १०।५९, कृत्ति. ४ में शनि प्र. १४।३९, A
26	३	गु	१८	३३	रो	२७	००	सौ	५/२७	५६/५०	वृष	सफर मु. मास २ प्रा., अक्षय तृतीया, वर्षी तप समा. जैन
27	४	शु	१७	०८	मृ	२६	१४	अ	२५	३३	मि. १४।४०	भद्रा ५।५२ से १७।०८ तक, भर. में सूर्य प्र. १५।२८, B
28	५	श	१५	३०	आ	२५	१६	सु	२३	०३	मिथुन	श्री आद्य शंकराचार्य ज., श्री रामानुजाचार्य ज. (द.भारत),
29	६	र	१३	४१	पुन	२४	०९	धृ	२०	२७	क. १८।२६	श्री रामानुजाचार्य ज. (उ. भारत में), चन्दन छठ (बंगाल)
30	७	चं	११	४२	पु	२२	५१	शू	१७	४३	कर्क	भद्रा ११।४२ से २२।३९ तक C स्वामी केवल ज्ञान (जैन)
M1	८	मं	९	३४	श्ले	२१	२६	गं	१४	५३	सिं. २१।२६	कृत्तिका में बुध प्र. १७।२१, श्री दुर्गाष्टमी
2	९	बु	७	२०	म	१९	५५	वृ	११	५८	सिंह	रोहि. ४ में गुरु प्र. २४।१०, श्री सीता ९, श्री महावीर C
0	१०	बु	२९	०२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	दशमी क्षय: D मोहिनी एका. व्रत स्मार्त
3	११	गु	२६	४३	पू.फा	१८	२३	ध्रु	९	००	कं. २४।००	भद्रा १५।५३ से २६।४३ तक, वृष में बुध प्रवे. ८।०९, D
4	१२	शु	२४	३१	उ.फा	१६	५३	व्या	५/२७	०३/००	कन्या	बुध पश्चिम में उदय २७।१८, मोहिनी एका. व्रत (वै.)
5	१३	श	२२	२९	ह	१५	३२	व	२४	२६	तु. २६।५७	शनि प्रदोष व्रत, अशोक त्रिरात्रि व्रत B वैनायक ४ व्रत
6	१४	र	२०	४३	चि	१४	२७	सि	२१	५८	तुला	भद्रा २०।४३ से, श्री नृसिंह जयंती
7	१५	चं	१९	२४	स्वा	१३	४४	व्य	१९	५१	तुला	भद्रा ८।०० तक, शनि पश्चिम में अस्त १९।०८, सत्यव्रत, E
												E बुद्ध पूर्णिमा, व्यतिपात पुण्यं

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (२४ मई से ६ जून)

मई	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
24	१	गु	६	३५	रो	१०	२६	सु	११	४१	मि. २१।३९	चन्द्रदर्शन मु. ३० A २१।३०, श्री दुर्गाष्टमी
0	२	गु	२८	३२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय:B वृद्धत्व प्रा. ७।५०, श्री गंगा दशहरा
25	३	शु	२६	१७	मृ	९	०८	धृ	८	५५	मिथुन	रोहि. में सूर्य प्र. ५।५२, रवि-उल-अव्वल मु. मास ३ प्रा.
26	४	श	२३	५४	आ	७	३७	शू	५/२६	५९/५०	क. २४।२५	भद्रा १३।०६ से २३।५४ तक, विनायक ४ व्रत
27	५	र	२१	२९	पुन	६/२८	०१/२३	वृ	२३	५६	कर्क	श्रुति पंचमी (जैन) C व्यतिपात पुण्यं
28	६	चं	१९	०६	श्ले	२६	४८	धु	२०	५६	सिं. २६।४८	विन्ध्यवासिनी पूजा
29	७	मं	१६	४७	म	२५	१९	व्या	१८	००	सिंह	भद्रा १६।४७ से २७।४१ तक
30	८	बु	१४	३६	पूफा	२४	००	ह	१५	१०	सिंह	अश्विन मेष में शुक्र प्र. २३।५३, वक्री हर्षल A
31	९	गु	१२	३७	उफा	२२	५२	व	१२	३०	कं. ५।३१	श्री माहेश्वरी (महेश) नवमी
J1	१०	शु	१०	४९	ह	२१	५९	सि	१०	००	कन्या	भद्रा २२।०३ से, मृग. २ में गुरु प्र. २०।१४, गुरु B
2	११	श	९	२०	चि	२१	२३	व्य	७	४४	तु. ९।३९	भद्रा ९।२० तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.), C
3	१२	र	८	१०	स्वा	२१	१०	वरि	५/२८	४४/०२	तुला	प्रदोष व्रत D (बारावफात), सत्यव्रत
4	१३	चं	७	२३	वि	२१	२१	शि	२६	४१	वृ. १५।१५	बुध वक्री १६।२९, गुरु पश्चिम में अस्त ७।५०
5	१४	मं	७	०२	अनु	२२	००	सि	२५	४३	वृश्चिक	भद्रा ७।०२ से १९।०३ तक, ईद-ए-मिलाद D
6	१५	बु	७	११	ज्ये	२३	०९	सा	२५	१०	ध. २३।०९	वक्री ज्येष्ठा १ में प्लूटो १२।५५, पूर्णिमा पुण्यं

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (८ से २३ मई)

मई	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
8	१	मं	१८	३६	वि	१३	३२	व	१८	०९	वृ. ७।३२	रोहिणी में बुध प्र. १२।१४, देव ऋषि नारद जयंती
9	२	बु	१८	२५	अनु	१३	५४	प	१६	५७	वृश्चिक	C रा. ज्येष्ठ मासारंभ, वट सावित्री व्रत
10	३	गु	१८	५४	ज्ये	१४	५६	शि	१६	१६	ध. १४।५६	भद्रा ६।३५ से १८।५४ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
11	४	शु	२०	०३	मू	१६	३७	सि	१६	०७	धनु	कृत्तिका में सूर्य प्र. ९।४२, वक्री नेपच्यून ५।४०
12	५	श	२१	४९	पू.षा	१८	५४	सा	१६	२६	म. २५।३३	वक्री मंगल १४।०२ A ३०, सौर ज्येष्ठ मास प्रा.
13	६	र	२४	०१	उ.षा	२१	३८	शुभ	१७	०८	मकर	भद्रा २४।०१ से, रेवती में शुक्र प्र. २९।०२
14	७	चं	२६	२८	श्र	२४	३७	शु.	१८	०३	मकर	भद्रा १३।१३ तक, वृष में सूर्य प्र. २०।३५, संक्रांति मु.A
15	८	मं	२८	५५	ध	२७	३७	ब्र	१९	०२	कुं. १४।०८	कालाष्टमी, पंचक प्रा. १४।०८ से
16	९	बु	—	—	श	—	—	ऐं	१९	५४	कुम्भ	मृगशिर में बुध प्र. २२।५२
17	९	गु	७	०७	श	६	२३	वै	२०	३०	मी. २६।१२	भद्रा २०।०३ से, मृग. १ में गुरु प्र. २८।२२, वैधृति पुण्यं
18	१०	शु	८	५१	पू.भा	८	४४	वि	२०	४१	मीन	भद्रा ८।५१ तक B समाप्त ११।३९, वट सावित्री व्रतारंभ
19	११	श	१०	०१	उ.भा	१०	३१	प्री	२०	२२	मीन	अपरा एकादशी व्रत (सबका)
20	१२	र	१०	३१	रे	११	३९	आ	१९	३३	मे. ११।३९	सायन मिथुन में सूर्य प्र. २९।१५, प्रदोष व्रत, पंचक B
21	१३	चं	१०	२२	अ	१२	०९	सौ	१८	१३	मेष	भद्रा १०।२२ से २२।०३ तक, रोहि. १ में शनि प्र. २३।२५
22	१४	मं	९	३५	भ	१२	०३	शो	१६	२४	वृ. १७।०३	मिथुन में बुध प्र. १५।२८ पितृकार्याऽमावस्या, C
23	३०	बु	८	२८	कृ	११	२७	अ	१४	१२	वृष	देवकार्याऽमावस्या

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (७ से २१ जून)

जून	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
7	१	गु	७	५१	मू	२४	४९	शुभ	२५	०२	धनु	मृग. में सूर्य प्र. २७।४५, बुध पश्चिम में अस्त १२।४७
8	२	शु	९	०४	पू.षा	२७	००	शु	२५	१७	धनु	भद्रा २१।५१ से A मूल ४ में केतु प्र. १०।०१
9	३	श	१०	४६	उ.षा			ब्र	२५	५४	म. ९।३७	भद्रा १०।४६ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
10	४	र	१२	५२	उ.षा	५	३५	ऐं	२६	४५	मकर	वक्री वृश्चि. में मंगल प्र. ११।३६, आर्द्रा २ में राहु A
11	५	चं	१५	१४	श्र	८	२९	वै	२७	४४	कुं. २१।५९	वैधृति पुण्यं, पंचक प्रारम्भ २१।५९ से
12	६	मं	१७	४०	ध	११	२९	वि	२८	४२	कुंभ	भद्रा १७।४० से, शनि पूर्व में उदय २०।१६
13	७	बु	१९	५८	श	१४	२४	प्री			कुंभ	भद्रा ६।५१ तक, भरणी में शुक्र प्र. २६।०७
14	८	गु	२१	५५	पू.भा	१७	०२	प्री	५	२९	मी. १०।२५	मिथुन में सूर्य प्र. २७।०९, संक्रांति मु. ४५, B
15	९	शु	२३	१९	उ.भा	१९	१०	आ	५	५७	मीन	B कालाष्टमी, सौर आषाढ़ मास प्रा.
16	१०	श	२४	०३	रे	२०	४०	सौ	५	५७	मे. २०।४०	भद्रा ११।४७ से २४।०३ तक, मृग. ३ मिथुन में गुरु प्र.C
17	११	र	२४	०४	अ	२१	२८	शो	५/२८	३५/२०	मेष	योगिनी एका. व्रत (सबका) D भौम प्रदोष व्रत
18	१२	चं	२३	२०	भ	२१	३२	सु	२६	३७	वृ. ३।३७	C ७।२६, रोहि. २ में शनि प्र. २३।००, पंचक समा. २०।४०
19	१३	मं	२१	५६	कृ	२०	५६	धृ	२४	२३	वृष	भद्रा २१।५६ से, वक्री वृष में बुध प्र. १६।१२, D
20	१४	बु	१९	५७	रो	१९	४५	शू	२१	४२	वृष	भद्रा ९।०१ तक E प्र. १३।०१, देव पितृकार्याऽमावस्या
21	३०	गु	१७	३०	मृ	१८	०५	गं	१८	३७	मि. ६।४८	आर्द्रा में सूर्य प्र. २६।४२, सायन कर्क में सूर्य E

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (२२ जून से ५ जुलाई)

जून	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
22	१	शु	१४	४१	आ	१६	०५	वृ	१५	१५	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. ४५, समर्घ, रा. आषाढ़ मासारम्भ
23	२	श	११	४०	पुन	१३	५२	ध्रु	११	४३	क. ८।२६	रवि उस्सानी मु. मास ४ प्रा., श्री जगदीश रथयात्रा (उ.)
24	३	र	८	३५	पु	११	३६	व्या	८/२८	०९/३४	कर्क	भद्रा १९ ।०३ से, विनायक ४ व्रत
25	४	चं	५	३३	श्ले	९	२४	व	२५	०९	सिं. ९।२४	भद्रा ५ ।३३ तक, बुध पूर्व में उदय २९ ।१७,
0	५	चं	२६	४०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	पंचमी क्षय: B ६।४०, देवशयनी एका. व्रत (स.)
26	६	मं	२४	०४	म	७	२३	सि	२१	५७	सिंह	कृत्ति. में शुक्र प्र. २५ ।५९, श्री महावीर गर्भ कल्याणंक
27	७	बु	२१	४९	पू.फा	५/२८	३९/१८	व्य	१९	०३	कं. ११।१७	भद्रा २१ ।४९ से, व्यतिपात पुण्यं, जैन अट्ठाई प्रारम्भ
28	८	गु	१९	५९	ह	२७	२३	व	१६	२८	कन्या	भद्रा ८ ।५१ तक, मार्गी बुध १६ ।५९, गुरु पूर्व में A
29	९	शु	१८	३७	चि	२६	५७	प	१४	१६	तु. १५।०७	वृष में शुक्र प्र. ५ ।२९, भड्डुली नवमी
30	१०	श	१७	४५	स्वा	२६	५९	शि	१२	२८	तुला	मृगशिर ४ में गुरु प्र. १९ ।५४
J1	११	र	१७	२२	वि	२७	३२	सि	११	०३	वृ. २१।२१	भद्रा ५ ।३० से १७ ।२२ तक, गुरु बाल्यत्व समाप्त B
2	१२	चं	१७	२९	अनु	२८	३२	सा	१०	०३	वृश्चिक	सोम प्रदोष व्रत, हरिवासर ११ ।५२ तक
3	१३	मं	१८	०४	ज्ये	-	-	शुभ	९	२५	वृश्चिक	जया पार्वती व्रत प्रारंभ A उ. ६।४०, श्री दुर्गाष्टमी
4	१४	बु	१९	०७	ज्ये	६	०१	शु	९	०९	ध. ६।०१	भद्रा १९ ।०७ से, चौमासी चौदश (जैन)
5	१५	गु	२०	३५	मू	७	५५	ब्र	९	१४	धनु	भद्रा ७ ।४८ तक, पुन. में सूर्य प्र. २६ ।१६, गुरु C
												C पूर्णिमा, सत्यव्रत, खण्डग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (२१ जुलाई से ४ अगस्त)

जुलाई	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
21	१	श	२१	४२	पु	२१	०१	व	१८	२७	कर्क	मृग. में शुक्र प्र. ११ ।४०D पुत्रदा एका. व्रत स्मा.-वै.
22	२	र	१८	०४	श्ले	१८	१३	सि	१४	२३	सिं. १८।१३	पुन. में बुध प्र. १० ।४४, सायन सिंह में सूर्य प्र. २३ ।५८,A
23	३	चं	१४	३२	म	१५	३२	व्य	१०	२३	सिंह	भद्रा २४ ।५१ से, हरियाली तीज, रा. श्राव. मासारम्भ,B
24	४	मं	११	१५	पू.फा	१३	०६	व	६/२७	३४/०३	कं. १८।३३	भद्रा ११ ।१५ तक, विनायक ४ व्रत, श्रवण तप (जैन)
25	५	बु	८	२३	उ.फा	११	०५	शि	२३	५८	कन्या	बुध पूर्व में अस्त ७ ।३१, नाग पंचमी देशाचारे
26	६	गु	६	०२	ह	९	३६	सि	२१	२१	तु. २१।०५	भद्रा २८ ।२७ से, शीतला सप्तमी पूजन (सिन्ध में)
0	७	गु	२८	१७	०	०	०	०.	०	०	० ० ०	सप्तमी क्षय: B जमादि-उल-अव्वल मु. मास ५ प्रा.
27	८	शु	२७	१३	चि	८	४४	सा	१९	१६	तुला	भद्रा १५ ।४० तक, कर्क में बुध प्र. १६ ।०८, मिथुन में C
28	९	श	२६	४९	स्वा	८	३३	शुभ	१७	४५	वृ. २६।५१	A चन्द्रदर्शन मु. ३० C शुक्र प्र. ९ ।०७, श्री दुर्गाष्टमी
29	१०	र	२७	०५	वि	९	०२	शु	१६	४६	वृश्चिक	पुष्य में बुध प्र. ७ ।२६
30	११	चं	२७	५७	अनु	१०	०९	ब्र	१६	१६	वृश्चिक	भद्रा १५ ।२७ से २७ ।५७ तक, आर्द्रा २ में गुरु प्र. २८ ।०२,D
31	१२	मं	२९	१९	ज्ये	११	४९	ऐं	१६	११	ध. ११।४९	पुत्रदा एका. व्रत (नि.), मंगला गौरी पूजन
A1	१३	बु	-	-	मू	१३	५७	वै	१६	२८	धनु	आर्द्रा में शुक्र प्र. २९ ।०९, प्रदोष व्रत, वैधृति पुण्यं
2	१३	गु	७	०५	पू.षा	१६	२६	वि	१७	०२	म. २३।०६	अश्लेषा में सूर्य प्र. २४ ।३७
3	१४	शु	९	१०	उ.षा	१९	११	प्री	१७	४८	मकर	भद्रा ९ ।१० से २२ ।२८ तक, सत्यव्रत, वरद् लक्ष्मी व्रत
4	१५	श	११	२७	श्र	२२	०६	आ	१८	४२	मकर	अश्ले. में बुध प्र. १६ ।५४, रक्षाबन्धन

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (६ से २० जुलाई)

जुलाई	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
6	१	शु	२२	२५	पू.षा	१०	१२	ऐं	९	३७	म. १६।५०	मिथुन में बुध प्र. ११ ।३३
7	२	श	२४	३५	उ.षा	१२	४९	वै	१०	१६	मकर	अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल में), वैधृति पुण्यं
8	३	र	२६	५६	श्र	१५	४१	वि	११	०७	कं. २९।१०	भद्रा १३ ।४५ से २६ ।५६ तक, पंचक प्रा.२९ ।१० से
9	४	चं	२९	२३	ध	१८	४१	प्री	१२	०५	कुंभ	रोहि. में शुक्र प्र. ११ ।३५, कृष्ण चतुर्थी व्रत
10	५	मं	-	-	श	२१	४१	आ	१३	०५	कुंभ	नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थल में), मंगला गौरी पू.
11	५	बु	७	४६	पू.भा	२४	३१	सौ	१४	००	मी. १९।५०	Dवक्री धनि. २ मकर में हर्श. प्र. २७ ।१०
12	६	गु	९	५४	उ.भा	२७	०१	शो	१४	४२	मीन	भद्रा ९ ।५४ से २२ ।५० तक
13	७	शु	११	३७	रे	२९	००	अ	१५	०४	मे. २९।००	आर्द्रा में बुध प्र. १५ ।०२, कालाष्टमी, पंचक समा. २९ ।००
14	८	श	१२	४६	अ	-	-	सु	१४	५७	मेष	B मु. ३०, सौर श्रावण मासारम्भ
15	९	र	१३	१३	अ	६	२०	धृ	१४	१८	मेष	भद्रा १३ ।१३ से, आर्द्रा १ में गुरु प्र. १६ ।०८, A
16	१०	चं	१२	५५	भ	६	५६	शू	१३	०२	वृ. १२।५८	भद्रा १२ ।५५ तक, कर्क में सूर्य प्र. १३ ।५८, संक्रांतिB
17	११	मं	११	५०	कृ	६	४७	गं	११	०९	वृष	कामदा एकादशी व्रत (सबका)
18	१२	बु	१०	०१	रो	५/२८	५३/२०	वृ	८	४०	मि. १९।११	प्रदोष व्रत C २५ ।४७, मार्गी मंगल २७ ।३९, D
19	१३	गु	७	३५	अ	२६	१५	ध्रु	५/२६	४०/१३	मिथुन	भद्रा ७ ।३५ से १८ ।०९ तक, पुष्य में सूर्य प्र. C
0	१४	गु	२८	३३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षय: A रोहि. ३ में शनि प्र.८ ।१५
20	३०	शु	२५	२६	पुन	[illegible]	४२	ह	२२	२६	क. १८।५५	देवपितृकार्याऽमावस्या, हरियाली अमावस्या

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (५ से १९ अगस्त)

अग.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
5	१	र	१३	५२	ध	२५	०६	सौ	१९	४१	कुं. ११।३६	वक्री श्रवण १ में नेप. २६ ।४७, पंचक प्रा. ११ ।३६ से
6	२	चं	१६	१८	श	२८	०६	शो	२०	४०	कुंभ	भद्रा २९ ।३१ से A जन्माष्टमी व्रत (स.), कालाष्टमी
7	३	मं	१८	४१	पू.भा	-	-	अ	२१	३५	मी. २४।१७	भद्रा १८ ।४१ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
8	४	बु	२०	५४	पू.भा	६	५९	सु	२२	२२	मीन	B में गुरु प्र. २० ।५०, प्रदोष व्रत, सौर भाद्र. मास
9	५	गु	२२	४८	उ.भा	९	३९	धृ	२२	५४	मीन	श्री माधव देव तिथि (आसाम)
10	६	शु	२४	१७	रे	११	५७	शू	२३	०७	मे. ११।५७	भद्रा २४ ।१७ से, चन्द्र षष्ठी, पंचक समा ११ ।५७
11	७	श	२५	१२	अ	१३	४७	गं	२२	५४	मेष	भद्रा १२ ।४९ तक, मघा सिंह में बुध प्र. ६ ।२६
12	८	र	२५	२७	भ	१५	१	वृ	२२	०१	वृ. २१।१३	आर्द्रा १ में राहु मूल ३ में केतु प्र. ७ ।३३, श्री कृष्णA
13	९	चं	२४	५७	कृ	१५	३२	ध्रु	२०	५०	वृष	पुनर्वसु में शुक्र प्र. १७ ।२३, गोगा नवमी
14	१०	मं	२३	४२	रो	१५	१९	व्या	१८	५४	मि. २६।५५	भद्रा १२ ।२६ से २३ ।४२ तक
15	११	बु	२१	४३	मृ	१४	२१	ह	१६	२२	मिथुन	अजा एका. व्रत सब., भा. स्वतन्त्रता दिवस
16	१२	गु	१९	०४	आ	१२	४१	व	१३	१७	क. २९।०३	मघा सिंह में सूर्य प्र. २२ ।१८, संक्रांति मु. ४५, आर्द्रा ३B
17	१३	शु	१५	५२	पुन	१०	२६	सि	६/२०	४२/४४	कर्क	भद्रा १५ ।४२ से २६ ।०७ तक, व्यतिपात पुण्यं
18	१४	श	१२	१७	पु	७/२८	४५/४६	व	२५	३२	सिं. २८।१६	पू.फा. में बुध प्र. ८ ।२१, पितृकार्याऽमावस्या
19	३०	र	८	२७	म	२५	४२	प	२१	१४	सिंह	बुध पश्चिम में उदय १४ ।३१, देवकार्याऽमावस्या

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (२० अग. से २ सितं.)

अग.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
0	१	र	२८	३३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रतिपदा क्षय: A श्री गणेश चतुर्थी
20	२	चं	२४	४७	पू.फा	२२	४४	शि	१६	५९	कं. २८।०२	चन्द्रदर्शन मु. ३० B रा. भाद्रपद मासारम्भ
21	३	मं	२१	२०	उ.फा	२०	०४	सि	१२	५५	कन्या	कर्क में शुक्र प्र. २९।३९, जमादि उस्सानी मु. मास ६ प्रा.
22	४	बु	१८	२०	ह	१७	५१	सा	९	१२	तु. २८।५८	भद्रा ७।४६ से १८।२० तक, रोहि ४ में शनि प्र. २६।४६, A
23	५	गु	१५	५८	चि	१६	१६	शुभ	०/२३	०१/२०	तुला	मार्गी प्लूटो २५।४५, सायन कन्या में सूर्य प्र. ६।५८, B
24	६	शु	१४	२१	स्वा	१५	२५	ब्र	२५	१३	तुला	पुष्य में शुक्र प्र. २५।१७, सूर्य षष्ठी
25	७	श	१३	३२	वि	१५	२२	ऐं	२३	४९	वृ. ९।१८	भद्रा १३।३२ से २५।२७ तक, उ.फा. में बुध प्र. २७।४६
26	८	र	१३	३३	अनु	१६	०८	वै	२३	०४	वृश्चिक	मूल धनु में मंगल प्र. २१।१२, श्री दुर्गाष्टमी, वैधृति पुण्यं
27	९	चं	१४	१८	ज्ये	१७	३७	वि	२२	५२	ध. १७।३७	कन्या में बुध प्र. २९।५५, श्री चन्द्र नवमी
28	१०	मं	१५	४३	मूल	१९	४३	प्री	२३	०८	धनु	भद्रा २८।३८ से, C अगस्त्य (तारा) उदय १४।५८
29	११	बु	१७	३८	पू.षा	२२	१६	आ	२३	४५	म. २८।५८	भद्रा १७।३८ तक, पद्मा एका. व्रत (सब.), C
30	१२	गु	१९	५४	उ.षा	२५	०७	सौ	२४	३६	मकर	पू.फा. में सूर्य प्र. १८।१२
31	१३	शु	२२	२०	श्र	२८	०७	शो	२५	३३	मकर	प्रदोष व्रत
S1	१४	श	२४	४९	ध	-	-	अ	२६	३२	कुं. १७।३८	भद्रा २४।४९ से, अनन्त १४ व्रत, पंचक प्रा. १७।३८ से
2	१५	र	२७	१४	ध	७	०८	सु	२७	२८	कुंभ	भद्रा १४।०२ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं

प्र. आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१८ सितं. से २ अक्टू.)

सितं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
18	१	मं	१२	२०	उ.फा	६/२८	३९/०१	शु	१९	४०	कन्या	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घB वक्री शनि २९।१०
19	२	बु	९	००	चि	२५	५१	ब्र	१५	५७	तु. १४।५२	रजब मु. मास ७ प्रा. A १६।२६, विनायक ४ व्रत
20	३	गु	६	११	स्वा	२४	२०	ऐं	१२	४१	तुला	भद्रा १७।०१ से २८।०२ तक, तुला में बुध प्र. A
0	४	गु	२८	०२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी क्षय: C पंचक प्रारम्भ २३।५५ से
21	५	शु	२६	४१	वि	२३	३४	वै	१०	०१	वृ. १७।०१	पू.षा. में मंगल प्र. २८।५८, वैधृति पुण्यं
22	६	श	२६	११	अनु	२३	४०	वि	७	५९	वृश्चिक	सायन तुला में सूर्य प्र. २८।३५
23	७	र	२६	३३	ज्ये	२४	३६	प्री	६/३०	४०/००	ध. २४।३६	भद्रा २६।३३ से, राष्ट्रीय आश्विन मासारम्भ
24	८	चं	२७	४३	मू	२६	१८	सौ	२९	५६	धनु	भद्रा १५।०३ तक, दुर्गाष्टमी
25	९	मं	२९	३१	पू.षा	२८	३८	शो	-	-	धनु	D दिन हजरत अली (मु.)
26	१०	बु	-	-	उ.षा	-	-	शो	६	२१	म. ११।१७	हस्त में सूर्य प्र. २७।३३, पू.फा. में शुक्र प्र. २९।२२, B
27	१०	गु	७	४६	उ.षा	७	२४	अ	७	०६	मकर	भद्रा २१।०० से,
28	११	शु	१०	१५	श्र	१०	२४	सु	८	०२	कुं. २३।५५	भद्रा १०।१५ तक, कमला एका. व्रत सब., C
29	१२	श	१२	४८	ध	१३	२६	धृ	९	००	कुंभ	पुनर्वसु १ में गुरु प्र. २४।३४, शनि प्रदोष व्रत
30	१३	र	१५	१३	श	१६	२२	शू	९	५४	कुंभ	E महात्मा गांधी व शास्त्री जन्म दि.
01	१४	चं	१७	२५	पू.भा	१९	०४	गं	१०	३९	मी. १२।१५	भद्रा १७।२५ से, वक्री बुध २०।००, जन्म D
2	१५	मं	१९	२०	उ.भा	२१	३०	वृ	११	११	मीन	भद्रा ६।२५ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, E

प्र. आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (३ से १७ सितं.)

सितं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
3	१	चं	२१	३२	श	१०	०५	धृ	२८	१८	कुंभ	हस्त में बुध प्र. २२।१२, प्रतिपदा श्राद्ध A द्वितीया श्राद्ध
4	२	मं	-	-	पू.भा	१२	५३	शू	२८	५९	मी. ६।१२	आर्द्रा ४ में गुरु प्र. २१।३८, आश्ले. में शुक्र प्र. २९।३८, A
5	२	बु	७	३८	उ.भा	१५	२९	गं	२९	२९	मीन	भद्रा २०।३६ से, तृतीया श्राद्ध B पंचक समा. १७।४९
6	३	गु	९	३०	रे	१७	४९	वृ	२९	४४	मे. १७।४९	भद्रा ९।३० तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध, B
7	४	शु	१०	०१	अ	१९	४८	ध्रु	२९	४०	मेष	पंचमी श्राद्ध C प्र. २१।१५, एका. श्राद्ध, इन्दिरा एका. व्रत स्मा.
8	५	श	१२	०७	भ	२१	२२	व्या	२९	१५	वृ. २७।४०	षष्ठी श्राद्ध E श्राद्ध, सौर आश्विन मासारम्भ
9	६	र	१२	४४	कृ	२२	२४	ह	२८	२३	वृष	भद्रा १२।४४ से २४।४९ तक, सप्तमी श्राद्ध १२।४४ बाद
10	७	चं	१२	४५	रो	२२	५१	व	२७	०१	वृष	कालाष्टमी, अष्टमी श्राद्ध १२।४५ बाद
11	८	मं	१२	०७	मृ	२२	३७	सि	२५	०६	मि. १०।१९	जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
12	९	बु	१०	४८	आ	२१	४३	व्य	२२	३८	मिथुन	भद्रा २१।५३ से, दशमी श्राद्ध, व्यतिपात पुण्यं
13	१०	गु	८	४८	पुन	२०	०९	व	१९	३८	क. १४।३६	भद्रा ८।४८ तक, उ.फा. में सूर्य प्र. १२।०७, चित्रा में बुधC
14	११	शु	६	११	पु	१८	०१	प	१६	१०	कर्क	इन्दिरा एकादशी व्रत (वैष्णव), द्वादशी श्राद्ध,
0	१२	शु	२७	०३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वादशी क्षय:D ३०, मघा सिंह में शुक्र प्र. ६।४९, चतुर्दशी E
15	१३	श	२३	३१	श्ले	१५	२६	शि	१२	१९	सिं. १५।२६	भद्रा २३।३१ से, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
16	१४	र	१९	४७	म	१२	३४	सि	८/२७	११/५७	सिंह	भद्रा ९।४० तक, कन्या में सूर्य प्र. २२।१२, संक्रांति मु.D
17	३०	चं.	१५	५९	पू.फा	९	३४	शुभ	२३	४३	कं. १४।५०	सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, सोमवती अमावस

द्वि. आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (३ से १६ अक्टू.)

अक्टू.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
3	१	बु	२०	५६	रे	२३	३८	ध्रु	११	२९	मे. २३।३८	पंचक समाप्त २३।३८
4	२	गु	२२	१२	अ	२५	२६	व्या	११	३१	मेष	B २ में केतु २९।३०, कमला एका. व्रत (सब.)
5	३	शु	२३	०६	भ	२६	५३	ह	११	१८	मेष	भद्रा १०।४२ से २३।०६ तक
6	४	श	२३	३८	कृ	२७	५७	व	१०	४८	वृ. ९।११	कृष्ण चतुर्थी व्रत A अस्त २२।३२
7	५	र	२३	४४	रो	२८	३७	सि	९	५८	वृष	उ.फा. में शुक्र प्र. २५।४४, बुध पश्चिम में A
8	६	चं	२३	२२	मृ	२८	४८	व्य	८	४८	मि. १६।१६	भद्रा २३।२२ से, व्यतिपात पुण्यं
9	७	मं	२२	३०	आ	२८	२९	व	७/२९	१६/१८	मिथुन	भद्रा ११।०० तक
10	८	बु	२१	०५	पुन	२७	३८	शि	२६	५४	क. २१।५४	चित्रा में सूर्य प्र. १६।३७, कन्या में शुक्र प्र. १८।३१
11	९	गु	१९	०८	पु	२६	१६	सि	२४	०५	कर्क	भद्रा २९।५९ से, वक्री कन्या में बुध प्र. १६।३६
12	१०	शु	१६	४३	श्ले	२४	२६	सा	२०	५२	सिं. २४।२६	भद्रा १६।४३ तक
13	११	श	१३	५२	म	२२	१३	शुभ	१७	२०	सिंह	उ.षा. में मंगल प्र. १९।२५, मृग. ४ में राहु मूल B
14	१२	र	१०	४२	पू.फा	१९	४५	शु	१३	३४	कं. २५।०६	प्रदोष व्रत C शबे-ए-मिराज (मु.)
15	१३	चं	७	२४	उफा	१७	१०	ब्र	९/२०	४०/४८	कन्या	भद्रा ७।२४ से १७।४३ तक, मास शिवरात्रि व्रत, C
0	१४	चं	२८	०४	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी क्षय: D वैधृति पुण्यं
16	३०	मं	२४	५५	ह	१४	४१	वै	२६	०४	तु. २५।३२	देवपितृकार्याऽमावस्या, भौमवती अमावस, D

द्वि. आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१७ अक्टू. से १ नंव.)

अक्टू.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
17	१	बु	२२	०६	चि	१२	२७	वि	२२	३७	तुला	तुला में सूर्य प्र. १०।०८, संक्रान्ति मु. ३०, वक्री हस्त A
18	२	गु	१९	४८	स्वा	१०	३८	प्री	१९	३५	वृ. २०।४०	मकर में मंगल प्र. २१।००, हस्त में शुक्र प्र. २०।१४, B
19	३	शु	१८	०९	वि	९	२६	आ	१७	०५	वृश्चिक	भद्रा २९।३७ से, सावान मु. मास ८ प्रा.
20	४	श	१७	१७	अनु	८	५७	सौ	१५	१२	वृश्चिक	भद्रा १७।१७ तक, बुध पूर्व में उदय २८।१७, विनायक ४ व्रत
21	५	र	१७	१४	ज्ये	९	१५	शो	१३	५८	ध. ९।१५	उपांग ललिता पंचमी व्रत, दुर्गा पूजा प्रा. ○ मासारम्भ
22	६	चं	१८	०१	मू	१०	२३	अ	१३	२२	धनु	A में बुध प्र. ११।५५, शारदीय नवरात्रा प्रारंभ, ◆
23	७	मं	१९	३१	पू.षा.	१२	१४	सु	१३	२०	म. १८।४८	भद्रा १९।३१ से, स्वाती में सूर्य प्र. २७।०३, मार्गी बुध C
24	८	बु	२१	३६	उ.षा	१४	४१	धृ	१३	४७	मकर	भद्रा ८।३० तक, दुर्गाष्टमी, C ६।३४, सायन वृश्चि. में ●
25	९	गु	२४	०१	श्र	१७	३१	शू	१४	३२	मकर	नवरात्र समा., महानवमी ● सूर्य प्र. १३।३६, रा. कार्तिक ○
26	१०	शु	२६	३३	ध	२०	३२	गं	१५	२६	कुं. ७।०१	विजयादशमी, पंचक प्रा. ७।०१ B मार्गी नेप. १८।१५, ◻
27	११	श	२९	०१	श	२३	२९	वृ	१६	२०	कुम्भ	भद्रा १५।४९ से २९।०१ तक, पापांकुशा ११ व्रत स्मा. वै.
28	१२	र			पू.भा	२६	१२	ध्रु	१७	०४	मी. ११।३३	चित्रा में बुध प्र. २९।४४ ◆ सौर कार्तिक मासारंभ
29	१२	चं	७	११	उ.भा	२८	३४	व्या	१७	३३	मीन	चित्रा में शुक्र प्र. १३।२२, सोम प्रदोष ◻ चन्द्रदर्शन मु. ४५
30	१३	मं	८	५८	रे	३०	३२	ह	१७	४४	मे. ३०।३२	मार्गी हर्शल २९।१५, पंचक समाप्त ३०।३२
31	१४	बु	१०	१९	अ	--	--	व	१७	३४	मेष	भद्रा १०।१९ से २२।४९ तक, शरद् पूर्णिमा, सत्यव्रत
N1	१५	गु	११	१३	अ	८	०३	सि	१७	०४	मेष	वक्री रोहिणी ३ में शनि प्र. १२।२९, महर्षि बाल्मीकि ज.

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१६ से ३० नवं.)

नवं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
16	१	शु	१०	४३	अनु	१८	५४	अ	२३	४७	वृश्चिक	वृश्चि. में सूर्य प्र. ९।५७, संक्रांति मु. ३०, विशा. में बुध A
17	२	श	९	५१	ज्ये	१८	५५	सु	२२	१३	ध. १८।५५	रमजान मु. मास १ प्रा., रोजा प्रा. F पंचक समा. १५।५०
18	३	र	९	४१	मू	१९	३७	धृ	२१	११	धनु	भद्रा २१।५२ से, विनायक ४ व्रत B में शुक्र प्र. २०।४१
19	४	चं	१०	१४	पू.षा	२१	०१	शू	२०	४३	म. २७।२८	भद्रा १०।१४ तक, अनुराधा में सूर्य प्र. १७।१५, विशा. B
20	५	मं	११	२९	उ.षा	२३	०३	गं	२०	४६	मकर	A प्र. २०।४९, चन्द्रदर्शनम् ३०, भैयादूज, सौरमार्ग. मासारंभ
21	६	बु	१३	२०	श्र	२५	३६	वृ	२१	१३	मकर	धनिष्ठा में मंगल प्र. ११।०७, सूर्य षष्ठी व्रत
22	७	गु	१५	३८	ध	२८	२८	ध्रु	२१	५६	कुं. १५।०१	भद्रा १५।३८ से २८।५२ तक, वृश्चि. में बुध प्र. २७।१५, C
23	८	शु	१८	०८	श	-	-	व्या	२२	४८	कुंभ	श्री दुर्गाष्टमी C सायन धनु में सूर्य प्र. ११।३१, रा. D
24	९	श	२०	३८	श	७	२६	ह	२३	३६	मी. २७।३६	अनुराधा में बुध प्र. २९।३९, अक्षय नवमी
25	१०	र	२२	५३	पू.भा	१०	१७	व	२४	१२	मीन	रवि दसमी D मार्ग. मा. प्रा., पंचक प्रा. १५।०१ से
26	११	चं	२४	४२	उ.भा	१२	४७	सि	२४	२९	मीन	भद्रा ११।५१ से २४।४२ तक, देव प्रबो. एका. व्रत E
27	१२	मं	२५	५९	रे	१४	५०	व्य	२४	२१	मे. १४।५०	वृश्चिक में शुक्र प्र. १९।४९, हरिवासर १४।५० तक, F
28	१३	बु	२६	४०	अ	१६	१९	व	२३	४६	मेष	प्रदोष व्रत E (सबका), भीष्म पंचकारंभ
29	१४	गु	२६	४७	भ	१७	१४	प	२२	४४	वृ. २३।४२	भद्रा २६।४७ से, बैकुंठ १४ व्रत J सत्यव्रत, भीष्म पंचक स.
30	१५	शु	२६	२१	कृ	१७	३६	शि	२१	१७	वृष	भद्रा १४।३८ तक, कुंभ में मंगल प्र. १७।०५, अनु. में शुक्र H
												H प्र. ११।२९, कार्तिकी १५, गुरु नानक जयंती, J

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (२ से १५ नवं.)

नवं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
2	१	शु	११	४१	भ	९	०९	व्य	१६	१३	वृ. १५।२२	श्रवण में मंगल प्र. १३।५९, वक्री गुरु १२।५३, A
3	२	श	११	४५	कृ	९	५२	व	१५	०५	वृष	भद्रा २३।३८ से, तुला में बुध प्र. २०।४०, तुला में B
4	३	र	११	२६	रो	१०	१२	प	१३	३९	मि. २२।१५	भद्रा ११।२६ तक, करक चतुर्थी व्रत
5	४	चं	१०	४७	मृ	१०	१३	शि	११	५७	मिथुन	B शुक्र प्र. २०।३१, ज्येष्ठा २ में प्लूटो प्र. २८।५४
6	५	मं	९	४८	आ	९	५३	सि	९	५८	क. २७।१५	विशाखा में सूर्य प्र. ११।१६ A व्यतिपात पुण्यं
7	६	बु	८	२८	पुन	९	१४	सा	७/२०	४४/१४	कर्क	भद्रा ८।२८ से १९।४१ तक
8	७	गु	६	४९	पु	८	१५	शु	२६	२९	कर्क	स्वा. में बुध प्र. ९।५७, स्वाति में शुक्र प्र. २९।२६, C
0	८	गु	२८	५२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी क्षय: C कालाष्टमी, अहोई अष्टमी
9	९	शु	२६	३८	श्ले	६/२०	५८/२६	ब्र	२३	३१	सिं. ६।५१	D प्रदोष काले दीपदानम्, निशीथ काले महाकाली E
10	१०	श	२४	१२	पू.फा	२७	४१	ऐं	२०	२२	सिंह	भद्रा १३।२७ से २४।१२ तक
11	११	र	२१	३७	उ.फा	२५	४९	वै	१७	०५	कं. ९।१४	रमा एकादशी व्रत (सबका), वैधृति पुण्यं
12	१२	चं	१९	००	ह	२३	५६	वि	१३	४५	कन्या	बुध पूर्व में अस्त १२।३३, सोम प्रदोष व्रत, धन तेरस
13	१३	मं	१६	२८	चि	२२	१०	प्री	१०	२८	तु. ११।०२	भद्रा १६।२८ से २७।१७ तक, नरक चतुर्दशी
14	१४	बु	१४	०९	स्वा	२०	३८	आ	७/२८	१९/२५	तुला	स्नान व दीपदानं, श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, D
15	३०	गु	१२	११	वि	१९	३०	शो	२५	५३	वृ. १३।१६	देवकार्याऽमा., गोवर्धन पू., अन्नकूट, बलिराज पू., F
												E पूजा, पितृकार्याऽमा. F महावीर निर्वा. दिव. जैन

मार्गशीष कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (१ से १४ दिसं.)

दिसं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
1	१	श	२५	२६	रो	१७	२९	सि	१९	२६	मि. २९।२६	A गुरु प्र. ९।३७, वैधृति पुण्यं
2	२	र	२४	०८	मृ	१६	५८	सा	१७	१६	मिथुन	ज्येष्ठा में सूर्य प्र. २१।३७
3	३	चं	२२	३२	आ	१६	०६	शुभ	१४	५१	मिथुन	भद्रा ११।२२ से २२।३२ तक, ज्ये. में बुध प्र. १६।३५
4	४	मं	२०	४२	पुन	१५	००	शु	१२	१२	क. ९।१८	कृष्ण चतुर्थी व्रत
5	५	बु	१८	४२	पु	१३	४३	ब्र	७/३०	२५/३२	कर्क	B उत्पत्ति एकादशी व्रत (स्मार्त)
6	६	गु	१६	३६	श्ले	१२	२०	वै	२७	३५	सिं. १२।२०	भद्रा १६।३६ से २७।३२ तक, वक्री आर्द्रा ४ में A
7	७	शु	१४	२८	म	१०	५३	वि	२४	३८	सिंह	कालाष्टमी
8	८	श	१२	१९	पू.फा	९	२६	प्री	२१	४२	कं. १५।१५	प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)
9	९	र	१०	१५	उ.फा	८/३०	०२/४४	आ	१८	४९	कन्या	भद्रा २१।१५ से, शतभिषा में मंगल प्र. २१।२३
10	१०	चं	८	१६	चि	२९	३६	सौ	१६	०३	तु. १८।०१	भद्रा ८।१६ तक, ज्येष्ठा में शुक्र प्र. २५।५८, B
0	११	चं	३०	२८	०	०	०	०	०	०	० ० ०	एकादशी क्षय:
11	१२	मं	२८	५४	स्वा	२८	४१	शो	१३	२६	तुला	मूल धनु में बुध प्र. २८।१७, उत्पत्ति एका. व्रत (वै.)
12	१३	बु	२७	३८	वि	२८	०४	अ	११	०१	वृ. २२।१२	भद्रा २७।३८ से, प्रदोष व्रत,
13	१४	गु	२६	४५	अनु	२७	५०	सु	८/३२	५१/००	वृश्चिक	भद्रा १५।०९ तक
14	३०	शु	२६	१९	ज्ये	२८	०२	शू	२९	३०	ध. २८।०२	देवपितृकार्याऽमावस्या, जुमातुल विदा (मु.)

मार्गशीष शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१५ से ३० दिसं.)

दिसं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
15	१	श	२६	२४	मू	२८	४४	गं	२८	२५	धनु	मूल धनु में सूर्य प्र. २४।३६, संक्रांति मु. ३०, वक्री A
16	२	र	२७	०३	पू.षा	२९	५९	वृ	२७	४६	धनु	चन्द्रदर्शन मु. ३० A रोहि. २ में शनि प्र. ८।१२, मृग. ३B
17	३	चं	२८	१६	उ.षा			ध्रु	२७	३३	म. १२।१३	सव्वाल मु. मास १० प्रा., ईदुलफितर-ईद (मु.)
18	४	मं	३०	०१	उ.षा	७	४७	व्या	२७	४४	मकर	भद्रा १७।०५ से ३०।०१ तक, शुक्र वृद्धत्व प्रा.१२।५७ ●
19	५	बु			श्र	१०	०४	ह	२८	१५	कुं. २३।२३	गुरु तेगबहादुर बलि. दि., पंचक प्रा. २३।२३ से
20	५	गु	८	१३	ध	१२	४६	व	२९	००	कुंभ	पू.षा. में बुध प्र. १४।४३ B में राहु मूल १ में केतु प्र. C
21	६	शु	१०	४१	श	१५	४१	सि	२९	५०	कुंभ	मूल धनु में शुक्र प्र. १६।१४, सायन मकर में सूर्य प्र. D
22	७	श	१३	१४	पू.भा	१८	३८	व्य	३०	३७	मी. ११।५७	भद्रा १३।१४ से २६।२८ तक, रा. पौष प्रा., व्यतिपात पुण्यं
23	८	र	१५	३८	उ.भा	२१	२५	व	३१	१०	मीन	श्री दुर्गाष्टमी C २६।५९, सौर पौष मासारंभ
24	९	चं	१७	४०	रे	२३	४७	प			मे. २३।४७	पंचक समा. २३।४७ E अस्त १२।५७ ● विनायक ४ व्रत
25	१०	मं	१९	०८	अ	२५	३६	प	७/३२	२१/०४	मेष	श्रवण २ में नेपच्यून प्र. ८।४४, क्रिसमस डे
26	११	बु	१९	५६	भ	२६	४५	सि	३०	१५	मेष	भद्रा ७।३७ से १९।५६ तक, मोक्षदा एका. व्रत सब.
27	१२	गु	२०	००	कृ	२७	१२	सा	२८	५२	वृ. ८।५६	पू.भा. में मंगल प्र. २७।०८, बुध पश्चिम में उ. २९।२१
28	१३	शु	१९	२१	रो	२६	५७	शुभ	२६	५७	वृष	पू.षा. में सूर्य प्र. २६।५०, उ.षा. में बुध प्र. २४।१६, प्रदोष व्रत
29	१४	श	१८	०३	मृ	२६	०७	शु	२४	३१	मि. १६।३६	भद्रा १८।०३ से २९।१२ तक D २४।५३, शुक्र पूर्व में E
30	१५	र	१६	१२	आ	२४	४६	ब्र	२१	४२	मिथुन	मकर में बुध प्र. २७।२३, सत्यव्रतं, पूर्णिमा पुण्यं

पौष शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१४ से २८ जन.)

जन.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
14	१	चं	२०	२७	उ.षा	१५	४६	ह	९	२५	मकर	मकर में सूर्य प्रवे. ११।२२, संक्रां. मु. ४५, मकर A
15	२	मं	२२	१८	श्र	१८	०१	व	९	३३	कुं. ३१।१६	उ.भा. में मंगल प्र. ८।४६, चन्द्रदर्शन मु. ३०, C
16	३	बु	२४	३०	ध	२०	३६	सि	९	५८	कुंभ	जिल्काद मु. मास ११ प्रा.
17	४	गु	२६	५७	श	२३	२७	व्य	१०	३७	कुंभ	भद्रा १३।४२ से २६।५७ तक, विनायक ४ व्रतं, D
18	५	शु	२९	३२	पू.भा	२६	२७	व	११	२५	मी. ११।४२	वक्री बुध २३।०१ A में शुक्र प्र. १२।२८, मकर B
19	६	श			उ.भा	२९	२४	प	१२	१७	मीन	B संक्रां., पौंगल पर्व (द.भा.), सौर माघ मासारंभ,
20	६	र	८	०३	रे			शि	१३	०५	मीन	सायन कुंभ में सूर्य प्र. ११।५३ D व्यतिपात पुण्यं
21	७	चं	१०	२०	रे	८	०९	सि	१३	३९	मे. ८।०९	भद्रा १०।२० से २३।१८ तक, बुध पश्चि. में अस्त E
22	८	मं	१२	०८	अ	१०	२८	सा	१३	५२	मेष	श्रवण में शुक्र प्र. ११।२०, दुर्गाष्टमी
23	९	बु	१३	१८	भ	१२	१०	शुभ	१३	३५	वृ. १८।२०	श्रवण में सूर्य प्र. ३१।०७, श्री सुभाष चन्द्र बोस ज.
24	१०	गु	१३	४१	कृ	१३	०१	शु	१२	४३	वृष	भद्रा २५।३५ से C साम्यार्ध, पंचक प्रा. ३१।१६ से
25	११	शु	१३	१६	रो	१३	२०	ब्र	११	१३	मि. २५।०८	भद्रा १३।१६ तक, पवित्रा एका. व्रत (सब.)
26	१२	श	१२	०१	मृ	१२	४४	ऐं	९/३०	०४/२०	मिथुन	शनि प्रदोष व्रत, भा. गणतंत्र दिवस, वैधृति पुण्यं
27	१३	र	१०	०३	आ	११	२५	वि	२७	०५	क. २८।०१	E ९।५९, पंचक समा. ८।०९, रा. माघ मासारंभ
28	१४	चं	७	२६	पुन	९/३२	२६/०५	प्री	२३	२५	कर्क	भद्रा ७।२६ से १७।५७ तक, धनिष्ठा ३ कुंभ में F
0	१५	चं	२८	२२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	पूर्णिमा क्षय: F हर्शल प्र. १४।०३, पौषी १५, सत्यव्रत

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (३१ दिसं. से १३ जन.)

दिसं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
31	१	चं	२३	५५	पुन	२३	०२	ऐं	१८	३२	क. १७।२०	पू.षा. में शुक्र प्र. ३०।३२ A वैधृति पुण्यं
J1	२	मं	२१	२०	पु	२१	०४	वै	१५	१०	कर्क	भद्रा २१।५९ से, वक्री आर्द्रा ३ में गुरु प्र. २६।५०.A
2	३	बु	८	३५	श्ले	१९	०१	वि	११	४१	सिं. १९।०१	भद्रा ८।३५ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
0	४	बु	२१	४९	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी क्षय:
3	५	गु	२७	०८	म	१६	५८	प्री	८/२८	१२/४७	सिंह	
4	६	शु	२४	३८	पू.फा	१५	०५	सौ	२५	३२	कं. २०।१९	भद्रा २४।३८ से,
5	७	श	२२	२५	उ.फा	१३	२६	शो	२२	३१	कन्या	भद्रा ११।२९ तक, गुरु गोविन्द सिंह ज.
6	८	र	२०	३३	ह	१२	०७	अ	१९	४६	तु. २३।३५	श्रवण में बुध प्र. १९।३२, कालाष्टमी
7	९	चं	१९	०५	चि	११	०९	सु	१७	२०	तुला	भद्रा ३०।३० से, B १९।१४, प्रदोष व्रत
8	१०	मं	१८	०१	स्वा	१०	३५	धृ	१५	१३	वृ. २८।५६	भद्रा १८।०१ तक C प्र. २०।५२
9	११	बु	१७	२२	वि	१०	२६	शू	१३	२७	वृश्चिक	सफला एकादशी व्रत (सबका)
10	१२	गु	१७	०९	अनु	१०	४१	गं	१२	००	वृश्चिक	उ.षा. में सूर्य प्र. २८।५२, मीन में मंगल प्र. B
11	१३	शु	१७	२१	ज्ये	११	२१	वृ	१०	५२	ध. ११।२१	भद्रा १७।२१ से २९।३६ तक, उ.षा. में शुक्र C
12	१४	श	१७	५८	मू	१२	२५	ध्रु	१०	०४	धनु	D (दक्षिण भारत में)
13	३०	र	१९	००	पू.षा	१३	५४	व्या	९	३५	म. २०।२०	देवपितृकार्याऽमा., लोहड़ी उत्सव (पं.) भोगी D

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (२९ जन. से १२ फर.)

जन.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
29	१	मं	२५	००	श्ले	२८	२६	आ	१९	२९	सिं. २८।२६	वक्री आर्द्रा २ में गुरु प्र. १०।३७
30	२	बु	२१	३०	म	२५	४०	सौ	१५	२४	सिंह	वक्री उ.षा. में बुध प्र. २६।२८ B एकादशी व्रत वै.
31	३	गु	१८	०२	पू.फा	२२	५९	शो	११	१९	कं. २८।११	भद्रा ७।४५ से १८।०२ तक, संकष्ट कृष्ण ४ व्रत
F1	४	शु	१४	४८	उ.फा	२०	३४	अ	७/२७	२१/४०	कन्या	धनि. में शुक्र प्र. २६।२० A षटतिला एका. व्रत स्मा.
2	५	श	११	५६	ह	१८	२२	धृ	२४	२०	तु. २९।४३	रेवती में मंगल प्र. १७।०४, बुध पूर्व में उ. २७।४१
3	६	र	९	३३	चि	१७	०२	शू	२१	२६	तुला	भद्रा ९।३३ से २०।३४ तक F प्रा. १४।०८ से
4	७	चं	७	४५	स्वा	१६	०७	गं	१९	०२	तुला	स्वा. विवेकानन्द जयंती, कालाष्टमी
0	८	चं	३०	३४	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी क्षयC ९।४०, शुक्र बाल्यत्व समा.२९।५५
5	९	मं	३०	०३	वि	१५	५०	वृ	१७	०८	वृ. ९।५१	D शुक्र प्र. १७।२१, मौनी अमा., देवकार्याऽमा., E
6	१०	बु	३०	०७	अनु	१६	०९	ध्रु	१५	४४	वृश्चिक	भद्रा १८।०१ से ३०।०७ तक, धनि. में सूर्य प्र. १०।२२
7	११	गु	३०	४४	ज्ये	१७	०३	व्या	१४	४७	ध. १७।०३	कुंभ में शुक्र प्र. ९।४२, शुक्र पश्चि. में उ. २९।५५.A
8	१२	शु			मू	१८	२६	ह	१४	१४	धनु	मार्गी बुध १६।४५, मार्गी शनि ८।५६, षट्तिला B
9	१२	श	७	५०	पू.षा	२०	१५	व	१४	०१	म. २६।१५	शनि प्रदोष व्रत E सौर फाल्गुन मासारंभ, पंचकF
10	१३	र	९	१९	उ.षा	२२	२४	सि	१४	०६	मकर	भद्रा ९।१९ से २२।११ तक, ज्ये. ३ में प्लूटो प्र. C
11	१४	चं	११	०८	श्र	२४	५०	व्य	१४	२५	मकर	रटन्ती कालिका पू., व्यतिपात पुण्यं, पितृकार्याऽमावस्या
12	३०	मं	१३	१३	ध	२७	२९	व	१४	५५	कुं. १४।०८	कुंभ में सूर्य प्र. २४।२३, संक्रांति मु. ३०, रात. मेंD

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१३ से २७ फर.)

फर.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
13	१	बु	१५	३०	श	३०	२०	प	१५	३५	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घ
14	२	गु	१७	५८	पू.भा	-	-	शि	१६	२३	मी. २६।३३	जिल्हेज मु. मास १२ प्रा. B में बुध प्र. ९।१६
15	३	शु	२०	३२	पू.भा	९	१८	सि	१७	१५	मीन	A ज्ये. ४ वृश्चि. में केतु प्र. २४।२८, वैनायक ४ व्रत
16	४	श	२३	०४	उ.भा	१२	१७	सा	१८	०७	मीन	भद्रा ९।४८ से २३।०४ तक, मृग. २ वृष में राहु A
17	५	र	२५	२७	रे	१५	१२	शुभ	१८	५४	मे. १५।१२	बसन्त पंचमी, श्री ५, पंचक समा. १५।१२,
18	६	चं	२७	३०	अ	१७	५१	शु	१९	२८	मेष	सायन मीन में सूर्य प्र. २५।४५
19	७	मं	२९	०२	भ	२०	०५	ब्र	१९	४१	वृ. २६।३४	भद्रा २९।०२ से, शत. में सूर्य प्र. १४।४८, श्रवण B
20	८	बु	२९	५४	कृ	२१	४४	ऐं	१९	२७	वृष	भद्रा १७।३३ तक, अश्वि. मेष में मंगल प्र. ३०।१५, C
21	९	गु	२९	५८	रो	२२	३९	वै	१८	३८	वृष	श्री महानन्दा नवमी, वैधृति पुण्यं
22	१०	शु	२९	१०	मृ	२२	४५	वि	१७	११	मि. १०।४८	हज्ज C श्री दुर्गाष्टमी, रा. फाल्गुन मासारम्भः
23	११	श	२७	३३	आ	२२	०१	प्री	१५	०३	मिथुन	भद्रा १६।२८ से २७।३३ तक, पू.भा. में शुक्र प्र. ९।०५,D
24	१२	र	२५	१०	पुन	२०	३१	आ	१२	१६	क. १४।५७	जया एका. व्रत (वै.), महाद्वादशी व्रत, भीष्म द्वादशी
25	१३	चं	२२	०८	पु	१८	२०	सौ	८/२९	५५/०५	कर्क	[illegible] D जया एका. व्रत स्मार्त, E
26	१४	मं	१८	३७	श्ले	१५	३८	अ	२४	५३	सि. १५।३८	भद्रा १८।३७ से २८।४४ तक
27	१५	बु	१४	४८	म	१२	३७	सु	२०	३०	सिंह	माघी पूर्णिमा, सत्यव्रत, श्री गुरु रविदास जयंती
												E ईद-उल-जुहा (बकरीद मु.)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०५८ (१५ से २८ मार्च)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
15	१	शु	१०	०३	उ.भा	१८	२३	शु	२२	५७	मीन	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ A प्रा., पंचक समा. २१।१५
16	२	श	१२	२८	रे	२१	१५	ब्र	२३	४४	मे. २१।१५	रेव. में शुक्र प्र. १८।५४, मु.मु. मास १ हि. सन् १४२३A
17	३	र	१४	४५	अ	२३	५६	ऐं	२४	२२	मेष	भद्रा २७।४८ से, उ.भा. में सूर्य प्र. २१।३६
18	४	चं	१६	४६	भ	२६	२१	वै	२४	४७	मेष	भद्रा १६।४६ तक, विनायक ४ व्रत, वैधृति पुण्यं
19	५	मं	१८	२५	कृ	२८	२१	वि	२४	५३	वृ. ८।५४	B सायन मेष में सूर्य प्र. २४।४७
20	६	बु	१९	३२	रो	२९	४९	प्री	२४	३४	वृष	पू.भा. में बुध प्र. २०।२३, वक्री प्लूटो १५।५५, B
21	७	गु	२०	०२	मृ	-	-	आ	२३	४४	मि. १८।१९	भद्रा २०।०२ से, होलाष्टक प्रारम्भ २०।०२ से
22	८	शु	१९	४७	मृ	६	३७	सौ	२२	२०	मिथुन	भद्रा ८।०० तक, श्री दुर्गाष्टमी, रा. चैत्र मासारंभ, C
23	९	श	१८	४५	आ	९/२९	४१/५७	शो	२०	१९	क. २४।१३	C शाकः १९।२४ प्रा. D (ताजिया) (मु.)
24	१०	र	१६	५६	पु	२८	३०	अ	१७	४०	कर्क	भद्रा २७।४५ से, बुध पूर्व में अस्त १८।५७
25	११	चं	१४	२४	श्ले	२६	२३	सु	१४	२६	सिं. २६।२३	भद्रा १४।२४ तक, आमला एका. व्रत सब., मु. D
26	१२	मं	११	१७	म	२३	४५	धृ	१०	४४	सिंह	मीन में बुध प्र. १३।०४, गोविन्द द्वादशी
27	१३	बु	७	४२	पू.फा	२०	४६	शू	६/२६	३९/२०	कं. २६।००	भद्रा २७।५२ से, अश्विनी मेष में शुक्र प्र. १३।१६
0	१४	बु	२७	५२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षयः
28	१५	गु	२३	५७	उ.फा	१७	३९	वृ	२१	५६	कन्या	भद्रा १३।५४ तक, उ.भा. में बुध प्र. ८।३७, सत्यव्रत, E
												E पूर्णिमा पुण्यं, होलिका दहन सायंकाले, मन्वादि १५.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (२८ फर. से १४ मार्च)

फर.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
28	१	गु	१०	५३	पू.फा	९/३०	२८/२४	धृ	१६	०५	कं. १४।१२	A कालाष्टमी B प्रदोष व्रत, पंचक प्रा. २०।०८ से
M1	२	शु	७	०३	ह	२७	३६	शू	११	४७	कन्या	भद्रा १७।१४ से २७।३० तक, मार्गी गुरु १३।३०
0	३	शु	२७	३०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	तृतीया क्षयः D देवकार्याऽमा., सौर चैत्र मासारंभः
2	४	श	२४	२४	चि	२५	१६	गं	७/२८	४४/०६	तु. १४।२२	धनिष्ठा में बुध प्र. २९।१५, कृष्ण चतुर्थी व्रत
3	५	र	२१	५४	स्वा	२३	३२	ध्रु	२४	५८	तुला	मीन में शुक्र प्र. ९।२३ C महाशिवरात्रि व्रत सबका
4	६	चं	२०	०७	वि	२२	३१	व्या	२२	२६	वृ. १६।१२	भद्रा २०।०७ से, पू.भा. में सूर्य प्र. २१।१३
5	७	मं	१९	०८	अनु	२२	१७	ह	२०	३१	वृश्चिक	भद्रा ७।३२ तक, उ.भा. में शुक्र प्र. २५।३५, A
6	८	बु	१८	५६	ज्ये	२२	४९	व	१९	१३	ध. २२।४९	श्री सीताष्टमी, जानकी जयंती, अष्टका श्राद्ध
7	९	गु	१९	२८	मू	२४	०२	सि	१८	३०	धनु	कुंभ में सूर्य प्र. २५।३४
8	१०	शु	२०	३८	पू.षा	२५	५१	व्य	१८	१७	धनु	भद्रा ७।५९ से २०।३८ तक, व्यतिपात पुण्यं
9	११	श	२२	१८	उ.षा	२८	०८	व	१८	२७	म. ८।२३	विजया एकादशी व्रत (सबका)
10	१२	र	२४	२२	श्र	-	-	प	१८	५५	मकर	विजया व पक्षवर्धिनी महाद्वादशी व्रत
11	१३	चं.	२६	३९	श्र	६	४४	शि	१९	३५	कुं. २०।०८	भद्रा २६।३९ से, भर. में मंगल प्र. २५।५७, सोम B
12	१४	मं	२९	०५	ध	९	३३	सि	२०	२२	कुंभ	भद्रा १५।५१ तक, शतभिषा में बुध प्र. १३।४४,C
13	३०	बु	-	-	श	१२	२९	सा	२१	१४	कुंभ	पितृकार्याऽमावस्या, मन्वादि, शिव खप्पर पूजा
14	३०	गु	७	३४	पू.भा	१५	२७	शुभ	२२	०६	मी. ८।१२	मीन में सूर्य प्र. २१।१८, संक्रांति मु. ४५,D

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०५८ (२९ मार्च से १२ अप्रैल)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
29	१	शु	२०	०८	ह	१४	३४	ध्रु	१७	३७	तु. २५।०७	बसन्त प्रतिपदा, छारेण्डी (धूलेण्डी), गुड फ्राईडे
30	२	श	१६	३७	चि	११	४५	व्या	१३	३१	तुला	भद्रा २७।०१ से, कृत्ति. में मंगल प्र. २८।५९, धनि.A
31	३	र	१३	३४	स्वा	९	२२	ह	९	४८	वृ. २५।५८	भद्रा १३।३४ तक, रेव. में सूर्य प्र. १६।३०, B
A1	४	चं	११	१०	वि	७	३५	व	६/२७	३६/५९	वृश्चिक	B कल्पादि ३, कृष्ण गणेश ४ व्रत, इस्टर सन्डे
2	५	मं	९	३०	अनु	६	३२	ब्व	२६	०१	वृश्चिक	आर्द्रा ३ में गुरु प्र. १५।४२, रोहि. ३ में शनि प्र. C
3	६	बु	८	४२	ज्ये	६	१८	व	२४	४४	ध. ६।१८	भद्रा ८।४२ से २०।३६ तक, श्रव. ३ में नेप. प्र. १८।२७
4	७	गु	८	४२	मू	६	५३	प	२४	०४	धनु	वृष में मंगल प्र. २५।००, रेव. में बुध प्र. ६।१०, D
5	८	शु	९	३०	पू.षा	८	१५	शि	२३	५८	म. १४।१२	शीतलाष्टमी A ४ में हर्शल प्र. ८।३२
6	९	श	१०	५८	उ.षा	१०	१५	सि	२४	१८	मकर	भद्रा २३।५४ से C १६।२७, व्यतिपात पुण्यं
7	१०	र	१२	५६	श्र	१२	४५	सा	२४	५८	कुं. २६।०८	भद्रा १२।५६ तक, भर. में शुक्र प्र. ८।५१, पंचक E
8	११	चं	१५	१५	ध	१५	३४	शुभ	२५	४९	कुंभ	पापमोचनी एका. (सबका) E प्रा. २६।०८ से
9	१२	मं	१७	४३	श	१८	३३	शु	२६	४५	कुंभ	वारुणी पर्व १७।४३ से १८।३३ तक F प्रदोष व्रत
10	१३	बु	२०	१३	पू.भा	२१	३३	ब्र	२७	४०	मी. १४।४८	भद्रा २०।१३ से, अश्वि. मेष में बुध प्र. १७।३९, F
11	१४	गु	२२	३८	उ.भा	२४	२८	ऐं	२८	३१	मीन	भद्रा ९।२७ तक D शीतला सप्तमी, कालाष्टमी
12	३०	शु	२४	५३	रे	२७	१३	वै	२९	१३	मे. २७।१३	देव पितृकार्याऽमावस्या, मन्वादि अमा., वैधृति G
												G पुण्यं, पंचक समा. २७।१३

चैत्र शुक्ल पक्ष-१ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २६ मार्च से ८ अप्रैल सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत ऋतु।

रा.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.					चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	प	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि			घं	मि	घं	मि	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
५	१	चं	३	४०	७	४८	रे	३३	५०	१९	५२	ऐं	५३	३७	२७	४७	ब	३	४०	७	४८	३०	३७	६	२०	१८	३५	१३	३०	26	मे. १९।५२	११	११	३१	२८	[illegible]	७	१५	१९	२२	कृत्तिका ३ में शनि प्रवेश ९।२६, नूतन संवत्सरारम्भ, बसन्त नवारात्र A
६	२	मं	४	५५	८	१७	अ	३६	०५	२०	४५	वै	५१	१२	२६	४८	कौ	४	५५	८	१७	३०	४१	६	१९	१८	३५	१४	मु.	27	मेष	११	१२	३०	५३	२३	८	११	२०	१९	पू.भा. में बुध प्र. १४।०५, सिंधारा, मुहर्रम मु. मास १ हिरी सन् १४२२B
७	३	बु	५	२०	८	२५	भ	३७	३५	२१	१९	वि	४८	१०	२५	३३	ग	५	२०	८	२५	३०	४५	६	१७	१८	३६	१५	२	28	वृ. २७।२४	११	१३	३०	१६	२१	९	०६	२१	१५	भद्रा २०।१९ से, वक्री उ.भा. में शुक्र प्र. १९।२७, शुक्र पश्चिम में अस्त C
८	४	गु	४	४२	८	०९	कृ	३८	०५	२१	३०	प्री	४४	२०	२४	००	वि	४	४२	८	०९	३०	५०	६	१६	१८	३७	१६	३	29	वृष	११	१४	२९	३७	१९	१०	०२	२२	१५	भद्रा ८।०९ तक, रोहिणी २ में गुरु प्रवेश २२।२३, श्री लक्ष्मी पूजनारम्भ, D
९	५	शु	३	०७	७	३०	रो	३७	४२	२१	२०	आ	३९	५५	२२	१३	बा	३	०७	७	३०	३०	५४	६	१५	१८	३७	१७	४	30	वृष	११	१५	२८	५६	१७	१०	५७	२३	०९	कल्पादि ५, हयव्रत ५, स्कन्द षष्ठी D श्री रामजन्मोत्सव प्रा. कर्क लग्न में
१०	६	श	०	४२	६	३१	मृ	२६	३०	२०	५०	सौ	३४	४०	२०	०६	तै	०	४२	६	३१	३०	५८	६	१४	१८	३८	१८	५	31	मि. ९।०८	११	१६	२८	१३	१४	११	४३	२४	०३	भद्रा २९।१० से, रेवती में सूर्य प्रवेश १०।१६, मेला माईसर खाना अमृतसर, E
०	७	श	५७	२०	२९	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षय H समा. १२।४२, कामदा एका. व्रत (सबका), श्री लक्ष्मीकान्त डोलोत्सव
११	८	र	५२	५७	२७	२४	आ	३४	१७	१९	५६	शो	२८	४२	१७	४२	बि	२५	१७	१६	२०	३१	३	६	१३	१८	३८	१९	६	A1	मिथुन	११	१७	२७	२७	१२	१२	३८	२४	५१	भद्रा १६।२० तक, शुक्र पूर्व में उदय १२।४२, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, F
१२	९	चं	४७	४७	२५	११	पुन	३१	१०	१८	४०	अ	२१	५५	१४	५८	बा	२०	३२	१४	२५	३१	८	६	१२	१८	३९	२०	७	2	क. १३।०२	११	१८	२६	३९	९	१३	३४	१	३६	मीन में बुध प्र. २२।०४, श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त, मध्यान्ह G
१३	१०	मं	४१	४५	२२	५३	पु	२७	१२	१७	०४	सु	१४	३२	१२	००	तै	१४	५२	१२	०८	३१	१२	६	११	१८	३९	२१	८	3	कर्क	११	१९	२५	४८	७	१४	२९	२	२२	G कर्क लग्न में रामजन्मोत्सव E जैन आयंबिल ओली प्रा.
१४	११	बु	३५	०२	२०	१०	श्ले	२२	३२	१५	१०	धृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	८	३२	९	३४	३१	१६	६	०९	१८	४०	२२	९	4	सिं. १५।१०	११	२०	२४	५५	५	१५	२५	३	०८	भद्रा ९।३४ से २०।१० तक, उ.भा. में बुध प्रवेश २१।४४, शुक्र बाल्यत्व H
१५	१२	गु	२७	५२	१७	१७	म	१७	२५	१३	०६	गं	४९	१०	२५	४८	ब	१	३२	६	४५	३१	२०	६	०८	१८	४०	२३	१०	5	सिंह	११	२१	२४	००	३	१६	२०	३	५३	प्रदोष व्रत, हरिदमनोत्सव, मुहर्रम ताजिया (मु.)
१६	१३	शु	२०	३५	१४	२१	पूफा	११	५७	१०	५४	वृ	४०	२५	२२	१७	तै	२०	३५	१४	२१	३१	२५	६	०७	१८	४१	२४	११	6	कं. १६।२३	११	२२	२३	०३	०	१७	१५	४	३९	श्री महावीर जयंती, अनंग त्रयोदशी, मीनाक्षी कल्याणम्
१७	१४	श	१३	३०	११	३०	उफा	६	४५	८	४८	ध्रु	३१	५५	१८	५२	व	१३	३०	११	३०	३१	२९	६	०६	१८	४२	२५	१२	7	कन्या	११	२३	२२	०३	[illegible]	१८	१०	५	३४	भद्रा ११।३० से २२।१० तक, बाला सुन्दरी मेला देवबन्द (उ.प्र.), दमनक J
१८	१५	र	७	००	८	५३	ह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व्या	२४	००	१५	४१	ब	७	००	८	५३	३१	३३	६	०५	१८	४२	२६	१३	8	तु. १८।०७	११	२४	२१	०१	५७	१९	०५	६	१०	आर्द्रा ३ में राहु पू.षा. १ में केतु प्रवेश १२।२५, चैत्री पूर्णिमा, श्री हनुमान K

A प्रारम्भ, घट स्थापनं, गुड़ी पड़वा, चेटी चांद, वर्षफल श्रवण, आर्य समाज स्थापना दिवस, गौतम जयंती, **चन्द्रदर्शन मु. ३०**, साम्यार्घ, मेला चीमा नानकसर (पंजाब), पंचक समाप्त १९।५२ **B** प्रा., मत्स्य जयंती, श्री झूलेलाल जयंती, उत्सव सिन्धी सम्प्रदाय, वैधृति पुण्यं **C** ८।१२, सौभाग्य तृतीया व्रत, मन्वादि, गणगौर पूजन, मेला राजस्थान, शिव शक्ति पूजन, आन्दोलन तृतीया (बिहार), वैनायक ४ व्रत **F** भवान्युत्पत्तिः, अन्नपूर्णा पूजा, दुर्गा पूजन प्रा., मेला मनसा देवी, मेला बहुफोर्ट (काश्मीर), अप्रैल मा. ४ ता. ३० **J** चतुर्दशी, सत्यव्रत, विश्व स्वास्थ्य दिवस **K** जयंती, मन्वादि, वैशाख स्नान प्रारम्भ, जैन आयंबिल ओली समाप्त, सिद्धांचल यात्रा, मेला मानकपुर शरीफ रोपड़

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

चैत्र शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	७	१०	१	११	१	२	८	९	९	७
१७	११	२६	२७	१३	१४	३	१७	१७	२९	१४	२१
२७	३८	४८	१४	४४	३०	५४	३	३	३७	२८	२१
२७	२१	६	६	४१	५८	५१	११	११	२५	३४	१८
५९	७३६	२१	९७	१०	३७	६	३	३	२	१	०
१२	६	४२	३५	३४	५	११	११	११	३४	१५	२९
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस नूतन वर्ष का प्रारम्भ सोमवार को हुआ है। जिसका फल प्राचीन ग्रन्थकारों ने श्रेष्ठ बताया है। यथा—चन्द्रे बहुजलं **धान्यं तृणानां च बहुदयः**। वर्षा की अनुकूलता से धान्य तृण का उत्पादन अच्छा होगा किन्तु वर्षारम्भ में मंगल-शनि का प्रतियोग एवं मंगल-राहु का षडाष्टक योग प्राकृतिक आपदाओं से जनता को पीड़ित करेगा। बमविस्फोट, अग्निकाण्ड, रेलयान दुर्घटना से जन धन की हानि होगी। विश्व के पश्चिमी देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक के अलावा आस्ट्रिया, जापान, चीन, तिब्बत, रूस, स्वीडन में आन्तरिक विद्रोह, हत्याकांड तथा अराजकता की वृद्धि होगी। चैत्र शुक्ल पक्ष में एक ही सप्ताह में शुक्र का अस्त होकर उदय होना अच्छा नहीं है। कोई अप्रत्याशित घटना से राज विग्रह, हिंसक आंदोलन, प्राकृतिक प्रकोप से प्रजा का कष्ट हो। व्यापारी वर्ग को अनेक कठिनाइयों का सामना करना होगा। **तेजी मंदी विचार**—प्रतिपदा सोमवार का चन्द्रदर्शन धान्य, जौ, गेहूं, चना, सोना, चांदी में मंदी, किन्तु सप्तमी तिथि का क्षय व शुक्र का उदयास्त चलते भावों में ओछी घटाबढ़ी करेगा। सोना, चांदी, रुई, तांबा, पीतल, स्टील, बिजली के उपकरण आदि में तेजी की चाल निकलेगी। जिसे मीन का बुध भी प्रोत्साहन करेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में शुक्र का अस्त और उदय हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, बंगाल में वायु के साथ वर्षा करेगा। पर्वतीय भागों में कहीं-कहीं हिमपात या भूस्खलन भी संभव है। दक्षिणी तटवर्ती इलाकों में तेज हावाओं के साथ वर्षा होगी। **शकुन विचार**—चैत्र मास में वर्षा होने से आगे चौमासे में वर्षा कम होती है। **यथा—चैत्र सुदी जो पंचमी दक्षिण पूरब वाय। वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज बिकाय॥ चैत्र सुदी जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान। आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान॥**

ता. ८ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१ | ११ | २गु. श. | १२सू. बु.शु. | ९के. | १०हू. ने. | ३रा. | ६चं. | ४ | ८मं. प्लू. | ५ | ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	७	११	१	११	१	२	८	९	९	७
२४	२२	२९	९	१५	१०	४	१६	१६	२९	१४	२१
२१	२७	१२	७	०	३४	३९	४०	४०	५४	३६	१७
१	४७	२७	१४	३३	१९	१९	५५	५५	४२	४२	१८
५८	८५३	१९	१०७	१०	२७	६	३	३	२	१	०
५७	४५	७	४१	१२	३४	३५	११	११	२०	३	४१
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वैशाख कृष्ण पक्ष-२

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ९ से २३ अप्रैल सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १९ चैत्र से ३ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत-ग्रीष्म ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१९	१	चं	१	३२	६	४१	स्वा	५६	००	२८	२८	ह	१७	०२	१२	५३	कौ	१	३२	६	४१	३१	३७	६	०४	१८	४३	२७	१४	9	तुला	११	२५	१९	५८	५८	२०	१०	६	५९	A में अस्त २१।३६, धनि. ३ कुंभ में हर्षल प्र. १२।४४, भारतीय रेल सप्ताह प्रा.
०	२	चं	५७	२५	२९	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षय:
२०	३	मं	५५	००	२८	०३	वि	५५	२५	२८	१३	वज्र	११	२२	१०	३६	व	२६	००	१६	२७	३१	४१	६	०३	१८	४३	२८	१५	10	वृ. २२।१३	११	२६	१८	५२	५२	२०	५५	७	४९	भद्रा १६।२७ से २८।०३ तक, मूल धनु में मंगल प्र. १८।१५, बुध पूर्व A
२१	४	बु	५४	३५	२७	५२	अनु	५६	४०	२८	४२	सि	७	००	८	५०	ब	२४	३५	१५	५२	३१	४५	६	०२	१८	४४	२९	१६	11	वृश्चिक	११	२७	१७	४४	५१	२१	४१	८	३९	**कृष्ण चतुर्थी व्रत**
२२	५	गु	५६	१०	२८	२९	ज्ये	५९	५२	२९	५८	व्य	४	१७	७	४६	कौ	२५	०७	१६	०४	३१	५०	६	०१	१८	४४	३०	१७	12	ध. २९।५८	११	२८	१६	३५	४९	२२	२५	९	२९	रेवती में बुध प्रवेश ८।१६, गुरु तेगबहादुर जयं. (प्रा. मत से), व्यतिपात पुण्यं
२३	६	शु	५९	४०	२९	५१	मू	६०	००	-	-	व	३	१०	७	१५	ग	२७	४७	१७	०६	३१	५४	५	५९	१८	४५	वैशा	१८	13	धनु	११	२९	१५	२४	४७	२३	१०	१०	११	भद्रा २९।५१ से, अश्विन मेष में सूर्य प्र. २३।४२, संक्रांति मु. ३०, बैशाखी B
२४	७	श	६०	००	-	-	मू	५	००	७	५८	प	३	२७	७	२१	वि	३२	०७	१८	४९	३१	५८	५	५८	१८	४६	२	१९	14	धनु	०	०	१४	११	४५	२३	५५	११	०९	भद्रा १८।४९ तक, डॉ. अम्बेडकर जयं., मेषादि (तमिल), विशु (केरल), C
२५	७	र	४	४७	७	५२	पू.षा	११	३०	१०	३३	शि	४	५५	७	५५	ब	४	४७	७	५२	३२	२	५	५७	१८	४६	३	२०	15	म. १७।१७	०	१	१२	५६	४४	२४	३५	११	५९	**सप्तमी वृद्धि, कालाष्टमी, इस्टर सण्डे**
२६	८	चं	१०	५२	१०	१७	उ.षा	१८	५७	१३	३१	सि	७	०५	८	४६	कौ	१०	५२	१०	१७	३२	६	५	५६	१८	४७	४	२१	16	मकर	०	२	११	४०	४२	१	१४	१२	४९	रोहिणी ३ में गुरु प्रवेश २०।४५, **शीतलाष्टमी** (बूढ़ा बासोड़ा), ठंडा D
२७	९	मं	१७	२२	१२	५२	श्र	२६	४२	१६	३६	सा	९	४२	९	४८	ग	१७	२२	१२	५२	३२	१०	५	५५	१८	४७	५	२२	17	मकर	०	३	१०	२२	४१	१	५३	१३	३९	भद्रा २६।०८ से,
२८	१०	बु	२३	३५	१५	२०	ध	३४	०७	१९	३३	शुभ	१२	१२	१०	४७	वि	२३	३५	१५	२०	३२	१४	५	५४	१८	४८	६	२३	18	कुं. ६।०८	०	४	०९	०३	३८	२	३२	१४	२९	भद्रा १५।२० तक, अश्विन मेष में बुध प्रवेश २६।५१, पंचक प्रा. ६।०८ से,
२९	११	गु	२९	०२	१७	३०	श	४०	४५	२२	११	शु	१४	०५	११	३१	बा	२९	०२	१७	३०	३२	१८	५	५३	१८	४८	७	२४	19	कुंभ	०	५	०७	४१	३७	३	११	१५	११	**वरूथिनी एकादशी व्रत** (सबका), श्री बल्लभाचार्य जयंती
३०	१२	शु	३३	२०	१९	१२	पू.भा	४६	१७	२४	२३	ब्र	१५	१२	११	५७	कौ	१	२२	६	२५	३२	२२	५	५२	१८	४९	८	२५	20	मी. १७।५३	०	६	०६	१८	३५	३	५०	१६	०१	**मार्गी शुक्र** १४।४४, सायन वृष में सूर्य प्रवेश ६।०६, **ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ**
वैशा	१३	श	३६	१२	२०	२०	उ.भा	५०	२२	२६	००	ऐं	१५	१२	११	५६	ग	५	००	७	५१	३२	२६	५	५१	१८	५०	९	२६	21	मीन	०	७	०४	५३	३३	४	२९	१६	५९	भद्रा २०।२० से, शनि प्रदोष व्रत, रा. वैशाख मासारंभ, मास शिवरात्रि व्रत
२	१४	र	३७	४२	२०	५५	रे	५३	०२	२७	०३	वै	१४	१२	११	३१	वि	७	१०	८	४२	३२	३०	५	५०	१८	५०	१०	२७	22	मे. २७।०३	०	८	०३	२६	३२	५	०९	१७	४९	भद्रा ८।४२ तक, पंचक समाप्त २७।०३, वैधृति पुण्यं
३	३०	चं	३७	५०	२०	५७	अ	५४	३०	२७	३७	वि	१२	०५	१०	३९	च	७	५७	९	००	३२	३४	५	४९	१८	५१	११	२८	23	मेष	०	९	०१	५८	२९	५	४८	१८	३९	**सोमवती अमावस्या**, देवपितृकार्याऽमावस्या, श्री शुकदेव जयंती, E

B (पंजाब), **सौर मास वैशाख प्रारम्भ, गुड फ्राईडे** C वैशाखादि (बंगाल), विगुविधु (आसाम), गुरु अर्जुन देव जयंती (प्रा. मत से)
D भोजन करना चाहिए। E मेला पिंजोर हरियाणा, बाबू कुँर सिंह जयंती (बिहार)

वैशाख कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	८	११	१	११	१	२	८	१०	९	७
२	६	१	२४	१६	७	५	१६	१६	०	१४	२१
११	१	३३	१०	३२	५६	३३	१५	१५	१२	४४	१०
४०	५७	३१	३६	२८	२४	१५	२९	२९	१५	१४	५९
५८	७०९	२५	११९	११	८	६	३	३	२	०	०
४२	८	३५	३६	५१	५८	५७	११	११	१	४६	५५
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
अश्वि.	उ.षा.	मूल	रेवती	रोहि.	उ.भा.	कृत्ति.	आर्द्रा	पू.षा.	धनि.	श्रवण	उ.

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ता. १६ अप्रैल: १सू. | २गु.श. | ३रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८प्लू. | ९मं.के. | १०चं.ने. | ११ह. | १२बु.शु.
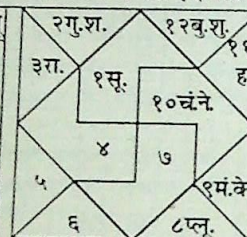
इस मास में पांच सोमवार तथा सोमवती अमावस्या श्रेष्ठ फलों में वृद्धि करेगी। विश्व शांति के उपायों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता महसूस होगी। उद्योग धन्धों में उत्पादन बढ़ने से प्रजा में शुख शांति की वृद्धि होगी। पांच सोमवार का फल— **सौमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवंति हि। धनधान्य समृद्धिः स्यात्सुख भवति सर्वदा॥** पक्ष प्रारम्भ में मंगल धनु राशि में प्रवेश करने से गुरु-शनि से षडाष्टक योग बनेगा, जो अशांति को बढ़ावा देगा। चोर, उच्चके व असमाजिक तत्वों का बोलबाला होगा।

ता. २३ अप्रैल: १सू. बु.चं. | २गु.श. | ३रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८प्लू. | ९के. मं. | १० ने. | ११ह. | १२शु.

ता. २३ अप्रैल ❖ वैशाख कृ. ३० चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	८	०	१	११	१	२	८	१०	९	७
९	१	३	८	१७	७	६	१५	१५	०	१४	२१
१	१७	११	३४	५६	४४	२२	५३	५३	२५	४९	४
५८	४०	५३	४७	५३	२१	४५	१४	१४	२९	८	१
५८	७८२	११	१२७	१२	७	७	३	३	१	०	१
२९	३६	५३	३८	२०	३५	१३	११	११	४३	३४	५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
अश्वि.	अश्विनी	मूल	अश्वि.	रोहि.	उ.भा.	कृत्ति.	आर्द्रा	पू.षा.	धनि.	श्रवण	उ.

अरब राष्ट्र, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, चीन, जापान, आस्ट्रिया आदि देशों में अशांति व प्रकृति-प्रकोप से जन धन की हानि होगी। भारत के कुछ भागों में भी अशान्ति का वातावरण दिखाई दे सकता है। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में द्वितीया का क्षय और बुध का पूर्व में अस्त होने से गेहूं, चना, मूंगफली, सरसों आदि में मंदी होकर तेजी होगी। ति. ६ शुक्रवार को मेष संक्रांति ३० मुहूर्ती होने से रुई, कपास, गुड़, खांड, चांदी, सफेद वस्तुओं में तेजा होगी। सोमवती अमावस्या धान्यादि में मंदी का प्रोत्साहन देगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में दक्षिण भारत केरल, उड़ीसा, महाराष्ट्र में ऋतु परिवर्तन होगा। आंधी, तूफान से कहीं-कहीं बादल चाल से वर्षा होगी। राजस्थान, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश में साधारण बादल चाल से कहीं-कहीं बूंदाबांदी होगी। पक्षांत में गर्मी का जोर बढ़ेगा। **शकुन विचार**— वैशाख कृष्ण ११ को मेघ या बादल चाल हो तो आने वाला वर्ष धान्यादि उत्पादन में उत्तम रहेगा। यथा—**वैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघ को जान। धान्य बीज खेती करो, अच्छा संवत् जान॥** वैशाख बदी अमावस्या को आंधी, तूफान अथवा कोई उत्पात हो तो अन्न का स्टाक करना चाहिए आगे तेजी की संभावना रहती है।

आर्यभट्ट पंचांगम्

वैशाख शुक्ल पक्ष-3

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २४ अप्रैल से ७ मई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १७ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
४	१	मं	३६	४५	२०	३०	भ	५४	५५	२७	४६	प्री	९	००	९	२४	किं	७	३०	८	४८	३२	३८	५	४८	१८	५१	१२	२९	24	मेष	०	१०	००	२७	[illegible]	६	४४	१९	२९	देवदामोदर तिथि आसाम, गुरु अनंग देव जयंती (प्राचीन मत से)
५	२	बु	३४	४५	१९	४१	कृ	५४	२५	२७	३३	आ	५	०२	७	४८	बा	५	५५	८	०९	३२	४१	५	४७	१८	५२	१३	३०	25	वृ. ९।४६	०	१०	५८	५५	२६	७	३९	२०	१९	भर. में बुध प्र. १०।५९, कृत्ति. ४ में शनि प्र. १४।३९, अगस्त्य (तारा) अस्त A
६	३	गु	३१	५७	१८	३३	रो	५३	०५	२७	००	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	३	२७	७	०९	३२	४५	५	४६	१८	५३	१४	सफ	26	वृष	०	११	५७	२१	२४	८	३५	२१	१२	सफर मु. मास २ प्रा., अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादि, कल्पादि, श्री मातंगी B
७	४	शु	२८	२७	१७	०८	मृ	५१	१२	२६	१४	अ	४९	३०	२५	३३	व	०	१७	५	५२	३२	४९	५	४५	१८	५३	१५	२	27	मि. १४।४०	०	१२	५५	४५	२२	९	३०	२२	०५	भद्रा ५।५२ से १७।०८ तक, भरणी में सूर्य प्रवेश १५।२८, वैनायक ४ व्रत
८	५	श	२४	२२	१५	३०	आ	४८	४७	२५	१६	सु	४३	१५	२३	०३	बा	२४	२२	१५	३०	३२	५३	५	४५	१८	५४	१६	३	28	मिथुन	०	१३	५४	०७	२०	१०	२६	२२	५७	श्री आद्य शंकराचार्य ज., श्री रामानुजाचार्य ज. (द.भारत), श्री सूरदास ज.
९	६	र	१९	५२	१३	४१	पुन	४६	०२	२४	०९	धृ	३६	४७	२०	२७	तै	१९	५२	१३	४१	३२	५६	५	४४	१८	५४	१७	४	29	क. १८।२६	०	१४	५२	२७	१७	११	२१	२३	५०	श्री रामानुजाचार्य जयंती (उत्तर भारत में), चन्दन छठ (बंगाल)
१०	७	चं	१४	५७	११	४२	पु	-२	५०	२२	५१	शू	३०	००	१७	४३	व	१४	५७	११	४२	३३	००	५	४३	१८	५५	१८	५	30	कर्क	०	१५	५०	४४	१६	१२	१६	२४	४३	भद्रा ११।४२ से २२।३९ तक, गंगा सप्तमी, गंगोत्पत्ति, मध्यान्ह में गंगा पूजन
११	८	मं	९	४०	९	३४	श्ले	३९	२०	२१	२६	गं	२२	५७	१४	५३	ब	९	४०	९	३४	३३	०४	५	४२	१८	५६	१९	६	M1	सिं. २१।२६	०	१६	४९	००	१४	१३	११	१	२६	कृत्तिका में बुध प्रवेश १७।२१, **श्री दुर्गाष्टमी**, भौमाष्टमी, श्री बगलामुखी C
१२	९	बु	४	०७	७	२०	म	३५	३५	१९	५५	वृ	१५	४२	११	५८	कौ	४	०७	७	२०	३३	०७	५	४१	१८	५६	२०	७	2	सिंह	०	१७	४७	१४	११	१४	०६	२	०९	रोहिणी ४ में गुरु प्रवेश २४।१०, श्री सीता नवमी (जानकी नवमी), D
०	१०	बु	५८	२२	२९	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी क्षयः F द्वादशी, राधा द्वादशी
१३	११	गु	५२	३७	२६	४३	पूफा	३१	४७	१८	२३	ध्रु	८	२०	९	००	व	२५	२२	१५	५३	३३	११	५	४०	१८	५७	२१	८	3	कं. २४।००	०	१८	४५	२५	१०	१५	०१	२	५२	भद्रा १५।५३ से २६।४३ तक, वृष में बुध प्रवे. ८।०९, **मोहिनी एकादशी** E
१४	१२	शु	४७	०७	२४	३१	उफा	२८	०२	१६	५३	व्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	१९	५०	१३	२६	३३	१४	५	४०	१८	५७	२२	९	4	कन्या	०	१९	४३	३५	७	१५	५६	३	३५	**बुध पश्चिम में उदय** २७।१८, मोहिनी एका. व्रत (वै.), परशुराम F
१५	१३	श	४२	०५	२२	२९	ह	२४	४२	१५	३२	व	४६	५७	२४	२६	कौ	१४	३२	११	२८	३३	१८	५	३९	१८	५८	२३	१०	5	तु. २६।५७	०	२०	४१	४२	६	१६	४२	४	१८	शनि प्रदोष व्रत, अशोक त्रिरात्रि व्रत G (प्रा. मत से)
१६	१४	र	३७	४२	२०	४३	चि	२२	०२	१४	२७	सि	४०	५०	२१	५८	ग	९	४७	९	३३	३३	२१	५	३८	१८	५९	२४	११	6	तुला	०	२१	३९	४८	४	१७	३७	५	००	भद्रा २०।४३ से, श्री नृसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जयंती, गुरु अमरदास जयंती G
१७	१५	चं	३४	२७	१९	२४	स्वा	२०	१७	१३	४४	व्य	३५	३५	१९	५१	वि	५	५७	८	००	३३	२५	५	३७	१८	५९	२५	१२	7	तुला	०	२२	३७	५२	२	१८	३१	५	४३	भद्रा ८।०० तक, **शनि पश्चिम में अस्त** १९।०८, सत्यव्रत, H

A २४।४७, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, श्री परशुराम जयंती, श्री शिवाजी जयं. (प्रा. मत से) B जयंती, बद्री केदारनाथ यात्रा, वर्षी तप समापन (जैन) C जयंती, मई मास ५ ता. ३१ मई दिवस, विश्व मजदूर दिवस D श्री महावीर स्वामी केवल ज्ञान (जैन) E व्रत (स्मार्त), लक्ष्मी नारायण H वैशाखी पूर्णिमा पुण्यं, **बुद्ध पूर्णिमा**, कूर्म जयंती, वैशाख स्नान समाप्त, यम प्रीत्यर्थ, जलकुम्भ दानम्, कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर जयंती, व्यतिपात पुण्यं

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

वैशाख शु. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	८	०	१	११	१	२	८	१०	९	७
१६	२०	४	२५	११	४	७	१५	१५	०	१४	२०
४९	३४	३०	३८	३७	४२	२१	२७	२७	३७	५२	५४
०	५०	२७	१६	१३	३३	२५	४८	४८	५९	४७	३८
५८	८११	७	१२५	१२	२३	७	३	३	१	०	१
१४	३९	३	०	४८	१६	२८	११	११	२२	१९	१६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. १ मई): गु.२श. | १२शु. | ११ ह. | ३रा. | १ सु.बु. | १० ने. | ४ चं. | ७ | ९मं. के. | ५ | ६ | ८प्लू.

ता. ७ मई ❖ वैशाख शु. १५ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	६	८	१	१	११	१	२	८	१०	९	७
२२	१५	५	७	२०	१२	८	१५	१५	०	१४	२०
३७	१८	२	३८	५४	२६	६	८	८	४५	५४	४६
५२	२०	४८	३७	४१	१८	३२	४३	४३	२६	९	४४
५८	८१३	३	११४	१३	३२	७	३	३	१	०	१
२	२३	१	१८	५	३२	३६	११	११	५	६	२३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ७ मई): बु.गु.श.२ | १२शु. | ११ह. | ३रा. | सू.१ | १० ने. | ४ | ७चं. | ९मं.के. | ५ | ६ | ८ प्लू.

इस पक्ष में अक्षया तृतीया को गुरुवार तथा रोहिणी नक्षत्र का योग होने से प्रजा में सख शांति तथा शासनाध्यक्षों द्वारा आम जनता के लिए नवीन कार्यक्रमों की घोषणा की जायेगी। व्यापारिक संधियां अधिक होने से जनता को सभी वस्तुएं समय पर उपलब्ध होंगी। मांगलिक उत्सवों की अधिकता रहेगी। यथा—**अक्षयाख्य तृतीयां रोहिणी गुरुणा सह। सर्व धान्यस्य निष्पत्तिर्भुवि मंगल कर्मकृत्॥** किन्तु इसी मास के प्रारम्भ से राहु केतु के अन्तर्गत सभी ग्रह आने से काल सर्प योग (चन्द्रमा के आने से) बनेगा, जो शुभ फलों को बढ़ाने में रोकथाम करेगा। विश्व के कुछ भागों में अराजकता रोगभय, अग्निकांड व डाका, लूटपाट से प्रजा को कष्ट होगा। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में बुधवार का चन्द्रदर्शन रुई, सूत, सोना, चांदी, पीतल, गुड़, खांड में मन्दी करेगा। जिसे भरणी का सूर्य रोकथाम करके तेजी प्रदान करेगा। ता. ४ मई को पश्चिम में बुध का उदय तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, जौ, गेहूं, चना में तेजी की धारणा बनाये रखेगा। मंदी वस्तु का स्टाक करना लाभप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पंजाब, हरियाणा, उ.प्र. दिल्ली, राजस्थान में तापक्रम व वायुवेग बढ़ेगा। पर्वतीय भागों में पक्षान्त में सामान्य वर्षा या ओला वृष्टि संभव है। मैदानी भागों में भी वायु वेग व बादल चाल से कहीं-कहीं वर्षा होगी। **शकुन विचार**—वैशाख सुदी पूर्णमासी को बादद चाल अथवा वर्षा ही तो आगे वर्षा ऋतु में वर्षा का अभाव रहता है। जिससे अन्नादि का स्टाक करने वाले व्यापारियों को आगे श्रावण-भाद्रपद मास में अच्छा लाभ मिलने के योग होते हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ८ से २३ मई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १८ वैशाख से २ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	प्र.	मु.	अं.
१८	१	मं	३२	३०	१८	३६	वि	१९	५०	१३	३२	व	३१	२२	१८	०९	बा	३	२०	६	५६	३३	२८	५	३६	१९	००	२६	१३	8
१९	२	बु	३२	०२	१८	२५	अनु	२०	४५	१३	५४	प	२८	२२	१६	५७	तै	२	०५	६	२६	३३	३१	५	३६	१९	००	२७	१४	9
२०	३	गु	३३	१७	१८	५४	ज्ये	२३	२२	१४	५६	शि	२६	४२	१६	१६	व	२	३०	६	३५	३३	३५	५	३५	१९	०१	२८	१५	10
२१	४	शु	३६	१२	२०	०३	मू	२७	३७	१६	३७	सि	२६	२२	१६	०७	ब	४	३५	७	२४	३३	३८	५	३४	१९	०२	२९	१६	11
२२	५	श	४०	३७	२१	४९	पू.षा	३३	२०	१८	५४	सा	२७	१०	१६	२६	कौ	८	१५	८	५२	३३	४१	५	३४	१९	०२	३०	१७	12
२३	६	र	४६	१०	२४	०१	उ.षा	४०	१२	२१	३८	शुभ	२८	५७	१७	०८	ग	१३	१७	१०	५२	३३	४४	५	३३	१९	०३	३१	१८	13
२४	७	चं	५२	१७	२६	२८	श्र	४७	४०	२४	३७	शु.	३१	१५	१८	०३	वि	१९	१०	१३	१३	३३	४७	५	३३	१९	०३	ज्ये	१९	14
२५	८	मं	५८	२७	२८	५५	ध	५५	१२	२७	३७	ब्र	३३	४५	१९	०२	बा	२५	२५	१५	४२	३३	५०	५	३२	१९	०४	२	२०	15
२६	९	बु	६०	००	—	—	श	६०	००	—	—	ऐं	३५	५७	१९	५४	तै	३१	२०	१८	०३	३३	५३	५	३१	१९	०५	३	२१	16
२७	९	गु	४	००	७	०७	श	२	१०	६	२३	वै	३७	२७	२०	३०	ग	४	००	७	०७	३३	५६	५	३१	१९	०५	४	२२	17
२८	१०	शु	८	२२	८	५१	पू.भा	८	०५	८	४४	वि	३७	५७	२०	४१	वि	८	२२	८	५१	३३	५९	५	३०	१९	०६	५	२३	18
२९	११	श	११	१७	१०	०१	उ.भा	१२	३२	१०	३१	प्री	३७	१०	२०	२२	बा	११	१७	१०	०१	३४	१	५	३०	१९	०६	६	२४	19
३०	१२	र	१२	३५	१०	३१	रे	१५	२५	११	३९	आ	३५	१०	१९	३३	तै	१२	३५	१०	३१	३४	४	५	२९	१९	०७	७	२५	20
३१	१३	चं	१२	१२	१०	२२	अ	१६	४०	१२	०९	सौ	३१	५०	१८	१३	व	१२	१२	१०	२२	३४	७	५	२९	१९	०८	८	२६	21
ज्ये१	१४	मं	१०	१७	९	३५	भ	१६	२७	१२	०३	शो	२७	२०	१६	२४	श	१०	१७	९	३५	३४	९	५	२८	१९	०८	९	२७	22
२	३०	बु	७	०५	८	१८	कृ	१४	५७	११	२७	अ	२१	५०	१४	१२	ना	७	०५	८	१८	३४	१२	५	२८	१९	०९	१०	२८	23

अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
8	वृ. ७।३२	०	२३	३५	५४	[illegible]	१९	३६	६	३५	रोहिणी में बुध प्रवेश १२।१४, देव ऋषि नारद जयंती, वीणादि वाद्य यंत्र दान
9	वृश्चिक	०	२४	३३	५५	[illegible]	२०	१९	७	२७	
10	ध. १४।५६	०	२५	३१	५४	५८	२१	०१	८	१९	भद्रा ६।३५ से १८।५४ तक, श्री श्री मां आनन्दमयी जयं., कृष्ण चतुर्थी व्रत
11	धनु	०	२६	२९	५२	५६	२१	४४	९	११	कृत्तिका में सूर्य प्रवेश ९।४२, वक्री नेपच्यून ५।४०
12	म. २५।३३	०	२७	२७	४८	५५	२२	२७	१०	०३	वक्री मंगल १४।०२
13	मकर	०	२८	२५	४३	५४	२३	१०	१०	५५	भद्रा २४।०१ से, रेवती में शुक्र प्रवेश २९।०२
14	मकर	०	२९	२३	३७	५२	२३	५३	११	४७	भद्रा १३।१३ तक, वृष में सूर्य प्र. २०।३५, संक्रांति मु. ३०, सौर ज्येष्ठ A
15	कुं. १४।०८	१	००	२१	२९	५२	२४	३६	१२	३९	कालाष्टमी, श्री दादुदयाल पुण्य तिथि, मेला चनानी माताजी, पंचक प्रा. B
16	कुम्भ	१	०१	१९	२१	५०	१	१८	१३	३१	मृगशिर में बुध प्रवेश २२।५२
17	मी. २६।१२	१	०२	१७	११	४९	१	५४	१४	२३	भद्रा २०।०३ से, मृगशिर १ में गुरु प्रवेश २८।२२, नवमी वृद्धि, वैधृति पुण्यं
18	मीन	१	०३	१५	००	४७	२	२९	१५	१५	भद्रा ८।५१ तक, मेला शाढ़ी जातर नगर (हिमाचल)
19	मीन	१	०४	१२	४७	४७	३	०५	१६	०७	अपरा एकादशी व्रत (सबका), भद्रकाली एका. (पंजाब), जलक्रीड़ा C
20	मे. ११।३९	१	०५	१०	३४	४५	३	४२	१६	५९	सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश २९।१५, प्रदोष व्रत, मधुसूदन द्वादशी, पंचक D
21	मेष	१	०६	०८	१९	४४	४	१६	१७	४१	भद्रा १०।२२ से २२।०३ तक, रोहिणी १ में शनि प्रवेश २३।२५, सावित्री E
22	वृ. १७।५७	१	०७	०६	०३	४३	४	५२	१८	३३	मिथुन में बुध प्रवेश १५।२८, भावुका अमावस्या, फलहारिणी, F
23	वृष	१	०८	०३	४६	४२	५	२७	१९	२५	देवकार्याऽमावस्या, शनि जयंती, आखरी चहार शम्बा (मु.), शहादते G

A मास प्रा., मेला डूंगरी जातर (मनाली), चेहलुम (मु.) **B** १४।०८ से **C** एकादशी (उड़ीसा) **D** समाप्त ११।३९, वट सावित्री व्रतारंभ **E** चतुर्दशी, मास शिवरात्रि व्रत **F** कालिका पूजन, पितृकार्याऽमावस्या, **राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारंभ,** वट सावित्री व्रत, बड़ पूजनार्चन (अमा. पक्ष), सावित्री सत्यवान व्रत कथा श्रवणामृत **G** इमाम हसन (मु.)

ज्येष्ठ कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	९	८	१	१	११	१	२	८	१०	९	७
०	२५	५	२०	२२	१७	९	१४	१४	०	१४	२०
२१	४४	६	५७	४०	२१	७	४३	४३	५२	५४	३५
२९	१८	३५	३६	२४	४५	४६	१७	१७	४३	८	१६
५७	७२१	२	८४	१३	४२	७	३	३	०	०	१
५२	३०	५३	१०	२३	१	४३	११	११	४२	९	३०
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

३रा. | १ | १२ शु. | ४ | २सू. बु.गु.श. | ११ह. | ५ | ८प्लू. | ६ | १०चं. ने. | ७ | ९मं.के.

इस पक्ष में तिथि ५ को मंगल धनु राशि में वक्री हो रहा है जिससे शासकों में विरोध, सत्ता परिवर्तन, पद लोलुपता के साथ मंहगाई वृद्धि, दुर्भिक्ष भय से प्रजा पीड़ित होगी। अकाल व भुखमरी से जनता में भय व्याप्त होगा। प्राचीन आचार्यों ने इसका फल इस प्रकार लिखा है। यथा—**कन्यायां मीने सिंहे वृष धनुषि यदा वक्रगौ भौम मन्दौ, पृथ्वीशाः क्रूररूपा बहुरिपुदलिता विग्रहश्चैव पीड़ा॥** आस्ट्रेलिया, स्पेन, अरब राष्ट्र, ईरान, ईराक, रूस, चीन, पाकिस्तान, तुर्की, बगदाद आदि देशों में भय व अशांति की वृद्धि होगी। कहीं अग्निकांड, बम विस्फोट, यान दुर्घटना व भूकम्प से जन धन की हानि होगी। भारतीय राष्ट्रनेता भी चिन्ताग्रस्त होंगे। **तेजी मन्दी विचार**— मासारंभ में रोहिणी में बुध आने से सोना, चांदी, सूत, कपास, तिल, तेल, सरसों, चावल में तेजी तथा ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मंदी होगी। यथा—**रोहिण्यां च बुधे कार्पास तिल सूत्र महर्घता॥** ति. ७ को सोमवारी वृष संक्रांति लगने से रसादि पदार्थ गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा धान्य, जौ, गेहूं, चना, मूंग, मोंठ में भी तेजी की धारणा बनेगी। पक्षान्त में मिथुन राशि पर बुध आने से तेजी पर रोक लगकर मन्दी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, म.प्र., हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात में आंधी, तूफान व रोगोत्पात से प्रजा को कष्ट होगा। गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। पक्ष मध्य में वायु के साथ साधारण बादल चाल के योग हैं। **शकुन विचार**— ज्येष्ठ बदी एकादशी व द्वादशी को बादल गाज होना शुभ होता है किन्तु अमावस्या को बादल बिजली हो तो आगे वर्षा ऋतु में वर्षा की कमी रहती है। यथा—**ज्येष्ठ मासे त्वमायां हि दिवा वा यदि वा निशम्। आकाशे दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टि भयावहा॥**

ता. २३ मई ❖ **ज्येष्ठ कृ. ३० बुध** प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

३बु.रा. | १ | १२शु. | ४ | सू.गु.२ श.चं. | ११ ह. | ५ | ८प्लू. | ६ | १०ने. | ७ | ९मं.के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	८	२	१	११	१	२	८	१०	९	७
८	६	४	०	२४	२३	१०	१४	१४	०	१४	२०
३	३४	२२	२३	२८	२३	९	१७	१७	५६	५२	२३
४६	३३	३	४०	१९	१८	४५	५१	५१	५४	३	०
५७	७३२	८	५२	१३	४८	७	३	३	०	०	१
४२	७	५९	४८	३७	५१	४६	११	११	१८	२५	३५
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २४ मई से ६ जून सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १६ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	
३	१	गु	२	४७	६	३५	रो	१२	२५	१०	२६	सु	१५	३२	११	४१	ब	२	४७	६	३५	३४	१४	५	२८	१९	०९	११	२९	24	मि. २१।०९	१	०९	०१	२८	५९/४०	६	२८	२०	२७	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, श्री गंगा दशाश्वमेध स्नान प्रारम्भ, करवीर व्रत
०	२	गु	५७	४०	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षयः
४	३	शु	५२	०५	२६	१७	मृ	९	१२	९	०८	धृ	८	४०	८	५५	तै	२४	५७	१५	२६	३४	१७	५	२७	१९	१०	१२	२अ	25	मिथुन	१	०९	५९	०८	३९	७	२८	२१	१०	रोहिणी में सूर्य प्र. ५।५२, रवि-उल-अव्वल मु. मास ३ प्रा., रम्भा तृतीया A
५	४	श	४६	०७	२३	५४	आ	५	२५	७	३७	शू	१/५७	२०/५०	५/२६	५९/५९	व	११	०७	१३	०६	३४	१९	५	२७	१९	१०	१३	२	26	क. २४।२५	१	१०	५६	४७	३८	८	२९	२१	५३	भद्रा १३।०६ से २३।५४ तक, विनायक ४ व्रत, गुरु अर्जुनदेव बलिदान B
६	५	र	४०	०७	२१	२९	पुन	१/५७	२०/२२	६/२८	०१/२३	वृ	४६	१५	२३	५६	ब	१३	१०	१०	४२	३४	२१	५	२६	१९	११	१४	३	27	कर्क	१	११	५४	२५	३६	९	२९	२२	३६	श्रुति पंचमी (जैन), पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्य तिथि
७	६	चं	३४	१०	१९	०६	श्ले	५३	२५	२६	४८	ध्रु	३८	४५	२०	५६	कौ	७	०७	८	१७	३४	२३	५	२६	१९	११	१५	४	28	सिं. २६।४८	१	१२	५२	०१	३५	१०	३०	२३	१९	विन्ध्यवासिनी पूजा, जामित्री षष्ठी व अरण्य षष्ठी व्रत (बंगाल में प्रसिद्ध)
८	७	मं	२८	२२	१६	४७	म	४१	४२	२५	११	व्या	३१	२५	१८	००	ग	१	१५	५	५६	३४	२५	५	२६	१९	१२	१६	५	29	सिंह	१	१३	४९	३६	३३	११	३०	२४	११	भद्रा १६।४७ से २७।४१ तक, चौ. चरण सिंह पुण्य तिथि
९	८	बु	२२	५५	१४	३६	पूफा	४६	२५	२४	००	ह	२४	२०	१५	१०	ब	२२	५५	१४	३६	३४	२७	५	२६	१९	१२	१७	६	30	सिंह	१	१४	४७	०९	३२	१२	३१	१	०३	अश्विन मेष में शुक्र प्रवेश २३।५३, वक्री हर्षल २१।३०, बुधाष्टमी, C
१०	९	गु	१८	००	१२	३७	उफा	४३	३७	२२	५२	व	१७	४२	१२	३०	कौ	१८	००	१२	३७	३४	२९	५	२५	१९	१३	१८	७	31	कं. ५।४१	१	१५	४४	४१	३०	१३	३१	१	५५	श्री माहेश्वरी (महेश) नवमी
११	१०	शु	१३	३०	१०	४९	ह	४१	२५	२१	५१	सि	११	२७	१०	००	ग	१३	३०	१०	४९	३४	३१	५	२५	१९	१३	१९	८	J1	कन्या	१	१६	४२	११	२९	१४	३१	२	४६	भद्रा २२।०३ से, मृगशिर २ में गुरु प्रवेश २०।१४, गुरु वृद्धत्व प्रारम्भ ७।५०, D
१२	११	श	९	४७	९	२०	चि	३९	५५	२१	२३	व्य	५	४७	७	४४	वि	९	४७	९	२०	३४	३२	५	२५	१९	१४	२०	९	2	तु. ९।३९	१	१७	३९	४०	२८	१५	३१	३	१९	भद्रा ९।२० तक, निर्जला एकादशी व्रत (सबका), व्यतिपात पुण्यं, E
१३	१२	र	६	५२	८	१०	स्वा	३९	२२	२१	१०	वरि	०/५२	४०/३१	५/२८	४०/०१	बा	६	५२	८	१०	३४	३४	५	२५	१९	१४	२१	१०	3	तुला	१	१८	३७	०८	२७	१६	३१	३	५२	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रारम्भ (गुजरात में)
१४	१३	चं	४	५५	७	२३	वि	३९	५०	२१	२१	शि	५३	१०	२६	४१	तै	४	५५	७	२३	३४	३६	५	२५	१९	१५	२२	११	4	वृ. १५।१५	१	१९	३४	३५	२६	१७	३१	४	२५	बुध वक्री १६।२९, गुरु पश्चिम में अस्त ७।५०
१५	१४	मं	४	०५	७	०२	अनु	४१	३०	२२	००	सि	५०	४७	२५	४३	व	४	०५	७	०२	३४	३७	५	२४	१९	१५	२३	१२	5	वृश्चिक	१	२०	३२	०१	२४	१८	३१	४	५८	भद्रा ७।०२ से १९।०३ तक, चम्पक १४ (बंगाल में), वट सावित्री व्रत समा. F
१६	१५	बु	४	२७	७	११	ज्ये	४४	२२	२३	०९	सा	४९	२५	२५	१०	ब	४	२७	७	११	३४	३८	५	२४	१९	१६	२४	१३	6	ध. २३।०१	१	२१	२९	२५	२४	१९	३१	५	३१	वक्री ज्येष्ठा १ में प्लूटो १२।५५, ज्येष्ठी पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्यं, वट सावित्री G

A व्रत, महाराणा प्रताप जयंती, मेला हल्दी घाटी (राज.) B दिवस (प्रा. मत से) C श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर) D श्री गंगा दशहरा, मेला हरिद्वार, दशहरा व्रत समाप्त, श्री सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, रामेश्वर यात्रा, दर्शन पूजन, बटुक भैरव जयंती, जून मास ६ ता. ३० E मेला बहिरे भटिण्डा पंजाब, चम्पक द्वादशी F (गुजरात), ईद-ए-मिलाद (बारावफात), मन्वादि, सत्यव्रत, विश्व पर्यावरण दिवस G व्रत पारणा, संत कबीर जयंती, देव स्नान पूर्णिमा

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ज्येष्ठ शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	८	२	१	११	१	२	८	१०	९	७
१४	१५	३	५	२६	२९	११	१३	१३	०	१४	२०
४७	४७	४	२	४	१९	४	५५	५५	५७	४८	११
९	२८	२४	२६	३	१२	८	३५	३५	५८	३४	५०
५७	४८	१३	२१	१३	५३	७	३	३	०	०	१
३२	२८	४५	५३	४४	१७	४५	११	११	३	३७	३७
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

३बु.रा. | १ | १२श. | ४ | २सू. गु.श. | ११ह. | ५चं. | ८प्लू. | ६ | १०ने. | ७ | ९मं.के.

इस मास में ता. १५ मई से सूर्य, गुरु, शनि का मंगल केतु से संघट्ट चक्र में वेध रहेगा। जिससे विश्व के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, महामारी, बम विस्फोट, अग्निकांड से जन धन की हानि होगी। मध्य एशिया, ईरान, आयरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, स्पेन, अरब राष्ट्रों के देशों में विशेष हलचल के योग हैं। यहां मंगल वक्री तथा गुरु शीघ्र गति (अतिचारी) बना होने से विश्व में भ्रष्टाचार, अनैतिकता, हिंसाकाण्ड, विग्रहादि व राजनैतिक गतिरोध बढ़ेंगे। यथा—**क्रूरा वक्रा यदा काले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः। अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्र भयंकराः॥** कुछ देशों की आर्थिक स्थिति भी डांवाडोल होगी। जिससे राज प्रजा में असन्तोष बढ़ेगा। **तेजी मन्दी विचार**—इस पक्ष में गुरुवार का चन्द्रदर्शन एवं द्वितीया का क्षय अन्नादि के साथ-साथ सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि में घटाबढ़ी से तेजी करेगा। बाजार रुख देखकर काम करना लाभप्रद रहेगा। ता. ३० मई को मेष का शुक्र आने से तिल, तेल, सरसों, अलसी में मंदी तथा जौ, गेहूं, चना में तेजी होगी। यथा—**दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशुपीड़ा च मेघवर्षा भविष्यति॥** चौपाये पशुओं में रोग पीड़ा तथा अच्छे मानसून के आसार बनें। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, उ.प्र. आदि उत्तरी राज्यों में गर्मी जोर पकड़ेगी। पक्षान्त में गुरु का अस्त वायु वेग के साथ वर्षा कारक है। उत्तरी पूर्वी भारत में मानसून पूर्व की बरसात होगी। समुद्री तटवर्ती इलाकों में मानसून सक्रिय बनेगा। **शकुन विचार**—ज्येष्ठ सुदी ५ की दक्षिण की हवा चले तथा आकाश बादलों से आच्छादित रहे और मेघ गर्जना भी हो तो धान्यादि का संग्रह करने वालों को आगे आश्विन मास में लाभ होगा।

ता. ६ जून ❖ ज्येष्ठ शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

३बु.रा. | १शु. | १२ | ४ | २सू. गु.श. | ११ह. | ५ | ८चं. प्लू. | ६ | १०ने. | ७ | ९मं.के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	७	८	२	१	०	१	२	८	१०	९	७
२१	२०	१	५	२७	५	११	१३	१३	०	१४	२०
२९	४०	१६	५८	४०	४३	५८	३३	३३	५६	४३	०
२५	५	३१	३०	३०	१	१६	२०	२०	३८	३९	३०
५७	५८	१७	१०	१३	५६	७	३	३	०	०	१
२४	५७	२३	०	५०	४५	४२	११	११	२३	४८	३७
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ७ से २१ जून सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३१ ज्येष्ठ तक। रवि उ.-दीणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैं. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
१७	१	गु	६	०७	७	५१	मृ	४८	३२	२४	४९	शुभ	४९	०५	२५	०२	कौ	६	०७	७	५१	३४	४०	५	२४	१९	१६	२५	१४	7	धनु	१	२२	२६	४९	२३	२०	३१	६	२६	मृगशिर में सूर्य प्रवेश २७।४५, बुध पश्चिम में अस्त १२।४७, गुरु हर A
१८	२	शु	९	१०	९	०४	पू.षा	५४	००	२७	००	शु	४९	४२	२५	१७	ग	९	१०	९	०४	३४	४१	५	२४	१९	१७	२६	१५	8	धनु	१	२३	२४	१२	२३	२१	०७	७	२१	भद्रा २१।५१ से
१९	३	श	१३	२५	१०	४६	उ.षा	६०	००	-	-	ब्र	५१	१५	२५	५४	वि	१३	२५	१०	४६	३४	४२	५	२४	१९	१७	२७	१६	9	म. ९।३७	१	२४	२१	३५	२१	२१	४२	८	१७	भद्रा १०।४६ तक, **कृष्ण चतुर्थी व्रत**
२०	४	र	१८	४०	१२	५२	उ.षा	०	२७	५	३५	ऐं	५३	२२	२६	४५	बा	१८	४०	१२	५२	३४	४३	५	२४	१९	१७	२८	१७	10	मकर	१	२५	१८	५६	२१	२२	१७	९	१२	वक्री वृश्चिक में मंगल प्रवेश ११।३६, आर्द्रा २ में राहु मूल ४ में केतु B
२१	५	चं	२४	३५	१५	१४	श्र	७	४२	८	२९	वै	५५	५०	२७	४४	तै	२४	३५	१५	१४	३४	४४	५	२४	१९	१८	२९	१८	11	कुं. २१।५९	१	२६	१६	१७	२१	२२	५२	१०	०८	वैधृति पुण्यं, पंचक प्रारम्भ २१।५९ से
२२	६	मं	३०	४०	१७	४०	ध	१५	१२	११	२९	वि	५८	१५	२८	४२	व	३०	४०	१७	४०	३४	४५	५	२४	१९	१८	३०	१९	12	कुंभ	१	२७	१३	३८	२०	२३	२८	११	०३	भद्रा १७।४० से, शनि पूर्व में उदय २०।१६
२३	७	बु	३६	२५	१९	५८	श	२२	३०	१४	२४	प्री	६०	००	-	-	वि	३	३७	६	५१	३४	४६	५	२४	१९	१९	३१	२०	13	कुंभ	१	२८	१०	५८	१९	२४	१३	११	५९	भद्रा ६।५१ तक, भरणी में शुक्र प्रवेश २६।०७
२४	८	गु	४१	१७	२१	५५	पू.भा	२९	०५	१७	०२	प्री	०	१२	५	२९	बा	९	००	९	००	३४	४६	५	२४	१९	१९	आ१	२१	14	मी. १०।१५	१	२९	०८	१७	१९	२४	३८	१२	४४	मिथुन में सूर्य प्र. २७।०९, संक्रांति मु. ४५, कालाष्टमी, राजस संक्रांति C
२५	९	शु	४४	४७	२३	१९	उ.भा	३४	२५	१९	१०	आ	१	२२	५	५७	तै	१३	१५	१०	४२	३४	४७	५	२४	१९	१९	२	२२	15	मीन	२	००	०५	३६	१९	१	२०	१३	३९	
२६	१०	श	४६	३७	२४	०३	रे	३८	१०	२०	४०	सौ	१	२२	५	५७	व	१५	५७	११	४७	३४	४७	५	२४	१९	१९	३	२३	16	मे. २०।४०	२	०१	०२	५५	१८	२	०१	१४	३४	भद्रा ११।४७ से २४।०३ तक, मृगशिर ३ मिथुन में गुरु प्रवेश ७।२६, D
२७	११	र	४६	३७	२४	०४	अ	४०	०७	२१	२८	शो	० / ५७	०२ / ४०	५ / २८	२५ / २२	ब	१६	५०	१२	०९	३४	४८	५	२५	१९	२०	४	२४	17	मेष	२	०२	००	१३	१८	२	४२	१५	२९	**योगिनी एकादशी व्रत (सबका)**
२८	१२	चं	४४	४७	२३	२०	भ	४०	१७	२१	३२	सु	५३	००	२६	३७	कौ	१५	५७	११	४८	३४	४८	५	२५	१९	२०	५	२५	18	वृ. २७।२७	२	०२	५७	३१	१८	३	२३	१६	२४	
२९	१३	मं	४१	१७	२१	५६	कृ	३८	४७	२०	५६	धृ	४७	२५	२४	२३	ग	१३	१५	१०	४३	३४	४८	५	२५	१९	२०	६	२६	19	वृष	२	०३	५४	४९	१७	४	०४	१७	१९	भद्रा २१।५६ से, वक्री वृष में बुध प्रवेश १६।१२, भौम प्रदोष व्रत, E
३०	१४	बु	३६	२०	१९	५७	रो	३५	५०	१९	४५	शू	४०	४२	२१	४२	वि	९	००	९	०१	३४	४८	५	२५	१९	२०	७	२७	20	वृष	२	०४	५२	०६	१७	४	३५	१८	१४	भद्रा ९।०१ तक
३१	३०	गु	३०	१२	१७	३०	मृ	३१	४०	१८	०५	गं	३३	००	१८	३३	च	३	२५	६	४७	३४	४८	५	२५	१९	२१	८	२८	21	मि. ६।५८	२	०५	४९	२३	१७	५	२६	१९	०९	आर्द्रा में सूर्य प्रवेश २६।४२, सायन कर्क में सूर्य प्रवेश १३।०९, F

A गोविन्द सिंह जयंती (प्रा. मत से) B प्रवेश १०।०१, ईद-ए-मौलाद (मु.) C (उड़ीसा), मेला भून्तर (हिमाचल प्रवेश), **सौर आषाढ़ मास प्रारम्भ**
D रोहिणी २ में शनि प्रवेश २३।००, **पंचक समाप्त** २०।४० E मास शिवरात्रि व्रत F **रवि दक्षिणायन, वर्षा ऋतु प्रारम्भ**, देव पितृकार्याऽमावस्या

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

आषाढ़ कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१०	७	२	१	०	१	२	८	१०	९	७
२९	२७	२८	३	२९	१३	१२	१३	१३	०	१४	११
८	३१	४८	१	३१	२८	५९	७	७	५२	३६	४७
१७	३८	२९	१	११	२४	२४	५३	५३	१७	२४	३८
५७	७३३	१९	३०	१३	५९	७	३	३	०	१	१
१९	३०	२९	३	५१	५०	३४	११	११	४६	१	३५
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
मृग. २	पू.भा. ३	ज्येष्ठा ४	मृग. ३	मृग. २	भरणी १	रोहिं. १	आर्द्रा २	मूल ४	धनि. ३	श्रवण २	अनु. १

कुण्डली (ता. १४ जून): २सू. गु.श. | ३बु.रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८मं. प्लू. | ९के. | १०ने. | ११हचं | १२ | १शु.

इस मास में पांच गुरुवार भारत के लिए श्रेष्ठ फलप्रद हैं। किन्तु पश्चिमी देशों में भय विग्रह से जनता पीड़ित होगी। यथा—**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धश्च जायते।** अफगानिस्तान, अरब, इजरायल, पाकिस्तान, ईरान, ईराक आदि देशों में कहीं-कहीं राजविग्रह, आन्तरिक कलह तो कहीं युद्धादि भय से जन धन की हानि होगी। ता. १० जून को वक्री मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश कर शनि से सम सप्तम योग बनायेगा। जिससे असन्तोष, अराजकता, आन्दोलन, प्रकृति-प्रकोप को बढ़ावा मिलेगा। भारत को भी पाकिस्तान के साथ लगी सीमाओं पर चौकसी बढ़ानी होगी। मंहगाई के बढ़ने से जनता का जीना कठिन होगा। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में मृगशिर पर सूर्य आने से तथा बुध का अस्त रेशम, सूत, सन, कपूर, कस्तूरी, उड़द, मूंग, मोंठ, बाजरा में तेजी करेगा। जिसे मिथुन संक्रांति ४५ मुहूर्त्ती होने से रोक कर मंदी की चाल निकालेगा। ता. १६ जून को मिथुन राशि में गुरु प्रवेश करेगा। जिसका फल—**मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्। नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोय भविष्यति॥** सोना, चांदी, सरसों, अलसी, ताम्बा, लोहादि में तेजी की धारणा बनेगी। उत्तरी पश्चिमी भागों में कहीं दुर्भिक्ष की भावना बढ़ेगी। **आकाश लक्षण**—पक्षारंभ में बुध का अस्त व शनि का अस्त व शनि का उदय दक्षिणी पूर्वी राज्यों में वर्षा कारक है। हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में तेज आंधी के साथ वर्षा या बूंदाबांदी होगी। कहीं लू का प्रकोप भी बना रहेगा। **शकुन विचार**—आषाढ़ कृष्ण ८, ९ को बादल चाल एवं बिजली चमके तो सुभिक्षकारक समय का सूचक होता है। यथा—*आषाढ़ बदी अष्टम दिनां मेघावृत हो चन्द।* **वर्षा अच्छी होयगी, मिटे सभी दुःख द्वन्द॥**

ता. २१ जून ❖ आषाढ़ कृ. ३० गुरुवार प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २१ जून): ३सू. गु.रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८मं.प्लू. | ९के. | १०ने. | ११ह. | १२ | १शु. | २चं.बु.श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	१	७	१	२	०	१	२	८	१०	९	७
५	२९	२६	२९	१	२०	१३	१२	१२	०	१४	११
४९	७	३२	१३	८	३३	५१	४५	४५	४६	२८	३६
२३	२	२३	४३	१	५३	५२	३७	३७	३	४४	३९
५७	८६६	१८	२६	१३	६१	७	३	३	१	१	१
१७	३५	५८	३०	४९	५६	२४	११	११	४	११	३२
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
मृग. ४	मृग. २	ज्ये. ३	मृग. २	मृग. ३	भरणी ३	रोहिं. २	आर्द्रा २	मूल ४	धनि. ३	श्रवण २	अनु. १

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २२ जून से ५ जुलाई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १४ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	संदर्भ
आ१	१	शु	२३	१०	१४	४१	आ	२६	४०	१६	०५	वृ	२४	३५	१५	१५	ब	२३	१०	१४	४१	३४	४८	५	२५	१९	२१	९	२९	22	मिथुन	२	०६	४६	४०	[illegible]	६	२३	२०	०१	चन्द्रदर्शन मु. ४५, समर्घ, मनोरथ द्वितीया व्रत (बंगाल में), रा. A
२	२	श	१५	३५	११	४०	पुन	२१	०५	१३	५२	ध्रु	१५	४२	११	४३	कौ	१५	३५	११	४०	३४	४८	५	२६	१९	२१	१०	२.उ	23	क. ८।५६	२	०७	४३	५६	१६	७	२१	२१	०९	श्री जगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा), रवि उस्सानी मु. मास ४ प्रा.
३	३	र	७	५२	८	३५	पु	१५	२५	११	३६	व्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	७	५२	८	३५	३४	४८	५	२६	१९	२१	११	२	24	कर्क	२	०८	४१	१२	१५	८	१८	२२	१६	भद्रा १९।०३ से. विनायक ४ व्रत
४	४	चं	०	१७	५	३३	श्ले	९	५५	९	२४	व	४९	१७	२५	०९	वि	०	१७	५	३३	३४	४७	५	२६	१९	२१	१२	३	25	सिं. ९।२८	२	०९	३८	२७	१५	९	१६	२३	२४	भद्रा ५।३३ तक, बुध पूर्व में उदय २९।१७, स्कन्द पंचमी, हेरा B
०	५	चं	५३	०५	२६	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी क्षय:
५	६	मं	४६	३२	२४	०४	म	४	५०	७	२३	सि	४१	१५	२१	५७	कौ	११	४२	१३	२०	३४	४७	५	२७	१९	२१	१३	४	26	सिंह	२	१०	३५	४२	१४	१०	१४	२४	३१	कृत्तिका में शुक्र प्रवेश २५।५९, कुमार षष्ठी व्रत, श्री महावीर C
६	७	बु	४०	५५	२१	४९	पूफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व्य	३४	००	१९	०३	ग	१३	३७	१०	५४	३४	४६	५	२७	१९	२१	१४	५	27	कं. ११।१३	२	११	३२	५६	१३	११	१२	१	३९	भद्रा २१।४९ से, विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा, व्यतिपात पुण्यं, D
७	८	गु	३६	२०	१९	५९	ह	५४	५०	२०	२३	व	२७	२२	१६	२८	वि	८	३०	८	५१	३४	४६	५	२७	१९	२१	१५	६	28	कन्या	२	१२	३०	०९	१३	१२	१०	२	०६	भद्रा ८।५१ तक, मार्गी बुध १६।५९, गुरु पूर्व में उदय ६।४०, E
८	९	शु	३२	५२	१८	३७	चि	५३	४२	२६	५७	प	२२	००	१४	१६	बा	४	२७	७	१५	३४	४५	५	२८	१९	२२	१६	७	29	तु. १५।०७	२	१३	२७	२२	१३	१३	०८	३	११	वृष में शुक्र प्रवेश ५।२९, भडुली नवमी, मेला शरीफ भवानी F
९	१०	श	३०	४२	१७	४५	स्वा	५३	४७	२६	५९	शि	१७	३०	१२	२८	तै	१	३७	६	०७	३४	४४	५	२८	१९	२२	१७	८	30	तुला	२	१४	२४	३५	१२	१४	०६	३	३५	मृगशिर ४ में गुरु प्रवेश १९।५४, मन्वादि, गिरिजा पूजा दशमी
१०	११	र	२९	४५	१७	२२	वि	५५	१०	२७	३२	सि	१३	५७	११	०३	ब	०	०५	५	३०	३४	४३	५	२८	१९	२२	१८	९	J1	वृ. २१।२१	२	१५	२१	४७	११	१५	०४	३	५९	भद्रा ५।३० से १७।२२ तक, गुरु बाल्यत्व समाप्त ६।४०, देवशयनी G
११	१२	चं	३०	००	१७	२९	अनु	५७	३७	२८	३२	सा	११	२५	१०	०३	बा	३०	००	१७	२९	३४	४२	५	२९	१९	२२	१९	१०	2	वृश्चिक	२	१६	१८	५८	१२	१६	०२	४	२३	सोम प्रदोष व्रत, हरिवासर ११।५२ तक
१२	१३	मं	३१	२७	१८	०४	ज्ये	६०	००			शुभ	९	५०	९	२५	कौ	०	३५	५	४३	३४	४१	५	२९	१९	२१	२०	११	3	वृश्चिक	२	१७	१६	१०	११	१७	००	४	४७	जया पार्वती व्रत प्रारंभ, फतीहा यजदहूम (ग्यारहवीं शरीफ)
१३	१४	बु	३४	०५	१९	०७	ज्ये	१	२०	६	०१	शु	९	१०	९	०९	ग	२	४०	६	३३	३४	४०	५	२९	१९	२१	२१	१२	4	ध. ६।०९	२	१८	१३	२१	११	१७	५८	५	१२	भद्रा १९।०७ से, चौमासी चौदश (जैन), मेला ज्वालामुखी H
१४	१५	गु	३७	४२	२०	३५	मू	६	०२	७	५५	ब्र	९	२०	९	१४	वि	५	४५	७	४८	३४	३९	५	३०	१९	२१	२२	१३	5	धनु	२	१९	१०	३२	११	१८	५६	५	३६	भद्रा ७।४८ तक, पुन. में सूर्य प्रवेश २६।१६, गुरु पूर्णिमा, आषाढ़ी J

A आषाढ़ मासारम्भ B पंचमी (उड़ीसा) सोमवती पंचमी C गर्भ कल्याणंक D जैन अट्ठाई प्रारम्भ E श्री दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा) F (काश्मीर), कन्दर्प ९, शूद्रादि नवमी G एकादशी व्रत (सबका), चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ, पुनर्यात्रा, उल्टारथ (उड़ीसा), बहुधायात्रा, जिनदत्त शूरी जयंती (जैन), अजमेर दादा मेला शुरू, जुलाई मास ७ ता. ३१ H (काश्मीर), वायु परीक्षा सायं J १५, सत्यव्रत, व्यास पूजा, मन्वादि मेला नैमिषारण्य, सन्यासियों का चातुर्मास नियमादि प्रा., खण्डग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण

आषाढ़ शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ जून

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	७	१	२	०	१	२	८	१०	९	७
१२	१०	२४	२७	२	२७	१४	१२	१२	०	१४	१९
३०	४१	२६	२३	४४	५२	४२	२३	२३	३७	१९	२६
९	१९	५७	४१	२४	३७	५९	२२	२२	४२	५९	९
५७	[illegible]	१६	१	१३	६३	७	३	३	१	१	१
१३	३७	९	१३	४२	३६	१०	११	११	२२	१९	२६
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (२८ जून): ४ | २बु.श. | १शु. | ५ | सू.३ गु.रा. | १२ | ६चं. | ९के. | ७ | ११ह. | ८मं.प्लू. | १०ने.

ता. ५ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (५ जुलाई): ४ | २बु.शु.श. | १ | ५ | ३सू. रा.गु. | १२ | ६ | ९ चं.के. | ७ | ११ह. | ८मं.प्लू. | १०ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	८	७	१	२	१	१	२	८	१०	९	७
१९	१२	२२	२९	४	५	१५	१२	१२	०	१४	१९
१०	५	४६	१४	१९	२२	३२	१	१	२७	१०	१६
३२	३८	३८	२२	५४	११	२२	६	६	२५	२०	२१
५७	[illegible]	११	३५	१३	६५	६	३	३	१	१	१
११	४६	४१	२८	३४	१	५४	११	११	३७	२६	२०
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में सूर्य, गुरु, शनि का बुध शनि से संघट्ट चक्र में वेध बनने से संसार के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, भय-विग्रह से प्रजा को पीड़ा होगी। शासकों में मतभेद उग्ररूप धारण करने से शासन व्यवस्था में अस्थिरता दिखाई देगी। पक्ष मध्य में गुरु पूर्व में उदय होगा। जिसका फल भी प्राचीन आचार्यों ने अच्छा नहीं बताया है। यथा—**गुरुःप्याषाढ़ के नृपरणोन्न महर्घता च॥** पश्चिमी राष्ट्र ईरान, ईराक, इजरायल, पाकिस्तान, ब्रिटेन, यूरोप आदि देशों की राजनैतिक गतिविधियां तेज होंगी। यहां मंगल शनि का प्रतियोग भी अशांतिप्रद है। अतः विश्व के किसी प्रमुख नेता को सत्ताच्युत होने या असामयिक निधन होने से जनता स्तब्ध रहेगी। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में शुक्रवार का चन्द्रदर्शन चावल, चना, उड़द, सरसों, तिल, तेल में मंदी तथा रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी की चाल बनायेगा। ता. २८ जून को बुध मार्गी तथा गुरु का उदय व्यापारिक वस्तुओं में भारी घटाबढ़ी करेगा। यहां बाजार रुख देखकर काम करना चाहिए। पूर्णिमा को ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण अन्नादि में आगे तेजी कारक रहेगा। आषाढ़ी पूर्णिमा के चन्द्रग्रहण का फल—**आषाढ़ी पूर्णिमायां तु यदीन्दु ग्रहणं भवेत्। तदा वै सर्वशस्यानां संग्रहं कारयेद् बुधः॥** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बुध गुरु का उदय अच्छी वर्षाकारक है। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ.प्र., म.प्र., बिहार में वायु के साथ वर्षा होगी। आसाम, बंगाल, उड़ीसा, महाराष्ट्र में अच्छी वर्षा के योग हैं। **शकुन विचार**—आषाढ़ शुक्ल ५ को यदि पश्चिम की हवा चले तथा बादल वर्षा के बाद इन्द्रधनुष बने तो धान्य संग्रह करने वाले को आगे अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ६ से २० जुलाई सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २९ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१५	१	शु	४२	१७	२२	२५	पू.षा	११	४५	१०	१२
१६	२	श	४७	४०	२४	३५	उ.षा	१८	१५	१२	४९
१७	३	र	५३	३२	२६	५६	श्र	२५	२५	१५	४१
१८	४	चं	५९	३७	२९	२३	ध	३२	५२	१८	४१
१९	५	मं	६०	००	-	-	श	४०	२२	२१	४१
२०	५	बु	५	३२	७	४६	पू.भा	४७	२५	२४	३१
२१	६	गु	१०	५२	९	५४	उ.भा	५३	४०	२७	०१
२२	७	शु	१५	१०	११	३७	रे	५८	३७	२९	००
२३	८	श	१८	००	१२	४६	अ	६०	००	-	-
२४	९	र	१९	०७	१३	१३	अ	१	५५	६	२०
२५	१०	चं	१८	२०	१२	५५	भ	३	२२	६	५६
२६	११	मं	१५	३५	११	५०	कृ	२	५७	६	४७
२७	१२	बु	११	०२	१०	०१	रो	० / ५६	४२ / ५०	५ / २८	५३ / २०
२८	१३	गु	४	५५	७	३५	आ	५१	३५	२६	१५
०	१४	गु	५७	३०	२८	३७	०	०	०	०	०
२९	३०	शु	४९	०७	२५	१६	पुन	४५	२०	२३	४५

रा.मि.	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि
१५	ऐं	१०	१७	९	३७	बा	९	५५	९	२८	३४	३७	५	३०	१९	२१
१६	वै	११	५२	१०	१६	तै	१४	५२	११	२८	३४	३६	५	३१	१९	२१
१७	वि	१४	००	११	०७	व	२०	३५	१३	४५	३४	३४	५	३१	१९	२१
१८	प्री	१६	२२	१२	०५	ब	२६	३५	१६	१०	३४	३३	५	३२	१९	२१
१९	आ	१८	५२	१३	०५	कौ	३२	४०	१८	३६	३४	३१	५	३२	१९	२०
२०	सौ	२१	०७	१४	००	तै	५	३२	७	४६	३४	२९	५	३३	१९	२०
२१	शो	२२	५२	१४	४२	व	१०	५२	९	५४	३४	२७	५	३३	१९	२०
२२	अ	२३	४७	१५	०४	ब	१५	१०	११	३७	३४	२५	५	३३	१९	२०
२३	सु	२३	२७	१४	५७	कौ	१८	००	१२	४६	३४	२३	५	३४	१९	१९
२४	धृ	२१	५०	१४	१८	ग	१९	०७	१३	१३	३४	२१	५	३४	१९	१९
२५	शू	१८	३७	१३	०२	वि	१८	२०	१२	५५	३४	१९	५	३५	१९	१९
२६	गं	१३	५२	११	०९	बा	१५	३५	११	५०	३४	१७	५	३६	१९	१८
२७	वृ	७	४०	८	४०	तै	११	०२	१०	०१	३४	१४	५	३६	१९	१८
२८	ध्रु	० / ५१	०७ / ३०	५ / २६	४० / १३	व	४	५५	७	३५	३४	१२	५	३७	१९	१७
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	ह	४२	०२	२२	२६	च	२३	२५	१४	५९	३४	१०	५	३७	१९	१७

रा.मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
१५	२३	१४	6	म. १६।५०	२	२०	०७	४३	१० / ११	१९	३४	६	३०	मिथुन में बुध प्रवेश ११।३३
१६	२४	१५	7	मकर	२	२१	०४	५४	११	२०	३६	७	२३	अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल में), वैधृति पुण्यं
१७	२५	१६	8	कं. २१।१०	२	२२	०२	०५	१२	२१	१७	८	१७	भद्रा १३।४५ से २६।५६ तक, **पंचक प्रारम्भ** २१।१० से
१८	२६	१७	9	कुंभ	२	२२	५९	१७	१२	२१	५९	९	१०	रोहिणी में शुक्र प्रवेश ११।३५, **कृष्ण चतुर्थी व्रत,** श्रावण सोमवार व्रत
१९	२७	१८	10	कुंभ	२	२३	५६	२९	१२	२२	४०	१०	०४	नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थल में), मंगला गौरी पूजन
२०	२८	१९	11	मी. १७।५०	२	२४	५३	४१	१२	२३	२२	१०	५७	पंचमी वृद्धि
२१	२९	२०	12	मीन	२	२५	५०	५३	१३	२४	०३	११	४९	भद्रा ९।५४ से २२।५० तक
२२	३०	२१	13	मे. २१।००	२	२६	४८	०६	१४	२४	४५	१२	३४	आर्द्रा में बुध प्रवेश १५।०२, **कालाष्टमी,** मस्त्यर दिवस (काश्मीर), A
२३	३१	२२	14	मेष	२	२७	४५	२०	१४	१	२६	१३	२८	केर पूजा (त्रिपुरा में)
२४	३२	२३	15	मेष	२	२८	४२	३४	१४	२	०८	१४	२२	भद्रा १३।१३ से, आर्द्रा १ में गुरु प्रवेश १६।०८, रोहिणी ३ में शनि B
२५	श्रा.१	२४	16	वृ. १२।५८	२	२९	३९	४८	१६	२	४९	१५	१६	भद्रा १२।५५ तक, कर्क में सूर्य प्रवेश १३।५८, **संक्रांति मु. ३०,** मनसा C
२६	२	२५	17	वृष	३	००	३७	०४	१६	३	३१	१६	१०	**कामदा एकादशी व्रत (सबका),** मंगला गौरी पूजन
२७	३	२६	18	मि. १७।११	३	०१	३४	२०	१६	४	१३	१७	०४	प्रदोष व्रत
२८	४	२७	19	मिथुन	३	०२	३१	३६	१७	४	५५	१७	५८	भद्रा ७।३५ से १८।०९ तक, पुष्य में सूर्य प्रवेश २५।४७, मार्गी मंगल २७।३९, D
०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षयः
२९	५	२८	20	क. १८।२५	३	०३	२८	५३	१८	५	३७	१८	४२	देवपितृकार्याऽमावस्या, **हरियाली अमावस्या,** सरस माधुरी जयंती, E

A पंचक समाप्त २१।०० **B** प्रवेश ८।१५, गुरु हरकिशन ज. (प्रा. मत से) **C** पूजा प्रारंभ (बंगाल में), श्रावण सोमवार व्रत, **सौर श्रावण मासारम्भ** **D** वक्री धनिष्ठा २ मकर में हर्शल प्रवेश २७।१०, मासशिवरात्रि व्रत **E** चितलगी अमावस (उड़ीसा)

श्रावण कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	०	७	२	२	१	१	२	८	१०	९	७
२७	०	२१	७	६	१५	१६	११	११	०	१३	१९
४५	१५	२९	२३	२०	१३	३२	३२	३२	११	५६	५
२०	२६	६	५२	५१	४२	४८	२९	२९	४०	५३	२
५७	७५७	४	७७	१३	६६	६	३	३	१	१	१
१४	३५	३६	११	१७	३४	२८	११	११	५५	३३	९
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
पुन. ३	अश्वि. १	ज्ये. २	आर्द्रा १	मृग. ४	रोहि. २	रोहि. २	आर्द्रा २	मूल ४	धनि. ३	श्रवण २	ज्ये. १

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

४ | २शु.श. | ३ | १चं. | ५ | गु.सू. बु.रा. | १२ | ६ | ९के. | ७ | ११ह. | ८मं.प्लू. | १०ने.
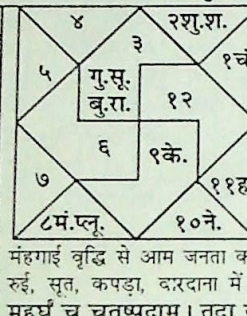
इस पक्ष में मिथुन राशि में अधिकतर समय चार ग्रहों का योग बना रहेगा। अतः यहां विश्व शांति के लिये किये गये उपाय निरर्थक साबित होंगे। प्राचीन आचार्यों ने चार ग्रहों के योग का फल इस प्रकार लिखा है। **एक राशौ यदा यान्ति चत्वार पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥** विश्व के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, वैर-विरोध, हिंसक आन्दोलन तथा अराजकता से प्रजा में भय व्याप्त होगा। भारत में भी कहीं अनावृष्टि से तो कहीं अतिवृष्टि से प्रजा को कष्ट होगा। भ्रष्टाचार व मंहगाई वृद्धि से आम जनता का जीना दुर्भर होगा। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में मिथुन का बुध आने से सोना, चांदी, रुई, सूत, कपड़ा, दरदाना में मंदी तथा सरसों, तिल, तेल में घटाबढ़ी से तेजी होगी। यथा—**बुधौ मिथुन राशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम्। तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत॥** चौपाये पशुओं में तेजी होगी। कर्क संक्रांति सोमवार की ३० मुहूर्त्तों की होने से अनाज, बाजरा, मूंग, मोंठ, जौ, गेहूं में मंदी होगी। धातु पदार्थों के भाव स्थिर रहेंगे। पक्षान्त में मंगल मार्गी होने से ओछी घटाबढ़ी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**—दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उ.प्र., राजस्थान, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में वायु के साथ वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर अतिवृष्टि होने से बाढ़ की स्थिति व्यापेगी। पर्वतीय भागों में भूस्खलन तथा दक्षिणी राज्यों में मानसून अधिक सक्रिय रहेगा। **शकुन विचार**—श्रावण बदी पंचमी को यदि बादलों की घटाटोप रहे और वर्षा नहीं होवे तो सभी प्रकार अन्न तेज हों तथा वर्षा हो जाये तो अनाज मंदी तथा सुभिक्ष होता है। कृष्ण एकादशी को कृत्तिका नक्षत्र का सम्पर्क होना मध्यम संवत् दर्शाता है।

५ | चं.बु.गु.रा. | ३ | २शु. श. | ६ | ४सू. | १ | ७ | १०ह. ने. | ८मं. प्लू. | १२ | ९के. | ११

ता. २० जुलाई ❖ श्रावण कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट
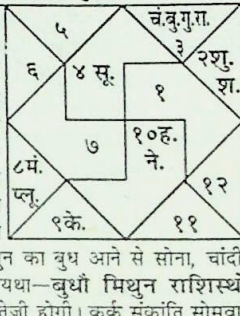
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	२	७	२	२	१	१	२	८	९	९	७
३	२१	२१	१६	७	२१	१७	११	११	२९	१३	१८
२८	५९	१४	९	३९	५५	१०	१३	१३	५९	४७	५८
५३	४०	५	४६	५८	१३	४९	२४	२४	४८	२६	२७
५७	८१५	०	१०१	१३	६७	६	३	३	२	१	१
१८	१९	२८	२९	३	२५	९	११	११	४	३६	०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
पुष्य १	पुन. १	ज्ये. २	आर्द्रा ३	आर्द्रा १	रोहि. ४	रोहि. ३	आर्द्रा २	मूल ४	धनि. २	श्रवण २	ज्ये. १

श्रावण शुक्ल पक्ष-९ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २१ जुलाई से ४ अगस्त सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ३० आषाढ़ से १३ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
३०	१	श	४०	१०	२१	४२	पु	३८	२७	२१	०१	व	३२	०२	१८	२७	किं	१४	४०	११	३०	३४	७	५	३८	१९	१७	६	२९	21	कर्क	३	०४	२६	११	५८	६	३०	१९	३६	मृगशिर में शुक्र प्रवेश ११।४०, नक्त व्रत प्रारम्भ, अश्वत्थ मारुती पूजन
३१	२	र	३१	०५	१८	०४	श्ले	३१	२७	१८	१३	सि	२१	५२	१४	२३	बा	५	३७	७	५३	३४	४	५	३८	१९	१६	७	३०	22	सिं. १८।१३	३	०५	२३	२९	१९	७	२३	२०	४१	पुनर्वसु में बुध प्र. १०।४४, सायन सिंह में सूर्य प्रवेश २३।५८, चन्द्रदर्शन A
श्रा.	३	चं	२२	१२	१४	३२	म	२४	४२	१५	३२	व्य	११	५०	१०	२३	ग	२२	१२	१४	३२	३४	२	५	३९	१९	१६	८	ज.अ	23	सिंह	३	०६	२०	४८	१८	८	१६	२१	३२	भद्रा २४।५१ से, मधुश्रवा तीज, हरि तृतीया, सुवर्ण गौरी व्रत, हरियाली तीज, B
२	४	मं	१४	००	११	१५	पू.फा	१८	३७	१३	०६	व	२/५३	१०/३०	६/२०	३४/०३	वि	१४	००	११	१५	३३	५९	५	३९	१९	१५	९	२	24	कं. १८।३३	३	०७	१८	०६	२०	९	०९	२२	२२	भद्रा ११।१५ तक, विनायक ४ व्रत, वरद चतुर्थी, श्रवण तप (जैन), मंगला C
३	५	बु	६	४७	८	२३	उ.फा	१३	३२	११	०५	शि	४५	४५	२३	५८	बा	६	४७	८	२३	३३	५६	५	४०	१९	१४	१०	३	25	कन्या	३	०८	१५	२६	२०	१०	०२	२३	१२	बुध पूर्व में अस्त ७।३१, नाग पंचमी देशाचारे, तक्षक भित्ति चित्रित नाग पू. D
४	६	गु	०	५५	६	०२	ह	९	५०	९	३६	सि	३९	१२	२१	२१	तै	०	५५	६	०२	३३	५३	५	४०	१९	१४	११	४	26	तु. २१।०५	३	०९	१२	४६	२०	१०	५५	२४	०२	भद्रा २८।१७ से, वर्ण श्रृयाल षष्ठी, गो. तुलसीदास जयंती, शीतला E
०	७	गु	५६	३२	२८	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षयः A मु. ३०, साम्यर्घ, सिंधारा E सप्तमी पूजन (सिन्ध में)
५	८	शु	५३	५०	२७	१३	चि	७	३७	८	४४	सा	३३	५७	१९	१६	वि	२४	५७	१५	४०	३३	५१	५	४१	१९	१३	१२	५	27	तुला	३	१०	१०	०६	२०	११	४४	२४	५२	भद्रा १५।४० तक, कर्क में बुध प्रवेश १६।०८, मिथुन में शुक्र प्रवेश ९।०७, F
६	९	श	५२	४७	२६	४९	स्वा	७	०७	८	३३	शुभ	३०	०७	१७	४५	बा	२३	०५	१४	५६	३३	४८	५	४२	१९	१३	१३	६	28	वृ. २६।५१	३	११	०७	२६	२१	१२	४१	१	३२	अश्वत्थ मारुती पूजन H दधि त्याग व्रत प्रारंभ K (प्रदोषे), वरद् लक्ष्मी व्रत
७	१०	र	५३	२७	२७	०५	वि	८	२०	९	०२	शु	२७	४०	१६	४६	तै	२२	५७	१४	५३	३३	४५	५	४२	१९	१२	१४	७	29	वृश्चिक	३	१२	०४	४७	२२	१३	३४	२	१२	पुष्य में बुध प्रवेश ७।२६, रवि दशमी J तिलक पुण्य दिवस, वैधृति पुण्यं
८	११	चं	५५	३५	२७	५७	अनु	११	०५	१०	०९	ब्र	२६	२२	१६	१६	व	२४	२०	१५	२७	३३	४२	५	४३	१९	११	१५	८	30	वृश्चिक	३	१३	०२	०९	२२	१४	२७	२	५२	भद्रा १५।२७ से २७।५७ तक, आर्द्रा २ में गुरु प्रवेश २८।०२, पुत्रदा एका. G
९	१२	मं	५९	००	२९	१९	ज्ये	१५	१५	११	४९	ऐं	२६	१०	१६	११	ब	२७	१०	१६	३५	३३	३८	५	४३	१९	११	१६	९	31	ध. ११।४९	३	१३	५९	३१	२२	१५	२०	२	३२	पुत्रदा एका. व्रत (निम्बार्क), मंगला गौरी पूजन, श्री विष्णु पवित्रा रोपण, H
१०	१३	बु	६०	००			मू	२०	३२	१३	५७	वै	२६	५०	१६	२८	कौ	३१	०५	१८	१०	३३	३५	५	४४	१९	१०	१७	१०	A1	धनु	३	१४	५६	५३	२४	१६	१३	४	०७	आर्द्रा में शुक्र प्र. २९।०९, प्रदोष व्रत, अगस्त मा. ८ ता. ३१, श्री लोकमान्य J
११	१३	गु	३	२२	७	०५	पू.षा	२६	४५	१६	२६	वि	२८	१५	१७	०२	तै	३	२२	७	०५	३३	३२	५	४४	१९	०९	१८	११	2	म. २३।०६	३	१५	५४	१७	२४	१७	१०	४	४१	अश्लेषा में सूर्य प्रवेश २४।३७, त्रयोदशी वृद्धि,
१२	१४	शु	८	३२	९	१०	उ.षा	३३	३५	१९	११	प्री	३०	०७	१७	४४	व	८	३२	९	१०	३३	२९	५	४५	१९	०८	१९	१२	3	मकर	३	१६	५१	४१	२५	१८	०३	५	१६	भद्रा ९।१० से २२।१८ तक, सत्यव्रत, जीवंतिका पू., झूलन यात्रा समापन K
१३	१५	श	१४	१५	११	२७	श्र	४०	५२	२२	०६	आ	३२	२२	१८	४२	ब	१४	१५	११	२७	३३	२५	५	४५	१९	०८	२०	१३	4	मकर	३	१७	४९	०६	२५	१८	५६	५	५१	अश्ले. में बुध प्र. १६।५८, रक्षाबन्धन, पूर्णिमा पुण्यं, ऋग्वेदी यजुर्वेदी L

B श्रावण सोमवार व्रत, ग. श्रावण मासारम्भ, श्री लोकमान्य तिलक ज., जमादि-उल-अव्वल मु. मास ५ प्रा., व्यतिपात पुण्य C गौरी पूजन, अंगारक चतुर्थी D अमरनाथ यात्रा प्रारम्भ, कल्की जयंती F श्री दुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी व नयना देवी (हि.प्र.), जीवंतिका पूजन G व्रत (स्मार्त वैष्णव), श्रावण सोमवार व्रत, झूलन यात्रारंभ (पूर्वान्ह व प्रदोष) L (शुक्ल कृष्ण) श्रावणी उपाकर्म, नारेली पूर्णिमा, बलभद्र पूजा (उड़ीसा), श्री गायत्री ज., अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), झूलन यात्रा समापन (पूर्वान्ह), अश्वत्थ मारुती पूजन, संस्कृत दिवस

श्रावण शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	७	२	२	१	१	२	८	९	९	७
१०	८	२१	२९	९	२९	१७	१०	१०	२९	१३	१८
१०	४९	३५	६	१०	४९	५२	५१	५१	४४	३६	५१
६	२	१	३५	१७	४२	३२	९	९	५०	६	५८
५७	८३	६	[illegible]	१२	६८	५	३	३	२	१	०
२०	२१	१८	२	४२	१५	४२	११	११	१३	३७	५०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

५ | ३बु.गु.रा. | ६ | ४ सू. | २शु. श. | १ | ७ चं. | १० ह.ने. | ८मं. प्लू. | १२ | ९के. | ११

इस पक्ष में बुध एवं गुरु दोनों ग्रह अतिचारी गति से विचरण कर रहे हैं जिससे कहीं दुर्भिक्ष भय की स्थिति व्यापेगी। उत्तर पश्चिम देशों व प्रान्तों में राजनैतिक संकट उभर कर सामने आयेगा। शुभ ग्रहों के अतिचारी होने का फल—यदा **शुभ ग्रहा कश्चिदतिचारं करोति च। तदा नृपा क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्॥** श्रावण शुक्ल में सप्तमी तिथि का क्षय आगे कार्तिक मास में कहीं किसी विशिष्ट राजनैयिक का पद रिक्त हो। यहां मंगल शनि का सम सप्तम योग भी चालू है। जिससे विश्व के अनेक भागों में उत्पात, भय से प्रजा को कष्ट होगा। अफगानिस्तान, चीन, रूस, पाकिस्तान, श्रीलंका में बम विस्फोट, रेलयान दुर्घटना, प्रकृति प्रकोप से हानि होगी। कहीं साम्प्रदायिक दंगे बढ़ने से रक्तपात व शासकों के लिए चिन्ता का कारण बनेंगे। **तेजी मन्दी विचार**— पक्षारम्भ में गेहूं, जौ, चना, ज्वार, मक्का में मन्दी तथा गुड़, खांड, शक्कर में तेजी हो। ता. २५ जुलाई को बुध का अस्त होने से तेल, तिल, लाल मिर्च, चना आदि में तेजी व रुई में घटाबढ़ी होगी। पश्चान्त में चावल, रुई, चांदी, सफेद कपड़ा में भी तेजी की चाल निकलेगी। तेजी का लाभ बाजार रुख देखकर उठाना लाभप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में आसाम, बंगाल, महाराष्ट्र, उ.प्र., म.प्र. में श्रेष्ठ वर्षा तथा राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, गुजरात में वायुवेग या खण्डवृष्टि होगी। सूर्य से पीछे शुक्र पश्चिमी राज्यों में बाधक बनने से खण्डवृष्टि होगी। **शकुन विचार**— श्रावण शुक्ल ५ व ६ को लगातार दक्षिण पश्चिम की हवा चलते हुए वर्षा होती रहे तो धान्यादि संग्रह करने वालों को आगे लाभ होगा। श्रावणी पूर्णिमा को चन्द्रमा बादलों में उदय हो तो आगे वर्षा श्रेष्ठ और सुभिक्ष का संचार हो।
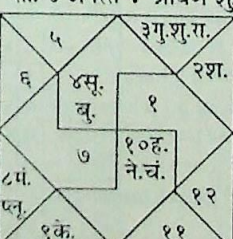
ता. ४ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

५ | ३गु.शु.रा. | ६ | ४सू. बु. | २श. | १ | ७ | १०ह. ने.चं. | ८मं. प्लू. | १२ | ९के. | ११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	७	३	२	२	१	२	८	९	९	७
१७	१५	२२	१५	१०	८	१८	१०	१०	२९	१३	१८
४९	६	४७	४०	५०	५८	३६	२५	२५	२६	२३	४६
६	३९	५	४१	२०	५९	१५	४२	४२	३९	४	२
५७	७२	१२	[illegible]	१२	६९	५	३	३	२	१	०
२५	१८	२१	५४	१४	१०	९	११	११	२०	३८	३६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१० श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ५ से १९ अगस्त सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	ग.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	चन्द्रास्त घं	चन्द्रास्त मि	संदर्भ
१४	१	र	२०	१५	१३	५२	ध	४८	२०	२५	०६	सौ	३४	४७	१९	४१	कौ	२०	१५	१३	५२	३३	२२	५	४६	१९	०७	२१	१४	5	कुं. ११।३६	३	१८	४६	३१	२७	१९	०५	६	४६	वक्री श्रवण १ में नेप. २६।०७, अशून्य शयन २ व्रत, पंचक प्रा. ११।३६ से
१५	२	चं	२६	१७	१६	१८	श	५५	४७	२८	०६	शो	३७	१२	२०	४०	ग	२६	१७	१६	१८	३३	१९	५	४७	१९	०६	२२	१५	6	कुंभ	३	१९	४३	५८	२८	२०	५८	७	४०	भद्रा २९।३१ से A बहुला ४ व्रत
१६	३	मं	३२	१५	१८	४१	पू.भा	६०	००	-	-	अ	३९	३०	२१	३५	वि	३२	१५	१८	४१	३३	१५	५	४७	१९	०५	२३	१६	7	मी. २४।१७	३	२०	४१	२६	२९	२१	१०	८	३५	भद्रा १८।४१ तक, सातूड़ी तीज, कृष्ण चतुर्थी व्रत, कजली तृतीया व्रत, A
१७	४	बु	३७	४५	२०	५४	पू.भा	२	५७	६	५९	सु	४१	२५	२२	२२	ब	५	०२	७	४९	३३	१२	५	४८	१९	०५	२४	१७	8	मीन	३	२१	३८	५५	३१	२१	५३	९	२९	
१८	५	गु	४२	३०	२२	४८	उ.भा	९	३७	९	३९	धृ	४२	४५	२२	५४	कौ	१०	१५	९	५४	३३	८	५	४८	१९	०४	२५	१८	9	मीन	३	२२	३६	२६	३१	२२	३६	१०	२४	रक्षा पंचमी (उड़ीसा), श्री माधव देव तिथि (आसाम)
१९	६	शु	४६	१०	२४	१७	रे	१५	२०	११	५७	शू	४३	१५	२३	०७	ग	१४	२७	११	३६	३३	५	५	४९	१९	०३	२६	१९	10	मे. ११।५७	३	२३	३३	५७	३३	२३	१८	११	१८	भद्रा २४।१७ से, चन्द्र षष्ठी व्रत, हल षष्ठी, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत, B
२०	७	श	४८	२७	२५	१२	अ	१९	५५	१३	४७	गं	४२	४२	२२	५४	वि	१७	३०	१२	४९	३३	१	५	४९	१९	०२	२७	२०	11	मेष	३	२४	३१	३०	३४	२४	०१	१२	१३	भद्रा १२।४९ तक, मघा सिंह में बुध प्रवेश ६।२६, अश्वत्थ मारुति पूजन, C
२१	८	र	४९	०२	२५	२७	भ	२२	५७	१५	१	वृ	४०	४७	२२	०९	बा	१८	५७	१३	२५	३२	५८	५	५०	१९	०१	२८	२१	12	वृ. २१।१३	३	२५	२९	०४	३६	२४	४४	१३	०८	आर्द्रा १ में राहु मूल ३ में केतु प्रवेश ७।३३, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत D
२२	९	चं	४७	४७	२४	५७	कृ	२४	१५	१५	३२	ध्रु	३७	३०	२०	५०	तै	१८	४०	१३	१८	३२	५४	५	५०	१९	००	२९	२२	13	वृष	३	२६	२६	४०	३७	१	२९	१४	०३	पुनर्वसु में शुक्र प्रवेश १७।२३, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), गोगा नवमी
२३	१०	मं	४४	३७	२३	४२	रो	२३	४०	१५	१९	व्या	३२	३७	१८	५४	व	१६	२७	१२	२६	३२	५०	५	५१	१८	५९	३०	२३	14	मि. २६।१५	३	२७	२४	१७	३९	२	१३	१४	५८	भद्रा १२।२६ से २३।४२ तक
२४	११	बु	३९	३७	२१	४३	मृ	२१	१२	१४	२१	ह	२६	१५	१६	२२	ब	१२	२०	१०	४८	३२	४७	५	५२	१८	५८	३१	२४	15	मिथुन	३	२८	२१	५६	४०	२	५७	१५	४३	अजा एका. व्रत सबका, जैन पर्युषण पर्वारंभ (चतुर्थी पक्ष), भारतीय E
२५	१२	गु	३३	००	१९	०४	आ	१७	०२	१२	४१	व	१८	३२	१३	१७	कौ	६	३०	८	२८	३२	४३	५	५२	१८	५७	भा	२५	16	क. २९।०३	३	२९	१९	३६	४२	३	४९	१६	३८	मघा सिंह में सूर्य प्रवेश २२।१८, संक्रांति मु. ४५, आर्द्रा ३ में गुरु प्र. F
२६	१३	शु	२४	५७	१५	५२	पुन	११	२२	१०	२६	सि	९ / ५८	३२ / ३०	९ / २९	[illegible]	व	२४	५७	१५	५२	३२	३९	५	५३	१८	५६	२	२६	17	कर्क	४	००	१७	१८	४३	४	२५	१७	३३	भद्रा १५।४२ से २६।०७ तक, जीवंतिका पूजन, कैलाश यात्रा २ दिन, मास G
२७	१४	श	१६	००	१२	१७	पु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	४९	०७	२५	३२	श	१६	००	१२	१७	३२	३५	५	५३	१८	५५	३	२७	18	सिं. २८।०६	४	०१	१५	०१	४५	५	१९	१८	२८	पू.फा. में बुध प्र. ८।२१, पितृकार्याऽमावस्या, पिठौरी अमावस्या, अश्वत्थ H
२८	३०	र	६	२२	८	२७	म	४९	३०	२५	४२	प	३८	२०	२१	१४	ना	६	२२	८	२७	३२	३१	५	५४	१८	५४	४	२८	19	सिंह	४	०२	१२	४६	४५	५	५३	१९	२८	बुध पश्चिम में उदय १४।३१, देवकार्याऽमावस्या, कुशोत्पाटनी अमा. J

मनसा पूजा B पंचक समाप्त ११।५७, जीवंतिका पूजन C द्रोण मेला दनकौर (उ.प्र.) D (सबका), संत ज्ञानेश्वर जयंती, कालाष्टमी E स्वतन्त्रता दिवस F २०।५०, प्रदोष व्रत, जैन पर्युषण, पर्वारम्भ (पंचमी पक्ष), सौर भाद्रपद मासारंभ, मनसा पूजा समाप्त (बंगाल), वत्स द्वादशी, बीध बारस G शिवरात्रि व्रत, व्यतिपात पुण्यं, अघोरा चौंदस व्रत H मारुती पूजन, अग्रजवंशे कल्पसूत्र पाठ जैन, वृषभोत्सव J (ॐ हूँ फट् स्वाहा मंत्र से कुशोत्पाटन) मन्वादि, सती पूजन, मेला सुथरेशाह दिल्ली, नक्त व्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव (जैन)

भाद्रपद कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	७	४	२	२	१	२	८	९	९	७
२५	२१	२४	१	१२	१८	१९	१०	१०	२९	१३	१८
२९	३५	४४	५२	२६	१५	१५	०	०	७	१०	४२
४	३१	४६	४७	२४	१७	१८	१६	१६	४४	११	२
५७	[illegible]	१७	११५	११	७०	४	३	३	२	१	०
३६	५२	३७	५९	४१	०	३२	११	११	२३	३५	२१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
आश्ले. ३	भरणी ३	चि. ३	मघा १	आर्द्रा १	आर्द्रा ४	मृगशि. ३	आर्द्रा १	मूल ४	धनि. १	श्रव. १	चि. १

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ता. १२ अगस्त कुण्डली: ५बु. | ३गु.शु.रा. | २श. | ६ | ४ सू. | १चं. | ७ | १० ह.ने. | ८मं. प्लू. | १२ | ९के. | ११

इस पक्ष के प्रारम्भ में ५ व ६ अगस्त को गुरु-शुक्र का अंश साम्य योग होगा। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने अच्छा नहीं बताया है। यथा—**गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥** विश्व के बड़े राष्ट्रों में तालमेल का अभाव युद्धादि को बढ़ावा देगा। भारत में भी यत्र तत्र अशुभ फलों का वर्चस्व दिखाई देगा। कहीं अतिवृष्टि से तो कहीं अनावृष्टि से कृषि में हानि होगी। पश्चिमी राष्ट्र पाकिस्तान, अफगानिस्तान, वियतनाम, ताईवान में हिंसा काण्ड, भूकम्प, यान दुर्घटना, युद्धादि, साम्प्रदायिक उपद्रव होंगे। कहीं सीमा प्रान्तों पर शत्रु देश की गतिविधि से अशान्ति का वातावरण बनेगा। पक्षान्त में बुध का उदय कहीं बाढ़, प्राकृतिक प्रकोप व तूफान से हानि का संकेत देता है। यथा—**नोत्पातः परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्॥** जन जीवनोपयोगी खाद्य पदार्थों में तेजी होने से आम जनता का जीना दूभर होगा। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में गुड़, खांड, तिल, तेल, सरसों, मूंग, उड़द, मूंगफली में तेजी होगी। जिसे ११ अगस्त को सिंह राशि में प्रवेश करने वाला बुध यथावत् बनाये रखेगा। पक्षान्त में सिंह संक्रांति ४५ मुहूर्ती गुरुवार को होने से धान्यादि में मंदी का झटका प्रदान करेगा। यहां गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल में तेजी बनी रहेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष के पक्षारंभ में दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, उ.प्र., म.प्र., गुजरात, आसाम, बिहार के अनेक भागों में अच्छी वर्षा के योग हैं। कुछ स्थानों पर बाढ़ की स्थिति बनने से संचार व यातायात सुविधाएं बाधित होंगी। **शकुन विचार**—भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा व द्वितीया को चन्द्रमा बादलों की ओट में छिपा रहे तो सुभिक्ष का संचार तथा धन-धान्य की बढ़ोत्तरी होती है। यथा—**भादव वदी दोयज दिनां जो ना दिखे चन्द। धान्य समृद्धि पशु बढ़ें, प्रजा में हो आनन्द॥**

ता. १९ अगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. १९ अगस्त कुण्डली: ६ | ४ | शु. ३गु. रा. | ७ | ५सू. चं.बु. | २श. | ११ | ८मं.प्लू. | ९के. | १ | १०ह.ने. | १२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	७	४	२	२	१	२	८	९	९	७
२	०	२७	१४	१३	२६	१९	९	९	२८	१२	१८
१२	२७	०	५४	४६	२७	०५	३८	३८	५०	५९	४०
४६	२०	३६	३९	३८	१९	१४	१	१	५८	१८	११
५७	[illegible]	२१	[illegible]	११	७०	३	३	३	२	१	०
४५	१	४२	५७	८	३९	५६	११	११	२३	३२	९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
मघा १	मघा १	चि. ४	पू.फा. १	आर्द्रा ३	पुन. २	मृगशि. ३	आर्द्रा १	मूल ३	धनि. २	श्रवण २	चि. १

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २० अगस्त से २ सितम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २९ श्रवण से ११ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	संदर्भ
०	१	र	५६	३७	२८	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा क्षय: A रुणीचा मेला रामदेव जैसलमेर (राज.)
२९	२	चं	४७	१२	२४	४७	पूफा	४२	०५	२२	४४	शि	२७	४२	१६	५९	बा	२१	५०	१४	३८	३२	२८	५	५४	१८	५३	५	२९	20	कं. २८।०२	४	०३	१०	३१	[illegible]	६	४७	२०	२४	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, नक्त व्रत उद्यापन, तेलाधर तप (जैन), A
३०	३	मं	३८	३२	२१	२०	उफा	३५	२२	२०	०४	सि	१७	३०	१२	५५	तै	१२	४५	११	०१	३२	२४	५	५५	१८	५२	६	ज३	21	कन्या	४	०४	०८	१७	४८	७	४१	२१	१७	कर्क में शुक्र प्रवेश २९।३९, जमादि उस्सानी मु. मास ६ प्रा., हरितालिका B
३१	४	बु	३१	०२	१८	२०	ह	२९	५०	१७	५१	सा	८	१२	९	१२	व	४	३७	७	४६	३२	२०	५	५५	१८	५१	७	२	22	तु. २८।५८	४	०५	०६	०५	५०	८	३५	२२	०९	भद्रा ७।४६ से १८।२० तक, रोहिणी ४ में शनि प्र. २६।४६, साम श्रावणी, C
भाद्र	५	गु	२५	०५	१५	५८	चि	२५	५०	१६	१६	शुभ	० ५३	०२ २०	० २१	०१ २०	बा	२५	०५	१५	५८	३२	१६	५	५६	१८	५०	८	३	23	तुला	४	०६	०३	५४	५०	९	२७	२३	०२	मार्गी प्लूटो २५।४५, सायन कन्या में सूर्य प्रवेश ६।५८, शरद् ऋतु प्रा., D
२	६	शु	२१	०२	१४	२१	स्वा	२३	४२	१५	२५	ब्र	४८	१२	२५	१३	तै	२१	०२	१४	२१	३२	१२	५	५६	१८	४९	९	४	24	तुला	४	०७	०१	४५	५२	१०	२३	२३	५५	पुष्य में शुक्र प्रवेश २५।१७, सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, मेला व्रज मण्डल
३	७	श	१८	५७	१३	३२	वि	२३	३२	१५	२२	ऐं	४४	४०	२३	४९	व	१८	५७	१३	३२	३२	८	५	५७	१८	४८	१०	५	25	वृ. ९।१८	४	०७	५९	३०	५४	११	१७	२४	१८	भद्रा १३।३२ से २५।२७ तक, उ.फा. में बुध प्रवेश २७।४६, मुक्ता भरण E
४	८	र	१९	००	१३	३३	अनु	२५	२७	१६	०८	वै	४२	४७	२३	०४	ब	१९	००	१३	३३	३२	४	५	५७	१८	४७	११	६	26	वृश्चिक	४	०८	५७	३१	५५	१२	११	१	२७	मूल धनु में मंगल प्रवेश २१।१२, श्री दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, F
५	९	चं	२०	५०	१४	१८	ज्ये	२९	०७	१७	३७	वि	४२	१५	२२	५२	कौ	२०	५०	१४	१८	३२	००	५	५८	१८	४६	१२	७	27	ध. १७।३७	४	०९	५५	२६	५६	१३	०५	२	०७	कन्या में बुध प्र. २९।५५, श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), G
६	१०	मं	२४	२२	१५	४३	मूल	३४	२२	१९	४३	प्री	४२	५५	२३	०८	ग	२४	२२	१५	४३	३१	५६	५	५८	१८	४५	१३	८	28	धनु	४	१०	५३	२२	५८	१३	५९	२	४६	भद्रा २८।३८ से, दशावतार १० व्रत, मेला रामदेव जैसलमेर व नवलगढ़ H
७	११	बु	२९	०७	१७	३८	पू.षा	४०	४२	२२	१६	आ	४४	२५	२३	४५	वि	२९	०७	१७	३८	३१	५२	५	५९	१८	४४	१४	९	29	म. २८।५८	४	११	५१	२०	५९	१४	४३	३	२६	भद्रा १७।३८ तक, पद्मा एका. व्रत (सब.), जल झूलनी मेला श्री चार J
८	१२	गु	३४	४७	१९	५४	उ.षा	४७	५०	२५	०७	सौ	४६	३२	२४	३६	ब	१	५२	६	४४	३१	४८	५	५९	१८	४३	१५	१०	30	मकर	४	१२	४९	१९	[illegible]	१५	३१	४	०६	पू.फा. में सूर्य प्रवेश १८।१२, श्री वामन ज., श्री भुवनेश्वरी ज., K
९	१३	शु	४०	५०	२२	२०	श्र	५५	१७	२८	०७	शो	४८	५२	२५	३३	कौ	७	४५	९	०६	३१	४४	६	००	१८	४१	१६	११	31	मकर	४	१३	४७	१९	१	१६	३१	४	४६	प्रदोष व्रत, गोत्रि रात्रि व्रतारंभ, थीरू ओणम दिवस (केरल)
१०	१४	श	४७	०२	२४	४९	ध	६०	००	-	-	अ	५१	२०	२६	३२	ग	१३	५५	११	३४	३१	४०	६	००	१८	४०	१७	१२	S1	कुं. १७।३८	४	१४	४५	२०	२	१७	२५	५	२६	भद्रा २४।४९ से, अनन्त १४ व्रत, मेला सोडल, जालन्धर, सितंबर मा. १ ता. L
११	१५	र	५३	०२	२७	१४	ध	२	४७	७	०८	सु	५३	३७	२७	२८	वि	२०	०२	१४	०२	३१	३६	६	०१	१८	३९	१८	१३	2	कुंभ	४	१५	४३	२२	४	१९	१९	६	०६	भद्रा १४।०२ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, गोत्रि रात्रि व्रत व भागवत सप्ताह M

B ३ व्रत, गौरी तृतीया व्रत, मन्वादि, वराह जयंती C वैनायकी, श्री गणेश चतुर्थी, पत्थर चौथ, कलंक ४, चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सवारंभ (महाराष्ट्र), जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) D ऋषि पंचमी व्रत, संवत्सरी जैन (पंचमी पक्ष), समावाणी पर्व, मेला पात ३ दिन का (का.), रा. भाद्रपद मासारम्भ E सप्तमी, सन्तान सप्तमी, अपराजिता सप्तमी F श्री दधीचि जयंती, महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ (अनुराधा नक्षत्र में ज्येष्ठा गौरी का आवाहन तथा १६ दिन का), वैधृति पुण्यं G ज्येष्ठा नक्षत्र में ज्येष्ठा गौरी पूजन, अदुःख नवमी व्रत, भागवत सप्ताह प्रा. H (राज.), मूल नक्षत्र में ज्येष्ठा गौरी विसर्जन J भुजानाथ गढ़बोर मेवाड़ (राज.), गेल ग्यारस (म.प्र.), अगस्त्य (तारा) उदय १४।५८ K हरिवासरा‌ऽभाव, मे. अम्बाला पटियाला, प्रथम ओणम दिन (केरल) L ३०, पंचक प्रा. १७।३८ से M समाप्त, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालयारंभ, सन्यासियों का चातुर्मास्य समाप्त

भाद्रपद शु. ८ रवि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २६ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	७	४	२	३	१	२	८	९	९	७
८	१०	२९	२६	१५	४	२०	९	९	२८	१२	१८
५७	५९	४२	४७	२	४२	१०	१५	१५	३४	४८	३९
३१	११	२९	४	४२	३९	५१	४६	४६	२२	५९	५८
५७	[illegible]	२५	१६	१०	७१	३	३	३	२	१	०
५५	४९	१५	२०	३०	१४	१७	११	११	२१	२८	५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

[दोनों कुण्डलियां प्रात:काल की हैं]

कुण्डली (२६ अगस्त): ६ । ४ शु. । गु. ३ रा. । ७ । ५ सू. बु. । २ श. । ८ चं. मं. प्लू. । ११ । ९ के. । १ । १० ह. ने. । १२

कुण्डली (२ सितं.): ६ बु. । ४ शु. । ३ गु. रा. । ७ । ५ सू. । २ श. । ८ प्लू. । ११ चं. । ९ मं. के. । १ । १० ह. ने. । १२

ता. २ सितं. ❖ भाद्रपद शु. १५ रवि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	८	५	२	३	१	२	८	९	९	७
१५	५	२	७	१६	१३	२०	८	८	२८	१२	१८
४३	५१	४९	३३	१४	३	३१	५३	५३	१८	३९	४१
२२	११	३४	२३	६	५८	५०	३०	३०	१६	२७	१४
५८	७१२	२८	८७	९	७१	२	३	३	२	१	०
४	१२	१६	०	४८	४७	३७	११	११	१४	१७	१९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

इस मास में पांच रविवार होने से विश्व में कहीं राजनैतिक अशांति या किसी विशिष्ट व्यक्ति विशेष का वियोग सहना पड़ेगा। कहीं सत्ता हस्तान्तरण के समाचार से तो कहीं प्रकृति प्रकोप या यान दुर्घटना के समाचारों से जनता स्तब्ध रहे। पांच रविवार का फल—**यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग: स्यात्तदास्ते च महद् भयम्॥** पाकिस्तान, चीन, जापान, बंगलादेश, ब्रह्मा, श्रीलंका, इण्डोनेशिया आदि देशों में अराजकता, उपद्रव तथा प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। कहीं रोग महामारी से भी प्रजा पीड़ित हो सकती है। पक्ष मध्य में मंगल धनु राशि में प्रवेश करने से मंगल शनि का प्रतियोग तो समाप्त हो जायेगा किन्तु षडाष्टक योग बनने से दक्षिणी गोलार्ध में बसे देशों में अशांति, बम विस्फोट आदि नेष्ट फलों की अधिकता रहेगी। **तेजी मन्दी विचार**—प्रतिपदा का क्षय तथा कर्क राशि पर शुक्र आने से रुई, चांदी में मंदी होकर तेजी तथा गुड़, खांड, शक्कर, घृत, तेल आदि में तेजी का झटका आये। पक्ष मध्य में कन्या का बुध आने से सोना, चांदी, ताम्बा, गेहूं, जौ, चना में भी तेजी की धारणा बनेगी। यहां तेजी का लाभ बाजार रुख देखकर उठाना लाभप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण**—पक्षारंभ में कर्क राशिगत शुक्र आसाम, बिहार, उड़ीसा, म.प्र., उ.प्र., पूर्वी राजस्थान में सामान्य से अच्छी वर्षा करेगा। कुछ स्थानों पर खण्ड वृष्टि का योग भी है। जिससे कृषि में हानि होगी। दक्षिणी पश्चिमी राज्यों में वायु प्रकोप होगा। **शकुन विचार**—भाद्रपद मास की पूर्णिमासी को चन्द्रमा बादलों की ओट में उदय हो तो धान्य का स्टाक शीघ्र निकाला देना अच्छा रहेगा। आगे निश्चय ही मंदा होगा। यदि आकाश साफ रहे तो अन्न का स्टाक करना लाभप्रद रहेगा।

आर्यभट्ट पंचांगम्

प्र. शुद्ध आश्विन कृष्ण पक्ष-१२

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ३ से १७ सितम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २६ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क.वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
१२	१	चं	५८	४७	२९	३२	श	१०	१०	१०	०५	धृ	५५	४२	२८	१८	बा	२६	००	१६	२५	३१	३१	६	०१	१८	३८	१९	१४	3	कुंभ	४	१६	४१	२६	६	१९	२१	६	५५	हस्त में बुध प्रवेश २२।१२, पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध
१३	२	मं	६०	००	-	-	पू.भा	१७	०७	१२	५३	शू	५७	२२	२८	५९	तै	३१	२७	१८	३७	३१	२७	६	०२	१८	३७	२०	१५	4	मी. ६।१२	४	१७	३९	३२	८	२०	०६	७	४४	आर्द्रा ४ में गुरु प्र. २१।३८, आश्लेषा में शुक्र प्रवेश २९।३८, अशून्य शयन A
१४	२	बु	४	००	७	३८	उ.भा	२३	३७	१५	२९	गं	५८	३७	२९	२९	ग	४	००	७	३८	३१	२३	६	०२	१८	३६	२१	१६	5	मीन	४	१८	३७	४०	१०	२०	५१	८	३३	भद्रा २०।३६ से, द्वितीया वृद्धि, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयंती, शिक्षक B
१५	३	गु	८	३७	९	३०	रे	२९	२५	१७	४९	वृ	५९	१२	२९	४४	वि	८	३७	९	३०	३१	१९	६	०३	१८	३४	२२	१७	6	मे. १७।४९	४	१९	३५	५०	११	२१	३७	९	२२	भद्रा ९।३० तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध, पंचक समाप्त १७।४९
१६	४	शु	९	५५	१०	०१	अ	३४	२२	१९	४८	धु	५९	०२	२९	४०	बा	९	५५	१०	०१	३१	१५	६	०३	१८	३३	२३	१८	7	मेष	४	२०	३४	०१	१४	२२	२३	१०	११	पंचमी श्राद्ध
१७	५	श	१५	०७	१२	०७	भ	३८	१५	२१	२२	व्या	५७	५७	२९	१५	तै	१५	०७	१२	०७	३१	११	६	०४	१८	३२	२४	१९	8	वृ. २७।४०	४	२१	३२	१५	१५	२३	०८	११	००	षष्ठी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, विश्व साक्षरता दिवस
१८	६	र	१६	४०	१२	४४	कृ	४०	५०	२२	२४	ह	५५	४७	२८	२३	व	१६	४०	१२	४४	३१	६	६	०४	१८	३१	२५	२०	9	वृष	४	२२	३०	३०	१८	२३	५३	११	४९	भद्रा १२।४४ से २४।४९ तक, सप्तमी श्राद्ध १२।४४ बाद
१९	७	चं	१६	४०	१२	४५	रो	४१	५५	२२	५१	व	५२	२०	२७	०१	ब	१६	४०	१२	४५	३१	२	६	०५	१८	३०	२६	२१	10	वृष	४	२३	२८	४८	२०	२४	३८	१२	३८	कालाष्टमी, अष्टमी श्राद्ध १२।४५ बाद, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त
२०	८	मं	१५	०५	१२	०७	मृ	४१	२०	२२	३७	सि	४७	३२	२५	०६	कौ	१५	०५	१२	०७	३०	५८	६	०५	१८	२९	२७	२२	11	मि. १०।४९	४	२४	२७	०८	२२	१	२५	१३	२७	जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, नवमी श्राद्ध, मातृ नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, भूदान ज.
२१	९	बु	११	४५	१०	४८	आ	३९	०२	२१	४३	व्य	४१	२०	२२	३८	ग	११	४५	१०	४८	३०	५४	६	०६	१८	२७	२८	२३	12	मिथुन	४	२५	२५	२९	२४	२	१३	१४	१६	भद्रा २१।५३ से, दशमी श्राद्ध, व्यतिपात पुण्यं
२२	१०	गु	६	४५	८	४८	पुन	३५	०७	२०	०९	व	३३	५०	१९	३८	वि	६	४५	८	४८	३०	५०	६	०६	१८	२६	२९	२४	13	क. १४।३६	४	२६	२३	५३	२६	३	००	१५	०५	भद्रा ८।४८ तक, उ.फा. में सूर्य प्रवेश १२।०७, चित्रा में बुध प्रवेश २९।१५, C
२३	११	शु	०	१०	६	११	पु	२९	४५	१८	०१	प	२५	०७	१६	१०	बा	०	१०	६	११	३०	४५	६	०७	१८	२५	३०	२५	14	कर्क	४	२७	२२	१९	२८	३	४४	१५	५४	इन्दिरा एकादशी व्रत (वैष्णव), द्वादशी श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध, त्रिस्पृशा D
०	१२	शु	५२	२०	२७	०३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी क्षय:
२४	१३	श	४३	३०	२३	३१	श्ले	२३	१७	१५	२६	शि	१५	३०	१२	१९	ग	१८	०२	१३	२०	३०	४१	६	०७	१८	२४	३१	२६	15	सिं. १५।२६	४	२८	२०	४७	३०	४	३४	१६	४३	भद्रा २३।३१ से, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, कलियुगादि तिथि, E
२५	१४	र	३४	०७	१९	४७	म	१६	०५	१२	३४	सि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	८	५०	९	४०	३०	३७	६	०८	१८	२३	आ.	२७	16	सिंह	४	२९	१९	१७	३२	५	२१	१७	३२	भद्रा ९।४० तक, कन्या में सूर्य प्र. २२।१२, संक्रांति मु. ३०, मघा सिंह F
२६	३०	चं.	२४	३७	१५	५९	पू.फा	८	३५	९	३४	शुभ	४३	५७	२३	४३	ना	२४	३७	१५	५९	३०	३३	६	०८	१८	२१	२	२८	17	कं. १४।५०	५	००	१७	४९	३४	६	०८	१८	२१	देवपितृकार्याऽमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध, सोमवती अमावस, G

A २ व्रत, द्वितीया श्राद्ध B दिवस, तृतीया श्राद्ध C एकादशी श्राद्ध, गुरु नानकदेव शहीद दिवस (प्राचीन मत से), इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मार्त) D माहद्वादशी व्रत E इन्जीनियर्स दिवस, मास शिवरात्रि व्रत F में शुक्र प्रवेश ६।४९, चतुर्दशी श्राद्ध, त्रिपाग्नि शस्त्रादि से मृतकों का श्राद्ध, सौर आश्विन मासारम्भ G पितृ विसर्जन, विश्वकर्मा पूजा

[दोनों कुण्डलियां प्रात:काल की हैं]

प्र. आश्विन कृ. ८ मंगल प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ सितं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	८	५	२	३	१	२	८	९	९	७
२४	२७	७	१९	१७	२३	२०	८	८	२७	१२	१८
२७	१	१७	४५	३८	५२	५१	२४	२४	५८	२८	४५
७	१८	१७	१५	९	५३	३९	५४	५४	५०	३७	१९
५८	८१४	३१	७३	८	७२	१	३	३	२	१	०
२२	१५	२९	३७	४५	२९	४९	११	११	३	६	३७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
४ पू.फा.	२ मृगं.	३ मूल	३ हस्त	४ आर्द्रा	३ आश्ले.	४ रोहिं.	१ आर्द्रा	३ मूल	२ धनि.	१ श्रव.	१ ज्ये.

कुण्डली (ता. ११ सितं.): ६बु. | ४ शु. | ७ | ५सू. | ३गु. रा. | २चं.श. | ८प्लू. | ११ | ९मं. के. | १ | १०ह.ने. | १२

इस मास में पांच सोमवार, पांच मंगलवार मिश्रित फलप्रद हैं। बड़े राष्ट्र अमेरिका, रूस, जापान, चीन, स्वार्थ परायण होते हुए भी पारस्परिक राजैतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध सुधारने की कोशिश करेंगे। शान्ति वार्ताओं का दौर चलेगा। किन्तु पक्ष मध्य में मंगल केतु की अंश युति अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के लिए प्रतिकूल है। प्रजा में कहीं सांसर्गिक रोग फैलेगा तो कहीं सैन्य संघर्ष से अशांति उत्पन्न होगी। मजदूर वर्ग अवांछनीय गतिविधि पैदा करेंगे। पश्चिमी मुस्लिम देशों में कहीं आन्तरिक कलह से वातावरण अशांत हो। ता. १४ सितम्बर को बुध चित्रा नक्षत्र पर आने से अल्प वर्षा तथा गणिका, कारीगर व द्विजाति को पीड़ा की वृद्धि होगी। यथा—**चित्रायां गणिका शिल्पि द्विज पीडाल्पवर्षणम्**। वर्षा की कमी से कृषि पैदावार में बाधा उत्पन्न होगी।

कुण्डली (ता. १७ सितं.): ७ | ५चं.शु. | ८प्लू. | ६सू. बु. | ४ | ३गु.रा. | ९मं.के. | १२ | १०ह. ने. | २श. | ११ | १

ता. १७ सितं. ❖ प्रथम आश्विन कृ. ३० चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	४	८	५	२	४	१	२	८	९	९	७
०	२४	१०	२६	१८	१	२१	८	८	२७	१२	१८
१७	४	३१	३८	२८	८	०	५	५	४६	२२	४९
४९	३६	३	४१	४५	५०	९	४९	४९	५७	२५	३०
५८	९११	३३	६१	७	७२	१	३	३	१	०	०
३४	१४	२२	३१	५८	५३	२	११	११	५३	५७	४९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
२ उ.फा.	४ पू.फा.	४ मूल	१ चित्रा	४ आर्द्रा	१ मघा	४ रोहिं.	१ आर्द्रा	३ मूल	२ धनि.	१ श्रव.	१ ज्ये.

तेजी मंदी विचार—इस पक्ष में तिति वृद्धि होकर तिथि क्षय होने से जीवनोपयोगी वस्तुओं में मंदी की चाल निकलेगी। यथा—**जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मंदी बिके, मंहगाई हट जाय॥** सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चावल, चना, उड़द, मूंग आदि में घटाबढ़ी से मन्दी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में अल्पवर्षा तथा बिहार, आसाम, कर्नाटक, उड़ीसा, गोवा आदि में बादल वर्षा या खण्डवृष्टि होगी। पक्षान्त में वायु प्रकोप अधिक बढ़ेगा। **शकुन विचार**—आश्विन कृष्ण प्रतिपदा, अष्टमी और दशमी को यदि आकाश में बादल हो तो शीघ्र ही वर्षा होवे। दशमी से लगातार दो दिन वर्षा और बादल गर्जना हो तो गेहूं का स्टाक करने वालों को आगे लाभ होगा।

प्र.आ. आश्विन शुक्ल पक्ष-13 श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १८ सितं. से २ अक्टू. सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २७ भाद्रपद से १० आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	न	नक्षत्र घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	यो	योग घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	क	करण घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	संदर्भ
२७	१	मं	१५	२७	१२	२०	उ.फा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शु	३३	४७	१९	४०	ब	१५	२७	१२	२०	३०	२८	६	०९	१८	२०	३	२९	18	कन्या	५	०१	१६	२३	[illegible]	६	५७	१९	१०	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रारम्भ
२८	२	बु	७	०७	९	००	चि	४९	१५	२५	५१	ब्र	२४	३०	१५	५७	कौ	७	०७	९	००	३०	२४	६	०९	१८	१९	४	रज	19	तु.१४।५२	५	०२	१४	५९	३८	७	४५	२०	०४	रज्जब मु. मास ७ प्रा., मोइनुद्दीन चिश्ती सजरीअलह (ख्वाजा) की मजार A
२९	३	गु	०	०२	६	११	स्वा	४५	२५	२४	२०	ऐं	१६	१७	१२	४१	ग	०	०२	६	११	३०	२०	६	१०	१८	१८	५	२	20	तुला	५	०३	१३	३६	३९	८	३३	२०	५७	भद्रा १७।०१ से २८।०२ तक, तुला में बुध प्रवेश १६।२६, विनायक ४ व्रत
०	४	गु	५४	४०	२८	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षय:
३०	५	शु	५१	१७	२६	४१	वि	४३	३०	२३	३४	वै	९	३७	१०	०१	ब	२२	४२	१५	१५	३०	१६	६	१०	१८	१७	६	३	21	वृ.१७।४१	५	०४	१२	१५	४२	९	२१	२१	५०	पू.षा. में मंगल प्रवेश २८।५८, वैधृति पुण्यं
३१	६	श	५०	००	२६	११	अनु	४३	४२	२३	४०	वि	४	३०	७	५९	कौ	२०	२०	१४	१९	३०	११	६	११	१८	१५	७	४	22	वृश्चिक	५	०५	१०	५७	४२	१०	०९	२२	४३	सायन तुला में सूर्य प्रवेश २८।३५
आ१	७	र	५०	५५	२६	३३	ज्ये	४६	०२	२४	३६	प्री	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	२०	१२	१४	१६	३०	७	६	११	१८	१४	८	५	23	ध.२४।३६	५	०६	०९	३९	४५	१०	५७	२३	३६	भद्रा २६।३३ से, रवि दक्षिण गोल में प्र., शरद् सम्पात्, राष्ट्रीय आश्विन B
२	८	चं	५३	४७	२७	४३	मू	५०	१५	२६	१८	सौ	५९	२०	२९	५६	वि	२२	०७	१५	०३	३०	३	६	१२	१८	१३	९	६	24	धनु	५	०७	०८	२४	४६	११	४५	२४	१९	भद्रा १५।०३ तक, दुर्गाष्टमी
३	९	मं	५८	१७	२९	३१	पू.षा	५६	०५	२८	३८	शो	६०	००			बा	२५	५२	१६	३३	२९	५९	६	१२	१८	१२	१०	७	25	धनु	५	०८	०७	१०	४८	१२	३३	१	२२	
४	१०	बु	६०	००			उ.षा	६०	००			शो	०	२०	६	२१	तै	३०	५७	१८	३६	२९	५४	६	१३	१८	११	११	८	26	म.११।१७	५	०९	०५	५८	५०	१३	२१	२	१५	हस्त में सूर्य प्रवेश २७।३३, पू.फा. में शुक्र प्र. २९।२२, वक्री शनि २९।१०
५	१०	गु	३	५२	७	४६	उ.षा	२	५७	७	२४	अ	२	१२	७	०६	ग	३	५२	७	४६	२९	५०	६	१३	१८	०९	१२	९	27	मकर	५	१०	०४	४८	५१	१४	०९	२	५६	भद्रा २१।०० से, दशमी वृद्धि
६	११	शु	१०	०२	१०	१५	श्र	१०	२५	१०	२४	सु	४	३०	८	०२	वि	१०	०२	१०	१५	२९	४६	६	१४	१८	०८	१३	१०	28	कुं.२३।५५	५	११	०३	३९	५३	१४	५७	३	३७	भद्रा १०।१५ तक, कमला (पुरुषोत्तम) एकादशी व्रत (सबका), C
७	१२	श	१६	२५	१२	४८	ध	१८	००	१३	२६	धृ	६	५५	९	००	बा	१६	२५	१२	४८	२९	४२	६	१४	१८	०७	१४	११	29	कुंभ	५	१२	०२	३२	५५	१५	४५	४	१८	पुनर्वसु १ में गुरु प्रवेश २४।३४, शनि प्रदोष व्रत
८	१३	र	२२	२५	१५	१३	श	२५	१७	१६	२२	शू	९	०७	९	५४	तै	२२	२५	१५	१३	२९	३७	६	१५	१८	०६	१५	१२	30	कुंभ	५	१३	०१	२७	५७	१६	३३	४	५९	
९	१४	चं	२७	५५	१७	२५	पू.भा	३२	०२	१९	०४	गं	११	००	१०	३९	व	२७	५५	१७	२५	२९	३३	६	१५	१८	०५	१६	१३	01	मी.१२।५५	५	१४	०	२४	५९	१७	२१	५	४०	भद्रा १७।२५ से, वक्री बुध २०।००, अक्टूबर मास १० ता. ३१, जन्म D
१०	१५	मं	३२	४०	१९	२०	उ.भा	३८	०५	२१	३०	वृ	१२	१७	११	११	वि	०	२२	६	२५	२९	२९	६	१६	१८	०४	१७	१४	2	मीन	५	१४	५९	२३	[illegible]	१८	०९	६	२२	भद्रा ६।२५ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, महात्मा गांधी व शास्त्री जन्म दि.

A पर अजमेर में उर्स मेला शुरू B मासारम्भ, भानु सप्तमी C पंचक प्रारम्भ २३।५५ से D दिन हजरत अली (मु.)

प्र. आश्विन शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २४ सितं. **[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]** ता. २ अक्टू. ❖ प्र. आश्विन शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. २४ सितं.:

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	८	६	२	४	१	२	८	९	९	७
७	२	१४	२	१९	९	२१	७	७	२७	१२	१८
८	३४	३०	५०	२१	४०	५	४३	४३	३४	१६	५५
२४	३	३४	१४	३८	२०	८	३४	३४	२८	२३	५१
५८	७४२	३५	३९	६	७३	०	३	३	१	०	१
४६	४७	१७	३९	५९	१९	१६	११	११	३९	४५	२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २४ सितं.): बु.७ | ५शु. | ४ | ८प्लू. | ६सू. | ३गु.रा. | ९ मं. चं.के. | १२ | १०ह. ने. | श.२ | ११ | १

कुण्डली (ता. २ अक्टू.): ७बु. | ५शु. | ४ | ८प्लू. | ६सू. | ३गु.रा. | ९मं.के. | १२ चं. | १०ह. ने. | २श. | ११ | १

ता. २ अक्टू.:

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	८	६	२	४	१	२	८	९	९	७
१४	८	१९	५	२०	१९	२१	७	७	२७	१२	१९
५९	३४	१९	४८	१३	२८	४	१८	१८	२२	११	४
२३	८	१८	२७	१६	२१	१४	९	९	२१	१४	५६
५९	७२१	३७	४	५	७३	०	३	३	१	०	१
१	१४	४	५४	४५	४४	३६	११	११	२०	३०	१६
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस वर्ष आश्विन अधिक मास बना है। जिसका फल प्राचीन दैवज्ञों ने इस प्रकार लिखा है—प्रोक्तं कुंजर वाजिनां विनशनं युग्माश्विने सर्वदा। प्रजा में रोग पीड़ा तथा हाथी, घोड़ों की कमी दिखाई देगी। ता. २० सितंबर को तुला राशि पर बुध आने से शासकों में विरोध एवं युद्धादि की भावना जाग्रत होगी। जनता ज्वरादि रोगों से पीड़ित होगी। यथा—**यदा च तुला राशिस्थो निशाकरसुत स्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता ॥** मेघ अच्छी वर्षा करें किन्तु यहां सिंह का शुक्र वर्षा में अवरोधक बना हुआ है। अतः कहीं वायु प्रकोप बढ़ेगा तो कहीं श्रेष्ठ वर्षा भी होगी। ता. २७ सितम्बर को शनि वृष राशि में वक्री होने से कहीं दुर्भिक्ष भय एवं किन्हीं दो देशों में युद्धादि को जन्म देगा। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में रुई, कपास, सूत, सण, बारदाना, गुड़, खांड में तेजी तथा अलसी, मूंगफली, सरसों, ज्वार, बाजरा में मंदी बनेगी। पक्षान्त में गेहूं, चना, जौ, सूत, जूट, कपास, हल्दी, हींग, धनिया में भारी घटाबढ़ी की चाल निकलेगी। यहां संभलकर कारोबार करना अच्छा रहेगा। यहां वक्री बुध भी ओछी घटाबढ़ी की चाल को बढ़ावा देगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में सिंह का शुक्र वर्षा में अवरोध उत्पन्न करेगा। यथा—**सिंह शुक्र जब होय भवानी। चाले पवन नहीं बरसे पानी ॥** गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पश्चिमी उ.प्र. के अनेक भागों में वायु वेग अधिक वर्षा कम होगी। पूर्वी दक्षिणी राज्यों में श्रेष्ठ वर्षा की संभावना है। **अधिक मास के कर्त्तव्य**—प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर स्नान एवं हरिनाम स्मरण पूजा आदि अपने धर्म एवं अधिकारानुसार करें तथा एक समय सात्विक भोजन करें। इस मास में कांसी के पात्र में अपूपदान करने का विशेष महत्व माना गया है। यहां यथा शक्ति दान पुण्य करने से सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होकर अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

द्वि.आ. आश्विन कृष्ण पक्ष-१४

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ३ से १६ अक्टूबर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु!

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
११	१	बु	३६	४०	२०	५६	रे	४३	२५	२३	३८	धु	१३	०२	११	२९	बा	४	४७	८	११
१२	२	गु	३९	४७	२२	१२	अ	४७	५२	२५	२६	व्या	१३	०५	११	३१	तै	८	२०	९	३०
१३	३	शु	४२	००	२३	०६	भ	५१	२७	२६	५३	ह	१२	३०	११	१८	व	११	००	१०	४२
१४	४	श	४३	२०	२३	३८	कृ	५४	०७	२७	५७	व	११	१५	१०	४८	ब	१२	४७	११	२५
१५	५	र	४३	३२	२३	४४	रो	५५	४५	२८	३०	सि	९	०७	९	५८	कौ	१३	३२	११	४४
१६	६	चं	४२	३७	२३	२२	मृ	५६	१२	२८	४८	व्य	६	१२	८	४८	ग	१३	१५	११	३७
१७	७	मं	४०	२५	२२	३०	आ	५५	२२	२८	२९	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	११	४०	११	००
१८	८	बु	३६	५२	२१	०५	पुन	५३	१५	२७	३८	शि	५१	२५	२६	५४	बा	८	४७	९	५१
१९	९	गु	३१	५७	१९	०८	पु	४९	४७	२६	१६	सि	४४	२०	२४	०५	तै	४	३५	८	११
२०	१०	शु	२५	५५	१६	४३	श्ले	४५	१२	२४	२६	सा	३६	१७	२०	५२	वि	२५	५५	१६	४३
२१	११	श	१८	४५	१३	५२	म	३९	३७	२२	१३	शुभ	२७	२५	१७	२०	बा	१८	४५	१३	५२
२२	१२	र	१०	४७	१०	४२	पूफा	३३	२५	१९	४५	शु	१७	५७	१३	३४	तै	१०	४७	१०	४२
२३	१३	चं	२	३२	७	२४	उफा	२६	५७	१७	१०	ब्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	२	३२	७	२४
०	१४	चं	५४	१२	२८	०४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	३०	मं	४३	४७	२४	५५	ह	२०	४२	१४	४१	वै	४९	१०	२६	०४	च	२०	१०	१४	२८

रा.मि.	दिनमान		सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
११	२९	२५	६	१६	१८	०२	१८	१५	3	मे. २३।३८	५	१५	५८	२४	[illegible]	१८	५७	७	११	पंचक समाप्त २३।३८,
१२	२९	२१	६	१७	१८	०१	१९	१६	4	मेष	५	१६	५७	२७	५	१९	४५	८	००	
१३	२९	१६	६	१८	१८	००	२०	१७	5	मेष	५	१७	५६	३२	७	२०	३२	८	५०	भद्रा १०।४२ से २३।०६ तक
१४	२९	१२	६	१८	१७	५९	२१	१८	6	वृ. १।११	५	१८	५५	३९	१०	२१	१९	९	३७	कृष्णा चतुर्थी व्रत
१५	२९	८	६	१९	१७	५८	२२	१९	7	वृष	५	१९	५४	४९	११	२२	०७	१०	२९	उ.फा. में शुक्र प्रवेश २५।४८, बुध पश्चिम में अस्त २२।३२
१६	२९	४	६	१९	१७	५७	२३	२०	8	मि. १६।१६	५	२०	५४	००	१४	२२	५४	११	१८	भद्रा २३।२२ से, वायु सेना दिवस, व्यतिपात पुण्यं
१७	२९	०	६	२०	१७	५६	२४	२१	9	मिथुन	५	२१	५३	१४	१७	२३	४१	१२	०८	भद्रा ११।०० तक
१८	२८	५५	६	२०	१७	५५	२५	२२	10	क. २१।५४	५	२२	५२	३१	१८	२४	४१	१२	५७	चित्रा में सूर्य प्रवेश १६।३७, कन्या में शुक्र प्रवेश १८।३१
१९	२८	५१	६	२१	१७	५३	२६	२३	11	कर्क	५	२३	५१	४९	२१	१	४१	१३	४७	भद्रा २९।५९ से, वक्री कन्या में बुध प्रवेश १६।३६
२०	२८	४७	६	२१	१७	५२	२७	२४	12	सिं. २४।२६	५	२४	५१	१०	२४	२	४१	१४	३६	भद्रा १६।४३ तक
२१	२८	४३	६	२२	१७	५१	२८	२५	13	सिंह	५	२५	५०	३४	२५	३	४१	१५	२५	उ.षा. में मंगल प्रवेश १९।२५, मृगशिर ४ में राहु मूल २ में केतु A
२२	२८	३९	६	२३	१७	५०	२९	२६	14	कं. २५।०६	५	२६	४९	५९	२८	४	४१	१६	१४	प्रदोष व्रत
२३	२८	३५	६	२३	१७	४९	३०	२७	15	कन्या	५	२७	४९	२७	३०	५	३१	१७	०३	भद्रा ७।२४ से १७।४३ तक, मास शिवरात्रि व्रत, , शबे ए मिराज (मु.)
०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षय:
२४	२८	३१	६	२४	१७	४८	३१	२८	16	तु. २५।३२	५	२८	४८	५७	३२	६	२३	१७	५२	देवपितृकार्याऽमावस्या, भौमवती अमावस, वैधृति पुण्यं, B

A २९।३०, कमला (पुरुषोत्तम) एकादशी व्रत (सवका)

B अधिक (पुरुषोत्तम) मास समाप्त

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

द्वि. आश्विन कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० अक्टू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	८	६	२	४	१	२	८	९	९	७
२२	२०	२४	१	२०	२९	२०	६	६	२७	१२	१९
५२	३४	२१	३५	५४	१९	५६	५२	५२	१२	८	१५
३१	१५	११	१८	३८	४७	२३	४३	४३	५०	३	५१
५९	४३०	३८	६३	४	७४	१	३	३	१	०	१
१८	३०	३३	४२	२५	९	२८	११	११	०	१५	२९
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ			
४	१	४	३	१	१	४	१	३	१	१	१
हस्त	पुन.	पू.षा.	चित्रा	पुन.	उ.फा.	रोहि.	आर्द्रा	मूल	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा

कुण्डली (ता. १० अक्टू.): बु. ७ · शु. ५ · प्लू. ८ · सू. ६ · ४ · चं. गु. ३ रा. · ह. १० ने. · मं. ९ के. · १२ · श. २ · ११ · १

ता. १६ अक्टूबर ❖ द्वि. आश्विन कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	८	५	२	५	१	२	८	९	९	७
२८	१७	२८	२४	२१	६	२०	६	६	२७	१२	१९
४८	३८	१५	३९	१८	४१	४६	३३	३३	७	७	२५
५७	४१	१	५	२४	२४	०	३८	३८	३२	१	९
५९	४४६	३९	६३	३	७४	२	३	३	०	०	१
३२	५८	३३	५०	१९	२५	५	११	११	४३	३	३८
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
२	३	१	१	१	४	४	४	४	१	१	१
चित्रा	हस्त	उ.षा.	चित्रा	पुन.	उ.फा.	रोहि.	मृग.	मूल	धनि.	श्रवण	ज्ये.

कुण्डली (ता. १६ अक्टूबर): ७ · ५ · प्लू. ८ · सू. चं. ६ · ४ · बु. शु. · गु. ३ रा. · ह. १० ने · मं. ९ के. · १२ · श. २ · ११ · १

इस पक्ष में सूर्य, मंगल, गुरु, राहु, केतु का केन्द्र योग तथा १५-१६ अक्टूबर को कन्या राशि में चार ग्रहों का योग अच्छा नहीं है। विश्व के अनेक भागों में भय, उत्पात एवं प्रकृति प्रकोप से जनता पीड़ित होगी। पूर्व, दक्षिण में भूकम्प, बम बिस्फोट, यान दुर्घटना से भारी हानि होगी। आस्ट्रिया, न्यूजीलैण्ड, श्रीलंका, दक्षिणी अफ्रीका, जापान आदि देशों में उक्त फल अधिक परिदृश्य होंगे। भारत में भी यत्र तत्र अशांति का वातावरण दिखाई देगा। पक्ष मध्य से कन्या राशि में सूर्य-बुध-शुक्र का योग बनेगा। जिसका फल प्राचीन ग्रन्थों में इस प्रकार लिखा है—"**एक राशौ गता ह्येते सौम्य शुक्र दिनाधिपा। सर्व धान्यः महर्घत्वं मेघा स्वल्प जलप्रदा॥**" सभी प्रकार के अनाजों में तेजी होगी। वर्षा में कमी तथा वायु प्रकोप की अधिकता से कृषि में हानि होगी। कुछ स्वार्थी नेतागण अपराधी तत्वों को संरक्षण देंगे। लूटपाट एवं बलात्कार की घटनाओं में वृद्धि होगी। सत्तारूढ़ दल में आन्तरिक गतिरोध बढ़ेगा जिससे जनता के विकास कार्य बन्द हो जायेंगे।

तेजी मन्दी विचार— तिथि पंचमी को उफा का शुक्र एवं बुध का अस्त होने से सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत में घटाबढ़ी होकर तेजी की चाल बनेगी। जिसे चित्रा नक्षत्र का सूर्य भी प्रोत्साहन देगा। ता. १३ अक्टूबर से घृत, तेल, उड़द, सरसों में भी तेजी का रुख बनेगा। चतुर्दशी का क्षय धान्यों में मन्दी प्रदान करेगा।

आकाश लक्षण— पक्षारंभ में उत्तरी भारत और आसपास के क्षेत्रों में वायु के साथ वर्षा या बादल चाल होगी। आसाम, पश्चिमी बंगाल, मेघालय के अनेक क्षेत्रों में तथा राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, गुजरात के कुछ इलाकों में वर्षा या बूंदाबांदी होगी।

द्वि. शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्ष-१५ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १७ अक्टू. से १ नवं. सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २५ आश्विन से १० कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद-हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि
२५	१	बु	३९	१५	२२	०६	चि	१५	०७	१२	२७	वि	४०	३२	२२	३७	कि	१२	३७	११	२७
२६	२	गु	३३	२७	१९	४८	स्वा	१०	३२	१०	३८	प्री	३२	५५	१९	३५	बा	६	१०	८	५३
२७	३	शु	२९	१७	१८	०९	वि	७	३०	९	२६	आ	२६	३७	१७	०५	तै	१	०७	६	५३
२८	४	श	२७	०७	१७	१७	अनु	६	१७	८	५७	सौ	२१	५५	१५	१२	वि	२७	०७	१७	१७
२९	५	र	२६	५७	१७	१४	ज्ये	७	००	९	१५	शो	१८	४७	१३	५८	बा	२६	५७	१७	१४
३०	६	चं	२८	५२	१८	०१	मू	९	४७	१०	२३	अ	१७	१५	१३	२२	तै	२८	५२	१८	०१
का	७	मं	३२	३७	१९	३१	पूषा.	१४	२५	१२	१४	सु	१७	१०	१३	२०	ग	०	३२	६	४१
२	८	बु	३७	४७	२१	३६	उषा	२०	३०	१४	४१	धृ	१८	१५	१३	४७	वि	५	०२	८	३०
३	९	गु	४३	४७	२४	०१	श्र	२७	३२	१७	३१	शू	२०	०५	१४	३२	बा	१०	४२	१०	४७
४	१०	शु	५०	०७	२६	३३	ध	३५	०५	२०	३२	गं	२२	२०	१५	२६	तै	१७	००	१३	१८
५	११	श	५६	१५	२९	०१	श	४२	२५	२३	२९	वृ	२४	३२	१६	२०	व	२२	१५	१५	४९
६	१२	र	६०	००			पूभा	४९	१०	२६	१२	ध्रु	२६	२०	१७	०४	ब	२९	००	१८	०८
७	१२	चं	१	३७	७	११	उभा	५५	०५	२८	३४	व्या	२७	३२	१७	३३	बा	१	३७	७	११
८	१३	मं	६	०२	८	५८	रे	५९	५७	३०	३२	ह	२७	५७	१७	४४	तै	६	०२	८	५८
९	१४	बु	९	२२	१०	१९	अ	६०	००			व	२७	३०	१७	३४	व	९	२२	१०	१९
१०	१५	गु	११	३५	११	१३	अ	३	४०	८	०३	सि	२६	१२	१७	०४	ब	११	३५	११	१३

अं. (दिनांक)	दिनमान घं	दिनमान मि	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.
17	२८	२७	६	२४	१७	४७	का.	२९	तुला	५	२९	४८	२९	[illegible]	७	०६	१८	४१
18	२८	२३	६	२५	१७	४६	२	३०	वृ. २७।४०	६	००	४८	०३	३६	७	४८	१९	१०
19	२८	१९	६	२६	१७	४५	३	सा.	वृश्चिक	६	०१	४७	३९	३८	८	३१	१९	५१
20	२८	१५	६	२६	१७	४४	४	२	वृश्चिक	६	०२	४७	१७	४०	९	१३	२०	११
21	२८	११	६	२७	१७	४३	५	३	ध. ९।१५	६	०३	४६	५७	४१	९	५६	२०	३२
22	२८	७	६	२८	१७	४२	६	४	धनु	६	०४	४६	३८	४४	१०	३८	२१	५०
23	२८	३	६	२८	१७	४१	७	५	म. १८।४८	६	०५	४६	२२	४५	११	२०	२२	०४
24	२७	५९	६	२९	१७	४१	८	६	मकर	६	०६	१६	०७	४६	१२	०२	२३	१५
25	२७	५५	६	३०	१७	४०	९	७	मकर	६	०७	४५	५३	४९	१२	४४	२४	२२
26	२७	५१	६	३०	१७	३९	१०	८	कुं. ७।०१	६	०८	४५	४२	५०	१३	२६	१	३८
27	२७	४७	६	३१	१७	३८	११	९	कुम्भ	६	०९	४५	३२	५१	१४	०८	२	५०
28	२७	४३	६	३२	१७	३७	१२	१०	मी. ११।३३	६	१०	४५	२३	५४	१४	५०	३	०२
29	२७	४०	६	३२	१७	३७	१३	११	मीन	६	११	४५	१७	५५	१५	३२	४	४२
30	२७	३६	६	३३	१७	३६	१४	१२	मे. ३०।३२	६	१२	४५	१२	५७	१६	१४	५	२१
31	२७	३२	६	३४	१७	३५	१५	१३	मेष	६	१३	४५	०९	५९	१६	५६	६	०१
N1	२७	२८	६	३५	१७	३४	१६	१४	मेष	६	१४	४५	०८	[illegible]	१७	३८	६	४०

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- 17: तुला में सूर्य प्रवेश १०।०८, संक्रान्ति मु. ३०, वक्री हस्त में बुध A
- 18: मकर में मंगल प्रवेश २१।००, हस्त में शुक्र प्रवेश २०।१४, B
- 19: भद्रा २९।३७ से, सावान मु. मास ८ प्रारंभ C(मूल में), दुर्गा पूजा प्रा.
- 20: भद्रा १७।१७ तक, बुध पूर्व में उदय २८।१७, विनायक ४ व्रत
- 21: उपांग ललिता पंचमी व्रत, ललिता पंचमी, श्री सरस्वती आवाहन C
- 22: F शमी पूजा, श्री माधवाचार्य जयंती, बौद्धावतार १०, पंचक प्रा. ७।०१
- 23: भद्रा १९।३१ से, स्वाती में सूर्य प्रवेश २७।०३, मार्गी बुध ६।३४, D
- 24: भद्रा ८।३० तक, दुर्गाष्टमी, बुधाष्टमी, श्री महाष्टमी व्रतपूजन, भद्रकाल्यावतार, E
- 25: नवरात्र समाप्त, महानवमी, श्री सरस्वती विसर्जन, मन्वादि
- 26: विजयादशमी (रावणदाह), अस्त्र-शस्त्र पूजा, अपराजिता पूजन, F
- 27: भद्रा १५।४९ से २९।०१ तक, पापांकुशा ११ व्रत (स्मार्त वैष्ण.), भरत मिलाप
- 28: चित्रा में बुध प्रवेश २९।४४, पापांकुशा एका. व्रत (निम्बार्क), G
- 29: चित्रा में शुक्र प्रवेश १३।२२, सोम प्रदोष व्रत G वंजुली महाद्वादशी व्रत
- 30: मार्गी हर्शल २१।१५, पंचक समाप्त ३०।३२
- 31: भद्रा १०।११ से २२।४९ तक, शरद् पूर्णिमा, सत्यव्रत, कोजागरी व्रत, H
- N1: वक्री रोहिणी ३ में शनि प्र. १२।२१, महर्षि बाल्मीकि जयंती, पूर्णिमा I

A प्रवेश ११।५५, शारदीय नवरात्रा प्रारंभ, कलश स्थापना, अग्रसेन जयंती, मातामह श्राद्ध, सौर कार्तिक मासारंभ B मार्गी नेपच्यून १८।१५, चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घ D सायन वृश्चिक में सूर्य प्रवेश १३।३६, हेमन्त ऋतु प्रारंभ, श्री सरस्वती पूजन, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारंभ १९।३१ से, राष्ट्रीय कार्तिक मासारम्भ E अन्नपूर्णा परिक्रमा २१।३६ तक, श्री सरस्वती बलिदान, जैन आयंबिल ओली प्रा., मेला ज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.), H मेला शाकम्भरी देवी (उ.प्र.), कुबेर व लक्ष्मी पूजा (बंगाल में), इन्दिरा गांधी पुण्य दिवस, सरदार पटेल जयंती, I पुण्यं, जैन आयंबिल ओली समाप्त, कार्तिक स्नान प्रा., नवम्बर मास ११ ता. ३०, शबे-ए-बरात (मु.)

द्वि.आश्विन शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २४ अक्टू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	९	५	२	५	१	२	८	९	९	७
६	५	३	२०	२१	१६	२०	६	६	२७	१२	१९
४६	२३	३५	२४	३९	४१	२६	८	८	३	७	३८
७	३१	२५	५०	४१	४४	२९	१२	१२	९	३२	५५
५९	७१८	४०	१६	१	७४	२	३	३	०	०	१
४६	४३	३९	७	४४	४२	५३	११	११	१९	१३	५०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ता. २४ अक्टू. कुण्डली: प्लू. ८ | बु.६ शु. | के. ९ | सू. ७ | ४ | ५ | चं.मं.१० ह.ने. | १ | ११ | गु. ३ रा. | १२ | श. २

इस पक्षारंभ के दिन तुला संक्रान्ति तुला राशिगत चन्द्रमा में ही लगी है। जिसे प्राचीन दैवज्ञों ने जन्म वेध से नेष्ट माना है। अतः यहाँ विश्व के कुछ देशों की राजनीति में उलटफेर होंगे। कहीं सीमाओं पर शत्रु देश की गतिविधियां अशान्ति का कारण बनेंगी। तारीख २० अक्टूबर को अर्द्धरात्रि बाद बुध पूर्व में उदय होगा। जो उत्पातकारी होता है। यथा—"नोत्पात परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्। जलदहन पवनभय कृद्धान्यार्घ क्षयविवृद्धयै वा।" कहीं प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, अनावृष्टि, अतिवृष्टि से जन धन की हानि होगी। जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी आने से प्रजा का जीना दुर्भर होगा। आश्विन शुक्ल पक्ष में शनिवार की एकादशी होने से चोर, लुटेरों की अधिकता एवं किसी देश व राज्य में सत्ता परिवर्तन होगा। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में सोना, चांदी, चावल, रुई, सूत, सन, तिल, तेल में साधारण मंदी की चाल निकलेगी जिसे ता. २१ अक्टूबर को बुध का उदय तेजी की तरफ ले जायेगा। ता. २३ को बुध मार्गी होने से यहाँ सावधानी से काम करें, बाजार रुख बदल सकता है। पक्षान्त में धान्यादि में तेजी तथा चांदी रुई, में घटाबढ़ी होगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बुध शुक्र का योग हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, आसाम, उड़ीसा, केरल में वर्षा कारक रहेगा। मध्य भारत दिल्ली, राजस्थान, उ.प्र. गुजरात में कहीं कहीं अच्छी वर्षा होने से सर्दी का अहसास होने लगेगा। **शकुन विचार**—आश्विन शुक्ल सप्तमी व अष्टमी को बादल वर्षा हो तो सुभिक्ष किन्तु शरद पूर्णिमा को बादल वर्षा हो तो अशुभ माना जाता है, अतः शरद पूर्णिमा को सम्पूर्ण रात्रि चन्द्रमा निर्मल रहे तो धान्यादि में आगे मंदी होगी।

ता. १ नवम्बर ❖ द्वि. आश्विन शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. १ नवम्बर कुण्डली: प्लू. ८ | बु. ६. शु. | के. ९ | सू. ७ | ४ | ५ | मं. ह. १० नं. | चं. १ | ११ | गु. ३ रा. | १२ | श. २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	९	५	२	५	१	२	८	९	९	७
१४	११	९	२६	२१	२६	२०	५	५	२७	१२	१९
४५	५९	३	३४	४८	४०	१	४२	४२	१	१०	५८
८	७	४७	३	३७	५	२	४६	४६	५८	१२	४
६०	७६३	४१	७५	०	७४	३	३	३	०	०	१
१	१९	३१	१	१३	५५	३३	११	११	४	३०	५९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-		
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१८ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २ से १५ नवम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घं	दिनमान मि	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	अस्त घं	अस्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	ति.	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मि.	चन्द्रास्त घं.	चन्द्रास्त मि.	विवरण
११	१	शु	१२	४५	११	४१	भ	६	२५	९	०९	व्य	२४	०५	१६	१३	कौ	१२	४५	११	४१	२७	२५	६	३५	१७	३३	१७	१५	2	वृ. १५।२२	६	१५	४५	०९	[illegible]	१८	२०	७	२०	श्रवण में मंगल प्र. १३।५९, वक्री गुरु १२।५३, व्यतीपात पुण्यं, अशून्य A
१२	२	श	१२	५२	११	४५	कृ	८	१०	९	५२	व	२१	१२	१५	०५	ग	१२	५२	११	४५	२७	२१	६	३६	१७	३३	१८	१६	3	वृष	६	१६	४५	११	५	१९	२२	८	१३	भद्रा २३।३८ से, तुला में बुध प्रवेश २०।४०, तुला में शुक्र प्र. २०।३१, B
१३	३	र	१२	०२	११	२६	रो	८	५७	१०	१२	प	१७	३५	१३	३९	वि	१२	०२	११	२६	२७	१७	६	३७	१७	३२	१९	१७	4	मि. २२।१५	६	१७	४५	१६	७	२०	२३	९	००	भद्रा ११।२६ तक, करक चतुर्थी व्रत (करवा चौथ व्रत), दशरथ चतुर्थी
१४	४	चं	१०	२२	१०	४७	मृ	८	५७	१०	१३	शि	१३	१७	११	५७	बा	१०	२२	१०	४७	२७	१४	६	३८	१७	३१	२०	१८	5	मिथुन	६	१८	४५	२३	८	२१	२४	९	०६	
१५	५	मं	७	५५	९	४८	आ	८	०७	९	५३	सि	८	२०	९	५८	तै	७	५५	९	४८	२७	१०	६	३८	१७	३१	२१	१९	6	क. २७।४५	६	१९	४५	३१	११	२२	२५	१०	३३	विशाखा में सूर्य प्रवेश ११।१६, पद्म प्रभु जयंती (जैन)
१६	६	बु	४	३२	८	२८	पुन	६	२७	९	१४	सा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	४	३२	८	२८	२७	७	६	३९	१७	३०	२२	२०	7	कर्क	६	२०	४५	४२	१३	२३	२६	११	१९	भद्रा ८।२८ से १९।४१ तक
१७	७	गु	०	२२	६	४९	पु	३	५७	८	१५	शु	४९	३२	२६	२९	ब	०	२२	६	४९	२७	४	६	४०	१७	२९	२३	२१	8	कर्क	६	२१	४५	५५	१४	२४	२८	१२	०६	स्वाति में बुध प्र. ९।५७, स्वाति में शुक्र प्र. २१।२६, कालाष्टमी, अहोई C
०	८	गु	५५	३०	२८	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी क्षय:
१८	९	शु	४९	५२	२६	३८	श्ले	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब्र	४२	०५	२३	३१	तै	२२	४५	१५	४७	२७	००	६	४१	१७	२९	२४	२२	9	सिं. ६।५९	६	२२	४६	०९	१७	१	२२	१२	५२	
१९	१०	श	४३	४७	२४	१२	पूफा	५२	३०	२७	४१	ऐं	३४	१२	२०	२२	व	१६	५५	१३	२७	२६	५७	६	४१	१७	२८	२५	२३	10	सिंह	६	२३	४६	२६	१९	२	१५	१३	३९	भद्रा १३।२७ से २४।१२ तक
२०	११	र	३७	१७	२१	३७	उफा	४७	४७	२५	४९	वै	२५	५७	१७	०५	ब	१०	३२	१०	५५	२६	५४	६	४२	१७	२८	२६	२४	11	कं. ९।१४	६	२४	४६	४५	२१	३	०९	१४	२५	रमा एकादशी व्रत (सबका), वैधृति पुण्यं
२१	१२	चं	३०	४२	१९	००	ह	४३	०२	२३	५६	वि	१७	३५	१३	४५	कौ	३	५७	८	१८	२६	५०	६	४३	१७	२७	२७	२५	12	कन्या	६	२५	४७	०६	२३	४	०३	१५	१२	बुध पूर्व में अस्त १२।३३, सोम प्रदोष व्रत, गोवत्स पूजा, धन तेरस, D
२२	१३	मं	२४	२०	१६	२८	चि	३८	३५	२२	१०	प्री	९	२०	१०	२८	व	२४	२०	१६	२८	२६	४७	६	४४	१७	२७	२८	२६	13	तु. ११।०२	६	२६	४७	२९	२४	४	०५	१५	५९	भद्रा १६।२८ से २७।१७ तक, मास शिव रात्रि व्रत, नरक चतुर्दशी, रूप १४,E
२३	१४	बु	१८	३२	१४	०९	स्वा	३४	४५	२०	३८	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श	१८	३२	१४	०९	२६	४४	६	४४	१७	२६	२९	२७	14	तुला	६	२७	४७	५३	२७	५	५१	१६	०६	नरक चतुर्दशी (पहिले अरुणोदय), स्नान व दीपदानं, श्री महालक्ष्मी F
२४	३०	गु	१३	३५	१२	११	वि	३१	५२	१९	३०	शो	४७	५०	२५	५३	ना	१३	३५	१२	११	२६	४१	६	४५	१७	२६	३०	२८	15	वृ. १३।४५	६	२८	४८	२०	२८	६	०५	१७	३३	देवकार्याऽमा., गोवर्धन पू., अन्नकूट, बलिराज पू., महावीर निर्वा. दिव. जैन

A शयन २ व्रत B ज्येष्ठा २ में प्लूटो प्रवेश २८।५४, गुरु रामदास जयंती (प्रा. मत से) **C** अष्टमी, राधा कुण्ड स्नान मथुरा **D** धनवन्तरी जयंती, यम दीपदानं, महामना मालवीय पुण्य दिवस **E** निमित्त दीपदानं **F** पूजन, **दीपावली**, प्रदोष काले दीपदानम्, निशीथ काले महाकाली पूजा, कमला जयंती, स्वा. दयानन्द सरस्वती, निर्वाण दिवस, श्री हनुमान जयंती, पितृकार्याऽमावस्या, पं. जवाहर लाल नेहरू जयंती (बाल दिवस), बाल मेला दिल्ली

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कार्तिक कृ. ७ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ नवं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	९	६	२	६	१	२	८	९	९	७
२१	१५	१३	६	२१	५	१९	५	५	२७	१२	२०
४५	३	५६	२२	४६	२५	३४	२०	२०	३	१४	८
५५	१५	१८	५५	०	५	३३	३१	३१	३४	१९	१६
६०	[illegible]	४२	९२	१	७५	४	३	३	०	०	२
१४	५५	८	१०	११	७	४	११	११	२७	४३	६
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	—	—	—
१	४	१	४	१	४	३	४	१	१	१	१
विशा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८प्लू. | ६ | ९के. | सू.बु. ७ शु. | ४ चं. | ५ | १०ह. मं.ने. | १ | ११ | ३गु. रा. | १२ | २श.

इस पक्ष के प्रारम्भ में मंगल श्रवण नक्षत्र में प्रवेश करने से प्रजा में रोगादि की वृद्धि तथा प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि में हानि होगी। यथा—**श्रुतौ च रोगो बहुधान्य योगो भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च॥** किन्तु द्वितीया तिथि को ही शुक्र तुला राशि में प्रवेश करने से अशुभ फलों में न्यूनता आयेगी। संसार में आरोग्यता तथा सुख शांति का वातावरण बनेगा। कहीं कहीं असामाजिक तत्व अशांति पैदा कर सकते हैं। **तुला के शुक्र का फल—यदा दैत्य गुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत॥** यहां पक्षारम्भ में गुरु भी वक्री हो रहा है जिसका फल—**गुरौ वक्रे सुभिक्षं च।** होने से भारत गुट निरपेक्ष देशों में अपना सर्वस्व बनाने में सफल होगा। अनेक देशों में व्यापारिक आदान-प्रदान के समझौते अधिक होंगे। पक्षान्त के अन्तिम तीन दिनों में तुला राशि में चार ग्रहों का योग हिंसा, प्रकृति-प्रकोप, अराजकता को बढ़ावा देगा। **तेजी मन्दी विचार**—नवम्बर के प्रथम सप्ताह में अलसी, सरसों, मूंगफली, चांदी में मंदी की चाल निकलेगी वहीं गुड़, खंड, सोना, तांबा में तेजी का झटका आवे। ता. ८ नवम्बर से रुई, सूत, मूंग, मोंठ, बाजरा में मंदी आकर पक्षान्त में सोना, चांदी, स्टील, ताम्बा, पीतल में तेजी की धारणा बनेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में हिमाचल प्रदेश, आसाम, मेघालय, नेपाल में झंझावात, बादल वर्षा के योग हैं। राजस्थान, दिल्ली, उ.प्र., मध्य प्रदेश, गुजरात में साधारण बूंदाबांदी होगी। पर्वतीय इलाकों में ओलावृष्टि होने से शीत प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार**—कार्तिक मास में मेघ गर्जना हो तो अन्नादि में तेजी होती है। कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर कुण्डल दिखाई दे तो तिल, तेल, अलसी, सरसों, मूंगफली में तेजी हो। मंदी में स्टाक करने वालों को लाभ होगा।

ता. १५ नवं. ❖ कार्तिक कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

८प्लू. | शु. | ६ | ९के. | ७सू. चं.बु. | ४ | ५ | १०ह. मं.ने. | १ | ११ | ३गु. रा. | १२ | २श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	९	६	२	६	१	२	८	९	९	७
२८	२५	१८	१७	२१	१४	१९	४	४	२७	१२	२०
४४	११	५२	२३	३३	११	४	५८	५८	७	२०	२३
२०	२२	५४	४	३३	१७	४६	१५	१५	४१	२	१२
६०	[illegible]	४२	९५	२	७५	४	३	३	०	०	२
२८	२०	४०	४७	३४	१४	२८	११	११	४८	५६	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
३	१	३	४	१	३	३	४	१	१	१	१
विशा.	विशा.	श्रव.	स्वाति.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१७ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १६ से ३० नवम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २५ कार्तिक से ९ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२५	१	शु	९	५२	१०	४३	अनु	३०	२०	१८	५४	अ	४२	३२	२३	४७	ब	९	५२	१०	४३	२६	३८	६	४६	१७	२५	मा.	२९	16	वृश्चिक	६	२९	४८	४८	[illegible]	७	२७	१८	२७	वृश्चिक में सूर्य प्र. ९।५७, संक्रांति मु. ३०, विशाखा में बुध प्रवेश २०।४९, A
२६	२	श	७	४०	९	५१	ज्ये	३०	२०	१८	५५	सु	३८	३५	२२	१३	कौ	७	४०	९	५१	२६	३५	६	४७	१७	२५	२	रम	17	ध. १८।५५	७	००	४९	१७	३१	८	१०	१९	१४	रमजान मु. मास ९ प्रा., रोजा प्रा., विश्वकर्मा दिवस, लाला लाजपतराय B
२७	३	र	७	१२	९	४१	मू	३२	०२	१९	३७	धृ	३५	५७	२१	११	ग	७	१२	९	४१	२६	३२	६	४८	१७	२५	३	२	18	धनु	७	०१	४९	४८	३३	८	५३	२०	०७	भद्रा २१।५२ से, विनायक ४ व्रत B पुण्य दिवस
२८	४	चं	८	३५	१०	१४	पू.षा	३५	३२	२१	०१	शू	३४	४७	२०	४३	वि	८	३५	१०	१४	२६	२९	६	४८	१७	२४	४	३	19	म. २७।२८	७	०२	५०	२१	३३	९	३६	२१	०१	भद्रा १०।१४ तक, अनुराधा में सूर्य प्रवेश १७।१५, विशाखा में शुक्र प्रवेश C
२९	५	मं	११	४०	११	२९	उ.षा	४०	३५	२३	०३	गं	३४	५२	२०	४६	बा	११	४०	११	२९	२६	२७	६	४९	१७	२४	५	४	20	मकर	७	०३	५०	५४	३५	१०	१९	२१	५५	पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), गुरु गोविन्द सिंह पु. D
३०	६	बु	१६	१५	१३	२०	श्र	४६	५५	२५	३६	वृ	३५	५७	२१	१३	तै	१६	१५	१३	२०	२६	२४	६	५०	१७	२४	६	५	21	मकर	७	०४	५१	२९	३७	११	०२	२२	५०	धनिष्ठा में मंगल प्रवेश ११।०७, सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट (बिहार)
मार्ग	७	गु	२१	५७	१५	३८	ध	५४	०२	२८	२८	ध्रु	३७	४२	२१	५६	व	२१	५७	१५	३८	२६	२१	६	५१	१७	२३	७	६	22	कुं. १५।०१	७	०५	५२	०६	३७	११	४५	२३	४४	भद्रा १५।३८ से २८।५२ तक, वृश्चिक में बुध प्रवेश २७।१५, सायन धनु E
२	८	शु	२८	१०	१८	०८	श	६०	००			व्या	३९	५०	२२	४८	ब	२८	१०	१८	०८	२६	१९	६	५२	१७	२३	८	७	23	कुंभ	७	०६	५२	४३	३९	१२	२८	२४	३८	श्री दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, गो पूजा, यव अन्नादि दान, गौशाला निर्माण, F
३	९	श	३४	२५	२०	३८	श	१	२५	७	२६	ह	४१	५०	२३	३६	बा	१	२०	७	२४	२६	१६	६	५२	१७	२३	९	८	24	मी. २०।३६	७	०७	५३	२२	३९	१३	११	१	३२	अनुराधा में बुध प्र. २९।३९, आंवला नवमी, अक्षय नवमी, कुष्मांड नवमी, G
४	१०	र	४०	००	२२	५३	पू.भा	८	३०	१०	१७	व	४३	१७	२४	१२	तै	७	१७	९	४८	२६	१४	६	५३	१७	२३	१०	९	25	मीन	७	०८	५४	०१	४१	१३	५४	२	२७	रवि दसमी G कृत्युगादि, जगत धातृ पूजा, मथुरा प्रदक्षिणा
५	११	चं	४४	३०	२४	४२	उ.भा	१४	४२	१२	४७	सि	४३	५७	२४	२९	व	१२	२२	११	५१	२६	११	६	५४	१७	२३	११	१०	26	मीन	७	०९	५४	४२	४२	१४	३७	३	२२	भद्रा ११।५१ से २४।४२ तक, देव प्रबोधिनी एका. व्रत (सबका), तुलसी H
६	१२	मं	४७	४०	२५	५९	रे	१९	४७	१४	५०	व्य	४३	३५	२४	२१	ब	१६	१५	१३	२५	२६	९	६	५५	१७	२३	१२	११	27	मे. १४।५०	७	१०	५५	२४	४३	१५	२०	४	१७	वृश्चिक में शुक्र प्रवेश १९।४९, हरिवासर १४।५० तक, मन्वादि १२, J
७	१३	बु	४९	२०	२६	४०	अ	२३	२७	१६	१९	व	४२	०५	२३	४६	कौ	१८	४०	१४	२४	२६	७	६	५६	१७	२२	१३	१२	28	मेष	७	११	५६	०७	४४	१६	०३	५	१२	प्रदोष व्रत, मेला वीर बैरागी नकोदर जन्मोत्सव (पंजाब) K चौदस (जैन)
८	१४	गु	४९	३७	२६	४७	भ	२५	४५	१७	१४	प	३९	३०	२२	४४	ग	१९	४०	१४	४८	२६	५	६	५६	१७	२२	१४	१३	29	वृ. २३।२२	७	१२	५६	५१	४५	१६	४६	६	०७	भद्रा २६।४७ से, बैकुंठ १४ व्रत, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी K
९	१५	शु	४८	३०	२६	२१	कृ	२६	३७	१७	३६	शि	३५	५०	२१	१७	वि	१९	१२	१४	३८	२६	३	६	५७	१७	२२	१५	१४	30	वृष	७	१३	५७	३६	४७	१७	२९	७	०२	भद्रा १४।३८ तक, कुंभ में मंगल प्रवेश १७।०५, अनुराधा में शुक्र प्रवेश L

A चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, भैया दूज, टिक्का, यम द्वितीया, चित्र गुप्त पूजा, गो संवर्धन सप्ताह प्रारम्भ, द्यूत क्रीड़ा दिवस, सौर मार्गशीर्ष मासारंभ C २०।४१, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ (बिहार), तीन दिन का, इन्दिरा गांधी जन्म दिवस (एकता दिवस) D दिवस (प्रा. मत से) E में सूर्य प्रवेश ११।३१, जलराम जयंती, राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मा. प्रा., पंचक प्रा. १५।०१ से, कल्पादि ७, अष्टान्हिक जैन व्रतारंभ, सहस्रार्जन जयंती F गोसंवर्धन सप्ताह समाप्त H विवाह, भीष्म पंचकारंभ, पुष्कर मेला प्रा. (राज.), चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण, पुण्डरपुर यात्रा (महा.) J कालीदास जयंती, व्यतिपात पुण्यं, पंचक समाप्त १५।५० L ११।२९, कार्तिकी पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती, देव दीवाली, सत्यव्रत मेला पुष्करराज व रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, भीष्म पंचक व अष्टान्हिक जैन व्रत समाप्त, निम्बार्काचार्य ज., रथयात्रा (जैन)

कार्तिक शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ नवं.   **[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]**   **ता. ३० नवं. ❖ कार्तिक शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	९	७	२	६	१	२	८	९	९	७
६	७	२४	०	२१	२४	१८	४	४	२७	१२	२०
५२	१०	३६	८	७	१३	२७	३२	३२	१५	२८	४०
४३	६	५	५५	३३	३६	४५	४९	४९	२६	२९	५७
६०	७१	४३	९५	४	७५	४	३	३	१	१	२
३९	५२	९	१८	५	२१	४७	११	११	१२	११	१६
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ता. २३ नवं. कुण्डली: ९के. | ७शु. | ६ | ह. १०मं. ने. | ८बु. सू.प्लू. | ५ | ११ चं. | २श. | १२ | ४ | १ | ३गु.रा.

इस मास में पांच शुक्रवार एवं कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय और मंगल शनि का त्रिकोण योग उत्तम है। **पांच शुक्रवार का फल—शुक्रस्य पंचवाराः स्युयत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि, सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** यहां सुख शांति का वातावरण बनेगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार होकर विश्व के विभिन्न भागों में होने वाले उत्पात शांत होंगे। किन्तु वृश्चिक संक्रांति भी वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा में लगने से तथा बुध विशाखा नक्षत्र में प्रतिपदा को ही आने से प्रजा में रोग पीड़ा व अशान्ति की वृद्धि होगी। कहीं आन्तरिक विद्रोह से सत्ता परिवर्तन तथा आपसी सम्बन्धों में कटुता बढ़ेगी। अरब, इजरायल, ईरान, ईराक तृर्की में अशुभ फल अधिक होते दिखाई देंगे। कहीं धोखाबाजी की राजनीति का जोर बढ़ेगा। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में जौ, गेहूं, चना, बाजरा, रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी आदि में तेजी के बाद मंदी होगी। ता. २१ नवम्बर को धनिष्ठा में मंगल आने से सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, लोहा आदि धातु पदार्थ एवं गुड़, खांड, शक्कर आदि में तेजी की धारणा बनेगी। जिसमें २७ नवम्बर में वृश्चिक का शुक्र आने से रोक लगेगी। यहां आई मन्दी में रुख देखकर स्टाक करना चाहिए। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात में वायु मण्डल दूषित होकर शीत का प्रकोप बढ़ेगा। जम्मू, काश्मीर, हिमाचल प्रदेश एवं पूर्वोत्तर राज्यों में सामान्य वर्षा तथा वायु वेग से सर्दी बढ़ने लगेगी। **शकुन विचार**—कार्तिक शुक्ल अष्टमी के दिन बादल व वर्षा हो तो आगे आषाढ़ श्रावण में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यथा—**कार्तिक सुदी अष्टमी दिनां, बादल वर्षा होय। चौमासा वर्षे सही संशय करो न कोय॥**

ता. ३० नवं. कुण्डली: ९के. | ७ | ६ | ह. १०मं. ने. | ८बु. सू.शु. | ५ | ११ | २ चं.श. | १२ | ४ | १ | ३गु.रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	९	७	२	७	१	२	८	९	९	७
१३	३	२९	११	२०	३	१७	४	४	२७	१२	२०
५७	२०	३९	१३	३५	१	५३	१०	१०	२४	३७	५६
३६	१०	३	१८	१३	११	४७	३४	३४	४८	२७	५३
६०	७९६	४३	९४	५	७५	४	३	३	१	१	२
४७	३	२६	२७	१८	२५	५५	११	११	३१	२३	१८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१८ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १ से १४ दिसम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २३ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि
१०	१	श	४६	१०	२५	२६	ते	२६	१७	१७	२९	सि	३१	१०	१९	२६	बा	१७	२७	१३	५७
११	२	र	४२	५२	२४	०८	मृ	२४	५७	१६	५८	सा	२५	४२	१७	१६	तै	१४	३७	१२	५०
१२	३	चं	३८	५२	२२	३२	आ	२२	४७	१६	०६	शुभ	१९	४०	१४	५१	व	१०	५७	११	२२
१३	४	मं	३४	१५	२०	४२	पुन	२०	००	१५	००	शु	१३	००	१२	१२	ब	६	३५	९	३८
१४	५	बु	२९	१२	१८	४२	पु	१६	४५	१३	४३	ब्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१	४५	७	४३
१५	६	गु	२३	५५	१६	३६	श्ले	१३	१५	१२	२०	वै	५१	२२	२७	३५	व	२३	५५	१६	३६
१६	७	शु	१८	३५	१४	२८	म	९	३७	१०	५३	वि	४४	००	२४	३८	ब	१८	३५	१४	२८
१७	८	श	१३	१०	१२	१९	पूफा	५	५७	९	२६	प्री	३६	३७	२१	४२	कौ	१३	१०	१२	१९
१८	९	र	७	५७	१०	१५	उफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ	२९	२२	१८	४९	ग	७	५७	१०	१५
१९	१०	चं	२	५७	८	१६	चि	५६	१७	२९	३६	सौ	२२	२५	१६	०३	वि	२	५७	८	१६
०	११	चं	५८	२७	३०	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०	१२	मं	५४	३२	२८	५४	स्वा	५४	००	२८	४१	शो	१५	५२	१३	२६	कौ	२६	२५	१७	३९
२१	१३	बु	५१	२०	२७	३८	वि	५२	२५	२८	०४	अ	९	४७	११	०१	ग	२२	५०	१६	१४
२२	१४	गु	४९	०५	२६	४५	अनु	५१	४७	२७	५०	सु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	२०	०५	१५	०९
२३	३०	शु	४८	००	२६	१९	ज्ये	५२	१७	२८	०२	शू	५५	५७	२९	३०	च	१८	२२	१४	२८

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	अस्त घं	अस्त मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	विवरण
२६	१	६	५८	१७	२२	१६	१५	1	मि. २१।१६	७	१४	५८	२३	[illegible]	१८	१२	७	४८	दिसम्बर मास १२ ता. ३१
२५	५९	६	५९	१७	२२	१७	१६	2	मिथुन	७	१५	५९	११	४८	१९	१७	८	३३	ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश २१।३७, अशून्य शयन २ व्रत
२५	५७	६	५९	१७	२२	१८	१७	3	मिथुन	७	१६	५९	५९	५१	२०	२१	९	१९	भद्रा ११।२२ से २२।३२ तक, ज्येष्ठा में बुध प्रवेश १६।३५, सौभाग्य A
२५	५६	७	००	१७	२३	१९	१८	4	क. ९।१८	७	१८	००	५०	५१	२१	२५	१०	०४	कृष्ण चतुर्थी व्रत
२५	५४	७	०१	१७	२३	२०	१९	5	कर्क	७	१९	०१	४१	५३	२२	२९	१०	५०	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस (जैन)
२५	५२	७	०२	१७	२३	२१	२०	6	सिं. १२।२०	७	२०	०२	३४	५४	२३	३३	११	३५	भद्रा १६।३६ से २७।३२ तक, वक्री आर्द्रा ४ में गुरु प्रवेश ९।३७, वैधृति पुण्यं
२५	५१	७	०२	१७	२३	२२	२१	7	सिंह	७	२१	०३	२८	५५	२४	३७	१२	२१	कालाष्टमी, श्री महाकाल भैरवाष्टमी, भैरव जी दर्शन-पूजनार्चन, B
२५	५०	७	०३	१७	२३	२३	२२	8	कं. १५।०५	७	२२	०४	२३	५७	०१	३३	१३	०६	प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)
२५	४८	७	०४	१७	२३	२४	२३	9	कन्या	७	२३	०५	२०	५८	२	२८	१३	५२	भद्रा २१।१५ से, शतभिषा में मंगल प्रवेश २१।२३, महावीर स्वामी दीक्षा दि.
२५	४७	७	०५	१७	२४	२५	२४	10	तु. १८।०९	७	२४	०६	१८	५९	३	२४	१४	३७	भद्रा ८।१६ तक, ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश २५।५८, उत्पत्ति एकादशी व्रत C
०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी क्षय:
२५	४६	७	०५	१७	२४	२६	२५	11	तुला	७	२५	०७	१७	[illegible]	४	१९	१५	२३	मूल धनु में बुध प्रवेश २८।१७, उत्पत्ति एकादशी व्रत (वै.)
२५	४५	७	०६	१७	२४	२७	२६	12	वृ. २२।१२	७	२६	०८	१७	१	५	१५	१६	०८	भद्रा २७।३८ से, प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर महाराज पुण्य तिथि
२५	४५	७	०७	१७	२४	२८	२७	13	वृश्चिक	७	२७	०९	१८	३	६	१२	१६	५४	भद्रा १५।०९ तक, मास शिवरात्रि व्रत, मेला पुरमण्डल देविका स्नान D
२५	४४	७	०७	१७	२५	२९	२८	14	ध. २८।०२	७	२८	१०	२१	३	७	०६	१७	३९	देवपितृकार्याऽमावस्या, कमला जयंती, जुमातुल विदा (मु.)

A सुन्दरी व्रत, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस B झंडा दिवस, शहादत हजरती अली (मु.) C (स्मार्त), पद्म प्रभु मोक्ष दिवस (जैन) D (जम्मू कश्मीर), श्री बाला जयंती, शब्बे-ए-कदर (मु.)

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

मार्गशीर्ष कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ दिसं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	१०	७	२	७	१	२	८	९	९	७
२२	२४	५	२३	११	१३	१७	३	३	२७	१२	२१
४	१९	२७	४७	४८	४	१४	०५	०५	३८	०९	१५
२३	५६	२३	३२	३६	४०	२५	७	७	१८	२१	१९
६०	[illegible]	४३	९४	८	०५	४	३	३	१	१	२
५९	५७	४१	२४	३०	२९	५४	११	११	५३	३६	१८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

कुण्डली (ता. ८ दिसं.): ९ के., ७, १० ह.ने., प्लू., ६, ८ सू. बु.शु., ५ चं., ११ मं., २ श., १२, ४, १, ३ गु.रा.

इस पक्ष में सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, प्लूटो का केन्द्र योग बना हुआ है। जिससे संसार में कहीं प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, यान दुर्घटना से जन धन की हानि होगी। कहीं रोगोत्पात, महामारी से जनता पीड़ित रहेगी। पश्चिमी देशों में उपद्रव अधिक होंगे। अरब राष्ट्र, इजरायल, ईरान, स्पेन, फ्रांस में अशुभ फलों की अधिकता रहेगी. ता. ११ दिसम्बर को मध्य रात्रि बाद बुध धनु राशि में प्रवेश करने से वनचर जातियों का नाश तथा राज प्रजा में गतिरोध पैदा होगा। यथा—**धने मीने बुधो याति मारयति मृगानगजान्। राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति॥** शासकों में वैर विरोध होने से एक दूसरे को नीचा दिखाने में नहीं चूकेंगे तथा आणुविक प्रतिस्पर्धा की होड़ बढ़ेगी। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में कुम्भ का मंगल आने से अनाज, जौं, गेहूं, चना, सोना, गुड़, खांड में तेजी तथा रुई, चांदी, चावल में विशेष घटाबढ़ी होगी। ता. १० दिसम्बर को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र पर आने से तथा एकादशी तिथि का क्षय होने से सोना, चांदी, तिल, तेल, चावल में मंदी की चाल निकलेगी। धान्यों में साधारण तेजी बनी रहेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पहाड़ों पर हिमपात व भूस्खलन होने से पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, उ.प्र. बिहार में शीत प्रकोप बढ़ने लगेगा। दक्षिणी पूर्वी राज्यों में वायु के साथ साधारण वर्षा के योग हैं। पक्षान्त में कहीं-कहीं श्रेष्ठ बादल चाल होगी। **शकुन विचार**—मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को बादल, मेघ घटायें उठें तो वर्षा से कृषि में हानि होती है। जिससे धान्यों में तेजी हो। तिथि सप्तमी को रात दिन आकाश साफ रहे तो आगे वैशाख में अनाज मन्दा हो तथा यदि बादल हो तो अनाज तेज होगा।

कुण्डली (ता. १४ दिसं.): ९ बु.के., ७, १० ह.ने., ६, ८ सू.चं. प्लू.शु., ५, ११ मं., २ श., १२, ४, १, ३ गु.रा.

ता. १४ दिसं. ❖ मार्गशीर्ष कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	७	१०	८	२	७	१	२	८	९	९	७
२८	१७	९	३	११	२०	१६	३	३	२७	१२	२१
१०	३५	०९	१३	७	३७	०५	२६	२६	५०	५९	२९
२१	२४	४८	०९	४०	३७	१८	२	२	१७	२१	८
६१	[illegible]	४३	९४	७	७५	४	३	३	२	१	२
३	२१	४९	४०	१२	३१	४६	११	११	८	०५	१७
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१९ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १५ से ३० दिसम्बर सन् २००१ ई., राष्ट्रीय मिति २४ मार्ग. से ९ पौष तक। रवि द.-उत्तरायने, दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

रा.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.					चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि				रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२४	१	श	४८	१०	२६	२४	मृ	५४	००	२८	४४	ग	५३	१२	२८	२५	कि	१७	५५	१४	१८	२५	४३	७	०८	१७	२५	१	२९	15	धनु	७	२९	११	२४	[illegible]	७	४६	१८	२८	मूल धनु में सूर्य प्र. २४।३६, संक्रांति मु. ३०, वक्री रोहिणी २ में शनि प्र. A
२५	२	र	४९	४७	२७	०३	पू.षा	५७	०७	२९	५१	वृ	५१	३५	२७	४६	बा	१८	४७	१४	३९	२५	४३	७	०८	१७	२६	२	३०	16	धनु	८	००	१२	२७	४	८	२५	१९	०९	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, धनु मलमास प्रारम्भ
२६	३	चं	५२	४७	२८	१६	उ.षा	६०	००	-	-	ध्रु	५१	००	२७	३३	तै	२१	०७	१५	३६	२५	४२	७	०९	१७	२६	३	स.	17	म. १२।२३	८	०१	१३	३१	५	९	०५	२०	०६	सव्वाल मु. मास १० प्रारम्भ, ईदुलफितर-ईद (मु.)
२७	४	मं	५७	०७	३०	०१	उ.षा	१	३२	७	४७	व्या	५१	२५	२७	४४	व	२४	४७	१७	०५	२५	४२	७	१०	१७	२६	४	२	18	मकर	८	०२	१४	३६	५	९	४४	२१	०३	भद्रा १७।०५ से ३०।०१ तक, शुक्र वृद्धत्व प्रारम्भ १२।५७, अंगारक चतुर्थी B
२८	५	बु	६०	००	-	-	श्र	७	१५	१०	०४	ह	५२	४२	२८	१५	व	२९	४५	१९	०४	२५	४१	७	१०	१७	२७	५	३	19	कुं. २३।२३	८	०३	१५	४१	६	१०	२४	२२	००	गुरु तेगबहादुर बलिदास दिवस (प्रा. मत से), पंचक प्रा. २३।२३ से
२९	५	गु	२	३५	८	१३	ध	१३	५७	१२	४६	व	५४	३२	२९	००	बा	२	३५	८	१३	२५	४१	७	११	१७	२७	६	४	20	कुंभ	८	०४	१६	४७	६	११	०३	२२	५७	पू.षा. में बुध प्र. १४।४३, नाग पंचमी (दक्षिण भारत में), श्री राम विवाहोत्सव
३०	६	शु	८	४५	१०	४१	श	२१	१५	१५	४१	मि	५६	३७	२९	५०	तै	८	४५	१०	४१	२५	४१	७	११	१७	२८	७	५	21	कुंभ	८	०५	१७	५३	७	११	४३	२३	५६	मूल धनु में शुक्र प्रवेश १६।१४, सायन मकर में सूर्य प्रवेश २४।५३, C
पौष	७	श	१५	०५	१३	१४	पू.भा	२८	३५	१८	३८	व्य	५८	३२	३०	३७	व	१५	०५	१३	१४	२५	४१	७	१२	१७	२८	८	६	22	मी. ११।५५	८	०६	१९	००	६	१२	२२	२४	५१	भद्रा १३।१४ से २६।२८ तक, रा. पौष मास प्रा., रवि उत्तरायणे, शिशिर D
२	८	र	२१	०५	१५	३८	उ.भा	३५	३२	२१	२५	व	५९	५५	३१	१०	ब	२१	०५	१५	३८	२५	४२	७	१२	१७	२९	९	७	23	मीन	८	०७	२०	०६	७	१३	०२	१	३९	श्री दुर्गाष्टमी, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
३	९	चं	२६	०७	१७	४०	रे	४१	२५	२३	४७	प	६०	००	-	-	कौ	२६	०७	१७	४०	२५	४२	७	१३	१७	२९	१०	८	24	मे. २३।४७	८	०८	२१	१३	७	१३	४२	२	२८	महानन्दा नवमी, कल्पादि ९, जैन दिवाकर चौथ पुण्य, पंचक समा. २३।४७
४	१०	मं	२९	४७	१९	०८	अ	४५	५७	२५	३६	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	२९	४७	१९	०८	२५	४२	७	१३	१७	३०	११	९	25	मेष	८	०९	२२	२०	७	१४	२२	३	१७	श्रवण २ में नेपच्यून प्र. ८।४८, श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन) E
५	११	बु	३१	४५	१९	५६	भ	४८	४७	२६	४५	सि	५७	३२	३०	१५	व	०	५७	७	३७	२५	४३	७	१४	१७	३१	१२	१०	26	मेष	८	१०	२३	२७	७	१५	०२	४	०६	भद्रा ७।३७ से १९।५६ तक, मोक्षदा एका. व्रत (सब.), मौनी एकादशी F
६	१२	गु	३१	५५	२०	००	कृ	४९	५५	२७	१२	सा	५४	०५	२८	५२	ब	२	०२	८	०३	२५	४३	७	१४	१७	३१	१३	११	27	वृ. ८।५६	८	११	२४	३४	७	१५	४२	४	५५	पू.भा. में मंगल प्र. २७।०८, बुध पश्चिम में उ. २१।२१, अखण्ड द्वादशी, G
७	१३	शु	३०	१७	१९	२१	रो	४९	१७	२६	५७	शुभ	४९	१७	२६	५७	कौ	१	२०	७	४६	२५	४४	७	१४	१७	३२	१४	१२	28	वृष	८	१२	२५	४१	७	१६	२२	५	४१	पू.षा. में सूर्य प्रवेश २६।५०, उ.षा. में बुध प्रवेश २४।१६, प्रदोष व्रत, H
८	१४	श	२७	००	१८	०३	मृ	४७	१०	२६	०७	शु	४३	१०	२४	३१	व	२७	००	१८	०३	२५	४५	७	१५	१७	३३	१५	१३	29	मि. १४।३६	८	१३	२६	४८	७	१७	०२	६	३३	भद्रा १८।०३ से २९।१२ तक, त्रिपुर भैरव जंयती, संभव नाथ जयंती, J
९	१५	र	२२	२२	१६	१२	आ	४३	४७	२४	४६	ब्र	३६	०७	२१	४२	ब	२२	२२	१६	१२	२५	४५	७	१५	१७	३३	१६	१४	30	मिथुन	८	१४	२७	५५	७	१७	४२	७	२१	मकर में बुध प्रवेश २७।१३, सत्यव्रतं, पूर्णिमा पुण्यं, अन्नपूर्णा जयंती

A ८।१२, मृगशिर ३ में राहु मूल १ में केतु प्र. २६।५९, सौर पौष मासारंभ, रुद्र व्रत (पीडिया व्रत), सरदार पटेल ज. B व्रत, विनायक ४ व्रत, संत घासीदास जयंती **C शुक्र पूर्व में अस्त** १२।५७, स्कन्द षष्ठी व्रत, श्रीरामकलेवा, चम्पा षष्ठी (महा.), गुहा ६ व्रत, मूलक रूपिणी षष्ठी (बंगाल) D ऋतु प्रा., मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज., व्यतिपात पुण्यं **E क्रिसमस डे, ईसा ज.**, महामना मदनमोहन मालवीय ज. F (जैन), श्री गीता जयंती, मातंगी जयंती, बैकुण्ठ एकादशी, मेला जोड़ प्रारम्भ ३ दिन का (पंजाब) G व्यंजन द्वादशी, कृतिका दीपम् H गुरु ग्रंथ साहिब व वार्षिक उत्सव, जोड़ मेला समाप्त J पिशाच मोचन श्राद्ध, श्री दत्तात्रेय जयंती

मार्गशीर्ष शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ दिसंबर **[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]** **ता. ३० दिसं. ❖ मार्गशीर्ष शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	१०	८	२	८	१	२	८	९	९	७
७	८	१६	१७	१७	१	१६	२	२	२८	१३	२१
२०	४३	२४	२९	५१	५७	३	५७	५७	११	१५	४९
६	१०	४२	२५	३९	१५	४८	२५	२५	१	५१	३५
६१	[illegible]	४३	९५	७	७५	४	३	३	२	१	२
७	१९	५५	२६	५५	३०	२२	११	११	३०	५६	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१०ह.ने.
८ प्लू.
मं.११
७
९सू.बु. शु.के.
६
१२ चं.
३गु. रा.
१
५
२ श.
४

इस पक्ष में तिथि प्रतिपदा को धनु संक्रांति लगने से पृथ्वी पर अराजकता, प्राकृतिक प्रकोप, दुर्भिक्ष भय बढ़ेगा। मंहगाई की वृद्धि सुरसा के मुख के समान बढ़ती रहेगी। जिस पर सरकारी अंकुश कमजोर पड़ता दिखाई देगा। मार्गशीर्ष मास में धनु संक्रांति लगने का फल—**मार्गशीर्षे धनुषिहि यदाऽऽयाति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयं विपरीतात्सुखं भवेत्॥** यहां धनु राशि में चार ग्रहों का योग तथा ता. २१ दिसंबर को शुक्र का अस्त राक्षस गण के नक्षत्र में हो रहा है। जिससे हिन्दू देशों में भय, विग्रह, अराजकता एवं युद्धादि का खतरा बढ़ेगा। मिश्र देश में अन्नादि की कमी तथा मारवाड़ देश में दुर्भिक्ष का भय व्यापेगा। प्राचीन आचार्यों ने राक्षस गण में शुक्र के अस्त होने का फल इस प्रकार लिखा है। **शुक्रास्ते राक्षस गणे हिन्दु देशेषु विग्रहः। खर्प्परे राज युद्धानि मिश्र देशेऽन्नविग्रहः॥ तेजी मन्दी विचार**—पक्ष के प्रारम्भ में रुई, सूत, कपास, चावल, जौ, गेहूं, मूंग, मोंठ, बाजरा में घटाबढ़ी से तेजी का झटका आयेगा। जिसे धनु राशि का शुक्र यथावत् बनाये रखेगा। इस तेजी का लाभ बाजार रुख देखकर उठावें। पक्षान्त में बुध का उदय घटाबढ़ी की चाल बनायेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में शुक्र का अस्त तथा बुध का उदय बादल, वर्षा, हिमपात कारक है। पूर्वोत्तरीय राज्यों में वर्षा व शीतलहर का प्रकोप बढ़ेगा। राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब में कहीं कहीं वर्षा या ओलावृष्टि से कृषि में हानि होगी। **शकुन विचार**—मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी को बादल चाल और बिजली चमके तो आगे आने वाले वर्ष के श्रावण मास में अच्छी वर्षा हो। मार्गशीर्ष सुदी में जिन नक्षत्रों में वर्षा होवे उन्हीं नक्षत्रों में आषाढ़ मास में वर्षा होती है।

१०ह.ने.
८प्लू.
११मं.
७
९सू.बु. शु.के.
६
१२
३चं. रा.गु.
१
५
२श.
४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	१०	८	२	८	१	२	८	९	९	७
१४	८	२१	२८	१७	१०	१५	२	२	२८	१३	२२
२७	३८	३२	३५	३	४५	३४	३५	३५	२९	२९	५
५५	११	११	३	२८	४६	२७	९	९	१२	४५	२
६१	८५०	४३	९३	८	७५	३	३	३	२	२	२
७	३२	५५	५२	७	३०	५७	११	११	४३	३	१०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौष कृष्ण पक्ष-२०

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. ३१ दिसं. २००१ से १३ जनवरी २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २३ पौष तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१०	१	चं	१६	४०	१३	५५	पुन	३९	२७	२३	०२	ऐं	२८	१२	१८	३२	कौ	१६	४०	१३	५५	२५	४६	७	१५	१७	३४	१७	१५	31	क. १७।३०	८	१५	२९	०२	[illegible]	१८	२२	८	१०	पू.षा. में शुक्र प्र. ३०।३२, ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व न्यू इयर इव
११	२	मं	१०	१०	११	२०	पु	३४	३०	२१	०४	वै	१९	४५	१५	१०	ग	१०	१०	११	२०	२५	४७	७	१६	१७	३५	१८	१६	J1	कर्क	८	१६	३०	०९	८	१९	२५	८	५५	भद्रा २१।५९ से, वक्री आर्द्रा ३ में गुरु प्रवेश २६।५०, नववर्ष दिवस, जन. A
१२	३	बु	३	१७	८	३५	श्ले	२९	२२	१९	०१	वि	११	०२	११	४१	वि	३	१७	८	३५	२५	४९	७	१६	१७	३५	१९	१७	2	सिं. १९।०१	८	१७	३१	१७	८	२०	२५	९	४०	भद्रा ८।३५ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
०	४	बु	५६	२२	२९	४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षयः
१३	५	गु	४९	४०	२७	०८	म	२४	१५	१६	५८	प्री	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	२२	५७	१६	२७	२५	५०	७	१६	१७	३६	२०	१८	3	सिंह	८	१८	३२	२५	९	२१	२५	१०	२५	
१४	६	शु	४३	२५	२४	३८	पू.फा	१९	३२	१५	०५	सौ	४५	४०	२५	३२	ग	१६	२७	१३	५१	२५	५१	७	१६	१७	३७	२१	१९	4	कं. २०।३९	८	१९	३३	३४	९	२२	२५	११	१०	भद्रा २४।३८ से,
१५	७	श	३७	५२	२२	२५	उ.फा	१५	२५	१३	२६	शो	३८	०७	२२	३१	वि	१०	३२	११	२९	२५	५३	७	१६	१७	३७	२२	२०	5	कन्या	८	२०	३४	४३	८	२३	२५	११	५५	भद्रा ११।२९ तक, गुरु गोविन्द सिंह ज. (शिरोमणि कमेटी अमृतसर अनुसार)
१६	८	र	३३	१०	२०	३३	ह	१२	०५	१२	०७	अ	३१	१२	१९	४६	बा	५	२५	९	२७	२५	५४	७	१७	१७	३८	२३	२१	6	तु. २३।३५	८	२१	३५	५१	९	२४	२४	१२	४०	श्रवण में बुध प्र. १९।३२, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिन सागर पुण्य तिथि
१७	९	चं	२९	३०	१९	०५	चि	९	४०	११	०९	सु	२५	०७	१७	२०	तै	१	१२	७	४६	२५	५६	७	१७	१७	३९	२४	२२	7	तुला	८	२२	३७	००	९	१	२४	१३	२५	भद्रा ३०।३० से,
१८	१०	मं	२६	५०	१८	०१	स्वा	८	१५	१०	३५	धृ	१९	५०	१५	१३	वि	२६	५०	१८	०१	२५	५७	७	१७	१७	४०	२५	२३	8	वृ. २८।२६	८	२३	३८	०९	१०	२	२३	१४	१०	भद्रा १८।०१ तक, श्री पार्श्वनाथ जयंती
१९	११	बु	२५	१२	१७	२२	वि	७	५२	१०	२६	शू	१५	२५	१३	२७	बा	२५	१२	१७	२२	२५	५९	७	१७	१७	४१	२६	२४	9	वृश्चिक	८	२४	३९	१९	९	३	२२	१४	५५	सफला एकादशी व्रत (सबका)
२०	१२	गु	२४	४०	१७	०९	अनु	८	३०	१०	४१	गं	११	४७	१२	००	तै	२४	४०	१७	०९	२६	१	७	१७	१७	४१	२७	२५	10	वृश्चिक	८	२५	४०	२८	१०	४	२१	१५	४०	उ.षा. में सूर्य प्रवेश २८।५२, मीन में मंगल प्रवेश १९।१४, प्रदोष व्रत
२१	१३	शु	२५	१०	१७	२१	ज्ये	१०	१०	११	२१	वृ	८	५७	१०	५२	व	२५	१०	१७	२१	२६	३	७	१७	१७	४२	२८	२६	11	ध. ११।२१	८	२६	४१	३८	९	५	२१	१६	२४	भद्रा १७।२१ से २९।३६ तक, उ.षा. में शुक्र प्रवेश २०।५२, श्री चन्द्र B
२२	१४	श	२६	४२	१७	५८	मू	१२	५०	१२	२५	ध्रु	६	५७	१०	०४	श	२६	४२	१७	५८	२६	५	७	१७	१७	४३	२९	२७	12	धनु	८	२७	४२	४७	९	६	२०	१७	०८	
२३	३०	र	२९	१७	१९	००	पू.षा	१६	३२	१३	५४	व्या	५	४५	९	३५	ना	२९	१७	१९	००	२६	७	७	१७	१७	४४	३०	२८	13	म. २०।२०	८	२८	४३	५६	८	७	२०	१७	५२	देवपितृकार्याऽमावस्या, बकुला अमावस्या (उड़ीसा), लोहड़ी उत्सव C

A मा. १ ता. ३१ सन् २००२ ई. प्रारम्भ, वैधृति पुण्यं, उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में) B प्रभु जयंती (जैन), मास शिवरात्रि व्रत C (पंजाब व जम्मू कश्मीर में), भोगी (दक्षिण भारत में)

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

पौष कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ६ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	१०	९	२	८	१	२	८	९	९	७
२१	१९	२६	९	१६	१९	१५	२	२	२८	१३	२२
३५	२७	३९	१०	६	३४	८	१२	१२	४४	४४	१९
५१	३७	२८	०६	०२	१३	२८	५३	५३	५६	२५	५४
६१	[illegible]	४३	८४	८	७५	३	३	३	२	२	२
९	९	५२	१०	२	३०	२३	११	११	५७	८	४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ६ जनवरी): ९ सू. शु. के. | १० बु. ह. ने. | ११ मं. | १२ | १ | २ श. | ३ गु. रा. | ४ | ५ | ६ चं. | ७ | ८ प्लू.

इस मास में राहु केतु के अन्तर्गत प्लूटो को छोड़कर सभी ग्रह चलने से काल सर्प योग बनेगा। जो आगामी ५० दिन तक चलेगा। इसके परिणाम स्वरूप पश्चिमी राष्ट्रों में राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्धों में परिवर्तनकारी घटनाएं उत्पन्न होंगी। भारत में राजनैतिक उथल-पुथल अनेक राज्यों में दिखाई देगा। कुछ राज्यों में अशांति, आन्दोलन, प्रकृति प्रकोप से प्रजा को कष्ट होगा। वियतनाम, मिश्र, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान में कहीं विग्रह, भूकम्प, बम विस्फोट से जन धन की हानि होगी। यहां पक्षान्त में धनु राशि में चार ग्रहों का योग तथा अमावस्या रविवार की होना भी अच्छा नहीं है। अमावस्या रविवार की होने का फल—अमावस्या सहस्यस्य शनि सूर्यारिवासरे। यदि स्याद्भयमा देश्यं तदा सस्य महर्घता॥ प्रजा में रोग पीड़ा एवं वैर विरोध की बढ़ोत्तरी होगी। मंहगाई में वृद्धि होने से आम जनता का जीना दूभर होगा।

ता. १३ जनवरी ❖ पौष कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १३ जनवरी): ९ सू. चं. शु. के. | १० ह. बु. ने. | ११ | १२ मं. | १ | २ श. | ३ गु. रा. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ प्लू.
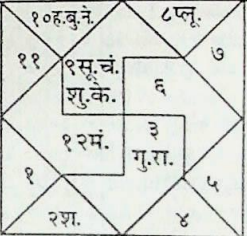
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	८	११	९	२	८	१	२	८	९	९	७
२८	२२	१	१७	१५	२८	१४	१	१	२९	१३	२२
४३	१७	४६	४१	११	२२	४६	५०	५०	१०	५९	३४
५६	२५	२५	५	२१	३८	३४	३७	३७	३	३९	१
६१	[illegible]	४३	५१	७	७५	२	३	३	३	२	१
८	१६	४९	२८	३९	२९	४५	११	११	७	१३	५७
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तेजी मन्दी विचार—पक्षारम्भ में अनाज, जौ, गेहूं, बाजरा, मूंग, मोंठ, मूंगफली, अलसी, तेल में मंदी की चाल निकलेगी। जिसमें ता. ६ जनवरी को श्रवण का बुध आने से घटाबढ़ी होगी तथा पक्षान्त में मीन का मंगल आने से बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। धातु पदार्थों में अच्छी तेजी की चाल बनेगी। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, नेपाल, बंगाल में सामान्य वर्षा तथा दिल्ली, बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, गुजरात में बादलचाल या बूंदाबादी होगी। शीत प्रकोप से कहीं-कहीं फसल को हानि संभव है। **शकुन विचार**—पौष कृष्ण पंचमी को यदि बादल वर्षा हो तो धान्यादि में मंदी [illegible]

पौष शुक्ल पक्ष-२१ श्री सं. २०५८ ... ता. १४ से २८ जनवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ पौष से

पौष शुक्ल पक्ष-२१

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १४ से २८ जनवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ पौष से ८ माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	द. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	संदर्भ
२४	१	चं	३२	५५	२०	२७	उ.षा	२१	१२	१५	४६	ह	५	२०	९	२५	किं	०	५७	७	४०	२६	९	७	१७	१७	४५	१	२९	14	मकर	८	२९	४५	०४	[illegible]	८	०३	१८	३६	मकर में सूर्य प्रवे. ११।२२, संक्रांति मु. ४५, मकर में शुक्र प्र. १२।२८, A
२५	२	मं	३७	३२	२२	१८	श्र	२६	५०	१८	०१	व	५	४०	९	३३	बा	५	०७	९	२०	२६	१२	७	१७	१७	४५	२	३०	15	कुं. ३१।१६	९	००	४६	१२	८	८	४६	१९	३०	उ.भा. में मंगल प्र. ८।४६, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, पंचक प्रा. ३१।१६ से
२६	३	बु	४३	०२	२४	३०	ध	३३	१७	२०	३६	सि	६	४२	९	५८	तै	१०	१२	११	२२	२६	१४	७	१७	१७	४६	३	जि.	16	कुंभ	९	०१	४७	२०	७	९	२९	२०	२४	जिल्काद मु. मास ११ प्रा., श्री यतीन्द्र सुरीश्वर पुण्यं त्रिस्तुति (जैन)
२७	४	गु	४९	१२	२६	५७	श	४०	२७	२३	२७	व्य	८	२२	१०	३७	व	१६	०५	१३	४२	२६	१७	७	१६	१७	४७	४	२	17	कुंभ	९	०२	४८	२७	७	१०	१२	२१	१८	भद्रा १३।४२ से २६।५७ तक, विनायक ४ व्रतं, व्यतिपात पुण्यं
२८	५	शु	५५	४०	२९	३२	पू.भा	४७	५७	२६	२७	व	१०	२२	११	२५	ब	२२	२५	१६	१४	२६	१९	७	१६	१७	४८	५	३	18	मी. ११।४२	९	०३	४९	३४	५	१०	५५	२२	१२	वक्री बुध २३।०१
२९	६	श	६०	००	-	-	उ.भा	५५	२०	२९	२४	प	१२	३२	१२	१७	कौ	२८	५२	१८	४९	२६	२२	७	१६	१७	४९	६	४	19	मीन	९	०४	५०	३९	५	११	३८	२३	०६	
३०	६	र	१	५७	८	०३	रे	६०	००	-	-	शि	१४	३२	१३	०५	तै	१	५७	८	०३	२६	२४	७	१६	१७	५०	७	५	20	मीन	९	०५	५१	४४	४	१२	२१	२४	००	सायन कुंभ में सूर्य प्रवेश ११।५३, षष्ठी वृद्धि
माघ	७	चं	७	४०	१०	२०	रे	२	१२	८	०१	सि	१५	५७	१३	३९	व	७	४०	१०	२०	२६	२७	७	१६	१७	५०	८	६	21	मे. ८।०९	९	०६	५२	४८	३	१३	०४	२४	५७	भद्रा १०।२० से २३।१८ तक, बुध पश्चिम में अस्त ९।५९, पंचक समा. B
२	८	मं	१२	१२	१२	०८	अ	८	०२	१०	२८	सा	१६	३२	१३	५२	ब	१२	१२	१२	०८	२६	३०	७	१५	१७	५१	९	७	22	मेष	९	०७	५३	५१	२	१३	४६	१	४८	श्रवण में शुक्र प्रवेश ११।२०, दुर्गाष्टमी, भौमाष्टमी
३	९	बु	१५	०७	१३	१८	भ	१२	१७	१२	१०	शुभ	१५	५०	१३	३५	कौ	१५	०७	१३	१८	२६	३३	७	१५	१७	५२	१०	८	23	वृ. १८।३०	९	०८	५४	५३	१	१४	२८	२	४२	श्रवण में सूर्य प्रवेश ३१।०७, श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती
४	१०	गु	१६	०५	१३	४१	कृ	१४	४५	१३	०१	शु	१३	४०	१२	४३	ग	१६	०५	१३	४१	२६	३६	७	१५	१७	५३	११	९	24	वृष	९	०९	५५	५४	०	१५	१०	३	३६	भद्रा २५।३५ से, शाम्ब दशमी (उड़ीसा), आचार्य जिन सागर पुण्य दिवस (जैन)
५	११	शु	१५	०५	१३	१६	रो	१५	१५	१३	२०	ब्र	९	५७	११	१३	वि	१५	०५	१३	१६	२६	३९	७	१४	१७	५४	१२	१०	25	मि. २५।०८	९	१०	५६	५४	६०/५९	१५	५२	४	३०	भद्रा १३।१६ तक, पवित्रा (पुत्रदा) एका. व्रत (सब.), मन्वादि ११, C
६	१२	श	११	५७	१२	०१	मृ	१३	४५	१२	४४	ऐं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	११	५७	१२	०१	२६	४२	७	१४	१७	५५	१३	११	26	मिथुन	९	११	५७	५३	५८	१६	३४	५	२४	शनि प्रदोष व्रत, भारतीय गणतंत्र दिवस, वैधृति पुण्यं
७	१३	र	७	०५	१०	०३	आ	१०	३०	११	२५	वि	४९	४०	२३	०५	तै	७	०५	१०	०३	२६	४५	७	१३	१७	५५	१४	१२	27	क. २८।०१	९	१२	५८	५१	५७	१७	१६	६	१८	
८	१४	चं	०	३२	७	२६	पुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्री	४०	३०	२३	२५	व	०	३२	७	२६	२६	४८	७	१३	१७	५६	१५	१३	28	कर्क	९	१३	५९	४८	५६	१७	५८	७	१८	भद्रा ७।२६ से १७।५७ तक, धनिष्ठा ३ कुंभ में हर्शल प्रवेश १४।०३, पौषी D
०	१५	चं	५२	५२	२८	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा क्षय:

A मकर संक्रांति, गंगासागर यात्रा, पोंगल पर्व (दक्षिण भारत), मलमास समाप्त, माघ बिहु (आसाम), सौर माघ मासारंभ, तिल संक्रांति B ८।०९, श्री गुरु गोविन्द सिंह जयंती (प्रा. मत से), राष्ट्रीय माघ मासारंभ, श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म पुण्यं जैन C वैकुण्ठ एकादशी (द.भा. में) D पूर्णिमा, सत्यव्रत, माघ स्नान प्रारम्भ, पूर्णिमा पुण्यं, शाकम्भरी जयंती, काशीघाट दशाश्वमेध स्नानारंभ, लाला लाजपतराय जयंती

पौष शु. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २२ जनवरी **[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]** **ता. २८ जनवरी ❖ पौष शु. १४ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	११	९	२	९	१	२	८	९	९	७
७	१०	८	१९	१४	९	१४	१	१	२९	१४	२२
५३	४७	२०	३९	५	४१	२५	२२	२२	३८	१९	५०
५१	३१	१२	२३	४३	३९	२१	१	१	५०	५१	४७
६१	[illegible]	४३	४१	६	७५	१	३	३	३	२	१
२	२२	४०	३१	४५	२४	५०	११	११	१८	१६	४५
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २२ जनवरी): ११ | ९के. | सू.१० | ८प्लू. | १२ मं. | बु.शु. ह.ने. | ७ | १चं. | ४ | २श. | ६ | ३गु.रा. | ५

इस पक्ष के आरम्भ से मकर राशि में पांच ग्रहों का योग बनेगा। जिसका फल—**एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः।प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा ॥** संसार में राजनैतिक व सामाजिक तनाव बढ़ेंगे। श्रमिक वर्ग को उनकी मजदूरी पूर्ण रूप से नहीं मिलेगी। जिससे आन्दोलन, अराजकता का वातावरण बढ़ेगा। बेरोजगारी, उत्पात, हिंसा कांड, हत्या, लूटपाट की वारदातें अधिक होंगी। भारत सहित विश्व के अनेक देश चीन, जापान, अफ्रीका, मिश्र, इजरायल, श्रीलंका, ईरान, ईराक, पाकिस्तान आदि इससे अधिक पीड़ित होंगे। कहीं आंतरिक विद्रोह से शासन परिवर्तन तथा आपसी सम्बन्धों में कटुता बढ़ेगी। **तेजी मन्दी विचार**—पौष शुदी में षष्ठी तिथि की वृद्धि तथा पूर्णिमा का क्षय मंदी को प्रोत्साहन देंगे। यथा—**जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके मंहगाई हट जाय॥** पक्षारंभ में मंगलवार का चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, रुई, सरसों, सूत, वस्त्रों में तेजी करेगा। जिसमें ता. १८ जनवरी को बुध वक्री होने से ओछी घटाबढ़ी की चाल निकलेगी। बुध का अस्त बाजार भावों को पुनः तेजी को ओर ले जाने में सक्षम होगा। इस तेजी का लाभ बाजार रुख देखते हुए अवश्य उठावें। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पूर्वोत्तरीय राज्यों सहित राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब में बादल चाल, मेघ गर्जना और वर्षा होगी। पहाड़ों पर हिमपात होने से मैदानी भागों में शीतलहर चलेगी। कुछ स्थानों पर पाला पड़ने की संभावना है। **शकुन विचार**—पौष शुक्ल सप्तमी से अगले दो दिन में यदि बादल, बिजली व गर्जना हो तो आगे चौमासा में श्रेष्ठ वर्षा की अधिकता रहती है। पूर्णिमा को यदि आकाश बादलों से ढका रहे तथा बिजली चमके तो धान्यादि का उत्पादन अच्छा होवे।

कुण्डली (ता. २८ जनवरी): ११ | ९के. | १०सू. | ८प्लू. | १२मं. | बु.शु. ह.ने. | ७ | १ | ४ चं. | २श. | ६ | ३गु.रा. | ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	११	९	२	९	१	२	८	९	९	७
१३	०	१२	१३	१३	१७	१४	१	१	२९	१४	२३
५९	५४	४१	३१	२७	१३	१५	२	२	५८	३३	००
४८	१	४८	१	१०	५४	५६	५५	५५	४८	२९	५७
६०	८८६	४३	७५	५	७५	१	३	३	३	०	१
५६	१२	३१	३८	५६	२०	११	११	११	२२	१६	३७
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघ कृष्ण पक्ष-२२ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २१ जनवरी से १२ फरवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ माघ तक। रवि उत्तरायने, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र	मु	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
९	१	मं	४४	३०	२५	००	श्ले	५३	०५	२८	२६	आ	३०	४२	१९	२९	बा	१८	४७	१४	४३	२६	५१	७	१२	१७	५७	१६	१४	29	सिं. २८।२६	९	१५	००	४४	[illegible]	१८	४०	८	०२	वक्री आर्द्रा २ में गुरु प्रवेश १०।३७
१०	२	बु	३५	४५	२१	३०	म	४६	१०	२५	४०	सौ	२०	३०	१५	२४	तै	१०	०७	११	१५	२६	५४	७	१२	१७	५८	१७	१५	30	सिंह	९	१६	०१	३९	५४	१९	३४	८	४६	वक्री उ.षा. में बुध प्रवेश २६।२८, महात्मा गांधी निर्वाण दिवस, सर्वोदय A
११	३	गु	२७	०५	१८	०२	पू.फा	३९	२७	२२	५९	शो	१०	१७	११	१९	व	१	२२	७	४५	२६	५८	७	१२	१७	५९	१८	१६	31	कं. २८।२१	९	१७	०२	३३	५४	२०	२८	९	३०	भद्रा ७।४५ से १८।०२ तक, संकष्ट कृष्ण चतुर्थी व्रत
१२	४	शु	१९	०२	१४	४८	उ.फा	३३	२७	२०	३४	अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	१९	०२	१४	४८	२७	१	७	११	१८	००	१९	१७	F1	कन्या	९	१८	०३	२७	५२	२१	२२	१०	१४	धनिष्ठा में शुक्र प्र. २६।१०, फरवरी मास २ ता. २८, मेला मस्तुआणा (पं.)
१३	५	श	११	५५	११	५६	ह	२८	२५	१८	३२	धृ	४२	५५	२४	२०	तै	११	५५	११	५६	२७	४	७	१०	१८	००	२०	१८	2	तु. २१।१३	९	१९	०४	१९	५२	२२	१६	१०	५८	रेवती में मंगल प्रवेश १७।०४, बुध पूर्व में उदय २७।४१, दस्तकार दिवस
१४	६	र	५	५७	९	३३	चि	२४	४०	१७	०२	शू	३५	४०	२१	२६	व	५	५७	९	३३	२७	८	७	१०	१८	०१	२१	१९	3	तुला	९	२०	०५	११	५१	२३	१०	११	४२	भद्रा ९।३३ से २०।३४ तक
१५	७	चं	१	३०	७	४५	स्वा	२२	२५	१६	०७	गं	२९	४२	१९	०२	व	१	३०	७	४५	२७	११	७	०९	१८	०२	२२	२०	4	तुला	९	२१	०६	०२	५०	२४	०४	१२	२६	स्वामी विवेकानन्द ज. व श्री रामानन्दाचार्य ज., कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
०	८	चं	५८	३२	३०	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी क्षय
१६	९	मं	५७	१५	३०	०३	वि	२१	४२	१५	५०	वृ	२४	५७	१७	०८	तै	२७	४२	१८	१४	२७	१५	७	०९	१८	०३	२३	२१	5	वृ. १।५१	९	२२	०६	५२	४९	२४	५८	१३	१०	
१७	१०	बु	५७	२७	३०	०७	अनु	२२	३२	१६	०९	ध्रु	२१	३०	१५	४४	व	२७	१२	१८	०१	२७	१८	७	०८	१८	०४	२४	२२	6	वृश्चिक	९	२३	०७	४१	४८	१	५४	१३	५३	भद्रा १८।०१ से ३०।०७ तक, धनिष्ठा में सूर्य प्रवेश १०।२२
१८	११	गु	५९	०२	३०	४४	ज्ये	२४	५०	१७	०३	व्या	१९	१०	१४	४७	ब	२८	०७	१८	२२	२७	२२	७	०७	१८	०४	२५	२३	7	ध. १७।०३	९	२४	०८	२९	४८	२	४८	१४	३६	कुंभ में शुक्र प्र. ९।४२, शुक्र पश्चिम में उ. २९।५५, षटतिला एका. व्रत स्मार्त
१९	१२	शु	६०	००	-	-	मू	२८	१७	१८	२६	ह	१७	४७	१४	१४	कौ	३०	१७	१९	१४	२७	२६	७	०७	१८	०५	२६	२४	8	धनु	९	२५	०९	१७	४६	३	४२	१५	१९	मार्गी बुध १६।४५, मार्गी शनि ८।५६, षट्तिला एकादशी व्रत वै., वंजुली B
२०	१२	श	१	५०	७	५०	पू.षा	३२	५२	२०	१५	व	१७	१७	१४	०१	तै	१	५०	७	५०	२७	३०	७	०६	१८	०६	२७	२५	9	म. २६।१६	९	२६	१०	०३	४६	४	३६	१६	०२	शनि प्रदोष व्रत
२१	१३	र	५	३५	९	१९	उ.षा	३८	१७	२२	२४	सि	१७	३२	१४	०६	व	५	३५	९	१९	२७	३३	७	०५	१८	०७	२८	२६	10	मकर	९	२७	१०	४९	४४	५	३०	१६	४५	भद्रा ९।१९ से २२।११ तक, ज्येष्ठा ३ में प्लूटो प्रवेश ९।४०, शुक्र बाल्यत्व C
२२	१४	चं	१०	१०	११	०८	श्र	४४	२५	२४	५०	व्य	१८	२२	१४	२५	श	१०	१०	११	०८	२७	३७	७	०४	१८	०७	२९	२७	11	मकर	९	२८	१०	३३	४२	६	२४	१७	२८	रटन्ती कालिका पूजन, व्यतिपात पुण्यं, पितृकार्याऽमावस्या
२३	३०	मं	१५	२२	१३	१३	ध	५१	०२	२७	२९	व	१९	३७	१४	५५	ना	१५	२२	१३	१३	२७	४१	७	०४	१८	०८	फा.	२८	12	कुं. १४।०८	९	२९	१२	१५	४२	७	१८	१८	११	कुंभ में सूर्य प्र. २४।२३, संक्रांति मु. ३०, शतभिषा में शुक्र प्रवेश १७।२१, D

A पखवाड़ा प्रारम्भ, बलिदान दिवस B महाद्वादशी व्रत, श्री शीतलनाथ जयंती (जैन) C समाप्त २९।५५, मेरु त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक (जैन), मास शिवरात्रि व्रत D भौमवती मौनी अमावस्या, देवकार्याऽमावस्या, द्वापरयुगादि, विशाल मेला हरिद्वार, दीनबन्धु एन्ड्रयूज जयंती, सर्वोदय मेला व पखवाड़ा समा., सौर फाल्गुन मासारंभ, पंचक प्रा. १४।०८ से

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

माघ कृ. ७ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	११	९	२	९	१	२	८	१०	९	७
२१	१३	१७	६	१२	२६	१४	०	०	०	१४	२३
६	५४	४५	१३	४८	१	९	४०	४०	२२	४९	११
२	२१	४९	५६	५२	२	५६	४०	४०	३७	२४	४०
६०	८११	४३	३४	४	७५	०	३	३	३	२	१
५०	२१	२०	१९	५०	१६	२४	११	११	२७	१६	२५
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ४ फरवरी): ११ह. ९के. मं. १२ १०सू. ८प्लू. बु.शु. ने. ७ चं. १ ४ २श. ६ ३गु.रा. ५

इस पक्ष की सप्तमी को स्वाति नक्षत्र का योग होने से प्रजा में सुख शांति तथा वर्षा की श्रेष्ठता रहेगी। यथा—**सप्तम्यां स्वाति योगे यदि पतति हिमं माघ मासान्धकारे। वायुर्वा चण्डवेगः सजल जल धरो वापि गर्जत्यत्रस्त्रम्॥** किन्तु इसी पक्ष में शुक्र का उदय राक्षस गण के नक्षत्र में तथा शनि मार्गी होने से अशुभ फलों की अधिकता रहेगी। राज प्रजा में अशांति, धार्मिक उन्माद तथा भूकम्प, अग्निकांड, बम विस्फोट से जनता को परेशानी बढ़ेगी। पूर्वोत्तर देश जापान, बर्मा, श्रीलंका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि देशों के साथ भारत में भी अशांति बढ़ेगी। पक्षारंभ में बुध का पूर्व में उदय उत्पातकारी योग बनायेगा। कहीं प्रकृति प्रकोप से जन धन की हानि होगी। **तेजी मंदी विचार**—पक्ष के आरम्भ में सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द आदि में तेजी तथा गेहूं, जौ, चना, बाजरा में मंदी की चाल निकलेगी। ता. ७ फरवरी को शुक्र कुंभ राशि में प्रवेश करने से रस पदार्थ गुड़, खांड, तेल, घृत के अलावा सोना, चांदी, रुई, गेहूं, चना में मंदी की चाल बनेगी। किन्तु अगले दिन शनि मार्गी होने से चलते भावों में भारी घटाबढ़ी के योग बनेंगे। यथा—**वक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय। चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाय॥** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में बुध शुक्र के उदय कहीं-कहीं गर्जना के साथ वर्षा कारक हैं। पर्वतीय प्रदेशों में भारी बर्फ पड़ेगी। दक्षिण भारत में खण्डवृष्टि के अलावा वायु प्रकोप तथा दिल्ली, हरियाणा, म.प्र., उ.प्र., राजस्थान, पंजाब में वायु के साथ वर्षा होगी। कहीं-कहीं ओला वृष्टि या शीत लहर का प्रकोप रहेगा। **शकुन विचार**—माघ कृष्ण तीज को यदि बादल गर्जना करे किन्तु वर्षा नहीं होवे तो गेहूं का संग्रह करने वालों को आगे लाभ हो तथा षष्ठी तिथि को आकाश साफ रहे तो कपास की फसल कमजोर हो। यथा—माघ बदी छठ को निर्मल हो आकाश। [illegible]

ता. १२ फरवरी ❖ माघ कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १२ फरवरी): ११ह.श. ९के. १०सू. १२मं. ८प्लू. चं.बु. ने. ७ १ ४ २श. ६ ३गु.रा. ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	११	९	२	१०	१	२	८	१०	९	७
२९	२५	२३	५	१२	६	१४	०	०	०	१५	२३
१२	४०	३१	२१	१५	२	९	१५	१५	५०	७	२२
१५	२६	४३	३५	१५	५४	५१	१४	१४	१७	२३	१५
६०	७११	४३	२४	३	७५	०	३	३	३	२	१
४२	२७	७	२६	२२	१०	३०	११	११	२८	१३	१२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
२ धनि.	२ धनि.	३ रेवती	३ उ.षा.	२ आर्द्रा	४ धनि.	२ रोहि.	३ मृग.	२ मृग.	३ धनि.	२ श्रव.	३ ज्ये.

रहे तो कपास की फसल कमजोर हो। यथा—माघ वदी ... शकुन विचार—माघ कृष्णा तीज को यदि बादल गर्जना करें किन्तु वर्षा नहीं होवे तो गेहूं का संग्रह करने वालों को आगे लाभ हो तथा षष्ठी तिथि को आकाश साफ

माघ शुक्ल पक्ष-२३ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १३ से २७ फरवरी सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ माघ से ८ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्र उदय घं.	मि.	चन्द्र अस्त घं.	मि.	
२४	१	बु	२१	०७	१५	३०	श	५८	१२	३०	२०	प	२१	२०	१५	३५	ब	२१	०७	१५	३०	२७	४५	७	०३	१८	०९	२	२९	13	कुंभ	१०	००	१२	५७	[illegible]	८	०३	१८	५४	श्री वल्लभ जयंती, दक्षिण भारते चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घ
२५	२	गु	२७	२०	१७	५८	पूभा	६०	००	-	-	शि	२३	२२	१६	२३	कौ	२७	२०	१७	५८	२७	४९	७	०२	१८	१०	३	जि	14	मी. २६।३३	१०	०१	१३	३७	३८	८	४८	१९	४६	जिल्हेज मु. मास १२ प्रा., बाबा लालदयाल जयन्ती
२६	३	शु	३३	४७	२०	३२	पूभा	५	४२	९	१८	सि	२५	३५	१७	१५	तै	०	३५	७	१५	२७	५३	७	०१	१८	१०	४	२	15	मीन	१०	०२	१४	१५	३७	९	३३	२०	३८	
२७	४	श	४०	१०	२३	०४	उभा	१३	१२	१२	१७	सा	२७	४७	१८	०७	व	७	००	९	४८	२७	५६	७	००	१८	११	५	३	16	मीन	१०	०३	१४	५२	३६	१०	१८	२१	३०	भद्रा ९।४८ से २३।०४ तक, मृगशिर २ वृष में राहु ज्येष्ठा ४ वृश्चिक में केतु A
२८	५	र	४६	०७	२५	२७	रे	२०	३०	१५	१२	शुभ	२९	४५	१८	५४	ब	१३	१२	१२	१७	२८	००	७	००	१८	१२	६	४	17	मे. १५।१२	१०	०४	१५	२८	३३	११	०३	२२	२२	बसन्त पंचमी, श्री ५, सरस्वती पूजा, तक्षक पूजा, पंचक समा. १५।१२,
२९	६	चं	५१	१७	२७	३०	अ	२७	१०	१७	५१	शु	३१	१२	१९	२८	कौ	१८	५०	१४	३१	२८	४	६	५९	१८	१३	७	५	18	मेष	१०	०५	१६	०१	३२	११	४८	२३	१४	सायन मीन में सूर्य प्रवेश २५।४५
३०	७	मं	५५	१०	२९	०२	भ	३२	४७	२०	०५	ब्र	३१	४७	१९	४१	ग	२३	२५	१६	२०	२८	८	६	५८	१८	१३	८	६	19	वृ. २६।३४	१०	०६	१६	३३	३०	१२	३२	२४	०६	भद्रा २९।०२ से, शतभिषा में सूर्य प्र. १४।४८, श्रवण में बुध प्र. ९।१६, B
फा	८	बु	५७	२२	२९	५४	कृ	३६	५७	२१	४४	ऐं	३१	१५	१९	२७	वि	२६	३०	१७	३३	२८	१२	६	५७	१८	१४	९	७	20	वृष	१०	०७	१७	०३	२८	१३	१८	२४	५८	भद्रा १७।३३ तक, अश्विनी मेष में मंगल प्रवेश ३०।१५, श्री दुर्गाष्टमी, C
२	९	गु	५७	३५	२९	५८	रो	३९	१७	२२	३९	वै	२९	१५	१८	३८	बा	२७	४५	१८	०२	२८	१७	६	५६	१८	१५	१०	८	21	वृष	१०	०८	१७	३१	२६	१४	०२	१	५०	श्री महानन्दा नवमी, श्री हरसू ब्रह्मदेव पुण्य दिवस, (चैनपुर व रोहतास) D
३	१०	शु	५५	३७	२९	२०	मृ	३९	३५	२२	४५	वि	२५	४०	१७	११	तै	२६	५५	१७	४१	२८	२१	६	५५	१८	१५	११	९	22	मि. १०।४८	१०	०९	१७	५७	२४	१४	४६	२	४२	हज्ज D वैधृति पुण्यं
४	११	श	५१	३७	२७	३३	आ	३७	४७	२२	०१	प्री	२०	२२	१५	०३	व	२३	५५	१६	२८	२८	२५	६	५४	१८	१६	१२	१०	23	मिथुन	१०	१०	१८	२१	२३	१५	३०	३	३४	भद्रा १६।२८ से २७।३३ तक पू.भा. में शुक्र प्रवेश ९।०५, जया एका. E
५	१२	र	४५	४२	२५	१०	पुन	३४	०५	२०	३१	आ	१३	२७	१२	१६	ब	१८	५५	१४	२७	२८	२९	६	५३	१८	१७	१३	११	24	क. ११।५७	१०	११	१८	४४	२०	१६	१४	४	२६	जया एकादशी व्रत (वैष्णव) जयंती, महाद्वादशी व्रत, भीष्म द्वादशी, F
६	१३	चं	३८	१०	२२	०८	पु	२८	४०	१८	२०	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१२	०७	११	४३	२८	३३	६	५२	१८	१७	१४	१२	25	कर्क	१०	१२	१९	०४	१९	१६	५८	५	१८	सोम प्रदोष व्रत, कल्पादि तिथि, मेला पंच खण्ड पीठ विराटनगर (राज.), G
७	१४	मं	२९	२५	१८	३७	श्ले	२१	५७	१५	३८	अ	४५	०५	२४	५३	म	३	५५	८	२५	२८	३७	६	५१	१८	१८	१५	१३	26	सि. १५।३८	१०	१३	१९	२३	१७	१७	४२	६	१०	भद्रा १८।३७ से २८।४४ तक, श्री जिनेन्द्र रथयात्रा (जैन), श्री ललिता ज. H
८	१५	बु	१९	५५	१४	४८	म	१४	२७	१२	३७	सु	३४	१०	२०	३०	व	१९	५५	१४	४८	२८	४१	६	५०	१८	१९	१६	१४	27	सिंह	१०	१४	१९	४०	१५	१८	२६	७	०२	माघी पूर्णिमा, सत्यव्रत, **श्री गुरु रविदास जयंती**, भैरव जयंती, माघ स्नान J

A प्रवेश २४।२८, तिल चतुर्थी, कुन्द ४, वरद चतुर्थी, वैनायक चतुर्थी व्रत, श्री गणेश पूजा (बंगाल में) B बसन्त ऋतु प्रारम्भ, आरोग्य ७, रथ सप्तमी, अचला ७, चन्द्रभागा ७, श्री माधवाचार्य जयंती, मन्वादि C बुधाष्टमी, भीष्माष्टमी, रा. फाल्गुन मासारम्भः E व्रत (स्मार्त), भैमी एकादशी (बंगाल), ईद-उल-जुहा (बकरीद) मु. F भीष्म तर्पण श्राद्ध, तिल स्नान व होम G डेजर्ट उत्सव, मेला जैसलमेर ३ दिन का प्रारम्भ, गुरु हरराय जयंती (प्रा. मत से), विश्वकर्मा जयंती H रामचरण स्नेही जयंती J समाप्त, वेणेश्वर मेला (बांसवाड़ा)

माघ शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० फरवरी

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	११	९	२	१०	१	१	७	१०	९	७
७	१	२९	१०	११	१६	१४	२९	२९	१	१५	२३
१७	३०	१५	४५	५३	३	१७	४९	४९	१८	२४	३०
३	४७	४७	३८	४१	४८	२	४८	४८	२	५४	५५
६०	७५	४२	५७	१	३५	१	३	३	३	२	०
२८	३१	५२	९	४९	२	२४	११	११	२७	८	५६
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस मास में पांच मंगलवार, पांच बुधवार मध्यम फलप्रद हैं। किन्तु अमावस्या मंगलवार को ही कुंभ संक्रांति लगने से प्राचीन आचार्यों ने अच्छा नहीं बताया है और इस दिन चन्द्रमा भी संक्रांति प्रवेश के साथ कुंभ राशि में विचरण करेगा, अतः यहां अशांति, अराजकता, बम विस्फोट से जन धन की हानि होगी। कहीं युद्धादि का भय तो कहीं दुर्घटनाओं की वृद्धि होगी। यथा—**यद्दिने चार्क संक्रांतिस्तद्राशी तद्दिने शशी। जन्म वेधादयं नेष्टः श्रेष्ठ स्वसुहृदो गृहे॥** सुदी पक्ष में सप्तम तिथि को भरणी नक्षत्र का योग भारत के लिए श्रेष्ठ फलों में वृद्धि कारक रहेगा। प्रजा में रोग पीड़ा की कमी होकर सुख शांति का संचार होगा। धान्यादि की पैदावार अच्छी होने के आसार बनेंगे। अंतरिक्ष विज्ञान में भी भारत को आशातीत सफलता मिलने से भारत विश्व के अग्रणीय देशों में जाना जायेगा। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में दक्षिण भारत में बुधवार का चन्द्रदर्शन होने से व्यापारिक वस्तुओं के साथ सोना, चांदी, रुई, कपास में तेजी होगी। ता. २० फरवरी को मेष का मंगल आने से जौ, गेहूं, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा में मन्दी का झटका लगेगा। गुड़, खांड, शक्कर में घटाबढ़ी से मन्दी की चाल निकलेगी। धातु पदार्थों में तेजी की चाल बनी रहेगी। **आकाश लक्षण**—यहां दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश में साधारण बादल चाल व बूंदाबादी के योग हैं। दक्षिणी राज्यों में गर्मी बढ़ने लगेगी। समुद्री तटवर्ती भागों में वायु के साथ कहीं-कहीं वर्षा होगी। **शकुन विचार**—माघ सुदी द्वितीया व तृतीया को बादल बिजली तथा वर्षा हो तो आगे वर्षा ऋतु में कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि हो। पूर्णिमा को यदि बादल हो तो धान्यादि का संग्रह करने वालों को आगे लाभ होगा।

ता. २७ फरवरी ❖ माघ शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	०	९	२	१०	१	१	७	१०	९	७
१४	८	४	१८	११	२८	१४	२९	२९	१	१५	२३
१९	४७	१५	१७	४५	४८	२९	२७	२७	४२	३९	३६
४०	१०	४	५५	९	३२	१०	३३	३३	४	३७	४९
६०	७११	४२	७३	०	७४	२	३	३	३	२	०
१५	५७	३७	९	२५	५३	१०	११	११	२४	३	४२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२४

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २८ फर. से १४ मार्च सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, बसन्त ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
९	१	गु	१०	१०	१०	५३	पूफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धृ	२३	१०	१६	०५	कौ	१०	१०	१०	५३
१०	२	शु	०	३७	७	०३	ह	५२	००	२७	३६	शू	१२	२७	११	४७	ग	०	३७	७	०३
०	३	शु	५१	४५	२७	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	४	श	४४	०२	२४	२४	चि	४६	१२	२५	१६	गं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	१७	४५	१३	५३
१२	५	र	३७	५०	२१	५४	स्वा	४१	५५	२३	३२	ध्रु	४५	३०	२४	५८	कौ	१०	४५	११	०४
१३	६	चं	३३	२५	२०	०७	वि	३९	२५	२२	३१	व्या	३९	१२	२२	२६	ग	५	२७	८	५६
१४	७	मं	३१	००	१९	०८	अनु	३८	५२	२२	१७	ह	३४	२७	२०	३१	वि	२	००	७	३२
१५	८	बु	३०	३२	१८	५६	ज्ये	४०	१५	२२	४९	व	३१	१५	१९	१३	बा	०	३२	६	५६
१६	९	गु	३१	५५	१९	२८	मू	४३	२०	२४	०२	सि	२९	३०	१८	३०	तै	१	०२	७	०७
१७	१०	शु	३४	५२	२०	३८	पू.षा	४७	५५	२५	५१	व्य	२९	००	१८	१७	व	३	१५	७	५९
१८	११	श	३९	०५	२२	१८	उ.षा	५३	४०	२८	०८	व	२९	२७	१८	२७	ब	६	५२	९	२५
१९	१२	र	४४	२०	२४	२२	श्र	६०	००	-	-	प	३०	४२	१८	५५	कौ	११	४०	११	१८
२०	१३	चं.	५०	०५	२६	३९	श्र	०	१७	६	४४	शि	३२	२५	१९	३५	ग	१७	१०	१३	२९
२१	१४	मं	५६	१२	२९	०५	ध	७	२२	९	३३	सि	३४	२५	२०	२२	वि	२३	०७	१५	५१
२२	३०	बु	६०	००	-	-	श	१४	४५	१२	२९	सा	३६	३७	२१	१४	च	२९	२०	१८	१९
२३	३०	गु	२	३०	७	३४	पू.भा	२२	१२	१५	२७	शुभ	३८	५०	२२	०६	ना	२	३०	७	३४

दिनांक अं.	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
28	२८	४५	६	४९	१८	१९	१७	१५	28	कं. १४।४२	१०	१५	१९	५५	[illegible]	११	१०	७	५२	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस
M1	२८	५०	६	४८	१८	२०	१८	१६	M1	कन्या	१०	१६	२०	०८	१२	११	५८	८	४२	भद्रा १७।१४ से २७।३० तक, मार्गी गुरु १३।३०, मार्च ३ ता. ३१
0	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया क्षय:
2	२८	५४	६	४७	१८	२१	१९	१७	2	तु. १४।२२	१०	१७	२०	२०	१०	२०	४६	९	३२	धनिष्ठा में बुध प्रवेश २९।१५, कृष्ण चतुर्थी व्रत
3	२८	५८	६	४६	१८	२१	२०	१८	3	तुला	१०	१८	२०	३०	९	२१	३४	१०	२२	मीन में शुक्र प्रवेश ९।२३
4	२९	२	६	४५	१८	२२	२१	१९	4	वृ. १६।४२	१०	१९	२०	३९	७	२२	२२	११	१२	भद्रा २०।०७ से, पू.भा. में सूर्य प्रवेश २१।१३
5	२९	६	६	४४	१८	२३	२२	२०	5	वृश्चिक	१०	२०	२०	४६	६	२३	१०	१२	०२	भद्रा ७।३२ तक, उ.भा. में शुक्र प्रवेश २५।३५, कालाष्टमी
6	२९	११	६	४३	१८	२३	२३	२१	6	ध. २२।१९	१०	२१	२०	५२	४	२३	५८	१२	५२	श्री सीताष्टमी, जानकी जयंती, अष्टका श्राद्ध
7	२९	१५	६	४२	१८	२४	२४	२२	7	धनु	१०	२२	२०	५६	२	२४	४६	१३	४२	कुंभ में सूर्य प्रवेश २५।३४, समर्थ गुरु रामदास जयंती
8	२९	१९	६	४१	१८	२४	२५	२३	8	धनु	१०	२३	२०	५८	१	१	३४	१४	३२	भद्रा ७।५९ से २०।३८ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती व बोधोत्सव,A
9	२९	२४	६	४०	१८	२५	२६	२४	9	म. ८।२३	१०	२४	२०	५९	[illegible]	२	२२	१५	२२	विजया एकादशी व्रत (सबका)
10	२९	२८	६	३८	१८	२६	२७	२५	10	मकर	१०	२५	२०	५८	५८	३	१०	१६	१२	विजया व पक्षवर्धिनी महाद्वादशी व्रत
11	२९	३२	६	३७	१८	२६	२८	२६	11	कुं. २०।०८	१०	२६	२०	५६	५५	३	५८	१७	०२	भद्रा २६।३९ से, भरणी में मंगल प्रवेश २५।५७, सोम प्रदोष व्रत, B
12	२९	३६	६	३६	१८	२७	२९	२७	12	कुंभ	१०	२७	२०	५१	५४	४	४६	१७	५२	भद्रा १५।५१ तक, शतभिषा में बुध प्रवेश १३।४४, महाशिवरात्रि व्रत C
13	२९	४१	६	३५	१८	२७	३०	२८	13	कुंभ	१०	२८	२०	४५	५२	५	३४	१८	४२	पितृकार्याऽमावस्या, मन्वादि, शिव खप्पर पूजा, श्री वासूदेव पूज्य जयंती (जैन)
14	२९	४५	६	३४	१८	२८	चैत्र	२९	14	मी. ८।४२	१०	२९	२०	३७	५०	६	२२	१९	३१	मीन में सूर्य प्रवेश २१।१८, संक्रांति मु. ४५, देवकार्याऽमावस्या, सौर D

A आर्य समाज सप्ताह प्रारम्भ, व्यतिपात पुण्यं, विश्व महिला दिवस B पंचक प्रारम्भ २०।०८ से C (सबका), चतुर्दश ज्योतिर्लिङ्ग, पूजनार्चन व रुद्राभिषेक, श्री वैद्यनाथ जयंती D चैत्र मासारंभः, आर्य समाज सप्ताह समा.

फाल्गुन कृ. ८ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ६ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	०	९	२	११	१	१	७	१०	९	७
२१	२०	९	२७	११	३	१४	२९	२९	२	१५	२३
२०	३७	१२	२४	४६	३२	४६	५	५	५	५३	४९
५२	३७	३४	३०	२१	१२	३१	१८	८	३८	३६	६
६०	७३६	४२	८४	०	७४	२	३	३	३	१	०
४	१८	२२	४	५७	४४	५४	११	११	१९	५६	२८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

१२शु.
१०बु.ने.
१मं.
९
११सू. ह.
८प्लू. के.चं.
२श.रा.
५
३गु.
७
४
६

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का योग होना प्राचीन आचार्यों ने श्रेष्ठ माना है। यथा—**फाल्गुने प्रथमे पक्षे पूर्वाफाल्गुनी योगतः। सर्वान्दोषान्निहंत्येव सुभिक्षं भुवि जायते॥** प्रजा में सुख शांति व सुभिक्ष का संचार होगा। उद्योग धन्धों के उत्पादनों में वृद्धि होगी तथा आम जनता का जीवन स्तर ऊंचा उठेगा। प्रजा में धार्मिक स्थलों की ओर आकर्षण बढ़ता दिखाई देगा। पक्षारंभ में ता. ३ मार्च को मीन राशि का शुक्र भी श्रेष्ठ फलों में बढ़ोत्तरी करेगा। किन्तु यहां मंगल से शुक्र, शनि, राहु का द्विर्द्वादश योग विश्व के कुछ देशों के सामने आर्थिक संकट उत्पन्न करेगा। कहीं भ्रष्टाचार व अनैतिकता की वृद्धि से जनता परेशान होती दिखाई देगी। **तेजी मन्दी विचार**—पक्ष आरम्भ में मार्गी गुरु होने से धातु पदार्थों में घटाबढ़ी की चाल निकलेगी। धान्य, तिलहन, तेल, सरसों, अलसी, गुड़, खांड में मंदी होगी। ता. ७ को बुध कुंभ राशि में प्रवेश करने से भी सोना, चांदी, तांबा, पीतल में स्थिरता बनी रहेगी। यहां मंदी की चाल में स्टाक करें। पक्षान्त के तीन दिनों में तेजी का झटका आने की संभावना है। मीन संक्रांति गुरुवार को ४५ मुहूर्त्ती होने से धान्यादि में मंदी की चाल बनायेगा। **आकाश लक्षण**—मार्च मास में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., म.प्र., राजस्थान में कहीं-कहीं बादल चाल के योग हैं। आसाम, पं. बंगाल, भूटान, सिक्किम में कहीं-कहीं वर्षा होने की संभावना है। मध्य भारत में दिन में गर्मी महसूस होने लगेगी। **शकुन विचार**—फाल्गुन मास में यदि बादल हो किन्तु वर्षा नहीं हो तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है। यथा—**यद्यभ्रं फाल्गुने नित्यं न तु पातयते जलम्। वृष्टि गर्भे भवत्येव प्रावृट् कालस्य दोहकः॥**

१२शु.
१० ने.
१मं.
९
११सू. बु.ह.चं.
८के. प्लू.
२श.रा.
५
३गु.
७
४
६

ता. १४ मार्च ❖ फाल्गुन कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१०	०	१०	२	११	१	१	७	१०	९	७
२९	२८	१४	९	११	१३	१५	२८	२८	२	१६	२३
२०	२४	५०	१३	५९	२९	१२	३९	३९	३१	८	४३
३७	४५	३१	१९	२६	२३	२८	५२	५२	४२	३०	५८
५९	७११	४२	९४	२	७४	३	३	३	३	१	०
५०	८	५	१३	३०	३२	४१	११	११	१०	४७	१२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२५ श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. १५ से २८ मार्च सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २४ फाल्गुन से ७ चैत्र तक। रवि उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोले, बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग.मि.	तिथि ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
२४	१	शु	८	४५	१०	०३	उभा	२९	३५	१८	२३	शु	४१	००	२२	५७	व	८	४५	१०	०३	२९	४९	६	३३	१८	२९	२	३०	15	मीन	११	००	२०	२७	४८	७	१६	२०	२०	चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ
२५	२	श	१४	५०	१२	२८	रे	३६	४७	२१	१५	ब्र	४३	००	२३	४४	कौ	१४	५०	१२	२८	२९	५४	६	३२	१८	२९	३	मुह	16	मे. २१।१५	११	०१	२०	१५	४६	८	१०	२१	०६	रेवती में शुक्र प्रवेश १८।५४, फुलरिया दोज, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, A
२६	३	र	२०	३७	१४	४५	अ	४३	३५	२३	५६	ऐं	४४	४०	२४	२२	ग	२०	३७	१४	४५	२९	५८	६	३०	१८	३०	४	२	17	मेष	११	०२	२०	०१	४४	९	०४	२१	५२	भद्रा २७।४८ से, उ.भा. में सूर्य प्रवेश २१।३६, पं. लेखराम वीर तृतीया
२७	४	चं	२५	४२	१६	४६	भ	४९	४०	२६	२१	वै	४५	४५	२४	४७	वि	२५	४२	१६	४६	३०	२	६	२९	१८	३०	५	३	18	मेष	११	०३	१९	४५	४२	९	५८	२२	३८	भद्रा १६।४६ तक, विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी (उड़ीसा), वैधृति पुण्यं
२८	५	मं	२९	५२	१८	२५	कृ	५४	४२	२८	२१	वि	४६	०२	२४	५३	बा	२९	५२	१८	२५	३०	७	६	२८	१८	३१	६	४	19	वृ. ८।५४	११	०४	१९	२७	३९	१०	५२	२३	२४	
२९	६	बु	३२	४२	१९	३२	रो	५८	२५	२९	४९	प्री	४५	१७	२४	३४	कौ	१	३०	७	०३	३०	११	६	२७	१८	३१	७	५	20	वृष	११	०५	१९	०६	३७	११	४६	२४	१०	पू.भा. में बुध प्र. २०।२३, वक्री प्लूटो १५।५५, सायन मेष में सूर्य प्र. B
३०	७	गु	३४	००	२०	०२	मृ	६०	००			आ	४३	१५	२३	४४	ग	३	३५	७	५२	३०	१५	६	२६	१८	३२	८	६	21	मि. १८।१९	११	०६	१८	४३	३५	१२	४०	२४	५४	भद्रा २०।०२ से, सूर्य उत्तर गोल में प्र., महाविषुव दिन, होलाष्टक C
चैत्र	८	शु	३३	२५	१९	४७	मृ	०	३०	६	३७	सौ	३९	४७	२२	२०	वि	३	५७	८	००	३०	१९	६	२५	१८	३३	९	७	22	मिथुन	११	०७	१८	१८	३३	१३	३३	१	४०	भद्रा ८।०० तक, श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, श्री दादूदयाल जयंती, D
२	९	श	३०	५२	१८	४५	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शो	३४	४७	२०	११	बा	२	२५	७	२२	३०	२४	६	२४	१८	३३	१०	८	23	क. २४।१३	११	०८	१७	५१	३०	१४	२६	२	२६	
३	१०	र	२६	२५	१६	५६	पु	५५	२०	२८	३०	अ	२८	१५	१७	४०	ग	२६	२५	१६	५६	३०	२८	६	२२	१८	३४	११	९	24	कर्क	११	०९	१७	२१	२८	१५	१९	३	१२	भद्रा २७।४५ से, बुध पूर्व में अस्त १८।५७, मेला खाटू श्यामजी (राज.) E
४	११	चं	२०	०७	१४	२४	श्ले	५०	०५	२६	२३	सु	२०	१२	१४	२६	वि	२०	०७	१४	२४	३०	३२	६	२१	१८	३४	१२	१०	25	सिं. २६।२३	११	१०	१६	४९	२५	१६	१२	३	५६	भद्रा १४।२४ तक, आमला एका. व्रत सबका, श्री रामस्नेही सम्प्रदाय F
५	१२	मं	१२	२२	११	१७	म	४३	३२	२३	४५	धृ	११	००	१०	४४	बा	१२	२२	११	१७	३०	३७	६	२०	१८	३५	१३	११	26	सिंह	११	११	१६	१४	२४	१७	०५	४	४२	मीन में बुध प्रवेश १३।०४, गोविन्द द्वादशी
६	१३	बु	३	२७	७	४२	पूफा	३६	०७	२०	४६	शू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	३	२७	७	४२	३०	४१	६	१९	१८	३५	१४	१२	27	कं. २६।००	११	१२	१५	३८	२१	१७	५८	५	२८	भद्रा २७।५२ से, अश्विनी मेष में शुक्र प्रवेश १३।१६
०	१४	बु	५३	५२	२७	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षयः
७	१५	गु	४४	०७	२३	५७	उफा	२८	२२	१७	३९	वृ	३९	०५	२१	५६	वि	१९	००	१३	५४	३०	४५	६	१८	१८	३६	१५	१३	28	कन्या	११	१३	१४	५९	१९	१८	५१	६	१४	भद्रा १३।५४ तक, उ.भा. में बुध प्रवेश ८।३७, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, G

A मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२३ प्रा., पंचक समाप्त २१।१५ B २४।४७, बसन्त सम्पात, अष्टान्हिक जैन व्रत प्रारम्भ, गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल) C प्रारम्भ २०।०२ से D राष्ट्रीय चैत्र मासारंभ, शाकः १९२४ प्रा.

E तीन दिन का प्रारम्भ, रवि दशमी F शाहपुरा का फूलडोल महोत्सव शुरू, मुहर्रम (ताजिया) (मु.) G होलिका दहन सायंकाले, दारुणरात्रि हुताशिनी, होलाष्टक समाप्त, मन्वादि १५, चैतन्य महाप्रभु जयंती, अष्टान्हिक जैन व्रत समा.

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

फाल्गुन शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २२ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	०	१०	२	११	१	१	७	१०	९	७
७	६	२०	२२	१२	२३	१५	२८	२८	२	१६	२३
१८	३	२६	२१	२४	२४	४४	१४	१४	५६	२२	४४
१८	०	१२	२५	३६	५३	३२	२६	२६	२९	२	३९
५९	७२६	४१	१०४	३	७४	४	३	३	२	१	०
३३	५३	४७	६	५८	१३	२०	११	११	५९	३५	४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २२ मार्च): १मं. | ११बु.ह. | १०ने. | २श. रा. | १२सू. शु. | ९ | ३चं. गु. | ६ | ८के. प्लू. | ४ | ५ | ७

इस पक्ष में युद्ध प्रिय मंगल का संघट्ट चक्र में सूर्य, केतु से वेध विश्व में कहीं प्राकृतिक आपदा का द्योतक है। फ्रांस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, अरब राष्ट्र, ईरान, ईराक में कहीं बम विस्फोट, भूकम्प व यान दुर्घटना से जनधन की हानि होगी। फाल्गुन मास में पांच गुरुवार भी पश्चिमी देशों के लिए अशांति प्रद होते हैं जिससे कहीं युद्धादि भय, विग्रह से जनमानस पीड़ित होगा। पांच गुरुवार का फल—**यत्र मासे पंचवारा जायन्ते व बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धश्च जायते॥** कहीं आन्तरिक विद्रोह से शासन परिवर्तन तथा आपसी सम्बन्धों में कटुता बढ़ेगी। समृद्धशाली देश कूटनीति के तहत अर्द्ध विकसित देशों पर अपना दबदबा बनाने की कोशिश करेंगे। **तेजी मंदी विचार**—पक्षारंभ में शुक्रवार का चन्द्रदर्शन सरसों, तिल, तेल, चावल, चना, गेहूं, मूंग, मोठ में मंदी तथा सोना, चांदी में घटाबढ़ी की चाल बनायेगी। किन्तु ता. १७ १८ मार्च को उ.भा. का सूर्य तेजी को बढ़ावा देगा। पक्षान्त में शुक्र मेष राशि पर आने से धान्यादि व पशुओं में तेजी होगी। यथा—**दैत्य गुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशु पीड़ा च मेघ वर्षा भविष्यति॥ आकाश लक्षण**—इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में दिन में गर्मी का अहसास होने लगेगा। यहां वायु के साथ कहीं कहीं बादल चाल होकर पक्ष में साधारण वर्षा होगी। दक्षिण भारत में गर्मी का जोर रहेगा। **शकुन विचार—फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गरजे वर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥** होलिका दहन की रात पश्चात सूर्य उदय के बाद चन्द्रमा पश्चिम में दिखाई दे तो श्रेष्ठ तथा सूर्य उदय से पहिले अस्त हो जाय तो नेष्ट होता है।

ता. २८ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २८ मार्च): १मं.शु. | ११ह. | १०ने. | २श. रा. | १२सू. बु. | ९ | ३गु. | ६चं. | ८के. प्लू. | ४ | ५ | ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	०	११	२	०	१	१	७	१०	९	७
१३	२	२४	३	१२	०	१६	२७	२७	३	१६	२३
१४	१३	३६	५	५०	५०	१२	५५	५५	१४	३१	४३
५९	४६	२१	२८	५९	१०	१६	२१	२१	२	९	४६
५९	[illegible]	४१	[illegible]	४	७८	४	३	३	२	१	०
१९	४२	३३	५६	५९	६	५४	११	११	४९	२६	१६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्र कृष्ण पक्ष-२६

श्री सं. २०५८ शाके १९२३

ता. २९ मार्च से १२ अप्रैल सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २२ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	
८	१	शु	३४	३७	२०	०८	ह	२०	४२	१४	३४	धु	२८	२०	१७	३७	बा	९	२०	१०	०१	३०	५०	६	१७	१८	३६	१६	१४	29	तु. २५।०७	११	१४	१४	१८	[illegible]	१९	४४	७	००	बसन्त प्रतिपदा, बसन्तोत्सव, छारेण्डी (धूलेण्डी), धूलिवन्दन, गुड फ्राईडे, A
९	२	श	२५	५५	१६	३७	चि	१३	४५	११	४५	व्या	१८	१०	१३	३१	तै	०	१०	६	१९	३०	५४	६	१५	१८	३७	१७	१५	30	तुला	११	१५	१३	३५	१५	२०	२८	७	४६	भद्रा २७।०१ से, कृत्तिका में मंगल प्र. २८।५९, धनिष्ठा ४ में हर्शल प्र. B
१०	३	र	१८	२०	१३	३४	स्वा	७	५०	९	२२	ह	८	५५	९	४८	वि	१८	२०	१३	३४	३०	५८	६	१४	१८	३८	१८	१६	31	वृ. २५।५८	११	१६	१२	५०	१४	२१	१२	८	३२	भद्रा १३।३४ तक, रेवती में सूर्य प्रवेश १६।३०, कल्पादि ३, कृष्ण गणेश C
११	४	चं	१२	२२	११	१०	वि	३	२५	७	३५	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	१२	२२	११	१०	३१	३	६	१३	१८	३८	१९	१७	A1	वृश्चिक	११	१७	१२	०४	११	२१	५६	९	१८	अप्रैल मास ४ ता. ३०
१२	५	मं	८	१५	९	३०	अनु	०	५०	६	३२	व्य	४९	३२	२६	०१	तै	८	१५	९	३०	३१	८	६	१२	१८	३९	२०	१८	2	वृश्चिक	११	१८	११	१५	१०	२२	४०	१०	०४	आर्द्रा ३ में गुरु प्रवेश १५।४२, रोहिणी ३ में शनि प्रवेश १६।२७, रंग पंचमी, D
१३	६	बु	६	१७	८	४२	ज्ये	०	१७	६	१८	व	४६	२२	२४	४४	व	६	१७	८	४२	३१	१२	६	११	१८	३९	२१	१९	3	ध. ६।१८	११	१९	१०	२५	८	२३	२४	१०	५०	भद्रा ८।४२ से २०।३६ तक, श्रवण ३ में नेपच्यून प्र. १८।२७, एकनाथ षष्ठी
१४	७	गु	६	२०	८	४२	मू.	१	४७	६	५३	प	४४	४५	२४	०४	ब	६	२०	८	४२	३१	१६	६	१०	१८	४०	२२	२०	4	धनु	११	२०	०९	३३	६	२४	०८	११	३६	वृष में मंगल प्र. २५।००, रेवती में बुध प्र. ६।१०, शीतला सप्तमी, मेला E
१५	८	शु	८	२२	९	३०	पू.षा	५	१५	८	१५	शि	४४	३२	२३	५८	कौ	८	२२	९	३०	३१	२०	६	०९	१८	४०	२३	२१	5	म. १४।४२	११	२१	०८	३९	४	२४	५२	१२	२२	शीतलाष्टमी, शीतला पूजन (बासी भोजन करना चाहिए), ऋषभ देव ज. F
१६	९	श	१२	०७	१०	५८	उ.षा	१०	२०	१०	१५	सि	४५	२७	२४	१८	ग	१२	०७	१०	५८	३१	२५	६	०७	१८	४१	२४	२२	6	मकर	११	२२	०७	४३	३	१	३६	१३	०८	भद्रा २३।५४ से H शिवरात्रि व्रत, भा. रेल सप्ताह प्रारम्भ
१७	१०	र	१७	०५	१२	५६	श्र	१६	३७	१२	४५	सा	४७	१०	२४	५८	वि	१७	०५	१२	५६	३१	२९	६	०६	१८	४१	२५	२३	7	कुं. २६।०८	११	२३	०६	४६	१	२	२०	१३	५४	भद्रा १२।५६ तक, भरणी में शुक्र प्रवेश ८।५१, दशमाता व्रत, पंचक प्रा. G
१८	११	चं	२२	५५	१५	१५	ध	२३	४२	१५	३४	शुभ	४९	२०	२५	४९	बा	२२	५५	१५	१५	३१	३३	६	०५	१८	४२	२६	२४	8	कुंभ	११	२४	०५	४७	[illegible]	३	०४	१४	४०	पापमोचनी एकादशी (सबका) G २६।०८ से, विश्व स्वास्थ्य दिवस
१९	१२	मं	२९	०७	१७	४३	श	३१	१२	१८	३३	शु	५१	४२	२६	४५	तै	२९	०७	१७	४३	३१	३७	६	०४	१८	४३	२७	२५	9	कुंभ	११	२५	०४	४६	५७	३	४८	१५	२६	वारुणी पर्व १७।४३ से १८।३३ तक
२०	१३	बु	३५	२५	२०	१३	पू.भा	३८	४५	२१	३३	ब्र	५४	०२	२७	४०	ग	२	२०	६	५९	३१	४१	६	०३	१८	४३	२८	२६	10	मी. १४।४८	११	२६	०३	४३	५६	४	३२	१६	१२	भद्रा २०।१३ से, अश्वि. मेष में बुध प्रवेश १७।३९, प्रदोष व्रत, मास H
२१	१४	गु	४१	३०	२२	३८	उ.भा	४६	०५	२४	२८	ऐं	५६	१२	२८	३१	वि	८	३२	९	२७	३१	४५	६	०२	१८	४४	२९	२७	11	मीन	११	२७	०२	३९	५४	५	१६	१६	५८	भद्रा ९।२७ तक, मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.)
२२	३०	शु	४७	१०	२४	५३	रे	५३	००	२७	१३	वै	५८	००	२९	१३	च	१४	२५	११	४७	३१	५०	६	०१	१८	४४	३०	२८	12	मे. २७।१३	११	२८	०१	३३	५२	६	००	१७	४४	देव पितृकार्याऽमावस्या, मन्वादि अमा., वैधृति पुण्यं, पंचक समा. २७।१३, J

A होला मेला आनन्दपुर साहिब (पंजाब), पंखा मेला झझर **B** ८।३२, कलमदान पूजा देशाचारे, भाई २, संत तुकाराम जंयती **C** ४ **व्रत, इस्टर सन्डे** **D** श्री जयंती, व्यतिपात पुण्यं **E** शीतला माता कुराली (पंजाब), कालाष्टमी अष्टका श्राद्ध **F** (जैन), मेला केसरिया मेवाड़ व **केला देवी करौली** (राज.), वर्षीतप प्रारम्भ (जैन) **J** चान्द्र संवत्सर २०।५८ समाप्त ॥ शुभम् ॥

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

चैत्र कृ. ८ शुक्र, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	१	११	२	०	१	१	७	१०	९	७
२१	२५	०	१८	१३	१०	१६	२७	२७	३	१६	२३
८	१४	७	३७	३५	४२	५३	२९	२९	३५	४१	४०
३९	१०	४४	३५	२३	०३	४२	५५	५५	४८	५०	४६
५९	७४०	४१	१२२	६	७३	५	३	३	२	१	०
४	४२	१६	१	१५	५०	३०	११	११	३५	१२	३२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ५ अप्रैल): १शु., ११ह., रा. २मं. श., १२सू. बु., ९चं., १० ने., ३गु., ६, ४, ८के. प्लू., ५, ७

इस पक्ष के मध्य से मंगल वृष राशि में विचरण करते हुए शनि- राहु से योग बनायेगा। जिसका फल प्राचीन दैवज्ञों ने अच्छा नहीं बताया है। विश्व के कई भागों में साम्प्रदायिक व धार्मिक विवाद उभर कर सामने आयेंगे। जिससे कहीं संघर्षादि में रक्तपात से जनमानस पीड़ित होगग। कहीं अतिवृष्टि से तो कहीं अनावृष्टि से कृषि में हानि होगी। यथा—**राहु रङ्गारकश्चैक राशि ऋक्ष गतौ तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते॥** चीन, जापान, रूस, अफ्रीका, मिश्र, इजरायल, ईराक, ईराक, फ्रांस आदि में कहीं यान व खान दुर्घटना, हत्याकांड, भूकम्प से जनधन की हानि होगी तो कहीं राजनैतिक अशांति से सत्ता परिवर्तन होगा। भारत में भी यत्र तत्र अशुभ फल दिखाई देंगे। **तेजी मंदी विचार**— पक्षारंभ में तिल, तेल, सरसों, घृतादि के अलावा मूंग, मोंठ, जौ, गेहूं में तेजी की चाल निकलेगी। जिसे ता. ४ अप्रैल को रेवती का बुध मंदी का झटका प्रदान करेगा। किन्तु यहां की मन्दी अस्थाई ही रहेगी। पक्षान्त में रस पदार्थ गुड़, खांड, तेल, तिल, सरसों, रुई, कपास में मंदी कीचाल निकलेगी। जबकि सोना, चांदी, तांबा, पीतल में तेजी अथवा स्थिरता बनी रहेगी। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, आसाम, बिहार, पं. बंगाल में वायु के साथ आकाश में बादल भर जायेंगे। कहीं- कहीं साधारण बूंदाबांदी होगी। मैदानी इलाकों में गर्मी का जोर बढ़ने लगेगा। **शकुन विचार**— चैत्र कृष्ण अष्टमी व चतुर्दशी के दिन में बादल चाल एवं उत्तर दिशा की हवा चले तो आने वाला वर्ष शुभ फलप्रद होता है। यथा— **चैत्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यष्टमी तिथौ। तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभाय वत्सरे भवेत॥**

ता. १२ अप्रैल ❖ **चैत्र कृ. ३० शुक्र** प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १२ अप्रैल): १बु.शु., ११ह., रा. २मं. श., १२सू. चं., ९, १०नें., ३गु., ६, ४, ८प्लू. के., ५, ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	१	०	२	०	१	१	७	१०	९	७
२८	१९	४	३	१४	११	१७	२७	२७	३	१६	२३
१	०९	५५	७	२२	१८	३३	७	७	५३	४९	३६
३३	५०	५०	५२	१९	१६	४५	४१	४१	९	४०	३०
५८	७१८	४१	१२५	७	७३	६	३	३	२	१	०
५२	१९	२	४३	१७	३७	०	११	११	२०	०	४४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

साढ़े पांच बजे (प्रात: ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रात: ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से **शाम ८ बजकर ४५** मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट के ग्रह स्पष्ट करने हैं।**

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं- यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अत: ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अत: १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट** ३-२९-१४-४३ बना। इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अत: उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि को दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अत: क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)- (१-४७)=११-१२-५६-३५ अत: **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (◆ को ¼) (★ को ½) (● को ¾) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	० ०१◆	० ०२★	० ०५	० ०७★	० १०	० १२★	० १५	० १७★	० २०	० २२★	० २५	० २७★	० ३०
२	० ०२★	० ०५	० १०	० १५	० २०	० २५	० ३०	० ३५	० ४०	० ४५	० ५०	० ५५	१ ००
३	० ०३●	० ०७★	० १५	० २२★	० ३०	० ३७★	० ४५	० ५२★	१ ००	१ ०७★	१ १५	१ २२★	१ ३०
४	० ०५	० १०	० २०	० ३०	० ४०	० ५०	१ ००	१ १०	१ २०	१ ३०	१ ४०	१ ५०	२ ००
५	० ०६◆	० १२★	० २५	० ३७★	० ५०	१ ०२★	१ १५	१ २७★	१ ४०	१ ५२★	२ ०५	२ १७★	२ ३०
६	० ०७★	० १५	० ३०	० ४५	१ ००	१ १५	१ ३०	१ ४५	२ ००	२ १५	२ ३०	२ ४५	३ ००
७	० ०८●	० १७★	० ३५	० ५२★	१ १०	१ २७★	१ ४५	२ ०२★	२ २०	२ ३७★	२ ५५	३ १२★	३ ३०
८	० १०	० २०	० ४०	१ ००	१ २०	१ ४०	२ ००	२ २०	२ ४०	३ ००	३ २०	३ ४०	४ ००
९	० ११◆	० २२★	० ४५	१ ०७★	१ ३०	१ ५२★	२ १५	२ ३७★	३ ००	३ २२★	३ ४५	४ ७★	४ ३०
१०	० १२★	० २५	० ५०	१ १५	१ ४०	२ ०५	२ ३०	२ ५५	३ २०	३ ४५	४ १०	४ ३५	५ ००
११	० १३●	० २७★	० ५५	१ २२★	१ ५०	२ १७★	२ ४५	३ १२★	३ ४०	४ ७★	४ ३५	५ १२★	५ ३०
१२	० १५	० ३०	१ ००	१ ३०	२ ००	२ ३०	३ ००	३ ३०	४ ००	४ ३०	५ ००	५ ३०	६ ००
१३	० १६◆	० ३२★	१ ०५	१ ३७★	२ १०	२ ४२★	३ १५	३ ४७★	४ २०	४ ५२★	५ २५	५ ५७★	६ ३०
१४	० १७★	० ३५	१ १०	१ ४५	२ २०	२ ५५	३ ३०	४ ०५	४ ४०	५ १५	५ ५०	६ २५	७ ००
१५	० १८●	० ३७★	१ १५	१ ५२★	२ ३०	३ ०७★	३ ४५	४ २२★	५ ००	५ ३७★	६ १५	६ ५२★	७ ३०
१६	० २०	० ४०	१ २०	२ ००	२ ४०	३ २०	४ ००	४ ४०	५ २०	६ ००	६ ४०	७ २०	८ ००
१७	० २१◆	० ४२★	१ २५	२ ०७★	२ ५०	३ ३२★	४ १५	४ ५७★	५ ४०	६ २२★	७ ०५	७ ४७★	८ ३०
१८	० २२★	० ४५	१ ३०	२ १५	३ ००	३ ४५	४ ३०	५ १५	६ ००	६ ४५	७ ३०	८ १५	९ ००
१९	० २३●	० ४७★	१ ३५	२ २२★	३ १०	३ ५७★	४ ४५	५ ३२★	६ २०	७ ७★	७ ५५	८ ४२★	९ ३०
२०	० २५	० ५०	१ ४०	२ ३०	३ २०	४ १०	५ ००	५ ५०	६ ४०	७ ३०	८ २०	९ १०	१० ००
२१	० २६◆	० ५२★	१ ४५	२ ३७★	३ ३०	४ २२★	५ १५	६ ०७★	७ ००	७ ५२★	८ ४५	९ ३७★	१० ३०
२२	० २७★	० ५५	१ ५०	२ ४५	३ ४०	४ ३५	५ ३०	६ २५	७ २०	८ १५	९ १०	१० ०५	११ ००
२३	० २८●	० ५७★	१ ५५	२ ५२★	३ ५०	४ ४७★	५ ४५	६ ४२★	७ ४०	८ ३७★	९ ३५	१० ३२★	११ ३०
२४	० ३०	१ ००	२ ००	३ ००	४ ००	५ ००	६ ००	७ ००	८ ००	९ ००	१० ००	११ ००	१२ ००
२५	० ३१◆	१ ०२★	२ ०५	३ ०७★	४ १०	५ १२★	६ १५	७ १७★	८ २०	९ २२★	१० २५	११ २७★	१२ ३०
२६	० ३२★	१ ०५	२ १०	३ १५	४ २०	५ २५	६ ३०	७ ३५	८ ४०	९ ४५	१० ५०	११ ५५	१३ ००
२७	० ३३●	१ ०७★	२ १५	३ २२★	४ ३०	५ ३७★	६ ४५	७ ५२★	९ ००	१० ७★	११ १५	१२ २२★	१३ ३०
२८	० ३५	१ १०	२ २०	३ ३०	४ ४०	५ ५०	७ ००	८ १०	९ २०	१० ३०	११ ४०	१२ ५०	१४ ००
२९	० ३६◆	१ १२★	२ २५	३ ३७★	४ ५०	६ ०२★	७ १५	८ २७★	९ ४०	१० ५२★	१२ ५	१३ १७★	१४ ३०
३०	० ३७★	१ १५	२ ३०	३ ४५	५ ००	६ १५	७ ३०	८ ४५	१० ००	११ १५	१२ ३०	१३ ४५	१५ ००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	० ३८●	१ १७★	२ ३५	३ ५२★	५ १०	६ २७★	७ ४५	९ ०२★	१० २०	११ ३७★	१२ ५५	१४ १२★	१५ ३०
३२	० ४०	१ २०	२ ४०	४ ००	५ २०	६ ४०	८ ००	९ २०	१० ४०	१२ ००	१३ २०	१४ ४०	१६ ००
३३	० ४१◆	१ २२★	२ ४५	४ ०७★	५ ३०	६ ५२★	८ १५	९ ३७★	११ ००	१२ २२★	१३ ४५	१५ ०७★	१६ ३०
३४	० ४२★	१ २५	२ ५०	४ १५	५ ४०	७ ०५	८ ३०	९ ५५	११ २०	१२ ४५	१४ १०	१५ ३५	१७ ००
३५	० ४३●	१ २७★	२ ५५	४ २२★	५ ५०	७ १७★	८ ४५	१० १२★	११ ४०	१३ ०७★	१४ ३५	१६ ०२★	१७ ३०
३६	० ४५	१ ३०	३ ००	४ ३०	६ ००	७ ३०	९ ००	१० ३०	१२ ००	१३ ३०	१५ ००	१६ ३०	१८ ००
३७	० ४६◆	१ ३२★	३ ०५	४ ३७★	६ १०	७ ४२★	९ १५	१० ४७★	१२ २०	१३ ५२★	१५ २५	१६ ५७★	१८ ३०
३८	० ४७★	१ ३५	३ १०	४ ४५	६ २०	७ ५५	९ ३०	११ ०५	१२ ४०	१४ १५	१५ ५०	१७ २५	१९ ००
३९	० ४८●	१ ३७★	३ १५	४ ५२★	६ ३०	८ ०७★	९ ४५	११ २२★	१३ ००	१४ ३७★	१६ १५	१७ ५२★	१९ ३०
४०	० ५०	१ ४०	३ २०	५ ००	६ ४०	८ २०	१० ००	११ ४०	१३ २०	१५ ००	१६ ४०	१८ २०	२० ००
४१	० ५१◆	१ ४२★	३ २५	५ ०७★	६ ५०	८ ३२★	१० १५	११ ५७★	१३ ४०	१५ २२★	१७ ०५	१८ ४७★	२० ३०
४२	० ५२★	१ ४५	३ ३०	५ १५	७ ००	८ ४५	१० ३०	१२ १५	१४ ००	१५ ४५	१७ ३०	१९ १५	२१ ००
४३	० ५३●	१ ४७★	३ ३५	५ २२★	७ १०	८ ५७★	१० ४५	१२ ३२★	१४ २०	१६ ०७★	१७ ५५	१९ ४२★	२१ ३०
४४	० ५५	१ ५०	३ ४०	५ ३०	७ २०	९ १०	११ ००	१२ ५०	१४ ४०	१६ ३०	१८ २०	२० १०	२२ ००
४५	० ५६◆	१ ५२★	३ ४५	५ ३७★	७ ३०	९ २२★	११ १५	१३ ०७★	१५ ००	१६ ५२★	१८ ४५	२० ३७★	२२ ३०
४६	० ५७★	१ ५५	३ ५०	५ ४५	७ ४०	९ ३५	११ ३०	१३ २५	१५ २०	१७ १५	१९ १०	२१ ०५	२३ ००
४७	० ५८●	१ ५७★	३ ५५	५ ५२★	७ ५०	९ ४७★	११ ४५	१३ ४२★	१५ ४०	१७ ३७★	१९ ३५	२१ ३२★	२३ ३०
४८	१ ००	२ ००	४ ००	६ ००	८ ००	१० ००	१२ ००	१४ ००	१६ ००	१८ ००	२० ००	२२ ००	२४ ००
४९	१ ०१◆	२ ०२★	४ ०५	६ ०७★	८ १०	१० १२★	१२ १५	१४ १७★	१६ २०	१८ २२★	२० २५	२२ २७★	२४ ३०
५०	१ ०२★	२ ०५	४ १०	६ १५	८ २०	१० २५	१२ ३०	१४ ३५	१६ ४०	१८ ४५	२० ५०	२२ ५५	२५ ००
५१	१ ०३●	२ ०७★	४ १५	६ २२★	८ ३०	१० ३७★	१२ ४५	१४ ५२★	१७ ००	१९ ०७★	२१ १५	२३ २२★	२५ ३०
५२	१ ०५	२ १०	४ २०	६ ३०	८ ४०	१० ५०	१३ ००	१५ १०	१७ २०	१९ ३०	२१ ४०	२३ ५०	२६ ००
५३	१ ०६◆	२ १२★	४ २५	६ ३७★	८ ५०	११ ०२★	१३ १५	१५ २७★	१७ ४०	१९ ५२★	२२ ०५	२४ १७★	२६ ३०
५४	१ ०७★	२ १५	४ ३०	६ ४५	९ ००	११ १५	१३ ३०	१५ ४५	१८ ००	२० १५	२२ ३०	२४ ४५	२७ ००
५५	१ ०८●	२ १७★	४ ३५	६ ५२★	९ १०	११ २७★	१३ ४५	१६ ०२★	१८ २०	२० ३७★	२२ ५५	२५ १२★	२७ ३०
५६	१ १०	२ २०	४ ४०	७ ००	९ २०	११ ४०	१४ ००	१६ २०	१८ ४०	२१ ००	२३ २०	२५ ४०	२८ ००
५७	१ ११◆	२ २२★	४ ४५	७ ०७★	९ ३०	११ ५२★	१४ १५	१६ ३७★	१९ ००	२१ २२★	२३ ४५	२६ ०७★	२८ ३०
५८	१ १२★	२ २५	४ ५०	७ १५	९ ४०	१२ ०५	१४ ३०	१६ ५५	१९ २०	२१ ४५	२४ १०	२६ ३५	२९ ००
५९	१ १३●	२ २७★	४ ५५	७ २२★	९ ५०	१२ १७★	१४ ४५	१७ १२★	१९ ४०	२२ ०७★	२४ ३५	२७ ०२★	२९ ३०
६०	१ १५	२ ३०	५ ००	७ ३०	१० ००	१२ ३०	१५ ००	१७ ३०	२० ००	२२ ३०	२५ ००	२७ ३०	३० ००

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +३ घं. ३० मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

मार्च सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' ०८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
२६	११ ११ ३१ २८	११ २२ २४ ४३	७ २४ ३१ ०४	१० १७ ५८ ४२	१ १२ ४३ ३२	११ १८ १४ ४१	१ ०३ १९ ०३	२ १७ २२ १५	९ २९ २१ १६	९ १४ २० २८	७ २१ २३ २९	२६
२७	११ १२ ३० ५३	० ०५ ०८ १३	७ २४ ५४ ४२	१० १९ २७ ४०	१ १२ ५३ २८	११ १७ ३८ २९	१ ०३ २४ ५१	२ १७ १९ ०४	९ २९ २४ ०२	९ १४ २१ ५३	७ २१ २३ १२	२७
२८	११ १३ ३० १६	० १८ ०३ ०३	७ २५ १८ ०१	१० २० ५८ ०६	१ १३ ०३ ३०	११ १७ ०१ ३२	१ ०३ ३० ४३	२ १७ १५ ५३	९ २९ २६ ४७	९ १४ २३ १६	७ २१ २२ ५३	२८
२९	११ १४ २९ ३७	१ ०१ ०९ ०६	७ २५ ४१ ०१	१० २२ २९ ५९	१ १३ १३ ३८	११ १६ २४ ०३	१ ०३ ३६ ३९	२ १७ १२ ४३	९ २९ २९ २९	९ १४ २४ ३८	७ २१ २२ ३२	२९
३०	११ १५ २८ ५६	१ १४ २६ ३२	७ २६ ०३ ४३	१० २४ ०३ १८	१ १३ २३ ५४	११ १५ ४६ १८	१ ०३ ४२ ३९	२ १७ ०९ ३२	९ २९ ३२ १०	९ १४ २५ ५८	७ २१ २२ ०९	३०
३१	११ १६ २८ १३	१ २७ ५५ ५८	७ २६ २६ ०५	१० २५ ३८ ०१	१ १३ ३४ १५	११ १५ ०८ ३१	१ ०३ ४८ ४२	२ १७ ०६ २१	९ २९ ३४ ३८	९ १४ २७ १७	७ २१ २१ ४५	३१

अप्रैल सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' ००"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
१	११ १७ १२ ०४	७ ०२ ०५ ४१	० २७ २२ २०	११ १० ४१ १३	२ १३ ११ ५४	० ०५ ४६ २१	१ १६ ३२ २२	१ २७ ४२ ३९	१० ०३ २५ १०	९ १६ ३६ ४२	७ २३ ४२ ३१	१
२	११ १८ ११ १५	७ १६ ०४ ०३	० २८ ०३ ४४	११ १२ ३८ २७	२ १३ १७ ३२	० ०७ ०० २०	१ १६ ३७ ३५	१ २७ ३९ २८	१० ०३ २७ ५२	९ १६ ३८ ०२	७ २३ ४२ ०७	२
३	११ १९ १० २५	७ २९ ३३ ०३	० २८ ४५ ०६	११ १४ ३६ ५७	२ १३ २३ २०	० ०८ १४ १६	१ १६ ४२ ५३	१ २७ ३६ १७	१० ०३ ३० ३३	९ १६ ३९ १९	७ २३ ४१ ४२	३
४	११ २० ०९ ३३	८ १२ ३५ ०६	० २९ २६ २६	११ १६ ३६ ४१	२ १३ २९ २७	० ०९ २८ १०	१ १६ ४८ १५	१ २७ ३३ ०६	१० ०३ ३३ ११	९ १६ ४० ३५	७ २३ ४१ १५	४
५	११ २१ ०८ ३९	८ २५ १४ १०	१ ०० ०७ ४४	११ १८ ३७ ३५	२ १३ ३५ २३	० १० ४२ ०३	१ १६ ५३ ४२	१ २७ २९ ५५	१० ०३ ३५ ४८	९ १६ ४१ ५०	७ २३ ४० ४६	५
६	११ २२ ०७ ४३	९ ०७ ३४ ५२	१ ०० ४९ ००	११ २० ३९ ३६	२ १३ ४१ ३८	० ११ ५५ ५३	१ १६ ५९ १२	१ २७ २६ ४५	१० ०३ ३८ २३	९ १६ ४३ ०२	७ २३ ४० १४	६
७	११ २३ ०६ ४६	९ १९ ४२ ०१	१ ०१ ३० १३	११ २२ ४२ ३७	२ १३ ४८ ०३	० १३ ०९ ४२	१ १७ ०४ ४८	१ २७ २३ ३४	१० ०३ ४० ५६	९ १६ ४४ १३	७ २३ ३९ ४२	७
८	११ २४ ०५ ४७	१० ०१ ४० ०४	१ ०२ ११ २५	११ २४ ४६ ३२	२ १३ ५४ ३७	० १४ २३ २९	१ १७ १० २७	१ २७ २० २३	१० ०३ ४३ २७	९ १६ ४५ २२	७ २३ ३९ ०७	८
९	११ २५ ०४ ४६	१० १३ ३२ ५८	१ ०२ ५२ ३४	११ २६ ५१ ३७	२ १४ ०१ १९	० १५ ३७ १४	१ १७ १६ १०	१ २७ १७ १२	१० ०३ ४५ ५५	९ १६ ४६ २९	७ २३ ३८ ३०	९
१०	११ २६ ०३ ४३	१० २५ २३ ५८	१ ०३ ३३ ४२	११ २८ ५६ २६	२ १४ ०८ १०	० १६ ५० ५६	१ १७ २१ ५८	१ २७ १४ ०२	१० ०३ ४८ २२	९ १६ ४७ ३५	७ २३ ३७ ५२	१०
११	११ २७ ०२ ३९	११ ०७ १५ ३७	१ ०४ १४ ४७	० ०१ ०२ ०४	२ १४ १५ १०	० १८ ०४ ३७	१ १७ २७ ५०	१ २७ १० ५१	१० ०३ ५० ४६	९ १६ ४८ ३८	७ २३ ३७ १२	११
१२	११ २८ ०१ ३३	११ १९ ०९ ५०	१ ०४ ५५ ५०	० ०३ ०७ ५२	२ १४ २२ १९	० १९ १८ १६	१ १७ ३३ ४५	१ २७ ०७ ४१	१० ०३ ५३ ०९	९ १६ ४९ ४०	७ २३ ३६ ३०	१२
१३	११ २९ ०० २४	० ०१ ०८ ०९	१ ०५ ३६ ५२	० ०५ १३ ३५	२ १४ २९ ३६	० २० ३१ ५३	१ १७ ३९ ४५	१ २७ ०४ ३०	१० ०३ ५५ २९	९ १६ ५० ४०	७ २३ ३५ ४६	१३
१४	११ २९ ५९ १३	० १३ ११ ५२	१ ०६ १७ ५१	० ०७ १८ ५५	२ १४ ३७ ०१	० २१ ४५ २७	१ १७ ४५ ४८	१ २७ ०१ १९	१० ०३ ५७ ४६	९ १६ ५१ ३८	७ २३ ३५ ०१	१४

अप्रैल सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।११"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
१	११ १७ २७ २७	२ ११ ३८ २१	७ २६ ४८ ०६	१० २७ १४ ०६	१ १३ ४४ ४१	११ १४ ३० ५८	१ ०३ ५४ ५१	२ १७ ०३ ११	९ २९ ३७ २५	९ १४ २८ ३४	७ २१ २१ १८	१
२	११ १८ २६ ३९	२ २५ ३४ २७	७ २७ ०९ ४८	१० २८ ५१ ४१	१ १३ ५५ १५	११ १३ ५३ ५३	१ ०४ ०१ ०२	२ १७ ०० ००	९ २९ ३९ ५९	९ १४ २९ ४९	७ २१ २० ४९	२
३	११ १९ २५ ४८	३ ०९ ४४ ३५	७ २७ ३१ ०८	११ ०० ३० ४१	१ १४ ०५ ५४	११ १३ १७ ३२	१ ०४ ०७ १७	२ १६ ५६ ४९	९ २९ ४२ ३२	९ १४ ३१ ०२	७ २१ २० १९	३
४	११ २० २४ ५५	३ २४ ०७ ५०	७ २७ ५२ ०८	११ ०२ ११ ०७	१ १४ १६ ३८	११ १२ ४२ ०८	१ ०४ १३ ३५	२ १६ ५३ ३८	९ २९ ४५ ०२	९ १४ ३२ १४	७ २१ १९ ४६	४
५	११ २१ २४ ००	४ ०८ ४१ २४	७ २८ १२ ४६	११ ०३ ५२ ५८	१ १४ २७ २९	११ १२ ०७ ५४	१ ०४ १९ ५६	२ १६ ५० २८	९ २९ ४७ ३१	९ १४ ३३ २३	७ २१ १९ १२	५
६	११ २२ २३ ०३	४ २३ २० २७	७ २८ ३३ ०२	११ ०५ ३६ १६	१ १४ ३८ २५	११ ११ ३५ ०४	१ ०४ २६ २१	२ १६ ४७ १७	९ २९ ४९ ५७	९ १४ ३४ ३१	७ २१ १८ ३६	६
७	११ २३ २२ ०३	५ ०७ ५८ २४	७ २८ ५२ ५६	११ ०७ २१ ०१	१ १४ ४९ २६	११ ११ ०३ ४९	१ ०४ ३२ ४८	२ १६ ४४ ०६	९ २९ ५२ २१	९ १४ ३५ ३८	७ २१ १७ ५८	७
८	२१ २४ २१ ०१	५ २२ २७ ४७	७ २९ १२ २७	११ ०९ ०७ १४	१ १५ ०० ३३	११ १० ३४ १९	१ ०४ ३९ १९	२ १६ ४० ५५	९ २९ ५४ ४२	९ १४ ३६ ४२	७ २१ १७ १८	८
९	११ २५ १९ ५८	६ ०६ ४१ ३२	७ २९ ३१ ३४	११ १० ५४ ५५	१ १५ ११ ४५	११ १० ०६ ४५	१ ०४ ४५ ५४	२ १६ ३७ ४५	९ २९ ५७ ०२	९ १४ ३७ ४५	७ २१ १६ ३७	९
१०	११ २६ १८ ५२	६ २० ३४ ०४	७ २९ ५० १७	११ १२ ४४ ०६	१ १५ २३ ०२	११ ०९ ४१ १४	१ ०४ ५२ ३१	२ १६ ३४ ३४	९ २९ ५९ १९	९ १४ ३८ ४६	७ २१ १५ ५४	१०
११	११ २७ १७ ४४	७ ०४ ०२ ११	८ ०० ०८ ३५	११ १४ ३४ ४६	१ १५ ३४ २४	११ ०९ १७ ५४	१ ०४ ५९ ११	२ १६ ३१ २३	१० ०० ०१ ३५	९ १४ ३९ ४५	७ २१ १५ ०९	११
१२	११ २८ १६ ३५	७ १७ ०५ ११	८ ०० २६ २८	११ १६ २६ ५६	१ १५ ४५ ५२	११ ०८ ५६ ४९	१ ०५ ०५ ५४	२ १६ २८ १२	१० ०० ०३ ४७	९ १४ ४० ४२	७ २१ १४ २२	१२
१३	११ २९ १५ २४	७ २९ ४४ ४१	८ ०० ४३ ५४	११ १८ २० ३७	१ १५ ५७ २४	११ ०८ ३८ ०५	१ ०५ १२ ४०	२ १६ २५ ०२	१० ०० ०५ ५८	९ १४ ४१ ३८	७ २१ १३ ३४	१३
१४	० ०० १४ ११	८ १२ ०४ ०७	८ ०१ ०० ५४	११ २० १५ ४७	१ १६ ०९ ००	११ ०८ २१ ४५	१ ०५ १९ २९	२ १६ २१ ५१	१० ०० ०८ ०६	९ १४ ४२ ३१	७ २१ १२ ४४	१४
१५	० ०१ १२ ५६	८ २४ ०८ ०८	८ ०१ १७ २७	११ २२ १२ २७	१ १६ २० ४२	११ ०८ ०७ ५१	१ ०५-२६ २१	२ १६ ४८ ४०	१० ०० १० १२	९ १४ ४३ २३	७ २१ ११ ५२	१५
१६	० ०२ ११ ४०	९ ०६ ०१ ५७	८ ०१ ३३ ३१	११ २४ १० ३६	१ १६ ३२ २८	११ ०७ ५६ २४	१ ०५ ३३ १५	२ १६ १५ २९	१० ०० १२ १५	९ १४ ४४ १४	७ २१ १० ५९	१६
१७	० ०३ १० २२	९ १७ ५१ ०५	८ ०१ ४९ ०६	११ २६ १० १२	१ १६ ४४ १९	११ ०७ ४७ २६	१ ०५ ४० १२	२ १६ १२ १९	१० ०० १४ १६	९ १४ ४५ ००	७ २१ १० ०४	१७
१८	० ०४ ०९ ०३	९ २९ ४० ५०	८ ०२ ०४ १२	११ २८ ११ १२	१ १६ ५६ १४	११ ०७ ४० ५५	१ ०५ ४७ ११	२ १६ ०९ ०८	१० ०० १६ १५	९ १४ ४५ ४६	७ २१ ०९ ०७	१८
१९	० ०५ ०७ ४१	१० ११ ३६ ०१	८ ०२ १८ ४७	० ०० १३ ३३	१ १७ ०८ १४	११ ०७ ३६ ५१	१ ०५ ५४ १३	२ १६ ०५ ५७	१० ०० १८ ११	९ १४ ४६ ३१	७ २१ ०८ ०९	१९
२०	० ०६ ०६ १८	१० २३ ४० ४४	८ ०२ ३२ ५२	० ०२ १७ ११	१ १७ २० १७	११ ०७ ३५ १२मा	१ ०६ ०१ १८	२ १६ ०२ ४६	१० ०० २० ०४	९ १४ ४७ १३	७ २१ ०७ १०	२०
२१	० ०७ ०४ ५३	११ ०५ ५८ ०७	८ ०२ ४६ २५	० ०४ २२ ०१	१ १७ ३२ २५	११ ०७ ३५ ५६	१ ०६ ०८ २४	२ १५ ५९ ३६	१० ०० २१ ५५	९ १४ ४७ ५३	७ २१ ०६ ०८	२१
२२	० ०८ ०३ २६	११ १८ ३० १०	८ ०२ ५९ २५	० ०६ २७ ५६	१ १७ ४४ ३७	११ ०७ ३८ ५९	१ ०६ १५ ३३	२ १५ ५६ २५	१० ०० २३ ४३	९ १४ ४८ ३१	७ २१ ०५ ०६	२२
२३	० ०९ ०१ ५८	० ०१ १७ ४०	८ ०३ ११ ५३	० ०८ ३४ ४७	१ १७ ५६ ५३	११ ०७ ४४ २१	१ ०६ २२ ४५	२ १५ ५३ १४	१० ०० २५ २९	९ १४ ४९ ०८	७ २१ ०४ ०१	२३
२४	० १० ०० २७	० १४ २० १६	८ ०३ २३ ४६	० १० ४२ २५	१ १८ ०९ १३	११ ०७ ५१ ५६	१ ०६ २९ ५८	२ १५ ५० ०३	१० ०० २७ १२	९ १४ ४९ ४२	७ २१ ०२ ५६	२४
२५	० १० ५८ ५५	० २७ ३६ ४५	८ ०३ ३५ ०६	० १२ ५० ३७	१ १८ २१ ३७	११ ०८ ०१ ४२	१ ०६ ३७ १३	२ १५ ४६ ५३	१० ०० २८ ५३	९ १४ ५० १४	७ २१ ०१ ४९	२५
२६	० ११ ५७ २१	१ ११ ०५ २२	८ ०३ ४५ ५०	० १४ ५९ १२	१ १८ ३४ ०४	११ ०८ १३ ३५	१ ०६ ४४ ३१	२ १५ ४३ ४२	१० ०० ३० ३१	९ १४ ५० ४५	७ २१ ०० ४०	२६
२७	० १२ ५५ ४५	१ २४ ४४ १३	८ ०३ ५५ ५९	० १७ ०७ ५३	१ १८ ४६ ३५	११ ०८ २७ ३१	१ ०६ ५१ ५०	२ १५ ४० ३१	१० ०० ३२ ०६	९ १४ ५१ १३	७ २० ५९ ३०	२७
२८	० १३ ५४ ०७	२ ०८ ३१ ४०	८ ०४ ०५ ३१	० १९ १६ २६	१ १८ ५९ १०	११ ०८ ४३ २६	१ ०६ ५९ ११	२ १५ ३७ २०	१० ०० ३३ ३८	९ १४ ५१ ४०	७ २० ५८ १९	२८
२९	० १४ ५२ २७	२ २२ २६ २९	८ ०४ १४ २७	० २१ २४ ३३	१ १९ ११ ४८	११ ०९ ०१ १८	१ ०७ ०६ ३४	२ १५ ३४ १०	१० ०० ३५ ०८	९ १४ ५२ ०४	७ २० ५७ ०७	२९
३०	० १५ ५० ४४	३ ०६ २७ ३९	८ ०४ २२ ४६	० २३ ३१ ५६	१ १९ २४ २९	११ ०९ २१ ०१	१ ०७ १३ ५९	२ १५ ३० ५९	१० ०० ३६ ३५	९ १४ ५२ २७	७ २० ५५ ५३	३०

मई सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२ '।१४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
१	० १६ ४९ ००	३ २० ३४ ५०	८ ०४ ३० २७	० २५ ३८ १६	१ १९ ३७ १३	११ ०९ ४२ ३३	१ ०७ २१ २५	२ १५ २७ ४८	१० ०० ३७ ५९	९ १४ ५२ ४७	७ २० ५४ ३८	१
२	० १७ ४७ १४	४ ०४ ४६ २९	८ ०४ ३७ ३०	० २७ ४३ १६	१ १९ ५० ०१	११ १० ०५ ४९	१ ०७ २८ ५३	२ १५ २४ ३७	१० ०० ३९ २१	९ १४ ५३ ०६	७ २० ५३ २२	२
३	० १८ ४५ २५	४ १९ ०० ५६	८ ०४ ४३ ५३	० २९ ४६ ३८	१ २० ०२ ५१	११ १० ३० ४६	१ ०७ ३६ २२	२ १५ २१ २६	१० ०० ४० ३९	९ १४ ५३ २२	७ २० ५२ ०४	३
४	० १९ ४३ ३५	५ ०३ १५ २२	८ ०४ ४९ ३८	१ ०१ ४८ ०४	१ २० १५ ४४	११ १० ५७ २१	१ ०७ ४३ ५३	२ १५ १८ १५	१० ०० ४१ ५५	९ १४ ५३ ३७	७ २० ५० ४६	४
५	० २० ४१ ४२	५ १७ २६ ०१	८ ०४ ५४ ४२	१ ०३ ४७ १९	१ २० २८ ४१	११ ११ २५ ३०	१ ०७ ५१ २५	२ १५ १५ ०५	१० ०० ४३ ०८	९ १४ ५३ ४९	७ २० ४९ २६	५
६	० २१ ३९ ३८	६ ०१ २८ ३०	८ ०४ ५९ ०६	१ ०५ ४४ ०८	१ २० ४१ ४०	११ ११ ५५ १०	१ ०७ ५८ ५८	२ १५ ११ ५४	१० ०० ४४ १८	९ १४ ५४ ००	७ २० ४८ ०६	६
७	० २२ ३७ ५२	६ १५ १८ २०	८ ०५ ०२ ४८	१ ०७ ३८ १७	१ २० ५४ ४१	११ १२ २६ १८	१ ०८ ०६ ३२	२ १५ ०८ ४३	१० ०० ४५ २६	९ १४ ५४ ०९	७ २० ४६ ४४	७
८	० २३ ३५ ५४	६ २८ ५१ ४३	८ ०५ ०५ ४९	१ ०९ २९ ३५	१ २१ ०७ ४६	११ १२ ५८ ५०	१ ०८ १४ ०८	२ १५ ०५ ३२	१० ०० ४६ ३१	९ १४ ५४ १५	७ २० ४५ २१	८
९	० २४ ३३ ५५	७ १२ ०६ ०५	८ ०५ ०८ ०८	१ ११ १७ ५३	१ २१ २० ५२	११ १३ ३२ ४४	१ ०८ २१ ४५	२ १५ ०२ २२	१० ०० ४७ ३२	९ १४ ५४ २०	७ २० ४३ ५७	९
१०	० २५ ३१ ५४	७ २५ ०० २९	८ ०५ ०९ ४३	१ १३ ०३ ००	१ २१ ३४ ०२	११ १४ ०७ ५६	१ ०८ २९ २३	२ १४ ५९ ११	१० ०० ४८ ३१	९ १४ ५४ २३	७ २० ४२ ३३	१०
११	० २६ २९ ५२	८ ०७ ३५ ३७	८ ०५ १० ३४	१ १४ ४४ ५१	१ २१ ४७ १४	११ १४ ४४ २३	१ ०८ ३७ ०२	२ १४ ५६ ००	१० ०० ४९ २८	९ १४ ५४ २४व	७ २० ४१ ०७	११
१२	० २७ २७ ४८	८ १९ ५३ ४३	८ ०५ १० ४२व	१ १६ २३ १९	१ २२ ०० २८	११ १५ २२ ०३	१ ०८ ४४ ४२	२ १४ ५२ ४९	१० ०० ५० २१	९ १४ ५४ २३	७ २० ३९ ४१	१२
१३	० २८ २५ ४३	९ ०१ ५८ १४	८ ०५ १० ०५	१ १७ ५८ १८	१ २२ १३ ४४	११ १६ ०० ५१	१ ०८ ५२ २२	२ १४ ४९ ३८	१० ०० ५१ ११	९ १४ ५४ २०	७ २० ३८ १३	१३
१४	० २९ २३ ३७	९ १३ ५३ २९	८ ०५ ०८ ४३	१ १९ २९ ४५	१ २२ २७ ०३	११ १६ ४० ४६	१ ०९ ०० ०४	२ १४ ४६ २७	१० ०० ५१ ५९	९ १४ ५४ १५	७ २० ३६ ४५	१४
१५	१ ०० २१ २९	९ २५ ४४ १८	८ ०५ ०६ ३५	१ २० ५७ ३६	१ २२ ४० २४	११ १७ २१ ४५	१ ०९ ०७ ४६	२ १४ ४३ १७	१० ०० ५२ ४३	९ १४ ५४ ०८	७ २० ३५ १६	१५
१६	१ ०१ १९ २१	१० ०७ ३५ ४८	८ ०५ ०३ ४२	१ २२ २१ ४६	१ २२ ५३ ४७	११ १८ ०३ ४६	१ ०९ १५ २९	२ १४ ४० ०६	१० ०० ५३ २५	९ १४ ५३ ५९	७ २० ३३ ४६	१६
१७	१ ०२ १७ ११	१० १९ ३२ ५९	८ ०५ ०० ०३	१ २३ ४२ १३	१ २३ ०७ १२	११ १८ ४६ ४६	१ ०९ २३ १३	२ १४ ३६ ५५	१० ०० ५४ ०४	९ १४ ५३ ४८	७ २० ३२ १६	१७
१८	१ ०३ १५ ००	११ ०१ ४० ३२	८ ०४ ५५ ३८	१ २४ ५८ ५३	१ २३ २० ३८	११ १९ ३० ४३	१ ०९ ३० ५७	२ १४ ३३ ४५	१० ०० ५४ ३९	९ १४ ५३ ३५	७ २० ३० ४५	१८
१९	१ ०४ १२ ४७	११ १४ ०२ २७	८ ०४ ५० २६	१ २६ ११ ४४	१ २३ ३४ ०७	११ २० १५ ३४	१ ०९ ३८ ४२	२ १४ ३० ५४	१० ०० ५५ १२	९ १४ ५३ २१	७ २० २९ १३	१९
२०	१ ०५ १० ३४	११ २६ ४१ ४७	८ ०४ ४४ २९	१ २७ २० ४१	१ २३ ४७ ३८	११ २१ ०१ १७	१ ०९ ४६ २७	२ १४ २७ २३	१० ०० ५५ ४२	९ १४ ५३ ०४	७ २० २७ ४०	२०
२१	१ ०६ ०८ १९	० ०९ ४० १६	८ ०४ ३७ ४६	१ २८ २५ ४२	१ २४ ०१ १०	११ २१ ४७ ५०	१ ०९ ५४ १३	२ १४ २४ १२	१० ०० ५६ ०९	९ १४ ५२ ४५	७ २० २६ ०७	२१
२२	१ ०७ ०६ ०३	० २२ ५८ १५	८ ०४ ३० १७	१ २९ २६ ४३	१ २४ १४ ४४	११ २२ ३५ ११	१ १० ०१ ५८	२ १४ २१ ०२	१० ०० ५६ ३३	९ १४ ५२ २५	७ २० २४ ३४	२२
२३	१ ०८ ०३ ४६	१ ०६ ३४ ३३	८ ०४ २२ ०३	२ ०० २३ ४०	१ २४ २८ १९	११ २३ २३ १८	१ १० ०९ ४५	२ १४ १७ ५१	१० ०० ५६ ५४	९ १४ ५२ ०३	७ २० २३ ००	२३
२४	१ ०९ ०१ २८	१ २० २६ ४०	८ ०४ १३ ०४	२ ०१ १६ २८	१ २४ ४१ ५६	११ २४ १२ ०९	१ १० १७ ३१	२ १४ १४ ४०	१० ०० ५७ १२	९ १४ ५१ ३८	७ २० २१ २५	२४
२५	१ ०९ ५९ ०८	२ ०४ ३१ ०६	८ ०४ ०३ २२	२ ०२ ०५ ०४	१ २४ ५५ ३४	११ २५ ०१ ४३	१ १० २५ १७	२ १४ ११ २९	१० ०० ५७ २७	९ १४ ५१ १२	७ २० १९ ५०	२५
२६	१ १० ५६ ४७	२ १८ ४३ ५५	८ ०३ ५२ ५६	२ ०२ ४९ २४	१ २५ ०९ १३	११ २५ ५१ ५७	१ १० ३३ ०४	२ १४ ०८ १८	१० ०० ५७ ३९	९ १४ ५० ४४	७ २० १८ १५	२६
२७	१ ११ ५४ २५	३ ०३ ०१ १०	८ ०३ ४१ ४९	२ ०३ २९ २२	१ २५ २२ ५४	११ २६ ४२ ५१	१ १० ४० ५०	२ १४ ०५ ०७	१० ०० ५७ ४८	९ १४ ५० १५	७ २० १६ ३९	२७
२८	१ १२ ५२ ०१	३ १७ १९ २३	८ ०३ ३० ००	२ ०४ ०४ ५४	१ २५ ३६ ३६	११ २७ ३४ २२	१ १० ४८ ३६	२ १४ ०१ ५६	१० ०० ५७ ५४	९ १४ ४९ ४३	७ २० १५ ०३	२८
२९	१ १३ ४९ ३६	४ ०१ ३५ ३६	८ ०३ १७ ३१	२ ०४ ३५ ५७	१ २५ ५० १९	११ २८ २६ ३०	१ १० ५६ २२	२ १३ ५८ ४६	१० ०० ५७ ५७	९ १४ ४९ १०	७ २० १३ २६	२९
३०	१ १४ ४७ ०९	४ १५ ४७ २८	८ ०३ ०४ २४	२ ०५ ०२ २६	१ २६ ०४ ०३	११ २९ १९ १२	१ ११ ०४ ०८	२ १३ ५५ ३५	१० ०० ५७ ५८व	९ १४ ४८ ३४	७ २० ११ ५०	३०
३१	१ १५ ४४ ४१	४ २९ ५२ ५६	८ ०२ ५० ३९	२ ०५ २४ १९	१ २६ १७ ४७	० ०० १२ २९	१ ११ ११ ५३	२ १३ ५२ २४	१० ०० ५७ ५५	९ १४ ४७ ५७	७ २० १० १३	३१

जून सन् २००९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' 19८"

ता. जून	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल (वक्री) रा. अं. क. वि.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क. वि.	प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि.	ता. जून
१	१ १६ ४२ ११	५ १३ ५० १७	८ ०२ ३६ १८	२ ०५ ४१ ३४	१ २६ ३१ ३३	० ०१ ०६ १८	१ ११ १९ ३८	२ १३ ४९ १३	१० ०० ५७ ४९	९ १४ ४७ १९	७ २० ०८ ३६	१
२	१ १७ ३९ ४०	५ २९ ३७ ४९	८ ०२ २१ २३	२ ०५ ५४ १०	१ २६ ४५ १९	० ०२ ०० ३९	१ ११ २७ २३	२ १३ ४६ ०३	१० ०० ५७ ४१	९ १४ ४६ ३८	७ २० ०६ ५९	२
३	१ १८ ३७ ०८	६ ११ १३ ५६	८ ०२ ०५ ५५	२ ०६ ०२ ०६	१ २६ ५९ ०६	० ०२ ५५ ३१	१ ११ ३५ ०७	२ १३ ४२ ५२	१० ०० ५७ २९	९ १४ ४५ ५६	७ २० ०५ २२	३
४	१ १९ ३४ ३५	६ २४ ३७ ०५	८ ०१ ४९ ५६	२ ०६ ०५ २५व	१ २७ १२ ५४	० ०३ ५० ५३	१ ११ ४२ ५१	२ १३ ३९ ४१	१० ०० ५७ १५	९ १४ ४५ १२	७ २० ०३ ४५	४
५	१ २० ३२ ०१	७ ०७ ४६ ०४	८ ०१ ३३ २७	२ ०६ ०४ ११	१ २७ २६ ४२	० ०४ ४६ ४३	१ ११ ५० ३४	२ १३ ३६ ३०	१० ०० ५६ ५८	९ १४ ४४ २७	७ २० ०२ ०८	५
६	१ २१ २९ २५	७ २० ४० ०५	८ ०१ १६ ३१	२ ०५ ५८ ३०	१ २७ ४० ३०	० ०५ ४३ ०१	१ ११ ५८ १६	२ १३ ३३ २०	१० ०० ५६ ३८	९ १४ ४३ ३९	७ २० ०० ३०	६
७	१ २२ २६ ४९	८ ०३ १९ ०२	८ ०० ५९ ०८	२ ०५ ४८ ३०	१ २७ ५४ २०	० ०६ ३९ ४६	१ १२ ०५ ५८	२ १३ ३० ०९	१० ०० ५६ १५	९ १४ ४२ ५१	७ १९ ५८ ५३	७
८	१ २३ २४ १२	८ १५ ४३ ३८	८ ०० ४१ २२	२ ०५ ३४ २३	१ २८ ०८ ०९	० ०७ ३६ ५७	१ १२ १३ ३८	२ १३ २६ ५८	१० ०० ५५ ५०	९ १४ ४२ ००	७ १९ ५७ १६	८
९	१ २४ २१ ३५	८ २७ ५५ २९	८ ०० २३ १४	२ ०५ १६ २५	१ २८ २१ ५९	० ०८ ३४ ३३	१ १२ २१ १८	२ १३ २३ ४७	१० ०० ५५ २१	९ १४ ४१ ०८	७ १९ ५५ ३९	९
१०	१ २५ १८ ५६	९ ०९ ५७ ००	८ ०० ०४ ४६	२ ०४ ५४ ५४	१ २८ ३५ ४९	० ०९ ३२ ३४	१ १२ २८ ५८	२ १३ २० ३६	१० ०० ५४ ५०	९ १४ ४० १४	७ १९ ५४ ०३	१०
११	१ २६ १६ १७	९ २१ ५१ २२	७ २९ ४६ ०१	२ ०४ ३० १०	१ २८ ४९ ३९	० १० ३० ५८	१ १२ ३६ ३६	२ १३ १७ २५	१० ०० ५४ १६	९ १४ ३९ १९	७ १९ ५२ २६	११
१२	१ २७ १३ ३८	१० ०३ ४२ २३	७ २९ २७ ०२	२ ०४ ०२ ३८	१ २९ ०३ ३०	० ११ २९ ४५	१ १२ ४४ १३	२ १३ १४ १४	१० ०० ५३ ३९	९ १४ ३८ २२	७ १९ ५० ५०	१२
१३	१ २८ १० ५८	१० १५ ३४ १७	७ २९ ०७ ५०	२ ०३ ३२ ४५	१ २९ १७ २१	० १२ २८ ५४	१ १२ ५१ ४९	२ १३ ११ ०४	१० ०० ५२ ५९	९ १४ ३७ २४	७ १९ ४९ १४	१३
१४	१ २९ ०८ १७	१० २७ ३१ ३८	७ २८ ४८ २९	२ ०३ ०१ ०१	१ २९ ३१ ११	० १३ २८ २४	१ १२ ५९ २४	२ १३ ०७ ५३	१० ०० ५२ १७	९ १४ ३६ २४	७ १९ ४७ ३८	१४
१५	२ ०० ०५ ३६	११ ०९ ३९ ०८	७ २८ २९ ००	२ ०२ २७ ५८	१ २९ ४५ ०२	० १४ २८ १४	१ १३ ०६ ५८	२ १३ ०४ ४२	१० ०० ५१ ३१	९ १७ ३५ २३	७ १९ ४६ ०३	१५
१६	२ ०१ ०२ ५५	११ २२ ०१ १३	७ २८ ०९ २८	२ ०१ ५४ ०९	१ २९ ५८ ५३	० १५ २८ २५	१ १३ १४ ३१	२ १३ ०१ ३२	१० ०० ५० ४३	९ १४ ३४ २०	७ १९ ४४ २८	१६
१७	२ ०२ ०० १३	० ०४ ४१ ५२	७ २७ ४९ ५४	२ ०१ २० ०८	२ ०० १२ ४३	० १६ २८ ५५	१ १३ २२ ०२	२ १२ ५८ २१	१० ०० ४९ ५३	९ १४ ३३ १५	७ १९ ४२ ५३	१७
१८	२ ०२ ५७ ३१	० १७ ४४ ००	७ २७ ३० २२	२ ०० ४६ ३२	२ ०० २६ ३३	० १७ २९ ४३	१ १३ २९ ३२	२ १२ ५५ १०	१० ०० ४८ ५९	९ १४ ३२ १०	७ १९ ४१ १९	१८
१९	२ ०३ ५४ ४९	१ ०१ ०९ १६	७ २७ १० ५४	२ ०० १३ ५३	२ ०० ४० २३	० १८ ३० ४९	१ १३ ३७ ००	२ १२ ५१ ५९	१० ०० ४८ ०३	९ १४ ३१ ०२	७ १९ ३९ ४५	१९
२०	२ ०४ ५२ ०६	१ १४ ५७ ३७	७ २६ ५१ ३३	१ २९ ५२ ४६	२ ०० ५४ १२	० १९ ३२ १२	१ १३ ४४ २७	२ १२ ४८ ४८	१० ०० ४७ ०४	९ १४ २९ ५४	७ १९ ३८ १२	२०
२१	२ ०५ ४९ २३	१ २९ ०७ ०२	७ २६ ३२ २३	१ २९ १३ ४३	२ ०१ ०८ ०१	० २० ३३ ५३	१ १३ ५१ ५२	२ १२ ४५ ३७	१० ०० ४६ ०३	९ १४ २८ ४४	७ १९ ३६ ३९	२१
२२	२ ०६ ४६ ४०	२ १३ ३३ ३७	७ २६ १३ २५	१ २८ ४७ १३	२ ०१ २१ ५०	० २१ ३५ ४९	१ १३ ५९ १६	२ १२ ४२ २६	१० ०० ४४ ५९	९ १४ २७ ३३	७ १९ ३५ ०७	२२
२३	२ ०७ ४३ ५६	२ २८ ११ ४९	७ २५ ५४ ४४	१ २८ २३ ४४	२ ०१ ३५ ३७	० २२ ३८ ०१	१ १४ ०६ ३८	२ १२ ३९ १६	१० ०० ४३ ५३	९ १४ २६ २०	७ १९ ३३ ३६	२३
२४	२ ०८ ४१ १२	३ १२ ५५ ०९	७ २५ ३६ २२	१ २८ ०३ ३९	२ ०१ ४९ २४	० २३ ४० २७	१ १४ १३ ५८	२ १२ ३६ ०५	१० ०० ४२ ४३	९ १४ २५ ०६	७ १९ ३२ ०५	२४
२५	२ ०९ ३८ २७	३ २७ ३७ ०१	७ २५ १८ २२	१ २७ ४७ २१	२ ०२ ०३ ११	० २४ ४३ ०९	१ १४ २१ १६	२ १२ ३२ ५४	१० ०० ४१ ३२	९ १४ २३ ५१	७ १९ ३० ३५	२५
२६	२ १० ३५ ४२	४ १२ ११ २९	७ २५ ०० ४६	१ २७ ३५ ०५	२ ०२ १६ ५६	० २५ ४६ ०५	१ १४ २८ ३२	२ १२ २९ ४३	१० ०० ४० १८	९ १४ २२ ३५	७ १९ २९ ०६	२६
२७	२ ११ ३२ ५६	४ २६ ३३ ५७	७ २४ ४३ ३७	१ २७ २७ ०८	२ ०२ ३० ४१	० २६ ४९ १४	१ १४ ३५ ४७	२ १२ २६ ३२	१० ०० ३९ ०१	९ १४ २१ १८	७ १९ २७ ३७	२७
२८	२ १२ ३० ०९	५ १० ४१ १९	७ २४ २६ ५७	१ २७ २३ ४१मा	२ ०२ ४४ २४	० २७ ५२ ३७	१ १४ ४२ ५९	२ १२ २३ २२	१० ०० ३७ ४२	९ १४ १९ ५९	७ १९ २६ ०९	२८
२९	२ १३ २७ २२	५ २४ ३१ ५६	७ २४ १० ४८	१ २७ २४ ५४	२ ०२ ५८ ०६	० २८ ५६ १३	१ १४ ५० ०९	२ १२ २० ११	१० ०० ३६ २१	९ १४ १८ ४०	७ १९ २४ ४३	२९
३०	२ १४ २४ ३५	६ ०८ ०५ २४	७ २३ ५५ १३	१ २७ ३० ५३	२ ०३ ११ ४८	१ ०० ०० ०२	१ १४ ५७ १७	२ १२ १७ ००	१० ०० ३४ ५७	९ १४ १७ १९	७ १९ २३ १७	३०

जुलाई सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।२३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुलाई
१	२ १५ २१ ४७	६ २१ २२ ११	७ २३ ४० १३	१ २७ ४१ ४४	२ ०३ २५ २८	१ ०१ ०४ ०३	१ १५ ०४ २२	२ १२ १३ ४९	१० ०० ३३ ३१	९ १४ १५ ५७	७ १९ २१ ५२	१
२	२ १६ १८ ५८	७ ०४ २३ १८	७ २३ २५ ५०	१ २७ ५७ २९	२ ०३ ३९ ०६	१ ०२ ०८ १७	१ १५ ११ २६	२ १२ १० ३९	१० ०० ३२ ०३	९ १४ १४ ३४	७ १९ २० २८	२
३	२ १७ १६ १०	७ १७ १० ०१	७ २३ १२ ०५	१ २८ १८ ११	२ ०३ ५२ ४४	१ ०३ १२ ४३	१ १५ १८ २७	२ १२ ०७ २८	१० ०० ३० ३२	९ १४ १३ ११	७ १९ १९ ०४	३
४	२ १८ १३ २१	७ २९ ४३ ४०	७ २२ ५९ ०१	१ २८ ४३ ४९	२ ०४ ०६ २०	१ ०४ १७ २१	१ १५ २५ २६	२ १२ ०४ १७	१० ०० २९ ००	९ १४ ११ ४६	७ १९ १७ ४२	४
५	२ १९ १० ३२	८ १२ ०५ ३८	७ २२ ४६ ३८	१ २९ १४ २२	२ ०४ १९ ५४	१ ०५ २२ ११	१ १५ ३२ २२	२ १२ ०१ ०६	१० ०० २७ २५	९ १४ १० २०	७ १९ १६ २१	५
६	२ २० ०७ ४३	८ २४ १७ २४	७ २२ ३४ ५७	१ २९ ४९ ५०	२ ०४ ३३ २८	१ ०६ २७ १२	१ १५ ३९ १६	२ ११ ५७ ५५	१० ०० २५ ४८	९ १४ ०८ ५४	७ १९ १५ ०१	६
७	२ २१ ०४ ५४	९ ०६ २० ३५	७ २२ २४ ०१	२ ०० ३० ०८	२ ०४ ४६ ५९	१ ०७ ३२ २४	१ १५ ४६ ०७	२ ११ ५४ ४४	१० ०० २४ ०९	९ १४ ०७ २६	७ १९ १३ ४२	७
८	२ २२ ०२ ०५	९ १८ १७ ०९	७ २२ १३ ४९	२ ०१ १५ १५	२ ०५ ०० २९	१ ०८ ३७ ४७	१ १५ ५२ ५५	२ ११ ५१ ५३	१० ०० २२ २८	९ १४ ०५ ५८	७ १९ १२ २५	८
९	२ २२ ५९ १७	१० ०० ०९ २२	७ २२ ०४ २३	२ ०२ ०५ ०८	२ ०५ १३ ५७	१ ०९ ४३ २१	१ १५ ५९ ४१	२ ११ ४८ २३	१० ०० २० ४५	९ १४ ०४ २९	७ १९ ११ ०८	९
१०	२ २३ ५६ २९	१० ११ [illegible] ५६	७ २१ ५५ ४३	२ ०२ ५९ ४२	२ ०५ २७ २४	१ १० ४९ ०५	१ १६ ०६ २४	२ ११ ४५ १२	१० ०० १९ ००	९ १४ ०२ ५९	७ १९ ०९ ५२	१०
११	२ २४ ५३ ४१	१० २३ ५२ ००	७ २१ ४७ ५१	२ ०३ ५८ ५६	२ ०५ ४० ४९	१ ११ ५५ ००	१ १६ १३ ०४	२ ११ ४२ ०१	१० ०० १७ १२	९ १४ ०१ २९	७ १९ ०८ ३८	११
१२	२ २५ ५० ५३	११ ०५ ४९ १२	७ २१ ४० ४७	२ ०५ ०२ ४४	२ ०५ ५४ १२	१ १३ ०१ ०४	१ १६ १९ ४२	२ ११ ३८ ५०	१० ०० १५ २३	९ १३ ५९ ५७	७ १९ ०७ २५	१२
१३	२ २६ ४८ ०६	११ १७ ५५ ३५	७ २१ ३४ ३२	२ ०६ ११ ०४	२ ०६ ०७ ३३	१ १४ ०७ १९	१ १६ २६ १६	२ ११ ३५ ४०	१० ०० १३ ३३	९ १३ ५८ २५	७ १९ ०९ १३	१३
१४	२ २७ ४५ २०	० ०० १५ २६	७ २१ २९ ०६	२ ०७ २३ ५२	२ ०६ २० ५१	१ १५ १३ ४२	१ १६ ३२ ४८	२ ११ ३२ २९	१० ०० ११ ४०	९ १३ ५६ ५३	७ १९ ०५ ०२	१४
१५	२ २८ ४२ ३४	० १२ ५३ ०१	७ २१ २४ ३०	२ ०८ ४१ ०३	२ ०६ ३४ ०८	१ १६ २० १६	१ १६ ३९ १६	२ ११ २९ १८	१० ०० ०९ ४५	९ १३ ५५ २०	७ १९ ०३ ५३	१५
१६	२ २९ ३९ ४८	० २५ ५२ ११	७ २१ २० ४४	२ १० ०२ ३३	२ ०६ ४७ २३	१ १७ २६ ५८	१ १६ ४५ ४१	२ ११ २६ ०७	१० ०० ०७ ४९	९ १३ ५३ ४६	७ १९ ०२ ४५	१६
१७	३ ०० ३७ ०४	१ ०९ १५ ५६	७ २१ १७ ४८	२ ११ २८ १७	२ ०७ ०० ३५	१ १८ ३३ ४९	१ १६ ४२ ०३	२ ११ २२ ५७	१० ०० ०५ ५१	९ १३ ५२ ११	७ १९ ०१ ३९	१७
१८	३ ०१ ३४ २०	१ २३ ०५ ४९	७ २१ १५ ४३	२ १२ ५८ ०९	२ ०७ १३ ४५	१ १९ ४० ४९	१ १६ ५८ २२	२ ११ १९ ४६	१० ०० ०३ ५२	९ १३ ५० ३७	७ १९ ०० ३३	१८
१९	३ ०२ ३१ ३६	२ ०७ २१ २३	७ २१ १४ २१	२ १४ ३२ ०१	२ ०७ २६ ५३	१ २० ४७ ५७	१ १७ ०४ ३७	२ ११ १६ ३५	१० ०० ०१ ५१	९ १३ ४९ ०१	७ १८ ५९ ३०	१९
२०	३ ०३ २८ ५३	२ २१ ५९ ४०	७ २१ १४ ०५	२ १६ ०९ ४६	२ ०७ ३९ ५८	१ २१ ५५ १३	१ १७ १० ४९	२ ११ १३ २४	९ २९ ५९ ४८	९ १३ ४७ २६	७ १८ ५८ २७	२०
२१	३ ०४ २६ ११	३ ०६ ५४ ५९	७ २१ १४ ३३	२ १७ ५१ १५	२ ०७ ५३ ०१	१ २३ ०२ ३८	१ १७ १६ ५८	२ ११ १० १३	९ २९ ५७ ४४	९ १३ ४५ ५०	७ १८ ५७ २७	२१
२२	३ ०५ २३ २९	३ २१ ५९ २६	७ २१ १५ ५२	२ १९ ३६ १७	२ ०८ ०६ ०१	१ २४ १० १०	१ १७ २३ ०३	२ ११ ०७ ०२	९ २९ ५५ ३८	९ १३ ४४ १३	७ १८ ५६ २७	२२
२३	३ ०६ २० ४८	४ ०७ ०३ ५३	७ २१ १८ ०२	२ २१ २४ ३९	२ ०८ १८ ५८	१ २५ १७ ५०	१ १७ २९ ०४	२ ११ ०३ ५१	९ २९ ५३ ३१	९ १३ ४२ ३६	७ १८ ५५ २९	२३
२४	३ ०७ १८ ०६	४ २१ ५९ १९	७ २१ २१ ०२	२ २३ १६ ०८	२ ०८ ३१ ५२	१ २६ २५ ३७	१ १७ ३५ ०२	२ ११ ०० ४१	९ २९ ५१ २३	९ १३ ४० ५९	७ १८ ५४ ३३	२४
२५	३ ०८ १५ २६	५ ०६ ३८ १७	७ २१ २४ ५२	२ २५ १० २६	२ ०८ ४४ ४३	१ २७ ३३ ३१	१ १७ ४० ५५	२ १० ५७ ३०	९ २९ ४९ १३	९ १३ ३९ २२	७ १८ ५३ ३८	२५
२६	३ ०९ १२ ४६	५ २० ५५ ३९	७ २१ २९ ३२	२ २७ ०७ १८	२ ०८ ५७ ३२	१ २८ ४१ ३३	१ १७ ४६ ४५	२ १० ५४ १९	९ २९ ४७ ०२	९ १३ ३७ ४४	७ १८ ५२ ४५	२६
२७	३ १० १० ०६	६ ०४ ४९ ०२	७ २१ ३५ ०१	२ २९ ०६ २५	२ ०९ १० १७	१ २९ ४९ ४२	१ १७ ५२ ३२	२ १० ५१ ०९	९ २९ ४४ ५०	९ १३ ३६ ०६	७ १८ ५१ ५४	२७
२८	३ ११ ०७ २६	६ १८ १८ २३	७ २१ ४१ १९	३ ०१ ०७ २७	२ ०९ २२ ५९	२ ०० ५७ ५७	१ १७ ५८ १४	२ १० ४७ ५८	९ २९ ४२ ३७	९ १३ ३४ २९	७ १८ ५१ ०४	२८
२९	३ १२ ०४ ४७	७ ०१ २५ २४	७ २१ ४८ २५	३ ०३ १० ०३	२ ०९ ३५ ३८	२ ०२ ०६ २०	१ १८ ०३ ५२	२ १० ४४ ४७	९ २९ ४० २३	९ १३ ३२ ५१	७ १८ ५० १६	२९
३०	३ १३ ०२ ०९	७ १४ १२ ५४	७ २१ ५६ १८	३ ०५ १३ ५४	२ ०९ ४८ १३	२ ०३ १४ ५०	१ १८ ०९ २६	२ १० ४१ ३६	९ २९ ३८ ०८	९ १३ ३१ १३	७ १८ ४९ २९	३०
३१	३ १३ ५९ ३१	७ २६ ४४ ०८	७ २२ ०४ ५७	३ ०७ १८ ४०	२ १० ०० ४६	२ ०४ २३ २६	१ १८ १४ ५६	२ १० ३८ २५	९ २९ ३५ ५२	९ १३ २९ ३५	७ १८ ४८ ४४	३१

अगस्त सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।२८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अगस्त	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अगस्त
१	३ १४ ५६ ५३	८ ०९ ०२ १९	७ २२ १४ २३	३ ०९ २४ ०२	२ १० १३ १४	२ ०५ ३२ ०९	१ १८ २० २२	२ १० ३५ १५	९ २९ ३३ ३५	९ १३ २७ ५७	७ १८ ४८ ०१	१
२	३ १५ ५४ १७	८ २१ १० २७	७ २२ २४ ३३	३ ११ २९ ४०	२ १० २५ ४०	२ ०६ ४० ५९	१ १८ २५ ४४	२ १० ३२ ०४	९ २९ ३१ १७	९ १३ २६ १९	७ १८ ४७ १९	२
३	३ १६ ५१ ४१	९ ०३ ११ ०९	७ २२ ३५ २७	३ १३ ३५ १८	२ १० ३८ ०१	२ ०७ ४९ ५६	१ १८ ३१ ०२	२ १० २८ ५३	९ २९ २८ ५८	९ १३ २४ ४१	७ १८ ४६ ४०	३
४	३ १७ ४९ ०६	९ १५ ०६ ३९	७ २२ ४७ ०५	३ १५ ४० ४१	२ १० ५० २०	२ ०८ ५८ ५९	१ १८ ३६ १५	२ १० २५ ४२	९ २९ २६ ३९	९ १३ २३ ०४	७ १८ ४६ ०२	४
५	३ १८ ४६ ३१	९ २६ ५८ ५७	७ २२ ५९ २६	३ १७ ४५ ३५	२ ११ ०२ ३४	२ १० ०८ ०९	१ १८ ४१ २४	२ १० २२ ३१	९ २९ २४ १९	९ १३ २१ २६	७ १८ ४५ २६	५
६	३ १९ ४३ ५८	१० ०८ ४८ ५४	७ २३ १२ २८	३ १९ ४९ ४७	२ ११ १४ ४५	२ ११ १७ २६	१ १८ ४६ २८	२ १० १९ २१	९ २९ २१ ५८	९ १३ १९ ४९	७ १८ ४४ ५१	६
७	३ २० ४१ २६	१० २० ४१ २३	७ २३ २६ १२	३ २१ ५३ ०७	२ ११ २६ ५१	२ १२ २६ ४८	१ १८ ५१ २८	२ १० १६ १०	९ २९ १९ ३७	९ १३ १८ १२	७ १८ ४४ १८	७
८	३ २१ ३८ ५५	११ ०२ ३५ ३१	७ २३ ४० ३७	३ २३ ५५ २८	२ ११ ३८ ५४	२ १३ ३६ १८	१ १८ ५६ २४	२ १० १२ ५९	९ २९ १७ १५	९ १३ १६ ३५	७ १८ ४३ ४८	८
९	३ २२ ३६ २६	११ १४ ३४ ४६	७ २३ ५५ ४१	३ २५ ५६ ४१	२ ११ ५० ५३	२ १४ ४५ ५३	१ १९ ०१ १४	२ १० ०९ ४९	९ २९ १४ ५३	९ १३ १४ ५९	७ १८ ४३ १९	९
१०	३ २३ ३३ ५७	११ २६ ४२ ०७	७ २४ ११ २४	३ २७ ५६ ४१	२ १२ ०२ ४७	२ १५ ५५ ३५	१ १९ ०६ ००	२ १० ०६ ३८	९ २९ १२ ३०	९ १३ १३ २३	७ १८ ४२ ५१	१०
११	३ २४ ३१ ३०	० ०९ ०१ ०५	७ २४ २७ ४६	३ २९ ५५ २४	२ १२ १४ ३८	२ १७ ०५ २३	१ १९ १० ४२	२ १० ०३ २७	९ २९ १० ०७	९ १३ ११ ४७	७ १८ ४२ २६	११
१२	३ २५ २९ ०४	० २१ ३५ ३१	७ २४ ४४ ४६	४ ०१ ५२ ४७	२ १२ २६ २४	२ १८ १५ १७	१ १९ १५ १८	२ १० ०० १६	९ २९ ०७ ४४	९ १३ १० ११	७ १८ ४२ ०२	१२
१३	३ २६ २६ ४०	१ ०४ २९ २३	७ २५ ०२ २३	४ ०३ ४८ ४६	२ १२ ३८ ०५	२ १९ २५ १७	१ १९ १९ ५०	२ ०९ ५७ ०६	९ २९ ०५ २१	९ १३ ०८ ३६	७ १८ ४१ ४१	१३
१४	३ २७ २४ १७	१ १७ ४६ २४	७ २५ २० ३७	४ ०५ ४३ २१	२ १२ ४९ ४३	२ २० ३५ २३	१ १९ २४ १७	२ ०९ ५३ ५५	९ २९ ०२ ५७	९ १३ ०७ ०२	७ १८ ४१ २१	१४
१५	३ २८ २१ ५६	२ ०१ २९ २६	७ २५ ३९ २७	४ ०७ ३६ ३०	२ १३ ०१ १५	२ २१ ४५ ३५	१ १९ २८ ३९	२ ०९ ५० ४४	९ २९ ०० ३३	९ १३ ०५ २८	७ १८ ४१ ०३	१५
१६	३ २९ १९ ३६	२ १५ ३९ ४७	७ २५ ५८ ५३	४ ०९ २८ १२	२ १३ १२ ४३	२ २२ ५५ ५३	१ १९ ३२ ५५	२ ०९ ४७ ३३	९ २८ ५८ ०९	९ १३ ०३ ५५	७ १८ ४० ४७	१६
१७	४ ०० १७ १८	३ ०० १६ १७	७ २६ १८ ५३	४ ११ १८ २७	२ १३ २४ ०७	२ २४ ०६ १६	१ १९ ३७ ०७	२ ०९ ४४ २२	९ २८ ५५ ४६	९ १३ ०२ २२	७ १८ ४० ३३	१७
१८	४ ०१ १५ ०१	३ १५ १४ ३९	७ २६ ३९ २८	४ १३ ०७ १६	२ १३ ३५ २५	२ २५ १६ ४५	१ १९ ४१ १३	२ ०९ ४१ ११	९ २८ ५३ २२	९ १३ ०० ५०	७ १८ ४० २१	१८
१९	४ ०२ १२ ४६	४ ०० २७ २०	७ २७ ०० ३६	४ १४ ५४ ३९	२ १३ ४६ ३८	२ २६ २७ १९	१ १९ ४५ १४	२ ०९ ३८ ०१	९ २८ ५० ५८	९ १२ ५९ १८	७ १८ ४० ११	१९
२०	४ ०३ १० ३१	४ १५ ४४ २१	७ २७ २२ १८	४ १६ ४० ३६	२ १३ ५७ ४६	२ २७ ३७ ५८	१ १९ ४९ १०	२ ०९ ३४ ५०	९ २८ ४८ ३५	९ १२ ५७ ४७	७ १८ ४० ०२	२०
२१	४ ०४ ०८ १७	५ ०० ५४ ४५	७ २७ ४४ ३२	४ १८ २५ ०८	२ १४ ०८ ४९	२ २८ ४८ ४२	१ १९ ५३ ०१	२ ०९ ३१ ३९	९ २८ ४६ १२	९ १२ ५६ १७	७ १८ ३९ ५६	२१
२२	४ ०५ ०६ ०५	५ १५ ४८ ३५	७ २८ ०७ १९	४ २० ०८ १६	२ १४ १९ ४७	२ २९ ५९ ३२	१ १९ ५६ ४६	२ ०९ २८ २९	९ २८ ४३ ४९	९ १२ ५४ ४८	७ १८ ३९ ५२	२२
२३	४ ०६ ०३ ५४	६ ०० १८ २४	७ २८ ३० ३६	४ २१ ५० ०१	२ १४ ३० ३९	३ ०१ १० २६	१ २० ०० २५	२ ०९ २५ १८	९ २८ ४१ २६	९ १२ ५३ २०	७ १८ ३९४९मा	२३
२४	४ ०७ ०१ ४५	६ १४ २० १०	७ २८ ५४ २४	४ २३ ३० २४	२ १४ ४१ २६	३ ०२ २१ २५	१ २० ०३ ५९	२ ०९ २२ ०७	९ २८ ३९ ०४	९ १२ ५१ ५२	७ १८ ३९ ४९	२४
२५	४ ०७ ५९ ३७	६ २७ ५३ ०७	७ २९ १८ ४२	४ २५ ०९ २४	२ १४ ५२ ०८	३ ०३ ३२ ३०	१ २० ०७ २८	२ ०९ १८ ५६	९ २८ ३६ ४३	९ १२ ५० २५	७ १८ ३९ ५०	२५
२६	४ ०८ ५७ ३१	७ १० ५९ ११	७ २९ ४३ २९	४ २६ ४७ ०४	२ १५ ०२ ४३	३ ०४ ४३ ३९	१ २० १० ५१	२ ०९ १५ ४६	९ २८ ३४ २२	९ १२ ४८ ५९	७ १८ ३९ ५४	२६
२७	४ ०९ ५५ २६	७ २३ ४२ ००	८ ०० ०८ ४४	४ २८ २३ २४	२ १५ १३ १३	३ ०५ ५४ ५३	१ २० १४ ०८	२ ०९ १२ ३५	९ २८ ३२ ०१	९ १२ ४७ ३५	७ १८ ३९ ५९	२७
२८	४ १० ५३ २२	८ ०६ ०६ ००	८ ०० ३४ २७	४ २९ ५८ २३	२ १५ २३ ३७	३ ०७ ०६ १२	१ २० १७ १९	२ ०९ ०९ २४	९ २८ २९ ४२	९ १२ ४६ ११	७ १८ ४० ०७	२८
२९	४ ११ ५१ २०	८ १८ १५ ४७	८ ०१ ०० ३७	५ ०१ ३२ ०२	२ १५ ३३ ५५	३ ०८ १७ ३५	१ २० २० २५	२ ०९ ०६ १३	९ २८ २७ २३	९ १२ ४४ ४८	७ १८ ४० १६	२९
३०	४ १२ ४९ १९	९ ०० १५ ४२	८ ०१ २७ १३	५ ०३ ०४ २२	२ १५ ४४ ०७	३ ०९ २९ ०४	१ २० २३ २५	२ ०९ ०३ ०२	९ २८ २५ ०५	९ १२ ४३ २६	७ १८ ४० २८	३०
३१	४ १३ ४७ १९	९ १२ ०९ ३५	८ ०१ ५४ १५	५ ०४ ३५ २२	२ १५ ५४ १३	३ १० ४० ३७	१ २० २६ १९	२ ०८ ५९ ५२	९ २८ २२ ४८	९ १२ ४२ ०५	७ १८ ४० ४१	३१

सितम्बर सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' ३२"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
१	४ १४ ४५ २०	९ २४ ०० ३४	८ ०२ २१ ४३	५ ०६ ०५ ०२	२ १६ ०४ १३	३ ११ ५२ १५	१ २० २९ ०८	२ ०८ ५६ ४१	९ २८ २० ३१	९ १२ ४० ४६	७ १८ ४० ५७	१
२	४ १५ ४३ २२	१० ०५ ५१ ११	८ ०२ ४९ ३४	५ ०७ ३३ २३	२ १६ १४ ०६	३ १३ ०३ ५८	१ २० ३१ ५०	२ ०८ ५३ ३०	९ २८ १८ १६	९ १२ ३९ २७	७ १८ ४१ १४	२
३	४ १६ ४१ २६	१० १७ ४३ २३	८ ०३ १७ ५०	५ ०९ ०० २३	२ १६ २३ ५४	३ १४ १५ ४५	१ २१ ३४ २७	२ ०८ ५० २०	९ २८ १६ ०२	९ १२ ३८ १०	७ १८ ४१ ३३	३
४	४ १७ ३९ ३२	१० २९ ३८ ४३	८ ०३ ४६ २९	५ १० २६ ०२	२ १६ ३३ ३४	३ १५ २७ ३८	१ २० ३६ ५७	२ ०८ ४७ ०९	९ २८ १३ ४९	९ १२ ३६ ५४	७ १८ ४१ ५५	४
५	४ १८ ३७ ४०	११ ११ ३८ ३३	८ ०४ १५ ३१	५ ११ ५० १८	२ १६ ४३ ०८	३ १६ ३९ ३५	१ २० ३९ २१	२ ०८ ४३ ५८	९ २८ ११ ३६	९ १२ ३५ ३९	७ १८ ४२ १८	५
६	४ १९ ३५ ५०	११ २३ ४४ १९	८ ०४ ४४ ५५	५ १३ १३ १०	२ १६ ५२ ३६	३ १७ ५१ ३६	१ २० ४१ ४०	२ ०८ ४० ४८	९ २८ ०९ २५	९ १२ ३४ २५	७ १८ ४२ ४३	६
७	४ २० ३४ ०१	० ०५ ५७ ४८	८ ०५ १४ ४१	५ १४ ३४ ३६	२ १७ ०१ ५६	३ १९ ०३ ४३	१ २० ४३ ५२	२ ०८ ३७ ३७	९ २८ ०७ १६	९ १२ ३३ १३	७ १८ ४३ ११	७
८	४ २१ ३२ १५	० १८ २१ १६	८ ०५ ४४ ४९	५ १५ ५४ ३५	२ १७ ११ १०	३ २० १५ ५३	१ २० ४५ ५८	२ ०८ ३४ २६	९ २८ ०५ ०७	९ १२ ३२ ०२	७ १८ ४३ ४०	८
९	४ २२ ३० ३०	१ ०० ५७ २९	८ ०६ १५ १८	५ १७ १३ ०३	२ १७ २० १७	३ २१ २८ ०९	१ २० ४७ ५८	२ ०८ ३१ १६	९ २८ ०३ ००	९ १२ ३० ५२	७ १८ ४४ ११	९
१०	४ २३ २८ ४८	१ १३ ४९ ४१	८ ०६ ४६ ०७	५ १८ २९ ५७	२ १७ २९ १६	३ २२ ४० २९	१ २० ४९ ५२	२ ०८ २८ ०५	९ २८ ०० ५४	९ १२ २९ ४४	७ १८ ४४ ४४	१०
११	४ २४ २७ ०८	१ २७ ०१ १८	८ ०७ १७ १७	५ १९ ४५ १५	२ १७ ३८ ०९	३ २३ ५२ ५३	१ २० ५१ ३९	२ ०८ २४ ५४	९ २७ ५८ ५०	९ १२ २८ ३७	७ १८ ४५ १९	११
१२	४ २५ २५ २९	२ १० ३५ ३३	८ ०७ ४८ ४६	५ २० ५८ ५२	२ १७ ४६ ५४	३ २५ ०५ २२	१ २० ५३ २०	२ ०८ २१ ४३	९ २७ ५६ ४७	९ १२ २७ ३१	७ १८ ४५ ५६	१२
१३	४ २६ २३ ५३	२ २४ ३४ ४०	८ ०८ २० ३६	५ २२ १० ४३	२ १७ ५५ ३२	३ २६ १७ ५६	१ २० ५४ ५५	२ ०८ १८ ३२	९ २७ ५४ ४६	९ १२ २६ २७	७ १८ ४६ ३५	१३
१४	४ २७ २२ १९	३ ०८ ५९ ०७	८ ०८ ५२ ४४	५ २३ २० ४४	२ १८ ०४ ०२	३ २७ ३० ३३	१ २० ५६ २३	२ ०८ १५ २१	९ २७ ५२ ४६	९ १२ २५ २४	७ १८ ४७ १६	१४
१५	४ २८ २० ४७	३ २३ ४६ ३२	८ ०९ २५ १२	५ २४ २८ ४९	२ १८ १२ २४	३ २८ ४३ १५	१ २० ५७ ४५	२ ०८ १२ ११	९ २७ ५० ४८	९ १२ २४ २३	७ १८ ४७ ५९	१५
१६	४ २९ १९ १७	४ ०८ ५१ १६	८ ०९ ५७ ५८	५ २५ ३४ ५०	२ १८ २० ३८	३ २९ ५६ ००	१ २० ५९ ००	२ ०८ ०९ ००	९ २७ ४८ ५२	९ १२ २३ २३	७ १८ ४८ ४४	१६
१७	५ ०० १७ ४९	४ २४ ०४ ३६	८ १० ३१ ०३	५ २६ ३८ ४१	२ १८ २८ ४५	४ ०१ ०८ ५०	१ २१ ०० ०९	२ ०८ ०५ ४९	९ २७ ४६ ५७	९ १२ २२ २५	७ १८ ४९ ३०	१७
१८	५ ०१ १६ २३	५ ०९ १५ ५०	८ ११ ०४ २५	५ २७ ४० १२	२ १८ ३६ ४३	४ ०२ २१ ४३	१ २१ ०१ ११	२ ०८ ०२ ३९	९ २७ ४५ ०४	९ १२ २१ २८	७ १८ ५० १९	१८
१९	५ ०२ १४ ५८	५ २४ १४ १४	८ ११ ३८ ०५	५ २८ ३९ १४	२ १८ ४४ ३४	४ ०३ ३४ ४१	१ २१ ०२ ०७	२ ०७ ५९ २८	९ २७ ४३ १३	९ १२ २० ३३	७ १८ ५१ १०	१९
२०	५ ०३ १३ ३६	६ ०८ ५० ५१	८ १२ १२ ०२	५ २९ ३५ ३७	२ १८ ५२ १६	४ ०४ ४७ ४१	१ २१ ०२ ५६	२ ०७ ५६ १७	९ २७ ४१ २४	९ १२ १९ ४०	७ १८ ५२ ०२	२०
२१	५ ०४ १२ १५	६ २२ ५९ ५१	८ १२ ४६ १६	६ ०० २९ ०९	२ १८ ५९ ४९	४ ०६ ०० ४६	१ २१ ०३ ३९	२ ०७ ५३ ०७	९ २७ ३९ ३७	९ १२ १८ ४८	७ १८ ५२ ५७	२१
२२	५ ०५ १० ५७	७ ०६ ३९ ०१	८ १३ २० ४६	६ ०१ १९ ३५	२ १९ ०७ १४	४ ०७ १३ ५४	१ २१ ०४ १५	२ ०७ ४९ ५६	९ २७ ३७ ५२	९ १२ १७ ५८	७ १८ ५३ ५३	२२
२३	५ ०६ ०९ ३९	७ १९ ४९ १९	८ १३ ५५ ३३	६ ०२ ०६ ४३	२ १९ १४ ३१	४ ०८ २७ ०५	१ २१ ०४ ४५	२ ०७ ४६ ४५	९ २७ ३६ ०९	९ १२ १७ १०	७ १८ ५४ ५१	२३
२४	५ ०७ ०८ २४	८ ०२ ३४ ०३	८ १४ ३० ३४	६ ०२ ५० १४	२ १९ २१ ३८	४ ०९ ४० २०	१ २१ ०५ ०८	२ ०७ ४३ ३४	९ २७ ३४ २८	९ १२ १६ २३	७ १८ ५५ ५१	२४
२५	५ ०८ ०७ १०	८ १४ ५७ ५०	८ १५ ०५ ५१	६ ०३ २९ ५३	२ १९ २८ ३७	४ १० ५३ ३९	१ २१ ०५ २४	२ ०७ ४० २४	९ २७ ३२ ४९	९ १२ १५ ३८	७ १८ ५६ ५३	२५
२६	५ ०९ ०५ २८	८ २७ ०५ ५०	८ १५ ४१ २२	६ ०४ ०५ १९	२ १९ ३५ २७	४ १२ ०७ ००	१ २१ ०५ ३४व	२ ०७ ३७ १३	९ २७ ३१ १३	९ १२ १४ ५५	७ १८ ५७ ५६	२६
२७	५ १० ०४ ४८	९ ०९ ०३ १३	८ १६ १७ ०८	६ ०४ ३६ १२	२ १९ ४२ ०९	४ १३ २० २५	१ २१ ०५ ३७	२ ०७ ३४ ०२	९ २७ २९ ३९	९ १२ १४ १४	७ १८ ५९ ०२	२७
२८	५ ११ ०३ ३९	९ २० ५४ ४७	८ १६ ५३ ०८	६ ०५ ०२ ०९	२ १९ ४८ ४१	४ १४ ३३ ५४	१ २१ ०५ ३४	२ ०७ ३० ५१	९ २७ २८ ०६	९ १२ १३ ३४	७ १९ ०० ०९	२८
२९	५ १२ ०२ ३२	१० ०२ ४४ ४०	८ १७ २९ २१	६ ०५ २२ ४६	२ १९ ५५ ०३	४ १५ ४७ २६	१ २१ ०५ २४	२ ०७ २७ ४०	९ २७ २६ ३७	९ १२ १२ ५६	७ १९ ०१ १८	२९
३०	५ १३ ०१ २७	१० १४ ३६ १७	८ १८ ०५ ४७	६ ०५ ३७ ३८	२ २० ०१ १७	४ १७ ०१ ०१	१ २१ ०५ ०७	२ ०७ २४ ३०	९ २७ २५ ०९	९ १२ १२ २०	७ १९ ०२ २९	३०

अक्टूबर सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।३५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	५ १४ ०० २४	१० २६ ३२ १०	८ १८ ४२ २६	६ ०५ ४६ २०व	२ २० ०७ २१	४ १८ १४ ३९	१ २१ ०४ ४४	२ ०७ २१ १९	९ २७ २३ ४४	९ १२ ११ ४६	७ १९ ०३ ४२	१
२	५ १४ ५९ २३	११ ०८ ३४ ०८	८ १९ १९ १८	६ ०५ ४८ २७	२ २० १३ १६	४ १९ २८ २१	१ २१ ०४ १४	२ ०७ १८ ०९	९ २७ २२ २१	९ १२ ११ १४	७ १९ ०४ ५६	२
३	५ १५ ५८ २४	११ २० ४३ २२	८ १९ ५६ २२	६ ०५ ४३ ३३	२ २० १९ ०१	४ २० ४२ ०५	१ २१ ०३ ३८	२ ०७ १४ ५८	९ २७ २१ ०१	९ १२ १० ४४	७ १९ ०६ १२	३
४	५ १६ ५७ २७	० ०३ ०० ४०	८ २० ३३ ३८	६ ०५ ३१ १७	२ २० २४ ३६	४ २१ ५५ ५३	१ २१ ०२ ५६	२ ०७ ११ ४७	९ २७ १९ ४३	९ १२ १० १५	७ १९ ०७ ३०	४
५	५ १७ ५६ ३२	० १५ २६ ४५	८ २१ ११ ०६	६ ०५ ११ २०	२ २० ३० ०२	४ २३ ०९ ४४	१ २१ ०२ ०६	२ ०७ ०८ ३७	९ २७ १८ २८	९ १२ ०९ ४८	७ १९ ०८ ४९	५
६	५ १८ ५५ ३९	० २८ ०२ ३०	८ २१ ४८ ४५	६ ०४ ४३ ३१	२ २० ३५ १७	४ २४ २३ ३९	१ २१ ०१ ११	२ ०७ ०५ २६	९ २७ १७ १५	९ १२ ०९ २३	७ १९ १० १०	६
७	५ १९ ५४ ४९	१ १० ४९ १२	८ २२ २६ ३५	६ ०४ ०७ ४४	२ २० ४० २३	४ २५ ३७ ३६	१ २१ ०० ०८	२ ०७ ०२ १५	९ २७ १६ ०५	९ १२ ०९ ००	७ १९ ११ ३३	७
८	५ २० ५४ ००	१ २३ ४८ ३६	८ २३ ०४ ३६	६ ०३ २४ १०	२ २० ४५ १८	४ २६ ५१ ३६	१ २० ५९ ००	२ ०६ ५९ ०४	९ २७ १४ ५७	९ १२ ०८ ३९	७ १९ १२ ५७	८
९	५ २१ ५३ १४	२ ०७ ०२ ५१	८ २३ ४२ ४८	६ ०२ ३३ ०८	२ २० ५० ०४	४ २८ ०५ ४०	१ २० ५७ ४५	२ ०६ ५५ ५३	९ २७ १३ ५२	९ १२ ०८ २०	७ १९ १४ २३	९
१०	५ २२ ५२ ३१	२ २० ३४ १५	८ २४ २१ ११	६ ०१ ३५ १८	२ २० ५४ ३८	४ २९ १९ ४७	१ २० ५६ २३	२ ०६ ५२ ४३	९ २७ १२ ५०	९ १२ ०८ ०३	७ १९ १५ ५१	१०
११	५ २३ ५१ ४९	३ ०४ २४ ४५	८ २४ ५९ ४४	६ ०० ३१ ३६	२ २० ५९ ०३	५ ०० ३३ ५६	१ २० ५४ ५५	२ ०६ ४९ ३२	९ २७ ११ ५०	९ १२ ०७ ४८	७ १९ १७ २०	११
१२	५ २४ ५१ १०	३ १८ ३५ १२	८ २५ ३८ २८	५ २९ २३ १९	२ २१ ०३ १७	५ ०१ ४८ ०८	१ २० ५३ २१	२ ०६ ४६ २१	९ २७ १० ५३	९ १२ ०७ ३४	७ १९ १८ ५१	१२
१३	५ २५ ५० ३४	४ ०३ ०४ ३६	८ २६ १७ २१	५ २८ १२ ०१	२ २१ ०७ २०	५ ०३ ०२ २३	१ २० ५१ ४०	२ ०६ ४३ १०	९ २७ ०९ ५८	९ १२ ०७ २३	७ १९ २० २३	१३
१४	५ २६ ४९ ५९	४ १७ ४९ २७	८ २६ ५६ २५	५ २६ ५९ ३१	२ २१ ११ १२	५ ०४ १६ ४१	१ २० ४९ ५३	२ ०६ ४० ००	९ २७ ०९ ०७	९ १२ ०७ १४	७ १९ २१ ५७	१४
१५	५ २७ ४९ २७	५ ०२ ४३ ३४	८ २७ ३५ ३८	५ २५ ४७ ५१	२ २१ १४ ५३	५ ०५ ३१ ०१	१ २० ४८ ००	२ ०६ ३६ ४९	९ २७ ०८ १८	९ १२ ०७ ०६	७ १९ २३ ३२	१५
१६	५ २८ ४८ ५७	५ १७ ३८ ४१	८ २८ १५ ०१	५ २४ ३९ ०५	२ २१ १८ २४	५ ०६ ४५ २४	१ २० ४६ ००	२ ०६ ३३ ३८	९ २७ ०७ ३२	९ १२ ०७ ०१	७ १९ २५ ०९	१६
१७	५ २९ ४८ २९	६ ०२ २५ ३९	८ २८ ५४ ३४	५ २३ ३५ १५	२ २१ २१ ४३	५ ०७ ५९ ४९	१ २० ४३ ५५	२ ०६ ३० २८	९ २७ ०६ ४९	९ १२ ०६ ५८	७ १९ २६ ४७	१७
१८	६ ०० ४८ ०३	६ १६ ५५ ५९	८ २९ ३४ १५	५ २२ ३८ १४	२ २१ २४ ५१	५ ०९ १४ १६	१ २० ४१ ४३	२ ०६ २७ १७	९ २७ ०६ ०९	९ १२ ०६ ५७मा.	७ १९ २८ २७	१८
१९	६ ०१ ४७ ३९	७ ०१ ०३ १७	९ ०० १४ ०६	५ २१ ४९ ३८	२ २१ २७ ४८	५ १० २८ ४६	१ २० ३९ २५	२ ०६ २४ ०६	९ २७ ०५ ३२	९ १२ ०६ ५७	७ १९ ३० ०८	१९
२०	६ ०२ ४७ १७	७ १४ ४४ ०३	९ ०० ५४ ०५	५ २१ १० ४५	२ २१ ३० ३४	५ ११ ४३ १८	१ २० ३७ ०२	२ ०६ २० ५५	९ २७ ०४ ५७	९ १२ ०७ ००	७ १९ ३१ ५१	२०
२१	६ ०३ ४६ ५७	७ २७ ५७ ४२	९ ०१ ३४ १३	५ २० ४२ २८	२ २१ ३३ ०८	५ १२ ५७ ५१	१ २० ३४ ३२	२ ०६ १७ ४५	९ २७ ०४ २६	९ १२ ०७ ०५	७ १९ ३३ ३५	२१
२२	६ ०४ ४६ ३८	८ १० ४६ १२	९ ०२ १४ २९	५ २० २५ २०	२ २१ ३५ ३०	५ १४ १२ २७	१ २० ३१ ५७	२ ०६ १४ ३४	९ २७ ०३ ५७	९ १२ ०७ १२	७ १९ ३५ २१	२२
२३	६ ०५ ४६ २२	८ २३ १३ १४	९ ०२ ५४ ५३	५ २० १९ ३०मा.	२ २१ ३७ ४२	५ १५ २७ ०५	१ २० २९ १५	२ ०६ ११ २३	९ २७ ०३ ३२	९ १२ ०७ २१	७ १९ ३७ ०७	२३
२४	६ ०६ ४६ ०७	९ ०५ २३ ३१	९ ०३ ३५ २५	५ २० २४ ५०	२ २१ ३९ ४१	५ १६ ४१ ४४	१ २० २६ २९	२ ०६ ०८ १२	९ २७ ०३ ०९	९ १२ ०७ ३२	७ १९ ३८ ५५	२४
२५	६ ०७ ४५ ५३	९ १७ २२ १४	९ ०४ १६ ०४	५ २० ४० ५७	२ २१ ४१ २९	५ १७ ५६ २६	१ २० २३ ३६	२ ०६ ०५ ०१	९ २७ ०२ ५०	९ १२ ०७ ४५	७ १९ ४० ४५	२५
२६	६ ०८ ४५ ४२	९ २९ १४ ३४	९ ०४ ५६ ५०	५ २१ ०७ १४	२ २१ ४३ ०६	५ १९ ११ ०९	१ २० २० ३९	२ ०६ ०१ ५०	९ २७ ०२ ३३	९ १२ ०८ ००	७ १९ ४२ ३५	२६
२७	६ ०९ ४५ ३२	१० ११ ०५ २४	९ ०५ ३७ ४४	५ २१ ४२ ५७	२ २१ ४४ ३०	५ २० २५ ५४	१ २० १७ ३५	२ ०५ ५८ ४०	९ २७ ०२ २०	९ १२ ०८ १७	७ १९ ४४ २७	२७
२८	६ १० ४५ २३	१० २२ ५९ ०२	९ ०६ १८ ४४	५ २२ २७ १८	२ २१ ४५ ४३	५ २१ ४० ४१	१ २० १४ २७	२ ०५ ५५ २९	९ २७ ०२ ०९	९ १२ ०८ ३६	७ १९ ४६ २०	२८
२९	६ ११ ४५ १७	११ ०४ ५९ ००	९ ०६ ५९ ५०	५ २३ १९ २६	२ २१ ४६ ४४	५ २२ ५५ २९	१ २० ११ १३	२ ०५ ५२ १९	९ २७ ०२ ०२	९ १२ ०८ ५७	७ १९ ४८ १५	२९
३०	६ १२ ४५ १२	११ १७ ०७ ५८	९ ०७ ४१ ०३	५ २४ १८ १८	२ २१ ४७ ३४	५ २४ १० २०	१ २० ०७ ५५	२ ०५ ४९ ०८	९ २७ ०१ ५८मा	९ १२ ०९ २०	७ १९ ५० १०	३०
३१	६ १३ ४५ ०९	११ २९ २७ ४२	९ ०८ २२ २२	५ २५ २३ ३६	२ २१ ४८ ११	५ २५ २५ १२	१ २० ०४ ३१	२ ०५ ४५ ५७	९ २७ ०१ ५६	९ १२ ०९ ४५	७ १९ ५२ ०६	३१

नवम्बर सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' ३८"

ता. नवं.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. नवं.
१	६ १४ ४५ ०८	० ११ ५९ ०७	९ ०९ ०३ ४७	५ २६ ३४ ०३	२ २१ ४८ ३७	५ २६ ४० ०५	१ २० ०१ ०२	२ ०५ ४२ ४६	९ २७ ०१ ५८	९ १२ १० १२	७ १९ ५४ ०४	१
२	६ १५ ४५ ०९	० २४ ४२ २६	९ ०९ ४५ १८	५ २७ ४९ ०४	२ २१ ४८ ५०७	५ २७ ५५ ००	१ १९ ५७ २९	२ ०५ ३९ ३६	९ २७ ०२ ०२	९ १२ १० ४२	७ १९ ५६ ०३	२
३	६ १६ ४५ ११	१ ०७ ३७ ३०	९ १० २६ ५५	५ २९ ०८ ००	२ २१ ४८ ५२	५ २९ ०९ ५७	१ १९ ५३ ५१	२ ०५ ३६ २५	९ २७ ०२ १०	९ १२ ११ १३	७ १९ ५८ ०२	३
४	६ १७ ४५ १६	१ २० ४३ ५९	९ ११ ०८ ३७	६ ०० ३० १६	२ २१ ४८ ४१	६ ०० २४ ५६	१ १९ ५० ०८	२ ०५ ३३ १४	९ २७ २० २१	९ १२ ११ ४६	७ २० ०० ०३	४
५	६ १८ ४५ २३	२ ०४ ०१ ३९	९ ११ ५० २४	६ ०१ ५५ १९	२ २१ ४८ १९	६ ०१ ३९ ५६	१ १९ ४६ २१	२ ०५ ३० ०३	९ २७ ०२ ३५	९ १२ १२ २१	७ २० ०२ ०५	५
६	६ १९ ४५ ३१	२ १७ ३० ३४	९ १२ ३२ १७	६ ०३ २२ ४३	२ २१ ४७ ४५	६ ०२ ५४ ५७	१ १९ ४२ २९	२ ०५ २६ ५२	९ २७ ०२ ५२	९ १२ १२ ५८	७ २० ०४ ०८	६
७	६ २० ४५ ४२	३ ०१ ११ ०१	९ १३ १४ १५	६ ०४ ५२ ०२	२ २१ ४६ ५८	६ ०४ १० ०१	१ १९ ३८ ३३	२ ०५ २३ ४१	९ २७ ०३ ११	९ १२ १३ ३७	७ २० ०६ ११	७
८	६ २१ ४५ ५५	३ १५ ०३ १५	९ १३ ५६ १८	६ ०६ २२ ५५	२ २१ ४६ ००	६ ०५ २५ ०५	१ १९ ३४ ३३	२ ०५ २० ३१	९ २७ ०३ ३४	९ १२ १४ १९	७ २० ०८ १६	८
९	६ २२ ४६ ०९	३ २९ ०७ १०	९ १४ ३८ २६	६ ०७ ५५ ०५	२ २१ ४४ ४९	६ ०६ ४० १२	१ १९ ३० २९	२ ०५ १७ २०	९ २७ ०४ ०१	९ १२ १५ ०२	७ २० १० २२	९
१०	६ २३ ४६ २६	४ १३ २१ ४९	९ १५ २० ३९	६ ०९ २८ १७	२ २१ ४३ २७	६ ०७ ५५ १९	१ १९ २६ २१	२ ०५ १४ ०९	९ २७ ०४ ३०	९ १२ १५ ४७	७ २० १२ २८	१०
११	६ २४ ४६ ४५	४ २७ ४४ ५७	९ १६ ०२ ५६	६ ११ ०२ १७	२ २१ ४१ ५२	६ ०९ १० २८	१ १९ २२ ०९	२ ०५ १० ५८	९ २७ ०५ ०२	९ १२ १६ ३४	७ २० १४ ३५	११
१२	६ २५ ४७ ०६	५ १२ १२ ५१	९ १६ ४५ १९	६ १२ ३६ ५४	२ २१ ४० ०५	६ १० २५ ३९	१ १९ १७ ५३	२ ०५ ०७ ४८	९ २७ ०५ ३७	९ १२ १७ २३	७ २० १६ ४३	१२
१३	६ २६ ४७ २९	५ २६ ४० २९	९ १७ २७ ४६	६ १४ ११ ५९	२ २१ ३८ ०६	६ ११ ४० ५०	१ १९ १३ ३४	२ ०५ ०४ ३७	९ २७ ०६ १५	९ १२ १८ १४	७ २० १८ ५२	१३
१४	६ २७ ४७ ५३	६ ११ ०१ ५७	९ १८ १० १८	६ १५ ४७ २५	२ २१ ३५ ५६	६ १२ ५६ ०३	१ १९ ०९ १२	२ ०५ ०१ २६	९ २७ ०६ ५७	९ १२ १९ ०७	७ २० २१ ०२	१४
१५	६ २८ ४८ २०	६ २५ ११ २२	९ १८ ५२ ५४	६ १७ २३ ०४	२ २१ ३३ ३३	६ १४ ११ १७	१ १९ ०४ ४६	२ ०४ ५८ १५	९ २७ ०७ ४१	९ १२ २० ०२	७ २० २३ १२	१५
१६	६ २९ ४८ ४८	७ ०९ ०३ ४२	९ १९ ३५ ३४	६ १८ ५८ ५१	२ २१ ३० ५९	६ १५ २६ ३१	१ १९ ०० १८	२ ०४ ५५ ०५	९ २७ ०८ २९	९ १२ २० ५८	७ २० २५ २३	१६
१७	७ ०० ४९ १७	७ २२ ३५ ३१	९ २० १८ १९	६ २० ३४ ४३	२ २१ २८ १२	६ १६ ४१ ४७	१ १८ ५५ ४६	२ ०४ ५१ ५४	९ २७ ०९ १९	९ १२ २१ ५८	७ २० २७ ३५	१७
१८	७ ०१ ४९ ४८	८ ०५ ४५ १९	९ २१ ०१ ०८	६ २२ १० ३६	२ २१ २५ १४	६ १७ ५७ ०३	१ १८ ५१ १२	२ ०४ ४८ ४३	९ २७ १० १३	९ १२ २२ ५८	७ २० २९ ४७	१८
१९	७ ०२ ५० २१	८ १८ ३३ ३३	९ २१ ४४ ००	६ २३ ४६ २६	२ २१ २२ ०५	६ १९ १२ २१	१ १८ ४६ ३५	२ ०४ ४५ ३२	९ २७ ११ १०	९ १२ २४ ००	७ २० ३२ ००	१९
२०	७ ०३ ५० ५४	९ ०१ ०२ २२	९ २२ २६ ५६	६ २५ २२ १३	२ २१ १८ ४४	६ २० २७ ३९	१ १८ ४१ ५६	२ ०४ ४२ २१	९ २७ १२ ०९	९ १२ २५ ०५	७ २० ३४ १४	२०
२१	७ ०४ ५१ २९	९ १३ १५ ०८	९ २३ ०९ ५६	६ २६ ५७ ५४	२ २१ १५ १२	६ २१ ४२ ५७	१ १८ ३७ १४	२ ०४ ३९ १०	९ २७ १३ १२	९ १२ २६ ११	७ २० ३६ २८	२१
२२	७ ०५ ५२ ०६	९ २५ १६ ०८	९ २३ ५२ ५९	६ २८ ३३ २८	२ २१ ११ २८	६ २२ ५८ १७	१ १८ ३२ ३१	२ ०४ ३६ ००	९ २७ १४ १८	९ १२ २७ १९	७ २० ३८ ४२	२२
२३	७ ०६ ५२ ४३	१० ०७ १० ०६	९ २४ ३६ ०५	७ ०० ०८ ५५	२ २१ ०७ ३३	६ २४ १३ ३६	१ १८ २७ ४५	२ ०४ ३२ ४९	९ २७ १५ २६	९ १२ २८ २९	७ २० ४० ५७	२३
२४	७ ०७ ५३ २२	१० १९ ०१ ५८	९ २५ १९ १४	७ ०१ ४४ १३	२ २१ ०३ २८	६ २५ २८ ५७	१ १८ २२ ५८	२ ०४ २९ ३८	९ २७ १६ ३८	९ १२ २९ ४०	७ २० ४३ १३	२४
२५	७ ०८ ५४ ०१	११ ०० ५६ ३४	९ २६ ०२ २६	७ ०३ १९ २४	२ २० ५९ १२	६ २६ ४४ १८	१ १८ १८ ०९	२ ०४ २६ २७	९ २७ १७ ५२	९ १२ ३० ५४	७ २० ४५ २९	२५
२६	७ ०९ ५४ ४२	११ १२ ५८ २१	९ २६ ४५ ४०	७ ०४ ५४ २६	२ २० ५४ ४४	६ २७ ५९ ४०	१ १८ १३ १९	२ ०४ २३ १७	९ २७ १९ १०	९ १२ ३२ ०९	७ २० ४७ ४५	२६
२७	७ १० ५५ २४	११ २५ ११ ०८	९ २७ २८ ५७	७ ०६ २९ २०	२ २० ५० ०७	६ २९ १५ ०२	१ १८ ०८ २८	२ ०४ २० ०६	९ २७ २० ३०	९ १२ ३३ २६	७ २० ५० ०२	२७
२८	७ ११ ५६ ०७	० ०७ ३७ ५५	९ २८ १२ १७	७ ०८ ०४ ०६	२ २० ४५ १९	७ ०० ३० २४	१ १८ ०३ ३५	२ ०४ १६ ५५	९ ५७ २१ ५३	९ १२ ३४ ४४	७ २० ५२ १८	२८
२९	७ १२ ५६ ५१	० २० २० ३९	९ २८ ५५ ३९	७ ०९ ३८ ४५	२ २० ४० २१	७ ०१ ४५ ४८	१ १७ ५८ ४२	२ ०४ १३ ४४	९ २७ २३ १९	९ १२ ३६ ०५	७ २० ५४ ३६	२९
३०	७ १३ ५७ ३६	१ ०३ २० १०	९ २९ ३९ ०३	७ ११ १३ १८	२ २० ३५ १३	७ ०३ ०१ ११	१ १७ ५३ ४०	२ ०४ १० ३४	९ २७ २४ ४८	९ १२ ३७ २७	७ २० ५६ ५३	३०

दिसम्बर सन् २००१ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।४२"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
१	७ १४ ५८ २३	१ १६ ३६ १३	१० ०० २२ २९	७ १२ ४७ ४५	२ २० २९ ५५	७ ०४ १६ ३६	१ १७ ४८ ५२	२ ०४ ०७ २३	९ २७ २६ १९	९ १२ ३८ ५०	७ २० ५९ ११	१
२	७ १५ ५९ ११	२ ०० ०७ २६	१० ०१ ०५ ५७	७ १४ २२ ०८	२ २० २४ २७	७ ०५ ३२ ००	१ १७ ४३ ५७	२ ०४ ०४ १२	९ २७ २७ ५४	९ १२ ४० १६	७ २१ ०१ २९	२
३	७ १६ ५९ ५९	२ १३ ५१ ४६	१० ०१ ४९ २७	७ १५ ५६ २६	२ २० १८ ५०	७ ०६ ४७ २६	१ १७ ३९ ०१	२ ०४ ०१ ०१	९ २७ २९ ३१	९ १२ ४१ ४३	७ २१ ०३ ४७	३
४	७ १८ ०० ५०	२ २७ ४६ ४०	१० ०२ ३२ ५९	७ १७ ३० ४२	२ २० १३ ०४	७ ०८ ०२ ५१	१ १७ ३४ ०६	२ ०३ ५७ ५०	९ २७ ३१ ११	९ १२ ४३ ११	७ २१ ०६ ०५	४
५	७ १९ ०१ ४१	३ ११ ४९ २६	१० ०३ १६ ३२	७ १९ ०४ ५५	२ २० ०७ ०८	७ ०९ १८ १८	१ १७ २९ १०	२ ०३ ५४ ३९	९ २७ ३२ ५४	९ १२ ४४ ४१	७ २१ ०८ २३	५
६	७ २० ०२ ३४	३ २५ ५७ २९	१० ०४ ०० ०८	७ २० ३९ ०७	२ २० ०१ ०४	७ १० ३३ ४५	१ १७ २४ १४	२ ०३ ५१ २८	९ २७ ३४ ३९	९ १२ ४६ १३	७ २१ १० ४२	६
७	७ २१ ०३ २८	४ १० ०८ २४	१० ०४ ४३ ४५	७ २२ १३ १९	२ १९ ५४ ५१	७ ११ ४९ १२	१ १७ १९ १९	२ ०३ ४८ १८	९ २७ ३६ २७	९ १२ ४७ ४६	७ २१ १३ ००	७
८	७ २२ ०४ २३	४ २४ १९ ५६	१० ०५ २७ २३	७ २३ ४७ ३२	२ १९ ४८ ३०	७ १३ ०४ ४०	१ १७ १४ २५	२ ०३ ४५ ०७	९ २७ ३८ १८	९ १२ ४९ २१	७ २१ १५ १९	८
९	७ २३ ०५ २०	५ ०८ २९ ५३	१० ०६ ११ ०४	७ २५ २१ ४६	२ १९ ४२ ००	७ १४ २० ०९	१ १७ ०९ ३१	२ ०३ ४१ ५६	९ २७ ४० ११	९ १२ ५० ५७	७ २१ १७ ३७	९
१०	७ २४ ०६ १८	५ २२ ३६ ०४	१० ०६ ५४ ४६	७ २६ ५६ ०२	२ १९ ३५ २३	७ १५ ३५ ३८	१ १७ ०४ ३८	२ ०३ ३८ ४५	९ २७ ४२ ०७	९ १२ ५२ ३५	७ २१ १९ ५५	१०
११	७ २५ ०७ १७	६ ०६ ३६ ०७	१० ०७ ३८ २९	७ २८ ३० २२	२ १९ २८ ३८	७ १६ ५१ ०७	१ १६ ५९ ४६	२ ०३ ३५ [illegible]	[illegible] ४४ ०६	९ १२ ५४ १४	७ २१ २२ १४	११
१२	७ २६ ०८ १७	६ २० २७ ३७	१० ०८ २२ १४	८ ०० ०४ ४६	२ १९ २१ ४६	७ १८ ०६ ३७	१ १६ ५४ ५५	२ ०३ ३२ [illegible]	९ २७ ४६ ०७	९ १२ ५५ ५५	७ २१ २४ ३२	१२
१३	७ २७ ०९ १८	७ ०; ०८ ०६	१० ०९ ०६ ००	८ ०१ ३९ १५	२ १९ १४ ४६	७ १९ २२ ०७	१ १६ ५० ०६	२ ०३ २९ १३	९ २७ ४८ १०	९ १२ ५७ ३७	७ २१ २६ ५०	१३
१४	७ २८ १० २१	७ १७ ३५ २४	१० ०९ ४९ ४८	८ ०३ १३ ४९	२ १९ ०७ ४०	७ २० ३७ ३७	१ १६ ४५ १८	२ ०३ २६ ०२	९ २७ ५० १७	९ १२ ५९ २१	७ २१ २९ ०८	१४
१५	७ २९ ११ २४	८ ०० ४७ ४५	१० १० ३३ ३७	८ ०४ ४८ २९	२ १९ ०० २८	७ २१ ५३ ०८	१ १६ ४० ३२	२ ०३ २२ ५१	९ २७ ५२ २५	९ १३ ०१ ०६	७ २१ ३१ २५	१५
१६	८ ०० १२ २७	८ १३ ४४ ०८	१० ११ १७ २७	८ ०६ २३ १५	२ १८ ५३ ०९	७ २३ ०८ ३९	१ १६ ३५ ४८	२ ०३ १९ ४०	९ २७ ५४ २७	९ १३ ०२ ५२	७ २१ ३३ ४३	१६
१७	८ ०१ १३ ३१	८ २६ २४ २७	१० १२ ०१ १९	८ ०७ ५८ ०७	२ १८ ४५ ४५	७ २४ २४ १०	१ १६ ३१ ०६	२ ०३ १६ २९	९ २७ ५६ ५०	९ १३ ०४ ४०	७ २१ ३६ ००	१७
१८	८ ०२ १४ ३६	९ ०८ ४९ ३७	१० १२ ४५ ११	८ ०९ ३३ ०६	२ १८ ३८ १५	७ २५ ३९ १०	१ १६ २६ २६	२ ०३ १३ १८	९ २७ ५९ ०६	९ १३ ०६ २८	७ २१ ३८ १७	१८
१९	८ ०३ १५ ४१	९ २१ ०१ ३२	१० १३ २९ ०४	८ ११ ०८ १२	२ १८ ३० ४१	७ २६ ५५ ११	१ १६ २१ ४९	२ ०३ १० ०८	९ २८ ०१ २५	९ १३ ०८ १९	७ २१ ४० ३३	१९
२०	८ ०४ १६ ४७	१० ०३ ०३ ००	१० १४ १२ ५७	८ १२ ४३ २३	२ १८ २३ ०१	७ २८ १० ४२	१ १६ १७ १५	२ ०३ ०६ ५७	९ २८ ०३ ४५	९ १३ १० १०	७ २१ ४२ ४९	२०
२१	८ ०५ १७ ५३	१० १४ ५७ ३५	१० १४ ५६ ५२	८ १४ १८ ४०	२ १८ १५ १८	७ २९ २६ १३	१ १६ १२ ४३	२ ०३ ०३ ४६	९ २८ ०६ ०८	९ १३ १२ ०३	७ २१ ४५ ०५	२१
२२	८ ०६ १९ ००	१० २६ ४९ २७	१० १५ ४० ४७	८ १५ ५४ ०१	२ १८ ०७ ३०	८ ०० ४१ ४४	१ १६ ०८ १४	२ ०३ ०० ३५	९ २८ ०८ ३३	९ १३ १३ ५६	७ २१ ४७ २०	२२
२३	८ ०७ २० ०६	११ ०८ ४३ १०	१० १६ २४ ४२	८ १७ २९ २५	२ १७ ५९ ३९	८ ०१ ५७ १५	१ १६ ०३ ४८	२ ०२ ५७ २५	९ २८ ११ ०१	९ १३ १५ ५१	७ २१ ४९ ३५	२३
२४	८ ०८ २१ १३	११ २० ४३ २९	१० १७ ०८ ३७	८ १९ ०४ ५१	२ १७ ५१ ४४	८ ०३ १२ ४५	१ १५ ५९ २६	२ ०२ ५४ १४	९ २८ १३ ३१	९ १३ १७ ४७	७ २१ ५१ ४९	२४
२५	८ ०९ २२ २०	० ०२ ५५ ०६	१० १७ ५२ ३३	८ २० ४० १६	२ १७ ४३ ४७	८ ०४ २८ १६	१ १५ ५५ ०७	२ ०२ ५१ ०३	९ २८ १६ ०२	९ १३ १९ ४४	७ २१ ५४ ०३	२५
२६	८ १० २३ २७	० १५ २२ १६	१० १८ ३६ २९	८ २२ १५ ३७	२ १७ ३५ ४७	८ ०५ ४३ ४६	१ १५ ५० ५१	२ ०२ ४७ ५२	९ २८ १८ ३६	९ १३ २१ ४३	७ २१ ५६ १६	२६
२७	८ ११ २४ ३४	० २८ ०८ ३१	१० १९ २० २४	८ २३ ५० ५१	२ १७ २७ ४४	८ ०६ ५९ १६	१ १५ ४६ ३९	२ ०२ ४४ ४२	९ २८ २१ १२	९ १३ २३ ४२	७ २१ ५८ २९	२७
२८	८ १२ २५ ४१	१ ११ १६ १५	१० २० ०४ २०	८ २५ २५ ५४	२ १७ १९ ४०	८ ०८ १४ ४६	१ १५ ४२ ३१	२ ०२ ४१ ३१	९ २८ २३ ५०	९ १३ २५ ४२	७ २२ ०० ४१	२८
२९	८ १३ २६ ४८	१ २४ ४६ २६	१० २० ४८ १५	८ २७ ०० ४०	२ १७ ११ ३५	८ ०९ ३० १६	१ १५ ३८ २७	२ ०२ ३८ २०	९ २८ २६ ३०	९ १३ २७ ४३	७ २२ ०२ ५२	२९
३०	८ १४ २७ ५५	२ ०८ ३८ ११	१० २१ ३२ ११	८ २८ ३५ ०३	२ १७ ०३ २८	८ १० ४५ ४६	१ १५ ३४ २७	२ ०२ ३५ ०९	९ २८ २९ १२	९ १३ २९ ४५	७ २२ ०५ ०२	३०
३१	८ १५ २९ ०२	२ २२ ४८ ४३	१० २२ १६ ०६	९ ०० ०८ ५५	२ १६ ५५ २१	८ १२ ०१ १६	१ १५ ३० ३०	२ ०२ ३१ ५८	९ २८ ३१ ५५	९ १३ ३१ ४८	७ २२ ०७ १२	३१

जनवरी सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५२' ।४८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	८ १६ ३० १०	३ ०७ १३ २९	१० २३ ०० ००	९ ०१ ४२ ०८	२ १६ ४७ १३	८ १३ १६ ४५	१ १५ २६ ३९	२ ०२ २८ ४७	९ २८ ३४ ४१	९ १३ ३३ ५२	७ २२ ०९ २१	१
२	८ १७ ३१ १८	३ २१ ४६ ४१	१० २३ ४३ ५५	९ ०३ १४ ३०	२ १६ ३९ ०६	८ १४ ३२ १५	१ १५ २२ ५१	२ ०२ २५ ३६	९ २८ ३७ २९	९ १३ ३५ ५७	७ २२ ११ २९	२
३	८ १८ ३२ २५	४ ०६ २२ ०१	१० २४ २७ ४८	९ ०४ ४५ ४९	२ १६ ३० ५८	८ १५ ४७ ४४	१ १५ १९ ०९	२ ०२ २२ २५	९ २८ ४० १८	९ १३ ३८ ०३	७ २२ १३ ३७	३
४	८ १९ ३३ ३४	४ २० ५३ ३७	१० २५ ११ ४२	९ ०६ १५ ५०	२ १६ २२ ५१	८ १७ ०३ १४	१ १५ १५ ३०	२ ०२ १९ १५	९ २८ ४३ ०९	९ १३ ४० ०९	७ २२ १५ ४४	४
५	८ २० ३४ ४३	५ ०५ १६ ३७	१० २५ ५५ ३५	९ ०७ ४४ १६	२ १६ १४ ४५	८ १८ १८ ४३	१ १५ ११ ५७	२ ०२ १६ ०४	९ २८ ४६ ०२	९ १३ ४२ १७	७ २२ १७ ४९	५
६	८ २१ ३५ ५१	५ १९ २७ ३७	१० २६ ३९ २८	९ ०९ १० ४६	२ १६ ०६ ४१	८ १९ ३४ १३	१ १५ ०८ २८	२ ०२ १२ ५३	९ २८ ४८ ५६	९ १३ ४४ २५	७ २२ १९ ५४	६
७	८ २२ ३७ ००	६ ०३ २४ ४६	१० २७ २३ २०	९ १० ३४ ५६	२ १५ ५८ ३९	८ २० ४९ ४३	१ १५ ०५ ०५	२ ०२ ०९ ४२	९ २८ ५१ ५३	९ १३ ४६ ३३	७ २२ २१ ५८	७
८	८ २३ ३८ ०९	६ १७ ०७ १८	१० २८ ०७ १२	९ ११ ५६ १९	२ १५ ५० ३८	८ २२ ०५ १२	१ १५ ०१ ४६	२ ०२ ०६ ३२	९ २८ ५४ ५१	९ १३ ४८ ४३	७ २२ २४ ०१	८
९	८ २४ ३९ १९	७ ०० ३५ २५	१० २८ ५१ ०४	९ १३ १४ २५	२ १५ ४२ ४०	८ २३ २० ४२	१ १४ ५८ ३३	२ ०२ ०३ २१	९ २८ ५७ ५०	९ १३ ५० ५३	७ २२ २६ ०३	९
१०	८ २५ ४० २८	७ १३ ४९ ४५	१० २९ ३४ ५५	९ १४ २८ ३८	२ १५ ३४ ४५	८ २४ ३६ ११	१ १४ ५५ २५	२ ०२ ०० १०	९ २९ ०० ५१	९ १३ ५३ ०४	७ २२ २८ ०४	१०
११	८ २६ ४१ ३८	७ २६ ५१ ०४	११ ०० १८ ४५	९ १५ ३८ १८	२ १५ २६ ५३	८ २५ ५१ ४०	१ १४ ५२ २३	२ ०१ ५६ ५९	९ २९ ०३ ५४	९ १३ ५५ १५	७ २२ ३० ०४	११
१२	८ २७ ४२ ४७	८ ०९ ४० ०४	११ ०१ ०२ ३५	९ १६ ४२ ४३	२ १५ १९ ०५	८ २७ ०७ ०९	१ १४ ४९ २६	२ ०१ ५३ ४८	९ २९ ०६ ५८	९ १३ ५७ २७	७ २२ ३२ ०३	१२
१३	८ २८ ४३ ५६	८ २२ १७ २५	११ ०१ ४६ २५	९ १७ ४१ ०५	२ १५ ११ २१	८ २८ २२ ३८	१ १४ ४६ ३४	२ ०१ ५० ३७	९ २९ १० ०३	९ १३ ५९ ३९	७ २२ ३४ ०१	१३
१४	८ २९ ४५ ०४	९ ०४ ४३ ४१	११ ०२ ३० १४	९ १८ ३२ ३३	२ १५ ०३ ४२	८ २९ ३८ ०७	१ १४ ४३ ४९	२ ०१ ४७ २६	९ २९ १३ १०	९ १४ ०१ ५२	७ २२ ३५ ५८	१४
१५	९ ०० ४६ १२	९ १६ ५९ ३९	११ ०३ १४ ०२	९ १९ १६ १४	२ १४ ५६ ०७	९ ०० ५३ ३५	१ १४ ४१ ०९	२ ०१ ४४ १६	९ २९ १६ १९	९ १४ ०४ ०६	७ २२ ३७ ५३	१५
१६	९ ०१ ४७ २०	९ २९ ०६ २३	११ ०३ ५७ ४९	९ १९ ५१ १६	२ १४ ४८ ३७	९ ०२ ०९ ०२	१ १४ ३८ ३६	२ ०१ ४१ ०५	९ २९ १९ २९	९ १४ ०६ २०	७ २२ ३९ ४८	१६
१७	९ ०२ ४८ २७	१० ११ ०५ २८	११ ०४ ४१ ३५	९ २० १६ ४६	२ १४ ४१ १२	९ ०३ २४ ३०	१ १४ ३६ ०८	२ ०१ ३७ ५४	९ २९ २२ ३९	९ १४ ०८ ३४	७ २२ ४१ ४१	१७
१८	९ ०३ ४९ ३४	१० २२ ५९ ०८	११ ०५ २५ २१	९ २० ३१ ५६७	२ १४ ३३ ५४	९ ०४ ३९ ५७	१ १४ ३३ ४६	२ ०१ ३४ ४३	९ २९ २५ ५१	९ १४ १० ४९	७ २२ ४३ ३३	१८
१९	९ ०४ ५० ३९	११ ०४ ५० १६	११ ०६ ०९ ०५	९ २० ३६ ०७	२ १४ २६ ४१	९ ०५ ५५ २३	१ १४ ३१ ३१	२ ०१ ३१ ३३	९ २९ २९ ०४	९ १४ १३ ०४	७ २२ ४५ २३	१९
२०	९ ०५ ५१ ४४	११ १६ ४२ २९	११ ०६ ५२ ४९	९ २० २८ ५०	२ १४ १९ ३५	९ ०७ १० ४९	१ १४ २९ २१	२ ०१ २८ २२	९ २९ ३२ १८	९ १४ १५ १९	७ २२ ४७ १३	२०
२१	९ ०६ ५२ ४८	११ २८ ४० ०१	११ ०७ ३६ ३१	९ २० ०९ ५३	२ १४ १२ ३५	९ ०८ २६ १४	१ १४ २७ १८	२ ०१ २५ ११	९ २९ ३५ ३४	९ १४ १७ ३५	७ २२ ४९ ०१	२१
२२	९ ०७ ५३ ५१	० १० ४७ ३१	११ ०८ २० १२	९ १९ ३९ २३	२ १४ ०५ ४३	९ ०९ ४१ ३९	१ १४ २५ २१	२ ०१ २२ ०१	९ २९ ३८ ५०	९ १४ १९ ५१	७ २२ ५० ४७	२२
२३	९ ०८ ५४ ५३	० २३ ०९ ५३	११ ०९ ०३ ५२	९ १८ ५७ ५२	२ १३ ५८ ५८	९ १० ५७ ०३	१ १४ २३ ३१	२ ०१ १८ ५०	९ २९ ४२ ०८	९ १४ २२ ०७	७ २२ ५२ ३२	२३
२४	९ ०९ ५५ ५४	१ ०५ ५१ ४७	११ ०९ ४७ ३०	९ १८ ०६ १४	२ १३ ५२ २०	९ १२ १२ २६	१ १४ २१ ४७	२ ०१ १५ ३९	९ २९ ४५ २६	९ १४ २४ २३	७ २२ ५४ १६	२४
२५	९ १० ५६ ५४	१ १८ ५७ १८	११ १० ३१ ०७	९ १७ ०५ ५२	२ १३ ४५ ५०	९ १३ २७ ४९	१ १४ २० ०९	२ ०१ १२ २८	९ २९ ४८ ४५	९ १४ २६ ३९	७ २२ ५५ ५९	२५
२६	९ ११ ५७ ५३	२ ०२ २९ २०	११ ११ १४ ४२	९ १५ ५८ ३०	२ १३ ३९ २८	९ १४ ४३ ११	१ १४ १८ ३८	२ ०१ ०९ १७	९ २९ ५२ ०५	९ १४ २८ ५६	७ २२ ५७ ४०	२६
२७	९ १२ ५८ ५१	२ १६ २८ ४८	११ ११ ५८ १६	९ १४ ४६ ०८	२ १३ ३३ १५	९ १५ ५८ ३३	१ १४ १७ १४	२ ०१ ०६ ०६	९ २९ ५५ २६	९ १४ ३१ १२	७ २२ ५९ १९	२७
२८	९ १३ ५९ ४८	३ ०० ५४ ०१	११ १२ ४१ ४८	९ १३ ३१ ०१	२ १३ २७ १०	९ १७ १३ ५४	१ १४ १५ ५६	२ ०१ ०२ ५५	९ २९ ५८ ४८	९ १४ ३३ २९	७ २३ ०० ५७	२८
२९	९ १५ ०० ४४	३ १५ ४० १३	११ १३ २५ १९	९ १२ १५ २३	२ १३ २१ १४	९ १८ २९ १४	१ १४ १४ ४५	२ ०० ५९ ४५	१० ०० ०२ १०	९ १४ ३३ ४५	७ २३ ०२ ३४	२९
३०	९ १६ ०१ ३९	४ ०० ३९ ५५	११ १४ ०८ ४८	९ ११ ०१ २६	२ १३ १५ २७	९ १९ ४४ ३३	१ १४ १३ ४०	२ ०० ५६ ३४	१० ०० ०५ ३३	९ १४ ३८ ०२	७ २३ ०४ ०९	३०
३१	९ १७ ०२ ३३	४ १५ ४३ ४७	११ १४ ५२ १५	९ ०९ ५१ ०७	२ १३ ०९ ४९	९ २० ५९ ५२	१ १४ १२ ४२	२ ०० ५३ २३	१० ०० ०८ ५७	९ १४ ४० १८	७ २३ ०५ ४२	३१

फरवरी सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ५२' ५३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
१	९ १८ ०३ २७	५ ०० ४२ १४	११ १५ ३५ ४१	९ ०८ ४६ ०४	२ १३ ०४ २०	९ २२ १५ ११	१ १४ ११ ५०	२ ०० ५० १२	१० ०० १२ २१	९ १४ ४२ ३५	७ २३ ०७ १४	१
२	९ १९ ०४ १९	५ १५ २६ ५५	११ १६ १९ ०६	९ ०७ ४७ ३७	२ १२ ५९ ०१	९ २३ ३० २८	१ १४ ११ ०५	२ ०० ४७ ०२	१० ०० १५ ४६	९ १४ ४४ ५१	७ २३ ०८ ४४	२
३	९ २० ०५ ११	५ २९ ५१ ५७	११ १७ ०२ २८	९ ०६ ५६ ४२	२ १२ ५३ ५१	९ २४ ४५ ४६	१ १४ १० २७	२ ०० ४३ ५१	१० ०० १९ ११	९ १४ ४७ ०८	७ २३ १० १३	३
४	९ २१ ०६ ०२	६ १३ ५४ २१	११ १७ ४५ ४९	९ ०६ १३ ५६	२ १२ ४८ ५२	९ २६ ०१ ०२	१ १४ ०९ ५६	२ ०० ४० ४०	१० ०० २२ ३७	९ १४ ४९ २४	७ २३ ११ ४०	४
५	९ २२ ०६ ५२	६ २७ ३३ ४२	११ १८ २९ ०९	९ ०५ ३९ ३७	२ १२ ४४ ०२	९ २७ १६ १८	१ १४ ०९ ३२	२ ०० ३७ २९	१० ०० २६ ०४	९ १४ ५१ ४०	७ २३ १३ ०५	५
६	९ २३ ०७ ४१	७ १० ५१ ३३	११ १९ १२ २७	९ ०५ १३ ४७	२ १२ ३९ २३	९ २८ ३१ ३४	१ १४ ०९ १४	२ ०० ३४ १९	१० ०० २९ ३०	९ १४ ५३ ५५	७ २३ १४ २९	६
७	९ २४ ०८ २९	७ २३ ५० ३२	११ १९ ५५ ४४	९ ०४ ५६ १८	२ १२ ३४ ५५	९ २९ ४६ ४९	१ १४ ०९ ०३	२ ०० ३१ ०८	१० ०० ३२ ५८	९ १४ ५६ ११	७ २३ १५ ५१	७
८	९ २५ ०९ १७	८ ०६ ३३ ४२	११ २० ३८ ५९	९ ०४ ४६ ५३मा.	२ १२ ३० ३७	१० ०१ ०२ ०३	१ १४ ०८ ५९मा.	२ ०० २७ ५७	१० ०० ३६ २५	९ १४ ५८ २६	७ २३ १७ ११	८
९	९ २६ १० ०३	८ १९ ०३ ५९	११ २१ २२ १२	९ ०४ ४५ १०	२ १२ २६ ३०	१० ०२ १७ १७	१ १४ ०९ ०२	२ ०० २४ ४६	१० ०० ३९ ५३	९ १५ ०० ४१	७ २३ १८ ३०	९
१०	९ २७ १० ४९	९ ०१ २३ ५४	११ २२ ०५ २४	९ ०४ ५० ४१	२ १२ २२ ३४	१० ०३ ३२ ३०	१ १४ ०९ ११	२ ०० २१ ३५	१० ०० ४३ २१	९ १५ ०२ ५५	७ २३ १९ ४७	१०
११	९ २८ १० ३३	९ १३ ३५ ३२	११ २२ ४८ ३४	९ ०५ ०२ ५९	२ १२ १८ ४९	१० ०४ ४७ ४२	१ १४ ०९ २८	२ ०० १८ २४	१० ०० ४६ ४९	९ १५ ०५ ०९	७ २३ २१ ०२	११
१२	९ २९ १२ १५	९ २५ ४० २६	११ २३ ३१ ४३	९ ०५ २१ ३५	२ १२ १५ १५	१० ०६ ०२ ५४	१ १४ ०९ ५१	२ ०० १५ १४	१० ०० ५० १७	९ १५ ०७ २३	७ २३ २२ १५	१२
१३	१० ०० १२ ५७	१० ०७ ३९ ५३	११ २४ १४ ५०	९ ०५ ४६ ०१	२ १२ ११ ५३	१० ०७ १८ ०४	१ १४ १० २१	२ ०० १२ ०३	१० ०० ५३ ४५	९ १५ ०९ ३६	७ २३ २३ २७	१३
१४	१० ०१ १३ ३७	१० १९ ३५ ०४	११ २४ ५७ ५५	९ ०६ १५ ४९	२ १२ ०८ ४२	१० ०८ ३३ १४	१ १४ १० ५८	२ ०० ०८ ५२	१० ०० ५७ १४	९ १५ ११ ४९	७ २३ २४ ३६	१४
१५	१० ०२ १४ १५	११ ०१ २७ २०	११ २५ ४० ५९	९ ०६ ५० ३३	२ १२ ०५ ४२	१० ०९ ४८ २२	१ १४ ११ ४२	२ ०० ०५ ४२	१० ०१ ०० ४२	९ १५ १४ ०१	७ २३ २५ ४४	१५
१६	१० ०३ १४ ५२	११ १३ १८ २८	११ २६ २४ ००	९ ०७ २९ ५१	२ १२ ०२ ५४	१० ११ ०३ ३०	१ १४ १२ ३२	२ ०० ०२ ३१	१० ०१ ०४ १०	९ १५ १६ १३	७ २३ २६ ५०	१६
१७	१० ०४ १५ २८	११ २५ ११ ५३	११ २७ ०७ ००	९ ०८ १३ २०	२ १२ ०० १८	१० १२ १८ ३६	१ १४ १३ ३०	१ २९ ५९ २०	१० ०१ ०७ ३८	९ १५ १८ २४	७ २३ २७ ५४	१७
१८	१० ०५ १६ ०१	० ०७ ०७ ४४	११ २७ ४९ ५८	९ ०९ ०० ३९	२ ११ ५७ ५४	१० १३ ३३ ४१	१ १४ १४ ३४	१ २९ ५६ १०	१० ०० ११ ०६	९ १५ २० ३५	७ २३ २८ ५६	१८
१९	१० ०६ १६ ३३	० १९ १२ ५२	११ २८ ३२ ५३	९ ०९ ५१ ३१	२ ११ ५५ ४१	१० १४ ४८ १५	१ १४ १५ ४५	१ २९ ५२ ५९	१० ०१ १४ ३४	९ १५ २२ ४५	७ २३ २९ ५६	१९
२०	१० ०७ १७ ०३	१ ०१ ३० ४७	११ २९ १५ ४७	९ १० ४५ ३८	२ ११ ५३ ४१	१० १६ ०३ ४८	१ १४ १७ ०२	१ २९ ४९ ४८	१० ०१ १८ ०२	९ १५ २४ ५४	७ २३ ३० ५५	२०
२१	१० ०८ १७ ३१	१ १४ ०६ १८	११ २९ ५८ ३९	९ ११ ४२ ४७	२ ११ ५१ ५२	१० १७ १८ ५०	१ १४ १८ २६	१ २९ ४६ ३७	१० ०१ २१ २९	९ १५ २७ ०२	७ २३ ३१ ५१	२१
२२	१० ०९ १७ ५७	१ २७ ०४ १३	० ०० ४१ २९	९ १२ ४२ ४२	२ ११ ५० १५	१० १८ ३३ ५०	१ १४ १९ ५७	१ २९ ४३ २६	१० ०१ २४ ५६	९ १५ २९ १०	७ २३ ४२ ४५	२२
२३	१० १० १८ २१	२ १० २८ ४७	० ०१ २४ १६	९ १३ ४५ १४	२ ११ ४८ ५०	१० १९ ४८ ४९	१ १४ २१ ३५	१ २९ ४० १६	१० ०१ २८ २२	९ १५ ३१ १७	७ २३ ३३ ३८	२३
२४	१० ११ १८ ४४	२ २४ २२ ४७	० ०२ ०७ ०१	९ १४ ५० १०	२ ११ ४७ ३७	१० २१ ०३ ४७	१ १४ २३ १९	१ २९ ३७ ०५	१० ०१ ३१ ४८	९ १५ ३३ २३	७ २३ ३४ २९	२४
२५	१० १२ १९ ०४	३ ०८ ४६ ३३	० ०२ ४९ ४५	९ १५ ५७ २१	२ ११ ४६ ३६	१० २२ १८ ४४	१ १४ २५ ०९	१ २९ ३३ ५४	१० ०१ ३५ १४	९ १५ ३५ २९	७ २३ ३५ १७	२५
२६	१० १३ १९ २३	३ २३ ३६ ५८	० ०३ ३२ २५	९ १७ ०६ ३९	२ ११ ४५ ४७	१० २३ ३३ ३९	१ १४ २७ ०६	१ २९ ३० ४३	१० ०१ ३८ ३९	९ १५ ३७ ३३	७ २३ ३६ ०४	२६
२७	१० १४ १९ ४०	४ ०८ ४७ १०	० ०४ १५ ०४	९ १८ १७ ५५	२ ११ ४५ ०९	१० २४ ४८ ३२	१ १४ २९ १०	१ २९ २७ ३३	१० ०१ ४२ ०४	९ १५ ३९ ३७	७ २३ ३६ ४९	२७
२८	१० १५ १९ ५५	४ २४ ०७ ०७	० ०४ ५७ ४१	९ १९ ३१ ०४	२ ११ ४४ ४४	१० २६ ०३ २५	१ १४ ३१ २०	१ २९ २४ २२	१० ०१ ४५ २८	९ १५ ४१ ४०	७ २३ ३७ ३१	२८

मार्च सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५२' ५७"

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र			
मार्च	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
१	१०	१६	२०	०८	५	०९	२५	११	०	०५	४०	१५	९	२०	४६	००	२	११	४४	३१मा.	१०	२७	१८	१६
२	१०	१७	२०	२०	५	२४	३०	१३	०	०६	२२	४७	९	२२	०२	३६	२	११	४४	२९	१०	२८	३३	०५
३	१०	१८	२०	३०	६	०९	१३	२८	०	०७	०५	१७	९	२३	२०	४९	२	११	४४	३९	१०	२९	४७	५४
४	१०	१९	२०	३९	६	२३	२९	४२	०	०७	४७	४५	९	२४	४०	३५	२	११	४५	०१	११	०१	०२	४१
५	१०	२०	२०	४६	७	०७	१७	१७	०	०८	३०	१०	९	२६	०१	४९	२	११	४५	३५	११	०२	१७	२७
६	१०	२१	२०	५२	७	२०	३७	३७	०	०९	१२	३४	९	२७	२४	३०	२	११	४६	२१	११	०३	३२	१२
७	१०	२२	२०	५६	८	०३	३३	५५	०	०९	५४	५६	९	२८	४८	३४	२	११	४७	१८	११	०४	४६	५६
८	१०	२३	२०	५८	८	१६	१०	२४	०	१०	३७	१६	१०	००	१३	५९	२	११	४८	२७	११	०६	०१	३८
९	१०	२४	२०	५९	८	२८	३१	२३	०	११	१९	३३	१०	०१	४०	४२	२	११	४९	४८	११	०७	१६	१९
१०	१०	२५	२०	५८	९	१०	४०	५६	०	१२	०१	४९	१०	०३	०८	४३	२	११	५१	२०	११	०८	३०	५९
११	१०	२६	२०	५६	९	२२	४२	३३	०	१२	४४	०२	१०	०४	३८	०१	२	११	५३	०४	११	०९	४५	३७
१२	१०	२७	२०	५१	१०	०४	३९	०३	०	१३	२६	१४	१०	०६	०८	३३	२	११	५५	००	११	११	००	१४
१३	१०	२८	२०	४५	१०	१६	३२	३४	०	१४	०८	२३	१०	०७	४०	१९	२	११	५७	०७	११	१२	१४	४९
१४	१०	२९	२०	३७	१०	२८	२४	४५	०	१४	५०	३१	१०	०९	१३	१९	२	११	५९	२६	११	१३	२९	२३
१५	११	००	२०	२७	११	१०	१६	५३	०	१५	३२	३६	१०	१०	४७	३२	२	१२	०१	५६	११	१४	४३	५५
१६	११	०१	२०	१५	११	२२	१०	१५	०	१६	१४	३९	१०	१२	२२	५९	२	१२	०४	३७	११	१५	५८	२६
१७	११	०२	२०	०१	०	०४	०६	२३	०	१६	५६	४०	१०	१३	५९	३८	२	१२	०७	२९	११	१७	१२	५५
१८	११	०३	१९	४५	०	१६	०७	२१	०	१७	३८	३९	१०	१५	३७	३१	२	१२	१०	३३	११	१८	२७	२२
१९	११	०४	१९	२७	०	२८	१५	५०	०	१८	२०	३६	१०	१७	१६	३८	२	१२	१३	४७	११	१९	४१	४७
२०	११	०५	१९	०६	१	१०	३४	१५	०	१९	०२	३०	१०	१८	५६	५९	२	१२	१७	१३	११	२०	५६	११
२१	११	०६	१८	४३	१	२३	०९	३२	०	१९	४४	२२	१०	२०	३८	३४	२	१२	२०	४९	११	२२	१०	३३
२२	११	०७	१८	१८	२	०६	०३	००	०	२०	२६	१२	१०	२२	२१	२५	२	१२	२४	३६	११	२३	२४	५३
२३	११	०८	१७	५१	२	१९	१९	५३	०	२१	०७	५९	१०	२४	०५	३१	२	१२	२८	३४	११	२४	३९	१०
२४	११	०९	१७	२१	३	०३	०३	३६	०	२१	४९	४४	१०	२५	५०	५४	२	१२	३२	४३	११	२५	५३	२६
२५	११	१०	१६	४९	३	१७	१५	४९	०	२२	३१	२७	१०	२७	३७	३५	२	१२	३७	०१	११	२७	०७	४०
२६	११	११	१६	१४	४	०१	५५	२१	०	२३	१३	०७	१०	२९	२५	३४	२	१२	४१	३०	११	२८	२१	५२
२७	११	१२	१५	३८	४	१६	५७	२६	०	२३	५४	४५	११	०१	१४	५१	२	१२	४६	०९	११	२९	३६	०२
२८	११	१३	१४	५९	५	०२	१३	४६	०	२४	३६	२१	११	०३	०५	२८	२	१२	५०	५९	०	००	५०	१०
२९	११	१४	१४	१८	५	१७	३३	२८	०	२५	१७	५४	११	०४	५७	२४	२	१२	५५	५८	०	०२	०४	१६
३०	११	१५	१३	३५	६	०२	४५	००	०	२५	५९	२५	११	०६	५०	४१	२	१३	०१	०७	०	०३	१८	२०
३१	११	१६	१२	५०	६	१७	३८	०९	०	२६	४०	५४	११	०८	४५	१८	२	१३	०६	२६	०	०४	३२	२१

शनि				राहु				हर्शल				नेपच्यून				प्लूटो				ता.
रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	मार्च
१	१४	३३	३६	१	२९	२१	११	१०	०१	४८	५१	९	१५	४३	४१	७	२३	३८	१२	१
१	१४	३५	५८	१	२९	१८	००	१०	०१	५२	१४	९	१५	४५	४२	७	२३	३८	५१	२
१	१४	३८	२७	१	२९	१४	५०	१०	०१	५५	३६	९	१५	४७	४२	७	२३	३९	२७	३
१	१४	४१	०२	१	२९	११	३९	१०	०१	५८	५७	९	१५	४९	४१	७	२३	४०	०२	४
१	१४	४३	४४	१	२९	०८	२८	१०	०२	०२	१८	९	१५	५१	३९	७	२३	४०	३५	५
१	१४	४६	३१	१	२९	०५	१८	१०	०२	०५	३८	९	१५	५३	३६	७	२३	४१	०६	६
१	१४	४९	२५	१	२९	०२	०७	१०	०२	०८	५७	९	१५	५५	३२	७	२३	४१	३४	७
१	१४	५२	२४	१	२८	५८	५६	१०	०२	१२	१५	९	१५	५७	२७	७	२३	४२	०१	८
१	१४	५५	३०	१	२८	५५	४५	१०	०२	१५	३२	९	१५	५९	२०	७	२३	४२	२६	९
१	१४	५८	४२	१	२८	५२	३४	१०	०२	१८	४८	९	१६	०१	१३	७	२३	४२	४८	१०
१	१५	०२	००	१	२८	४९	२४	१०	०२	२२	०३	९	१६	०३	०४	७	२३	४३	०९	११
१	१५	०५	२३	१	२८	४६	१३	१०	०२	२५	१७	९	१६	०४	५४	७	२३	४३	२७	१२
१	१५	०८	५३	१	२८	४३	०२	१०	०२	२८	३०	९	१६	०६	४३	७	२३	४३	४४	१३
१	१५	१२	२८	१	२८	३९	५२	१०	०२	३१	४२	९	१६	०८	३०	७	२३	४३	५८	१४
१	१५	१६	०९	१	२८	३६	४१	१०	०२	३४	५२	९	१६	१०	१७	७	२३	४४	१०	१५
१	१५	१९	५६	१	२८	३३	३०	१०	०२	३८	०१	९	१६	१२	०१	७	२३	४४	२१	१६
१	१५	२३	४८	१	२८	३०	२०	१०	०२	४१	०९	९	१६	१३	४५	७	२३	४४	२९	१७
१	१५	२७	४६	१	२८	२७	०९	१०	०२	४४	१६	९	१६	१५	२७	७	२३	४४	३५	१८
१	१५	३१	५०	१	२८	२३	५८	१०	०२	४७	२१	९	१६	१७	०८	७	२३	४४	३९	१९
१	१५	३५	५८	१	२८	२०	४७	१०	०२	५०	२५	९	१६	१८	४७	७	२३	४४	४१व	२०
१	१५	४०	१२	१	२८	१७	३७	१०	०२	५३	२८	९	१६	२०	२५	७	२३	४४	४१	२१
१	१५	४४	३२	१	२८	१४	२६	१०	०२	५९	२९	९	१६	२२	०२	७	२३	४४	३९	२२
१	१५	४८	५७	१	२८	११	१५	१०	०२	५९	२८	९	१६	२३	३७	७	२३	४४	३५	२३
१	१५	५३	२६	१	२८	०८	०४	१०	०३	०२	२६	९	१६	२५	१०	७	२३	४४	३०	२४
१	१५	५८	०१	१	२८	०४	५३	१०	०३	०५	२३	९	१६	२६	४२	७	२३	४४	२२	२५
१	१६	०२	४१	१	२८	०१	४३	१०	०३	०८	१७	९	१६	२८	१३	७	२३	४४	१२	२६
१	१६	०७	२६	१	२७	५८	३२	१०	०३	११	१०	९	१६	२९	४२	७	२३	४४	००	२७
१	१६	१२	१६	१	२७	५५	२१	१०	०३	१४	०२	९	१६	३१	०९	७	२३	४३	४६	२८
१	१६	१७	१०	१	२७	५२	११	१०	०३	१६	५१	९	१६	३२	३५	७	२३	४३	३०	२९
१	१६	२२	०९	१	२७	४९	००	१०	०३	१९	३९	९	१६	३३	५९	७	२३	४३	१२	३०
१	१६	२७	१३	१	२७	४५	४९	१०	०३	२२	२५	९	१६	३५	२२	७	२३	४२	५३	३१

भौगोलिक परिचय

अक्षांशा-रेखांशा-रविक्रान्ति

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् दिल्ली भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश को भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसे करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदले झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को चढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३.५° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानि दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था. इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अत: भारत में शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहाँ से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायन। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहाँ के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए हैं और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर सारिणी पृ. ९८ तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ९७ पर दी हुई है।

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश हैं, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वहीं हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखाँशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है. मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ता के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घंटे आगे था और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया

गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घं. ३० मिनट आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५-३० घंटा आगे है और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है, उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, वेलजियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैण्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिस्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, वल्गेरिया आदि देशों का समय दो घण्टे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४ घंटे ३० मिनट तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा वर्मा ६ घंटे ३० मिनट आगे है। थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घंटे के क्षेत्र में हैं। चीन, होंगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, वोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५ घंटा ३० मिनट का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५ घंटे ३० मिनट का अन्तर ८२.३० रेखांश पर आता है (८२.३०×४=३३० मि.=५ घंटा ३० मिनट)। भारत में ८२.३० अक्षांश इलाहाबाद, अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा, मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिये जाते हैं और तत्पश्चात् उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२.३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७×४=२१.०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२.३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५.१३ है, जो ८२.३० से २.४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२.४३×४=१०.५२)= १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ ९९ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। मानचित्र में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान मानचित्र में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्राय: १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अत: तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक के अक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है। घं.मि.

सारिणी से प्राप्त १५ जुलाई को वृश्चिक समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया	+ ०।१४
(१३ मिनट ४८ सेकंड आधे से अधिक होने से १४ लिये)	= १७।२८
मध्यम लग्न समाप्त	= १७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने —१७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान	—०।१७
	१७।११

अत: नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७ बजकर ११ मिनट पर होगा।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगें, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

लग्न अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८	८ ५४	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१६ ५८	१९ १५	२१ ३२	२३ ५२	२ ०९	४ १३	५ ५५
२	७ २४	८ ५०	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५४	१९ ११	२१ २८	२३ ४८	२ ०५	४ ०९	५ ५१
३	७ २०	८ ४६	१० २२	१२ १६	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०७	२१ २४	२३ ४४	२ ०१	४ ०५	५ ४७
४	७ १६	८ ४२	१० १८	१२ १२	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ २०	२३ ४०	१ ५७	४ ०१	५ ४३
५	७ १२	८ ३८	१० १४	१२ ०८	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ १६	२३ ३६	१ ५३	३ ५७	५ ३९
६	७ ०८	८ ३४	१० १०	१२ ०४	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२१ १२	२३ ३२	१ ४९	३ ५३	५ ३५
७	७ ०४	८ ३०	१० ०६	१२ ००	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२१ ०८	२३ २८	१ ४५	३ ४९	५ ३१
८	७ ००	८ २६	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२१ ०४	२३ २४	१ ४१	३ ४५	५ २७
९	६ ५६	८ २२	९ ५८	११ ५२	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२१ ००	२३ २०	१ ३७	३ ४१	५ २३
१०	६ ५२	८ १८	९ ५४	११ ४८	१४ ०२	१६ २२	१८ ३९	२० ५६	२३ १६	१ ३३	३ ३७	५ १९
११	६ ४८	८ १४	९ ५०	११ ४४	१३ ५८	१६ १८	१८ ३५	२० ५२	२३ १२	१ २९	३ ३३	५ १५
१२	६ ४४	८ १०	९ ४६	११ ४०	१३ ५४	१६ १४	१८ ३१	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ २९	५ ११
१३	६ ४०	८ ०६	९ ४२	११ ३६	१३ ५०	१६ १०	१८ २७	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ २५	५ ०७
१४	६ ३६	८ ०२	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०६	१८ २३	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ २१	५ ०३
१५	६ ३२	७ ५८	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०२	१८ १९	२० ३६	२२ ५६	१ १३	३ १७	४ ५९
१६	६ २८	७ ५४	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१५ ५८	१८ १५	२० ३२	२२ ५२	१ ०९	३ १३	४ ५५
१७	६ २४	७ ५०	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५४	१८ ११	२० २८	२२ ४८	१ ०५	३ ०९	४ ५१
१८	६ २०	७ ४६	९ २२	११ १६	१३ ३०	१५ ५०	१८ ०७	२० २४	२२ ४४	१ ०१	३ ०५	४ ४७
१९	६ १६	७ ४२	९ १८	११ १२	१३ २६	१५ ४६	१८ ०३	२० २०	२२ ४०	० ५७	३ ०१	४ ४३
२०	६ १२	७ ३८	९ १४	११ ०८	१३ २२	१५ ४२	१७ ५९	२० १६	२२ ३६	० ५३	२ ५७	४ ३९
२१	६ ०८	७ ३४	९ १०	११ ०४	१३ १८	१५ ३८	१७ ५५	२० १२	२२ ३२	० ४९	२ ५३	४ ३५
२२	६ ०४	७ ३०	९ ०६	११ ००	१३ १४	१५ ३४	१७ ५१	२० ०८	२२ २८	० ४५	२ ४९	४ ३१
२३	६ ००	७ २६	९ ०२	१० ५६	१३ १०	१५ ३०	१७ ४७	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ४५	४ २७
२४	५ ५६	७ २२	८ ५८	१० ५२	१३ ०६	१५ २६	१७ ४३	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ४१	४ २३
२५	५ ५२	७ १८	८ ५४	१० ४८	१३ ०२	१५ २२	१७ ३९	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ३७	४ १९
२६	५ ४८	७ १४	८ ५०	१० ४४	१२ ५८	१५ १८	१७ ३५	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ३३	४ १५
२७	५ ४४	७ १०	८ ४६	१० ४०	१२ ५४	१५ १४	१७ ३१	१९ ४८	२२ ०८	० २५	२ २९	४ ११
२८	५ ४०	७ ०६	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १०	१७ २७	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ २५	४ ०७
२९	५ ३६	७ ०२	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ०६	१७ २३	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ २१	४ ०३
३०	५ ३२	६ ५८	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ०२	१७ १९	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ १७	३ ५९
३१	५ २८	६ ५४	८ ३०	१० २४	१२ ३८	१४ ५८	१७ १५	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ १३	३ ५५

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५०	८ २६	१० २२	१२ ३५	१४ ५६	१७ १३	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ १०	३ ५३	५ २१
२	६ ४६	८ २२	१० १८	१२ ३१	१४ ५२	१७ ०९	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ ०६	३ ४९	५ १७
३	६ ४२	८ १८	१० १४	१२ २७	१४ ४८	१७ ०५	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ ०२	३ ४५	५ १३
४	६ ३८	८ १४	१० १०	१२ २३	१४ ४४	१७ ०१	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	१ ५८	३ ४१	५ ०९
५	६ ३४	८ १०	१० ०६	१२ १९	१४ ४०	१६ ५७	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	१ ५४	३ ३७	५ ०५
६	६ ३०	८ ०६	१० ०२	१२ १५	१४ ३६	१६ ५३	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	१ ५०	३ ३३	५ ०१
७	६ २६	८ ०२	९ ५८	१२ ११	१४ ३२	१६ ४९	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	१ ४६	३ २९	४ ५७
८	६ २२	७ ५८	९ ५४	१२ ०७	१४ २८	१६ ४५	१९ ०१	२१ २१	२३ ३९	१ ४२	३ २५	४ ५३
९	६ १८	७ ५४	९ ५०	१२ ०३	१४ २४	१६ ४१	१९ ५७	२१ १७	२३ ३५	१ ३८	३ २१	४ ४९
१०	६ १४	७ ५०	९ ४६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५३	२१ १३	२३ ३१	१ ३४	३ १७	४ ४५
११	६ १०	७ ४६	९ ४२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ४९	२१ ०९	२३ २७	१ ३०	३ १३	४ ४१
१२	६ ०६	७ ४२	९ ३८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ४५	२१ ०५	२३ २३	१ २६	३ ०९	४ ३७
१३	६ ०२	७ ३८	९ ३४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४१	२१ ०१	२३ १९	१ २२	३ ०५	४ ३३
१४	५ ५८	७ ३४	९ ३०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ३७	२० ५७	२३ १५	१ १८	३ ०१	४ २९
१५	५ ५४	७ ३०	९ २६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३३	२० ५३	२३ ११	१ १४	२ ५७	४ २५
१६	५ ५१	७ २७	९ २३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ ११	२ ५४	४ २२
१७	५ ४७	७ २३	९ १९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ ०७	२ ५०	४ १८
१८	५ ४३	७ १९	९ १५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ ०३	२ ४६	४ १४
१९	५ ३९	७ १५	९ ११	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	० ५९	२ ४२	४ १०
२०	५ ३५	७ ११	९ ०७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	० ५५	२ ३८	४ ०६
२१	५ ३१	७ ०७	९ ०३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	० ५१	२ ३४	४ ०२
२२	५ २७	७ ०३	८ ५९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	० ४७	२ ३०	३ ५८
२३	५ २३	६ ५९	८ ५५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०२	२० २२	२२ ४०	० ४३	२ २६	३ ५४
२४	५ १९	६ ५५	८ ५१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१७ ५८	२० १८	२२ ३६	० ३९	२ २२	३ ५०
२५	५ १५	६ ५१	८ ४७	११ ०	१३ २०	१५ ३८	१७ ५४	२० १४	२२ ३२	० ३५	२ १८	३ ४६
२६	५ ११	६ ४७	८ ४३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५०	२० १०	२२ २८	० ३१	२ १४	३ ४२
२७	५ ०७	६ ४३	८ ३९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ४६	२० ०६	२२ २४	० २७	२ १०	३ ३८
२८	५ ०३	६ ३९	८ ३५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४२	२० ०२	२२ २०	० २३	२ ०६	३ ३४
२९	४ ५९	६ ३५	८ ३१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ३८	१९ ५८	२२ १६	० १९	२ ०२	३ ३०
३०	४ ५५	६ ३१	८ २७	१० ४०	१३ ००	१५ १८	१७ ३४	१९ ५४	२२ १२	० १५	१ ५८	३ २६

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २६	८ २२	१० ३६	१२ ५५	१५ १३	१७ ३०	१९ ४९	२२ ०७	० ११	१ ५३	३ २१	४ ४६
२	६ २२	८ १८	१० ३२	१२ ५१	१५ ०९	१७ २६	१९ ४५	२२ ०३	० ०७	१ ४९	३ १७	४ ४२
३	६ १८	८ १४	१० २८	१२ ४७	१५ ०५	१७ २२	१९ ४१	२१ ५९	० ०३	१ ४५	३ १३	४ ३८
४	६ १४	८ १०	१० २४	१२ ४३	१५ ०१	१७ १८	१९ ३७	२१ ५५	२३ ५९	१ ४१	३ ०९	४ ३४
५	६ ११	८ ०७	१० २१	१२ ४०	१४ ५८	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	२३ ५६	१ ३८	३ ०६	४ ३१
६	६ ०७	८ ०३	१० १७	१२ ३६	१४ ५४	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	२३ ५२	१ ३४	३ ०२	४ २७
७	६ ०३	७ ५९	१० १३	१२ ३२	१४ ५०	१७ ०७	१९ २६	२१ ४४	२३ ४८	१ ३०	२ ५८	४ २३
८	५ ५९	७ ५५	१० ०९	१२ २८	१४ ४६	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	२३ ४४	१ २६	२ ५४	४ १९
९	५ ५५	७ ५१	१० ०५	१२ २४	१४ ४२	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ४०	१ २२	२ ५०	४ १५
१०	५ ५१	७ ४७	१० ०१	१२ २०	१४ ३८	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ३६	१ १८	२ ४६	४ ११
११	५ ४७	७ ४३	९ ५७	१२ १६	१४ ३४	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ३२	१ १४	२ ४२	४ ०७
१२	५ ४३	७ ३९	९ ५३	१२ १२	१४ ३०	१६ ४७	१९ ०६	२१ २४	२३ २८	१ १०	२ ३८	४ ०३
१३	५ ३९	७ ३५	९ ४९	१२ ०८	१४ २६	१६ ४३	१९ ०२	२१ २०	२३ २४	१ ०६	२ ३४	३ ५९
१४	५ ३५	७ ३१	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ २०	१ ०२	२ ३०	३ ५५
१५	५ ३१	७ २७	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ १६	० ५८	२ २६	३ ५१
१६	५ २८	७ २४	९ ३८	११ ५७	१४ १५	१६ ३२	१८ ५१	२१ ०९	२३ १३	० ५५	२ २३	३ ४८
१७	५ २४	७ २०	९ ३४	११ ५३	१४ ११	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ ०९	० ५१	२ १९	३ ४४
१८	५ २०	७ १६	९ ३०	११ ४९	१४ ०७	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ ०५	० ४७	२ १५	३ ४०
१९	५ १६	७ १२	९ २६	११ ४५	१४ ०३	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ ०१	० ४३	२ ११	३ ३६
२०	५ १२	७ ०८	९ २२	११ ४१	१३ ५९	१६ १६	१८ ३५	२० ५३	२२ ५७	० ३९	२ ०७	३ ३२
२१	५ ०८	७ ०४	९ १८	११ ३७	१३ ५५	१६ १२	१८ ३१	२० ४९	२२ ५३	० ३५	२ ०३	३ २८
२२	५ ०४	७ ००	९ १४	११ ३३	१३ ५१	१६ ०८	१८ २७	२० ४५	२२ ४९	० ३१	१ ५९	३ २४
२३	५ ००	६ ५६	९ १०	११ २९	१३ ४७	१६ ०४	१८ २३	२० ४१	२२ ४५	० २७	१ ५५	३ २०
२४	४ ५६	६ ५२	९ ०६	११ २५	१३ ४३	१६ ००	१८ १९	२० ३७	२२ ४१	० २३	१ ५१	३ १६
२५	४ ५२	६ ४८	९ ०२	११ २१	१३ ३९	१५ ५६	१८ १५	२० ३३	२२ ३७	० १९	१ ४७	३ १२
२६	४ ४८	६ ४४	८ ५८	११ १७	१३ ३५	१५ ५२	१८ ११	२० २९	२२ ३३	० १५	१ ४३	३ ०८
२७	४ ४४	६ ४०	८ ५४	११ १३	१३ ३१	१५ ४८	१८ ०७	२० २५	२२ २९	० ११	१ ३९	३ ०४
२८	४ ४१	६ ३७	८ ५१	११ १०	१३ २८	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ २६	० ०८	१ ३६	३ ०१
२९	४ ३७	६ ३३	८ ४७	११ ०६	१३ २४	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ २२	० ०४	१ ३२	२ ५७
३०	४ ३३	६ २९	८ ४३	११ ०२	१३ २०	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ १८	२४ ०	१ २८	२ ५३
३१	४ २९	६ २५	८ ३९	१० ५८	१३ १६	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ १४	२३ ५६	१ २४	२ ४९

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ १९	८ ३३	१० ५३	१३ १०	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ ०८	२३ ५१	१ १८	२ ४४	४ २०
२	६ १५	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २३	१७ ४३	२० ००	२२ ०४	२३ ४७	१ १४	२ ४०	४ १६
३	६ ११	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ १९	१७ ३९	१९ ५६	२२ ००	२३ ४३	१ १०	२ ३६	४ १२
४	६ ०७	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ १५	१७ ३५	१९ ५२	२१ ५६	२३ ३९	१ ०६	२ ३२	४ ०८
५	६ ०४	८ १८	१० ३८	१२ ५५	१५ १२	१७ ३२	१९ ४९	२१ ५३	२३ ३६	१ ०३	२ २९	४ ०५
६	६ ००	८ १४	१० ३४	१२ ५१	१५ ०८	१७ २८	१९ ४५	२१ ४९	२३ ३२	० ५९	२ २५	४ ०१
७	५ ५६	८ १०	१० ३०	१२ ४७	१५ ०४	१७ २४	१९ ४१	२१ ४५	२३ २८	० ५५	२ २१	३ ५७
८	५ ५२	८ ०६	१० २६	१२ ४३	१५ ०	१७ २०	१९ ३७	२१ ४१	२३ २४	० ५१	२ १७	३ ५३
९	५ ४८	८ ०२	१० २२	१२ ३९	१४ ५६	१७ १६	१९ ३३	२१ ३७	२३ २०	० ४७	२ १३	३ ४९
१०	५ ४४	७ ५८	१० १८	१२ ३५	१४ ५२	१७ १२	१९ २९	२१ ३३	२३ १६	० ४३	२ ०९	३ ४५
११	५ ४१	७ ५५	१० १५	१२ ३२	१४ ४९	१७ ०९	१९ २६	२१ ३०	२३ १३	० ४०	२ ०६	३ ४२
१२	५ ३७	७ ५१	१० ११	१२ २८	१४ ४५	१७ ०५	१९ २२	२१ २६	२३ ०९	० ३६	२ ०२	३ ३८
१३	५ ३३	७ ४७	१० ०७	१२ २४	१४ ४१	१७ ०१	१९ १८	२१ २२	२३ ०५	० ३२	१ ५८	३ ३४
१४	५ २९	७ ४३	१० ०३	१२ २०	१४ ३७	१६ ५७	१९ १४	२१ १८	२३ ०१	० २८	१ ५४	३ ३०
१५	५ २५	७ ३९	९ ५९	१२ १६	१४ ३३	१६ ५३	१९ १०	२१ १४	२२ ५७	० २४	१ ५०	३ २६
१६	५ २१	७ ३५	९ ५५	१२ १२	१४ २९	१६ ४९	१९ ०६	२१ १०	२२ ५३	० २०	१ ४६	३ २२
१७	५ १८	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ ०७	२२ ५०	० १७	१ ४३	३ १९
१८	५ १४	७ २८	९ ४८	१२ ०५	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४६	० १३	१ ३९	३ १५
१९	५ १०	७ २४	९ ४४	१२ ०१	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२० ५९	२२ ४२	० ०९	१ ३५	३ ११
२०	५ ०६	७ २०	९ ४०	११ ५७	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२० ५५	२२ ३८	० ०५	१ ३१	३ ०७
२१	५ ०२	७ १६	९ ३६	११ ५३	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२० ५१	२२ ३४	० ०१	१ २७	३ ०३
२२	४ ५८	७ १२	९ ३२	११ ४९	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२० ४७	२२ ३०	२३ ५७	१ २३	२ ५९
२३	४ ५४	७ ०९	९ २९	११ ४६	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२० ४४	२२ २७	२३ ५४	१ २०	२ ५६
२४	४ ५२	७ ०५	९ २५	११ ४२	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ४०	२२ २३	२३ ५०	१ १६	२ ५२
२५	४ ४७	७ ०१	९ २१	११ ३८	१३ ५५	१६ १५	१८ ३२	२० ३६	२२ १९	२३ ४६	१ १२	२ ४८
२६	४ ४३	६ ५७	९ १७	११ ३४	१३ ५१	१६ ११	१८ २८	२० ३२	२२ १५	२३ ४२	१ ०८	२ ४४
२७	४ ३९	६ ५३	९ १३	११ ३०	१३ ४७	१६ ०७	१८ २४	२० २८	२२ ११	२३ ३८	१ ०४	२ ४०
२८	४ ३५	६ ४९	९ ०९	११ २६	१३ ४३	१६ ०३	१८ २०	२० २४	२२ ०७	२३ ३४	१ ००	२ ३६
२९	४ ३१	६ ४५	९ ०५	११ २२	१३ ३९	१५ ५९	१८ १६	२०.२०	२२ ०३	२३ ३०	०० ५६	२ ३२
३०	४ २७	६ ४१	९ ०१	११ १८	१३ ३५	१५ ५५	१८ १२	२० १६	२१ ५९	२३ २६	०० ५२	२ २८

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० १२	२१ ५५	२३ २३	० ४८	२ २४	४ २०
२	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० ०८	२१ ५१	२३ १९	० ४४	२ २०	४ १६
३	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० ०४	२१ ४७	२३ १५	० ४०	२ १६	४ १२
४	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० ००	२१ ४३	२३ ११	० ३६	२ १२	४ ०८
५	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ १५	१५ ३५	१७ ५३	१९ ५६	२१ ३९	२३ ०७	० ३२	२ ०८	४ ०४
६	६ १७	८ ३७	१० ५५	१३ ११	१५ ३१	१७ ४९	१९ ५२	२१ ३५	२३ ०३	० २८	२ ०४	४ ००
७	६ १३	८ ३३	१० ५१	१३ ०७	१५ २७	१७ ४५	१९ ४८	२१ ३१	२२ ५९	० २४	२ ००	३ ५६
८	६ ०९	८ २९	१० ४७	१३ ०३	१५ २३	१७ ४१	१९ ४४	२१ २७	२२ ५५	० २०	१ ५६	३ ५२
९	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ५९	१५ १९	१७ ३७	१९ ४०	२१ २३	२२ ५१	० १६	१ ५२	३ ४८
१०	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ५५	१५ १५	१७ ३३	१९ ३६	२१ १९	२२ ४७	० १२	१ ४८	३ ४४
११	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ५१	१५ ११	१७ २९	१९ ३२	२१ १५	२२ ४३	० ०८	१ ४४	३ ४०
१२	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ४७	१५ ०७	१७ २५	१९ २८	२१ ११	२२ ३९	० ०४	१ ४०	३ ३६
१३	५ ४९	८ ०९	१० २७	१२ ४३	१५ ०३	१७ २१	१९ २४	२१ ०७	२२ ३५	२४ ००	१ ३६	३ ३२
१४	५ ४५	८ ०५	१० २३	१२ ३९	१४ ५९	१७ १७	१९ २०	२१ ०३	२२ ३१	२३ ५६	१ ३२	३ २८
१५	४ ४२	८ ०२	१० २०	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ १७	२१ ००	२२ २८	२३ ५३	१ २९	३ २५
१६	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ १३	२० ५६	२२ २४	२३ ४९	१ २५	३ २१
१७	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ ०९	२० ५२	२२ २०	२३ ४५	१ २१	३ १७
१८	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ ०५	२० ४८	२२ १६	२३ ४१	१ १७	३ १३
१९	५ २६	७ ४६	१० ०४	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ ०१	२० ४४	२२ १२	२३ ३७	१ १३	३ ०९
२०	५ २२	७ ४२	१० ००	१२ १६	१४ ३६	१६ ५४	१८ ५७	२० ४०	२२ ०८	२३ ३३	१ ०९	३ ०५
२१	५ १८	७ ३८	९ ५६	१२ १२	१४ ३२	१६ ५०	१८ ५३	२० ३६	२२ ०४	२३ २९	१ ०५	३ ०१
२२	५ १४	७ ३४	९ ५२	१२ ०८	१४ २८	१६ ४६	१८ ४९	२० ३२	२२ ००	२३ २५	१ ०१	२ ५७
२३	५ ११	७ ३१	९ ४९	१२ ०५	१४ २५	१६ ४३	१८ ४६	२० २९	२१ ५७	२३ २२	० ५८	२ ५३
२४	५ ०७	७ २७	९ ४५	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१८ ४२	२० २५	२१ ५३	२३ १८	० ५४	२ ४९
२५	५ ०३	७ २३	९ ४१	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ३८	२० २१	२१ ४९	२३ १४	० ५०	२ ४५
२६	४ ५९	७ १९	९ ३७	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ३४	२० १७	२१ ४५	२३ १०	० ४६	२ ४१
२७	४ ५५	७ १५	९ ३३	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ३०	२० १३	२१ ४१	२३ ०६	० ४२	२ ३७
२८	४ ५१	७ ११	९ २९	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ २६	२० ०९	२१ ३७	२३ ०२	० ३८	२ ३३
२९	४ ४७	७ ०७	९ २५	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ २२	२० ०५	२१ ३३	२२ ५८	० ३४	२ २९
३०	४ ४३	७ ३	९ २१	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ १८	२० ०१	२१ २९	२२ ५४	० ३०	२ २५
३१	४ ३९	६ ५९	९ १७	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ १४	१९ ५७	२१ २५	२२ ५०	० २६	२ २१

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५५	९ १३	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ ११	१९ ५३	२१ २१	२२ ४७	० २२	२ १८	४ ३१
२	६ ५१	९ ०९	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ ०७	१९ ४९	२१ १७	२२ ४३	० १८	२ १४	४ २७
३	६ ४७	९ ०५	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ ०३	१९ ४५	२१ १३	२२ ३९	० १४	२ १०	४ २३
४	६ ४३	९ ०१	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१७ ५९	१९ ४१	२१ ०९	२२ ३५	० १०	२ ०६	४ १९
५	६ ४०	८ ५८	११ १५	१३ ३४	१५ ५२	१७ ५६	१९ ३८	२१ ०६	२२ ३२	० ०७	२ ०३	४ १६
६	६ ३६	८ ५४	११ ११	१३ ३०	१५ ४८	१७ ५२	१९ ३४	२१ ०२	२२ २८	० ०३	१ ५९	४ १२
७	६ ३२	८ ५०	११ ०७	१३ २६	१५ ४४	१७ ४८	१९ ३०	२० ५८	२२ २४	२३ ५९	१ ५५	४ ०८
८	६ २८	८ ४६	११ ०३	१३ २२	१५ ४०	१७ ४४	१९ २६	२० ५४	२२ २०	२३ ५५	१ ५१	४ ०४
९	६ २४	८ ४२	१० ५९	१३ १८	१५ ३६	१७ ४०	१९ २२	२० ५०	२२ १६	२३ ५१	१ ४७	४ ००
१०	६ २०	८ ३८	१० ५५	१३ १४	१५ ३२	१७ ३६	१९ १८	२० ४६	२२ १२	२३ ४७	१ ४३	३ ५६
११	६ १६	८ ३४	१० ५१	१३ १०	१५ २८	१७ ३२	१९ १४	२० ४२	२२ ०८	२३ ४३	१ ३९	३ ५२
१२	६ १२	८ ३०	१० ४७	१३ ०६	१५ २४	१७ २८	१९ १०	२० ३८	२२ ०४	२३ ३९	१ ३५	३ ४८
१३	६ ०८	८ २६	१० ४३	१३ ०२	१५ २०	१७ २४	१९ ०६	२० ३४	२२ ००	२३ ३५	१ ३१	३ ४४
१४	६ ०४	८ २२	१० ३९	१२ ५८	१५ १६	१७ २०	१९ ०२	२० ३०	२१ ५६	२३ ३१	१ २७	३ ४०
१५	६ ००	८ १८	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ १६	१८ ५८	२० २६	२१ ५२	२३ २७	१ २३	३ ३६
१६	५ ५६	८ १४	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ १२	१८ ५४	२० २२	२१ ४८	२३ २३	१ १९	३ ३२
१७	५ ५२	८ १०	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ ०८	१८ ५०	२० १८	२१ ४४	२३ १९	१ १५	३ २८
१८	५ ४८	८ ०६	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ ०४	१८ ४६	२० १४	२१ ४०	२३ १५	१ ११	३ २४
१९	५ ४४	८ ०२	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ ००	१८ ४२	२० १०	२१ ३६	२३ ११	१ ०७	३ २०
२०	५ ४०	७ ५८	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१६ ५६	१८ ३८	२० ०६	२१ ३२	२३ ०७	१ ०३	३ १६
२१	५ ३७	७ ५५	१० १२	१२ ३१	१४ ४९	१६ ५३	१८ ३५	२० ०३	२१ २९	२३ ०४	१ ००	३ १३
२२	५ ३३	७ ५१	१० ०८	१२ २७	१४ ४५	१६ ४९	१८ ३१	१९ ५९	२१ २५	२३ ००	० ५६	३ ०९
२३	५ २९	७ ४७	१० ०४	१२ २३	१४ ४१	१६ ४५	१८ २७	१९ ५५	२१ २१	२२ ५६	० ५२	३ ०५
२४	५ २५	७ ४३	१० ००	१२ १९	१४ ३७	१६ ४१	१८ २३	१९ ५१	२१ १७	२२ ५२	० ४८	३ ०१
२५	५ २१	७ ३९	९ ५६	१२ १५	१४ ३३	१६ ३७	१८ १९	१९ ४७	२१ १३	२२ ४८	० ४४	२ ५७
२६	५ १७	७ ३५	९ ५२	१२ ११	१४ २९	१६ ३३	१८ १५	१९ ४३	२१ ०९	२२ ४४	० ४०	२ ५३
२७	५ १३	७ ३१	९ ४८	१२ ०७	१४ २५	१६ २९	१८ ११	१९ ३९	२१ ०५	२२ ४०	० ३६	२ ४९
२८	५ १०	७ २८	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ २६	१८ ०८	१९ ३६	२१ ०२	२२ ३७	० ३३	२ ४६
२९	५ ०६	७ २४	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ २२	१८ ०४	१९ ३२	२० ५८	२२ ३३	० २९	२ ४२
३०	५ ०२	७ २०	९ ३७	११ ५६	१४ १४	१६ १८	१८ ००	१९ २८	२० ५४	२२ २९	० २५	२ ३८
३१	४ ५८	७ २६	९ ३३	११ ५२	१४ १०	१६ १४	१७ ५६	१९ २४	२० ५०	२२ २५	० २१	२ ३४

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२	९ २९	११ ४९	१४ ०६	१६ १०	१७ ५३	१९ २०	२० ४६	२२ २२	० १७	२ ३१	४ ५०
२	७ ०८	९ २५	११ ४५	१४ ०२	१६ ०६	१७ ४९	१९ १६	२० ४२	२२ १८	० १३	२ २७	४ ४६
३	७ ०४	९ २१	११ ४१	१३ ५८	१६ ०२	१७ ४५	१९ १२	२० ३८	२२ १४	० ०९	२ २३	४ ४२
४	७ ००	९ १७	११ ३७	१३ ५४	१५ ५८	१७ ४१	१९ ०८	२० ३४	२२ १०	० ०५	२ १९	४ ३८
५	६ ५६	९ १३	११ ३३	१३ ५०	१५ ५४	१७ ३७	१९ ०४	२० ३०	२२ ०६	० ०१	२ १५	४ ३४
६	६ ५२	९ ०९	११ २९	१३ ४६	१५ ५०	१७ ३३	१९ ००	२० २६	२२ ०२	२३ ५७	२ ११	४ ३०
७	६ ४८	९ ०५	११ २५	१३ ४२	१५ ४६	१७ २९	१८ ५६	२० २२	२१ ५८	२३ ५३	२ ०७	४ २६
८	६ ४४	९ ०१	११ २१	१३ ३८	१५ ४२	१७ २५	१८ ५२	२० १८	२१ ५४	२३ ४९	२ ०३	४ २२
९	६ ४०	८ ५७	११ १७	१३ ३४	१५ ३८	१७ २१	१८ ४८	२० १४	२१ ५०	२३ ४५	१ ५९	४ १८
१०	६ ३६	८ ५३	११ १३	१३ ३०	१५ ३४	१७ १७	१८ ४४	२० १०	२१ ४६	२३ ४१	१ ५५	४ १४
११	६ ३२	८ ४९	११ ०९	१३ २६	१५ ३०	१७ १३	१८ ४०	२० ०६	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १०
१२	६ २७	८ ४४	११ ०४	१३ २१	१५ २५	१७ ०८	१८ ३५	२० ०१	२१ ३७	२३ ३२	१ ४६	४ ०५
१३	६ २३	८ ४०	११ ००	१३ १७	१५ २१	१७ ०४	१८ ३१	१९ ५७	२१ ३३	२३ २८	१ ४२	४ ०१
१४	६ १९	८ ३६	१० ५६	१३ १३	१५ १७	१७ ००	१८ २७	१९ ५३	२१ २९	२३ २४	१ ३८	३ ५७
१५	६ १५	८ ३२	१० ५२	१३ ०९	१५ १३	१६ ५६	१८ २३	१९ ४९	२१ २५	२३ २०	१ ३४	३ ५३
१६	६ ११	८ २८	१० ४८	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५२	१८ १९	१९ ४५	२१ २१	२३ १६	१ ३०	३ ४९
१७	६ ०७	८ २४	१० ४४	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४८	१८ १५	१९ ४१	२१ १७	२३ १२	१ २६	३ ४५
१८	६ ०३	८ २०	१० ४०	१२ ५७	१५ ०१	१६ ४४	१८ ११	१९ ३७	२१ १३	२३ ०८	१ २२	३ ४१
१९	५ ५९	८ १६	१० ३६	१२ ५३	१४ ५७	१६ ४०	१८ ०७	१९ ३३	२१ ०९	२३ ०४	१ १८	३ ३७
२०	५ ५५	८ १२	१० ३२	१२ ४९	१४ ५३	१६ ३६	१८ ०३	१९ २९	२१ ०५	२३ ००	१ १४	३ ३३
२१	५ ५१	८ ०८	१० २८	१२ ४५	१४ ४९	१६ ३२	१७ ५९	१९ २५	२१ ०१	२२ ५६	१ १०	३ २९
२२	५ ४७	८ ०४	१० २४	१२ ४१	१४ ४५	१६ २८	१७ ५५	१९ २१	२० ५७	२२ ५२	१ ०६	३ २५
२३	५ ४३	८ ००	१० २०	१२ ३७	१४ ४१	१६ २४	१७ ५१	१९ १७	२० ५३	२२ ४८	१ ०२	३ २१
२४	५ ३९	७ ५६	१० १६	१२ ३३	१४ ३७	१६ २०	१७ ४७	१९ १३	२० ४९	२२ ४४	० ५८	३ १७
२५	५ ३५	७ ५२	१० १२	१२ २९	१४ ३३	१६ १६	१७ ४३	१९ ०९	२० ४५	२२ ४०	० ५४	३ १३
२६	५ ३१	७ ४८	१० ०८	१२ २५	१४ २९	१६ १२	१७ ३९	१९ ०५	२० ४१	२२ ३६	० ५०	३ ०९
२७	५ २७	७ ४४	१० ०४	१२ २१	१४ २५	१६ ०८	१७ ३५	१९ ०१	२० ३७	२२ ३२	० ४६	३ ०५
२८	५ २३	७ ४०	१० ००	१२ १७	१४ २१	१६ ०७	१७ ३१	१८ ५७	२० ३३	२२ २८	० ४२	३ ०१
२९	५ १९	७ ३६	९ ५६	१२ १३	१४ १७	१६ ०४	१७ २७	१८ ५३	२० २९	२२ २४	० ३८	२ ५७
३०	५ १५	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ १३	१५ ५६	१७ २३	१८ ४९	२० २५	२२ २०	० ३४	२ ५३

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३०	९ ५०	१२ ०८	१४ ११	१५ ५४	१७ २२	१८ ४७	२० २३	२२ १९	० ३२	२ ५२	५ ०९
२	७ २६	९ ४६	१२ ०४	१४ ०७	१५ ५०	१७ १८	१८ ४३	२० १९	२२ १५	० २८	२ ४८	५ ०५
३	७ २२	९ ४२	१२ ००	१४ ०३	१५ ४६	१७ १४	१८ ३९	२० १५	२२ ११	० २४	२ ४४	५ ०१
४	७ १८	९ ३८	११ ५६	१३ ५९	१५ ४२	१७ १०	१८ ३५	२० ११	२२ ०७	० २०	२ ४०	४ ५७
५	७ १३	९ ३३	११ ५१	१३ ५४	१५ ३७	१७ ०५	१८ ३०	२० ०६	२२ ०२	० १५	२ ३५	४ ५२
६	७ ०९	९ २९	११ ४७	१३ ५०	१५ ३३	१७ ०१	१८ २६	२० ०२	२१ ५८	० ११	२ ३१	४ ४८
७	७ ०५	९ २५	११ ४३	१३ ४६	१५ २९	१६ ५७	१८ २२	१९ ५८	२१ ५४	० ०७	२ २७	४ ४४
८	७ ०१	९ २१	११ ३९	१३ ४२	१५ २५	१६ ५३	१८ १८	१९ ५४	२१ ५०	० ०३	२ २३	४ ४०
९	६ ५७	९ १७	११ ३५	१३ ३८	१५ २१	१६ ४९	१८ १४	१९ ५०	२१ ४६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१०	६ ५३	९ १३	११ ३१	१३ ३४	१५ १७	१६ ४५	१८ १०	१९ ४६	२१ ४२	२३ ५५	२ १५	४ ३२
११	६ ४९	९ ०९	११ २७	१३ ३०	१५ १३	१६ ४१	१८ ०६	१९ ४२	२१ ३८	२३ ५१	२ ११	४ २८
१२	६ ४५	९ ०५	११ २३	१३ २६	१५ ०९	१६ ३७	१८ ०२	१९ ३८	२१ ३४	२३ ४७	२ ०७	४ २४
१३	६ ४१	९ ०१	११ १९	१३ २२	१५ ०५	१६ ३३	१७ ५८	१९ ३४	२१ ३०	२३ ४३	२ ०३	४ २०
१४	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ १८	१५ ०१	१६ २९	१७ ५४	१९ ३०	२१ २६	२३ ३९	१ ५९	४ १६
१५	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ १४	१४ ५७	१६ २५	१७ ५०	१९ २६	२१ २२	२३ ३५	१ ५५	४ १२
१६	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ १०	१४ ५३	१६ २१	१७ ४६	१९ २२	२१ १८	२३ ३१	१ ५१	४ ०८
१७	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ ०६	१४ ४९	१६ १७	१७ ४२	१९ १८	२१ १४	२३ २७	१ ४७	४ ०४
१८	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ ०२	१४ ४५	१६ १३	१७ ३८	१९ १४	२१ १०	२३ २३	१ ४३	४ ००
१९	६ १७	८ ३७	१० ५५	१२ ५८	१४ ४१	१६ ०९	१७ ३४	१९ १०	२१ ०६	२३ १९	१ ३९	३ ५६
२०	६ १३	८ ३३	१० ५१	१२ ५४	१४ ३७	१६ ०५	१७ ३०	१९ ०६	२१ ०२	२३ १५	१ ३५	३ ५२
२१	६ ०९	८ २९	१० ४७	१२ ५०	१४ ३३	१६ ०१	१७ २६	१९ ०२	२० ५८	२३ ११	१ ३१	३ ४८
२२	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ४६	१४ २९	१५ ५७	१७ २२	१८ ५८	२० ५४	२३ ०७	१ २७	३ ४४
२३	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ४२	१४ २५	१५ ५३	१७ १८	१८ ५४	२० ५०	२३ ०३	१ २३	३ ४०
२४	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ३८	१४ २१	१५ ४९	१७ १४	१८ ५०	२० ४६	२२ ५९	१ १९	३ ३६
२५	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ३४	१४ १७	१५ ४५	१७ १०	१८ ४६	२० ४२	२२ ५५	१ १५	३ ३२
२६	५ ५०	८ १०	१० २८	१२ ३१	१४ १४	१५ ४२	१७ ०७	१८ ४३	२० ३९	२२ ५२	१ १२	३ २९
२७	५ ४६	८ ०६	१० २४	१२ २७	१४ १०	१५ ३८	१७ ०३	१८ ३९	२० ३५	२२ ४८	१ ०८	३ २५
२८	५ ४२	८ ०२	१० २०	१२ २३	१४ ०६	१५ ३४	१६ ५९	१८ ३५	२० ३१	२२ ४४	१ ०४	३ २१
२९	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ १९	१४ ०२	१५ ३०	१६ ५५	१८ ३१	२० २७	२२ ४०	१ ००	३ १७
३०	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ १५	१३ ५८	१५ २६	१६ ५१	१८ २७	२० २३	२२ ३६	० ५६	३ १३
३१	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ ११	१३ ५४	१५ २२	१६ ४७	१८ २३	२० १९	२२ ३२	० ५२	३ ०९

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४५	१० ०३	१२ ०७	१३ ४९	१५ १७	१६ ४३	१८ १८	२० १४	२२ २८	० ४७	३ ०५	५ २१
२	७ ४१	९ ५९	१२ ०३	१३ ४५	१५ १३	१६ ३९	१८ १४	२० १०	२२ २४	० ४३	३ ०१	५ १७
३	७ ३७	९ ५५	११ ५९	१३ ४१	१५ ०९	१६ ३५	१८ १०	२० ०६	२२ २०	० ३९	२ ५७	५ १३
४	७ ३३	९ ५१	११ ५५	१३ ३७	१५ ०५	१६ ३१	१८ ०६	२० ०२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ ०९
५	७ २९	९ ४७	११ ५१	१३ ३३	१५ ०१	१६ २७	१८ ०२	१९ ५८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ ०५
६	७ २५	९ ४३	११ ४७	१३ २९	१४ ५७	१६ २३	१७ ५८	१९ ५४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०१
७	७ २१	९ ३९	११ ४३	१३ २५	१४ ५३	१६ १९	१७ ५४	१९ ५०	२२ ०४	० २३	२ ४१	४ ५७
८	७ १८	९ ३६	११ ४०	१३ २२	१४ ५०	१६ १६	१७ ५१	१९ ४७	२२ ०१	० २०	२ ३८	४ ५४
९	७ १४	९ ३२	११ ३६	१३ १८	१४ ४६	१६ १२	१७ ४७	१९ ४३	२१ ५७	० १६	२ ३४	४ ५०
१०	७ १०	९ २८	११ ३२	१३ १४	१४ ४२	१६ ०८	१७ ४३	१९ ३९	२१ ५३	० १२	२ ३०	४ ४६
११	७ ०६	९ २४	११ २८	१३ १०	१४ ३८	१६ ०४	१७ ३९	१९ ३५	२१ ४९	० ०८	२ २६	४ ४२
१२	७ ०२	९ २०	११ २४	१३ ०६	१४ ३४	१६ ००	१७ ३५	१९ ३१	२१ ४५	० ०४	२ २२	४ ३८
१३	६ ५८	९ १६	११ २०	१३ ०२	१४ ३०	१५ ५६	१७ ३१	१९ २७	२१ ४१	२४ ००	२ १८	४ ३४
१४	६ ५४	९ १२	११ १६	१२ ५८	१४ २६	१५ ५२	१७ २७	१९ २३	२१ ३७	२३ ५६	२ १४	४ ३०
१५	६ ५१	९ ०९	११ १३	१२ ५५	१४ २३	१५ ४९	१७ २४	१९ २०	२१ ३४	२३ ५३	२ ११	४ २७
१६	६ ४७	९ ०५	११ ०९	१२ ५१	१४ १९	१५ ४५	१७ २०	१९ १६	२१ ३०	२३ ४९	२ ०७	४ २३
१७	६ ४३	९ ०१	११ ०५	१२ ४७	१४ १५	१५ ४१	१७ १६	१९ १२	२१ २६	२३ ४५	२ ०३	४ १९
१८	६ ३९	८ ५७	११ ०१	१२ ४३	१४ ११	१५ ३७	१७ १२	१९ ०८	२१ २२	२३ ४१	१ ५९	४ १५
१९	६ ३५	८ ५३	१० ५७	१२ ३९	१४ ०७	१५ ३३	१७ ०८	१९ ०४	२१ १८	२३ ३७	१ ५५	४ ११
२०	६ ३१	८ ४९	१० ५३	१२ ३५	१४ ०३	१५ २९	१७ ०४	१९ ००	२१ १४	२३ ३३	१ ५१	४ ०७
२१	६ २७	८ ४५	१० ४९	१२ ३१	१३ ५९	१५ २५	१७ ००	१८ ५६	२१ १०	२३ २९	१ ४७	४ ०३
२२	६ २३	८ ४१	१० ४५	१२ २७	१३ ५५	१५ २१	१६ ५६	१८ ५२	२१ ०६	२३ २५	१ ४३	३ ५९
२३	६ १९	८ ३७	१० ४१	१२ २३	१३ ५१	१५ १७	१६ ५२	१८ ४८	२१ ०२	२३ २१	१ ३९	३ ५५
२४	६ १५	८ ३३	१० ३७	१२ १९	१३ ४७	१५ १३	१६ ४८	१८ ४४	२० ५८	२३ १७	१ ३५	३ ५१
२५	६ ११	८ २९	१० ३३	१२ १५	१३ ४३	१५ ०९	१६ ४४	१८ ४०	२० ५४	२३ १३	१ ३१	३ ४७
२६	६ ०८	८ २६	१० ३०	१२ १२	१३ ४०	१५ ०६	१६ ४१	१८ ३७	२० ५१	२३ १०	१ २८	३ ४४
२७	६ ०४	८ २२	१० २६	१२ ०८	१३ ३६	१५ ०२	१६ ३७	१८ ३३	२० ४७	२३ ०६	१ २४	३ ४०
२८	६ ००	८ १८	१० २२	१२ ०४	१३ ३२	१४ ५८	१६ ३३	१८ २९	२० ४३	२३ ०२	१ २०	३ ३६
२९	५ ५६	८ १४	१० १८	१२ ००	१३ २८	१४ ५४	१६ २९	१८ २५	२० ३९	२२ ५८	१ १६	३ ३२
३०	५ ५२	८ १०	१० १४	११ ५६	१३ २४	१४ ५०	१६ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०६	१० १०	११ ५३	१३ २०	१४ ४६	१६ २२	१८ १७	२० ३१	२२ ५१	१ ०८	३ २५	५ ४४
२	८ ०२	१० ०६	११ ४९	१३ १६	१४ ४२	१६ १८	१८ १३	२० २७	२२ ४७	१ ०४	३ २१	५ ४०
३	७ ५८	१० ०२	११ ४५	१३ १२	१४ ३८	१६ १४	१८ ०९	२० २३	२२ ४३	१ ००	३ १७	५ ३६
४	७ ५४	९ ५८	११ ४१	१३ ०८	१४ ३४	१६ १०	१८ ०५	२० १९	२२ ३९	० ५६	३ १३	५ ३२
५	७ ५०	९ ५४	११ ३७	१३ ०४	१४ ३०	१६ ०६	१८ १	२० १५	२२ ३५	० ५२	३ ०९	५ २८
६	७ ४६	९ ५०	११ ३३	१३ ००	१४ २६	१६ ०२	१७ ५७	२० ११	२२ ३१	० ४८	३ ०५	५ २४
७	७ ४२	९ ४६	११ २९	१२ ५६	१४ २२	१५ ५८	१७ ५३	२० ०७	२२ २७	० ४४	३ ०१	५ २०
८	७ ३९	९ ४३	११ २६	१२ ५३	१४ १९	१५ ५५	१७ ५०	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ५८	५ १७
९	७ ३५	९ ३९	११ २२	१२ ४९	१४ १५	१५ ५१	१७ ४६	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ५४	५ १३
१०	७ ३१	९ ३५	११ १८	१२ ४५	१४ ११	१५ ४७	१७ ४२	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ५०	५ ०९
११	७ २७	९ ३१	११ १४	१२ ४१	१४ ०७	१५ ४३	१७ ३८	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ४६	५ ०५
१२	७ २३	९ २७	११ १०	१२ ३७	१४ ०३	१५ ३९	१७ ३४	१९ ४८	२२ ०८	० २६	२ ४२	५ ०१
१३	७ १९	९ २३	११ ०६	१२ ३३	१३ ५९	१५ ३५	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ ३८	४ ५७
१४	७ १५	९ १९	११ ०२	१२ २९	१३ ५५	१५ ३१	१७ २६	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ ३४	४ ५३
१५	७ ११	९ १५	१० ५८	१२ २५	१३ ५१	१५ २७	१७ २२	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ ३०	४ ४९
१६	७ ०७	९ ११	१० ५४	१२ २१	१३ ४७	१५ २३	१७ १८	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ २६	४ ४५
१७	७ ०३	९ ०७	१० ५०	१२ १७	१३ ४३	१५ १९	१७ १४	१९ २८	२१ ४८	० ०५	२ २२	४ ४१
१८	६ ५९	९ ०३	१० ४६	१२ १३	१३ ३९	१५ १५	१७ १०	१९ २४	२१ ४४	० ०१	२ १८	४ ३७
१९	६ ५५	८ ५९	१० ४२	१२ ०९	१३ ३५	१५ ११	१७ ०६	१९ २०	२१ ४०	२३ ५७	२ १४	४ ३३
२०	६ ५१	८ ५५	१० ३८	१२ ०५	१३ ३१	१५ ०७	१७ ०२	१९ १६	२१ ३६	२३ ५३	२ १०	४ २९
२१	६ ४७	८ ५१	१० ३४	१२ ०१	१३ २७	१५ ०३	१६ ५८	१९ १२	२१ ३२	२३ ४९	२ ०६	४ २५
२२	६ ४३	८ ४७	१० ३०	११ ५७	१३ २३	१४ ५९	१६ ५४	१९ ०८	२१ २८	२३ ४५	२ ०२	४ २१
२३	६ ४०	८ ४४	१० २७	११ ५४	१३ २०	१४ ५६	१६ ५१	१९ ०५	२१ २५	२३ ४२	१ ५९	४ १८
२४	६ ३६	८ ४०	१० २३	११ ५०	१३ १६	१४ ५२	१६ ४७	१९ ०१	२१ २१	२३ ३८	१ ५५	४ १४
२५	६ ३२	८ ३६	१० १९	११ ४६	१३ १२	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ १७	२३ ३४	१ ५१	४ १०
२६	६ २८	८ ३२	१० १५	११ ४२	१३ ०८	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १३	२३ ३०	१ ४७	४ ०६
२७	६ २४	८ २८	१० ११	११ ३८	१३ ०४	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ ०९	२३ २६	१ ४३	४ ०२
२८	६ २०	८ २४	१० ०७	११ ३४	१३ ००	१४ ३६	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०५	२३ २२	१ ३९	३ ५८
२९	६ १७	८ २१	१० ०४	११ ३१	१२ ५७	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०२	२३ १९	१ ३६	३ ५५
३०	६ १३	८ १७	१० ००	११ २७	१२ ५३	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२० ५८	२३ १५	१ ३२	३ ५१

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ ०९	९ ५२	११ २०	१२ ४५	१४ २१	१६ १७	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २४	३ ४४	६ ०१
२	८ ०५	९ ४८	११ १६	१२ ४१	१४ १७	१६ १३	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २०	३ ४०	५ ५७
३	८ ०१	९ ४४	११ १२	१२ ३७	१४ १३	१६ ०९	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ १६	३ ३६	५ ५३
४	७ ५७	९ ४०	११ ०८	१२ ३३	१४ ०९	१६ ०५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १२	३ ३२	५ ४९
५	७ ५३	९ ३६	११ ०४	१२ २९	१४ ०५	१६ ०१	१८ १४	२० ३४	२२·५२	१ ०८	३ २८	५ ४५
६	७ ४९	९ ३२	११ ००	१२ २५	१४ ०१	१५ ५७	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ ०४	३ २४	५ ४१
७	७ ४५	९ २८	१० ५६	१२ २१	१३ ५७	१५ ५३	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ००	३ २०	५ ३७
८	७ ४२	९ २५	१० ५३	१२ १८	१३ ५४	१५ ५०	१८ ०३	२० २३	२२ ४१	० ५७	३ १७	५ ३४
९	७ ३८	९ २१	१० ४९	१२ १४	१३ ५०	१५ ४६	१७ ५९	२० १९	२२ ३७	० ५३	३ १३	५ ३०
१०	७ ३४	९ १७	१० ४५	१२ १०	१३ ४६	१५ ४२	१७ ५५	२० १५	२२ ३३	० ४९	३ ०९	५ २६
११	७ ३०	९ १३	१० ४१	१२ ०६	१३ ४२	१५ ३८	१७ ५१	२० ११	२२ २९	० ४५	३ ०५	५ २२
१२	७ २६	९ ०९	१० ३७	१२ ०२	१३ ३८	१५ ३४	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४१	३ ०१	५ १८
१३	७ २२	९ ०५	१० ३३	११ ५८	१३ ३४	१५ ३०	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ३७	२ ५७	५ १४
१४	७ १८	९ ०१	१० २९	११ ५४	१३ ३०	१५ २६	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३३	२ ५३	५ १०
१५	७ १४	८ ५७	१० २५	११ ५०	१३ २६	१५ २२	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० २९	२·४९	५ ०६
१६	७ १०	८ ५३	१० २१	११ ४६	१३ २२	१५ १८	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० २५	२ ४५	५ ०२
१७	७ ०६	८ ४९	१० १७	११ ४२	१३ १८	१५ १४	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २१	२ ४१	४ ५८
१८	७ ०२	८ ४५	१० १३	११ ३८	१३ १४	१५ १०	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० १७	२ ३७	४ ५४
१९	६ ५८	८ ४१	१० ०९	११ ३४	१३ १०	१५ ०६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १३	२ ३३	४ ५०
२०	६ ५४	८ ३७	१० ०५	११ ३०	१३ ०६	१५ ०२	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० ०९	२ २९	४ ४६
२१	६ ५०	८ ३३	१० ०१	११ २६	१३ ०२	१४ ५८	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ०५	२ २५	४ ४२
२२	६ ४६	८ २९	९ ५७	११ २२	१२ ५८	१४ ५४	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०१	२ २१	४ ३८
२३	६ ४२	८ २५	९ ५३	११ १८	१२ ५४	१४ ५०	१७ ०३	१९ २३	२१ ४१	२३ ५७	२ १७	४ ३४
२४	६ ३८	८ २१	९ ४९	११ १४	१२ ५०	१४ ४६	१६ ५९	१९ १९	२१ ३७	२३ ५३	२ १३	४ ३०
२५	६ ३४	८ १७	९ ४५	११ १०	१२ ४६	१४ ४२	१६ ५५	१९ १५	२१ ३३	२३ ४९	२ ०९	४ २६
२६	६ ३०	८ १३	९ ४१	११ ०६	१२ ४२	१४ ३८	१६ ५१	१९ ११	२१ २९	२३ ४५	२ ०५	४ २२
२७	६ २६	८ ०९	९ ३७	११ ०२	१२ ३८	१४ ३४	१६ ४७	१९ ०७	२१ २५	२३ ४१	२ ०१	४ १८
२८	६ २२	८ ०५	९ ३३	१० ५८	१२ ३४	१४ ३०	१६ ४३	१९ ०३	२१ २१	२३ ३७	१ ५७	४ १४
२९	६ १९	८ ०२	९ ३०	१० ५५	१२ ३१	१४ २७	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३४	१ ५४	४ ११
३०	६ १५	७ ५८	९ २६	१० ५१	१२ २७	१४ २३	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३०	१ ५०	४ ०७
३१	६ ११	७ ५४	९ २२	१० ४७	१२ २३	१४ १९	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ २६	१ ४६	४ ०३

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५०	९ १८	१० ४४	१२ १८	१४ १४	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ २२	१ ४१	३ ५९	६ ०२
२	७ ४६	९ १४	१० ४०	१२ १४	१४ १०	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ १८	१ ३७	३ ५५	५ ५८
३	७ ४२	९ १०	१० ३६	१२ १०	१४ ०६	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १४	१ ३३	३ ५१	५ ५४
४	७ ३८	९ ०६	१० ३२	१२ ०६	१४ ०२	१६ १६	१८ ३५	३० ५३	२३ १०	१ २९	३ ४७	५ ५०
५	७ ३५	९ ०३	१० २९	१२ ०३	१३ ५९	१६ १३	१८ ३२	२० ५०	२३ ०७	१ २६	३ ४४	५ ४७
६	७ ३१	८ ५९	१० २५	११ ५९	१३ ५५	१६ ०९	१८ २८	२० ४६	२३ ०३	१ २२	३ ४०	५ ४३
७	७ २७	८ ५५	१० २१	११ ५५	१३ ५१	१६ ०५	१८ २४	२० ४२	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ३९
८	७ २३	८ ५१	१० १७	११ ५१	१३ ४७	१६ ०१	१८ २०	२० ३८	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ३५
९	७ १९	८ ४७	१० १३	११ ४७	१३ ४३	१५ ५७	१८ १६	२० ३४	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ३१
१०	७ १५	८ ४३	१० ०९	११ ४३	१३ ३९	१५ ५३	१८ १२	२० ३०	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ २७
११	७ ११	८ ३९	१० ०५	११ ३९	१३ ३५	१५ ४९	१८ ०८	२० २६	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ २३
१२	७ ०७	८ ३५	१० ०१	११ ३५	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ १९
१३	७ ०३	८ ३१	९ ५७	११ ३१	१३ २७	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ १५
१४	६ ५९	८ २७	९ ५३	११ २७	१३ २३	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ ११
१५	६ ५५	८ २३	९ ४९	११ २३	१३ १९	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ ०७
१६	६ ५१	८ १९	९ ४५	११ १९	१३ १५	१५ २९	१७ ४८	२० ०६	२२ २३	० ४२	३ ००	५ ०३
१७	६ ४७	८ १५	९ ४१	११ १५	१३ ११	१५ २५	१७ ४४	२० ०२	२२ १९	० ३८	२ ५६	४ ५९
१८	६ ४३	८ ११	९ ३७	११ ११	१३ ०७	१५ २१	१७ ४०	१९ ५८	२२ १५	० ३४	२ ५२	४ ५५
१९	६ ३९	८ ०७	९ ३३	११ ०७	१३ ०३	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ ११	० ३०	२ ४८	४ ५१
२०	६ ३४	८ ०२	९ २८	११ ०२	१२ ५८	१५ १२	१७ ३१	१९ ४९	२२ ०६	० २५	२ ४३	४ ४६
२१	६ ३०	७ ५८	९ २४	१० ५८	१२ ५४	१५ ०८	१७ २७	१९ ४५	२२ ०२	० २१	२ ३९	४ ४२
२२	६ २६	७ ५४	९ २०	१० ५४	१२ ५०	१५ ०४	१७ २३	१९ ४१	२१ ५८	० १७	२ ३५	४ ३८
२३	६ २२	७ ५०	९ १६	१० ५०	१२ ४६	१५ ००	१७ १९	१९ ३७	२१ ५४	० १३	२ ३१	४ ३४
२४	६ १८	७ ४६	९ १२	१० ४६	१२ ४२	१४ ५६	१७ १५	१९ ३३	२१ ५०	० ०९	२ २७	४ ३०
२५	६ १५	७ ४३	९ ०९	१० ४३	१२ ३९	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ४७	० ०६	२ २४	४ २७
२६	६ ११	७ ३९	९ ०५	१० ३९	१२ ३५	१४ ४९	१७ ०८	१९ २६	२१ ४३	० ०२	२ २०	४ २३
२७	६ ०७	७ ३५	९ ०१	१० ३५	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०४	१९ २२	२१ ३९	२३ ५८	२ १६	४ १९
२८	६ ०३	७ ३१	८ ५७	१० ३१	१२ २७	१४ ४१	१७ ००	१९ १८	२१ ३५	२३ ५४	२ १२	४ १५

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

	मि. से.	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर		= १।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय

	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६ ।२४ ।४८
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६ ।११ ।२७

सूर्यास्त

	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।११ ।१२
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।०२ ।२४
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५ ।४९ ।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया
११ ।१२ × ५=५५ ।६० या ५६ पल
सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अत: यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३० ।००
चर पल	— ० ।५६
दिनमान नागपुर	२९ ।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६० ।००
दिनमान	— २९ ।०४
रात्रिमान	३० ।५६

उदाहरण २—मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३ ।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८ ।५२, रवि क्रांति २३ ।२६ उत्तर, वेलांतर + १ ।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२ ।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+०० ।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+०० ।३४
अक्षांश १३ ।०५ एवं रवि क्रांति २३ ।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३ ।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय

	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।२३ ।१२
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५ ।४५ ।४०
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५ ।४६ ।५४

सूर्यास्त

	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।३२ ।०४
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६ ।३३ ।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३ ।१२×५=११५ ।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३० ।००	**रात्रिमान—**	अहोरात्र	६० ।००
चर पल	+०१ ।५६		दिनमान	— ३१ ।५६
दिनमान मद्रास	३१ ।५६		रात्रिमान	२८ ।०४

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	,,
	६	०९	,,
६ ०९ का ढाई से गुना किया	६	०९	
	३	०४	३०
इष्टकाल घटी पल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं.	मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय	२०	४५	भा.स्टै.टा.
मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।			
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	,,
शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
	१४	४०	
	७	२०	३०
(३) इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्र (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	,,
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	२२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२१
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८१	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११४	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३४	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२४	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११४	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११७	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९८	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१४६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११५	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	११	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०४	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
[illegible]	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २९	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ५२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	—०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण— दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांशः चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी																					क्रांति दक्षिण हो तो धन							
	यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।४	+२०।००	इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
अक्कलकोटं	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२	इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२	इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।०	कोच्चि	केरल	१०।०	७६।१५	—२५।०	—३।५६
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२	कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।८
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।०	+४६।०	+६७।४
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९।२४	इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।८	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८	इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	+३।२४	उन्नाव	उ. प्र.	२६।३३	८०।३०	—८।०	+१३।४	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।८	—१२।५
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—१०।०	उतरोला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।८	+२०।५६	कुशलगढ़	राजस्थान	२३।८	७४।२७	—३२।१२	—११।८
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—४।३२	ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८	कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।०	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+०।२०
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	उदय मण्डलम	तमिलनाडू	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।०	खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+४।३६	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।८	७६।५	—२५।४०	—४।३६	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९।४४	एंचिलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६	गयाजी	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।८
अमेठी	यू.पी.	२६।८	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८	ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
असिनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४	कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।०
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।८	—१६।४	कन्नौज	उ. प्र.	२७।२	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	+२१।१६	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	—२४।०	कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८	गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+१।३२	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३९
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।०	+६२।४	कन्याकुमारी	तमिलनाडू	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८	गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	कल्याद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४	गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।०	+५८।४
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	+३।१२	करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।६	—१३।३६	+७।२८	गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।८
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	—१८।०	कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	गुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।०	—१।४
आजमगढ़	यू.पी.	२६।६	८३।१२	+२।४८	+२३।५२	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।८	+३२।१२	घाटमशर	उ. प्र.	२६।८	८०।११	—९।१६	+११।४८
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२९।५२	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	+२८।३६	काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४	चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—७।४०	कांचिपुरम	तमिलनाडू	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८	कार्गिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।८	—४।४	चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८	किसनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०	चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	डोंग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	नागकोविंल	तमिलनाडू	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०	डेराबाबा	पंजाब	३२।२	७५।४	—२९।४४	—८।४०	नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
चित्तौड़गढ	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।८	ढाका	बंग्लादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४	नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।८	+३०।१२	तलागंग	तलांगंगा	३२।५६	७२।२८	—४०।८	—१९।४	नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
छत्तरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८	तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।०	+४५।४	नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।८	+३८।१२
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।४	+९।०	तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६।०	पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
छवराटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२	तंजाबूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८	पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।८
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४	तिरूवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	तुर -मेघालय	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१।०	+५२।४	परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।८
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०	थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
जलपाईगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६।०	दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।८
जम्मू	जम्मू का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—९।२०	दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४	पाण्डिचेरी	तमिलनाडू	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४	दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।१७	+२३।८	+४४।१२	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।४	—१।०
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८	हिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४	प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६	दिण्डुक्कल	तमिलनाडू	१०।१३	७८।५	—१७।४०	+३।२४	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।४	—१८।०	दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।४	—०।०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।८	द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।८	पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
जोधपुर	राजरात	२६।१९	७३।४	—३७।४४	—१६।४०	देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।४	—१७।४४	+३।२०	पेशाबर	प. पाकि.	३४।१	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६	देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।०	+३०।४	फतेहपुर	उ. प्र.	२७।६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।८	धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।०	—९।५६
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६	धर्मपुरी	तमिलनाडू	१२।८	७८।११	—१७।१६	+३।४८	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२	धारवाढ़	कर्नाटक	१५।२८	७५।२	—२९।५२	—८।४८	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।२	—२९।५२	—८।४८
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०	धार	म. प्र.	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।९	—२५।२४	—४।२०	धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
झुंझुनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।१६	धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।०	—२१।०	—२३।४	फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।८	—१।२८	+१९।३६
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६	धांग्रंधा	सौराष्ट्र	२२.५९	७१।३०	—४४।०	—२२।५६	फीरोजबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।८	नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।७	—१।३२	+१९।३२
टनकपुर	उ. प्र.	२९।९	८०।१०	—९।२०	+११।४४	नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६	नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८	फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।०	+५।४	नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।०
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।८	+३।५६	नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६	बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।०	+९।४
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२	नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।६	—१३।३६	+७।२८	वरंगल	आं. प्र.	१८।४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८	नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।८
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५।८	—१४।४	नाचना	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२०	बलिया	उ. प्र.	२४।४४	८४।०९	+६।३६	+२७।४०
डिवाई	यू. पी.	२८।१२	७८।१५	—१७।०	+४।४	नारनोल	राजस्थान	२८।२	७६।७	—२५।३२	—४।२८	बलोतरा	राजस्थान	२५।४९	७२।१६	—४०।५६	—१९।५२

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२	रोपड़	(पंजा.)	३०।५७	७६।३०	—२४।०	—२।५६
बरेली	उ.प्र.	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+८।४०	भूसावल	महाराष्ट्र	२१।१२	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	लखनऊ	(उ. प्र.)	२६।५१	८०।५९	—६।१४	+१५।०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	—१।२८	भूटान	भूटान	२७।३०	९०।०	+३०।०	+५१।४	ललितपुर	(उ. प्र.)	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४०	भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२	लुधियाना	पंजाब	३०।३५	७५।५३	—२६।२८	—५।२४
बहराइच	उ. प्र.	२७।३४	८१।३७	—३।३२	+१७।३२	मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+१।४८	शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२
बस्ती	उ.प्र.	२६।४८	८२।४६	+१।४	+२२।८	मद्रास	तमिलनाडु	१३।५	८०।१७	—८।५२	+१२।१२	शिलांग	(मेघा.)	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४०
ब्यावर	राजस्थान	२६।७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०	मणीपुर	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	—४५।५२	—६६।५६	शिवपुरी	(म. प्र.)	२५।३०	७८।४	—१३।४४	+३।२०
वाराणसी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	+२।०	+२३।४	मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२।८	—१।४	राजापुर	(म. प्र.)	२३।२४	७६।१४	—२५।४	—४।०
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+४।४८	मल्लपुरम	केरल	११।४	७६।४	—२५।४४	—४।४०	शेरकिला	(काश्मी.)	३६।७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४
बाराबंकी	उ. प्र.	२६।५६	८१।१०	—५।२०	+१५।४४	मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२।०	—१०।५६	श्रीनगर	(काश्म.)	३४।६	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
बालू घाट	प. दिजाज	२५।१४	८८।४७	+२५।८	+४६।१२	मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+६।२४	शिमला	(हिमा.)	३१।६	७७।१०	—२१।२०	—०।१६
बाँदा	उ. प्र.	२५।२८	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	मुगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६।०	+३७।४	संतालपु	(गु.)	२३।४७	७०।२८	—४८।८	—२७।४
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	मुजफ्फरपुर	बिहार	२६।७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२	सातारा	(महा.)	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	—६।१६	फुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५।८	सागर	(म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५।०	+६।४
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४	मेघालय	शिलंग	२५।५७	८२।०	+३८।०	+५९।४	सरदारशहर	(राज.)	२८।२७	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+१।२४	मैसूर	कर्नाटक	१२।१९	७६।२०	—२६।२०	—२।१६	सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
बैतूल	म. प्र.	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+२।४८	मेरठ	उ. प्र.	२९।१	७७।४५	—१९।०	+२।४	सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२	मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+०।२८	+२१।३२	सोमनाथ	(गुज.)	२१।१	७०।२६	—४८।२६	—२७।२२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५२	—१८।३	+२।३२	मेडतासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४।३	—३३।४८	—१२।४४	सोलापुर	(महा.)	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	—५।४४
बिलासपुर	हिमाचल	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—२।३६	यानामा	आं. प्रदेश	१६।४६	८२।१३	—१।८	+१९।५६	सोलन	(हिमा.)	३०।५५	७७।१	—२१।२४	—०।२०
बिलासपुर	म. प्र.	२२।५	८२।१०	—१।२०	+१९।४४	यासिन	केरल	३६।२१	७३।१९	—३६।४८	—१२।४४	सूरत	(गुज.)	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+३।४८	यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८।८	—१७।२८	+३।३६	सिकन्दराबाद	आ. प्र.	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+५।१६
बिहार शरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२।८	+३३।१२	यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७।८	—१७।२८	+ ३।३६	सिरोही	(राज.)	२४।५६	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बीकानेर	राजस्थान	२८।१	७३।१९	—२६।४४	—१५।४०	रतलाम	म. प्र.	२३।१९	७५।३	—२९।४८	—८।४४	सीकर	(राज.)	२७।५१	७५।१४	—२९।४	—८।०
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—६।८	रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४०	सीतापुर	(उ. प्र.)	२७।३६	८०।४०	—७।२०	+१३।४४
बादर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+२।१२	राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।२६	हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७।८	+३।५६
बीरमगढ़	गुजरात	२३।०	७२।२	—४१।५२	—२०।४८	राजचूर	(कर्ना.)	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+०।२८	हरदोई	(उ. प्र.)	२७।२३	८०।१०	—९।२०	+११।४४
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४०	राजमपेट	(आ. प्र.)	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+९।२०	हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४।५	+६।२०	+२७।४४
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०।०	+१।४	रामपुर	(यू.पी.)	२८।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९।०	+२।४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+९।४४	रामेश्वर	(तमिल.)	९।१७	७९।३४	—११।३४	+९।२०	हजारीबाद	२४।०	८५।२३	+११।३२	—३२।२७	—३२।३६
भरुच	गुजरात	२१।४१	७३।०	—३८।०	—१६।५६	रायबरेली	(उ. प्र.)	२६।१४	८१।१३	—५।८	+१५।५६	हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५।३५	८३।११	+२।४४	—२३।४८
भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	—९।८	राजमंड्रि	(आ. प्र.)	१७।५	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	होशियारपुर	(पंजा.)	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—५।१६
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+०।१६	+२१।२०	रायपुर	(म. प्र.)	२१।१५	८१।३८	—३।२८	+१७।३६	हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४३	—१९।८	+१।५६
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+०।३६	राजगढ़	(म. प्र.)	२४।०	७६।४४	—२३।४	—२।०	हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७।२७	७८।३०	—१६।०	+५।४
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	राजगढ़	(राज.)	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७।४	—६।०
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६।८	—२५।२८	—४।२४	राजनन्द गांव	म.प्र.	२१।१५	८१।५	—५।४०	+१५।१५	हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८
भावनगर	गुजरात	२१।४४	४२।१०	—४२।२०	—२०।१६	रोहतक	(हरियम)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	हिंगाटा	(उड़ी.)	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।८	—१।३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।२७पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।१०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१९।४	" ०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१३।४	" ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिर्जादीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेइचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बेंगकांक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	—५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+१।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।८
काडी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।८	+०।५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	—२।८।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।८।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।२८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	" ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	" ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।८।८	" ०।२८
काहिरा	मिस्र	३०।१उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	—२।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+४।०	" २।०	" ३।३०	—३।१२।५६	" ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।२३।४८	" ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	[illegible]	[illegible]	[illegible]	" [illegible]	" [illegible]	[illegible]	[illegible]
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+१।०	—४।३०	—३।४६।२८	+०।३८
बुढ़ापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+१६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।३६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	—६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।५४द.	१३।१५पू.	—७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।१५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	—१०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।१९।०	" ०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	—३१।३६	+१।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	—३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रू सेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+१।०	—४।३०	" ४।५१।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	—५०।४०	+१।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	—०।०	+०।०	" ५।३०	" ५।८।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	—०।२०	—०।०	" ५।३०	" ५।९।१६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	—७५।०	+१।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	—८१।२८	+१।०	" ४।३०	" ५।३०।२४	" ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	—३६।४०	—०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	—२।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।११।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	—८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।१६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	—३७।८	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिर्षियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घडी से बने पंचांग [illegible]

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला. ३
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४
३०		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सितं. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५६		३३	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		११		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिसं. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	३५	५	३२	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४
७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८
१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३
१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७
२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१
३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६
फर. ६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०
१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३
१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७
२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०
मार्च २		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३
८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६
१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४
अप्रै. २		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६
८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९
१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१
२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४
२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६
मई १		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९
७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२
१३		२५		२८		२३		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४
१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७
२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०
३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३
जून ६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६
१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८
१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०
२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९		१४		५१
३०		२४		४३		२२		४५		२०		४७		१८		५०		१६		५२

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७				अक्षांश २८				अक्षांश २९			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	१८	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४
७		४७		२६		४९		२४		५१		२२		५३		२०		५५		१८
१३		४७		३१		४९		२९		५१		२७		५३		२५		५५		२३
१९		४७		३५		४८		३३		५०		३२		५२		३०		५४		२८
२५		४५		४०		४७		३८		४९		३६		५०		३५		५२		३३
३१		४३		४४		४५		४३		४६		४१		४८		३९		५०		३८
फर. ६		४०		४८		४२		४७		४३		४६		४४		४४		४६		४३
१२		३७		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४२		४८
१८		३२		५६		३३		५५		३४		५४		३५		५३		३६		५२
२४		२८	६	०		२८		५९		२९		५८		३०		५७		३१		५६
मार्च २		२२		३		२३	६	२		२३	६	२		२४	६	१		२५	६	०
८		१७		६		१७		५		१७		५		१८		५		१८		४
१४		११		८		११		८		११		८		११		८		११		८
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१५	५	५७		१५
अप्रै. २		५१		१७		५१		१७		५०		१८		५०		१८		४९		१९
८		४५		१९		४४		२०		४४		२१		४३		२१		४२		२२
१४		३९		२२		३८		२३		३७		२४		३७		२५		३६		२५
२०		३४		२५		३३		२६		३१		२७		३०		२८		२९		२९
२६		२८		२८		२७		२९		२६		३०		२५		३१		२३		३३
मई १		२५		३०		२३		३१		२२		३३		२०		३४		१९		३६
७		२०		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		३९
१३		१७		३६		१५		३८		१३		४०		१२		४१		१०		४३
१९		१४		३९		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७
२५		१२		४२		१०		४४		८		४६		६		४८		४		५०
३१		१०		४५		८		४७		६		४९		४		५१		२		५४
जून ६		१०		४८		७		५०		५		५२		३		५४		१		५७
१२		१०		५०		७		५२		५		५४		३		५७		१		५९
१८		१०		५२		८		५४		६		५६		३		५९		१	७	१
२४		१२		५३		९		५५		७		५८		५	७	०		२		२
३०		१३		५४		११		५६		९		५८		७		[illegible]		[illegible]		[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	जुला. ३
७		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	९
१३		५७		२१		५९		१९		१		११		४		१४		६		१२	१५
१९		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२
२५		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८
३१		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	अग.४
फर. ६		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०
१२		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६
१८		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२
२४		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९
मार्च २		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	सितं. ४
८		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०
१४		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२
२६	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८
अप्रै. २		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	अक्टू. ६
८		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	११
१४		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७
२०		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३
२६		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९
मई १		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	नवं. ३
७		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९
१३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	१५
१९		४		४९		२		५१		०		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०
२५		२		५१	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६
३१		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	दिसं. २
जून ६	४	५९		५९		५६	७	१		५४		४		५१		६		४९		९	७
१२		५८	७	२		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३
१८		५९		३		५६		६		५४		८		५१		११		४८		१४	१९
२४	५	०		५		५७		७		५५		१०		५२		१२		५०		१५	२४
३०		[illegible]		[illegible]		५९		८		५७		१०		५४		१३		५२		[illegible]	

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जुला. ६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३४	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू. ३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै. ५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस. २	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१५	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के न ीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३० ।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२) ६ ०० ००

स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६ ०० ००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	० २२ ३२
किरण वक्री भवन संस्कार	० २ ००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६ २४ ३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६ ।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६ १० ००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	० २६ ४०
किरण वक्री भवन संस्कार	० २ ००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६ ३८ ४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के [illegible]

दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८ ।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अनिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रात: ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३ ।१५ अथवा १३ ।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला	घं. मि. सै.
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११ ५५ ००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५ २८ ००
	६ २७ ००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६ २७ ००
	३ १३ ३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६ ७ ३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३ ।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३ ।२७ + १६ ।०८= २९ ।३५

उपरोक्त २९ ।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९ ।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९ ।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११ ।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चोथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११ ।३७ से १३ ।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९ ।३७ में से २९ ।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९ ।३५ तक (२९ ।३५ — २९ ।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९ ।०५ [illegible]

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१४	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, राँची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२२	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मीर्जापुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, आजमगढ़, झांसी, [illegible] आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२६	२	३९	४७	५६	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	२२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशयारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१२
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१) मेष	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ
वर्ग	सिंह	"	"	मृग	"	"	"	"	गरुड़
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	उत्तर			उत्तर			वसंत		
योग	विष्कुंभ				प्रीति				आयुष्मान

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(२) वृषभ	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद

नक्षत्र				रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	इ	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वु	वे	वो
वर्ग	"	"	"	"	मृग	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	राक्षस	पूर्व	अंत्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव
पूर्ण राशि	१	१	१	१	१	१	१	१	२
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	उत्तर			उत्तर			ग्रीष्म		
योग				सौभाग्य				शोभन	

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(३) मिथुन	शूद्र	वायु	मानव

नक्षत्र			आर्द्रा-६				पुनर्वसु-७		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा
वर्ग	मार्जार	"	"	"	"	सिंह	मार्जार	"	मेष
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	पूर्व	मध्य	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मार्जार	देव	मध्य
पूर्ण राशि	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	उत्तर			उत्तर			ग्रीष्म		
योग			अतिगंड				सुकर्मा		

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(४) कर्क	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र		पुष्य-८				आश्लेषा-९			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो
वर्ग	"	"	"	"	श्वान	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	आद्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अंत्य
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	३	४
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	दक्षिण			उत्तर			वर्षा		
योग		धृति				शूल			

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(५) सिंह	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर

नक्षत्र	मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
वर्ग	उंदर	"	"	"	उंदर	श्वान	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ
पूर्ण राशि	४	४	४	४	४	४	४	४	५
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	दक्षिण			उत्तर			वर्षा		
योग	गंड				वृद्धि				ध्रुव

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(६) कन्या	वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र				हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	"	उंदर	"	"	मेष	श्वान	"	उंदर	"
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	दक्षिण			उत्तर			शरद		
योग				व्याघात				हर्षण	

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(७) तुला	शूद्र	वायु	मानव

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते
वर्ग	मृग	"	"	"	"	सर्प	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	मध्य	मध्य	महिष	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	दक्षिण			दक्षिण			शरद		
योग	हर्षण		वज्र				सिद्धि		

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(८) वृश्चिक	ब्राह्मण	वारि	कीट

नक्षत्र		अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु
वर्ग	"	"	"	"	"	"	मृग	"	"
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अंत्य	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य
पूर्ण राशि	७	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	दक्षिण			दक्षिण			हेमंत		
योग		व्यतिपात				वरीयान			

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(९) धनु	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत

नक्षत्र	मूल-१९				पू.षा.-२०				उ.षा.-२१
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा	भे
वर्ग	"	"	उंदर	"	"	सर्प	उंदर	श्वान	उंदर
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि
	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य	नकुल
पूर्ण राशि	८	८	८	८	८	८	८	८	९
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	दक्षिण			दक्षिण			हेमंत		
योग	परिघ				शिव				सिद्ध

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१०) मकर	वैश्य	भूमि	चत/जल

नक्षत्र				श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३	
चरण	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
वर्ग	"	सिंह	"	मार्जार	"	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य	सिंह	राक्षस
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	उत्तर			दक्षिण			शिशिर		
योग				साध्य				शुभ	

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(११) कुंभ	शूद्र	वायु	मानव

नक्षत्र			शत.-२४				पू.भा.-२५		
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३
अक्षर	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
वर्ग	"	"	"	मेष	"	"	"	"	सर्प
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा
	अंत्य	मध्य	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य
पूर्ण राशि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	उत्तर			दक्षिण			शिशिर		
योग			शुक्ल				ब्रह्म		

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१२) मीन	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र		उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	दी	दू	झा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	"	"	मेष	सिंह	सर्प	"	"	सिंह	"
अवकहड़ा चक्र	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	आद्य	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
सायन सूर्य	अयन			गोल			ऋतु		
	उत्तर			दक्षिण			वसंत		
योग		ऐंद्र				वैधृति			

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अत: सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभूति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

षट् वर्ग सारिणी चक्र

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.	चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
तु.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
वृ.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
म.	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
कुं.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भौंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान— प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्ववनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान— बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान— सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार— सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग— मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छंठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष— सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट— कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष— माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उत्तरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क— प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह— माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चींज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गामी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरिष्ट योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे— चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष— चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष— तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल— बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल— पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रमः	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल,	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	बिल्ली और मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै ह्रांह्रां ह्रीं ह्रीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली [illegible]काल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में घट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	गोश्रृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टाना ह्रीं हूं फट् स्वाहा

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३,४ ९,१०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षु: प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रयम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नम:॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यम:)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे॥ ॐ यमाय नम:॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्नि:)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिंजिन्वति॥ ॐ अग्नये नम:॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत: सुरूचोवेनआव: सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठा: सतश्चयोनिमसतश्चविधव:॥ ॐ ब्रह्मणेनम:॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षी साख्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्र:)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रमभुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नम:॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नम: बाहुभ्यामुतते नम: ॥ ॐ रुद्राय नम:॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐअदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्र: विश्वे देवा अदिति: पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नम:॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छवत्र सऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नम:॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्प:)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्योनम:॥ ॐसर्पेभ्यो नम:॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हव्य दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितर:)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितर: पितर: शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरम्ये नम:॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भग:)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐभगप्रणोतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्न: भगये प्रणोजनयगोभिरश्चैर्भयप्रनृभिनृवैन: स्याम॥ ॐभगाय नम:॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐदेवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नम:॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्यायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातूजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजा: पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नम:॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदध:॥ ॐ विश्वकर्मणे नम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नम:॥	१० सहस्त्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखा: (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्मिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्र:)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशथ्ठसत्॥ ॐ मित्रायनम:॥	१० सहस्त्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र थ्ठ हवे हवे सुहवथ्ठशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रथ्ठस्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्र:॥ ॐ इन्द्राय नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षस:)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥	५ सहस्त्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यथ्ठसुव॥ ॐ अदभ्यो नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठानहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवा: शृणुतेमथ्ठहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णु:)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नेप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरत्सि विष्णोर्धुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसव:)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुण:)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अघन्तु॥ ॐ अजैकपदे नम:॥	१० सहस्त्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृंङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि थ्ठ सी निन नवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	बात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नम:॥	५ सहस्त्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हडफूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोथ, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), धृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नेवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कडुवा सब प्रकार के स्वादों से युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रान्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़ियों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धुम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर	चर	चर
चर	स्थिर	द्विस्वभाव
स्थिर	द्विस्वभाव	स्थिर
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण**—जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमक्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रज्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्टस, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते है। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रसन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्याक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	**३१**	**३२**	**३३**	**३४**	**३५**	**३६**	**३७**	**३८**	**३९**	**४०**	**४१**	**४२**	**४३**	**४४**	**४५**	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**	**६०**
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	**६१**	**६२**	**६३**	**६४**	**६५**	**६६**	**६७**	**६८**	**६९**	**७०**	**७१**	**७२**	**७३**	**७४**	**७५**	**७६**	**७७**	**७८**	**७९**	**८०**	**८१**	**८२**	**८३**	**८४**	**८५**	**८६**	**८७**	**८८**	**८९**	**९०**
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था— गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र— वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा— गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो— १ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

मुद्दा दशा
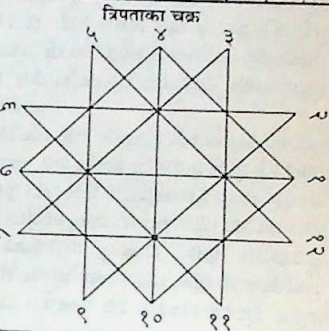
सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति— वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान— वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखता है।

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा बीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कलत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	....	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	....	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	......
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो.	अधो.	अधो.

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्ववूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह को ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२,

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। अगस्त ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ..., १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहयता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वर्क्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५५ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वर्क्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ १२	५६ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४०
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वर्क्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वर्क्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ०	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१३ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वर्क्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	५९ ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वर्क्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५६	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वर्क्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६३ ०	६३ ५	६३ १	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वर्क्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५२	६५ ५६	६५ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वर्क्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५९	६७ ५	६७ ११	६७ १८	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२ ५	१२ ४	१२ ३	१२ २	१२ १	१२ ०	११ ५९	११ ५८	११ ५७	११ ५६	११ ५५	११ ५४	११ ५३	११ ५२	११ ५१	११ ५०	११ ४९	११ ४८	११ ४७	+ +

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६० ।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६ ।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	[illegible]	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-यथा भभोग ६५ ।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२ ।०९ को और भभात् १९ ।०३ को गुणा किया (१२ ।०९)×(१९ ।०३)=२३१° ।२७' ।२७" या ३° ।५१' ।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३ ।५१ ।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७ ।०३ ।२० ।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७ ।०७ ।११ ।२७

चन्द्र गति १२ ।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

विंशोत्तरी दशा पद्धति

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	२०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (वृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	२६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अत: प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत: किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल— आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल— लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृश्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से— ४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ— सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अत: केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वाभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अत: केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग— केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल— दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**— विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**— धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**— तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**— बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**— चिंता युक्त, मानसिक दु:ख, रोगी। **शक्त अवस्था**— निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**— अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट— जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दु:ख मिलता है।

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह को शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्य मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **"ॐ नमः शिवाय"** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें।

राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु—केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)—१ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानांतर	भयं	श्री:	मानभंग	दैत्य	विजय:	मार्ग:गमन	पीड़ा:	सुक नाश	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोग:	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौम:	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोक:	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ:	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख:	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भी:	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोष:	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु:	हानि:	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:खं	वैरं	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र:	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यग्र:
भौम:	प्रणा:	धननाश	जय:	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	वाह.लाभ	पुत्र: प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोक:
शुक्र:	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भी:	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनि:	बातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्रपीड़ा	जय:	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्म हानि	विजय:	सुलाभं	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभ:	शोक:
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभ:	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म: १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीड़ित:	अपुत्र:	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतित:
बुध:	विद्वान्	धनी	दुर्जन:	सुखी	मंत्री	दु:शील	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्मग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्म हानि	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दु:खार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौम:	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दु:खार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३¼	¼	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति, कला, विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९- १०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी— चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा निषिद्ध है। (मुहूर्त मार्तण्ड)।

बुध
१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत
ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र
पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००
शुक्र
१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धेनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. घृत
पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश
भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००
चंद्र
१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख
आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश
आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००
गुरु
१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन
उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव
आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००
रवि
१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण
मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस
गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००
मंगल
१. प्रवाल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कणहेर
९. वृषभ
द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र
रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००
केतु
१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र
वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश
जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००
शनि
१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र
प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र
मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००
राहु
१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंभ्रक
नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश
पठानसगोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००

ग्रहाः	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यश्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह
प्रहर	१	४	३	१	१	१
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक

राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

यस्य स्मृत्वा . . .

यन्मात्रा बिन्दु बिन्दु द्वितय द्वय पद द्वन्द्व वर्णादि
विहीनं, अत्याऽत्याऽनुपूर्वं प्रकृतिवशगुणाद्
व्यक्तमव्यक्तमम्ब। मोहादज्ञानतो वा पठित-
-मपठितं साम्प्रतं तेऽस्तवेऽस्मिन्, तत् सर्वं
साङ्गं मास्तां भगवति वरदे त्वत्प्रसादात्प्रसीद ।

पटल पा० 6

प्रभातकुवेतो

5—191
४-212
~~२-215~~
२·192

मि. में २३ घ. ५६ मि. जोड़ ... घटाने पर २२ घ. २५ मि. मिले, जो ३० अगस्त को मेष लग्न का समाप्ति-काल है।

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचांग में गत पृष्ठ , पर दैनिकलग्नसारणी दी गई है जो चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टें.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टें.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :— दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे—मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्ति काल १२ घं. ० मि. है, यह हम ने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १९ मि. मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा.स्टें.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	−१	०	−४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	−२	−५	−६	−६	−३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	−१	−४	−८	−११	−१२	−१२	−९	−६	−२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	−१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	−१	−४	−८	−११	−१३	−१३	−९	−६	−२
उज्जैन	+१९	+२१	+१९	+१३	+६	−१	−८	−१३	−११	−४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	−२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१९	+२२	+२०	+१४	+५	−३	−१०	−१५	−१३	−६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	−१	−२	−२	−२	−१	−१	०
कलकत्ता	−३२	−२८	−३०	−३६	−४५	−५३	−६०	−६५	−६३	−५९	−४७	−४०
कांगड़ा	०	−१	−१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	−६	−५	−६	−९	−१३	−१७	−२२	−२४	−२३	−१९	−१५	−११
काशी	−१५	−१३	−१४	−१८	−२४	−२९	−३४	−३७	−३६	−३१	−२५	−२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	−१	−१	−१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	−५	−८	−७	−२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	−२	−४	−५	−५	−३	−१	+१
गुरदासपुर	+३	−२	−२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	−१८	−१७	−१८	−२१	−२५	−२९	−३४	−३६	−३५	−३१	−२७	−२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	−४	−९	−१३	−१६	−१५	−११	−६	−२
चम्बा	−१	−२	−१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−३	−५	−४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जींद	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	−१	−१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	−३	+५	+४	०	−६	−११	−१६	−१९	−१८	−१३	−७	−२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	−१	−३	−५	−६	−६	−४	−२	०
देहरादून	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−५	−५	−५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	−७	−१३	−२६	−३१	−२९	−२०	−११	−२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	−८	−७	−८	−९	−१०	−१२	−१३	−१४	−१४	−१२	−११	−९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	−२४	−२२	−२३	−२७	−३२	−३८	−४२	−४५	−४४	−३९	−३४	−२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	−११	−९	−१०	−१४	−१९	−२४	−२९	−३१	−३१	−२६	−२१	−१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	−८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३९	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	−४	−१०	−८	+३	+१४	+२५
बरेली	−६	−६	−७	−८	−१०	−१२	−१४	−१५	−१५	−१३	−११	−९
बंगलोर	+२९	+३३	+३०	+१७	०	−१६	−३२	−४०	−३७	−२२	−९	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	−२	−४	−६	−८	−९	−९	−७	−५	−३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	−२	−६	−९	−११	−११	−७	−४	०
भुवनेश्वर	−१८	−१४	−१६	−२४	−३४	−४४	−५४	−५८	−५३	−४८	−३८	−२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	−१	−८	−१५	−२०	−१८	−११	−४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	−११	−२७	−४३	−५१	−४८	−३३	−१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	−२	−६	−९	−१०	−१०	−७	−४	०
मण्डी(हि.प्र.)	−२	−३	−३	−२	−१	०	+२	+२	+२	+१	०	−१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	−१	०	−१	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	−२	−३	−३	−१	+१	+२
लखनऊ	−९	−८	−९	−१२	−१५	−१९	−२३	−२५	−२४	−२०	−१७	−१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	−२	−२	−२	−२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−२
श्रीनगर(का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	−१	−१	−१	−२	−२	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−२
हरिद्वार	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−७	−७	−७	−६	−६	−५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	−५	−१७	−२९	−३५	−३३	−२२	−९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

१०

लघु दैनिक लग्न-सारणी

सारणी नं. (१)

मास	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन.
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन.	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।३०	३।५२	६।१२	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४४
फर.	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४९	४। ९	६।१४	७।५५	९।२०	१०।४२
मार्च	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	२।१९	४।२४	६। ५	७।३०	८।५२
अप्रैल	८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	०।१७	२।२२	४। ३	५।२८	६।५०
मई	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
जून.	४।२३	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२८	२।५०
जुला.	२।२५	४।२०	६।३४	८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२। १	२३।२६	०।५२
अग.	०।२३	२।१८	४।३१	६।५४	९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७
सितं.	२२।१७	०।१६	२।३०	४।५२	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५
अक्टू.	२२।१९	२२।१४	०।३२	२।५४	५।१४	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४७
नवं.	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।५२	३।१२	५।३०	७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५
दिसं.	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	१।१४	३।३२	५।५४	८।१४	१०।१८	११।५९	१३।२४	१४।४७

इस पृष्ठ पर दी गई इन दो सारणियों से चण्डीगढ़ में किसी भी तारीख को किसी भी लग्न का समाप्ति-काल (भा. स्टै. टा.) सरलता से जाना जा सकता है। विधि इस प्रकार है :—

जिस महीने में किसी लग्न का समाप्ति-काल जानना है, सारणी नं. १ में उस महीने के आगे अपने अभीष्ट लग्न के नीचे लिखे घण्टा-मिनट उठाएं। उनमें से अभीष्ट तारीख के आगे सारणी नं. (२) में लिखे घं. मि. घटा दें, बस आप के अभीष्ट लग्न का समाप्ति-काल मालूम हो जाएगा। यहां यह ध्यान में रखें—यदि सारणी नं. २ से लिए गए घं. मि. से सारणी नं. १ से लिए गए लग्न के घं. मि. कम हों तो लग्न के घं. मि. में २३ घं. ५६ मि. जोड़ लेने चाहिएं। स्पष्टता के लिए नीचे दो उदाहरण दिए गए है।

सारणी नं. (२)

तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.
१	०। ०	७	०।२४	१३	०।४७	१९	१।११	२५	१।३५
२	०। ४	८	०।२८	१४	०।५१	२०	१।१५	२६	१।३९
३	०। ८	९	०।३२	१५	०।५५	२१	१।१९	२७	१।४२
४	०।१२	१०	०।३५	१६	०।५९	२२	१।२३	२८	१।४६
५	०।१६	११	०।३९	१७	१। ३	२३	१।२७	२९	१।५०
६	०।२०	१२	०।४३	१८	१। ७	२४	१।३१	३०	१।५४
								३१	१।५७

उदाहरण (१)—२२ अप्रैल को तुला लग्न का समाप्ति-काल जानिए। सारणी नं. (१) में अप्रैल के सामने आगे तुला के नीचे २१ घं. ५३ मि. लिखे हैं। इनमें से सारणी नं. (२) में २२ तारीख के आगे लिखे १ घं. २३ मि. घटाने पर २० घं ३० मि. तुला लग्न का समाप्ति-काल निकल आया।

उदाहरण नं. (२)—३० अगस्त को मेष लग्न का समाप्ति-काल मालूम कीजिए। सारणी नं. (१) में अगस्त के आगे मेष के नीचे ० घं. २३ मि. लिखा है। सारणी नं. (२) में ३० तारीख के आगे १ घं. ५४ मि. है। ० घं. २३ मि. में से १ घं. ५४ मि. घट नहीं सकते, अतः ० घं. २३ मि. में २३ घ. ५६ मि. जोड़ [illegible] २२ घं. [illegible] मि. मिले, यो ३० अगस्त को मेष लग्न का समाप्ति-काल है।

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल	योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१	४	३	१	१	१	प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिर्विशाकरधातुहेम प्रवालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्य विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्वदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्मार्कसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। विशेष—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अत: गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अत: हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन	श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा	अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले.	रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग.	रेव., अनु., अश्वि., पुन. पुष्य	रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव.	श्रवण रोहिणी स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अत: कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तान्नोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोनयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—"**प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा**" तथा "**पुंसवनवत्**" कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। *मन्त्र*—ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलत: दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षो में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मू., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मू., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

४. वेध—पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र—विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल—विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह—विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्यक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य—जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि—जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार—लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भठिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)—रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना—आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष—दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु—जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु—जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु—जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार—जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

नेष्ट रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र— जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र— जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न— हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त— विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त— विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ— कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त— व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण,. देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**— वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**— राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी म एक गुण जानें।

३. **तारा**— वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**— राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**— राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**— राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**— वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**— अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम्, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दाक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गण

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ७ ९ ६ ८

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

भाग-१

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१८॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १.३.४.०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १.४	१९॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले. ४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा. ४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा. १	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा. ३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह. ४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	११॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तथा नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। जिनका अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) और योनी में (२) लिखे हैं।

भाग-२

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

↓ कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.फा	उ.फा	उ.फा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा	उ.षा	उ.षा.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.भा	पू.भा	उ.भा.	रे.
	चरण	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	२४॥ -६	२५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३६०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१४॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
(वध)	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि	शत.	पू.भा.	उ.भा.

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्
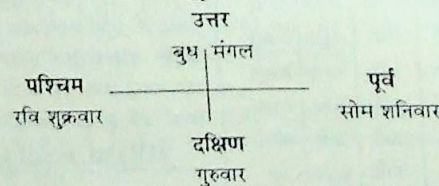
दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।
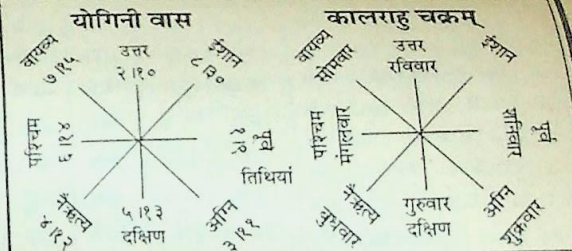
दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्त्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	राई	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पृ.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कंर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

विडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अधिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमे बाण ५ षट् याश्चसप्तमे रुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम १४श्चैव चतुर्विशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.गु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहृतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

वाणिज्य कर्म — अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त — अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना — आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना — ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त — अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम् — अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल. श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह. शुक्र, वारेषु २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेषु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होप में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरेहणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

•अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालर्विभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि.। गयायामर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना— स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त— अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त— चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त— तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना— उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त— विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त— अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

योवेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः
तस्य प्रकृति लीनस्य यः परः स महेश्वरः

नाम मुहूर्त			
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त			... कुम्भ लग्न को ... ११वें शुभ ग्रहों
			... ग्न में रहते ८,
पुंसवन मुहूर्त			... र हस्त नक्षत्र ... न मिले और
सूतिका स्ना...			... ी। चर तथा
नामकरण			... त्रा, स्वाति,
स्तनपान			... १ से कृष्ण
कर्ण वेध	७, ... १३, ...		
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	बुध गु.शु.	२।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०व हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र.गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु.प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू.च. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं.बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	मृ.मं. गु.शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	मृ.मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषोपि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बु.गु.शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबैल	शुभ	बु.गु. शु.चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

...			... ८।
... सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	मृ.मं. गु.शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	मृ.चं. बु.गु.शु.	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकदमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र.बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध वृह शुक्र वारेषु २. ३. ५. ७. १०. ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अ... का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, ...
चन्द्र बुध, बृह ...
तिथिषु शु...

आं...
स्वाति, ३...
शुक्र वारे...

अ...
श्रवण, ...
१३, ति...

मूल ...
शुभस्...

वारेषु...

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होप में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, ...

... पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षण:॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेष:। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णय:। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषत:॥ इति॥

गयाश्राद्धकाल:॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्मे के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययो: दुर्लभत्रि.। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षण:। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयो:॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च वृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना — स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त — अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त — चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, ... श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों ... मंगलवार छोड़कर ... न में वसीयतनामा ...

...र्त — तीनों उत्तरा, ...ी, अश्विनी, चित्रा, ...रोक्त सूर्य बली हो ...

...रु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों ... स्वामी, तात्कालिक ... शुभ है। चैत्र मास, ... में अशुभ है इसलिए ...गशिरा, रेवती, चित्रा, ...७, ८, ११ राशि की ..., ६, ११वें शुभ राशि ..., ११वें स्थान में पाप ... हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

... का मुहूर्त — विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त — अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन. हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु. रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू.म. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु.भु. चं.गु.	अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु.शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु.शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र.गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु.प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू.चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआं पूजा	शुभ	चं.बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू.म. गु.शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू.मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषेधि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बुगुशु	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबेल	शुभ	बु.गु. शु.चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू.चं. बु.गु. शु.श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु.गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बुगुश.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू.बु. गु.शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.मं. गु.शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू.चं. बुगुशु	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकदमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र.बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियमः— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी बार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गौविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गौविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्ट्य (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२— जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें श्रृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मृदु उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्‌भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृषिट न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकदमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा—प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शीक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३
भरणी	५	प्रीति	१२
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९
मृगशिर	४	शोभन	३६
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८
पुष्य	३६	धृति	४४
अश्लेषा	३६	शूल	१३
मघा	१५	गंड	२५
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२
हस्त	१८	व्याघात	२५
चित्रा	२५	हर्षण	२५
स्वाति	१४	वज्र	१४
विशाखा	२४	सिद्धि	२२
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९
मूल	१८	परिधि	१५
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९
श्रवण	२५	साध्य	१२
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्महू	१३
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७
रेवती	२८	वैधृति	२६

वस्तु	ध्रुवा
धान्य	७७
कनक	१००
ज्वार	१३३
मूंग	४१
चणा	३५
झोना	७५
तोरी	७७
तेल	३९
घृत	९९
खाण्ड	९९
गुड़	४७
शक्कर	१०१
कपास	१२९
रुई	४४
कांस्य	३७
वस्त्र	१०९
स्वर्ण	९६
हल्दी	७३
चंदन	१८७
चांदी	८१
मिर्च	६८
पित्तल	९९
जौ	५०७
कस्तू.	१३४

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००
राशि	**ध्रुवा**
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४
तिथि	**ध्रुवा**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जर्मीकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अत: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अत: यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अत: केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अत: इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्मे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्मे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

3. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्मे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।

७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।

३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकदमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विश्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नही लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं हैं।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

30. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

31. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कूआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

32. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

रमल प्रश्नावली

इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बना कर उस पर १, २, ३, ४ और खुदवा लें, फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें उसका जो नम्बर बने, उसी नम्बर पर फल देखें यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अनामिका अंगुली रखवा कर उसका फल देखें।

१११	१३१	२११	२३१	३११	३३१	४११	४३१
११२	१३२	२१२	२३२	३१२	३३२	४१२	४३२
११३	१३३	२१३	२३३	३१३	३३३	४१३	४३३
११४	१३४	२१४	२३४	३१४	३३४	४१४	४३४
१२१	१४१	२२१	२४१	३२१	३४१	४२१	४४१
१२२	१४२	२२२	२४२	३२२	३४२	४२२	४४२
१२३	१४३	२२३	२४३	३२३	३४३	४२३	४४३
१२४	१४४	२२४	२४४	३२४	३४४	४२४	४४४

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनोकामना तुम्हारी।
११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे।
११३ होत काम में हुआ अंधेरा, बैरी पहुंच गया है तेरा।
११४ झटपट करो देर नहीं लाओ, यह अवसर फेर नहिं पाओ।
१२१ जो तुम मन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई।
१२२ आगे विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी।
१२३ संकट हटे सवं सुख आया, दिन-दिन दुगुनी बढ़े माया।
१२४ वा शुभकाम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती।
१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास जाय तू जिसके।
१३२ होगी फतेह देर नहि लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ।
१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरू गोविंद से ध्यान लगाओ।
१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीखे नहिं म्हाने।
१४१ विपत्तियां बीत गयीं सब पाछे, अब तो दिन आवेंगे आछे।
१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है बैरी।
१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई।
१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये धारी।
२११ जर जमीन होवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवै।
२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई।
२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, तिगरी लाग रही है धारी।
२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा।
२२१ कितना ही गुणकर मनमाही, यश तुमको मिलने का नाहीं।
२२२ होगी फतह देर नहि लाओ, रविवार को व्रत बनाओ।
२२३ संकट देखि डरे क्यों भाई, ईश्वर धारी करे सहाई।
२२४ धर्म हार धन कोई खाओ, मन अपने में क्यों घबराओ।
२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई।
२३२ रस्ते में जो भूखा टोहवो, भोजन के देके सोवो।
२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धन धनी बना वही नाथ।
२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं।
२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले।
२४२ धीरज धरि रहो उर माही, गई वस्तु घर आवे नाहीं।
२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही धारी करे सहाई।
२४४ उदय पाप हो गये अब सारे, कर्म विपाक देखिल्यो धारे।
३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रही है वैरी।
३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, कर ले जाप नहीं दुख भरना।
३१३ जो तुम मन में नई उपाई, होगा काम ढील से भाई।
३१४ करि कुछ दान वचन सुन मेरा, संकट दूर हो गया तेरा।
३२१ यो तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई।
३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटै होय सुखदाई।
३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए।
३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखै लाज सदाई।
३३१ जस तुमको मिलना नहिं भाई, चाहे जितनी करो भलाई।
३३२ कर ले काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना।
३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे, नित नये मंगल मोद भरोगे।
३३४ जिस नर की तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वासा।
३४१ तुम जानो अपना सा मन की, बुद्धि बदलि रही उस तन की।
३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं, घात ग्रह बिन होता नाहीं।
३४३ करिले यतन काम है तीका, अब तो फिक्र मिटेगा जीका।
३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट वेग नशाई।
४११ चुपका बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं।
४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई।
४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई।
४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई।
४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई।
४२२ अपना मन में तुम्हीं विचारो, भूलि गये सो बेगि संभारो।
४२३ ये है दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाय लेय छुटवाई।
४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे अनआया।
४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना।
४३२ वो तेरी सब भली करेगा, उस ही से सब काम सरेगा।
४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होते सुखदाई।
४३४ धीरज धरो फिक्र तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो।
४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे।
४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा।
४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकी करो मनुहारी।
४४४ ठहर-ठहर कर जागें जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत्॥ सायंकाले वदेन्द्यः रात्रौतु देवतां वदेत्॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खग	गज	ध्वांग	ध्वजादि अष्टकवर्गाः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी रदनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्ति	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	साधमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखदि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चोर जाति प्रश्न ज्ञानम्
उखल	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय गति प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्य सिद्धि भविष्यति नवा
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१००वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन-लाभ प्रश्न लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

।मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम्।

लग्न	मनश्चिन्तित प्रश्नः	रोगिणां प्रश्नः
मेष	मानवीय जीव की चिन्ता	दैवीय कुल दोषः
वृषभ	चौपाये जीव पशु की चिन्ता	पितृ अतृप्ति दोषः
मिथुन	गर्भस्थ संतान की चिन्ता	शाकिनी-डाकिनी दोषः
कर्क	व्यवसाय की चिन्ता	भूत पिशाचादि दोषः
सिंह	नभचर, थलचर जीव	स्वकुलीय मात्र दोषः
कन्या	दाम्पत्य सुखोपयोग चिन्ता	स्वकुलीय देव दोषः
तुला	गुप्त दिये गये धन की चिन्ता	कुपित चण्डिका दोषः
वृश्चिक	दैहिक और भौतिक क्लेश	मृत्वत्सा नारि दोषः
धनु	धनोपार्जन की चिन्ता	यक्षिणी व पिशाचिनी दोषः
मकर	शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता	स्थान व ग्राम देव दोषः
कुम्भ	स्वकीय जायदाद की चिन्ता	अपुत्री कुलटा स्त्री दोषः
मीन	देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता	आकाश गामी वायु प्रकोप

श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्राय: सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे। अत: नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर-फलों का उल्लेख कर दिया जाता है। श्रीरामशलाका प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है—

सु	प्र	उ	बि	हो*	मु	ग	व	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रें	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	इ	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म*	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	इ	ह	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	जी	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	के	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	ष	म	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	न	न	को	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	:	न	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	हिं	र	त	न	ष	ा	ज	ा
र	सा	ा	ला	धीं	ा	री	जा	हू	हीं	पा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अँगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाय। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लेना चाहिए। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर क्रम से लिखते जाना चाहिए और तब तक लिखते जाना चाहिए, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायगी, जो प्रश्नकर्त्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी-किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी-किसी कोष्ठक में दो-दो अक्षर हैं। अत: गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिए और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिए। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिए और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिए।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई प्रदर्शित कर दी है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'हो' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रखी और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तरस्वरूप यह चौपाई बन जायेगी—

हो इ हैं सो इ जो रा म र चि रा खा। को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा खा॥

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्त्ता को इस उत्तरस्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिए कि कार्य होने में सन्देह है, अत: उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयस्कर है। इस चौपाई के अतिरिक्त श्रीरामशलाका प्रश्नावली से आठ चौपाइयाँ और बनती हैं, उन सबका स्थान और फल सहित उल्लेख नीचे किया जाता है। कुल नौ चौपाइयाँ हैं—

- **सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है।
  फल—प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।
- **प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा॥**
  स्थान—यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान्‌जी के लङ्का में प्रवेश करने के समय की है।
  फल—भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।
- **उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में श्री सीताजी के सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
  फल—इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।
- **बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥**
  स्थान—यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग-वर्णन के प्रसंग की है।
  फल—खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।
- **मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।
  फल—प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।
- **गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥**
  स्थान—यह चौपाई श्रीहनुमानजी के लङ्का में प्रवेश करने के समय की है।
  फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है, कार्य सफल होगा।
- **बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहुँ न धीरा॥**
  स्थान—यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।
  फल—कार्य पूर्ण होने में संदेह है।
- **सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।
  फल—प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं, जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय सन्निहित हैं।

अंक क्या है

भारत संसार को ब्रह्मा की कृति मानता है। ब्रह्मा क्या है? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए वेद पुराण, उपनिषद् और दर्शन अस्तित्व में आए, फिर भी हम आज तक उस ब्रह्मा की केवल आभासिक सत्ता या कार्य को देखकर कारणगत अनुमान तक ही पहुंच सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि ब्रह्म हमारे लिए अज्ञात रहा, अगर अज्ञात रहता तो इतना विवेचन किसका होता? किन्तु समस्या यह रही कि ब्रह्म को जान लेने के बाद ब्रह्मज्ञ व्यक्ति स्वयं ब्रह्मरूप हो गया और उसने ब्रह्म को वाणी या ज्ञान का विषय मानने से मना कर दिया, अर्थात् ब्रह्म शून्य है। शून्य अपने आप में अपरिभाषित है, किन्तु वह इस दृश्य जगत के विस्तार का कारण बनता है यह भी सुविदित सत्य है।

हमारी यह दार्शनिक सूक्ति विज्ञान की परिभाषा पर कसने से भी कोई व्यतिक्रम या असंगति नहीं होती। हमने ब्रह्म को अगोचर, निष्क्रिय और रूप-आकार रहित माना। यह बात आज भी हमारे आस-पास है और विज्ञान भी इसे स्वीकार किए बिना नहीं चलता। संसार में ऐसा कोई पदार्थ है ही नहीं जिसमें शून्य न हो, दैत्याकार पहिये में भी शून्य है, उसका केन्द्र भाग शून्य है, निष्क्रिय भी और रूपाकार रहित भी। इस बिन्दु के बिना गति संभव नहीं और यह बिन्दु (केन्द्रस्थ शून्य) न देखा जा सकता है, न जाना जा सकता है। हां परिणामों को देखकर इसकी कल्पना ही की जा सकती है और वही हम लोग करते आयें हैं, वही विज्ञान करता है, विज्ञान का अनन्त ब्रह्म के विराट किंवा अपरिमेय स्वरूप को बताता है तो चक्र के केन्द्र में स्थित बिन्दु इसको सूक्ष्मतम अवस्था में जानने की बात कहता है। इसी सत्य को हमने अणोरणीयान् और महतो महीयान् के रूप में कहा है।

ब्रह्म के यों तो अनन्त स्तर और व्यवहार (कारण रूप) हैं, किन्तु हम यहां उसके कुछेक आयामों को विचार का विषय बनाते हैं जिससे हमारे विषय का दार्शनिक अतएव मूल विश्लेषण समझ में आ सके। ब्रह्म का अर्थ होता है ब्रह्मणशील अर्थात फैलता अथवा विस्तार पाता हुआ। ब्रह्म का निष्क्रिय स्वरूप किंवा शून्य का गुणाकार रहित अस्तित्व जब प्रेरक रूप में अपनी ही शक्ति को विस्तृत करता है तो वह सत्, चित, अतएव आनन्दमय शून्य विविध प्रकार के पदार्थों का जन्मदाता बन जाता है। इस सत्य को हम इस प्रकार भी कह देते हैं — ब्रह्म स्वयं विस्तृत होने लगता है। विष्णु की नाभि से निकले कमलनाल पर विराजमान ब्रह्मा का प्रतीक चित्र क्या इस तथ्य का प्रतिपादन नहीं करता कि गति के केन्द्र में स्थित शून्य ही गति का कारक है, वह निष्क्रिय होकर भी गति को प्राणवान् बनाता है।

इस शून्य और गुणातीत के ज्ञानगम्य विस्तार को व्यक्त करने का माध्यम क्या हो? या क्या रहा होगा? यह दूसरा प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस विस्तार को ब्रह्म की ब्रह्मणशीलता को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए शब्द के अलावा कोई माध्यम नहीं दिया जा सकता था। इसका भी कारण था — शून्य में जो विक्षोभ होता है या ब्रह्म की क्रियाशीलता की जो पद्धति है उसमें नाद प्रारम्भिक स्तर है और वही नाद आगे चलकर शब्दों के रूप में विकीर्ण-प्रसृत होता चला जाता है। यही एक कारण है कि संसार के समस्त दार्शनिकों ने शब्द को ब्रह्म का स्वरूप मानकर मुक्ति का प्रतीक कहा है।

यों शब्द या भाषा का इतना विस्तृत क्षेत्र है कि हम संख्या को भी शब्दों में लिख सकते हैं तथा अंकों के लिपिगत स्वरूप के अलावा उच्चारणगत रूप में वे शब्दों को ही अपना माध्यम बना सकते हैं, अर्थात् जिस प्रकार संकेतों में संख्या का अपना एक स्वतंत्र संसार है, उस तरह का स्वतंत्र व्यक्तित्व उनके बोलने में नहीं है। इस तथ्य को हम ऐसे कह सकते हैं कि जिस तरह लिखने में संख्याएं भाषा में एकरूप न होकर भिन्न दिखाई देती है उस तरह बोलने में इनके विशिष्ट संकेत नहीं हैं।

एक विचित्रता और है कि प्रकृति ने ब्रह्म के इस विस्तार को शब्दों के जितने स्तर और स्वरूप दिये हैं वे सारे अक्षर (शब्द) संसार के विभिन्न प्राणियों को दे दिए, जैसे कोयल को 'कू', कुत्ते को 'हू', या गाय को 'मां', किन्तु विश्व के किसी भी प्राणी को उसने संख्या नहीं दी। यह भी समानान्तर तथ्य है कि मनुष्येत्तर प्राणी संख्या के महत्त्व और क्षेत्र से अपरिचित है। क्या हम इसे मनुष्य जाति का सौभाग्य और अति विकसित स्तर नहीं मान सकते कि वह संख्या को जानती भी है, और समझती भी है?

प्रकृति ने प्राणिवर्ग को शब्दावली देते समय दूसरे प्राणियों को संख्या-बोध न देकर मनुष्य के साथ पक्षपात क्यों किया अथवा हम आज तक संख्या के लिए भाषागत शब्दों से भिन्न ध्वनियां क्यों नहीं खोज सके? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर में भारतीयों के गहन चिन्तन के निष्कर्षों को और आस्तिक बनकर प्रकृति के लीला-विलास को समझना व मानना होगा।

वस्तुत: शब्दावली एक परिणाम है और संख्या एक क्रिया है। व्यवहार में हम एक या दो या पांच जैसी संख्याएं बोलते हैं। वे किसी घटक या आवृत्ति की पूर्णता की सूचक हैं, क्योंकि संख्या में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया जैसा भेद नहीं है। शब्दशास्त्रियों द्वारा विभाजित नाम और आख्यात जैसे भेद नहीं है, अत: हम संख्या-सूचक अंकों को ही क्रिया और परिणाम मानने के लिए विवश हैं।

हमारे घर में जल रहा बिजली का बल्ब या चल रहा पंखा असल में परिणाम है, क्रिया तो तरंगों में हो रही है। यह दूसरी बात है कि क्रिया की परिणति भी क्रिया में ही हो रही है। संसार का अर्थ शरणशीलता है, एक ब्रह्म के सिवा सभी कुछ तो चंचल है, गतिशील है, क्रियावान् है। ऐसी स्थिति में यदि क्रिया का विपाक भी क्रिया ही हो तो क्या आश्चर्य है?

मनुष्य की प्रखर विचारशीलता ने उस पर गणित के रहस्य प्रकट किए या उसकी अतृप्त जिज्ञासा शब्द से भिन्न अंक के क्षेत्र और दिगन्तों तक जा पहुंची। यह उसका पुरुषार्थ और भाग्य दोनों का समन्वित फल है। मूलत: प्रकृति संख्या के स्तर पर कार्य करती है किन्तु संख्या भी एक, दो या चार-पाँच के रूप में नहीं बल्कि वृत्त और कोण के रूप में याने ज्यामितीय स्तर पर वृत्त बिन्दु का प्रतीक है जो संख्या में शून्य का बोध कराता है और कोण संख्याओं का। हम जानते हैं कि बिन्दु का विस्तार त्रिकोण में होता है, बिन्दु या वृत्त या प्रतीक के रूप में शून्य का अपने आपमें कोई अर्थ नहीं हुआ करता। वह संख्याओं के साथ जुड़कर ही अपनी शक्ति एवं व्यक्तित्व को प्रकट कर पाता है, इसलिए शून्य संख्या ही नहीं बिन्दु के रूप में ध्वनि का भी मूल रूप है। माना शून्य का स्वयं में कोई अर्थ या महत्व नहीं, पर उसमें संख्याओं को सृजन करने की अद्भुत क्षमता है, इस तथ्य को अस्वीकारा नहीं जा सकता।

ऊपर हम कह आए हैं कि जिस तरह बल्ब और पंखे विद्युत की क्रिया के परिणाम हैं, उसी तरह भाषा प्रकृति के परिणामों को सहेजती है, उसकी क्रिया के कार्यों को अभिव्यक्ति देती है, प्रकृति की क्रियामयता को वह अभिव्यंजना नहीं दिया करती। यह बात प्रथम दृष्टि में हमें विरोधाभास कराती है किन्तु थोड़ा गहराई से चिन्तन करने पर हम इससे सहमत हो सकते हैं।

आशय यह कि प्रकृति ज्यामितिय आकृतियों में काम करती है यानी प्रकृति का क्रियापरक रूप कोण और वृत्तमय होता है। ज्यामितिय संख्या से भिन्न नहीं है भले ही हम ज्यामितिय को सम्पूर्ण रूप से अंकगणितीय रूप न दे सकें पर ज्यामितिय को अपनी स्पष्ट अभिव्यंजना के लिए अंक का सहारा लेना ही पड़ता है। त्रिकोण में त्रि के रूप में जो संकेत है वह संख्या ही है।

अंक क्या है?

अंक का शाब्दिक अर्थ है-चिह्न। अमरकोशकार द्वारा 'कलंकांकौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्ष्मणम्' अंक, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्म, लक्ष्मण, कलंक ये एक दूसरे के पर्याय हैं। यह भिन्न बात है कि परमार्थत: एवं व्यवहार में हम इन सारे शब्दों को अलग-अलग परिस्थितियों में प्रयोग करते हैं। अंकों के लिए दूसरा शब्द संख्या है

जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक् आख्यान। ये दोनों शब्द गणित या गणना से स्पष्ट होते हैं अन्यथा अंक शब्द को तो हम संख्या के पर्यायवाचक के बिना भी प्रयोग में लाते हैं। गणित की आधारभूमि देने से ये शब्द अपना वास्तविक परिप्रेक्ष्य प्रकट कर देते हैं, क्योंकि गणना एक समग्र क्रिया की, आवृत्ति के सम्पूर्ण क्षेत्र की, किंवा एक पूरे घटक की होती है। गणना शब्द ही इस अवस्था को सूचित करता है।

संख्या के रूप में ये एक, दो, दस, हजार जैसे अंक वास्तव में संकेत है और यह संकेतात्मकता ही इनकी शक्ति है। भाषा एवं शब्द प्रतीक बोध पर चलते हैं और अंक संकेत विधि से कार्य करते हैं। शब्दों में कोई भी शब्द ऐसा नहीं जो संख्या के संकेत जितने बड़े क्षेत्र को व्यक्त कर सके। 'राम' जैसे संज्ञा शब्द, 'वह' जैसे सर्वनाम 'अथवा' जैसे अव्यय और 'जाता' है, जैसे क्रिया पद अपनी विशेष सूचकता के कारण हमारे व्यवहार और सम्प्रेषण को पूर्ण बनाते हैं, फिर भी संकेतों की विश्वजनीनता ज्यामितीय सत्य है। प्रेयसी से रमण करने की इच्छा करने से प्रेरित प्रेमी का संकेत सारे संसार में एक है तो क्रोधाविष्ट का आक्रामक स्वरूप भी सार्वजनीन संकेत है। इस दृष्टि से संकेत का क्षेत्र सीमित रहकर भी अपनी व्यापकता की दृष्टि से अधिक विस्तृत और समर्थ रहेगा।

यों तो भाषा भी एक अभिव्यक्ति के रूप में निर्दोष है। किन्तु तदपि वह अपनी प्रतीकात्मकता के कारण गाली बन जाती है या किसी को रुष्ट करने का कारण बन जाती है। इसी का दूसरा पक्ष यह भी है कि भाषा की शब्दावली से कोई व्यक्ति प्रसन्न भी हो सकता है और अपने को मोहग्रस्त भी कर सकता है, जबकि संख्या अपनी संकेत शक्ति के कारण तटस्थ रहा करती है। जब तक संख्या हमारे प्रसंग को ग्रहण नहीं करती तब तक वह निःसंग रहती है। सड़क पर एक छपा हुआ पन्ना पड़ा है, उसके एक तरफ संयोजित अतएव प्रसंगवद्ध कोई वक्तव्य छपा हुआ है और दूसरी तरफ कोई संख्याओं का जाल मुद्रित है। इस पृष्ठ के दो भागों भाषा एवं संख्यामय भागों को पढ़कर हम यह स्वीकार करेंगे कि एक पृष्ठ के प्रसंग से हम अनजान होकर भी जुड़ सकते हैं, यानी वह प्रतीक बोध हम तक सरलता से आ जाया करता है, जबकि संख्याए हमारे तक नहीं आतीं, उनके प्रसंग से हम सहसा परिचित नहीं हुआ करते। यह विचित्रता तब और बढ़ जाती है जब भाषा की रचना यानी एक वाक्य का संयोजन निरर्थक हो सकता है या एक शब्द भी केवल अक्षरों का संयोजन मात्र हो सकता है। जैसे आकाश के लिए हाथियों की खुर मात्र उपयोगिता नहीं है, ऐसे वाक्य अथवा 'तुखो' जैसे शब्द निरर्थक हो सकते हैं पर संख्या का कोई भी संयोजन निरर्थक नहीं हुआ करता। उसकी क्रमिकता और निःसंगता अपने में सार्थक है।

अपने व्यवहार में हम संख्या के चमत्कार से प्रतिदिन आमने-समाने हुआ करते हैं। उच्च गणित के विद्यार्थी जानते हैं कि गणित की अनन्तगामिता ही उसका रहस्य है और शक्ति भी है।

परिवार नियोजन की आवश्यकता आज भी हमारे लिए राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत है, क्यों? क्योंकि हम गणित के रहस्य एवं शक्ति से परिचित हैं, अन्यथा समुद्र में रहने वाली मछलियाँ, जंगल में उगने वाली वनस्पति, शहरों में फैलने वाली कुत्तों की वंशावली, ये सब अपने अनर्गल विस्तार से भय नहीं करते, वे पूर्णतया प्रकृति के खिलौने हैं, दास हैं।उनके क्रिया-व्यवहार में कहीं भी, किंचित् भी स्वामित्व का भाव नहीं है। इसके विपरीत मनुष्य अपनी सतत साधना, विकसित चेतना और उर्वर कल्पना-शक्ति के कारण अपवाद के रूप में ही दासवत् व्यवहार किया करता है। मनुष्य का यह ज्ञान-विज्ञान कभी-कभी उसे अस्वाभाविक भी बना दिया करता है।दो, ढाई, तीन, चार फुट के बच्चों का औसत लेकर नदी के जल का औसत निकालकर नदी पार करने वाले अपने बच्चों के डूब जाने पर अपने सवाल को जाँचने या उसमें कोई गलती न रहने पर बच्चों के डूबने पर आश्चर्य करने लगें तो यह उनका व्यावहारिक दोष है — अंक और उनकी पद्धति अपने आप में निरपेक्ष है, उसे किसी भी तरह का दोष नहीं दिया जा सकता, अथवा भारत में पनप रहे प्रजातंत्र में बीस या तीस प्रतिशत भी बहुमत हो जाय तो इसमें गणित को छलिया कैसे कहा जा सकता है, या आज की जनसंख्या और उसकी वृद्धि की गति को (-) जिसमें किसी भी प्रकार का संदेह या दोष नहीं है — गणितीय आधार देने पर इस धरती पर किसी समय मनुष्य के सिवा कोई नहीं मिलेगा-इस तरह की कल्पना को गणित का ठोस आधार देने पर इसके भविष्यत् की भयावहता से स्तब्ध होना सहज है। किन्तु यह सब अंकों का तटस्थ व्यापार है, वे किसी को प्रसन्न या विषण्ण करने जैसा रूप धारण नहीं करते। यदि ऐसा ही होता तो एक व्यक्ति चक्रवृद्धि ब्याज का हिसाब करके एक दो पीढ़ियों में (एक लाख रुपये के मूलधन से) सारे देश की मुद्रा का स्वामित्व प्राप्त कर लेने के हर्ष से पागल भी हो सकता है।

आशय यह है कि भाषा के शब्दों या वर्णों का अपना क्षेत्र व प्रभाव अवश्य रहता है और वे भी एक सीमा तक अपने आपमें निरपेक्ष है, किन्तु उन शब्दों में या शब्द-समूहों में एक स्वाभाविक लय रहा करती है और वह लय ही एक सम्पूर्ण आर्केस्ट्रा के रूप में हमें प्रभावित किया करती है, जबकि संख्या के संकेतों में लय नहीं होती, वेलय की आवृत्ति को गिनते हैं। यही इनका मौलिक स्वरूप और परिचय होता है।

इस दृष्टि से संख्या का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। वह किसी भी वाचक या संकेतक बनकर ही अपनी अर्थवत्ता प्रकट करती है अर्थात् वह परोपजीवी है। इसके बावजूद भी यह निश्चित है कि संख्या प्रकृति की कार्य-पद्धति की सूचक होकर भी प्रकृति के व्यवहार के वर्गीकृत स्वभाव का परिचय एवं गणना कराती है। मोटे तौर पर हम सम और विषम संख्या के रूप में किये गये विभाजन को देखें तो हमें उनमें गणितीय संयोजन एवं समरूपता दृष्टिगत होती है। सम संख्या के चतुष्कोण या चतुर्भुजों में परस्पर संयोजन सरलता एवं सहज रूप से हो जाया करता है। उसमें विषम संख्या के ज्यामितीय रूपों को हम परस्पर आसानी से जोड़ नहीं सकते हैं। संख्याओं के माध्यम से प्रकृति की कार्य-विधि को समझने तथा उसके संभावित-सुनिश्चित परिणामों को खोज निकालना ही अंक विद्या है और अंक ज्योतिष के रूप में हम संख्याओं की संकेत शक्ति व उन संकेतों के परिणामों का विश्लेषण-मूल्यांकन करते हैं।

भारत ने शब्दशास्त्र का जितना सूक्ष्म अध्ययन किया हैउतना ही संख्याओं का भी, अर्थात् जिस तरह किसी रंगीन चित्र में रेखाओं और रंगों का संयोजन संयुक्त रूप से एक अनुभूति देता है, किन्तु रेखाओं और रंगों के स्वभाव, प्रभाव एवं गुणों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण रहता है, क्योंकि रंगों की दुनिया और रेखा की दुनिया का भी अपना व्यक्तित्व है।

अंक का माध्यम या संकेत के रूप में हमने निर्बध उपयोग किया, किन्तु उनको स्वतंत्र रूप से, उनकी सहज गति व प्रकृति को निरपेक्ष भाव से समझने की भी चेष्टा की गई। अंकों से बनने वाले यंत्र निर्विवाद रूप से अंकों की शक्ति व प्रकृति को सिद्ध करते हैं तो केरलीय ज्योतिष में या अन्य प्रसंगों का केवल संख्या के आधार पर समाधान ढूंढने की पद्धति भी अंकों के महत्व को प्रतिपादित करती है, रमल शास्त्र तो अपने आप में अंकों की ही दुनियां है।

ज्योतिष का काम अंकों के बिना नहीं चल सकता, सूर्य का पिण्डीय गोल रूप इन ग्रहों का अयन पथ, ये सब अपने प्राकृतिक रूप में वृत्ताकार है किन्तु उस वृत्त से हमारा काम नहीं चलता जिस तरह अकेले शून्य से कोई सार्थक उपयोगिता सिद्ध नहीं होती जहाँ वृत्त के विभाजन का प्रश्न आया वहीं वह 'शून्य' विभिन्न इकाइयों, कोणिक आकृतियों में विभक्त हो गया और इस विभाजन के लिए अन्य संख्याओं की आधारभूमि बन गई।

ज्योतिष में षडष्टक सम्बन्ध, त्रिक स्थान और त्रिषडाय स्थानों को स्वभावत: अहितकर माना जाता है, क्योंकि लग्न से इन स्थानों से लेकर बनने वाले कोण विषम स्थिति के सूचक होते है। इन कोणिक आवृत्तियों को संख्या का संकेत देना ही फलित की विशेषता बन जाती है। इसी विचार-परंपरा और अंकों की कार्य- शैली को समझने से अंको द्वारा हमारे जीवन के विभिन्न रहस्यपूर्ण-सम्पूर्ण उद्घाटी लेते हैं। अतएव अज्ञात भविष्य को जानने का उपक्रम अंक ज्योतिष का विषय है।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति गंगा की धार में बहकर उसके यात्रा-पथ व विविध भौगोलिक प्रभावों को भोगने के लिए बाध्य है, उसी प्रकार हम अपने नाम जन्मदिन, स्थान के नाम आदि के स्वयं-सिद्ध प्रभावों को भोगने के लिए बाध्य है। इस यात्रा के प्रभावों का आकलन करके सुरक्षित व सुविधाजनक रूप से गन्तव्य तक पहुंचना हमारी बुद्धिमता और दूरदर्शिता है तथा इसके लिये अंक ज्योतिष सशक्त आधार है।

संख्या का दार्शनिक पक्ष

संख्या का व्यवहारगत अर्थ है — यूनिट, वर्ग या समूह। संख्या का व्याकरण-सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक् प्रकार से कथन-ज्ञापन। संस्कृत में संख्यान और आख्यान शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुए है, किन्तु कालान्तर में यह शब्द केवल गिनती के अर्थ में रूढ़ हो गया।

अंक ज्योतिष या न्यूमरोलाजी के रूप में हम आजकल जिस विवेचन या विधा को देख रहे हैं वह भी मूलत: संख्या का, गणित का ही विशेष प्रकार का फलित है। किन्तु संख्या शब्द ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य को प्रकट नहीं कर पाता, इसलिए इस अंक ज्योतिष या अंक विद्या के नाम से हम जानते हैं। अंक शब्द का अर्थ है चिन्ह अमर कोश के 'कलंकांको लाञ्छनं च चिन्हं लक्ष्म च लक्षणम्' अनुसार अंक एक चिह्न है। यह चिह्न गणितीय भी हो सकता है। बीजीय भी और रेखीय भी। अंक ज्योतिष में या वैसे भी ज्योतिष में संकेत अधिक चलते हैं। कुण्डलियों में राशि का नाम न लिखकर केवल उसकी संकेतक संख्या लिखी जाती है।

अंक और भाषा एक ही वस्तु के दो पहलू हैं। प्रत्येक वस्तु संख्या की सीमा में आती है। संख्या की बोधकता एक स्थान पर भाषा की शक्ति का भी अतिक्रमण कर जाती है और वह है शून्य का संकेतन। भाषा में या हमारे व्यवहार में उपस्थित विषमता को संख्या ने हल कर दिया — यह संख्या का अपना अधिकार सम्पन्न क्षेत्र रहा है अन्यथा भाषा का बहुवचन अस्पष्ट रहता है — वह केवल एकाधिक की सूचना देता है, मात्रागत या परिमाणगत स्थिति केवल संख्या से ही सूचित हो सकती है।

भाषा प्रतीक बोध पर चलती है और संख्या संकेत पर जिसे हम सिम्बलिज्म और सिग्नल सिस्टम कहा करते हैं। संकेत अपनी सीमा में स्वतंत्र है। प्रतीक वर्गीकृत है। जहां हमने चार कहा, वहां यह संकेत चार यूनिट का संकेत करता है। इसके अलावा कुछ नहीं करता। इसके विपरीत जहाँ हमने राम, चन्द्रमा, मैं या वह कहा, वहां ये शब्द प्रतीक रूप में इन नामधारियों का ज्ञान कराते हैं।

संख्या आवृत्ति किंवा फ्रीक्वैंसी की सूचना देती है। यह आवर्तनशीलता संख्या का आधार है। किन्तु इस आवर्तनशीलता का भी एक रूप और प्रभाव है जिसे भौतिकशास्त्री अच्छी तरह जानते हैं। फ्रीक्वैंसी में यत्किंचित् परिवर्तन होने पर तरंगों की प्रकृति और स्वरूप में अन्तर आ जाता है। यही स्थिति रसायन शास्त्र में आती है, जहाँ घटकों की संख्या नियत रहती है तथा उसमें परिवर्तन होते ही पदार्थ के अन्तर एवं तदधारित ग्राह्य में भी परिवर्तन हो जाता है।

विश्व में अनेक घटक इस प्रकार हैं जिनकी संख्या नियत रहती है, इसलिए उन सभी पदार्थों या व्यक्तियों का उन स्थायी वर्ग वाले पदार्थों से संख्यागत संबंध जुड़ जाता है और उनका प्रभाव परोक्ष रूप से उन व्यक्तियों एवं वस्तुओं पर पड़ता ही है।

माना किसी का नाम पुनीत या विपुल है। ये शब्द दो स्तरों पर नामी को प्रभावित करते हैं-पहला भाषा और दूसरा संख्या। संख्या के रूप में पुनीत या विपुल एक-एक व्यक्ति हैं। किन्तु इन नामों के अक्षरों के ध्रुवांक और उन ध्रुवांकों के चरित्र के अनुसार इन व्यक्तियों का जीवन एक अर्थ में प्रभावित होगा। ज्योतिष में जैसे जातक और गोचर दो पद्धतियां होती हैं और मनुष्य दोनों ही प्रभावों से प्रभावित होता है, उसी तरह व्यक्ति नाम के संख्यांक और भाषागत अर्थ से प्रभावित हुआ करता है। भारतीय अपने बालकों का नामकरण करने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चरण पर आने वाले अक्षर से प्रारंभ होने वाले नाम रखा करते हैं। नाम रखने में किस प्रकार के शब्द ग्रहण करने चाहिए और किस प्रकार के छोड़ देने चाहिए, इस प्रकार की व्यवस्था का निर्देश करने वाले ऋषियों ने उनके नामों के ध्रुवांक और संख्यापरक तथ्य पर भले ही ध्यान न दिया हो, (क्योंकि इस प्रकार का विश्लेषण किसी ग्रन्थ में स्वतंत्र रूप में देखने को नहीं मिलता, संकेत के रूप में मिलता हो तो कोई बात नहीं।

चित्रकला के विद्यार्थी या यंत्र रचना के ज्ञाता लोग यह जानते है कि रेखा और रंगों का भी अपना व्यक्तित्व होता है, उसी तरह प्रत्येक नाम या संज्ञा शब्द का गणित भी हुआ करता है।

जहां तक भाषागत महत्व का प्रश्न है, उससे असहमत हुआ जा सकता है क्योंकि सत्यनारायणजी असत्य के भण्डार हो सकते हैं और पुनीत बिल्कुल अपवित्र हो सकते हैं, तो भी इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जिस नाम से उसे पुकारा जाता है उस नाम के जप का प्रभाव उस व्यक्ति पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न्यून या अधिक रूप में पड़ता ही है।

व्यक्ति अपने नाम से विपरीत चरित्र एवं प्रकृति का होता है — यह अनुसंधान का विषय है। यद्यपि इस प्रभाव के पीछे संकरता, वातावरण का प्रभाव और हमारे लोगों का काम संबन्धों में उच्छृंखलता का होना भी है तदपि यही एकमात्र कारण नहीं है।

अंक और ऐतिहासिक घटनाएं

पूर्व जन्म में सम्पूर्ण प्राणियों ने शुभाशुभ जैसे जो भी कर्म किये हैं, उन कर्मों के फलों को प्राणी इस जन्म में या अगले जन्म में किस प्रकार भोगकर समाप्त करेगा यही ज्योतिष शास्त्र बतलाता है। जैसे अन्धकार में पड़ी हुई वस्तु को दीपक का प्रकाश बतला देता है।

यह पुस्तक ज्योतिष की एक शाखा अंक विधा के ज्ञान को हम अपने जीवन में किस प्रकार उपयोगी बनाकर अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं तथा आने वाले भविष्य को अपने अनुकूल बना सकते हैं, का मार्ग प्रशस्त करेगी। अंक चिन्ह को भी कहते हैं, इसे संख्या भी कहा जाता है। आज के युग में क्या प्राचीन युग में भी अंक की महत्ता रही है।

पाश्चात्य ज्योतिषी कीरो ने अपनी पुस्तक 'बुक आफ नम्बर' में यह उल्लेख किया है कि जब मैं भारत का भ्रमण कर रहा था तो मुझे कुछ ऐसे ब्राह्मणों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला जो प्रकृति के बहुत से गूढ़ रहस्यों को अपने हृदय में छिपाये थे और कृपा करके कुछ का ज्ञान मुझे भी कराया था। वे सभ्य होने से पहले से इस अंक विद्या के ज्ञान से परिचित थे।

जिस तरह शब्द को ब्रह्म की संज्ञा देकर महत्वपूर्ण माना है, इसी तरह अंक भी महत्वपूर्ण है। शून्य (०) एक अंकीय चिन्ह है और यह भी ब्रह्म की विराट सत्ता का प्रतीत है। वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण से अंक सर्वाधिक महत्वपूर्ण, प्राचीनतम कटु सत्य है। हमारे आर्ष पुरुषों, ऋषि-मुनियों ने, दैवज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने परखा है, सोचा समझा एवं मनन किया है, तभी इसे इतना महत्वपूर्ण माना है।

अंक हमारे जीवन में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अंक द्वारा हम अपने मन्तव्य को भली भाँति समझा सकते हैं। जैसे किसी ने कहा कि इस पेड़ पर कुछ कबूतर बैठे हैं, लेकिन ठीक उत्तर के लिए उनके कितने हैं बतलाने के लिए किसी प्रतीक का सहारा लेना पड़ेगा और वह प्रतीक है अंक। ऊपर लिखे वाक्य को हम अगर स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास करें तो वाक्य इस पेड़ पर बारह कबूतर बैठे हैं इस प्रकार हो गया। इसी प्रकार अंक हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। इसके बिना हमारी बात अधूरी है, अस्पष्ट है।

राम देहली ७ बजे जायेगा। देहली २३ मील दूर है। वहां का किराया ३१ रुपये है। मेरी आयु ४१ वर्ष है इत्यादि। इन वाक्यों में आपने देखा कि अंक किस तरह हमारे दैनिक उपयोग में आता है, इसके बिना हमारी बात अधूरी रहेगी। अंक भूत, भविष्य, वर्तमान बतलाता है। हमारे दुख-दर्द का सच्चा साथी है। अंक द्वारा ही हम अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने अंक के महत्व को समझा, इसका गहन अध्ययन किया और इसे जन उपयोगी पाकर सर्वसाधारण को इसकी महत्ता एवं शक्ति से परिचित कराया।

सहधर्मी वस्तुएं आकर्षण करती हैं और विधर्मी विकर्षण, यह विज्ञान-सम्मत बात है। कबूतर कबूतरों में ही रहेगा,बाज अथवा कौओं में नहीं। इसी प्रकार प्रत्येक अंक अथवा संख्या अपने जैसे संख्या अथवा अंक को आकर्षित करेगी और इनमें आपस में मैत्री एवं सौहार्द रहेगा। इसी प्रकार विरोधी अंक संख्या में विकर्षण, शत्रुता एवं विरोध रहेगा। यूं कोई भी अंक अपने आप में बुरा प्रभाव नहीं रखता, परन्तु स्थान तथा परिस्थितिवश शुभ या अशुभ हो जाता है।

कई लोग जो ज्योतिष से परिचित नहीं होते, मात्र उन्होंने कहीं से सुन रखा होता है कि राहु और शनि बुरे ग्रह हैं और इनकी दशा भुक्ति कष्टकर होती है। ये जब किसी अन्य को अथवा स्वयं को कठिन परिस्थिति में दुःख तकलीफ में देखते हैं तो राहु-शनि को इसका कारण मानकर कह देते हैं कि बुरे दिन चल रहे हैं, शनि राहु की दशा के कारण। शनि-राहु पापी ग्रह हैं यह माना, परन्तु ये हर एक को बुरा फल देते हों मैं यह मानने को तैयार नहीं। जिनकी कुण्डली में शनि या राहु कारक होकर शुभ स्थानस्थ हों तो अपनी भुक्ति में मान-सम्मान, धन और राज्य भी देते हैं। मैंने कई ऐसी कुण्डली देखी हैं, जिनमें मात्र शनि ने उच्च पद तथा राहु ने आकस्मिक धन दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि पाठक स्वयं अपने जीवन को रिश्तेदारों, प्रियजनों, जानकारों के जीवन को टटोलकर देखें तो पायेंगे अंक की आश्चर्यजनक समानता — चमत्कारिक रूप। यह सत्य है कि ज्योतिष कठिन विषय है। इसे समझना हर एक के बूते की बात नहीं, क्योंकि जन्म पत्रिका बनाना आसान काम नहीं, न ही बनाकर देखना और समझना। गणित की जटिल प्रक्रिया से निकलकर मनुष्य फलित के जाल में फंस जाता है। किन्तु अंक विद्या (ज्योतिष) सरल विधि है। इसे थोड़ा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी समझकर अपने भविष्य को सुखद बना सकता है। जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान कर सकता है।

अंकों में गति है, क्रम-बद्धता है, अगले पृष्ठों में कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं जिससे आप समझ सकेंगे कि घटनाओं के घटने का क्रम अंकों की किस सुनिश्चित योजना द्वारा क्रमबद्धता द्वारा घटित होता है। नीचे वाले उदाहरण में आप देखेंगे कि चमत्कारिक रूप से ५३९ साल के अन्तर से सेंटलूई तथा लूई सोलहवें के जीवन की घटनाएं समान रूप से घटित हुई।

सेंट लूई का जन्म	२३ अप्रैल	१२१५
		+ ५३९
लूई सोलहवें का जन्म	२३ अगस्त	१७५४
सेंट लूई की बहन ईसाबेला का जन्म		१२२५
		+ ५३९
लूई सोलहवें की बहन अलजावेथ		१७६४
का जन्म सेंट लूई के पिता आठवें की मृत्यु १२२६		
		+ ५३९
लूई सोलहवें के पिता डाफिन की मृत्यु		१७६५
सेंट लूई की बादशाहत की शुरुआत		१२२६
		+ ५३९
लूई सोलहवें की बादशाहत की शुरुआत		१७६५
सेंट लूई का विवाह		१२३१
		+ ५३९
लूई सोलहवें का विवाह		१७७०
सेंट लूई को वयस्काधिकार मिला		१२३५
		+ ५३९
लूई सोलहवें को वयस्काधिकार मिला		१७७४
सेंट लूई और इंग्लैंड के बादशाह हेनरी		१२४३
तृतीय में युद्ध के बाद सन्धि हुई		+ ५३९
लूई सोलहवें और इंग्लैंड के बादशाह जार्ज		१७८२
तृतीय में युद्ध के बाद सन्धि हुई		
एक पूर्वदेशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिए		१२४९
सेंट लूई से मिला		+ ५३९
एक अन्य राजकुमार ने अपना दूत इसी		१७८८
आशय के लिए लूई सोलहवें के पास भेजा		
युद्ध में सेंट लूई की हार, साथियों द्वारा		१२५०
छोड़ा जाना तथा बन्दी होना		+ ५३९
लूई सोलहवें का उसके दल द्वारा छोड़ा जाना		१७८९
तथा बन्दी होना		
सेंट लूई की मां का स्वर्गवास हुआ		१२५३
		+ ५३९
लूई सोलहवें की मां की मृत्यु हुई		१७९२
सेंट लूई ने जैकोबियन धर्म अपनाना चाहा		१२५४
		+ ५३९
जैकोबियनों द्वारा लूई सोलहवें का अन्त		१७९३

एक अन्य उदाहरण देखिए-

पूज्य गाँधीजी के जीवन में अंक २ व ४ का वर्चस्व रहा था

जन्म -२ अक्टूबर	२
विवाह हुआ १८८३ में	२
पिता का स्वर्गवास हुआ १८८५ में	४
वकालत की १८९२ में	२
भारत आए १९०१	२
ट्रांसवेल ब्रिटिश इंडिया बनी १९०३	४
स्वराज्य फण्ड कमेटी बनी २ अक्टूबर	२
पत्नी की मृत्यु २२ फरवरी	४
स्वयं का स्वर्गवास १९४८	४

एक और उदाहरण अंक १३ का। यूं पश्चिम में इस अंक को लोग अशुभ समझते हैं और प्राय: इस अंक का प्रयोग वे जीवन के किसी भी क्षेत्र में नहीं करते। परन्तु ज्योतिर्विदों की दृष्टि में यह अंक नवीनता का प्रतीक माना गया है। अमेरिका में १३ की अंक संख्या का काफी महत्व रहा है। वैसे भी अमेरिका नई दुनिया के नाम से जाना जाता है।

अमेरिका में जार्ज वार्शिगटन का सत्कार किया
१३ तोपों की सलामी देकर

अमेरिका के राष्ट्रीय झण्डे में कुल पत्तियां	१३
" " " " बाण	१३
" " " " ईगल पर कुल सितारे	१३
" " " " ईगल के हर डेने में कुल पंख	१३
" " " " सर्वप्रथम अमेरिका के कुल राज्य	१३

अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर १३ व्यक्तियों ने किये।

एक अन्य उदाहरण भारतीय अकाली दल (गुरनाम सिंह ग्रुप) का यू.एन.आई. से साभार-

गुरनामसिंह ग्रुप अकाली दल के सचिव श्री राजिन्दरसिंह ने अपने एक बयान में बतलाया कि पार्टी को १३ का अंक सर्वाधिक अशुभ रहा।

इस दल का जन्म	१३ जून १९७१
दल समाप्त हुआ	१३ फरवरी १९७२
कार्यकारिणी के २० सदस्यों ने दल छोड़ा	
	१३ सदस्यों ने १३ फरवरी को
दल के कार्यवाही रजिस्टर में अंकित कार्यवाही	१३ पेज तक
दल के चपरासी ने दफ्तर आना बन्द कर दिया	१३ फरवरी
दल के सचिव का अपने साथियों सहित	
दल से इस्तीफा	१३ फरवरी
दल के चार प्रत्याशी हारे हुए घोषित हुए	१३ मार्च

एक अन्य उदाहरण जब भी सन् के आखिर में ७ की संख्या आई है वह भारत के लिए महत्वपूर्ण वर्ष रहा है, यथा-

महाराणा प्रताप की मृत्यु	१५९७
शाहजहां की हुकूमत	१६२७ से १६५७
शिवाजी की पैदाइश	१६२७
औरंगजेब की मृत्यु	१७०७
हिन्द की पहली जंगे आजादी	१८५७
दक्षिण का कहत	१८७७
मिण्टो रिफार्म एक्ट बना	१९०७
इसे लागू किया गया	१९१७

साइमन कमीशन आया, शारदा एक्ट बना	१९२७
प्रथम बार कांग्रेस वजारतें बनीं	१९३७
भारत आजाद हुआ	१९४७
प्रथम बार केरल में कम्युनिस्ट वजारत बनी	१९५७
सभी दलों ने किसी न किसी प्रान्त में मिली-जुली सरकार बना ली (कांग्रेस के खिलाफ)	१९६७
जनता पार्टी का राज्य काल तथा कांग्रेस की उत्तरी भारत में हार	१९७७

विदेशों में इस प्रकार की घटनाओं का वृहद् संकलन किया गया है। भारत में इस विधा पर कोई खास गौर नहीं किया गया वर्ना यहाँ भी ऐसे अनेक उदाहरण होंगे। ऊपर पाठकों ने अंक का घटना-क्रम से सम्बन्ध देखा, अगर वे अपना अथवा अपने सम्बन्धियों का जीवन टटोलें तो ऐसी ही आश्चर्यजनक समता मिलेगी।

मूलांक कैसे निश्चित किए जाएं

हर व्यक्ति का जन्म अंग्रेजी महीने की किसी भी तारीख को हो सकता है। एक महीने में १ से लेकर ३१ दिन तक हो सकते हैं। इस अध्याय में हम जन्म की तारीख से मूलांक बनाने की विधि का अवलोकन करेंगे। जन्म की तारीख से मूलांक (जन्मांक) लिखे अनुसार होंगे, यथा—

जन्म तिथि	मूलांक (जन्मांक)	जन्म तिथि	मूलांक (जन्मांक)
१	१	६	६
२	२	७	७
३	३	८	८
४	४	९	९
५	५		

एक से लेकर ९ तक की अंक संख्या ईकाई में है। आगे १० से लेकर ३१ तक की संख्या दहाई में है, इस दहाई की संख्या को इकाई में बदलना पड़ता है जैसे—

१०	१+ ०= १	१
११	१+ १= २	२
१२	१+ २= ३	३
१३	१+ ३= ४	४
१४	१+ ४= ५	५
१५	१+ ५= ६	६
१६	१+ ६= ७	७
१७	१+ ७= ८	८
१८	१+ ८= ९	९
१९	१+ ९= १० = १+ ०= १	१
२०	२+ ०= २	२
२१	२+ १= ३	३
२२	२+ २= ४	४
२३	२+ ३= ५	५
२४	२+ ४= ६	६
२५	२+ ५= ७	७
२६	२+ ६= ८	८
२७	२+ ७= ९	९
२८	२+ ८= १० = १+०= १	१
२९	२+ ९= ११ = १+१= २	२
३०	३+ ०= ३	३
३१	३+ १= ४	४

ऊपर आपने मूलांक बनाने की विधि देखी नीचे मूलांक एक नजर में—

दि.	१, १० १९, २८	का मूलांक	१
दि.	२, ११, २०, २९	का मूलांक	२
दि.	३, १२, २१, ३०	का मूलांक	३
दि.	४, १३, २२, ३१	का मूलांक	४
दि.	५, १४, २३	का मूलांक	५
दि.	६, १५, २४	का मूलांक	६
दि.	७, १६, २५	का मूलांक	७
दि.	८, १७, २६	का मूलांक	८
दि.	९, १८, २७	का मूलांक	९

मूलांक और उनके अधिपति ग्रह

मूलांक	स्वामी ग्रह	मूलांक	स्वामी ग्रह
१	सूर्य	६	शुक्र
२	चन्द्रमा	७	नेपच्यून
३	बृहस्पति	८	शनि
४	हर्षल	९	मंगल
५	बुध		

नीचे मूलांक और उनके वार लिखे जाते हैं।

मूलांक	वार
१	रविवार
२	सोमवार (चन्द्रवार)
३	बृहस्पतिवार (गुरु.)
४	रविवार
५	बुधवार
६	शुक्रवार
७	सोमवार
८	शनिवार
९	मंगलवार

भारतीय ज्योतिष के अनुसार निम्नलिखित १२ राशियां हैं—

राशि	स्वामी ग्रह
१. मेष	मंगल
२. वृष	शुक्र
३. मिथुन	बुध
४. कर्क	चन्द्र
५. सिंह	सूर्य
६. कन्या	बुध
७. तुला	शुक्र
८. वृश्चिक	मंगल
९. धनु	वृहस्पति
१०. मकर	शनि
११. कुम्भ	शनि
१२. मीन	वृहस्पति

नीचे २७ नक्षत्र एवं उनके चरण तथा चरणाक्षर दिये जा रहे हैं ताकि आसानी से अपनी राशि, राशिपति, नक्षत्र तथा चरण एवं चरणाक्षर जाना जा सके। एक राशि का मान ९ चरण का माना गया है।

नाम नक्षत्र	चरणाक्षर राशि	राशि	स्वामी
१. अश्विनी	चू, चे, चो, ला	मेष	मंगल
२. भरणी	ली, लू, ले, लो,	मेष	मंगल
३. कृतिका	अ, इ, उ, ए	मेष/वृष	मंगल/शुक्र
४. रोहिणी	ओ, वा, वी, वू	वृष	शुक्र
५. मृगशिरा	वे, वो, का, की	वृष/मिथुन	शुक्र/बुध
६. आर्द्रा	कू, घ, ङ, छ	मिथुन	बुध
७. पुनर्वसु	के, को, ह, ही	मिथुन/कर्क	बुध/चन्द्र
८. पुष्य	हू, हे, हो, डा	कर्क	चन्द्र
९. आश्लेषा	डी, डू, डे, डो	कर्क	चन्द्र
१०. मघा	मा, मी, मु, मे	सिंह	सूर्य
११. पू.फा.	मो, टा, टी, टू	सिंह	सूर्य
१२. उ. फा.	टे, टो, पा, पी	सिंह/कन्या	सूर्य/बुध
१३. हस्त	पू, ष, ण, ठ	कन्या	बुध
१४. चित्रा	पे, पो, रा, री	कन्या/तुला	बुध/शुक्र
१५. स्वाति	रू, रे, रो, ता	तुला	शुक्र
१६. विशाखा	ती, तु, ते, तो	तुला/वृश्चि.	शुक्र/मंगल
१७. अनुराधा	ना, नी, नू, ने	वृश्चिक	मंगल
१८. ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू	वृश्चिक	मंगल

महाविद्या ध्यान

साधक को ध्यान करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करना चाहिए।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालस्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥
मुण्डमालालिकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्योन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥

महाविद्या देवी चार भुजाओं वाली, सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाली, महाभीमा, करालवदना, सिद्ध और विद्याधरों से युक्त, मुण्डमाला से अलंकृत, बिखरे हुए केशों वाली और हास्यमुखी हैं। सर्वकाम अर्थ की सिद्ध देने वाली देवी का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए।

महाविद्या स्तोत्र

श्रीशिव उवाच— दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम्॥
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तसाधनम्।
तव प्रसादाद्देविशि सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः॥

श्रीशिवजी ने कहा- तारिणी की उपासना का मार्ग अत्यन्त ही दुर्लभ है, इसी प्रकार उनके पद की प्राप्ति भी दुर्लभ है। मन्त्रार्थ ज्ञान, मंत्र चैतन्य, शव साधन, श्मशानसाधन, योनिसाधन, ब्रह्मसाधन, क्रियासाधन, भक्तिसाधन और मुक्तसाधन यह सब भी दुर्लभ हैं। किन्तु हे देवेशि! तुम जिसके ऊपर प्रसन्न होती हो, उसको सब विषय में सिद्धि प्राप्त होती है।

नमस्ते चण्डिके चण्डमुण्डविनाशिनि।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनी॥

हे चण्डिके! तुम प्रचण्डस्वरूपिणी हो। तुमने ही चण्ड-मुण्ड का वध किया था। तुम्हीं काल के भय से त्राण दिलाने वाली हो। हे कालिके ! तुमको नमस्कार है।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रि जगत्पालनकारिणीम्॥
जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।
करालां विकटां घोरां मुण्डमाला विभूषिताम्॥
हरार्चितां हराराध्यां गौरवर्णालंकारभूषिताम्।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥

हे शिवे! जगद्धात्रि हरवल्लभे! मेरी संसार के भय से रक्षा करो, तुम्हीं जगत् की माता और तुम्हीं अनन्त जगत् की रक्षा करती हो। तुम्हीं जगत् का संहार करने वाली और तुम्हीं उत्पन्न करने वाली हो। तुम्हारी मूर्ति महाभयंकर है, तुम मुण्डमाला से अलंकृत हो, कराल और विकटाकार हो। तुम्हीं हर से सेवित, हर से पूजित और हरप्रिया हो। तुम्हारा गौर वर्ण है, तुम्हीं गुरुप्रिया और श्वेत विभूषणों से अलंकृत हो, तुम्हीं विष्णु प्रिया और महामाया हो, ब्रह्माजी तुम्हारी ही पूजा करते हैं तुमको नमस्कार है।

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धिप्रदायोनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्॥
प्रणमामि महामायीं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।

तुम्हीं सिद्धा और सिद्धेश्वरी हो। तुम्हीं सिद्ध तथा विद्याधरों से वेष्टित, मंत्रसिद्धि-दायिनी, योनिसिद्धि देने वाली, लिंग शोभित, महामाया, दुर्गा और दुर्गति नाशिनी हो। तुम्हें नमस्कार है।

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्॥

तुम्हीं उग्रमूर्ति, उग्रगणों से युक्त, उग्रतारा, नीलमूर्ति, नील मेघ के समान श्यामवर्ण तथा नीलसुन्दरी हो तुमको नमस्कार है।

श्यामांगी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्री गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्॥

तुम्हीं श्यामलांगी, श्यामवर्ण से विभूषित, जगद्धात्री सब कार्यों की साधन करने वाली और गौरी हो, तुमको नमस्कार है।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्॥

तुम्हीं विश्वेश्वरी, महाभीमाकार विकटमूर्ति हो, तुम्हारा शब्द महाभयंकर है, तुम्हीं सबकी आद्या, आदिगुरु महेश्वर की भी आदि मां हो आद्यना महादेव सदा तुम्हारी पूजा करते हैं, तुम्हीं धन देने वाली अन्नपूर्णा और पद्मास्वरूपिणी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी (स्वामिनी) जगत् की माता, हरवल्लभा हो। तुमको नमस्कार है।

त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्माविष्णुहरप्रियाम्॥

हे देवि! तुम्हीं त्रिपुरसुन्दरी, बाला, अबला गणों से विभूषित, शिवदूती, शिव की आराध्य, शिव से ध्यान की हुई, सनातनी, सुन्दरी, तारिणी, शिव गणों से अलंकृत, नारायणी, विष्णु की आराया और ब्रह्मा, विष्णु तथा हर की प्रिया हो।

सर्वसिद्धप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयमर्चिता सर्व्वसिद्धदाम्॥
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेश भक्तां माहेशीं. महाकालप्रपूजिताम॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्द्दिनीम्॥

तुम्हीं सब सिद्धियों की दात्री, नित्या, अनित्य गुणों से रहित सगुणा, निर्गुणा, ध्यान के योग्य, अर्चिता (पूजिता), सर्व सिद्धि की देने वाली, दिव्या, सिद्धिदाता, विद्या, महाविद्या, महेश्वरी, महेश की भक्तिवाली, माहेशी, महाकाल से पूजित, जगद्धात्री और शुंभासुर का मर्दन करने वाली हो। तुमको नमस्कार है।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्द्दिनीम्।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्॥
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालाञ्च मातंगीं सुरसुन्दरीम्॥
षोडशीं विजयां भीमां धूमाञ्च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्व्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये॥

तुम रक्त से प्रेम करने वाली, रक्तवर्णा, रक्तबीज का विनाश करने वाली, भैरवी, भुवना देवी, चलायममान जीभवाली, सुरेश्वरी, चतुर्भुजा कभी दशभुजा, कभी अठारह भुजा वाली देवी हो। तुम्हीं विश्वनाथ की प्रिया, ब्रह्मांड की ईश्वरी, कल्याणमयी, अट्टाहास से युक्त ऊंचे हास्य से प्रीति करने वाली, धूम्रासुर विनाशिनी, कमला, छिन्नमस्तां, मातंगी, सुर-सुन्दरी, षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, सर्वसिद्धिदायिनी, तारिणी हो, मैं मन्त्रसिद्धि के लिए तुमको नमस्कार करता हूँ।

इत्येवञ्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनी॥

हे वरारोहे! यह स्तव परम सिद्धि देने वाला है, इसका पाठ करने से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है।

कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षो मन्त्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि॥

मंगलवार चतुर्दशी तिथि में बृहस्पतिवार अमावस्या तिथि में तथा शुक्रवार को रात्रि काल में यह स्तुति पढ़ने से मोक्ष प्राप्त होता है। हे शंकरि! तीन पक्ष तक इस स्तव के पढ़ने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं।

चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत्सतोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥

कृष्ण चतुर्दशी की रात हो तथा शनि और मंगलवार हो तब इस स्तव का विधिपूर्वक पाठ करने से मंत्रसिद्धि होती है।

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्भुजंगिनी॥

जो पुरुष केवल इस स्तोत्र मात्र को पढ़ता है, वह अनुत्तमा मंत्र सिद्धि प्राप्त होता है। इस स्तवपाठ के फूल से चण्डिका कुलकुण्डलिनी नाड़ी जाग्रित होती है।

॥श्रीमुण्डमालातंत्रान्तर्गत महाविद्यास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र-तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं हैं, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया सर्व सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य हैं या हम प्रमादवश इनको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़-फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण, हवन-मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विश्वस्त कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप में कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मंत्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किाय जाता है और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मन्त्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है। जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के समिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। साबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे है जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:-

"हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥"

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्रायः संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई-एक मत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षड़ंग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति, छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां शाबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण हैं। शाबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण हैं, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिखाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:—**"हे अमुक देव! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिरे, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।"**

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे की की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल-सुलभ सरलता के कारण, श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ देगा, क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों से वह बचा लेगा, शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधन करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और परपीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों का शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लभा मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्यवहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबड़ाने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होईये। एकनिष्ठ होकर करते रहिये।

प्रेत बाधा निवारण के लिए:-"ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले पानी चले, शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नौ सौ निन्यानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।" किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

पीलिया निवारण के लिए:-"ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं भिदाती कारे झारे पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।" ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध करलें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डांभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

घर की रक्षा के लिए:-"या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूँ आज बन्द, हजरत सुलेमान की बरकत से बन्द, हजरत मूसा के हुकुम से बन्द, हजरत अली की शमशीर से बन्द, हज़रत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर्र सूलल्लाह।" नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात् सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारें यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर सो रहें।

गणपति सिद्धि मन्त्र:-ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आनन्दपुर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जागे भरल्यावे तो एक फूले हाथी जो तू मोहन रहे मूवा बाल साथ करी जाऊं तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न होकर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

मृत्यु सूचक चिह्न

पुष्पं यथापूर्व रूपं फलस्येह भविष्यतः।
तथालिंगमरिष्टाख्यं पूर्व रूपमरिष्यतः॥
नत्वरिष्टरस्य जातस्य नाशोस्ति मरणादृते।
मरणं चापि तन्नास्ति यत्रारिष्ट पुरःसरम्॥

अर्थात जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है, पश्चात् फल। इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरण काल, मृत्युकाल का परिचय मिलता है। शास्त्रों में वर्णित बहुशः मरण चिह्नों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया जाता है।

१. निजस्य प्रतिविम्बस्य निश्चलेपृदकादिषु।
उत्तमांगं न पश्येत् यःषण्मासेन विनश्यति॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखे, वह छः महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा।

२. करावरुद्ध श्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम्।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासान्नवर्त्तते॥

हाथों के द्वारा दोनों कान बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है, किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है। यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे न सुनाई पड़े, और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए। को एक महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा।

३. विधाय कर्णनिर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम्।
चक्षु र्योर्नश्यतिर्ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति॥

ऊपर कहे दूसरे नियमानुसार हाथों से कानों के बन्द करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पड़ता पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है। यदि किसी को कान बन्द करने पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द भी सुनाई नहीं देता हो और नेत्रों की ज्योतिः अक्समात् नष्ट हो जाए तो वह मनुष्य भी न बचेगा।

४. नासिका वक्रतामेति कर्णोयातोनतिंपुनः।
नेत्रं वाष्पं क्षरेद्र यस्य सगच्छेद् यममन्दिरम्॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हों और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और चाहे दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा।

५. सुस्नातस्या पियस्याशु हृदयं परिशुष्यति।
चरणौ च करौचापि त्रिमासं तस्य जीवितम्॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सूख जायें वह तीन महीने जीवित रहेगा।

६. भाद्रेऽह्निवासरे सूर्येछाया सूर्यस्यनिर्मलाम्।
निश्चलाप्सुन पश्येत् यःषण्मासेन समृत्युभाक्॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावे, तो छः महीने में उसकी मृत्यु हो।

७. घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासादूर्ध्व न जीवित॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह एक महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

८. यस्य वीर्य मलं मूत्रं क्षुत्त नूनंनिरन्तरं।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्ययुरुच्यते॥

जिस मनुष्य का वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लो उसकी आयु एक वर्ष शेष है।

९. मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे भ्रियते ध्रुवम्॥

जिस मनुष्य का मूत्र, मल, वायु (पाद) एक साथ चलते हों तो उसकी दस दिन में निश्चय ही मृत्यु होगी।

१०. मैथुने संप्रवृत्ते यो मध्येवान्ते क्षछिक्कति।
निश्चितं पञ्चमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत्॥

जिस मनुष्य को स्त्री संसर्ग में प्रवृत होकर, बीच में और अंत में छींक आये तो वह पांचवें महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवें महीने मृत्यु होना निश्चय समझना चाहिए।

११. यस्यावैस्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम्॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जो जल को पीले रंग का देखे, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा।

१२. यस्य वक्तेशवगन्धो गात्रे दसनयोरपि।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम्॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रों में मुरदे की सी गंध आती हो, वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा, अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा।

१३. यस्यवै भुक्तमात्रस्य हृदयं वाध्यते क्षुधा।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशय॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझे।

१४. अहोरात्रं यदैकत्र बहते यस्य मारुतः।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्ण वत्सरत्रयं॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी।

१५. अहोरात्रं द्वयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्ववेदिभिः॥

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो दिन-रात लगातार श्वास चलता रहे, उसको दो वर्ष तक जीवित समझो अर्थात् दो वर्ष के बाद मर जाएगा।

१६. त्रिरात्रं बहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः।
सम्वत्सरं यावदायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः॥

यदि किसी मनुष्य के किसी* एक नासिका छिद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियों ने बताई है।

१७. एकादिषोडशाहेषु यदि भानुर्निरन्तरम्।
वहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकैः॥

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित हो तो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

१८. सम्पूर्ण बहते सूर्यचन्द्रमानैव दृश्यते।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहे और एक बार भी वाम नासिका से न बहे तो पक्ष वा १५ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

१९. सम्पूर्ण बहते चन्द्रः सूर्य्यो नैव च दृश्यते।
मासेन दृश्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥

यदि किसी मनुष्य के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहता रहे और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महाने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

२०. रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो बहेत् यस्यनिरन्तरम्।
विजानीयास्तस्य मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरेध्रुवम्॥

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि में और दक्षिण नासिका से दिन में बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चय जानो।

* सब लोग यही जानते हैं कि दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ ही समान श्वास वायु चला करती है, पर यह लोगों का भ्रम है। एक-एक घण्टे एक नासिका छिद्र से प्रबल रूप से और दूसरे एक छिद्र से बहुत ही निर्बल अथवा नहीं के समान श्वास वायु बहता है। पर दोनों से समान वायु कभी-कभी ही बहा करती है, जो भी परमायुनाशक और विपद् आदि का पूर्व रूप होता है। इस विषय को विस्तार रूप से जिन्हें देखना हो वह हमारी ''मनोकामना सिद्धि'' और ''वनौषधि चिकित्सा'' नामक ग्रन्थ में देखें।

२१. अरुन्धतीं ध्रुवञ्चैव विष्णोस्त्रीणिपैदानिच।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थ मातृमण्डलम्॥

जिस मनुष्य की आयु हीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नहीं पड़ते।

सूचना—यह तारागण आकाश में सदैव उदय होते हैं, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते हैं, जो न जानते हों वे किसी से पूछकर जान सकते हैं।

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है, यथाहि—

२२. अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते।
ध्रुवोर्मध्ये विष्णु पदं तारके मातृमण्डलम्॥

अर्थात् जीभ की अरुन्धती, नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनों भोहों के बीच का भाग विष्णु पद और आंखों का तारा मातृमण्डल कहलाते हैं।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आंखों से बिना दर्पण आदि के नहीं देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे हुए पदार्थों में से आँख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषों ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरों को किसी भी अंगुली से किञ्चित् दबाओ, तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरित दिशा में आँखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृ-मण्डल कहते हैं, यद्यपि यह सदैव ऐसा करने पर दिखाई दिया करता है, पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे नहीं दिखाई देता।

२३. दन्ताश्चदूषणौ यस्य न किञ्चिदपि षोड्यते।
तृतीये मासिचावश्यं कालग्रासो भवेन्नर॥

जिस मनुष्य के दाँत और अण्डकोष को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नहीं होती वह ३ महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

२४. मध्यमांगुलिनां त्रितयं वक्रयातिरुजम्बिना।
षण्मासेतस्यमृत्युः स्याद्यस्यकण्ठोऽपिशुष्यति॥

जिस मनुष्य के हाथ की बीच की तीन अंगुलियां तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेढ़ी हो जायें और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी छः महीने में निश्चय मृत्यु होगी।

२५. वाष्पं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत्।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति॥

जो मनुष्य जाग्रत वा निद्रितावस्था वा स्वप्न में मलमूत्र, सुवर्ण तथा चाँदी के समान देखें, वह १० महीने में मरेगा।

२६. मर्त्यैर्लक्षितलक्षणैर्हिंसलिले भानुर्यदादृश्यते।
क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासकतः॥
मध्यं छिद्रमिदंभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम्॥

सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया दक्षिण की ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दीखे तो तीन महीने और उत्तर की ओर कटी दीखे तो दो महीने में और पूर्व की ओर कटी दीखे तो एक महीने में, छाया के बीच में छिद्र दीखे तो दस दिन में और छाया को धुंए के रंग देखे तो उसी दिन मृत्यु होगी।

२७. जो मनुष्य दीप बुझने पर उसकी गंध अनुभव नहीं करता और रात्रि में अग्नि को देखकर भय मानता है वह छः महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकता।

२८. जिसके शरीर से अग्नि की गन्ध आती हो तो वह एक महीने के बाद मर जायेगा।

२९. दक्षिण की मुट्ठी बन्द करके नाक की सीध में और भौंहों के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की

कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु के छः महीने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देने लगती है।

३०. जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पांच महीने में यमालय में पहुँच जायेगा अर्थात् पांच महीने में मर जायेगा।

३१. जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाय उसकी मृत्यु छः महीने में अवश्य होगी।

स्वप्न फल विचार

मृत्यु से पूर्व जिस प्रकार शारीरिक विकार से पीछे कहे हुए लक्षण प्रकट होते हैं, उसी प्रकार अरिष्टजनक स्वप्न भी दिखाई पड़ते हैं। स्वप्नों का वर्णन वेद तक में पाया जाता है। मनुष्य जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन करता और जिन वस्तुओं को इस जन्म में देखता व सुनता है अथवा पूर्व किसी जन्म में देखा वा सुना वा चिन्तन किया हो उन्हीं विषयों के सम्बन्धी अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार स्वप्न में देखता है अतः कैसा भी असम्बन्ध असामञ्जस्य भिन्न-भिन्न स्थान, भिन्न-भिन्न लोक आदि असम्भव से अमस्भव स्वप्न भी क्यों न देखे जायें सब ठीक हैं। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्न सफल नहीं होते हैं। अतः यह भलीभाँति स्मरण रखने योग्य है कि कौन-कौन से स्वप्न ठीक नहीं होते और कौन-कौन से ठीक होते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन शास्त्रों से यहां उद्धृत कर देते हैं।

चिन्ताव्याधिसमायुक्तोनरः स्वप्नञ्चपश्यति।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्यवे न संशयः॥
जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः।
दिगम्बरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं॥

अर्थात् चिन्ता और व्याधि (रोग) रामायुत मनुष्य जो स्वप्न देखता है वह सब हे तात! निष्फल हैं इसमें संशय न करो।

मुत्र, पुरीष दुःखित, भयाकुल चित्त, बाल खुले और सोते में पहने हुए वस्त्र खुल जाने से अथवा नंगे होकर सोने वाले को जो स्वप्न दिखाई पड़ते हैं उनका फल कुछ नहीं होता।

दृष्ट्वास्वप्नञ्च निद्रःलुर्यदि निद्रां प्रयातिच।
.... नलभेत स्वप्नजं फलं॥
उक्त्वाकाश्यपगोत्राय विपत्तिं लभते ध्रुवं।
प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते कश्यपान्वये॥

अर्थात् स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाने से तथा काश्यपगोत्रज मनुष्य से स्वप्न का वर्णन कर देने से फिर उसका फल नहीं मिलता।

धातु विकार की दशा में कभी भी देखा स्वप्न दिखाई पड़े तो वह ठीक नहीं होता।

मृत्यु सूचक स्वप्न

१. जो मनुष्य लाल, श्वेत रस अथवा विष्ठा मूत्र को वमन होते देखे, उसकी केवल १० महीने आयु समझनी चाहिए।

२. जो कोई आदमी स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते, अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए।

३. जो आदमी भयानक काले रंग के आदमी को हथियार लिये वा पत्थर से मारने को देखे तो उसकी उसी दिन मृत्यु होगी।

४. जो आदमी नंग धड़ंगा फकीर को नाचते, हंसते और क्रूर दृष्टि से अपनी ओर देखते देखे तो समझ लो कि शीघ्र ही मृत्यु होगी।

५. काले रंग का काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिये सन्मुख खड़ा दीखे तो ३ महीने में मृत्यु होगी।

६. जो मनुष्य काले रंग की स्त्री दोनों बाहुओं से पकड़े वह छः महीने पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगा।

७. अपने शरीर को गन्ध पुष्प आदि से भूषित देखे तो समझ लो ८ महीने से अधिक नहीं बचेगा।

८. राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर अपने को खड़े हुये देख पड़े तो ८ महीने मात्र जीवित रहना चाहिए।

९. अपने मस्तक वा शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखने से ६ महीने जीवित रहना चाहिए।

१०. श्रृगाल, कुक्कुर, शूकर, शकुनि, राक्षस, असुर, पिशाच, भूत, प्रेत, पतङ्ग, कुरङ्ग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन हो अथवा इन्हें खाते हुए देखे तो एक वर्ष में निश्चय यमलोक को जाना होगा।

११. अपने मुख से सब दांत गिर पड़े हुए देख पड़े तो शीघ्र मृत्यु होगी।

१२. बन्दर की पीठ पर चढ़कर पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई पड़े तो पांच दिन में मरण होगा।

१३. गधा व भेंस की पीठ पर चढ़ कर दक्षिण की ओर जाता देख पड़े तो उसकी मृत्यु सन्निकट समझो।

विशेष ध्यान देने योग्य

१४. उक्त मृत्यु सूचक स्वप्नों में सब ही एक आदमी को दिखाई नहीं पड़ते हैं। इनमें से कोई-कोई स्वप्न किसी-किसी को एक अथवा अधिक दिखाई पड़ते हैं। पर २१ और २७ नम्बर पर लिखित चिह्न प्रत्येक को देख पड़ते हैं। यह जब देख पड़ें तब से नित्य प्रायः तारामण्डल को देखते रहना चाहिए। जिस दिन तारामण्डल न दिखाई दे उस दिन से दशवें दिन मृत्यु होना निश्चय जान लें। और संसार से मोह छोड़ पुण्य काम कर परमेश्वर का स्मरण करते हुए मृत्यु के लिये प्रस्तुत रहना चाहिए। और ''अन्तेयादशीमति गतिर्भवतितादृशी'' के लिये मन को स्थिर करना चाहिए। यदि स्थिरता न हो सके क्योंकि ''मनश्चञ्चलमस्थिरम्'' तो उत्तम भावना रखनी चाहिए कि जिससे आगामी जन्म उत्तम कुल में प्राप्त हो।

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं- जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ , प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फेंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगड़े, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सांपों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेड़िया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल त्यागना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़े	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़े	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
कैंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दुःख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दुःख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	दायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण अरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:— १. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में ब्रिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की ब्रिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1:4:2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास को गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए। पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सर:। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्त:—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्पास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयो:। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतम:॥ दशाहाम्यन्तरे न दोष:॥

दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र

दिये हुए चित्र के समान एक चंद्र कालानल चक्र बनावें। फिर जिस दिन का शुभाशुभ विचार करना हो उस दिन का नक्षत्र देखें कि पंचांग में चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। प्रात:काल जिस नक्षत्र पर चंद्रमा हो उसको चित्र में १ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ नक्षत्रों को अंकों के क्रमानुसार लिखें। इसमें अभिजित का समावेश भी है। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ रहा है। उसी के अनुसार फल समझें। यदि त्रिशूल में नाम नक्षत्र पड़े तो अशुभ, वादविवाद, रोग, धनहानि आदि। वृत्त के अन्दर पड़े तो आयवृद्धि, धनलाभ, हर्ष, मित्रों का मिलन आदि शुभ फल हो। यदि वृत्त के बाहर (३,६,१०,१३,१७,२०,२४,२७ अंको पर) पड़े तो कुछ प्रसन्नता और कुछ दु:ख। आधा दिन अच्छा और आधा क्लेश, चिन्ता, धन हानि से बीतेगा। इस प्रकार आप रोज देख सकते हैं कि "आज का दिन कैसा बीतेगा।"
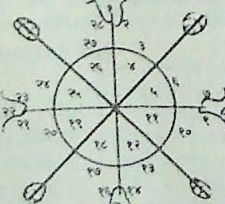
शनि पीड़ा नाशक यंत्र

यंत्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

यदि किसी व्यक्ति को शनि की ढैया या साढ़ेसाती के कारण बहुत परेशानी आ रही है हो तो चित्र में दिये हुए यंत्र को एक पत्थर की स्लेट के टुकड़े पर लकड़ी के कोयले से शनिवार को व्रत रख कर लिखें। तथा उस शनि से परेशान व्यक्ति के ऊपर सिर से पैरों की ओर सात बार उतार कर उस व्यक्ति के द्वारा ही किसी ऐसे कुएं (या पानी के तालाब) में फिकवादें जिसका पानी वह स्वयं कभी न पियें। उसके बाद वह पीछे मुड़कर न देखें। यह कार्य सांय काल को अधिक प्रभावशाली रहता है। ऐसा करने से उसको शनि की पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी यह अनुभूत है।

सर्वरोग नाशक यंत्र

यंत्र

द्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	देवदत्त		द्रीं
श्रीं			श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम और केशर की स्याही से लिखें। देवदत्त के स्थान पर रोगी का नाम लिखें। फिर उस भोजपत्र को लपेट कर तावीज के रूप में लाल कपड़े में लपेटकर सिल लें। और धूपदेकर तथा घी के दीपक के ऊपर ७ बार फिराकर अपने दाहिने बाजू में बांध लें। यह क्रिया करते समय कोई देखे या टोके नहीं इसलिए एकान्त में करना चाहिये। इसके बांधने से प्राय: सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और सुख मिलता है।

व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी यंत्र

यंत्र

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से लिखकर गुग्गुल की धूप तथा दीप से यंत्र की पूजा करें। और उसी समय "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नम:" मंत्र की २१ माला (१०८ दानेवाली) जपकर प्रत्येक माला के बाद यंत्र पर फूंक मारें। फिर इस यंत्र को दुकान की गद्दी के नीचे लाल कपड़े में लपेट कर रख दें तथा नित्य प्रात: स्नान करके गद्दी पर बैठने से पहले धूप दीप से पूजा करके तब गद्दी पर बैठें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में व्यापार में आश्चर्य जनक तरक्की होगी।

शत्रु दमन कारक यंत्र

यंत्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इस यंत्र को चिता की भस्म की पानी में स्याही बनाकर आक (मदार) की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर लिखकर मंगल वार के दिन श्मशान की अग्नि में शत्रु का नाम लेकर डालने से शत्रु पूरी तरह से परास्त होकर वशीभूत हो जाता है और हमेशा के लिए दास बन जाता है।

मुकदमा जीतने का यंत्र

यंत्र

ॐ
अलहम
भीम
भीम

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर किसी तांबे के तावीज में भरकर, गुग्गुल की धूप देकर तथा घी के दीपक से पूजा करके अपने गले या दाईं भुजा में बांधें जब तक अंतिम फैसला न हो जाय बांधे रखें। मुकदमें में विजय होगी।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारक मंत्र, यंत्र

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

सूर्य:- यदि सूर्य गोचर में ४, ८, १२वें हो तो कष्ट, रोग, धनहानि, असफलता प्रदान करता है। यही फल विंशोत्तरी दशा आने पर भी करता है। इसके निवारण के लिए सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:" का ७००० जप उपयुक्त रहता है। किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से आरंभ करें। लाल कपड़ा, गुड़, ताम्र पात्र, गेहूं का दान करें। रक्त पुष्पों से सूर्य की पूजा करें। सूर्य यंत्र को अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर तावीज की भांति दाहिनी भुजा में रविवार प्रात: को ही धारण करें तो अरिष्ट निवारण होता है, सुखशान्ति मिलती है। ये सभी यंत्र सर्वार्थसिद्धि मुहूर्त में धारण किये जायें तो उत्तम है।
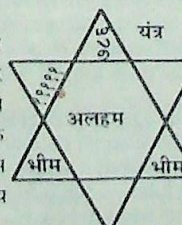
चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

चंद्रमा :- यदि चंद्रमा के कारण अरिष्ट हो रहा है तो इसके निवारण के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से "ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसेनम:" मंत्र का चन्द्रोदय समय में ११००० जप करें। जप एक सी संख्या में करें। कभी ज्यादा कभी कम, ऐसा न करें। श्वेत फूलों से चंद्रमा की पूजा करें। चांदी, चावल, चीनी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन का दान करें। चन्द्र यंत्र को चांदी के तावीज या श्वेत वस्त्र के ताबीज में (भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर) दायीं भुजापर धारण करें। सुख-शान्ति होगी।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

मंगल: मंगल एक पापी ग्रह है। गोचर में ४, ८, १२वें स्थान में आने पर या विंशोत्तरी दशा आने पर या जन्म कुण्डली में अशुभ होने पर बहुत हानिकरता है। इसकी शान्ति के लिए बीज मंत्र "ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमायनम: " का शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से जप आरम्भ करें। लाल फूलों से मंगल की पूजा करें। सोना, ताम्रपात्र, गुड़, घी, लाल वस्त्र, मसूर, केसर, लालचंदन का दान करें। अष्टगंध, अनार की कलम से भोजपत्र पर भौमयंत्र लिखकर, धूप, दीप देकर दायीं भुजा में धारण करें। शांतिहोगी, दुख दूर होंगे।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बुध:- पापी या क्रूर ग्रहों के साथ जन्म कुण्डली में बुध के बैठ जाने से बुध भी अनिष्ट कारक फल देता है। इसके निवारण के लिए बुध के बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं ब्रों स: बुधायनम:" का शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ बुधवार से जप प्रारम्भ करें। सुवर्ण, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, फल का दान करें, जप ९००० हजार करें। केशर या अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर बुधयंत्र लिखकर हरे वस्त्र के ताबीज में रखकर, धूपदीप देकर दांयी भुजा में बांधे तो अवश्य कष्ट निवारण होगा।

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

बृहस्पति:- यद्यपि गुरु शुभ ग्रह है किन्तु यदि गोचर में ४, ८ ,१२ हो तो विवाहादि शुभ कार्यों में अड़चन डालता है। अन्य प्रकार से भी अनिष्टकारक हो सकता है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:" का १९००० जप करें। जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। सोना, चने की दाल, घी, पीला वस्त्र, केले के फल, हल्दी का

दान करें। भोजपत्र पर केशर की स्याही व अनार की कलम से गुरु यंत्र लिखकर तथा सोने के या पीले वस्त्र के तावीज में रखकर दांये हाथ में धारण करें। जप के लिए पीली माला लें।

शुक्र :- शुक्र के अनिष्ट कारक प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्र के बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:।" का १६००० जप करें। श्वेत चंदन की माला प्रयोग करें। चांदी, चावल, चीनी, दूध, श्वेत वस्त्र, दही का दान करें। जप प्रात: सूर्योदय काल में करें। अष्टगंध तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर शुक्र यंत्र लिखकर धूपदीप देकर श्वेत वस्त्र या चांदी के तावीज में रखकर दांयी भुजा में धारण करें। अवश्य सुख व शान्ति मिलेगी।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि :- शनि एक क्रूर ग्रह है। बड़ा विनाशक ग्रह है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ प्रां प्रीं प्रौं. स: शनये नम:" का कृष्णा पक्ष के प्रथम शनिवार से जप प्रारम्भ करें। जप संध्याकाल में करें। नीलम, लोहा, उड़द, तेल सरसों, कुलथी, काला, कम्बल व वस्त्र दान करें। जप संख्या २३००० है। भोज पत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से शनि यंत्र लिखकर काले कपड़े या सोने के तावीज में मंढवा कर धारण करें। शनि का प्रभाव दूर होगा।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु: शनि की भांति राहु भी एक क्रूर छाया ग्रह है। इसकी शाति के लिए कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से बीजमंत्र "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवेनम:" का जप रात्री के प्रथम प्रहर में कम्बल के आसन पर बैठ कर करें। जप संख्या १८००० है। तिल, सरसों, तेल, नीले वस्त्र, कम्बल (काले) का दान करें। भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से राहुयंत्र को लिखकर, धूप दीप देकर, सोने के ताबीज में रख कर धारण करें।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु :- मंगल की भांति केतु भी अनिष्ट कारक छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बीजमंत्र "ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:" से १७००० जप करें। लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल का दान करें। केतु के यंत्र को राहु की भांति धारण करें।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

कतिपय चमत्कारी मंत्र

(१) व्यापार वृद्धि के लिए :- "भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे तो डंडी बिकैजो माल, भंवरवीर सोखे नहिं जाय।" रविवार के दिन प्रात:काल स्नान करके १ माला जप करें। फिर ११ दाने उड़द के इसी मंत्र से ११ बार पढ़कर अपनी व्यापार की गद्दी पर फैंक दें। तीन रविवार लगातार ऐसा करने से व्यापार में अवश्य वृद्धि होती है।

(२) सर्व मनोकामना पूर्ति के लिए :- श्री दुर्गामाता की मूर्ति सामने रखकर उसका विधिवत पूजन करके, हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए संकल्प करें। फिर निम्नमंत्र का सवालाख जप करें। तो निश्चित मनोकामना पूर्ति होती है। मंत्र "ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमस्तुते॥"

(३) विवाह सम्पन्न करने के लिए:- "ॐ गौरी आवे शिवजी ब्याहवै, अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करै, देर न करै, देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै" इस मंत्र का ११ दिन तक लगातार एक माला रोज, जप करै, दीपक व धूप बालै। ग्यारहवें दिन रात को एक कोरे कुल्हड़ में सात डली नमक की, सात काली मिर्च लाल कपड़े में बांधकर रखदें। कुल्हड़ का मुंह भी लाल कपड़े से बांध दें। कुल्हड़ पर बाहर की ओर सात बिन्दी कुमकुम की लगाकर और ऊपर लिखे मन्त्र की पांच माला जप करके, चुपचाप कुल्हड़ को आधी रात को किसी चौराहे पर रख आवें, पीछे मुड़कर न देखें। सारी रुकावटें दूर होकर बहुत जल्द शादी हो जाती है।

(४) आधाशीशी दूर करने का मंत्र:- ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद कूद शाखान पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधादेय गिराय, हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाय" इस मंत्र से नीम की डाल या राख से रोगी को दक्षिण को मुख करा कर झाड़ा दें तो तीन दिन में आधा शीशी बिल्कुल ठीक हो जाती है।

(५) पुत्रदायक मंत्र:- "ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:।" शुद्ध आसन पर पूर्व मुख होकर तुलसी या रुद्राक्ष की १०८ दाने की माला से सवा लाख जप करें। जप के बाद शहद, घी, शक्कर, तिल मिश्रित सामग्री से १०००० आहुतियों का हवन करें। १००० तर्पण, १०० मार्जन करें। भगवान कृष्ण का ध्यान करें, अभक्ष्य चीजों से दूर रहें। भगवान अवश्य कामना पूर्ति करेंगे।

(६) रोग नाश के लिए मंत्र :- "ॐ रोगान शेषानपहं सितुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयांति।" इस मंत्र का दुर्गा सप्तशती में दी हुई विधि से सवा लाख मंत्र जप करें तो माँ भगवती की कृपा से कठिन से कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है।

(७) धन प्राप्ति के हेतु महालक्ष्मी मंत्र:- श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति के समक्ष, धूप, दीप, फल, मिष्ठान्न रखकर मंत्रजप करें। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा में तथा जपकर्ता का मुख उत्तर को रहे जलकलश पर नारियल अवश्य रखें। मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं कमले कमला लये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।" सवा लाख मंत्र जप, हवन करें।

(८) शत्रु विनाशक मंत्र:- शत्रु विनाश के लिए श्री बगलामुखी मंत्र से बढ़कर अन्य कोई मंत्र नहीं है। पीली धोती व दुपट्टा आदि कपड़े धारण करें। बगलामुखी का चित्र सामने रख कर उसकी विधिवत पूजा करें, पीले फूल चढ़ावें, पीले मिष्ठान्न से भोग लगावें, पीली माला (हल्दी की) प्रयोग करें। ५१००० जप करें। जप के बाद नीम के पत्ते, कौए के पंख तथा सरसों के तेल से हवन करें। तो शत्रु का विनाश होता है। मंत्र-"ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥"

(९) रोग निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए:- इसके लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का शिव की मूर्ति के समक्ष बैठकर विधि पूर्वक जप करें। जप सवा लाख हो, बाद में हवन, तर्पण, मार्जन दशांश करें। मंत्र -"ॐ ह्रौं जूं स:।ॐ भूर्भुव: स्व:।ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्व: भुव: भू:। ॐ स: जूं ह्रौं ॐ।

(१०) मृत संजीवनी मंत्र :- ॐ तत्सवितुर वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं भर्गो देवस्य धीमहि, उर्वारुक मिव बन्धनात् धियो योन: प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ।। इस मंत्र के सविधि जप से अकालमृत्यु भी टल सकती है।

(११) बिच्छू का विष उतारने का मंत्र:- "ॐ नमो आदेश गुरू को। कालो बिच्छू कांकरवालो, उतर बिच्छू न कर टालो, उतै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं, गरुड़ मोर पंख हंकालूं। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरोमंत्र ईश्वरो वाचा।" इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में जितना जप संभव हो सके, जप करके सिद्ध करलें। फिर चिमटा, चाकू या झाड़ू से ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे दें। विष उतर जायेगा।

(१२) पीलिया दूर करने का मंत्र:- "ॐ नम: आदेश गुरू को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा वाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीलो पीला पीला चारों गिरि जहि तो श्री रामचन्द्र जी रहे नाम। हमारी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।" पहले इस मंत्र को सूर्यग्रहण या दिवाली की रात को अधिक से अधिक (१००००) जप करके सिद्ध कर लें। बाद में रोगी को पीतल के पात्र में शुद्ध जल देकर मंत्र का उच्चारण करते हुए सुई से सात बार शनिवार के दिन झाड़ें। सात शनिवार तक क्रिया करें। अवश्य लाभ होगा।

द्वादश राशियों के देवता औरजपनीय मंत्र:- स्तोत्र ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति अपनी जन्म या नाम राशि के देवता का नियमित रूप से एक माला का जप करता रहे तो उसकी आपदा, कष्ट, रोगादि का स्वत: ही निवारण होता रहता है। राशियों के मंत्र निम्न प्रकार हैं **(१) मेष**- "ॐ विष्णवे नम:" **(२) वृष**-"ॐ वासु देवाय नम: **(३) मिथुन** :- ॐ केशवाय नम: **(४) कर्क** :- "ॐ राधा कृष्णायनम:" या "ॐ हरिहराय नम:"। **(५) सिंह**- "ॐ बालमुकुन्दाय नम: **(६) कन्या**:- "ॐ ह्रीं पीतम्बराय परमात्मने नम: **(७) तुला** :-ॐ श्रीराम दाशरथये नम:। **(८) वृश्चिक**:- "ॐ नमो नारायणाय नम:" **(९) धनु**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणी धराय नम: **(१०) मकर** :- ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नम: **(११) कुम्भ राशि**- के देवता गोविन्द गोपाल हैं। "ॐ गोपाल गोविन्दाय नम:।" **(१२) मीन**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्ग चक्राय नम:।"

॥ चमत्कारी यंत्रों द्वारा सिद्धि ॥

(१) शत्रु को वश में करने का यंत्र :- इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाड़ दें तो शत्रु वश में हो जाय।

५८	३७	५	८
७८	९	२	५२
५४	५	८४	९१
७	८७	६८	५८

यंत्र-१

(२) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्रः—इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी में बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दें तो परदेशी शीघ्र आ जावेगा।

३८	६५	१	२१
१०	६३	६५	१६
४	५	८७	९१
३९	२८	२८	२८

(३) भूत प्रेत नाशक यंत्रः—यंत्र को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

८५	५६	९	१२
१	६१	६२	१४
४६	४	१८	९१
८	६७	२८	५८

(४) बवासीर नाशक यंत्रः—रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नींबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

९	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

(५) पुरुष वशीकरण यंत्रः—इस यंत्र को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध लें तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

९	६५	२	९२
७५	९	२	५२
९७	२८	८३	९१
६	७	३९	४५

(६) सर्व कार्य सिद्धि यंत्रः—इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप देकर तांबे के ताबीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

५७	५८	९	११
३३	५७	४८	३७
८६	६	४४	६८
२५	५५	६५	९

(७) नजर (दीठि) दूर करने का यंत्रः—यंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के ताबीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

४६	६	८५	८५
९	८	४२	२५
७८	७२	८	५
७	५	३५	८

(८) सर्व बाधानाशक यंत्रः—पैंसठिया यंत्र यह सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर '**ॐ श्री ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः**' लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गुगुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के ताबीज में मढ़वाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन संबंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। *महालक्ष्मी मंत्र*—'**ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः ॥**'

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

(९) मुकद्दमा जीतने का यंत्रः—दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गुगुल, असगंध की धूप देकर चांदी के ताबीज में मढ़वाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकद्दमा चले तब तक बांधे रहें। मुकद्दमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(१०) गर्भधारण यंत्रः—जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूप-दीप देकर चांदी के ताबीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

(११) सन्तान प्राप्ति यंत्रः—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करें। लिखने की कलम चांदी की होना चाहिए। यंत्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

८
२
९ ५
१२ ४
३ १० ७
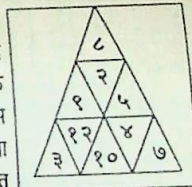
(१२) मंदिर निर्माण यंत्रः—इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उसका धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर उन यंत्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दें, तो मंदिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

१ ४
९ ६
३ २
७ ८
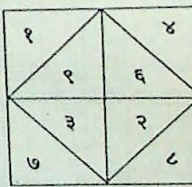
(१३) रोग मुक्ति यंत्रः—इस यंत्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

८ १
२ ९
३ ६
७ ४
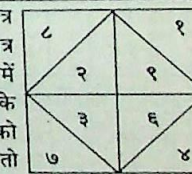
(१४) ईश्वर-भक्ति यंत्रः—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरम्भ करें तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यंत्र लिखकर अंत में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यंत्र लेख को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

७ ९
३ १
४ २
६ ८
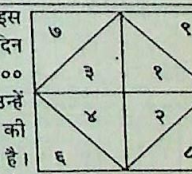
(१५) पदोन्नति यंत्रः—इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरम्भ करें। यंत्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने से पदोन्नति होती है।

१ ४
९ ६
३ २
७ ८

सूक्ष्म दशा सारिणी

सूक्ष्म दशा सारिणी की पूर्ण तालिका इस वर्ष हमारे शतक मार्तण्ड में प्रकाशित की गई है। जो सज्जन इसका प्रयोग करना चाहे वह शतक मार्तण्ड खरीदकर इससे लाभ उठा सकते है

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	००
घटि	१६	२७	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४
पल	१२	००	५४	३६	१२	१८	५४	५४	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०	२७
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	००	००	००	००	००	१	००	००
घटि	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३	१८	३१
पल	३	४२	२४	३१	३३	३	००	५४	३०

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	२	२	२	२	००	२	००	१	००
घटि	२५	९	३३	१७	५६	४२	४८	२१	५६
पल	४८	३६	५४	४२	४२	००	३६	००	४२

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	५५	१६	२	५०	२४	४३	१२	५०	९
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	२	२	००	२	००	१	००	२	२
घटि	४२	२५	५९	५१	५१	२५	५९	३३	१६
पल	२७	२१	५१	००	१८	३०	५१	५४	४८

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	००	२	००	१	००	२	२	२
घटि	१०	५३	३३	४५	१६	५३	१७	२	२५
पल	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४	२१

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	००	००	००	००
घटि	२२	३	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३
पल	३	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	००	१	१	२	२	२	२	१
घटि	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	०	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	७	६	२	८	२	४	२
घटि	१७	२८	४१	५३	५०	६	२५	३	५०
पल	२४	४८	४२	६	६	००	४८	००	६

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१	२८
पल	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	२	८	२	४	२	७	६
घटि	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९	४१	५०
पल	२१	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	६	७
घटि	३०	४	३९	१७	४९	४०	५३	७	१६
पल	९	३९	००	४२	३०	३९	६	१२	३

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	२	२
घटि	६	९	५६	३४	६	५०	३१	५९	४०
पल	९	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	८	७	३
घटि	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९	९
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४८	२१	५६	२५	९	३३	१७	५६	४२
पल	३६	००	४२	४८	३६	५४	४२	४२	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	३	१	४	१
घटि	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	३	००	१
घटि	६	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४
पल	९	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	१	३	२	५
घटि	७	४	२६	१४	२४	५५	१२	१८	४५
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	६	६
घटि	१३	२७	३९	३६	१६	४८	३९	५०	७
पल	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	५	२	६	२	३	२	६	५	६
घटि	४५	२२	४८	२	२४	२२	७	२६	२७
पल	४८	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	२	२	२	२
घटि	५८	४८	५०	२४	५८	३१	१४	३९	२२
पल	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	६	२
घटि	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	१	२	२	००	२
घटि	४३	१२	५०	९	५५	१६	२	५०	२४
पल	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	२	२	२	२	००	२	००	१
घटि	५८	३१	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४
पल	४८	१२	२४	३६	४८	४८	००	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	५	६	६	२	७	२	३	२
घटि	३८	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१
पल	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	३	९	२	४	३	८	७
घटि	३४	४०	९	१	४२	३०	९	७	१३
पल	२४	१६	३१	३०	२०	४५	३१	२१	१२
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	८	२	४	२	७	६	७
घटि	५१	४९	८	२५	२	४९	१६	२७	४०
पल	४१	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	३	२
घटि	९	१९	५९	३९	९	५१	३१	९	४९
पल	४१	३०	५१	४५	४१	३३	३६	३१	३४
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	९	८	३
घटि	३०	५१	४५	१९	३३	३६	१	४	१९
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	५४	२५	५९	३३	१६	४२	२५	५९	५१
पल	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	४	१	४	१
घटि	२३	३९	१५	४८	३०	२	३९	४५	२५
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	३	२	१	३	००	१
घटि	९	५१	३१	९	४९	९	१९	५९	३९
पल	४१	३३	३६	३१	३४	४१	३०	५१	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	८	७	२	८	२	४	२
घटि	४१	५०	७	१६	५१	३३	३३	१६	५१
पल	४२	२४	२१	३	३३	००	५४	३०	३३

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४	१३	२७	३१	३६	१६	४८	३१	५०
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	८	३१	१३	१०	३६	३१	३०	४६	५१
पल	२८	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९	३१
पल	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४	४३
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	८	७	२
घटि	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४	१३	५८
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१६	५३	१७	२	२५	१०	५३	३३
पल	५४	३०	३३	४२	२४	२१	३	३३	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	४	३	१	४	१
घटि	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५	१६
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	२	४०	२२	४९	३१	२	५८	५३	२९
पल	२८	३९	४८	३४	४३	२८	३०	३३	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	५२	७	१६	३०	४०	३९	१७	४९	४०
पल	६	१२	३	९	३९	००	४२	३०	३९

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२६	२७	४६	२२	४८	२	२४	२२	७
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	८	२	४	२	७	६
घटि	४०	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७
पल	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२२	२१	४	२४	२४	४४	२१	४५	१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५१	३१
पल	३१	३४	४१	३०	५१	४५	४१	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१०	३	५	३	९	८	९	८	३
घटि	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	१	२	२	२	२	१	३
घटि	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	४	४	४	१	५	१
घटि	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	३	२	३	२	१	३	१	१
घटि	१३	९	४८	१९	५८	१३	३०	३	४५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	८	७	८	७	३	९	२	४	३
घटि	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	८	२	४	२	७
घटि	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	९	८	३	९	२	४	३	८	७
घटि	१	४	१९	३०	५१	४५	१९	३३	३६
पल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	७	२	८	२	४	२	७	६	८
घटि	१३	५८	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	१	१	१	३	२	३	२
घटि	१३	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	२	३	३	१	४	१
घटि	५	२७	४५	२०	५७	३२	२७	१०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२	२७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	४५	००	७	२२	३७	३०	१५	४५	३७
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२०	२०	४०	२०	४०	००	२०	२०	००
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	७	६
घटि	३१	४३	४६	५५	२२	५७	४६	७	२०
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	१	२८	५	७	३२	२८	२२	४०	४३
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	१	५५	५२	२७	१	३७	२०	४६	२८
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	७	२
घटि	२०	३०	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	-	•	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
विपल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	१०	१२	११	४	१३	४	६	४
घटि	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५	४३
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	११	१०	४	१२	३	६	४	१०
घटि	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१३	१२	४	१४	४	७	४	१२	११
घटि	३२	६	५९	१५	१६	७	५९	४९	२४
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	११	१०	१२
घटि	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२	६
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	४	४
घटि	५०	१५	३४	३७	५०	४३	१२	५९	२७
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१३	१२	१४	१२	५
घटि	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	३	१	४
घटि	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	६	७	६	२	७	२
घटि	४५	३७	४५	००	७	२२	३७	३०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	४	४	१	५	१	१
घटि	५०	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	८	१०	९	३	१०	३	५	३	९
घटि	३२	८	४	४४	४०	१२	२०	४४	३६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	१०	४	१२	३	६	४	११	१०
घटि	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४	८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	९	३	११	३	५	३	१०	९	१०
घटि	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२	४	४६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	३
घटि	३८	४०	२४	२०	३८	१२	४४	२६	५८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१३	४	६	४	१२	१०	१२	११	४
घटि	२०	००	४०	४०	००	४०	४०	२०	४०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	३	३	१	४
घटि	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

चन्द्र की दशा में गुरु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२०	२०	००	२०	२०	४०	२०	४०	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	३	१	४	१	२
घटि	३८	१२	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१०	९	११	१०	४	१२	३	६	४
घटि	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१४	१२	५	१५	४	७	५	१३	१२
घटि	१७	४७	१५	२	३०	३१	१५	३२	२
पल	२२	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	११	४	१३	४	६	४	१२	१०	१२
घटि	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६	४७
पल	२२	३७	३०	१५	४५	३७	[illegible]	००	७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	५	४
घटि	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६	१५	४२
पल	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००	५२	३७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१४	१२	१५	१३	५
घटि	५०	४५	५५	३२	१५	४०	२	२७	३२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	४	१	४
घटि	२५	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	७	६	७	६	२	७	२
घटि	५७	४६	७	२०	३१	४३	४६	५५	२२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	५	४	१	५	१	२
घटि	५६	५९	२६	१५	४२	५६	३२	३९	४६
पल	२२	१५	००	५२	३७	२२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	११	१३	१२	४	१४	४	७	४
घटि	४९	२४	३२	६	५९	१५	१६	७	५९
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४	११
घटि	८	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२०	४	१२	३	६	४	१०	९	११
घटि	१४	१२	२	३६	१	१२	५०	३८	२६
पल	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	४
घटि	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२	१२
पल	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७	५२
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१४	४	७	४	१२	११	१३	१२	४
घटि	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७	२	५७
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	४	३	१	४
घटि	१६	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५
पल	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	६	२	७	२
घटि	३२	२८	२२	४०	४३	१	२८	५	७
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	४	१	४	१	२
घटि	४४	२७	५८	४२	१२	४४	५७	२९	२८
पल	७	४५	००	३७	५२	७	३०	१५	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	११	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४
घटि	२८	१२	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७
पल	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	१०	९	३	११	३	५	३	१०
घटि	४	४६	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	११	४	१३	४	६	४	१२	१०
घटि	४७	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६
पल	३	२२	३७	३०	१५	४५	३७	४५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
पल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१६	५	८	५	१५	१३	१५	१४	५
घटि	४०	००	२०	५०	००	२०	५०	१०	५०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घटि	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	४	२	७	६	७	७	२	८	२
घटि	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५	२०	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	२	५	४	५	४	२	५	१	२
घटि	२	१५	४०	३२	५७	२	५०	४५	५५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१३	१२	१४	१२	५	१५	४	७	५
घटि	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	११	४	१३	४	६	४	१२
घटि	४०	४०	२०	४०	२०	००	४०	४०	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१५	१३	५	१५	४	७	५	१४	१२
घटि	२	२७	३२	५०	४५	५५	३२	१५	४०
पल	३०	३०	३०	००	००	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१२	४	१४	४	७	४	१२	११	१३
घटि	२	५७	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	२	५	१	२	२	५	४	५	४
घटि	२	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३०	१७	८	२१	१२	३०	२५	२५	४२
पल	००	१०	३६	२७	५३	००	४५	४३	५२
विपल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	३	२	३	३	१	३	१	१	१
घटि	१८	५६	२९	७	१७	४०	६	५०	१७
पल	२७	२४	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०
विपल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	३	२	१	३	००	१	१	२
घटि	३६	६	४६	८	१६	५८	३८	८	५६
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म द शा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा.	जी
दिन	३	३	१	३	१	१	१	३	३
घटि	४१	१७	२१	५२	९	५४	२१	२९	६
पल	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२
विपल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	३	१	१	१	३	२	३
घटि	५७	१२	२८	२	४४	१२	७	४६	१७
पल	००	५३	१५	२८	७	५३	२५	३६	५०
विपल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३०	२५	२५	४२	३०	१७	८	२१	१२
पल	००	४५	४३	५२	००	१०	३६	२७	५३
विपल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	४	१	२	१	३	३	३	३	१
घटि	५	१३	२	२५	४०	१६	५२	२८	२५
पल	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	००	१	१	००	१
घटि	२२	३६	२५	६	५८	९	२	२५	१३
पल	३	४५	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०
विपल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	१	१	१	१	००	२	००
घटि	१	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६
पल	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
विपल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

वास्तुशास्त्र और गृहसज्जा (पिरामिड, फैंग शुई के चमत्कार)

महर्षि गोपाल शर्मा (बी.ई.)बी.सी.-4, मियांवाली नगर, पश्चिम विहार, दिल्ली-110087 दूरभाष : 5687077, 5670033 तथा बड़ोदरा के प्रोफेसर डॉ. जितेन भट्ट

श्री आर्यभट्ट पंचांग के पाठक वास्तुशास्त्र की महत्ता व मूल सिद्धांतों से भलीभांति परिचित हैं और जानते हैं कि यदि भवन निर्माण के समय ही वास्तु नियमों का पालन किया जाए तो सर्वोत्तम है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो भवन बने हुए हैं इनमें तोड़-फोड़ की नहीं जा सकती, ऐसे भवन वास्तु नियमों का लाभ लेकर सुख-समृद्धि दायक बन सकते हैं। ऐसी स्थिति में दक्षिण-पूर्वी देशों में विकसित फैंग-शुई नामक उपचार पद्धति व मिस्र में उपजी पिरामिड शक्ति से बिना तोड़-फोड़ के मामूली परिवर्तन द्वारा भवन के वास्तु दोष-निवारण किये जा सकते हैं।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि भवन निर्माण में वास्तु-शास्त्र का पालन करने या विभिन्न तकनीकों द्वारा वास्तु-दोष निवारण से विभिन्न दैवीय शक्तियां उन सब व्यक्तियों के सोच-विचार एवं कार्यशैली में मदद करती हैं जो इन निर्माण स्थलों से जुड़े होते हैं। स्थान के मालिक, किरायेदार, भवन बनाने वाले ठेकेदार तथा मजदूरों पर भी इसका प्रभाव देखा गया है। उन सरल अनुभूत प्रयोगों से हर घर, दुकान, कार्यालय अथवा व्यावसायिक परिसर में ब्रह्मांड के प्रत्येक अणु में व्याप्त असीम ऊर्जा द्वारा सभी रुके कार्य अल्प प्रयास से थोड़े ही समय में पूर्ण किये जा सकते हैं। सर्वव्यापी मान्यता के अनुसार प्रकृति के विभिन्न तत्वों का स्थानन अथवा वर्गीकरण आठ मुख्य दिशाओं में किया जाता है।
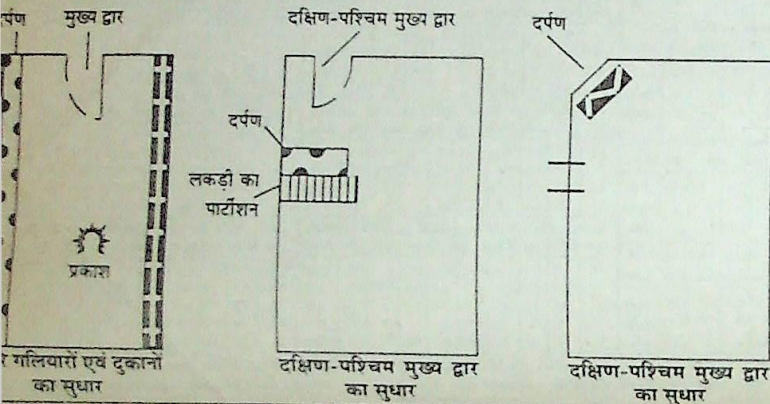
आंतरिक भवन-सज्जा

घर, दुकान या कारखाने को वास्तु अनुरूप बनाने के लिये निर्माण के साथ-साथ उस जगह की आंतरिक सुव्यवस्था एवं साज-सज्जा अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वास्तु, फैंग-शुई, पिरामिड शक्ति प्रयोग तंत्र में बिना तोड़-फोड़ किये निम्नलिखित उपाय प्रचलित हैं-

दर्पण-यह घर की सुख शांति तथा व्यापार में धन की वृद्धि करता है। इसी कारण होटलों, जलपान ग्रहों तथा बड़े ज्वैलर्स के यहां दर्पण का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। दक्षिण, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम के मुख्य द्वार वाले भवनों, कोने कटे मकानों, संकरे गलियारों या व्यावसायिक स्थानों पर भी दर्पण के उचित प्रयोग से काफ़ी हद तक वास्तु दोष दूर किया जा सकता है।

यथासंभव दर्पण का प्रयोग पूर्व, उत्तर या उत्तर-पूर्व में ही होना चाहिए। एक चीनी मान्यता के अनुसार शयनकक्ष में सोते समय शरीर का जो हिस्सा दर्पण में नज़र आता है उस हिस्से में दर्द-बीमारी का वास हो जाता है। रात को ठीक से नींद नहीं आती है तथा सुबह शरीर थका-थका सा रहता है।

पौधे-प्रवेश द्वार के दोनों ओर पौधे रखने से मनुष्य की शक्ति, धन, वैभव में वृद्धि होती है। घर एवं स्कूल में बच्चों के अध्ययन कक्ष व व्यापारिक स्थल की उत्तरी दीवार के पास पौधे या बौन साई रखने से चमत्कारिक प्रभाव देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक पौधों के अभाव में कागज तथा प्लास्टिक के फूल पत्ती तथा पेड़ों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

प्रकाश-घर व्यवसाय में असमताओं को ठीक करने का अचूक साधन है। स्फटिक निर्मित शेन्डलियर से भी भवन की पारंपरिक सुंदरता बढ़ाने के अलावा वातावरण में समरसता व संतुलन लाया जा सकता है। प्रकाश का प्रयोग एल के आकार के समान भवन का दोष दूर करने में किया जा सकता है।

फव्वारे-झरने-पानी वैभव, धन तथा अधिकाधिक समृद्धि का प्रतीक है। फव्वारे एवं एक्वेरियम लगाने से परिवार में खुशी, धन, समृद्धि तथा आपस में प्रेम बढ़ता है। इनका प्रयोग भी पूर्व, उत्तर-पूर्व, उत्तर में ही अच्छा है।

फ्लड लाइट द्वारा एल की आकृति वाले भवन का सुधार

वायु की झंकार-(घंटियां) आपसी संबंधों को नई दिशा, काम के नये आयाम, विभिन्न आकार व आवाज़ वाली घंटियां प्रोफेशनल जानकारी तथा व्यापार में नई उपलब्धियां प्रस्तुत करती हैं। द्वार, खिड़की के समीप या उत्तर-पश्चिम कोने में इनका प्रयोग सर्वोत्तम है।

पिरामिड शक्ति-भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों व तत्व वेत्ताओं तथा मिस्र के प्राचीन विद्वानों के अनुसार पिरामिड आकार एक अपरिचित शक्ति स्रोत है।

उचित प्रयोगों से अनगिनत स्वास्थ्य समस्याएं तथा भवनों में वास्तु दोष दूर किये जा सकते हैं। ई.एस.पी. प्रयोग शाला लॉसएंजिल्स (अमरीका) के निर्देशक एल. मेनिंग ने असंख्य परीक्षणों के बाद ये माना है कि पिरामिड संरचना में वास्तव में एक अबूझ विस्मयकारी व अचूक शक्ति है जो मानव कल्याण के लिए प्रयोग की जानी चाहिए। इस अमेरिकन संस्था के वैज्ञानिकों ने लिखा है कि अपनी राशि के अनुसार छोटे रंगीन पिरामिडों में अपनी फोटो तथा तिकोने कागज पर एक इच्छा लिखकर लगभग ३९ दिनों में पूरी की जा सकती है। प्लास्टिक के पिरामिड का कुछ समय प्रतिदिन सिर पर तथा छोटी पिरामिड शक्ति का कुर्सी या बिस्तर पर तकिये के नीचे प्रयोग करने से भी अनेकों अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई में ध्यान न देने या शीघ्र न समझ आने की शिकायतें दूर हुई हैं।
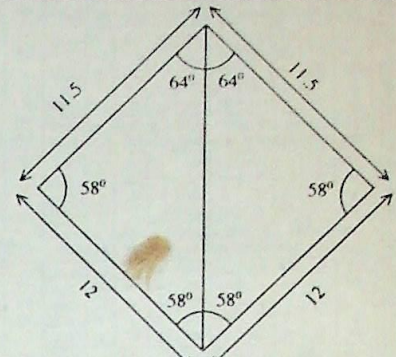
हैदराबाद के विश्व प्रसिद्ध वास्तु विशेषज्ञ डॉ. पूर्णचंद राव के अनुसार ९×९ अधिक शक्ति युक्त पिरामिड को दफ्तर, अध्ययन कक्ष, गोष्ठी कक्ष में रखने मात्र से सारा कमरा दैवी शक्ति से ओत-प्रोत हो जाता है। बहुत से लोगों के पत्र आये हैं कि यह उपकरण लगाने पर-

❖ कचहरियों के फैसले कंपनी के हक में हुए हैं। ❖ अधिक संस्थाओं में कर्ज के पुराने अनिर्णित प्रार्थनापत्रों के कर्ज मिल गये। ❖ अप्रत्याशित बिक्री के लक्ष्य प्राप्त हुए। ❖ मार्ग की सब रुकावटें समाप्त हुईं। ❖ गंभीर बीमारियां ठीक हुई हैं। ❖ मन पसंद रिश्ते हुए। ❖ घर, कारखाने, व्यावसायिक स्थलों पर गंभीर वास्तु दोष दूर किये गये।

आवश्यकतानुसार एक या उससे अधिक पिरामिड शक्ति युक्त यंत्र लगाकर वे लोग उस दोष का निवारण करके सैकड़ों लोगों को २१ से ९० दिन में ही लाभान्वित कर चुके हैं।

अपने तीस साल के आध्यात्मिक जीवन के देश-विदेश के विभिन्न भागों में हुए पिछले ९ वर्ष के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर मैं यह पूर्ण विश्वास से कह सकता हूं कि वास्तुशास्त्र, फैंग-शुई व पिरामिड शक्ति के उचित प्रयोग द्वारा घर-घर में व्याप्त चिंता व तनाव बहुत हद तक कम किया जा सकता है। हमारी इस प्राचीन अनमोल विरासत का आधुनिक विज्ञान के साथ सुखद तालमेल हो तथा अधिक से अधिक लोग सुखी व समृद्ध हों, यही हम सब के हित में है। -गोपाल शर्मा

र गलियारों एवं दुकानों का सुधार

दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

वास्तु शास्त्र

लेखक-श्री सत्यवीर शास्त्री

विश्वकर्मा जी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! मैं गृहस्थ आश्रम में रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय को विस्तारपूर्वक कहता हूँ। आप एकाग्रचित्त होकर सुनें। यह वही वास्तु शास्त्र है जिसे भगवान् महादेव ने महर्षि पराशर को और पराशर जी ने मुनि वेद को और मुनि वेद ने मुझसे कहा था। पूर्वकाल (त्रेतायुग) में एक महाभूत उत्पन्न हुआ जिसने अपनी विशाल देह से समस्त चराचर को आच्छादित कर लिया। उससे इन्द्र आदि सभी देवता विस्मय युक्त होकर और भयभीत होकर ब्रह्मा की शरण में जाकर बोले—हे भूत भावन! हे भूतेषु लोक पितामह! हमारे लिए महाभयंकारी एक संकट उत्पन्न हुआ है। आप उससे तृण पाने का उपाय हमें बतलायें। ब्रह्माजी बोले—हे देवगण! भय मत करो। जो बलशाली महाभूत उत्पन्न हुआ है उसको पकड़ो और भूमि पर गिराकर तुम सभी निर्भय हो जाओ। ब्रह्माजी के वचन सुनकर देव समूह क्रोध में संतप्त हो उस महाभूत को पकड़कर आधोमुख धरती पर पटक कर निर्भय हो वहीं स्थित हो गये। उसी को लोक पितामह ब्रह्माजी ने वास्तु पुरुष की संज्ञा दी है। यह वास्तु पुरुष भाद्रपद मास की कृष्ण तृतीया शनिवार, कृतिका नक्षत्र, व्यतिपात योग, विष्टिकरण, भद्रा के मध्य और कुलिक मुहूर्त में उत्पन्न हुआ था। उस समय यह वास्तु पुरुष भारी शब्द करता हुआ ब्रह्माजी के पास पहुंचा और ब्रह्माजी के सम्मुख जाकर दीन स्वर में बोला—हे प्रभु! आपने इस सम्पूर्ण चराचर जगत की रचना की है और आपने ही मुझे रचा है फिर बिना अपराध के यह देव समूह मुझे पीड़ा क्यों पहुंचा रहा है? वास्तु पुरुष के दीन वचन सुनकर लोक पितामह ब्रह्माजी ने उसे वरदान दिया कि हे वास्तु पुरुष! जो व्यक्ति ग्राम, नगर, द्वार, गृह, जलाशय, देव स्थान इत्यादि के आरंभ करने में मोह वश हमारा पूजन करेगा वह व्यक्ति दरिद्रता को तो प्राप्त होगा ही परन्तु जीवन रहते भी मृत्यु सम कष्ट भोगेगा, उसके हर कार्य में विघ्न उपस्थित होंगे और अन्तत: वह हमारा आहार बन जायेगा। ऐसा कहकर लोकपति ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गये। इसलिए विज्ञ पुरुषों को चाहिए कि गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय वास्तु पूजा अवश्य करें। इसके अतिरिक्त भी द्वार बनने के समय तीन प्रकार के गृह प्रवेश (यात्रा से लौटने पर, नवीन गृह में प्रवेश के समय, यदि यात्रा से लौटकर आने पर नूतन गृह प्रवेश) के समय उस प्रत्येक वर्ष यज्ञ आदि में, संतान के जन्म के समय, यज्ञोपवीत के समय, विवाह के समय, मंगल्य उत्सवों के समय, गृह के जीर्णोद्वार तथा गृह में धान रखने के समय, बिजली से टूटे हुए मकान में, अग्नि में जल जाने पर, गृह में सर्प और चण्डाल के वास करने पर जिस गृह में उल्लू और कौआ एक सप्ताह वास करे उस घर में, जिस गृह में हिरण वास करे, बिल्ला शब्द करे, हाथी-घोड़े क्रूर शब्द करें, जिस गृह में स्त्रियां कलह करती हों, मधुमक्खियों का छत्ता रखा हो। जंगली कबूतरों का वास हो अथवा अन्य अप्राकृतिक उत्पाद होते हैं वहां वास्तु शांति अवश्य करनी चाहिए।

गृह निर्माण योग्य भूमि के लक्षण

प्राचीन मुनिपियों में भूमि को ब्राह्मादि वर्णनक्रम से श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण भूमि को शुभ कहा है। जिस भूमि में फूलों की सी सुन्दर गंध आती हो वह भूमि ब्राह्मण वर्णी कहलाती हैं। जिसमें रक्त जैसी गंध आती हो वह क्षत्रिय वर्णी, जिसमें मधु जैसी गंध आती हो वह वैश्य वर्णी और जिसमें मदिरा जैसी गंध आती हो वह भूमि शूद्र वर्णी कहलाती हैं। जिस भूमि की मिट्टी का स्वाद मधुर हो वह ब्राह्मण वर्णी, जिसका स्वाद कसैला हो वह क्षत्रिय वर्णी, जो स्वाद में खट्टी हो वह वैश्य वर्णी और जिस भूमि की मिट्टी तिती हो वह शूद्र वर्णी कहलाती है। भवन निर्माण के लिए जो भूमि चौकोर हो, हाथी के आकार की हो, सिंह, बैल, घोड़े आदि के समान रूप वाली हो, त्रिशूल, भद्रपीठ, शिवलिंग के समान हो, प्रसाद के ध्वज और कुंभ आदि के समान हो वह भूमि देवताओं को भी दुर्लभ है। जिसकी आकृति त्रिकोनी गाड़ी के आकार की, सूर्प बीज के समान, मदृग के आकार की, सर्प अथवा मेंढक के रूप वाली, गधा, अजगर के सादृश्य, सूकर, ऊंट, बकरी के समान, धनुष, कुल्हाड़ी के सादृश्य, गिरगिट और शव के रूप वाली, जहां जाना कष्ट साध्य हो ऐसी भूमियों को गृह निर्माण के लिए उपयोग में नहीं लाना चहिए। गृह निर्माण के लिए उसी भूमि की परीक्षा करनी चाहिए जो सुन्दर हो। जो भूमि उत्तर और पूर्व की ओर नीची, दक्षिण और पश्चिम की ओर ऊंची होती है वह दृढ़ कही जाती है। ब्राह्मणों के लिए गंभीर भूमि, क्षत्रियों के लिए ऊंची भूमि, वैश्यों के लिए समतल भूमि और शूद्रों के लिए विकट भूमि पर गृह निर्माण शुभ रहता है। अथवा समतल भूमि पर सभी वर्ण वाले गृह निर्माण करे तो शुभ फल मिलते हैं। जिस भूमि का वर्ण श्वेत हो वह सभी वर्णों के लिए शुभ रहती है। जिस भूमि पर कुशा उगी हो वह ब्राह्मणी भूमि कही जाती है और ब्राह्मणों को शुभद रहता है। क्षत्रियों के लिये दुवा से युक्त भूमि शुभद रहती है। जो भूमि फल-पुष्प से युक्त हो वह वैश्यों को सुखकर रहती है। जिस भूमि पर कण आदि उत्पन्न होते हैं वह भूमि शूद्रों के लिए शुभ फलकारी होती है। जिस भूमि पर नदी कटाव दे रही हो अथवा उसमें बड़े-बड़े पत्थर हों, पर्वतों के साथ मिली हुई गड्ढे से युक्त छत वाली, टेढ़ी-मेढ़ी, सूर्प के आकार की दण्ड के समान, निस्तेज भल और रीछ के सादृश्य, मध्य में विकट रूप कुत्ता और शयारों के सादृश्य रूखी, चैतय श्मशान वामी आदि के स्थान से युक्त चौराहा युक्त, जहां बड़े- बड़ें ऊँचे वृक्ष हों, जिस भूमि पर भूत आदि का निवास हो, जो नगर से दूर हो ऐसी भूमि को गृह निर्माण के लिये उपयोग में नही लाना चाहिए। जिस भूमि में अपने वर्ण की गंध आती हो, जो सुंदर स्वाद से युक्त हो उस पर गृह निर्माण करने से गृह स्वामी को धन-धान्य और सुख की प्राप्ति होती हैं। इसके विपरीत भूमि पर गृह निर्माण करने से विपरीत फल मिलता हैं। अत: भूमि की परीक्षा करना गृह निर्माण से पूर्व आवश्यक रहता हैं। जो भूमि चौकोर है उस पर गृह निमार्ण करने से धन- धान्य की वृद्धि होती है। जो भूमि हाथी के समान है उस पर गृह निर्माण करने से व्यवसाय में वृद्धि होती है। सिंह के समान भूमि पर गृह निर्माण करने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती है। जो भूमि बैल के सादृश्य है उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी के पशु धन की वृद्धि होती है। जो भूमि गोल आकार की तथा भ्रदपीठ के सादृश्य है उस भूमि पर वास करने से सुख की प्राप्ति और जो भूमि त्रिशूल के समान आकार वाली है उस पर वास करने से धन व सुख दोनों

लते हैं। जो भूमि शिवलिंग के आकार की हो उस पर शिवालय दि का निर्माण और साधुओं का निवास शुभद रहता है। जो भूमि तुत ध्वज के समान हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को न्नति मिलती है। कुंभ के सादृश्य भूमि पर गृह निर्माण कर स्वामी अपनी धन-संपदा को बढ़ा लेता है। जो भूमि त्रिकोण के दृश्य, गाड़ी के आकार वाली, सूर्प और बीज के सादृश्य हो उस गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को क्रमशः पुत्र सुख, धन सुख में मी और धर्म की हानि होती है। जो भूमि मृदंग के समान हो वह श की हानि करती है। सर्प और मेढ़क के आकार वाली भूमि भय त्पन्न करती है, गधे के आकार वाली भूमि निर्धनता को जन्म देती । अजगर के सादृश्य भूमि मृत्यु सम कष्ट पहुंचाती है। चपटी और द्गर के सादृश्य भूमि पुरुषार्थ की हानि करती है। उल्लू और कौए की सादृश्य भूमि दुःख, सुख और भय को जन्म देती है। सर्पाकार भूमि संतति आदि को नष्ट करती है। सूकर, ऊँट और बकरे के श्य भूमि मलिन, मूर्ख पुत्रों को उत्पन्न करती है। जो भूमि गिरगिट और सर्प के समान हो वह मृत संतान को उत्पन्न करती है। मार्गश्री, फाल्गुन, वैशाख, माघ, आश्विन और कार्तिक में गृह आदि का निर्माण करने से गृहपति को पुत्र तथा स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। ह नारद का मत है। वैशाख, आश्विन, मार्ग., आषाढ़, माघ, फाल्गुन में यदि कन्या, मिथुन, धनु और मीन से अन्य राशि में सूर्य हो तो गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह किसी आचार्य का मत है। चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ के महीनों में गृह आरम्भ नहीं करना चाहिए। यह योगेशाचार्य का मत है। मेष के सूर्य यदि वैशाख में गृह निर्माण करने से सुख, वृष के सूर्य अर्थात् ज्येष्ठ में धन वृद्धि, माघ के सूर्य अर्थात् आषाढ़ में मृत्यु, कर्क के सूर्य अर्थात् आश्विन में धन लाभ, सिंह सूर्य अर्थात् भाद्रपद में भद्रव्य वृद्धि, कन्या अर्थात् आश्विन में रोग से पीड़ा, तुला अर्थात् कार्तिक में न वृद्धि, धनु के सूर्य अर्थात् पौष में हानि का भय, मकर के सूर्य अर्थात् माघ में धन का लाभ, कुंभ के सूर्य अर्थात् फाल्गुन में रत्नों का लाभ और मीन के सूर्य अर्थात् चैत्र में गृह निर्माण करना भयदायक होता है यह नारद का मत है।

फाल्गुन मास में कुंभ का सूर्य हो, आश्विन में सिंह अथवा कर्क के तथा पौष में मकर के तो पूर्व, पश्चिम द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। वैशाख में मेष और वृष मार्ग. दल में तुला और वृष के सूर्य हो तो दक्षिण-उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है। कर्क, मकर, सिंह, कुंभ के सूर्य में पूर्व, पश्चिम और द्वार में घर तुला, मेष, वृष, वृश्चिक के सूर्य में दक्षिण, उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। मीन, धनु, कन्या के सूर्य में गृह निर्माण करना निषिद्ध है। जो अनभिज्ञ लोग इस काल में गृह निर्माण करते हैं वह सदैव ही दुःख और शोक को भोगते हैं यह श्रीपति का मत है। किसी आचार्य का मत है कि मेष के सूर्य में चैत्र, वृष में ज्येष्ठ, कर्क में आषाढ़, सिंह में भाद्रपद, तुला में आश्विन, वृश्चिक में कार्तिक, मकर में पौष और कुम्भ में माघ मास में गृह आरम्भ शुभ होता है। कार्तिक में कन्या का सूर्य और माघ में धनु का सूर्य शुभ नहीं होता। घास-फूस अथवा लकड़ी के घर बनाने में मास शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह लंबे समय तक रहने योग्य नहीं होता। ईंट अथवा पत्थर द्वारा गृह निर्माण निन्दित मासों में नहीं करना चाहिए। ज्येष्ठ में पशु गृह, आश्विन में धान्य गृह, माघ में गौशाला और चैत्र में नदी के तटवर्ती भवन का निर्माण शुभ होता है। शुक्ल पक्ष में गृह आरम्भ करने से सरवोत शोक, कृष्ण पक्ष में चौरों का भय तथा शुक्र और गुरु दोनों ही उदिय हों तो शुक्ल पक्ष में दिन के समय गृह आरम्भ करना चाहिए।

शास्त्र का ज्ञाता होना एक बात है, उसके रहस्य को जानना नितान्त भिन्न बात है। जब तक किसी भी शास्त्र के मर्म को नहीं जाना जाता तब तक केवल जमीन की सतह की पैमाइश करने वाली बात ही रहती है। रहस्य उस विषय के मर्मज्ञ जनों की कृपा से अथवा पराम्बा केप्रसाद से उद्घाटित होता है। ज्योतिष एवं सामुद्रिक शास्त्र जैसे विषय का रहस्य तो गुरू-कृपा से ही ज्ञात हो सकता है। ज्योतिष को त्रिपाक्षिकी की विद्या कहते हैं अर्थात् छः सप्ताह तक यदि ज्योतिष का प्रयोग ना किया जाए तो यह विस्मृत हो जाती है। किसी भी विद्या को चिरयुवा रखने का अमोघ आधार अभ्यास है इसलिए जो कोई भी इस विद्या में निपुणता प्राप्त करना चाहता है उसे निरन्तर अभ्यास से परिपुष्ट करते रहना चाहिए।

ज्योतिष को वेदांग के सुरूप में सम्मानित किया गया है और इस विषय की व्यापकता सूर्य की रश्मियों की तरह अपरिमेय है। भगवान् भास्कर हमें प्रकाश ही नहीं देते, सविता के रूप में विविध वस्तुओं को उत्पन्न भी करते हैं और सप्ताश्ववाही रथ पर अधिष्ठित होने के कारण हमारे जीवन और सृष्टि को तरंगी सतरंगी सुन्दरता से सजाते भी हैं। ये भुवनस्य गोप्ता हैं इसलिए इनकी प्रचण्ड किरणों के आवरण को भेदकर ब्रह्माण्डीय किरणें तथा अल्ट्रा वायलेट रेज जैसी घातक एवं शक्तिशाली तरंगे हमें क्षति नहीं पहुंचा सकतीं।

सूर्य की किरणें हमारे अन्तर्वाह्य को प्रभावित करती हैं, इसके निर्माण में भी इनका प्रमुख योगदान रहा है, हमारा ही नहीं समस्त संसार का इतिहास इस कालात्मा के विराट रूप में सुरक्षित है। ऐसे ही हमारा अज्ञात भविष्य भी इसके अलौकिक रूप में वर्तमान है अन्यथा हमारे सीमित पुरज्ञान में वर्तमान का अस्तित्व हस्तलभ्य होता ही कहां है। जो कुछ भी अतीत और व्राह्यता बहुत सीमित है इसलिए हमारी व्यावहारिकता में केवल विगत और आगमिष्यत् हैं जबकि कालात्म के रूप में सभी कुछ वर्तमान है। ज्योतिषी इसी कालात्म को साक्ष्य मानकर हमारे लिए कुतूहल का विषय बन भविष्यत् का कथन करते हैं।

भारत में ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे इसलिए उन्होंने अविभाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किए। यह विषय व्याकरण का रहा पर शुद्ध रूप से ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे परिणामतः जिस तरह वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धरित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। लगध, वराह, पराशर, गर्ग, भृगु और रावण जैसे स्वनाम धन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान किया। धरती के नीचे कहां मीठे जल की धारा है, किस प्रकार की धरती मनुष्य के आवास के उपयुक्त है, धरती की गंध में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा अथवा प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही संबद्ध है।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

की ही एक शाखा है, ''सामुद्रिक।'' सामुद्रिक शब्द

भारत का तत्वसिद्धांत अंगूठे में आकाश तत्व का मान्ता है और इन पांच अंगलियों में यही एक पुल्लिंग है तथा आकाश तत्व

ज्योतिष की ही एक शाखा है, "सामुद्रिक।" सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसूत चिन्हों एवं संयोजनों को समझने का बांधक किस प्रकार बना — यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है और यह व्यक्ति की रूप रेखाओं की है को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्येत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुख मंडल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में सुन्दर पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिए जो उपमायें दी गई हैं वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं को सिद्ध करती हैं। कमल पत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह को ही संभव हुआ करता है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचना देता है। बिहारी की रचनाएं आँखें मुख मंडल को आकर्षक ही नहीं बनाती उसके कामी होने की सूचक भी हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखों में भार मंगल की सुदृढ़ एवं नेत्र स्थान से सीधे संबंध के कारण होता है और उनमें रंग चंद्रमा के कारण होता है जहां इन दोनों ग्रहों का संयोजन हुआ। वही व्यक्ति आकृति से मोहक और व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाह्य चिन्ह व्यक्ति की गृहस्थिति के जन्मकालिक सभी कारण को प्रकट करते हैं और उस स्थिति को जानने पर किसी के भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर यही है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजना और संघटनों का फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान-सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार बहुत पुराने समय से प्रचलित है। वाल्मीकि ने राम को आजानुबाहु और अरविन्द दलायताक्ष (घुटनों तक लंबे हाथ और कमल के पत्ते के समान विशाल आंख वाला) बतला कर सामुद्रिक शास्त्र के इस सिद्धान्त की पुष्टि की है कि घुटनों तक के लंबे हाथ वाला व्यक्ति सम्राट हुआ करता है। पैरों के तलवों की रेखाओं, लाल ललाट पर पड़ने वाली वलियों, नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन काल से है। हाथों की रेखा भी इस भविष्यत ज्ञान का एक माध्यम रहा है।

आधे सामुद्रिक शास्त्र में हस्त सामुद्रिक का [illegible] है और निश्चय से इसका श्रेय कीरों को दिया जाना चाहिए। इस शताब्दी में वही एक चमत्कारी सामुद्रिक शास्त्री था जिसकी शुद्ध और चमत्कारी भविष्यवाणियों ने पश्चिम वासियों को इस विज्ञान पर विश्वास करने के लिए बाध्य कर दिया। यद्यपि कीरों की हस्त सामुद्रिक भी भारत की ही देन है (वह दक्षिणी भारत के धर्मपत्र पर लिखी हस्त सामुद्रिक की कोई पुस्तक ले गया था और वही उसके ज्ञान का आधार बनी थी), फिर भी उसने पामिस्ट्री को वैज्ञानिक आधार दिया। उसकी दृष्टि से हाथ की रचना में निर्मित कोई भी चिन्ह बचा नहीं। हाथ का आकार, अंगुलियों की बनावट, अंगूठा, चमड़ी, रेखाओं का रंग रूप आदि सारे अंग-उपांग उसके अध्ययन का विषय बने और इन सबकी उसने सम्यक् संगति करके अपने निष्कर्ष को प्रामाणिक एवं कारणवादी सिद्ध किया।

मेरा अपना विचार है कि कीरों को छोड़कर आज की प्रचलित हस्त रेखा की पुस्तकों को पढ़कर कोई भी उतनी सूक्ष्म और विस्तृत भविष्यवाणी नहीं कर सकता (कर भी सकता है तो मुझे ज्ञात नहीं) इसके साथ ही यह भी है कि ज्योतिष जितना विस्तृत आधार देता है उतना हस्त रेखा नहीं देती। हस्त रेखा वस्तुतः रेडी रालेज है, हस्तरेखा देखने वाले को किसी कुण्डली या समय की आवश्यकता नहीं रहती यह इस विद्या की विशेषता है या अपने सामने फैले हुए हाथ को देखकर व्यक्ति के चरित्र एवं भविष्यत् के गूढ़ रहस्यों को कह देने के खतरे से भी आमने-सामने होना पड़ता है।

इस विद्या स समय का दुरुपयोग अधिक होता है और लोग सच्ची भविष्यवाणियों पर इस विषय की प्रामाणिकता की प्रशंसा नहीं करते बल्कि एक गलत बात का उदाहरण देने लगते हैं। अन्ततः यह भी एक साइंस आफ एस्टीमेट है।

हस्त सामुद्रिक को सम्पूर्ण ज्योतिषीय आधार देने में कीरों ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं रखी। हाथ का रूप एवं आकार हमारे जन्म-लग्न की तरह भविष्य कथन का आधार बनता है अर्थात हाथ का सामान्य आकार व्यक्ति के चरित्र एवं प्रकृति का ज्ञान कराता है तो रेखायें दशा अन्तर्दशा घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराती हैं। अंगुलियों में क्रियात्मकता है और इनका लचीलापन मनुष्य की विकसित बुद्धि का साहचर्य पाकर संसार को मानववृत्त रूप मज्जा से संवारता है।

[illegible] तत्वसिद्धांत अंगूठे में आकाश तत्व का मान्ता है और इन पांच अंगुलियों में यही एक पुल्लिंग है तथा आकाश तत्व का प्रतिनिधि होने के कारण शून्य प्रतीक है और शून्य क्रियाशीलता की प्रत्येक मुद्रा का आधार है। तंत्र में बनाई जाने वाली मुद्राएं और अनिवार्य रूप से किया जाने वाला कर न्यास हमारे हाथ के महत्व को सिद्ध करता है। "कराग्रे वसति लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती मूले तंत्र स्थितो ब्रह्मा" हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल भाग में ब्रह्मा का निवास रहता है। इस रूप में सोचने वाले भारतीय प्रातःकाल सबसे पहले अपने हाथ को देखने की व्यवस्था करते हैं।

आज की पामिस्ट्री में और भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में मूलभूत अंतर है। जिसे समुद्र शास्त्र माता व पिता की रेखा मानता है। उसे पामिस्ट्री मस्तिष्क या शिर और जीवन की रेखा बतलाता है, भारतीय दृष्टि की जीवन रेखा पामिस्ट्री के अनुसार हृदय रेखा होती है। रेखाओं के अन्य स्थानों पर होने वाले चिन्हों के संबंध में कोई मूलभूत अंतर नहीं है।

ग्रहों के स्थानों का नामकरण पामिस्ट्री की अपना स्थापना है। इस विषय में सामुद्रिक शास्त्र केवल इनके आकार का फलित बतलाता है, नामकरण नहीं करता। हमारे हाथ के नीचे भाग मणिबंध के पास चन्द्र और शुक्र के स्थान माने जाते हैं ये दोनों जलीय ग्रह हैं और इनसे व्यक्ति को कल्पनाशीलता और कामुकता का ज्ञान होना एक व्यवहारिक बात रहती है। इससे आगे मंगल का स्थान तेजस्तत्वीय ग्रह का स्थान है। अंगूठे और तर्जनी के बीच के स्थान का पुष्ट होना व्यक्ति की आक्रामक शक्ति को सूचित करता है तो इसके नीचे कनिष्ठा अंगुली की सीध में व्यक्ति की निरोधक शक्ति को। हमारी हथेली के तीन चौथाई भाग में इन तीन ग्रहों का आधिपत्य है अंगुलियों के आधारभूत स्थान शेष चार ग्रहों के।

वृष वास्तु चक्र

गृह निर्माण के पूर्व जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिनें। प्रथम तीन नक्षत्र वृष के शरीर में रहते हैं। उनमें गृह आरम्भ किया हो तो घर में अग्नि काण्ड का भय रहता है। अगले चार नक्षत्र वृष के अगले पैर में होते हैं उनमें गृह आरंभ हो तो घर जनशून्य रहता है। इसके बाद चार नक्षत्र वृष के पिछले पैर में होते हैं

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

इनमें किया गया गृह आरम्भ धन और शांतिदायक रहता है। उसके बाद तीन नक्षत्र वृष की पीठ पर स्थित होते हैं इनमें यदि गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी के व्यवसाय में उन्नति होती है। उसके बाद के चार नक्षत्र वृष के दाहिनी कुक्षि में स्थित होते हैं उसमें गृह आरम्भ हो तो लाभ रहता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष की पूंछ में स्थित होते हैं। इनमें गृह आरंभ हो तो गृह स्वामी नाश को प्राप्त होता है। इसके बाद के चार नक्षत्र वृष की बायीं कुक्षि में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ करना दरिद्रपना देता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष के मुख में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी को अनेक पीड़ाएं भोगनी पड़ती हैं। सारांश यह है कि जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसके सात नक्षत्र अशुभ, उसके बाद ग्यारह नक्षत्र शुभ और पीछे के दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। गृह निर्माण करने के लिए सूर्य किस राशि पर स्थित है इस पर विचार कर लेना भी श्रेष्ठकर रहता है। मेष के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदायक होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन-धान्य की वृद्धि करता है। मिथुन के सूर्य में घर बनाने वाले को मृत्यु सम कष्ट पहुंचाता है। कर्क के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदाता रहता है। सिंह के सूर्य में घर बनाना दास-दासियों की वृद्धि करता है। कन्या के सूर्य में घर बनाना रोग उत्पन्न करता है। तुला के सूर्य में गृह निर्माण शुभकारी होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन की वृद्धि करता है। धनु के सूर्य में घर बनाना हानिकारक रहता है। मकर के सूर्य में घर बनाना व्यवसाय में वृद्धि करता है। कुंभ के सूर्य में घर बनाना रत्नों का लाभ पहुंचाता है। मीन के सूर्य में घर बनाना भय उत्पन्न करता है। चैत्र मास में घर बनाने से गृहकर्त्ता को व्याधि का भय। वैशाख मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-रत्न आदि का लाभ। जेठ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मरण तुल्य कष्ट। आषाढ़ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को श्रेष्ठ एवं अधिक भद्र की प्राप्ति लेकिन पशुओं को हानि। इसलिए आषाढ़ मास में पशुओं के लिए घर न बनाना। सावन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मित्र से लाभ। भाद्रपद मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को हानि का भय। आश्विन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता की स्त्री की मृत्यु। कार्तिक मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-धान्य का लाभ। अगहन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन का लाभ। पौष मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को चोरों से भय। माघ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को विविध भोगों की प्राप्ति परन्तु अग्नि का भय। फाल्गुन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को रत्न आदि की प्राप्ति। मुहूर्त मार्तण्ड में, पौष में (मकर के सूर्य में) गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। पत्थर, ईंट आदि का घर निन्द मास में निर्माण नहीं करना चाहिए। तृण, काष्ठ आदि के गृह निर्माण के आरम्भ में मास दोष नहीं देखा जाता। यदि सूर्य कर्क, सिंह, मकर अथवा कुंभ राशि का है तो पूर्व या पश्चिम मुख के द्वार का गृह निर्माण करना शुभ रहता है। तुला, वृश्चिक और मेष में का सूर्य हो तो दक्षिण या उत्तर मुख का गृह बनाना। यदि मिथुन, कन्या, धनु और मीन का सूर्य हो तो गृह निर्माण नहीं करना चाहिए। शुक्ल पक्ष का गृह निर्माण करने से सुख मिलता है और कृष्ण पक्ष में गृह निर्माण करने से चोरों का भय रहता है। नारद आदि ऋषियों का मत है कि फाल्गुन, वैशाख, माघ, सावन, कार्तिक इन पाचों मासों में गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। श्रीपति का मत है कि ब्राह्मण आदि वर्णों को क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण मुख का द्वार बनाना शुभ है। जैसे—ब्राह्मण को पश्चिम मुख, क्षत्रिय को उत्तर मुख, वैश्य को पूर्व मुख और शूद्र को दक्षिण मुख बनाना शुभ है। गृह निर्माण करते समय रवि, चन्द्रमा, वृहस्पति और शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई भी ग्रह निर्बल हो, अस्तगत हो अथवा नीचगस्त हो तो क्रमशः गृह स्वामी की स्त्री सुख और धन का नाश होता है। चन्द्रमा और ग्रह का नक्षत्र ये दोनों यदि आगे बढ़े तो उस ग्रह में गृह स्वामी की स्थिति नहीं होती। अगर उपरोक्त दोनों नक्षत्र पीछे पड़े तो चोरों का भय रहता है। जिस समय गृह बनाना प्रारम्भ करना हो उस समय की कुण्डली बनानी चाहिए। यदि उस कुण्डली के लग्न में सूर्य पड़े तो वज्रपात, चन्द्रमा पड़े तो कोष की हानि, मंगल पड़े तो मृत्यु का भय, शनि पड़े तो दरिद्रता, वृहस्पति पड़े तो धर्म अर्थ और काम की प्राप्ति, शुक्र पड़े तो सुत की उत्पत्ति, बुध पड़े तो बाहुबल और आयु की वृद्धि होती है। द्वितीय भाव में सूर्य पड़े तो हानि का भय, चन्द्रमा हो तो शत्रु का नाश, मंगल हो तो अनेक प्रकार के विघ्न, बुध हो तो अतुल संपत्ति, वृहस्पति हो तो धर्म का समागम, शुक्र हो तो काम सुख की प्राप्ति होती है। तीसरे भाव में शुभ ग्रह पड़े तो थोड़ा शुभ फल करते हैं, पाप ग्रह पड़े तो विशेष शुभफल करते हैं। चतुर्थ स्थान में वृहस्पति हो तो राजा को पूजित, बुध हो तो सर्वथा लाभ प्राप्ति करने वाला, शुक्र हो तो भूमि का लाभ, सूर्य हो तो मित्र से वियोग, मंगल हो तो मित्र से भेद, चन्द्रमा हो तो वृद्धि का नाश, शनि हो तो महा लाभ मिलता है। पंचम भाव में वृहस्पति हो तो वस्त्र और धन का लाभ, मित्र से समागम, शुक्र हो तो पुत्र और धन की प्राप्ति, बुध हो तो स्वर्ण आभूषण की प्राप्ति, सूर्य हो तो पुत्र को कष्ट, चंद्रमा हो तो कलह का आगमन, मंगल हो तो काम सुख में वृद्धि, शनि हो तो काम सुख का नाश करता है। छठे स्थान में सूर्य हो तो राजा को सम्मान, चंद्रमा हो तो पुष्टि, मंगल हो तो शत्रु का नाश, वृहस्पति हो तो धनागम, शुक्र हो तो विद्या का लाभ, बुध हो तो मान का ज्ञान प्राप्त होता है। सप्तम स्थान में वृहस्पति हो तो उच्च वाहन की प्राप्ति, बुध हो तो मध्यम वाहन की प्राप्ति, शुक्र हो तो भूमि और काम सुख की प्राप्ति, रवि हो तो यश का नाश, मंगल हो तो लड़ाई-झगड़े का भय, चंद्रमा हो तो मूर्खता से हानि और शनि हो तो शत्रु से भय रहता है। अष्टम भाव में सूर्य हो तो शत्रु से भय, अनेक विपत्तियों का आगमन, चंद्रमा हो तो सर्वस्व की हानि, मंगल-शनि हो तो महान भय की प्राप्ति, बुध हो तो महान धन की प्राप्ति, वृहस्पति हो तो शत्रु पर विजय का लाभ और शुक्र हो तो परिजनों से सुख मिलता है। नवम भाव में वृहस्पति हो तो बुद्धि और भाग्य की वृद्धि, बुध हो तो नाना प्रकार के भाग की प्राप्ति, शुक्र हो तो थोड़ा भाग उदय, चन्द्रमा हो तो धातु का श्रय, सूर्य हो तो धर्म की हानि, मंगल हो तो सामर्थ्य का नाश, शनि हो तो इच्छा पूर्ति में बाधा उत्पन्न करते हैं। दसम भाव में शुक्र हो तो उत्कृष्ट शयान, वृहस्पति हो तो बहुत सुख, बुध हो तो विजय की प्राप्ति, सूर्य हो तो धन की वृद्धि, चन्द्रमा हो तो कोष की वृद्धि, मंगल हो तो बाहुबल की वृद्धि, शनि हो तो यश का नाश होता है। एकादश स्थान में सभी ग्रह शुभ फलदायी होते हैं। बारहवें स्थान में बैठे हुए सभी ग्रह उदासी उत्पन्न करते हैं।

अगर वृहस्पति, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि क्रमशः लग्न षष्ट, सप्तम, चतुर्थ और तृतीय भाव में हो तो ऐसे समय में घर बनाने से वह घर सौ वर्ष तक रहता है। यदि शुक्र, शनि, सूर्य, मंगल और बृहस्पति क्रमशः लग्न तृतीय, षष्ट और पंचम भाव में हो तो उस घर की आयु 200 वर्ष होती है। लग्न में शुक्र, दशम में बुध, एकादश में सूर्य और लग्न को छोड़कर बाकी किसी केन्द्र स्थान में बृहस्पति हो

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन

उस घर की आयु सौ वर्ष होती है। यदि चौथे स्थान में बृहस्पति, दशवें में चन्द्रमा, मंगल और एकादश स्थान में शनि हो तो उस घर की आयु 80 वर्ष होती है। यदि उच्च में शुक्र लग्न का हो अथवा उच्च का बृहस्पति चतुर्थ में हो अथवा उच्च का शनि एकादश में हो तो ऐसे घर में सदैव लक्ष्मी का निवास रहता है। एक भी गृह शत्रु के नवांश में स्थित होकर सातवें या दशवें स्थान में हो तो उस समय बना हुआ घर एक वर्ष के भीतर ही दूसरे के हाथ में चला जाता है। ध्यान रहे ब्राह्मण आदि वर्ण स्वामी यदि दुर्बल हो तो ऐसा होता है यदि बलि हो तो उपरोक्त फल नहीं मिलता। पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, रोहिणी, उत्तरा भाद्रपद, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा, पूर्वाषाढ़ इन नक्षत्रों में से किसी एक पर बृहस्पति बैठा हो और उस समय में बृहस्पतिवार हो तो उस समय घर का प्रारम्भ करने से पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति और राज्य के तुल्य सुख मिलता है। विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में से किसी एक में शुक्र बैठा हो और उस दिन शुक्रवार ही हो तो घर आरम्भ करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है। रामदेवाज्ञ के मत से विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा और आर्द्रा, नारद के मत से अश्विनी, शतभिषा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, धनिष्ठा और पुनर्वसु वशिष्ट के मत से आर्द्रा विशेष रूप से, दूसरे के मत से पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और पुनर्वसु नक्षत्रों में घर आरंभ विशेष शुभ फलदायी होता है। मूल, रेवती, कृतिका, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त और मघा इन सात नक्षत्रों में से किसी एक में मंगल स्थित हो और उस दिन मंगलवार हो उस दिन घर आरंभ करने से वह घर अग्नि से जल जाता है और पुत्र-पौत्र आदि का नाश होता है। ये नारद का मत है। हस्त, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अश्विनी और रोहिणी इनमें से किसी एक नक्षत्र में बुध स्थित हो और उस दिन बुधवार हो तो घर आरंभ करने से गृह स्वामी को धन, पुत्र और सुख मिलता है ये वशिष्ट का मत है। यदि पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, भरणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, स्वाती इन नक्षत्रों में से किसी एक में शनि बैठा हो और उस दिन शनिवार ही हो तो उस घर में उस दिन घर आरम्भ करने से भूत-प्रेत का वास होता है और गृह में निवास करने वालों को भूत और राक्षस प्रताड़ित करते हैं। यह भी वशिष्ट का मत है। हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ और मूल इनमें से किसी एक नक्षत्र में मंगल बैठा हो और उस दिन मंगलवार ही हो तो उस दिन घर आरम्भ करने से गृह स्वामी को अग्नि से पीड़ा और पुत्र शोक भोगना पड़ता है। ये रामदेवाज्ञ का मत है। रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, हस्त इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में स्थित बुध बैठा हो और उस दिन बुधवार ही हो तो उस दिन गृह आरम्भ करने से गृह स्वामी को पुत्र सुख और धन सुख मिलता है। यह भी देवा रामदेवाज्ञ का मत है। सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र इनमें से कोई भी ग्रह यदि निर्बल हो तो, नीच स्थागत अथवा हस्तगत हो तो क्रमशः गृहपति, उसकी पत्नी, धन और सुख का नाश होता है। भृगु के मत से सप्त शलाका का चक्र बनाकर और उस पर कृतिका से सात-सात नक्षत्र पूर्व आदि दिशाओं में स्थापित करें यदि वास्तु चंद्रमा का नक्षत्र आगे या पीछे हो तो शुभ नहीं होता। कृतिका से अश्लेषा तक पूर्व दिशा की, मघा से विशाखा तक दक्षिण दिशा की, अनुराधा से श्रवण तक तथा पश्चिम दिशा और धनिष्ठा से भरणी तक उत्तर दिशा के नक्षत्र होते हैं। यदि वास्तु का नक्षत्र पूर्व दिशा के नक्षत्रों में हो तो पश्चिम दिशा के नक्षत्रों में गृहारम्भ अशुभ होता है। यदि पश्चिम दिशा के किसी नक्षत्र में वास्तु नक्षत्र है तो पूर्व दिशा के नक्षत्रों में गृह आरम्भ अशुभ होता है। इसके विपरीत पूर्व में हो तो उत्तर में और पश्चिम में हो तो दक्षिण में गृह आरम्भ शुभ होता है। वज्र, व्याघ्रात, शूल, व्यतिपात, अतिगंड, विश्वकुंभ, गदय, परिघ इन योगों में गृह आरम्भ का निषेध किया गया। यदि गृह निर्माण के समय कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमा स्थित हो, केन्द्र में वृहस्पति शेष ग्रह अपने मित्र अथवा उच्च अंश में हो तो ऐसे समय में बना हुआ गृह धन-धान्य से पूर्ण रहता है। यदि गृह आरम्भ के समय उपरोक्त ग्रह अन्य राशि में स्थित हो तो गृह स्वामी दिवालिया हो जाता है। यदि गृह निर्माण के समय एक भी ग्रह दशम या सप्तम में होकर शत्रु के भाव में हो तो वह ग्रह वर्ष भर में दूसरे के अधिकार में चला जाता है। वास्तु चक्र में सूर्य को यदि नक्षत्र तक गिनें पहले सात नक्षत्र अशुभ, अगले ग्यारह नक्षत्र शुभ और अंतिम दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। सूर्य के नक्षत्र को चंद्रमा तक गिनें यदि पहले तीन नक्षत्रों में गृह आरम्भ का नक्षत्र हो तो अग्नि का भय, अगले चार नक्षत्रों में घर का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में धन लाभ, अगले चार नक्षत्रों में लक्ष्मी की प्राप्ति, अगले तीन नक्षत्रों में शून्यता, अगले चार नक्षत्रों में गरीबी और अगले तीन नक्षत्रों में मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है और वह वृष वास्तु चक्र के नाम से प्रसिद्ध है।

सम्पूर्ण अंगों वाले वृषभ के शरीर में सूर्य नक्षत्र से तीन नक्षत्र शीर्ष में रखें उनमें किया गया गृह आरम्भ अग्निकाण्ड में समाप्त हो जाता है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से शून्यता प्राप्त होती है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में लक्ष्मी प्राप्ति, अगले चार नक्षत्रों में लाभ, अगले तीन नक्षत्रों में गृह स्वामी का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में निर्धनता और अगले चार नक्षत्रों में मृत्यु समय कष्ट मिलता है।

महाऋषि पराशर के मत से गृह आरम्भ करने वाली तिथि में चार मिलाकर उस संख्या को दुगुना कर उसमें गृहपति के नाम की अक्षरों की संख्या को जोड़कर तीन का भाग दें अतः एक शेष बचने पर स्वर्ग, दूसरे शेष में पाताल और शून्य शेष में मृत्यु लेकिन उस वास्तु पुरुष का वास समझें। वास्तु पुरुष के शरीर, पूंछ, दक्षिण, कुकक्षी और पृष्ठ भाग में लंबी आयु चाहने वाले पुरुष को गड्ढा नहीं खोदना चाहिए। वास्तु पुरुष को 28 भागों में बचे दस भाग शरीर की ओर और 17 भाग पूंछ की ओर छोड़ दें बाकी भाग में गड्ढा खोदें। ज्योति प्रकाश के मत से तिथि संख्या को पांच से गुणा करें और कृतिका आदि (शब्द शलाका चक्र के अनुसार) नक्षत्र संख्या को जोड़कर उनमें 12 और जोड़ें और इस योग को नौ से भाग दें यदि शेष 1, 4, 7 बचे तो जल में, 2, 5, 8 शेष बचे तो स्थल में, 3, 6, 0 शेष बचे तो आकाश में कुर्म का निवास होता है। इसका फल है जल में लाभ, स्थल में हानि और आकाश में मरण होता है। प्रसाद और गृह का आरम्भ और समाप्ति हरिप्रबोदनी एकादशी के बाद और हरिशयनि एकादशी से पूर्व ही कर लेना चाहिए। चैत्र मास में गृह आरम्भ करने से शोक, वैशाख में धन लाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशु हानि, सावन में पशु वृद्धि, भाद्रपद में शून्यता, आश्विन में कलह, कार्तिक में भ्रातृ नाश, मार्गशीर्ष और पौष में अन्य लाभ, माघ में अग्नि भय तथा फाल्गुन में श्री लाभ होता है।

जिस भूमि पर कठिनता से जाया जाये ऐसी भूमि गृह निर्माण के लिये त्याज्य होती है। मनोरम भूमि पुत्रों को देने वाली, दृढ़हा भूमि धन को देने वाली, उत्तर-पूर्व की ओर नीच भूमि पुत्र और धन दोनों को देती है। अपने वर्ण की भूमि अपने वर्ण को शुभद होती है,

अन्य वर्ण को अधोगति देती है। जिस भूमि पर पुष्प और कुशकासा उगती है उस भूमि पर ब्रह्म तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होते हैं। दुग्ध युक्त भूमि पर धीर पुत्र और फल युक्त भूमि पर घाती पुत्र उत्पन्न होते हैं। नदी के कटाव की भूमि पर गृह निर्माण करने से मूर्ख संतान को जन्म देते हैं। जिस भूमि पर पत्थर अधिक हों वह दरिद्री संतान को उत्पन्न करते हैं। गड्ढे युक्त भूमि पर गृह निर्माण करना झूठे और मलीनवेशी पुत्रों को उत्पन्न करते हैं। जो भूमि छिद्र युक्त हो वे पशुओं की और सुख का नाश करती है तथा संपत्ति को दुःखदायी होती है। जो भूमि रेतीली और टेढ़ी हो वह विद्याहीन पुत्रों को जन्म देती है। सर्प, बिल्ली, लाकूट के समान भूमि भय को देने वाली और संतान को कष्टदायक होती है। मूसल के समान भूमि कुल घातक पुत्रों को जन्म देती है। रूखी भूमि दुर्गवैशनी पुत्रों को जन्म देती है। चैत्य भूमि गृह स्वामी को भय उत्पन्न करती है। जिस भूमि पर वामी हो वह विपत्ति को देती है। धूर्त के गृह के समीप गृह निर्माण करने से पुत्र-सुख नहीं मिलता। चौराहे पर गृह निर्माण करने से कीर्ति का नाश, देव मंदिर पर घर बनाने से उद्वेग, राजा के स्थान पर गृह बनाने से धन हानि, गड्ढे पर गृह बनाने से निकट अनेक विपत्ति और जिस भूमि पर अधिक गड्ढे हों उसमें गृह निर्माण करने से पिपासा और कछुए के सादृश्य भूमि पर गृह-निर्माण करने से धन का नाश होता है।

भूमि का परीक्षण

जिस भूमि पर गृह निर्माण करना हो उसमें कहीं पर भी एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसे पुनः उसी खोदी हुई मिट्टी से भरना चाहिए। यदि मिट्टी अधिक है तो श्रेष्ठ फल, पूरी हो जाये तो मध्यम फल और कम पड़ जाये तो अदम फल मिलता है। दूसरी विधि है कि उस गड्ढे को जल से भरकर सौ कदम आगे जाकर पुनः लौटकर देखना चाहिए कि गड्ढे का जल कम तो नहीं हो गया यदि जल कम हो गया हो तो भूमि शुभ फलदायक नहीं होती अथवा जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसमें हल जुतवाकर उसमें सभी आनाजों को बो दें। यदि वे भी 3, 5, 7 नग में न उगे तो उस भूमि पर गृह निर्माण नहीं करना। यदि बोये हुए बीजों में 2-3 दिनों में अंकुर फूट आयें तो भूमि श्रेष्ठ होती है। पांच रात्रि में उगे तो मध्यम और सात दिन में उगे तो अधम होती है। विरीह, साटी, मूंग, गोदूम, सरसों, तिल, जौ ये सात औषधियां हैं और यही सर्प बीज कहे जाते हैं। उपयुक्त सर्प बीजों को बोने के बाद उनके फूलों को देखना चाहिए। इस भूमि के किसी गड्ढे पर स्वर्ण अथवा तांबे के रंग के पुष्प दिखाई दें तो उस भूमि पर गृह निर्माण करना गृह स्वामी के लिये लाभप्रद रहता है। उस भूमि के धूल के कण को लेकर आकाश में फेंकें और देखें कि धूल अदम, मध्यम अथवा उद्धव इन तीनों में कहां जाती है। जहां जाये वही मति को भूमि पर गृह निर्माण कार्यकर्त्ता की होती है। भूमि में प्रवेश करते समय पुण्यावाचान, शंख और अध्ययन के शब्द, जल पूर्ण घड़ा, ब्राह्मण समुदाय, वीणाक शब्द, पुत्री युक्त स्त्री, माता-पिता अथवा गुरुजन आ जाये वह भूमि शुभ फल को देने वाली होती है। यदि प्रवेश करते समय स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए कन्या मिले, सुस्वादु और सुगंधित पुष्प, फल, सोना, चांदी, मृग, मोती अथवा अच्छे भोजन पदार्थों का दर्शन शुभ फलदायक रहता है। भूमि या गृह प्रवेश के समय मृग, सोरमा, चंदन बंधा हुआ पशु, पगड़ी अथवा भोज्य पदार्थों का दर्शन भी कल्याणप्रद होता है। भूमि या गृह प्रवेश करते समय मांस, दूध, दही, पालकी, छतर, मछलियां, स्त्री-पुरुष का जोड़ा दिखाई पड़े तो आयु और आरोग्यता बढ़ती है। भूमि अथवा गृह प्रवेश करते समय कमल का फूल, सफेद बैल, ब्राह्मण, मृग दिखलाई पड़े अथवा गीत गाने का शब्द सुनाई पड़े और हाथी, घोड़ा और सौभाग्यवती स्त्री दिखलाई पड़े तो धन सुख और अरोग्यता बढ़ती है। गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय वेश्या, अंकुश, दीपक, पुष्प पाला, आभूषण धारण किये कन्या दिखाई पड़े अथवा वर्षा हो तो उत्तम फल मिलता है।

यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय श्रेष्ठ, वाणी, शत्रु, मदिरा, चमड़ा, हड्डी, तृण, भूसी, सर्प अथवा कोयला दिखाई दे तो अशुभ फल मिलता है। यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय नमक, कीचड़, कपास, नापुंसक, तेल, औषधि, विष्टा, काले तिल, रोगी अथवा उपटन लगाये कोई व्यक्ति मिले तो अशुभ फल मिलता है। भूमि अथवा गृह प्रवेश के समय पापी, जटाधारी, पागल, मुण्डन कराया व्यक्ति, ईंधन, काला पक्षी दिखाई पड़े तो कल्याणप्रद नहीं होता। जलती हुई लकड़ी, धुएं से युक्त अथवा अधजली लकड़ी गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय यदि मनुष्य देखे तो उसे मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यदि उपयुक्त अपशकुन गृह आरम्भ के समय हो अथवा गृह प्रवेश के समय हो तो उस भूमि पर गृह कल्याण का विचार अथवा गृह प्रवेश का विचार त्याग देना चाहिए।

'नींव खोदने की विधि'

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अच्छा लग्न व अच्छा मुहूर्त में स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पूर्वा अभियुक्त होकर क्लश की स्थापना करें, कलश के ऊपर गणेश जी की और नव ग्रहों का पूजन करें, उस परिक्षित भूमि को गाय के गोबर से लीपें और उस भूमि पर ब्राह्मण और देवता का पूजन करे और उस भूमि की शुद्धि के लिये पांच गव्य सर्प औषधि पांचामृत और जल से उस भूमि के ऊपर छिड़काव कर उसे शुद्ध करें। स्थापित क्लश में वरूण का आह्वान करें उसी में पर्वत, वन, नदी, नाग से युक्त आन्दद से युक्त कमलों से विभूषित, सागरों से युक्त भूमि की पूजा करें, प्रार्थना करें। दिगपालों और कुलदेवी तथा देवता और नागों का पूजन करें, उनकी बलि देकर सद् अष्ट अध्यायी का विधिप्रद पाठ करें और वास्तु पुरूष का पूजन करें। ऊं नमो भगवते वास्तु पुरुषये कपिलये चे, पृथ्वी धरये देवेय प्रधान पुरूषये चे, सकल गृह प्रसाद पुष्पकरोधान कर्मणि गृह आरम्भ प्रथमकाले सर्वासिद्धि प्रदायक सिद्ध देव मनुष्यैश्चे पूज्य नमो दिवा निशिय गृह स्थाने प्रजापति क्षेत्रे अस्मीन तिष्ठ साम प्रतम इहा गच्छ इमां पूजां गृहेण वर दो भव मंत्र से प्रार्थना करें, वास्तु पुरुष नमस्ते अस्तु------- हे वास्तु पुरुष भू शय्यागत् हे प्रभु मुझे घर से सर्वथा धन-धान्य से पूर्ण रखना यह कहकर पुष्प चढ़ावें और प्रार्थना करने के पश्चात् चावल की पीढ़ी की नग के आकार का वास्तु पुरुष बनावें। वास्तु मंत्रो का आह्वान करें, अपनी शक्ति के अनुसार पूजन करें। आह्वान करते समय विशेष ध्यान रखें और मन में विचार करके उस भूमि पर अधोमुख लेटे हुये वास्तु पुरुष का आह्वान कर रहे हैं। विश्नोरण इत्यादि मंत्र से वास्तु के स्वर्ण वास्तु के प्राण और पूर्व दिशा में प्रथम स्थित सर्प के स्वर्ण का पूजन करें अथवा अपने सामर्थ्य के अनुसार नमोअस्तु सर्पेभ्यो----आदि मंत्र से वास्तु का पूजन करें, कुकशी प्रदेश में नाग मंत्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी को खोदें। गृह कुपतहाग आदि आरंम्भ में वास्तु पुरुष की स्थिति '' भाद्रपद से तीन मासों में क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में वास्तु पुरुष का मुख होता है। दूसरी दिशा के मुख वाले गृह को आरंभ करने से दुःख, शोक और भय उत्पन्न होते हैं। वृष से तीन-तीन राशि के क्रम को वेणी बनाने से तीन -तीन राशि के सूर्य गृह में और मीन को तीन-तीन राशि सूर्य देवालय और मकर आदि तीन-तीन राशि सूर्य तड़ाग लेना उत्तम है। युक्त तान-तीन राशियों के सूर्य में वास्तु पुरुष पूर्व आदि दिशाओ में शरीर करके सोता है।

''वास्तु पुरुष मुख ज्ञानार्थ चक्रमीदम''

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो?

लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो?

लेखक: दैवज्ञ शिरोमणि, वास्तु इंजीयिर पंडित गोपाल शर्मा, मियांवाली नगर, रोहतक रोड, दिल्ली-41, दूरभाष : 5687077, 5688060 फैक्स : 5670033

हर आदमी को एक सफल जीवन जीने के लिए निरोगी काया, सरल और तनावरहित दिनचर्या, घर में सुख-सुविधा के सभी साधन उपलब्ध, निष्कंटक कारोबार या नौकरी की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त प्रकृति, विधाता,. पितृपक्ष, मातृपक्ष व बन्धुपक्ष का सहयोग या किसी प्रकार की आपदा, विपदा, अस्वस्थता आदि का न होना परमेश्वर का वरदान माना जाता है। यह सुखी और सफल जीवन महालक्ष्मी की कृपा के बिना संभव नहीं है।

लक्ष्मी, धन, दौलत किसी की बपौती या अधिकार की वस्तु नहीं है। देखने में आता है कि कुछ लोग जीवन भर परिश्रम करते रहते हैं, परन्तु उनकी बुनियादी जरूरतें भी भली भांति पूरी नहीं हो पातीं, दूसरी तरफ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धन दौलत देखना भी पसंद नहीं करते, परन्तु लक्ष्मी उनका पीछा ही नहीं छोड़तीं। इसके पीछे भाग्य, पुरुषार्थ के अतिरिक्त भी एक बड़ा कारण होता है -- **वह मकान जिसमें वे रहते हैं।**

लक्ष्मी, धन-दौलत, कारोबार व्यक्ति के अलावा घर, दुकान, फैक्ट्री, गोदाम आदि की बनावट तथा उसके आस-पास के वातावरण पर भी निर्भर करता है। मकान तो हर व्यक्ति की आवश्यकता होती है जिसमें रहकर मनुष्य सारा सोच-विचार करता है। वहां आराम करके वह दिन भर की थकान मिटाता है तथा आगे के लिए योजनाएं बनाता है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में दैवी शक्ति और हृदय में खुद विष्णु भगवान् निवास करते हैं उसी तरह हर घर में लक्ष्मी, कुबेर, ब्रह्मा, यमराज, इन्द्र, वरुण, वायु, गंगा तथा अग्नि आदि सभी कुछ रहता है। प्राचीन ग्रन्थों के अतिरिक्त तीस वर्षों के आध्यात्मिक जीवन का निचोड़ भी इसमें शामिल है। पुराने या किसी भी नये मकान में किया गया एक उचित परिवर्तन भी आपका सम्पूर्ण जीवन बदल सकता है। खुले प्लाट या मकान, दुकान व कारखाने का कोई एक सिस्टम जैसे द्वार, पानी का निवास आदि। केवल एक सिस्टम ठीक होने से जीवन रूपी पूरी मशीनरी वर्किंग हालत में आ सकती है।

ईश्वर ने मानव को अपार प्राकृतिक सम्पदा प्रदान की है। हमारी पृथ्वी धन-दौलत से भरी हुई है। यदि मनुष्य ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक सम्पदा का प्रयोग करे तो निश्चय ही सुखी, निरोग एवं सम्पन्न हो सकता है। सूर्य, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि, पेड़-पौधे आदि मनुष्य को दीर्घजीवी और निरोग बनाने के लिए हैं। सूर्य जीवनदाता है। सूर्य के अभाव में मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य के प्रकाश में रोगाणुओं को नष्ट करने की अपार क्षमता होती है। वह हमें प्रकाश एवं ऊष्मा प्रदान करता है। हमारा शरीर भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक पंचतत्वों से बना है। अत: यह आवश्यक है कि पंच तत्वों से समन्वय बना रहे। जब तक यह समन्वय रहता है, हम निरोग एवं शक्ति सम्पन्न बने रहते हैं। जब इनमें संतुलन का अभाव हो जाता है, तब शारीरिक क्रियाओं में बाधा आ जाती है और हम बीमार हो जाते हैं। वास्तुशास्त्र हमें पांच भौतिक तत्वों में संतुलन बनाये रखने की शिक्षा देता है। वास्तुशास्त्र प्रकृति अनुसंधान पर आधारित उच्च कोटि का विज्ञान है।

वास्तुशास्त्र प्राकृतिक नियमों का पालन करता है। गुरुत्वाकर्षण बल चुम्बकीय बल, विद्युत तरंगों का प्रवाह वायु प्रवाह, जल प्रवाह, पर्यावरण का प्रभाव, सूर्य रश्मियों का प्रवाह, दिशाओं के महत्व आदि पर ही वास्तुशास्त्र के नियम आधारित हैं।

उगते सूर्य की किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं। इसके पीछे पूर्व, ईशान कोण को अधिक खुला रखने का नियम कार्य करता है। जिससे सौर ऊर्जा अधिकतम रूप में भवन और उसके निवासी को मिल सके। मकान के पूर्वी भाग को अपेक्षाकृत नीचा रखने के पीछे रहस्य भी यही है, ताकि पूर्व दिशा में ज्यादा खिड़कियों और दरवाजों के लिए स्थान रह सके। ढलते हुए सूर्य से इन्फ्रा रेड किरणें निकलती हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। इसलिए मकान के पश्चिम में खुली जगह कम छोड़ी जाती है।

विश्व का आधार स्रोत ऊर्जा है। यह ऊर्जा उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव की ओर चुम्बकीय लहरों के रूप में लगातार प्रवाहित होती रहती है। इस ऊर्जा को विद्युत-चुम्बकीय प्रवाह कहते हैं। यदि भवन का उत्तरी भाग नीचा और दक्षिणी भाग ऊंचा होगा तो यह ऊर्जा सहज ही भवन में प्रवेश कर निवासियों को शुभ लाभ देगी। यदि भवन का उत्तरी भाग अधिक ऊंचा होगा तो ऊर्जा का प्रवाह रुक जायेगा।

मानव शरीर में भी विद्युत तरंगें उसी रूप में प्रवाहित होती हैं, जिस रूप में भूमि पर प्रवाहित होती हैं। लेकिन यदि दोनों तरंगों का समन्वय नहीं होगा तो हमारा मस्तिष्क सही रूप से कार्य नहीं कर पायेगा। यही कारण है कि उत्तर की ओर सिर करके सोना वर्जित है। क्योंकि सिर की तरफ सकारात्मक और पैरों की तरफ नकारात्मक विद्युत तरंगें होती हैं। सिर के उत्तरी दिशा में होने से उत्तर की तरफ से आने वाली तरंगें मानव शरीर की सकारात्मक तरंगों से टकराती रहेंगी, जिससे मानव मस्तिष्क विचलित हो जाता है।

लक्ष्मी प्रवेश के लिए निम्नलिखित अहम बातों में से कोई एक ही काफी है।

१. उत्तर-पूर्व में या उत्तर में अन्डरग्राउंड टैंक, नल और पानी की व्यवस्था करें।

२. पूर्वमुखी मकान में हो सके तो द्वारा उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पूर्व में बनाएं, द्वार न हो सके तो खिड़की या ऊपर का जाल या दर्पण लगवाना जरूरी है।

३. उत्तर व पूर्व का ज्यादा से ज्यादा भाग खुला रखें।

४. रसोई दक्षिण-पूर्व में हो।

५. छत व फर्श की ढलान उत्तर-पूर्व में हो।

६. मूर्तियां, फोटो आदि जितना हो सके पूर्व व पश्चिम की दीवार पर लगाएं। उत्तर की दीवार पर तो भूल कर भी कुछ न लटकायें।

७. हमेशा दक्षिण की ओर सिर करके सोयें। इससे स्वास्थ्य और आयु बढ़ेगी। अधिक कार्य के बाद थकान होने पर पूर्व की ओर सिर करके सोयें। इससे विरोधी पक्ष भी साथ देने लगता है। भारी से भारी संकट या समस्या का तुरन्त समाधान होता नजर आयेगा।

जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं

भिन्न-भिन्न देशों का समय

संसार के हर एक देश में दिन तो २४ घण्टे का माना जाता है परन्तु हर देश का स्टैंडर्ड टाईम अर्थात् समय भिन्न है। उदाहरण के रूप में जब भारत में दिन के १२ बजते हैं तो लन्दन में प्रात: के साढ़े छ: बजे होते हैं। भिन्न-भिन्न देशों की राजधानियों के समय और भारत के समय में अन्तर स्पष्ट किये जाते हैं:-

नगर	देश	समय
लन्दन	ब्रिटेन	६.३० प्रात:
बैंकाक	थाइलैंड	९.३० रात
मक्का	सऊदी अरब	९.३० प्रात:
कुआलाम्पुर	मलेशिया	२.०० प्रात:
पेरिस	फ्रांस	७.३० प्रात:
नेरोबी	कीनिया	१०.०० प्रात:
तेहरान	ईरान	१०.०० प्रात:
काबुल	अफगान	११.०० प्रात:
बुडापेस्ट	हंगरी	७.३० प्रात:
कराची	पाकिस्तान	११.३० दोपहर
मास्को	रूस	९.३० प्रात:
पेइचिंग	चीन	२.३० दोपहर
बगदाद	इराक	९.३० प्रात:
न्यूयार्क	अमेरिका	२.३० प्रात:
टोकियो	जापान	३.३० सायं
बर्लिन	पू. जर्मनी	७.३० प्रात:
काहिरा	मिश्र	८.३० प्रात:
जेनेवा	स्वि. लैण्ड	७.३० प्रात:
कनाडा	कैनेडा	११.०० रात्रि

मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि

कर्म छ: प्रकार के होते हैं। १. शान्ति कर्म। २. वशीकरण। ३. स्तम्भन। ४. वैर। ५. उच्चाटन। ६. मारण।

कर्मों के लक्षण

१. रोग और ग्रहादि के निवारण को शंत कर्म कहते हैं।
२. सब वस्तुओं को वश में करने को वशीकरण कहते हैं।
३. चलते हुओं को रोकने को स्तम्भन कहते हैं।
४. दो मित्रों में वैर कहते हैं।
५. स्वदेश से निकल कर दूसरे देश में चले जाने को उच्चाटन कहते हैं।
६. जीव को मार देना मारण कहते हैं।

कर्मों की दिशा

शान्ति कर्म ईशान दिशा में करना चाहिए, वशीकरण उत्तर दिशा में करना चाहिए, स्तम्भन पूर्व दिशा में करना चाहिए, विदेश नेॠत्य दिशा में, उच्चाटन वायव्य दिशा में और मारण अग्नि दिशा में करना चाहिए।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुन: प्राप्ति शीघ्र हो जाती है। **२. सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है। **३. मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इस बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती। **४. मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है।

अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित है:-

नक्षत्र संख्या	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
१. अन्धाक्ष	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	पू.फा.	विशा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
२. सुलोचन	कृकि.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
३. मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा	मघा	पू.भा.	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
४. मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

कैलेण्डर १८०१-१९९९

(अ) वर्ष

१८०१-१९००				१९०१-१९९९			
०१	२९	५७	८५		२५	५३	८१
०२	३०	५८	८६		२६	५४	८२
०३	३१	५९	८७		२७	५५	८३
०४	३२	६०	८८		२८	५६	८४
०५	३३	६१	८९	०१	२९	५७	८५
०६	३४	६२	९०	०२	३०	५८	८६
०७	३५	६३	९१	०३	३१	५९	८७
०८	३६	६४	९२	०४	३२	६०	८८
०९	३७	६५	९३	०५	३३	६१	८९
१०	३८	६६	९४	०६	३४	६२	९०
११	३९	६७	९५	०७	३५	६३	९१
१२	४०	६८	९६	०८	३६	६४	९२
१३	४१	६९	९७	०९	३७	६५	९३
१४	४२	७०	९८	१०	३८	६६	९४
१५	४३	७१	९९	११	३९	६७	९५
१६	४४	७२		१२	४०	६८	९६
१७	४५	७३		१३	४१	६९	९७
१८	४६	७४		१४	४२	७०	९८
१९	४७	७५		१५	४३	७१	९९
२०	४८	७६		१६	४४	७२	
२१	४९	७७	००	१७	४५	७३	
२२	५०	७८		१८	४६	७४	
२३	५१	७९		१९	४७	७५	
२४	५२	८०		२०	४८	७६	
२५	५३	८१		२१	४९	७७	
२६	५४	८२		२२	५०	७८	
२७	५५	८३		२३	५१	७९	
२८	५६	८४		२४	५२	८०	

(ब) महीने

जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	२	६	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
६	२	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१

(स) साप्ताहिक दिन

रवि	१	८	१५	२२	२९	३६
सोम	२	९	१६	२३	३०	३७
मंगल	३	१०	१७	२४	३१	
बुध	४	११	१८	२५	३२	
गुरु	५	१२	१९	२६	३३	
शुक्र	६	१३	२०	२७	३४	
शनि	७	१४	२१	२८	३५	

कलैण्डर को प्रयोग में लाने की विधि

अगर हमें मालूम करना है कि किस तारीख को कौन सा दिन पड़ता है। जैसे १ मई १८८६ को कौन सा दिन था।? पहले वर्ष वाले कॉलम (अ) में (१८०१ से १९०० तक) सन् १८८६ पर अंगुली रखें उसकी सीध में अंगुली महीने वाले कॉलम (ब) में मई मास पर लें जाएं। जो अंक प्राप्त हो (६) उसे उस तारीख में जोड़ दें (१) जिस तारीख का हमें वार मालूम करना है। (६+१=७) अब आप कॉलम (स) में ७ के सामने शनिवार पाएंगे तो पहली मई १८८६ को शनिवार था।

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन**, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

ग्रह-राशियों की तेजी मंदी-विचार

राशियों के पदार्थ

मेष—सोना, गेहूं, जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और चावल। **वृष**—कपड़ा, सरसों, पुष्प, जौ, चावल, महिष, बैल, गेहूं और लघु धान्य। **मिथुन**—रुई, कपास, बिनौला, ज्वार, मकई, तोरिया, अलसी, मूंग और माष। **कर्क**—केला, घास, जायफल, दाल-चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना,चांदी, जवाहरात। **सिंह**—गुड़, खांड, साठी चावल, तैल, घी, मृगछाल, षटरस। **कन्या**—ज्वार, बाजरा, कुल्थी,रत्न, गेहूं, अलसी, मूंग और माष। **तुला**—उड़द, गेहूं, सरसों, नारियल,हरड़, मटर, तोरिया, जौ। **वृश्चिक**—गुड़, खांड, नागर, पान, लोहा, चना, चौपाए, पीतल, तांबा आदि धातुएं। **धनु**—रस, घोड़ा, लवण, चित्र-वस्त्र, गुड़, रुई। **मकर**—कनीर, मजीठ, जिमीकन्द, सोना,चांदी,पीतल,तांबा, लोहा। **कुम्भ**—तैल, घी, पोस्त, जवाहरात, रंगदार, वस्तुएं, सोना,चांदी,ज्वार। **मीन**—सीप, मोती, पंसारियों की वस्तुएं।

ग्रहों के पदार्थ

सूर्य—तुष्य धान्य, बीज, गेहूं, गुड़, शक्कर, खांड, ऊनी वस्त्र, सोना, तांबा, सुगन्धिक वस्तुएं, घी, तैल, नमक, रस। **चन्द्रमा**—चावल, मीठे रस, फल, फूल, जलोदर वस्तुएं, नमक, मोती, औषधियां, गेहूं, कांसी, दूध, दही। **मंगल**—गेहूं, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, लघु धान्य, सोना, तांबा, पीतल, चौपाए। **बुध**—सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघुधान्य, सब्ज, रंग की वस्तुएं, रुई। **गुरु**—मीठे रस, सुगन्धित पदार्थ, पारा, नमक, चाय, कपड़ा, पीले रंग की वस्तुएं, घी, गेहूं, चावल, घोड़ा। **शुक्र**—रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघु धान्य और भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद रंग की वस्तुएं। **शनि**—कटु वस्तुएं, मिर्च काली, माष, चना, मटर, लोहा, रंग सीमा, तोरिया, अलसी, कंगनी, कोयला, काले रंग की वस्तुएं, तिल, तैल मूगंफली और नशीली वस्तुएं आदि।

ग्रहों-राशियों से मंदा-तेजी जानने का प्रकार

जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो दूषित हो या उसको क्रूर ग्रह देखते हों अथवा वहां पड़े हों या वह राशि क्रूर ग्रहों की कर्तरी में हो तो उस राशि जन्य पदार्थों की तेजी होती है और राशि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो उसके पदार्थों का मन्दा होता है। इसी प्रकार जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों उनके पदार्थों का मंदा होता है। जिस वस्तु की राशि से गुरु ४, १०, २, ११, ७, ९, ५ इतनी राशि पर हों तो उस वस्तु की मंदी करता है और १, ३, ४, ६, ७, ९, १२ इन स्थानों पर बुध हो तो इस वस्तु की तेजी करता है। ऐसे ही २, ११, १०, ५, ८ स्थानों पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य और क्षीण चन्द्र यह ग्रह ३, ६, १०, ११ स्थानों पर मंदा और १, २, ४, ५, ७, ८, ९ स्थानों पर होने से तेजी हो।

तेजी-मंदी जानने के सिद्धान्त

(१) यदि रविवार को तेजी या मंदी हो तो सोमवार को मंदी अथवा तेजी आ जाती है। (२) सोमवार को एकदम मन्दी के आने पर मंगलवार को विचार से सौदा करना चाहिए। (३) सोमवार की मन्दी के बाद मंगलवार को तेजी अवश्य होती है अथवा सोमवार को तेजी हो तो मंगलवार को मन्दी अवश्य होगी। (४) मंगलवार की आई मन्दी बुधवार को १२ बजे तक चलती है इसी प्रकार मंगलवार को तेजी बुधवार १२ बजे हो।

व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर

(जन. २००१ से मार्च २००२ तक)

परिलेखकर्ता व संग्रहकर्ता—अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले सुपुत्र पी.सी. जैन पोरसा वाले
द्वारा लाइट मशीनरी, चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४०११
एस.टी.डी.-०७५१ फोन : पी.पी. ३४३२८३, ३४०७२२ शर्मा एस.टी.डी. ५४०३८९, ३६६५१८ सायं ७ बजे

जनवरी (JANUARY) 2001

(A) 27 दिसम्बर २००० से १४ जनवरी २००१ तक मोंठ १७३, राजमा १७७, गुड़ ७७ की तेजी। सोयाबीन-४५, जावित्री ३६, चांदी ३०६, उड़द ४५, सुपारी में २०५ की तेजी तो सौंठ ७०२, किशमिश ९९९, बादाम २५०, प्पिरमेन्ट ६५, देशी घी में जोरदार मन्दी तो लहसुन, बारदाना, हैसियन, लाल मिर्च २०५, गेहूं में १५-१७ की तेजी आवेगी। २ से २९ जनवरी २००१ तक पोस्तादाना ९९९, अजवाइन, चावल में तेजी आवेगी। सोना-चांदी में तेजी आवेगी। धनियाँ, जीरा, सौंठ में मन्दी आवेगी। १५ से ३० जनवरी २००१ ई. तक गेहूं २५ की तेजी। जौ, मोंठ, तिल, मूंग ९९, मक्का, ज्वार, जैल, अरण्डी ७०, मोम, कावली चना आदि में अच्छी तेजी। तेलों में जोरदार मन्दी इसके अलावा किशमिश, खोपरा, गोला, गुवार में तेजी आ सकती है।

(B) २१ जनवरी २००१ से ३ फरवरी के मध्य मूंगफली तेल ३६०, सरसों तैल २५०, बिनौला तैल ४६१ की धमाकेदार मन्दी बन सकती है।

फरवरी (FEBRUARY)

(A) ५ फरवरी से २३ फरवरी २००१ के बीच २५० धनिया, १५० चना, उड़द ६३, मूंग ४५, मसूर ३६, अरहर १५ की तेजी आ सकती है। इसके अलावा पोस्तादाना ५०२, चिलगोजा, चांदी २८७, कलौंजी ३०६ की तेजी व देशी घी, इमली में तेजी—तो मैंथी, धनियाँ में मन्दी का धमाका होगा। ५ से १५ फरवरी २००१ तक गुड़-चीनी में तेजी, सोना (Gold) में मंदी आ सकती है। ९ से २७ फरवरी तक, तिल तैल २५० की तेजी, अजवाइन, उड़द २५, बड़ी इलाइची २०५, चावल, मोम, स्लेक वैवस, बिनौला तैल में भारी तेजी आ सकती है। २५ फरवरी से ११ मार्च २००१ तक चना,उड़द, खाद्य तैलों में २५०-३६० की जोरदार मंदी आ सकती है।

मार्च (MARCH)

(A) २५ फरवरी से १५ मार्च २००१ तक, चांदी २५०-७७७, सोना १५०-२५० की तेजी तथा गुड़ ९९, गेहूं १५, उड़द ७७, मूंग ६५, राजमा ९९, लाल मिर्च ५०४, जीरा २५० की तेजी आ सकती है। ५ से २५ मार्च २००१ तक मोम, सूत, पिपरमेन्ट, कलौंजी, चावल में तेजी आ सकती है। पोस्तादाना में मन्दी का झटका लग सकता है। १५ मार्च से ५ अप्रैल २००१ तक मसूर ५६, महुआ तैल ५६, सोना १४५, राजमा २५० की जोरदार तेजी आ सकती है। ७ से २० मार्च तक अरहर, इमली, अमचूर में मन्दी मगर कालीमिर्च में ७०२, जीरा ३०६ की तेजी आ सकती है। २५ फरवरी से ११ अप्रैल २००१ तक गुड़ १५०, चीनी १६५ की खतरनाक तेजी आ सकती है। २८ मार्च से १ अप्रैल तक शुक्रास्त चांदी, लाल मिर्च में अच्छी तेजी आ सकती है।

अप्रैल (APRIL)

(A) ११ अप्रैल २००१ के मध्य चांदी २५०-९९९ की तेजी आवे तो ११ अप्रैल से १५ मई २००१ के मध्य चांदी में २५०-५५५ को जोरदार मन्दी आ जावेगी। २५ मार्च से १५ अप्रैल तक मई २००१ के मध्य चांदी में २५०-५५५ की जोरदार मन्दी आवेगी। २५ मार्च से १५ अप्रैल तक लाल मिर्च ७०२, पोस्तादाना ९९९, रुई १५०, तिल ३६०, जीरा ५०२, हल्दी २५२ की तेजी जोरदार आ सकती है। मगर चना में घटबढ़ से जोरदार मन्दी बन सकती है। १५ मार्च से २५ अप्रैल २००१ तक देशी घी २५२ प्रति टीन की भारी तेजी। जावित्री ५४, मोम, गुड़ ७२, कालीमिर्च ९९९ की भड़कती तेजी आ सकती है।

(B) (D-M-7Y) १५ अप्रैल २००१ या २७ अप्रैल से मूंगफली तेल, सोयाबीन तैल में जोरदार मन्दी का धमाका हो सकता है।

मई (MAY)

(A) २७ अप्रैल से १५ मई २००१ तक चना ११५, सोयाबीन तैल ३६०, तिल तेल ४६१, रुई १५४, लहसुन १५०, कालीमिर्च, पोस्तादाना, मूंग, सौंठ ७०२, मसूर ९९, धनियाँ २०५, मटर ९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। १ मई से ५ जून तक सरसों ७०-१९९ की भड़कती तेजी, सोयाबीन, अरहर, चना, मटर आदि में जोरदार तेजी आ सकती है। डालडा मूल्य में भारी वृद्धि हो सकती है। ७ मई से १२ जून तक, शनि अस्त एक महीने पूर्व सरसों, अरहर, चना में भयंकर तेजी में Top भाव बने हैं। तो यहां तक भयंकर मंदी-मगर शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी आ सकती है।

(B) ११ से १८ मई तक तेलों में जोरदार मन्दी बन सकती है।

जून (JUNE)

(A) २५ मई से ११ जून २००१ तक चीनी ६५, काबली चना २९९, खोपरा गोला ९९, देशी घी ५४, पोस्तादाना ७०२ की तेजी। फली तेल ३६०, अरण्डी तैल, लाल मिर्च ५०४, हल्दी २५०, तिल ९९ की तेजी आ सकती है। इसके अलावा अरहर ११८, काली मिर्च ७०२ की तेजी। गेहूं, उड़द में तेजी आ सकती है। १५ से २७ जून के मध्य अरहर ९० की मन्दी। जीरा ४०५, सरसों में १५० मन्दी का झटका लग सकता है। २ से ३० जून तक जावित्री, काली मिर्च, जौ ३६, मसूर २६ की तेजी आ सकती है। २० जून से ३ जुलाई तक किशमिश ५०२, खण्डसारी ९०, गुड़ ७७ की जालिम झड़पी तेजी आ सकती है। १५ जून से २ जुलाई के मध्य कभी काली मिर्च ९९९ व लाल मिर्च ७०२ की मन्दी आ सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। १६ मई से २७ जून के मध्य चांदी ५५५, सोना १९९ की जोरदार मन्दी आ सकती है।

५ जून से २७ जून २००१ तक बुध ग्रह वक्री रहेगा। देशी घी में अच्छी तेजी। पोस्तदाना, गुवार में डेढ़, २ महीने में अच्छी तेजी तो शेयर्स मार्केट में २७ अप्रैल से १५ मई तक अच्छी तेजी, १५ मई से ११ जून तक शेयर्स मंदी, १ जून अच्छी तेजी आ सकती है। ४ जून २००१ से २१ जून तक गुरु ग्रह अस्त २५ दिन पूर्व से चांदी, सोना, शेयर्स A.C.C., Infosys Tech., L &T, Tisco, रिलाइन्स आदि भयंकर मंदी में नीचे Lowest भाव टच हो तो आगे २५-४१ दिन में जोरदार तेजी, मगर तेलों में एक महीने से जोरदार मन्दी का दौर चल सकता है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें।

(B) ११ जून से तेलों में मन्दी आ सकती है।

जुलाई (JULY)

२७ जून से १२ जुलाई २००१ के बीच सरसों ७२-१५० की भड़कती तेजी व तिल तैल ३६०, अरण्डी तेल १५०, अरहर १९९, मसूर ६५, चना ३६, रुई ९९ की तेजी आ सकती है। हवा-तूफान-चक्रवात भी इस क्षेत्र में हो सकते हैं। १२ से २१ जुलाई के मध्य खोपरा गोला ४०५ की जोरदार मन्दी, बड़ी इलाइची, पिपरमेन्ट में मन्दी मगर राजमा २५० तेजी, अमचूर ९९९, उड़द १५०, अरहर ९९, किशमिश ९९९, पोस्तादाना ७९९, चाय २५ की जोरदार तेजी आ सकती है। डालडा की कीमतों में भारी कटौती हो सकती है। देशी-घी व चांदी-सोना में अच्छी तेजी आ सकती है।

१ से १२ जुलाई २००१ तक, सरसों ९९, मूंगफली तैल २५० की तेजी आवे तो २० जुलाई तक सरसों में जोरदार मंदी तो पुनः २९ जुलाई तक घटे भाव बढ़ जावेंगे। २७ जून से २५ जुलाई तक अरहर १५०, चना २०५, मसूर में अच्छी तेजी बन सकती है। ४ जुलाई से १५ जुलाई तक उड़द में मंदी, १५ से २० तक तेजी, २० से ३० जुलाई तक, उड़द, मूंग में जोरदार मंदी आवेगी। ९ मई २००१ से १२ जुलाई तक, मंगल वक्री होने से गुड़, चीनी, लहसुन, पोस्तादाना, चना-मसूर में भयंकर तेजी आ सकती है।

अगस्त (AUGUST)

३ अगस्त २००१ से २९ अगस्त तक, सरसों १५०, मूंगफली तैल में ४५०, बिनौला तैल में २७० की जोरदार तेजी आ सकती है। ८ से २९ अगस्त तक, अरहर-चना में अच्छी तेजी बन सकती है। १ से ९ अगस्त तक चांदी में ४०५ की तेजी तो १२ अगस्त तक मंदी तो १२ से ३० अगस्त तक चांदी में अच्छी तेजी आवेगी। २७ जुलाई से १५ अगस्त तक उड़द १५० की तेजी तो और में तेजी घटबढ़ से १५ सितम्बर तक चलने के बाद मंदी आवेगी।

(११-३MY) शेयर्स मार्केट—११ अगस्त २००१ से ८ सितम्बर तक B.S.E. इण्डेक्स में ५००-९०० Point की मंदी फिर भी बाजार तेजी पकड़ी तो ५००-११०० पोइन्ट की तेजी आ जावेगी। ८ सितम्बर २००१ से १८-११-२००१ तक A.C.C. रिलाइंस आदि में भयंकर तेजी आवेगी। बाजार रुख Trend देखकर ही व्यापार करें।

सितम्बर (SEPTEMBER)

२७ अगस्त २००१ से ९ सितम्बर तक अरहर १५० की मंदी तो ९ से १४ सितम्बर तक अरहर में १५० की तेजी आवे तो १६ सितम्बर तक बढ़े हुए भाव गिर जावेंगे तो १८-९-२००१ से ३० तक चना, अरहर में अच्छी तेजी आवेगी। २ सितम्बर २००१ से १५ मंदी तो १६-९-२००१ से ३० सितम्बर तक चांदी में २५०-३६० की जोरदार तेजी आवेगी। १४ से २५ सितं. तक सरसों, मूंगफली तैल में मंदी तो २६-९-२००१ से ३० तक सरसों-बिनौला तेल में जोरदार तेजी आवे तो ३०-९-२००१ से ११-१०-२००१ तक मूंगफली तेल ५६० की, सोयाबीन आदि में जोरदार मंदी आवेगी। १५-९-२००१ से २३-१०-२००१ तक उड़द में २५०-५०० की खतरनाक मंदी बन सकती है।

(B) २ से २२ अक्टूबर २००१ तक बुध ग्रह वक्री होने से २-९-२००१ से ११-१०-२००१ के बीच A.C.C., Tisco, SBI रिलाइंस, सत्यम कम्प्यूटर, Infosys Tech आदि में एक बार अच्छी तेजी तो मूंगफली तैल, सोयाबीन तैल आदि १०-१५ दिन एक बार मंदी आकर फिर बाद में २५-३५ दिन में तैल-दालवाना आदि में भयंकर तेजी आ सकती है। देशी घी में

१५-१०-२००१ तक तेजी आकर फिर मंदी आवेगी।

२८ सितम्बर २००१ से ७ फरवरी २००२ तक शनि वक्री रहने से १५-२५ दिन में चना, सरसों, अरहर, मसूर में अच्छी तेजी आ सकती है। इसके अलावा गुड़, पिपरमेन्ट, लौंग, दालचीनी जोरदार तेजी का उछाला आ सकता है। शेयर्स मार्केट में १५ दिन पूर्व से ११ दिन बाद तक Reliance, A.C.C., टिस्को, L&T, Infosys Tech जोरदार तेजी बन सकती है।

अक्टूबर (OCTOBER)

२ से १५ अक्टूबर तेलों में जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। १८-१०-२००१ से ३१-१०-२००१ तक सरसों, बिनौला में २५० की अच्छी मंदी आवेगी। १८ सितम्बर या २० अक्टूबर २००१ से ७-१५ दिन में चांदी में ५६० की खतरनाक मंदी का धमाका हो सकता है। २७ सितम्बर से १५ अक्टूबर तक अरहर, मसूर, चना ७० तेजी तो राजमा में २५०-५६० की जोरादर तेजी आ सकती है। २५ सितम्बर या २४ अक्टूबर से सरसों १५०-२५० की जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। १५-१०-२००१ से ३१-१०-२००१ तक चना, अरहर में जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है।

नवम्बर (NOVEMBER)

३ से २५ नवम्बर २००१ तक सरसों २५०, तिल ३६०, अरहर, मसूर आदि में अच्छी तेजी आ सकती है। २५ अक्टूबर से १५ नवम्बर तक लौंग, राजमा २५० की जोरदार मंदी आवेगी। २३-९-२००१ से ११ दिसम्बर तक चना,अरहर २५०, सरसों ९९ की, तिल ५६० की खतरनाक तेजी बन सकती है। ५ नवम्बर २००१ से २५ दिसम्बर २००१ तक मूंग, उड़द में २५०-४५७ खतरनाक तेजी आ सकती है। ३ नवम्बर २००१ से १ मार्च २००२ तक गुरु ग्रह वक्री Retrograde २५ दिन पूर्व से ११ दिन बाद तक कभी चांदी ५००-७९९ की भयंकर तेजी, १०-१५ दिन तेलों में मंदी रहकर आगे सरसों, चनी, चना, गुड़ में अच्छी तेजी तो शेयर्स मार्केट में मन्दी का दौर चल सकता है। कालीमिर्च, पोस्तादाना Poppy Seed, हल्दी Turmeric २-३ महीने में एक तेजी आ सकती है।

दिसम्बर (DECEMBER)

१ से २७ दिसम्बर २००१ तक चना १५०, अरहर ३६०, सरसों १५०-२९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। २५ नवम्बर २००१ से ७ जनवरी २००२ तक लौंग २०-७० की खतरनाक तेजी आ सकती है। २७ दिसम्बर २००१ से २० जनवरी २००२ तक सरसों में ३६० की जोरदार मंदी। फली तैल ३९९ की खतरनाक मंदी बन सकती है। २५ दिसम्बर २००१ से २५ जनवरी २००२ तक उड़द में २५०, मूंग ३६० की जोरदार मंदी आवेगी। २५-१२-२००१ से १५ जनवरी २००२ तक, A.C.C., रिलाइंस शेयर्स में भयंकर मंदी आवे तो १५-१-२००२ से २७-१-२००२ तक शेयर्स मार्केट में भयंकर तेजी आकर बाद में १५-२० दिन जोरदार मंदी का धमाका होगा।

जनवरी (JANUARY) 2002

१ से ३० जनवरी २००२ तक अरहर ४६०, चना १५०, मसूर ३९९, सरसों ५६१ की खतरनाक मंदी बन सकती है। २७ जनवरी २००२ से ११ फरवरी २००२ तक मूंग-उड़द में जोरदार मंदी आ सकती है। १९ जनवरी २००२ से ८ फरवरी २००२ तक बुध ग्रह वक्री रहने से ११ जनवरी से १ फरवरी २००१ के तैलों २५०-५०६ की जोरदार मंदी के बाद २ फरवरी से ७-१० दिन फली तैल, बिनौला तैल में तेजी। २५ फरवरी से ७ अप्रैल तक जीरा, गुड़ में तेजी। अरहर, मसूर में तूफानी तेजी आ सकती है।

फरवरी (FEBRUARY)

२ फरवरी २००२ से ५ फरवरी तक तेलों में जोरदार मंदी तो ५-२-२००२ से ११ फरवरी तक तैल, तिलहन OIL & Oil Seeds में अस्थाई तेजी आ सकती है। १५ से २५ फरवरी तक अरहर १५०, चना २५० जोरदार मंदी आवेगी। १८ से २७ फरवरी तक सरसों तैल ३६०, बिनौला तैल २५० की जोरदार मंदी बन सकती है। ११ फरवरी २००२ से २५ मार्च तक उड़द, मूंग, मोंठ में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ मार्च २००२ से २ मई २००२ के बीच हल्दी ५०० की जोरदार तेजी। चना २५०, अरहर ३६९, मसूर ३६०, सरसों २९९ की एक बार तूफानी तेजी बन सकती है।

मार्च (MARCH)

१५ मार्च २००२ से ७ अप्रैल तक चना ६१, मसूर २९९, सरसों १५० की जोरदार तेजी आ सकती है। २७ फरवरी से १५ मार्च २००२ तक लौंग मेंजोरदार मंदी आ सकती है। २९ मार्च २००० से १५ अप्रैल २००२ तक सरसों में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ अप्रैल से ५ मई २००२ तक सरसों में २५० की मंदी। अरहर २५०, चना १५०, मसूर में २०५ की झड़पी मंदी आ सकती है।

शेयर्स मार्केट

शेयर्स मार्केट ऐसा बाजार है—जहां घटाबढ़ी बहुत ही तीव्र रूप से होती देखी गयी है। जहां १०० रुपये २००-३६० भी हो सकते हैं तो किसी शेयर में ५ गुणे से ४१ गुणे तक भी हो सकते हैं। २०-२५ बड़े लम्बे घाटों को जल्दी भरपाई की जा सकती है। यदि लाइन सही मिल जावे। २३-१०-१९९८ को ए.सी.सी. शेयर भाव ८२-५० था तो २७-१२-१९९९ को ३०३ हो गया। यानी, १४ महीने में साढ़े ती गुणा भाव होना-ताज्जुब की बात है। रिलाइंस शेयर्स १०२-१०४ के करीब भाव था वो भी फरवरी २००० तक, ३८६ के आसपास भाव टच हुए। जी. टेलीफिल्म शेयर मार्च १९९८ में २७३ था वो १४ फरवरी २००० को १६००० के आसपास भाव हुए। १०० शेयर २७ हजार ३०० के खरीदते—तो, करीब १५-१६ लाख हो जाते। शेयर मारकेट में कैसी कितने समय में खतरनाक तेजी मंदी चलती है। २३-१०-१९९८ बम्बई शेयर सूचकांक इन्डेक्स २७५०-२८५० के करीब था वो साढ़े १४ महीने-१५ महीने में, ६१५० नया रिर्काड इन्डेक्स बना। ग्राफीकल सदस्य बन कर—व्यापार की घटबढ़ जानें। किस वस्तु Item में डेढ़ गुने, २ गुने किस वस्तु में ३ से ७ गुने होने जा रहे हैं। शेयर्स मारकेट जैसी तेजी या मंदी सरसों, अरहर, चना में नहीं आ सकती है। व्यापार में जिम्मेदारी भी नहीं होगी नहीं। १४ फरवरी २००० को जो ZEE TELIFILM शेयर १६३० था वो २६ मई २००० को साढ़े तीन महीने में ही ४१० रह गया। यानी रुपये के चार आने रह गये। इस मार्च २००१ से पौने २ वर्ष में सरसों-मिर्च, अरहर, मसूर, लहसुन GARLIC, प्याज ONION, रुई Cotton, पोस्तादाना, खसखस POPPY SEED, हल्दी Turmeric आदि में घटाबढ़ी से तूफानी तेजी चलने की आशा है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। शेयर सत्यम कम्प्यूटर भी १४-२-२००० से २६ मई २००० की बीच ७२०० सेघटकर २१००-२२०१ के बीच भाव रह गये थे।

शेयर्स मार्केट के चांस (१४ फरवरी २००० को शेयर Index ६१५० था वो २६ मई २००० को ३८३१ नीचे में होकर ९ जून २००० को ४७२९.६३ रह गया। १३ जुलाई २००० को ५०५८-९० होकर २२ सितम्बर २००० को

४०३२-३७ हो गया है। एक बार ५७९० होकर सन् २००१-२००२ में घर शेयर INDEX घटकर २९००-२५०० रह सकता है। सावधानी से व्यापार करें। शेयर्स मार्केट के चांस ५ नवं. २००० से १५ जनवरी २००१ तक, रिलाइंस ७०, A.C.C. ५५, Infosys Technology में ११००-२५०० की भीषण तेजी आ सकती है। बीच-बीच में मंदी रियेक्शन भी भारी मंदी के झटके लगेंगे। १६ जनवरी २००१ से, १५ फरवरी तक शेयर्स INDEX में ७००-९००, Point की प्रचण्ड मंदी का झटका लग सकता है। १६ फरवरी से ५ अप्रैल २००१ तक, ए.सी.सी. रिलाइंस, इनफोसिस टेकनोलोजी, विप्रो, सत्यं कम्प्यूटर शेयर्स में जोरदार मंदी आवे तो ५ अप्रैल से २७ अप्रैल २००१ तक, शेयर INDEX में ५००-७०० की बढ़ोत्तरी हो सकती है। २७ अप्रैल २००१ से ५ जून २००१ के बीच, शेयर मार्केट में ७००-१८०० पोइन्ट की तूफानी मंदी-गिरावट आ सकती है। ७ जून से २५ जुलाई २००१ तक, ७००-९०० Point की तेजी आ सकती है। २५ जुलाई से १६ अगस्त २००१ के बीच शेयर्स में मंदी का आंधी चल सकती है। १८ अगस्त से ३ सितम्बर तक तेजी, आवे तो ११ सितम्बर २००१ से १८ अक्टूबर २००१ के बीच, ७००-११०० POINT की खतरनाक मंदी बन सकती है। २५ अक्टूबर २००१ से २१ जनवरी २००२ के बीच, शेर्यस में अच्छी तेजी आ सकती है। २५ जनवरी २००२ से ५ मार्च या २ अप्रैल २००२ तक, भयंकर मंदी में नीचे भाव बन सकते हैं। ५ अप्रैल २००२ से २३ मई २००२ तक, Shares शेयर्स मारकेट में, ९००-११९७ POINT की भयंकर तेजी आ सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। गुड़ नीचे में ७००, ऊंचे में १५७७, चीनी नीचे में १६५०, ऊंचे २०११ नए टॉप भाव डेढ़ वर्ष के अन्दर भाव होने का आनुमान है।

रुई कपास के चांस

२५-१०-२००० से १५-११-२००० तक, रुई COTTON में अच्छी मंदी आवे तो १५-११-२००० से १५-१२-२००० तक, रुई अच्छी तेजी, तो १८-१२-२००० से १४-१-२००१ तक, रुई में खतरनाक मंदी, तो १६ जनवरी २००१ से २९ जनवरी २००१ तक रुई में घटे भाव बढ़ जावेंगे। २९ से ७ फरवरी तक, रुई में मंदी आवेगी। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

७ फरवरी २००१ से १९ फरवरी २००१ तक, रुई में अच्छी तेजी तो २१ फरवरी २००१ से ५ मार्च २००१ तक, रुई के बढ़े हुए भाव एकदम गिर जावेंगे। १५ मार्च २००१ से ७ अप्रैल २००१ तक झड़पी तेजी, रुई, सूत में आ सकती है। आगे तेजी बढ़ी तो, १६ अप्रैल तक तेजी चल सकती है। १६ अप्रैल से ९ मई तक, रुई में अच्छी मंदी, तो ११ मई २००१ से ५ जून २००१ तक रुई में भीषण तेजी आ सकती है। ५ जून से २१ जून तक रुई में मंदी। ५ जुलाई २००१ से ५ अगस्त के मध्य रुई में जोरदार मंदी आ सकती है। ७ अगस्त २००१ से २७ अगस्त तक, रुई में अच्छी तेजी, तो २० सितम्बर २००१ तक, रुई में मंदी, २१ सितम्बर २००१ से ११ अक्टूबर तक, रुई में जोरदार तेजी आवे-तो, १५-१०-२००१ से ५-११-२००० तक रुई में भारी मंदी, तो १८-११-२००१ से ११-१२-२००१ तक रुई में जोरदार जबरदस्त तेजी आ सकती है। ता. ११-१२-२००१ से ७-१-२००२ तक, रुई मंदी का झटका, तो ७-१-२००२ से ३० जनवरी २००२ तक, रुई में तूफानी तेजी, १ फर. से २७ फर. २००२ तक रुई में छोटी मंदी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। हर तेजी के १५-२० दिन की उबलती तेजी में माल बेचना।

सार सन् 2001

२८-१०-१९९८ को सरसों २७९९ के भाव बिकने वाली ३० मई २००० को १०२५-१०५० के भाव रह गई है। १५-१२-२००१ तक २१०० या २९०० के भाव हो सकते हैं। अरहर २८-१०-१९९८ को २८०१ वाली अभी अगस्त २००० को १५०० के आसपास भाव चल रहे हैं। तो १५ जनवरी २००२ या ९ नवम्बर २००२ तक अरहर २७०० या फिर ३२०९ भाव काटे तो ४१९९ के भाव हो सकते हैं। उड़द, जौ १५०० था वो जून २००० को २९१५ के नये टॉप भाव बने। अब वे घटकर २ वर्ष में ९९९-१२९९ के भाव रह सकते हैं। हल्दी TURMERIC एक दो वर्ष में ३८००-४२०० के भाव बिकने वाली अगस्त २००० में १६०० के भाव रह गए हैं। उम्मीद है हल्दी नीचे में १२००-१४०० के होकर आगे ढाई वर्ष में २७००-३३०० के भाव हो सकते हैं। पोस्तदाना POPPY SEED, ६५-५९ रुपए किलो वाला २ वर्ष में ११०-१४० के भाव हो सकते हैं। ६ वर्ष पूर्व गोला, खोपरा तैल COCONUT OIL १२०० रुपए टीन था। अब ६१० रह गया है। वो नीचे में ५६० होकर बाद में २ वर्ष में ९००-११०१ के भाव प्रति टीन हो सकते हैं। चांदी ८००१ वाली—एक बार ९००० या ९६९९ के भाव होकर ७-२-२००१ को ७२०० के भाव रह सकते हैं। गुवार CLUSTER SEEDS १५ जनवरी १९९९ को २९००-३२०० बिकने वाली आगे अगस्त २००० में १०५०-११०० के भाव रह गए हैं। अब नीचे में ७५० होकर आगे १९९९ या २५०७ के भाव हो सकते हैं। गुड़ नीचे ५५०, ऊपर १२०१-१४९९ के भाव हो सकते हैं। शेयर्स इन्डेक्स B.S.E. Index ६ अगस्त १९९७ को ४६०४ होकर २३-१०-१९९८ को २७४१ के करीब हो गया। फिर वहां से शेयर्स Shares Market में तेज़ी चालू हुई। १४-०२-२००० को ६१५० टाप शेयर्स सूचकांक टच हुआ। फिर बाजार वापिस घर २३ मई २००० को ३८३१ होकर १४ जुलाई के पास ५०५८ होकर एक बार फिर ४१५० हुआ। २३ अगस्त २००० को ४४०५ के आसपास इन्डेक्स घूम रहा है। एक बार यदि ६३०० के काटें तो ७००० होकर वापिस २ वर्ष में ३२०० रह सकता है।

व्यापार दिग्दर्शिका, वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

जनवरी २००१ से जून २००२ तक, १८ महीने की तेजी-मंदी

पुस्तक मूल्य १५१, मगर रियायती चार्ज १३५.००

परिलेखकर्ता श्रीमती चम्पादेवी जैन ध.प. प्रेम चन्द्र जैन पोरसा वाले

इस पुस्तक में सरसों, चांदी, गुड़, रुई, चना, अरहर, मसूर, जीरा, गुवार चांस ग्राफीकल पद्धति से लिखे गये हैं। ग्राफीकल पद्धति से सन् १९९९-२००० के मध्य, शेयर्स मार्केट में तूफानी तेजी आ सकती है। सो आपने देखा ही होगा, २३-१०-१९९८ को, बम्बई शेयर्स सूचकांक इन्डेक्स, २७५० के आसरे करीब था, वो साढ़े १४ महीने में १४-०२-२००० इन्डेक्स ६१५० टच हो गया। ग्राफीकल पद्धति, से चमत्कारी-अनुमान, ज्ञात किए जा सकते हैं। सन् २००१ से २००२ के बीच, २ ढाई साल में सरसों, ग्वार, जीरा, लहशुन, प्याज, अरहर आदि में घटाबढ़ी से अच्छी रिकार्ड तोड़ तेजी आ सकती है। लहशुन ५-७ रुपये किलो वाला, ढाई वर्ष में ४५ से ७० के भाव, सरसों तैल २५ वाला ४५-६५ के भाव, अरहर १४ रुपये वाली ३२.४२ रुपए किलो के भाव, होने का अनुमान है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी भी, किसी हालत नहीं होगी नहीं। ज्यादा सही भगवान जाने। शेयर्स मार्केट कई-कई चांस ग्राफीकल पद्धति से प्रस्तुत किए गए हैं। फिर आप तो जानते ही हैं, गुवार, लहशुन, प्याज के तूफानी तेजी के चांस हर वर्ष तो मिलते नहीं हैं। पोस्तादाना, हल्दी, मिर्च आदि में भयंकर घटाबढ़ी चलने की आशा है। V.P.P. नहीं होगी नहीं। M.O. भेज कर, सन् २००१ का, तेजी मंदी विवेचन विस्तार पूर्व पुस्तक व्यापार दिग्दर्शिका मंगा कर पढ़ें। तेजी मंदी निकालने के कुछ फार्मूला ३४३२८३, श्री अग्रवाल, इन्सेट टी.वी. सेंटर ठाटीपुर ग्वालियर, ३४०७२२ पी.पी. फोन

१. श्रीमती चम्पा देवी जैन ध.प. प्रेमचन्द्र जैन पोरसा वाले, इंदौर बैंक कैम्पस, ग्रोवर हॉस्पीटल के पीछे बारादरी चौराहा, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४००६
२. अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले द्वारा श्री चतुर्वेदी, १०३, न्यू शिवाजी नगर, ठाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र)-४७४०११
३. रेनू कुमारी जैन सुपुत्री पी.सी. जैन पोरसा वाले द्वारा लाइट मशीनरी चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर, म.प्र.-४७४०११

अथ सम्वत् २०५८ वि. की ग्रह स्थिति के आधार पर व्यापारिक उतार-चढ़ाव के विचार

लेखक एवं सम्पादक- चौ. पं. महेन्द्र कुमार जैन, *सह संपादक-* पं. गजेन्द्र जैन
उत्तराधिकारी- आयुर्वेद मार्तण्ड ज्योतिष रत्न पं. जैनी जीया लाल शिखर चन्द चौधरी राज वैद्य
ज्योतिष रत्न कार्यालय :— पो. फर्रुख नगर-१२२५०६, गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन न.—निवास: ०१२४-६३७५२१८, कार्यालय: ०१२४-६३७५३७७

मेरे बाबाजी (स्व. जैनी जीयालाल जी चौधरी) ने १२५ वर्ष पूर्व असली पञ्चांग के नाम से एक पंचांग प्रकाशित किया था तभी से इस तेजी मन्दी के विषय पर मेरे बाबाजी व पिताजी लिखते रहे हैं और समय-समय पर तेजी मंदी पर अनेकों शास्त्र (पुस्तकें), व्यापार विज्ञान, योग रत्नाकर, वार्षिक व्यापार भविष्य फल आदि लिख कर आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कीं। अब मैं पं. महेन्द्रकुमार जैन एवं मेरा पुत्र पं. गजेन्द्र जैन अपने पूर्वजों के बताये मार्ग का अनुसरण करते हुए प्रत्येक पक्षों, महीनों में आने वाले प्रबल ग्रह, योग, तिथि, वार, नक्षत्र संयोग, संक्रांति का बैठना चन्द्र दर्शन आदि योगों को ध्यान में रखकर जो तेजी मन्दी के अपने विचार लिखते हैं वह वायदा और हाजिर का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिए वरदान रूप में सिद्ध होते रहे हैं।

अथ चैत्र पक्ष फल विचार

वि. सं. २०५८ का शुभारंभ सोमवार से होता है। चन्द्र दर्शन सोमवार व पूर्णिमा रविवार की है। पक्ष में तिथि क्षय शुभ नहीं। शुक्र उदयास्त व बुध ने राशि परिवर्तन किया है। प्रतिपदा में सोम का होना शुभ, पर तिथि क्षय नेष्ट फलकारक है। पक्ष में पू.भा. का बुध क्षुधा, शस्त्र और चोरों की वृद्धि करेगा। उ.भा. का बुध राजनेताओं में आपसी खेंचातानी बढ़ायेगा। सुदी २ मंगलवारी रुई के भावों को बढ़ाएगी, ६ शनिवारी एक मास अन्न में तेजी रखेगी, धान्यादि भाव मन्दे, क्षुधा, शस्त्र और चोरों की वृद्धि होगी, राजनेताओं में परस्पर द्वेष बढ़े, भारतीय राजनीति प्रभावित होगी, पशुपक्षियों में अरोग्यता, धान्योत्पति उत्तम, अल्प वृष्टि योग, कहीं-२ अनावृष्टि भी हो।

शुक्ल पक्ष—सुदी १ रुई तेज, मास भर घट बढ़ चले, सोना-चांदी मन्दी, मूंग, मोंठ, चना, गेहूँ, अलसी, अफीम तेज। नेताओं में आपसी खेंचातानी, अन्न ढाई मास पीछे मन्दा बनेगा। शु. २ मंगल तिल, सुपारी, तेल, रुई, कपास, सूत, अरण्डी, सोना, चांदी, लोहा, तांबा आदि धातु तेज। प्रजा सुखी हो। शु. ३ बुध चांदी, अन्न, रुई, सूत, कपास आदि तेज, घी, तेल, अरण्डी, विनौला, मूंगफली, सूत, कपड़े आदि में मन्दा बनेगा। शु. ४ गुरु सोना, चांदी, रुई आदि में मन्दा। शु. ६ शनि सभी प्रकार का अन्न एक मास तेज रहेगा। सरसों, अरण्डी, मूंगफली, चांदी, चावल, नमक, अलसी, लाख आदि तेज। शु. ८ रवि—प्रजा में सुख सुभिक्ष का वातावरण बने। सूत, चांदी, चावल आदि में तेजी बने। शु. ९ सोम अन्न व रस पदार्थ मन्दे, रुई तेज, सोना-चांदी ऊँची होकर उतनी ही मन्दी बने। शुदी ११ बुध—चांदी बढ़कर घटे, पशु पक्षी सुखी रहें। शु. १५ रवि—पूरे पक्ष भर रुई में उतार चढ़ाव रहे। अलसी मन्दी, अन्न, सरसों तेज।

विशेष योग

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा दिवस चंद्रमा होय।
जल बरसे बहु गगन से तृण अन्न मन्दा जोय॥
चैत्र सुदी में तिथि घटे कारी बढ़ जाय।
पैदावार होय कम खड़ी फसल हट जाय॥
बुध भृगु रवि यह तीन एक घर बैठे शुक्कर।
एक चरण महा[illegible] करें रवि बुध शुक्कर॥

अथ वैशाख मास फल विचार

इस मास में पाँच सोमवार हैं। अमावस व पूर्णिमा सोमवार की है। चन्द्र दर्शन बुधवार, संक्रान्ति मेष शुक्रवार की है। सूर्य मंगल बुध ने राशि परिवर्तन किया है। बुध उदयास्त व शनि अस्त हुआ है। शुक्र मार्गी हुआ है। कृ.१४ रविवारी अन्न तेज। कृ. ३० रुई, सूत, चांदी में मन्दा, शु. १ मंगलवारी रुई मन्दी, शु. ६ अन्न, रुई, चावल व घी में तेजी, शु. १२ शुक्रवारी तीन दिन रुई में घटबढ़ करेगी। मास में धान्यादि भाव मन्दे, ईख, दूध, रसकस मन्दा, घी, सोना-चांदी, हाथी-घोड़ा, मोटर-गाड़ी, प्रसाधन सामग्री तेज रहेगी। विप्र, व्यापारी, वैद्य, नाविक, घोड़े सभी प्रभावित रहेंगे। कहीं-कहीं ज्वर आदि से प्रजा को कष्ट होगा। मास में अल्प वृष्टि योग भी बना है। अक्षय तीज को गुरु रोहिणी नक्षत्र का होना भारत व इसकी प्रजा के लिए अति उत्तम है।

कृष्ण पक्ष—कृ. ३ मंगल-रुई, कपास, सूत, बिनौला, कपड़ा, लकड़ी, घी, चौपाया जानवरों में तेजी, द्विजनों व वीर पुरुषों को कष्ट उठाना पड़ेगा। कृ. ५ गुरु-वायदा व्यापार की वस्तु तेज, चांदी, गुड़, खण्ड, घी, तेल सरसों आदि में मन्दा। गेहूँ, मजीठ, लाल वस्तु तेज होगी। कृ. ६ शुक्र-रुई, तेल, तिल, ईख आदि पदार्थ तेज होगें। कृ. ८ सोम-सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड में घटबढ़ होगी। कृ. १० बुध-सोना, चांदी, मूंगा, जवाहरात, गेहूँ, जौ, चना आदि तेज, रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, तेल सरसों, रुई, कपास में मन्दी रहेगी। कृ. १२ शुक्र-घी, गुड़, सोना, चांदी, रुई, कपूर, अन्न, मोती, मानक आदि में मन्दा। कृ. १४ रवि-सभी प्रकार का अन्न तेज रहेगा। कृ. ३० सोमवती अमावस-रुई, सूत, कपास, चांदी में मन्दा रहेगा।

शुक्ल पक्ष—शुदी १ मंगल-रुई में मन्दा, अन्नादि बहुत से पदार्थों मे तेजी बनेगी। ज्वरादि से प्रजा को कष्ट होगा। शु. २ बुध-रुई में ८ दिन तेजी बनी रहेगी, शु.३ गुरु-प्रजा व देश के लिए सुभिक्षकारी है। शु. ४ शुक्र-रुई, अलसी में मंदा, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, धातु, हल्दी, मिर्च, चावल, जौ, चना, मोठ, हलके अनाज, गुड़, घी तेज। हैजे आदि से प्रजा को कष्ट का समाना करना होगा। शु. ६ रवि-अन्न, रुई, सूत, कपास, चावल, घी तेज रहेगा। शु. ८ मंगल-रुई, सूत, कपास तेज, चांदी मन्दी, वर्षा अभाव ज्वरादि से प्रजा परेशान रहेगी। शु. ९ बुध-सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि तेज, रुई के बाजार घटबढ़ कर तेज होंगे। शु. ११ गुरु-बहुत सी मार्किटों में घटबढ़ रहेगी। तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, गेहूँ, जौ, चना, मटर आदि धान्य पदार्थ तेज होंगे। शु. १२ शुक्र-रुई ३ दिन मन्दी रहकर तेज हो, अफीम तेज, संसार में युद्ध का वातावरण बनेगा। शु. १३ शनि-बाजारों में बहुत-सी वस्तुओं में घट बढ़ देखने को मिलेगी। शु. १५ सोम-रुई, शेयर, सोना मन्दा; अन्न, अरण्डी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रस पदार्थ, चारा, घास, श्वेत वस्तु, पाट, बारदाना, तिलहन पदार्थ तेज होंगे। स्त्री जाति को विशेष पीड़ा उठानी पड़ेगी।

विशेष योगः-

तेरस काली बैसाख की जब आवें मंगलवार।
तभी खाण्ड पान सैंधा नमक चंदन तेज विचार॥
आवै तीज बैशाख की गुरुदिन रोहिणी सार।
अन्न वस्तु सस्ता बिकै खेती फलै अपार॥
मेष राशि में सूर्य का जब होता है वास।
खाण्ड तिल तेल तेज हो रुई सूत कपास॥
शुक्रवार के दिन कभी सूर्य संक्रमण होय।
हाथी घोड़ा ऊंट मूंज में महंगापन होय॥

अथ ज्येष्ठ मास फल विचार

इस मास में पाँच मंगल पांच बुध हैं। वृष संक्रांति ३० मु. सोमवारी, चन्द्र दर्शन गुरु का, मावस व पूर्णिमा बुधवार की है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध को गुरु अस्त हुआ है। कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि और शुक्ला में तिथि क्षय हुई है। अत: कृष्ण पक्ष में चांदी मन्दी, शु. ६ सोम—गुड़ गेहूँ अलसी तेज करेगी। शु. ८ गुरुवारी-अन्न में घटबढ़, सुदी ११ शुक्रवारी रुई के भावों को घटाएगी। मास में ५ मंगल बुध मिश्रित फल देगें। किसी मुखिया का अभाव हो सकता है। सभी रसायन पदार्थ तेज, कपास, तिल, तेल, पशु धन पीड़ित व महिंगा हो; वायु के साथ वर्षा, यात्रियों के साथ दुर्घटना बढ़ेगी। रोहिणी का शनि लोगों को पीड़ा देगा। गुरु अस्त दुर्भिक्ष कारक, गर्मी जोरदार पड़ेगी, कहीं-कहीं हैजे जैसी बिमारी फैलेगी। रसकस घी माल किराना महंगा रहेगा।

कृष्ण पक्ष—यह पक्ष १६ दिन का है अत: इस पक्ष में चांदी तेज होगी। कृ.१मंगल—रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सरसों, चावल, सोना, चांदी, गुड़, खण्ड में तेजी बनेगी। सण पाट बारदाना ऊनी व रेशमी वस्त्रों में मन्दा बनेगा। कृ. ४ शु[illegible]-रुई, सोना, चांदी, अलसी, अरण्डी, गेहूँ, जौ, चना, चावल, सरसों, रसकस, घी व माल किराना में तेजी अच्छी आयेगी। तांत्रिक, अग्निहोत्री, कुम्हार, नाई, ज्योतिषियों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। पैदावार कम, जनहानि के प्रबल योग हैं। कृ. ५ शनि-रुई, कपास, चंदन, जवाहरात, चावल, चांदी, गुड़, खण्ड, शक्कर में मन्दा बनेगा। कृ. ६ रवि-घी व धान्य पदार्थ तेज होंगे। कृ. ७ सोम-यहाँ आगे २-३ दिनों में बहुत सी वस्तु मन्दी रहकर तेज होगी। कृ. ८ बुध-गेहूँ, तिल, उड़द में मन्दी; चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दा; रुई तेज, धान्य उत्पादन उत्तम रहेगा। कृ. ९ गुरु-चांदी, चावल, घी में मन्दा; रुई व धान्य पदार्थ तेज होंगे। कृ. १३ सोम-रुई, सूत, कपास सभी प्रकार के कपड़े तेज होंगे। सोना, चांदी, जस्ता, पितल, तांबा आदि धातु तेज होगी। हाथियों का नाश होगा। कृ. १४ मंगल-१५ दिन पीछे सोना-चांदी में मन्दा; सरसों के भावों में घटबढ़ हो; तेज आंधियाँ चलें, गर्मी पड़े। कृ. ३० बुध-अन्न में मन्दा करेगी।

शुक्ल पक्ष—शु. १गुरु-आगे १५ दिनों में रुई, सूत, कपास, रेशम, ऊन, घी, तेल, अन्नादि में तेजी चलेगी। चांदी घटबढ़ होकर तेज हो, देश के पूर्व भाग में उत्पात व झगड़े हों, प्रजा को कष्ट हो। शु. ३ शुक्र-रुई, तेल, तिल, अरण्डी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, ज्वार, बाजरा, ऊन, धान्य पदार्थ, सुपारी, मिर्च, हींग, खजूर आदि में तेजी। सेठ साहुकार, योगी, कृषक, जलचर और गो-पालकों को कष्ट का सामना करना होगा। शु. ६ सोम-गुड़, गेहूँ, अलसी आदि पदार्थों में तेजी बनेगी। शु. ८ बुध-चांदी अच्छी तेज, रुई, चांदी, गेहूँ तेज, जौ, चना, घी, गुड़,

शक्कर, खाण्ड, पाट, बारदाना में घटबढ़ होकर तेजी हो। ऊनी वस्त्र, तिलहन पदार्थों में मन्दा बनेगा। शु. १० शुक्र-चांदी, चावल, घी में मन्दा; धान्य पदार्थ तेज होंगे। शु. १३ सोम-घी, गुड़, खण्ड, शक्कर, कपूर, तिल तेल, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली तेज; धान्य पदार्थ मन्दे, रुई तेज होकर मन्दी, चांदी शेयरों में घटबढ़ कर तेजी बनेगी। प्रजा को कष्ट से देश के किन्हीं हिस्सों में विग्रह फैले, चोरी उपद्रव आदि की घटनाओं में एकाएक वृद्धि हो। शु. १५ बुध-अलसी में अच्छी तेजी बनेगी।

विशेष योग

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा जब होंवे मंगलवार।
व्याधि प्रबल लख जगत में दुःख भोगे संसार॥
कृष्ण पक्ष तिथि बढ़े शुक्ला में घट जाय।
सभी वस्तु तेज रहे सस्ता पन हट जाय॥
धनु राशि पर भौम का जब हो उसमें वक्र।
वक्री होने पर किराने में चलता तेजी का चक्र॥
श्रवण धनिष्ठा जेठ बदी साते-आठें विशेष।
अन्न वर्षे वर्षा अधिक वर्षे वर्षा नाश॥
वृष राशि के रवि करै सुख सम्पदा सुकाल।
दूध दही घी में रहे मंहगाई की चाल॥

अथ आषाढ़ मास फल विचार

आषाढ़ मास में पाँच वृहस्पतिवार हैं। सं. मिथुन ३० मु., अमावस पूर्णिमा गुरुवार की हैं। चन्द्रदर्शन शुक्रवार का है। शुक्ल पक्ष में तिथि का ह्रास हुआ है। पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण है। बुध पश्चिम में अस्त पूर्व में उदय; शनि गुरु भी उदय हुए हैं। मास में पांच वृहस्पति शुभ फलकारक है। धान्यादि भाव सम रहेंगे। बुध का पश्चिम में अस्त राजनेताओं में क्लेश उत्पन्न करेगा। किरात यवन राष्ट्र पीड़ित होंगे। शनि उदय घास-लकड़ी में तेजी करेगा। घोड़ों में रोग होंगे। रस पदार्थ तेज होंगे। वृहस्पति का उदय वेश्या को पीड़ाकारक है। कृ. १४ को रोहिणी नक्षत्र का होना देश की प्रजा के लिए शुभ नहीं। अमावस गुरुवारी रुई में मन्दी लाएगी। शु. ६ सोम-गेहूँ, गुड़, अलसी तेज करेगी। शु. १० शनि-रुई में तेजी, पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण; अन्न, बिनौला, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, रसकस, कुमकुम तेज, श्रीफल, सफेद वस्तु और अन्न से आगे लाभ मिलेगा।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ गुरु-उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, सोना, चांदी, तेल, रुई में घटबढ़ और शेयरों में मन्दी बनेगी। देश में आंधियों का जोर बने, पशुओं में रोग वृद्धि, प्रजा में आपसी झगड़ों में वृद्धि होगी। प्रजा बिमार रहे। कृ० ३ शनि-रुई तेज, चांदी घट बढ़कर तेज और सभी प्रकार की धातु तेज होगी। उल्कापात गिरे। कृ० ६ मगंल-लोहा, शीशा, जस्ता, रंग, सभी काली वस्तु, घास, लकड़ी, रस पदार्थ तेज होंगे। अन्न तेज होकर मन्दा, शेयर और तिलहन मार्किट मन्दी होगी। कृ० ७ बुध-सरसों, अलसी, उड़द, घी, तेल तिल, सोना, चांदी में मन्दा, रुई तेज रहेगी। अधर्मियों को विशेष दुख भोगना होगा। कृ० ८ गुरु-चांदी, घी, तेल, कपास, तिल, हर प्रकार का अन्न तेज होगा पर रुई में मन्दा बनेगा। कृ० १० शनि-रुई में विशेष मन्दी, सोना, चाँदी, वस्त्र, सूत, तेज; घी, तेल में आगे पाँच मास विशेष लाभ मिलेगा। कृ० १२ सोम-सोना, चाँदी में विशेष उतार चढ़ाव होगा। कृ. ३० गुरु-रुई, सूत, कपास में १० दिन मन्दा रहेगा पर अलसी, अरण्डी, रसकस, सरसों, खाण्ड, चावल, मणि, मोती, कपूर तेज बिकेगा, वकीलों को कष्ट होगा।

शुक्ल पक्ष—शु० १ शुक्र-चावल, चना, उड़द, अनाज, तिल, सोना आदि तेज। प्रजा को सुख पर कहीं-कहीं देश में अग्निकाण्ड। शु० ४ सोम-चाँदी, अरण्डी, बिनौला, अलसी, गेहूं जौ, चना, तिल, तेल, लाल मिर्च, पाट, बारदाना, हैसिय : तेल, सोना, रुई में मन्दा बनेगा। शु० ६ मंगल-जौ, चावल, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात सोना, चाँदी, रुई, सूत, कपास, हींग, तेलादि में मन्दा बनेगा। शु० ८-गुरु-गेहूँ, जौ, चना, नारियल, सोना, चाँदी, रुई, सूत, कपास, सुपारी, तांबा, लोहा, घी, तेल आदि तेज। अलसी अरण्डी, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि में अच्छा उतार चढ़ाव बनेगा। देश की प्रजा विशेष प्रकार से भयभीत बनेगी। शु० ९ शुक्र-रुई मन्दी, धान्य में तेजी, सोना-चाँदी में घटा-बढ़ी होकर तेज, प्रजा में विग्रह। शु० १० शनि-रुई, सूत, कपास, आदि में अच्छी तेजी बनेगी। शु० १५ गुरु-बहुत सी वस्तुओं के भावों में उल्टफेर हो। अनाज, बिनौला, घी, तेल, गुड़, खण्ड, रसकस, घी, तेल, कुमकुम, रंग, सोना, चांदी, अरण्डी, सरसों, माल किराना, उड़द, हरड़, ज्वार, मूंग, मोठ, बाजरा, तिल, रुई, सूत, कपास में तेजी बनेगी और सेवक सेविकाओं को कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

विशेष योग

साढ़ बदी चौदस दिन होय रोहिणी योग।
करफ्यू अरु कंट्रोल से दुःख पावें सब लोग॥
आर्द्रा ज्येष्ठा साथ में रवि मंगल महाराज।
एक मास महंगा पुनः मन्दा हो अनाज॥
शुक्ल पक्ष आषाढ़ सर पश्चिम धनुष दिखाय।
पश्चिम की वायू चले जल वर्षे झड़लाय॥
किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥
ग्रहण हो आषाढ़ में प्रकट होय है रोग।
वृष्टि होवे बहुत ही याको योही संयोग॥

अथ श्रावण मास फल विचार

श्रावण मास में पांच शुक्र पांच शनि हैं। अमावस पूनों शनिवार की, सं. कर्क ३० मु. सोम की, चन्द्रदर्शन रविवार का है। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है और शुक्ल पक्ष में तिथि का ह्रास होकर वृद्धि होगी। सूर्य, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मंगल मार्गी बुध अस्त पूर्व में हुआ है। अतः मास में पांच शुक्र एवं पांच शनि मध्यम फल कर्त्ता हैं। गेहूं, चावल, चना, मूंग, उड़द, घी, सुपारी, सोना, चांदी, हाथी, घोड़ा और मोटर गाड़ी के भावों में वृद्धि होगी। गुड़, शक्कर, चीनी के भावों में मन्दी, गुड़, तिल, उड़द, कपास, सूत मासान्त में मन्दे, रसायन पदार्थ तेज होंगे। शु. १ शनि-रुई मन्दी, अन्न तेज करेगी। शु. १० रवि-रुई घी के भावों को बढ़ायेगी। कौशल व कलिंग प्रदेश की प्रजा को कष्ट होगा। मास में उत्तम वर्षा योग बना है।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ बुध-१५ दिन में रुई, सोना, चांदी में मन्दा। सरसों में घटबढ़ रहे, तेज वायू चलेगी। कृ. ३ रवि-सोना, चांदी प्रत्येक धातु, अलसी, अरण्डी, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सरसों, सुपारी, नारियल, दाख और अन्न में मन्दा बनेगा। देश में युद्ध उपद्रव की सम्भावना प्रबल बनी है। कृ. ५ बुध-सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत सन, बिनौला में मन्दा बनेगा। कृ. ७ शनि-सोना, चांदी, रुई, गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, तेल, मूंग, मोंठ आदि में मन्दा, धान्य भाव तेज रहेगा। तेज वायु के साथ वर्षा उत्तम रहेगी। कृ. १० रवि-चांदी व सभी प्रकार का अन्न तेज होगा। रुई मन्दी, नमक आदि सभी खारे पदार्थ, सोना, चांदी, चावल आदि अनेक वस्तुओं में घटबढ़ होगी। प्रजा को दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ेगा। कृ. १२ बुध-कपास, सूत, चना आदि तेज। कृ. १३ गुरु-पशुओं में बिमारी फैले, समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों में प्रजा परेशान होगी। साधु संन्यासी, नाविकों को दुख भोगना होगा। मोठ, नारियल, सुपारी, खाण्ड, गुड़, मद्य, सरसों, तिल, चावल, शक्कर, सभी धान, सोना, चाँदी तेज; रुई में मंदी की अच्छी लाईन बनेगी। कृ. ३० शुक्र-रुई में काफी घटबढ़ और चांदी में तेजी की लाइन बनेगी।

शुक्ल पक्ष—शु. १ शनि-रुई तथा सभी प्रकार के अनाजों में घटबढ़ हो। गुड़, शक्कर, खाण्ड के भावों में तेजी; प्रजा में सुख फैलेगा। शु. २ रवि-अन्न भाव तेज; रुई व चांदी में घटबढ़ से मन्दा, १५ दिनों में घी, खाण्ड, गुड़, तिल तेल, अलसी, सरसों में तेजी बनेगी। शु. ५ बुध-गेहूँ, चावल, अलसी, अन्न, तेल, रुई में घटबढ़; सोना घटबढ़ कर तेज होगा। देश के किन्हीं हिस्सों में एकाएक चोरियों की वारदातों में वृद्धि और साथ में जनहानि हो सकती है। शु. ८ शुक्र-रुई, सूत, कपास, कपड़ा आदि में अधिक मंदा; गेहूँ, जौ, चना, धान्य, पदार्थ तेज; गुवार, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल तेल, सरसों में मन्दी और पदार्थों में अच्छी उठा-पटक बनेगी। शु. १० रवि-रुई, सूत, कपास, घी में तेजी; राजा प्रजा दोनों भयभीत रहेंगे। शु. १३ गुरु-सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, गुड़, शक्कर, घी, तेल सरसों, तिल, चना, उड़द आदि के भाव तेज होंगे। देश के पूर्व ईशान के भू-भाग पर प्रजा में भारी उपद्रव होगा। शु. १५ शनि-बिनौला, चावल, गुड़, शक्कर, घी, तेल, मिर्च, उड़द, चना, मजीठ, अलसी, अरण्डी, रसकस, शेयर बाजार, तेज पर रुई में अच्छी घट बढ़ होगी।

विशेष योग

श्रावण कारी अष्टमी बरसे कुछ मेह।
सुन्दर संवत् होयगा करो न कुछ संदेह॥
श्रावण कारी दसमी यदि वर्षा हो जाय।
चार मास वर्षा घनी मन्दा धान्य बिकाय॥
श्रावण मावस को बना पुनर्वसु नखत संयोग।
एक मास दुख सहे राजा प्रजा लोक॥
सोमवार के दिन कभी हो सूर्य संक्रांति।
मूंगा मोती धान्य सब सस्ता सुख अरु शान्ति॥

अथ भाद्रपद मास फल विचारः-

भाद्रपद मास में पाँच रवि हैं। अमावस पूर्णमा रवि की, चन्द्रदर्शन सोम का, सं. सिंह ४५ मु. शुक्रवार की है। शुक्लपक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध उदय पश्चिम में और अगस्त मुनि उदय हुआ है। अतः मास में पाँच रवि प्रजा के लिए शुभ नहीं, चोरियां अधिक होंगी। पू.फा. का बुध पड़ोसी राष्ट्र से मनमुटाव कराएगा या कोई उपद्रव भी सीमा पर हो सकता है। धान्य भाव मन्दे। उ.फा. का बुध प्राणियों की धातु क्षीण करेगा। मास में पीले पदार्थ तेज होंगे। चौपाए की वृद्धि होगी। मूल का मंगल क्षत्रियों को पीड़ा देगा। देश में कहीं अधिक वृष्टि से जनहानी संभव है।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ रवि-तिल, तेल, सरसों, मूंगफली में तेजी, सोना, चांदी, कपास में मन्दी बनेगी। कृ. ३ मंगल-सोना, रुई, सूत, कपास, बिनौला में मन्दा। कृ. ६ शुक्र-धान्य पदार्थ तेज, सोना, चांदी, रुई में मन्दा। कृ. ७ शनि-रुई, सूत, कपास, कपड़ा, सोना, चांदी, देवदारु, खट्टे पदार्थ तेज; खाण्ड, शक्कर, कपूर, रस पदार्थों में मन्दा बनेगा। कृ. ८ शनि-चांदी, रुई, गेहूँ, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली आदि तेज होंगे। कृ. ९ सोम-रुई, सूत,

कपास, सोना, चांदी में मन्दा; अन्न, बिनौला में तेजी; प्रजा भयभीत रहेगी। कृ. १२ गुरु-रुई, सूत, कपास, चांदी, अरण्डी, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, रत्न व चांदी के भाव तेज होंगे। कृ. १३ शुक्र-सोना चांदी में घटबढ़, रुई में तेजी शुरू हो। कृ. १४ शनि-अन्न, गुड़, खाण्ड आदि में मन्दा और कुछ देशों में युद्ध की भावना बने। कृ. ३० रवि-सरसों, बिनौला, अरण्डी, तेल, घी, रस पदार्थ, धान्य पदार्थ, चावल आदि तेज; रुई शेयर मन्दा, चांदी घटबढ़ हो।

शुक्ल पक्ष—शु. १ सोम-कपास, घी, तेल, गुड़, मूँग, मोठ, चना आदि तेज। १५ दिन में रुई तेज; अन्न, सोना, चांदी में मन्दा। शु. ३ मंगल-तेल, घी, शक्कर, खाण्ड, गुड़, रस पदार्थ, अलसी में तेजी, रुई मन्दी होकर तेजी बने। शेयर बाजार तेज होंगे। रुई, चांदी में मन्दा बनेगा। शुदी ६ शुक्र-गुड़, शक्कर, कपूर, सुगन्धित पदार्थ, पारा, हींग, लाल वस्तु मन्दी; रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन, धान्य पदार्थ में तेजी। शु.७ शनि-उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर, मसूर आदि में साधारण तेजी; चांदी मंदी; रुई घटबढ़ से मन्दी हो। शु. ८ रवि-बिनौला रस पदार्थ, मूलादि पदार्थ, घी, तृण, सोना, चांदी, सण, चौपाए पशु, लकड़ी, घास, कपड़ा, रुई तेज पर घी, कपास में मंदी से तेजी बने। शु. १० मंगल-रुई, चांदी मंदी; गेहूँ, जौ, चना, सोना, गुड़, खण्ड, शक्कर, हल्दी के भाव बढ़ेंगे; तेज वायु के साथ वर्षा होगी। शु. ११ बुध-समय अशुभ है। बालकों व शूद्र जाति पर आक्रमणों से प्रजा में झगड़ा हो। शु. १२ गुरु-आगे १४ दिन में रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, गेहूँ, घी, सरसों, ऊनी वस्त्र, अफीम तेज; एक मास तक चांदी में घटबढ़ रहे। शु. १५ रवि-आगे १० दिनों तक रुई में घटबढ़; अलसी मन्दी; अन्न-सरसों तेज हों।

विशेष योग

भादव कृष्णा दूज को सोम शुभ वार।
पशुओं में वृद्धि घनी उत्तम पैदावार॥
मावस से अधिक नखत सस्ता करै अनाज।
हीन नखत मावस धनी तब तेजी का राज॥
भादों में रवि युक्त जब-जब मावस होय।
निश्चय से तृण मँहगा रहे चौपाये खोय॥
ढ.फा. भादव तीज में मंगल वार विचार।
बादल दल बल से चढ़े पड़े नहीं जल धार॥
ईख शक्कर मिष्ठ रस गुड़ हल्दी तिल तेल।
सोना तांबा तेज हो सूर्य सिंह के मेल॥

अथ प्रथम आश्विन मास फल विचारः-

मास में पांच सोम पांच मंगलवार हैं। अमावस सोम की। चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा मंगलवार की। सं. कन्या ३० मु. रविवार की है। सूर्य शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। दोनों पक्षों में तिथि बढ़कर घटी है। बुध शनि वक्री हुए हैं। अतः मास में पांच सोम शुभ पर पांच मंगल नेष्ट फल कारक होंगे। प्रजा को सुख तथा धान्य उत्पति उत्तम रहेगी। हस्त का बुध तेल, घृत आदि रसायन पदार्थों में वृद्धि करे तथा शिल्पी एवं विप्र वर्गों को पीड़ा होगी। अश्लेषा का शुक्र सर्पदंश करेगा। शाबर पुलिंद जन प्रभावित होंगे। शाली तेल के भावों में वृद्धि, कहीं-२ प्राकृतिक विपदा से प्रजा को कष्ट, राजनीतिक द्वेष बढ़ेगा। कृ. ६ व १० गुरुवारी घी तेज, रुई मन्दी करेगी। कृ. १४ अन्न में तेजी करेगी। शु. ९ मंगल व ११ शुक्रवारी-रुई, सुत, कपास मन्दा। शाली उड़द में तेजी करेगी।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ सोम-सुभिक्ष कारक। धान्य पैदावार उत्तम, सभी अन्न में मन्दा। कृ. २ मंगल-रुई, मन्दी, अन्न में कुछ तेजी। चावल, मोठ, चना, चारा, धान्यों में मन्दा, सर्पदंश से प्रजा को कष्ट, कई स्थानों पर वर्षा की कमी रहे। कृ. ३ गुरु-सोना, चांदी, रुई, मन्दी। धान्य पदार्थ तेज। कृ. ५ शनि-चांदी, रुई, गेहूँ, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली तेज। कृ. ८ मंगल-कपास, सूत, गेहूँ, चना, आदि तेज हो। कृ. १० गुरु-घी, रुई में विशेष तेजी बने। चांदी, रुई, सुत, कपास, धान्य पदार्थ, सोना, लोहा, तिल तेल, सरसों, घी, उड़द, चावल, नारियल, सुपारी, मूंज, बाँस, नील आदि तेज। पशुओं में बिमारी फैले। विद्वान, नर्तकी एवं शिल्पियों को कष्ट सहना पड़ेगा। कृष्ण १३ शनि-खाण्ड, पान, सेंधा नमक, सोना, चांदी और अन्न तेज हो। कृ. १४ रवि-रुई, अन्न तेज। चांदी मन्दी; श्रीफल, तिल तेल, मजीठ आदि महंगे रहेंगे। अन्न, सोना, चांदी, रस पदार्थ, तेल पदार्थों में घटबढ़ होगी, वर्षा हो। कृ. ३० सोम-रुई, सुत, कपास, चांदी व सफेद वस्तु में मन्दी बनेगी।

शुक्ल पक्ष—शु. १ मंगल-राजाओं में परस्पर द्वेष बढ़े; रुई, सूत, अलसी, गेहूँ, अनाज, सफेद वस्तु तेज; अन्न के संग्रह से ३ मास बाद विशेष लाभ मिले। शु. ४ गुरु-गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, रुई आदि में तेजी बने; चांदी, अलसी, सरसों, बिनौला, मूंगफली आदि में मन्दी बने; प्रजा ज्वर आदि से परेशान रहे। तेज हवा के साथ वर्षा योग बना है। शु. ५ शुक्र-सोना, चांदी, चावल, मूंगफली, उड़द आदि तेज; धान्य पदार्थों में मन्दा बने। शु. ७ रवि-सोना, चांदी, रुई, तेल सरसों, सूती कपड़ा, सण में मन्दी आएगी। शु. १० बुध-१५ दिन में गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, सूत, जूट, हल्दी, घास, लकड़ी, हींग, धनिया, नमक, रुई तेज रहेगी। शु. १० गुरु-रुई घटबढ़ से मन्दी; सोना, चांदी में मन्दा; शेयर, शीशा, कलई, गेहूँ, ज्वार, चावल, घी, तेल अलसी, तम्बाकू तेज; देश में युद्ध का वातावरण बने, दुर्भिक्ष फैले, प्रजा को बिमारी से पीड़ा सहनी होगी। शु. १२ शनि-रुई, सूत, कपास में मन्दा; अन्नादि तेज, वर्षा अभाव रहेगा। शु. १५ मंगल-रुई तेज होकर मन्दी, शेयर, घी, खाण्ड, गुड़, शक्कर, कपूर, तिल तेल, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली तेज; अन्न मन्दा, चांदी में घटबढ़, व्यापारियों में घबराहट होगी।

विशेष योग

भूकंपे नृपति दुःखी वस्तु तेज अपार।
वक्री शनि यों चालसी पृथ्वी पे बहु भार॥
नवमी मंगल वार जो शुक्ल आश्विन मास।
मूंग मोठ चौला उड़द संग्रह करो कपास॥
दो आश्विन जा वर्ष भय दुनिया में होत।
रात्रि दिवस जागत रहो चोरी होसी बहुत॥
आश्विन तेरस शनि दिन सूर नखत पे सूर।
अन्नहीन भूमि रहे मन्दी समझो दूर॥
सोमवती मावस पड़े कभी जु आश्विन मास।
अन्न खाण्ड गुड़ तेल में तेजी का आभास॥

अथ द्वितीय आश्विन मास फल विचारः

मास में पाँच बुध पाँच गुरुवार हैं। भौमवती अमावस, चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा गुरुवारी है। सं. तुला ३० मु. बुध की है। कृष्ण पक्ष में तिथि हानि और शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि हुई है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पश्चिम में वक्री बुधोदय पूर्व में व मार्गी और गुरु वक्री हुए हैं। पाँच बुध रसायन पदार्थों में तेजी, पाँच गुरु धान्य पदार्थों में मन्दी। बुधास्त व्यापार में तेजी करेगा। पंजाब की प्रजा, चित्रकार पीड़ित होंगे। मास में धान्य उत्पत्ति उत्तम होगी। कृ. एकम-चांदी मन्दी, ५ रवि-घी तेज, भौमवती मावस रुई, चावल मन्दा, अन्न तेज, शुक्ल पक्ष में तीन बुध घी तेल में विशेष तेजी, चांदी मन्दी करेगा। ६ सोम-गेहूँ, अलसी तेज, ८ बुधवारी-पूरे पक्ष अन्न में घटबढ़ करेगा।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ बुध-इस पक्ष में चांदी मंदी रहेगी। कृ. ४ शनि-चांदी, रुई, गेहूँ, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली तेज। कृ. ५ रवि-शेयर, पाट, हैसियन मन्दे, गेहूँ आदि अनाज, बहुत सी व्यापारिक वस्तु तेज, सोना, चांदी, रुई में घटबढ़ और फसलों में नुकसान होगा। कृ. ८ बुध-सभी अनाज, चावल, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र, कपूर, केशर, लाख, चपड़ा, अरहर, तिल, नारियल, रुई, सूत, कपास, सोना में तेजी; चांदी, मोती आदि रत्नों में तेजी; फसलों को नुकसान; ज्वर आदि से प्रजा दुःखी और पशु तेज होंगे। कृ. १० शुक्र-अन्न में मन्दा आगे वर्षा होगी। कृ. १२ रवि-सोना, चांदी, रुई, राई, सरसों, जीरा, धनिया, माल किराना तेज रहेगा। कृ. ३० भौम-सभी प्रकार का अन्न तेज; रुई, सूत, कपास में मन्दी बनेगी।

शुक्ल पक्ष—शु. १ बुध-सुभिक्षकारक, धान्य पैदावार उत्तम रहे। गेहूँ, जौ, चना, चावल, सफेद वस्तुओं में मन्दी बने; तिल तेल, कोयला, लकड़ी, जूट, सण, लाल मिर्च, हल्दी, केसर, ऊनी, रेशमी, वस्त्र तेज होंगे। शु. २ गुरु-रुई, सोना, चांदी, घी, तेल, ऊनी वस्त्र, रसादि पदार्थ, गुड़, खाण्ड, तांबा, घी, तेल तेज; धान्य पदार्थ मन्दे होंगे। शु. ४ शनि-रुई, सूत, कपास में घटबढ़ से तेज; सोना, अनाज मन्दा; अलसी, बिनौला, अरण्डी, लाल मिर्च, पाट, हैसियन, चांदी तेज; वर्षा उत्तम, पैदावार अच्छी। शु. ६ सोम-गेहूँ, अलसी, गुड़ आदि में तेज बनेगी। शु. ७ मंगल-रुई, चांदी घटबढ़ कर तेज, शेयर घटबढ़ कर मन्दा; सभी अनाज, तेलबाना में मन्दी; माल किराना में तेजी बनेगी। शु. ८ बुध-पक्षभर अन्न में काफी उतार चढ़ाव होंगे। शु. १० शुक्र-तिल, तेल, सरसों, मूंगफली तेज; सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास में मन्दी बनेगी। शु. १२ सोम-सोना, चांदी, धातु व धान्य भावों में समता रहेगी। शु. १४ बुध-सोना, चांदी, रुई में मन्दा; धान्य भाव तेज होंगे। शु. १५ गुरु-रुई आदि वस्तुओं के खरीदने से आगे लाभ मिले। गेहूँ, जौ, चना, चावल, अलसी, घी में मन्दा; धातु व ऊनी वस्त्र तेज होंगे।

विशेष योग

आश्विन कृष्णा पंचमी जब होवे रविवार।
माघ की मावस को अवश्य घी तेज विचार॥
आश्विन शुक्ला अष्टमी जब आवे बुधवार।
घी का संग्रह कीजिये कार्तिक लाभ विचार॥
आश्विन शुक्ला एकादशी शनिवार इक ठौर।
छत्र भंग हो उपद्रव करै शत्रु और चौर॥
आश्विन मास में बना पूनम भरणी संयोग।
ज्वार गुवार मकई मटर मंहगी हो रोग॥
विजय दशमी आसोज की बादल वर्षा देख।
मूंग उड़द तिल तेल में तेजी रहे विशेष॥

अथ कार्तिक मास फल विचार

मास में पाँच शुक्रवार हैं। चन्द्रदर्शन पूर्णिमा व सं. वृश्चिक ३० मु. शुक्रवार की, अमावस बृहस्पतिवार की है। कृष्ण पक्ष में तिथि का ह्रास हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध पूर्व में अस्त हुआ है। मास में पाँच शुक्र वस्त्रों में मन्दी; व्यापारी व

नाविक परेशान होंगे। कृ. ६-रुई मन्दी पर शु. एकम् चन्द्रदर्शन रुई तेज करेगा। शु. ५ मंगल-चांदी तेज। शु. ६ बुध-एक मास अन्न तेज। शु. १० रवि-रुई, घी तेज होगी। शुक्ल पक्ष में क्षत्रियों तथा राजनेताओं में मतभेद हो जिससे राजनीति प्रभावित हो, कहीं-कहीं दुर्भिक्ष पड़े, विशाखा का शुक्र वृष्टि कारक है। तृणादि का भाव मन्दा हो, सोना, चांदी, हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी के मूल्यों में वृद्धि तथा गुड़, शक्कर, रस पदार्थ मन्दे रहेंगे।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ शुक्र-विशेष रूप से २० दिन गेहूँ तेज, अफीम, धातु, तिल, जौ में तेजी बनेगी। कृ. ३ रवि-गुड़, खाण्ड, सरसों, बिनौला, मूंगफली आदि मन्दा। प्रजा ज्वरादि रोगों से पीड़ित और हवा के साथ वर्षा हो। कृ. ५ मंगल-१५ दिनों में जौ, चावल, गेहूँ, मष, सरसों, मसूर, अरण्डी, धातु, तिल, अफीम, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत आदि में तेजी। चांदी में घटबढ़ रहे, देश के पूर्व दक्षिण भागों में उपद्रव हो। कृ. ७ गुरु-रुई-अन्न में मंदी, द्विजन पीड़ित हों। कई स्थानों पर वर्षा हो, रसकस पदार्थ तेज होंगे। चोरी आदि घटनाओं की वृद्धि से प्रजा परेशान होगी। कृ. ९ शुक्र-सोना, चांदी, रुई, चारा तेज रहेगा। कृ. ११ रवि-सोना, चांदी, रुई, राई, सरसों, मजीठ, जीरा, धनियाँ, माल, किराना तेज होगा। कृ. १२ सोम- रुई के भावों में घटबढ़ हो, सोना घटबढ़ कर तेज, गेहूँ, चावल, अलसी, अनाज में तेजी बनेगी। कृ. १३ मंगल-सोना, चांदी, कपास, सूत, सरसों, मूंगफली, घी, चावलों में कुछ मन्दा बनेगा। कृ. ३० गुरु-बाजरों में एक बार मन्दी का वातावरण बनेगा।

शुक्ल पक्ष—शु. १ शुक्र-रुई, सोना, चना, उड़द, अनाज, तिल, तांबा, गर्म कपड़े, कपास, सूत, तेल, लाल पदार्थ, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि तेज, कहीं-२ दुर्भिक्ष का वातावरण बने। शु. ४ शनि-सोना, चांदी में मन्दा बने, सभी प्रकार के धान्य पदार्थों में घटबढ़ हो। व्यापार की चाल आड़ी तिरछी हो, व्यापारी परेशान रहें। शु. ५ मंगल-८ दिन चांदी तेज रहे। शु. ६ बुध-आगे २० दिन गेहूँ, राई, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा आदि तेज। गुड़, खाण्ड, घी, सूत में मन्दा बनेगा। शु. ७ गुरु-रुई, चांदी तेज। सोना, अफीम, घी, तेल, अनाज, सरसों में मन्दा। कहीं-२ वर्षा होय। शु. ९ शनि-सुभिक्ष का वातावरण बने। धान्य भाव सम रहे। शु. १० रवि-घी, रुई के भाव तेज हों। शु. १२ मंगल-रुई, शेयर, अफीम में पहले मन्दी पीछे तेजी। अलसी चांदी में तेजी बने। शु. १४ गुरु-चांदी, रुई, गेहूँ, चना, अलसी, उड़द तिल, मूंगफली आदि तेज हो। शु. १५ शुक्र-रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, क्षार पदार्थ मन्दे। चांदी में घटबढ़ हो। अन्न शेयर चांदी व मीठे में तेजी बनेगी।

विशेष योग

दसमी कार्तिक बदी में शनि वार संयोग।
पूंगी फल घी तेज हो बढ़े प्रजा में रोग॥
मावस तुल चंद्रमा मंगल मकर विचार।
रोगों से नाशै प्रजा निष्फल हो व्यापार॥
श्रवण क्रूर ग्रह सहित अन्न गेहूँ क्यों भूला।
निश्चय अकरा करै श्रवण भौम बैठा भुला॥
धनिष्ठा ऊपर आवसी भौम ग्रह सुन लेत।
वाहिं मास के फल कहूँ जल विनाश कर लेत॥

अथ मार्ग शीर्ष फल विचारः-

मास में पाँच शनि पाँच रविवार हैं। अमावस शुक्र की, सं. धन ३० मु. शनिवार की, चन्द्रदर्शन व पूर्णिमा रविवार की है। कृष्ण पक्ष में तिथि ह्रास और शुक्ल पक्ष में वृद्धि हुई है। सूर्य. बुध, शक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्रास्त पूर्व में, बुधास्त पश्चिम में हुआ है। मास में पाँच शनि पाँच रवि नेष्ट फल कारक हैं। अतः धान्यादि, ईख, शाली, घी, वस्त्र, कपास, सुपारी के भाव तेज पर कृष्ण पक्ष में धान्य मन्दा रहेगा। शुदि १० मंगल-रुई, घी में तेजी करेगी। मास में शुक्रास्त शुभ नहीं, प्रधान वैद्य डॉक्टर का अभाव, पशुओं में रोग वृद्धि, शिशु वर्ग पीड़ित, क्षत्रियों में उपद्रव। किसी प्रधान नेता का अभाव सहना होगा। अनावृष्टि भी संभव है।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ शनि— इस पक्ष में रुई मन्दी रहकर तेज हो। १५ दिनों में सोना, चांदी, चावल, अलसी, अरण्डी, गुग्गल, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, हींग आदि वस्तु तेज होगी। कृ. ३ सोम-धान्य, घी, गुड़, खाण्ड, चावल तेज। पशु विशेषकर घोड़ों में रोग वृद्धि हो। कृ. ६ गुरु-सोना, चांदी, चावल में घटबढ़ से तेजी चलेगी। कृ. ८ शनि-सोना, चांदी, रुई, चावल, सरसों, मजीठ, जीरा, धनिया माल किराना तेज होगा। कृ. ९ रवि-फसल को नुकसान होने का योग बना है। सोना, चांदी, रुई में मन्दी होकर तेज। धान्य पदार्थ मन्दे होंगे। कृ. १० सोम-सोना, चांदी, चावल आदि अन्न, तेल, तिल, सरसों में मन्दा बनेगा। कृ. १२ बुध-रुई, सूत, कपास, चांदी में मन्दा, राजाओं में आपसी विवाद बढ़े। हाथियों व शिशुओं को पीड़ा सहनी पड़े। कृष्ण ३० शुक्र-रुई मन्दी व चांदी तेज होगी।

शुक्ल पक्ष—शु. १ शनि-रुई, सूत, कपास, चांदी, तिल तेल, सभी धातु तेज। सुगन्धित पदार्थ मन्दे। मालवा प्रान्त में प्रजा में उपद्रव हो। शु. २ रवि-रुई तेज, १५ दिन में घी, खाण्ड, गुड़, तिल तेल, अलसी, सरसों तेज। अन्न, रुई, सूत, कपास, कपड़ा सस्ता रहेगा। शु. ६ शुक्र-अन्नादि पदार्थों में घटाबढ़ी हो। रुई तेज होकर मन्दी, शेयर बजार तेज। यहाँ शुक्रास्त हुआ है। फल दो मास रहेगा। देश में युद्ध का वातावरण बने, स्त्री जाति पर कष्ट अधिक रहें। देश के पश्चिम भाग में उपद्रव झगड़े विग्रह हों। मिश्र देश में संकट बने। वायुयान या समुद्री दुघर्टना होगी। हिन्दु राष्ट्रों को कष्ट, उग्रवाद का सामना करना पड़े। राजयुद्ध, मरूस्थल व सिंध में दुर्भिक्ष हो। कई प्रदेशों में राज परिवर्तन होगा। शु. ७ शनि-बिनौले में तेजी, धान्य पदार्थ तेज, वर्षा, प्रजा में बिमारी फैले। शु. १२ गुरु-तिल, तेल, सुपारी, रुई, कपास, सूत, अलसी, अरण्डी, सरसों, मूंगफली, नारियल, चावल, रसकस, तेज होगा। वर्षा हो। शु. १३ शुक्र-शिशुओं को पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। आगे १५ दिन में तिल तेल, गुड़, हल्दी, ऊनी वस्त्र, चांदी, गेहूँ, चावल, घी, चना, बिनौला, गुग्गल, कपूर आदि तेज होगा। शु. १५ रवि-१० दिन रुई में घटबढ़ हो, अलसी मन्दी, सरसों तेज होगी। नोट— इस पक्ष में चांदी मन्दी रहेगी।

विशेष योग

अगहन मास जब कभी कारी तिथि घट जाय।
शुक्ल पक्ष दिन बढ़े उत्तम समय दिखाय॥
मंगसिर लागत तीज को नखत आर्द्रा हो जाय।
राजा प्रजा सुखी रहे मन्दा धान्य बिकाय॥
मंगसिर में सक्रांति धनु आवे करे दुर्भिक्ष।
इसी मास शुक्र अस्त यह भी होवे भिक्ष॥
शनिवारी संक्रांति हो तिलहन तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोग से जग में अमित अकाज॥

अथ पौष मास फल विचार

मास में पाँच सोमवार हैं। अमावस रवि को, सं. मकर ४५ मु. व पूर्णिमा सोम की और चन्द्रदर्शन मंगलवार का है, कृष्ण पक्ष में तिथि ह्रास और शुक्ल पक्ष में तिथि बढ़ कर घटी है। सूर्य मंगल शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री व पश्चिम में अस्त हुआ है। पाँच सोम धान्यादि भावों को सम रखेंगे। उ.षा. का बुध-रोगोत्पत्ति कारक है। बुधास्त मन्दी बनायेगा। कृ. १० मंगल-गुड़, रस पदार्थों में तेजी, रविवारी अमावस घी, तेज, रुई, चांदी मन्दी। शु. ७ भैसों में बिमारी पैदा करे, शु. ६-१०, रुई तेज करेगी। मास में रसकस, घी और किराना वस्तु, रुई, सूत, कपास, तिल में तेजी बनेगी। कहीं-कहीं बर्फ व ओले गिरने से एकाएक सर्दी बढ़ जायेगी।

कृष्ण पक्ष—कृ. २ मंगल-रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि के भाव तेज होंगे। उड़द, मूंग, मोंठ, तिल, तेल सरसों, नमक में मन्दा बनेगा। कृ. ६ शुक्र-रुई, चांदी, राई, सरसों, मजीठ, जीरा, धनियाँ आदि माल किराना तेज होगा। कृ. ८ रवि-गुड़, अलसी, चना, खाण्ड, शक्कर, चावल आदि मे तेजी, बर्फ गिरने से फसलों को नुकसान होगा। कृ. १० मंगल- सभी रस पदार्थ, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में तेजी बनेगी। कृ. १२ गुरु-चांदी में घटबढ़ से मन्दी होकर तेज हो, सोना, घास, चौपाए पशु, रुई, उड़द, मूंग, मोंठ, चावल, गुड़, खाण्ड, कपास, अलसी, चना, धातु तेज होगी। कृ. १३ शुक्र-रुई, सूत, कपास में घट बढ़ हो, अलसी अरण्डी रसकस में मन्दा। रोगोत्पति होने से प्रजा को कष्ट होगा। कृ. ३० रवि-घी बाजार तेज, रुई, सूत, कपास में मन्दा बनेगी।

शुक्ल पक्ष—शु. १ सोम-चना, जौ, कपास, अलसी, सरसों, घी, तेल, कोयला, पत्थर, अफीम, पोस्त तेज, चांदी तेज होकर मन्दी, रुई, बिनौले में मन्दा बनेगी। कृषि उत्पादन कम होगा। शु. २ मंगल-रुई मन्दी होकर और तेज, शेयर बाजार तेज होगा। २४ दिन में घी, गुड़, रस पदार्थ, तेल तिल, बिनौला, मूंगफली तेज, गेहूँ, चना आदि अन्न मन्दा रहेगा। शु. ६ शनि-आगे एक मास अन्न तेज रहेगा। कृ. ६ रवि-रुई शेयर पाट हैंसियन मन्दा, चांदी तेज, व्यापारियों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। शु. ८ मंगल-रुई, तेल तिल आदि तेज, चांदी, सोना, गुड़, शक्कर, धान्य पदार्थों में मन्दा बनेगा। शु. १० गुरु-आगे १४ दिनों में गेहूँ, जौ, चना, चावल, चांदी, सुपारी, लोंग, शक्कर, रुई, रसकस तेज होगा। शु. ११ शुक्र-रुई, सूत, कपास में मन्दा बनेगा। कृ. १३ रवि-सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास तेज रहेगा।

विशेष योग

पौष मास जब कभी कारी तिथि घट जाय।
शुक्ल पक्ष में दिन बढ़े उत्तम समय बतलाये॥
पौष मावस को जब जब हो रविवार।
धान्य भाव मँहगा रहे भय उपजावन हार॥
रोहिणी युक्त एकादशी पौष शुक्ल की वार।
बरसे तो पावस भली घर-घर मंगला चार॥
मकर राशि के भानु में तेज बिके घी तेल।
धान्य भाव मन्दा रहे कुछ पीड़ा का खेल॥

अथ माघ मास फल विचारः

इस मास में पाँच मंगल पाँच बुधवार हैं। अमावस व सं. कुम्भ ३० मु. मंगल की, चन्द्रदर्शन गुरुवार का और पूर्णिमा बुधवार की है। कृष्ण पक्ष में तिथि घट कर बढ़ी है। सूर्य, मंगल, शुक्र, राहु, केतु ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पूर्व में हो, शुक्रोदय पश्चिम में हुआ

है। बुध शनि मार्गी हुए हैं। मास में पाँच मंगल पाँच बुध मिश्रित फल देंगे। बुध पूर्व में उदय रसायन में समर्थता बनाएगा। स्मग्लरों में राजनीति भय पैदा करेगा। चौपाए पशुओं को पीड़ा होगी। शतभिषा का शुक्र शराबियों के लिए पीड़ाकारी है। वृष का राहु घी, तेल, कुंकुम, केसर, सुगंधित पदार्थ, गुड़, कपास में तेजी करेगा। अगर मंदी बने तो स्टॉक करना लाभकारी है। मोंठ, हींग मन्दे, जुवारी लोग कष्ट पावें, ४ शनि नेष्ट फल कारक, लाल वस्तु, घी, तेल, नमक, रस, कपूर, चन्दन, तुष, धान्य, कहीं अग्नि काण्ड व झगड़े हों, शीत लहर चलेगी, शुक्रोदय छत्र भंग का योग बन रहा है। लोक भय क्षेत्रापति क्षय, किसी श्रेष्ठ पुरुष का अभाव सहना होगा, वर्षा होगी।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ मंगल-सोना, चांदी, चारा तेज हो। कृ. ३ गुरु-सोना, चांदी, रुई, सूत, सरसों, माल किराना तेज। कृ. ४ शुक्र-चावल, मूंग, मोंठ, उड़द तेज, गेहूँ में मन्दा बने। कृ. ५ शनि-चांदी अति तेज, सभी धान्य, गेहूँ, जौ, चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा, अलसी, अरण्डी, तिल तेल, सरसों, लाल मिर्च तेज होगी। कृ. ६ रवि-रुई अन्न घी आदि में तेजी बनेगी। कृ. १० बुध-१५ दिन में चांदी आदि धातु, मोती, लाल मणि, जवाहरात, गेहूँ, धान्य, रुई, अलसी आदि तेज होगी। कृ ११ गुरु-श्री फल में विशेष तेजी, रुई रेशमी वस्त्र, श्रीफल, सोना, चांदी, तिल, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, रसकस में मन्दा बनेगा। छत्र भंग लोकं भयं क्षेमा क्षयः भूपाल को कष्ट, गुजरात पर विपदा आवे। किसी श्रेष्ठ पुरुष का अभाव, देश में उत्पात, सिंध में प्रजा विग्रह करने को तैयार होगी। कृ. १२ शुक्रवार-रुई तेज या ६ दिन पीछे अति तेज होगी, चांदी शेयर मन्दे, आगे-२ मास में तिल, सरसों, मिर्च तेजी बनेगी। देश के दक्षिण में उत्पात व युद्ध का वातावरण बने। कृ १२ शनि-सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल, रुई, वस्त्रों बनेगी। कृ. ३० मंगल-घी, तेल, गल्ला, सोना, चांदी, जस्त, रांगा, पीतल, चावल, गेहूँ, जौ, चना आदि अन्न में तेजी बनेगी।

शुक्ल पक्ष—इस पक्ष में तेल पदार्थों में विशेष तेजी बनेगी। शु. १ बुध-गुड़, खाण्ड, शक्कर, सफेद वस्तु मन्दी, चना, रसकस तेज होगा। शु. २ गुरु-सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, बिनौला में मन्दी है। शु. ४ शनि-घी, तेल, कुंकुम, केसर, चना, सुगन्धित द्रव, रुई, सूत, कण्य, माल किराना, कस्तूरी तेज, यह तेजी एक साल तक रह सकती है। शु. ६ सोम-गेहूँ, गुड़, अलसी रहेगी। शु. ७ मंगल-१५ दिन में सूत, कपड़ा, गुड़, अरण्डी, सरसों, तिल तेल, हल्दी, माल किराना, सोना, चांदी, खाण्ड, जायफल तेज, फसलों को नुकसान होगा। शु. ९ गुरु-राजनेता क्रोधी हो, चांदी, धान्य मन्दा। ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, मोठ तेज हो। शु. १० शुक्र-रुई, सूत; कपास, घी, तेल में तेजी बनेगी। शु. ११ शनि-चावल, मोती, शक्कर, कपूर, सुगन्धित द्रव्यों, सफेद पदार्थ मन्दे रहेंगे। १५ बुध- अलसी, तेलबाना, बाजरों में तेजी बनेगी।

विशेष योग

शुक्र उदय राज द्वार में राज में युद्ध मचावें।
छत्र भंग होय कतल कैयक हो जावें॥
काली एकादशी माघ की जब-जब शुक्र उगंत।
अन्न मंहगा वृष्टि घनी कलह प्रजा करन्त॥
श्वेत अष्टमी माघ की कृतिका ऋष संयुक्त।
फाल्गुन खेती गड़बड़े श्रावण अन धन भुक्त॥
माघ मावस जब कभी हो भौमवार।
शोक लोक में परस्पर राजाओं में तकरार॥
वक्री चाल चलते हुए शनी मार्गी हो जाय।
चालू रुख व्यापार का एकदम पल्टा खाय॥
पड़वा आठें पूर्णिमा जब बुधवारी आवे।
सभी वस्तु व्यापार की मंहगी बिक जावे॥

अथ फाल्गुन मास फल विचारः-

मास में पाँच वृहस्पतिवार हैं। अमावस पूर्णिमा सं. मीन ४५ मु. सभी गुरुवार की हैं। चन्द्रदर्शन शुक्रवार का है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बृहस्पति मार्गी, बुधास्त पूर्व में हुआ है। पाँच गुरु धान्यादि में समर्थता रखेंगे। उ.भा. शुक्र फल फूलों में तेजी बनाएगा। शूद्र जाति में बिमारी फैलेगी। पू.भा. का बुध अरोग्य कारक है। रेवती का शुक्र कोई बड़ी वाहन दुर्घटना करेगा। अश्विन शुक्र घुड़शालकों को पीड़ा देगा, तेज हवा चले, वैद्य, नाविक, व्यापारी प्रभावित होंगे। अश्विन का मंगल तुष, धान्य तेज, भरणी का मंगल विप्रों को कष्ट देगा। पीले वस्त्र तेज, गुरुवारी अमावस रुई में मन्दा। ५ मंगल-चांदी तेज ६ बुध अन्न तेज, १० रवि रुई तेज करेगी।

कृष्ण पक्ष—कृ. १ गुरु-सोना, चांदी, रुई, राई, मजीठ, जीरा, धनिया, माल, किराना तेज करें। कृ. २ शुक्र-रुई तीन चार दिन मन्दी रहकर तेज, चांदी, अलसी, सरसों, गेहूँ, चना तेज, तम्बाकू मन्दा होगा। कृ. ४ शनि-सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, सरसों, मूगफली, घी, चावल में मन्दा। कृ. ६ सोम-१४ दिन में सोना, चांदी, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द, तिल, गुड़, खाण्ड, चावल तेज। कृ. ७ मंगल-चावल, मोती, शक्कर, कपूर आदि सफेद वस्तु में मन्दा हो। कृ. ९ गुरु-सोना, चांदी, धातु, धान्य, पदार्थ के भाव सम, गुड़, खाण्ड, घी, तेलों में मन्दी बनेगी। कृ ११ शनि-सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल, रुई, सूत, वस्त्रादि के भाव तेज होंगे। कृ. १३ सोम-सभी प्रकार का अनाज, सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास तेज, द्विजनों को कष्ट का सामना करना होगा। कृ. १४ मंगल-वर्षा हो, सोना, चांदी में मन्दा, सेवकों को कष्ट उठाना पड़े। कृ. ३० गुरु- हर जाति का अन्न, तिल, रुई, कपास तेज, चांदी में मन्दा। इस संक्रांति पर माल लेकर अगली में बेचे। रुई दश दिन विशेष तेज हो।

शुक्ल पक्ष—१ शुक्र-चावल, चना, उड़द, अन्न, तिल तेज, चांदी में घटबढ़, ऊन में मन्दा, संसार दुःखी रहे। शु. २ शनि-रुई कपास, चन्दन, कपूर, जवाहरात, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा। शु ३ रवि-१३ दिन में गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावल, मणी, सोना, चांदी, गेहूँ आदि में तेजी बनेगी। शु. ५ मंगल-चांदी का बाजार ८ दिन तेज रहेगी। शु. ६ बुध-रुई, सूत, कपास में घट बढ़ चले, सोना, चांदी, लोहा, तांबा आदि में मन्दा, अन्न एक मास तेज रहेगा। शु. १० रवि-रुई तेज या बढ़ाघटी से तेज। गेहूँ, चावल, अलसी, आदि अन्न तेज हो। शु. १२ मंगल-रुई तेज, सोना, चांदी पहले तेज पीछे मन्दा, अन्न, रसकस में मन्दा बनेगा। शु. १३ बुध-गेहूँ, जौ, चना आदि अन्न, घी, सोना, चांदी आदि में तेजी, तिल, तेल, सरसों, अरण्डी, अलसी, तेलबाना में मन्दा, पशुओं में रोग हो। शु. १५ गुरु-घी, तेल तिल आदि तेज, चांदी में घटबढ़, रुई, चावल, धान्य का भाव सम रहें।

विशेष योग

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी आवे आर्द्रा रिक्ष।
उपज खेती ना हो चारों ओर दुर्भिक्ष॥
पूर्ण जब उ.फा. रहे पूनम फाल्गुन मास।
रस पदार्थ गुड़ खाण्ड तिलहन धान विनाश॥
गुरुवारी संक्रांति जब-जब जग में आव।
सुखी प्रजा धन धान्य युक्त सभी वस्तु सम भाव॥
सभी धान्य महंगे बिके मीन राशी गत भानु।
तेजी तिलहन नमक में साधारण अनुमान॥

अथ चैत्र कृष्ण पक्ष फल विचारः-

इस पक्ष में ३ शुक्रवार हैं, मावस शुक्रवार की, मंगल बुध ने राशि परिवर्तन किया है। अतः मास में कृतिका का मंगल प्रजा को पीड़ा देगा। धान्यादि भाव में तेजी बनेगी। कुंकुम आदि सिंगार की सामग्री मंहगी हो। ईख, दूध, घी आदि के भावों में समर्थता हो, भरणी का शुक्र किरात यवनों को पीड़ा करेगा। जल द्रव्य प्रभावित होंगे, कहीं-कहीं हिमपात(ओले) गिरने से फसल को नुकसान होगा। १० रविवारी-गेहूँ तेज, रुई में मन्दा करेगी।

कृष्ण पक्ष— कृ. २ शनि—गेहूँ में तेजी, रुई में मन्दा होगा। चांदी, चावल, सूत, वस्त्र, तिल, तेल सरसों, घी, गेहूँ, राई, मूसर, मोंठ आदि में तेजी बनेगी। कृ. ३ रवि— अलसी, सरसों, अरण्डी, मूंगफली, रुई, चावल, नमक, गेहूँ, जौ, चना आदि तेज हो। कृ. ६ बुध—रुई, सूत, कपास में मन्दा बनेगा। कृ. ७ गुरु—एक मास में प्रत्येक जाति का अनाज, कपास, वस्त्र, कुंकुम, चन्दन, सुगन्धित पदार्थ, सोना, रुई, लाल वस्तु, जूट, बारदाना, कपूर, केसर तेल, तांबा, जस्त, शेयर आदि में तेजी बनेगा। कृ. १० रवि—रुई में घट बढ़ चले, अलसी, मूंग, उड़द, घी, तेल, तिल में मन्दा, अन्न में घटबढ़ चलेगी। कृ. १३ बुध— रुई, सूत, कपास, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल तिल, सरसों, चांदी में मन्दा, गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ आदि तेजी होगी। कृ. ३० शुक्र-चांदी तेज, रुई आदि में मन्दा बनेगा।

विशेष योग

चैत्र काली पंचमी जब हो मंगलवार।
गेहूँ अरु घी में तेजी चले अपार॥

संवत् विक्रम २०५८ (सन् २००१-२००२ ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक—ओंकार दैवज्ञ (व्यापार अनुसंधान केन्द्र, पो. हापुड़), (यू.पी.) फोन : ३१२२३८

सर्वप्रथम आकाशीय कौंसिल के चुवाव में ५१०२ वर्ष व्यतीत होने पर शाके १९२३ में राष्ट्र के स्वामी राजा चन्द्र सौम्य शुभ ग्रह और मंत्री भी शुभ ग्रह भृगुजी बने हैं। वर्ष लग्न में चन्द्र-शुक्र श्री भगवान् भास्कर के साथ मीन गुरु की राशि में दब जाने से प्रधान मंत्री जी को कुछ ताकतें दबाने की कोशिश करती रहेंगी ताकि प्रधानमंत्री की छवि गिरे पर गिरेगी नहीं क्योंकि गुरु जी शुक्र राशि में भीतरी मदद देने से घात करने वाले मुंह ताकते ही रहेंगे।

आकाशी चुनाव

सस्येश-चन्द्रमा, धान्येश-शनि, मेघेश-गुरु, रसेश-बुध, नीरसेश-चन्द्रमा, फलेश-गुरु, धनेश-सूर्य, दुर्गेश-गुरु। ये अधिकारी हैं। इनमें शुभ ग्रहों के अधिकार ज्यादा होने के समय शुभ के सत्य ही इस वर्ष एक प्रकार से आतंकवाद की समाप्ति और हीन वर्ग की उन्नति प्रत्यक्ष दिखाई देगी।

रोहिणी निवास तट पर, समय निवास धोबी के, समय विश्वा २०, समय वाहन मृग, स्तंभ २ जल तृण, सोमवती २, बुधाष्टमी ३, तिथि-क्षय १८, तिथि वृद्धि १०, उत्पत्ति विश्वा ३३, खपति ८४, वर्षा विश्वा ७, धान्यम् ७, तृणम् ९, शीतम् ५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि-क्षय बराबर, सत्यम् आधा, धर्म ढ़, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे, ग्रहणम् १ चन्द्रमा, आषाढ़ शुदी ५, यह वर्ष प्रभु कृपा से उत्तम रहेगा।

टिप्पणी विशेष—इस वर्ष के ग्रह अधिकार यह सिद्ध रते हैं कि अच्छे राष्ट्र सभी आतंकवाद के खिलाप एकजुट होंगे ौर राजा-मंत्री दोनों ही स्त्री हैं। अत: नारियों की जय विशेष धिकार के साथ भारत के कई जिलों में सफाई सुन्दरता का दृष्य ो दिखाई देगा। कुछ गुप्त भेदी क्योंकि २ अधिकार पाप ग्रहों ो मिलने के साथ वर्शेष लग्न काल सर्प के प्रभाव में इस वर्ष ा यह योग घरेलू नेता ही गुप्त वैरी होंगे और वैशाख, ज्येष्ठ था मंगशिर, माघ, फाल्गुन में शहनाईयों की गूंज से भारत के उत्तर प्रदेश, पंजाब में खुशी का वातावरण छायेगा तथा चांदी, सोना के भाव गत वर्षों की अपेक्षा उच्चतम शिखर पर होंगे।

चैत्र शुक्ल—प्रतिपदा चन्द्रवारी होने से और १४ दिन का एक पक्ष १५ के स्थान तिथि टूटने से, शुदि ७ टूटने से, शुदि में दशमी भौमवार क्रिकच योग से सम्बन्धित होने से, शुदि ८ अष्टमी रविवार को शुक्र पूर्व में उदय होने से अनाजों के भाव उच्चतम रेट से एकदम गिरेंगे पर धातु चांदी सिक्का चढ़ेगा तथा शृंगार का लेडीज़ सामान धीरे-धीरे शुदि अष्टमी बाद कपड़ा, रत्न, श्वेत वस्तु, चावल आदि मणि, चीनी, गुड़, शक्कर भी तेजी की ओर करवट लेंगे। शुक्ल पक्ष में द्वितीय भौमवार चैत्र शुदि १० भौमवार चन्द्र वर्गोत्तम चन्द्र के अधिकार की वस्तुओं में तेजी लायेगा। शुदि ३ बुधवार के लास्ट घटी पर शुदि नवमी सोमवार को दैनिक तेजी १०१ तो मंदी ५१ लगाने से अवश्य ही लाभ सट्टी वायदे के चांसों से प्राप्त करें।

बैशाख—इस मास में ५ सोमवार खाद्य पदार्थों में मंदी करेंगे इसलिये गेहूं, चना, जौ, मटर आदि खाद्य पदार्थों में प्रथम तो बाजार पड़े से रहेंगे पर सोमवती अमावस्या से, १ सप्ताह अच्छी मन्दी आयेगी। शुदि में दशमी टूट जाने से, दिशावरी मांग बढ़ने से खाद्य पदार्थों में मंदी रुकेगी और सरकारी खरीद से कुछ मार्केट संभल जायेंगे। इन्फीरियर लाइन के प्रभाव से धातु पदार्थ तेजी में नये भाव बनायेंगे तथा मैंथा शेयर के भाव गिर-गिर कर संभलेंगे। बदी तीज की रात्रि को बुधास्त होने से एक नई लाइन बनेगी। विचार है कि गुड़, मीठा, चीनी, शक्कर में तेजी नये शिरे से उठेगी पर तिलहनों में मन्दी का धीरे-धीरे प्रभाव होने से तेलों में मन्दी रहेगी पर अलसी, घी और वनस्पती के टीनों की तेजी कमाल दिखा देगी। सोयाबीन, दाल में तेजी बनेगी परन्तु यह ध्यान रखना अगर बदी १२ पर तेजी न उठे तो हाजिर सट्टे में सभी जगह मन्दी आने से नहीं चूकेगी। दाल, उड़द, अरहर में भी यही ध्यान पूर्ण रूप से निश्चित है। बदी तीज भौमवार को दूसरे दिन की और दूसरे दिन भी दैनिक तेजी मंदी १०१ और ५१ के अनुपात से लगाना लाभप्रद रहेगा। शुक्ल पक्ष में १०वीं मिति घटी है साथ ही भौम वक्री १२ मिति को रात्रि को होने से मुद्रास्फीति की दर इस अवसर पर गिरकर १०-१४ प्रतिशत होगी। विदेशी प्रतिस्पर्धा से लोहा, इस्पात, एल्मोनियम आदि से संबन्धित वस्तु लेने से पर्याप्त लाभ होगा। शुदि पूर्णिमा को वृष राशि में अस्त होने से १ या ३ माह तक प्रभाव मार्केटों में बनायेंगे। शेयरों में तेजी का प्रभाव बनाएंगे तथा इंटरनेट सुविधा वाले कम्प्यूटर एक्सेसरीज भी उपलब्ध तो होंगे ही इसी अवसर पर गुड़ के भाव भी ऊंचाई पर जाने से नहीं रुकेंगे। बिना आयोडीन वाले नमक के विरोध में गहरी चिन्ता तथा सरकारी आंकड़े व्यापार के प्रति हैरत अंगेज सिद्ध होंगे।

ज्येष्ठ—इस मास में ५ भौमवार हैं। कृष्ण पक्ष की नौमी वृद्धि और शुक्ल पक्ष की द्वितीया का घटना फसल की वस्तुओं को लोप कारक तथा कुछ अंश विशेष तेजी कारक होने से ज्योतिष शास्त्र यह सिद्ध करता है कि चौतर्फा तेजी से चीनी २८ से ५६ या दोगुनी भी उछलेगी। खाद्यान्नों व दलहनों में मांग बढ़ने से प्रथम तो ज्येष्ठ बदी १ से आठे तक विचित्र चाल धोखा देगी। पर नवमी के बाद १० दिन में चावलों व पंसारी की ७५ परसेंट वस्तु देशी व वनस्पति के साथ आलू भी तेजी पर जायेंगे पर यह आवश्यक नोट है कि वायदे चालू सट्टे जैसे गुड़, तेल, मैंथा, आलू, चांदी, सोना सभी वस्तु में ध्यान यह अवश्य रखना कि लगते ज्येष्ठ बदि १ से ७ तक तो पूर्व माह की लाइन चलेंगी पर बदि ८ भौमवार को गत शुक्र के बने हुए नीचे भाव कटें तो मन्दी वर्ना न कटें तो तेजी का श्रीगणेश १० दिन का ऐसा शुरू होगा कि यह चांस ही इस माह का गोल्डन चांस साबित रह जायेगा और सटोरिये खूब लाभ उठायेंगे। रोहिणी बुध, कृत्तिका रवि, संक्रांति वृष सोमवार ७ को दलहनों में मिला-जुला रुख और गेहूं थोक में गिरावट हाथों हाथ लाभ देगी। इधर लो उधर विक्रय करो यह नीति भी व्यापारियों को लाभ देगी। चांदी सट्टे में उछलेगी पर सोना स्थिर रहेगा। कांशी, पीतल, स्टील के भाव नई ऊंचाई पर जायंगे। सुपीरियर

लाइन का चलना इस माह का सिद्ध करता है कि चालू सट्टे के नये भाव हर मंगल और शुक्र को बनेंगे। गुरुवार, सोमवार को हर सट्टे में रियक्शन आना भी जरूर-जरूर निश्चित होगा। इसलिए रियक्शन को लाइन का टूटना समझकर व्यापार कतई न बदलें यह नोट ध्यान रखना। शुदि ७ भौम को जिस वस्तु के भी सट्टे में या हाजिर में नीचे के बने पिछले भाव कटें, मंदी न कटे तो तूफानी रिकार्ड तोड़ तेजी ४ दिन की आवेगी। शुक्ल में बुध वक्री यानि उल्टा चलने लगेगा और चौथे दिन गुरु अस्त हो जायंगे इस वास्ते देश के विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार गिरावट के आसार बनेंगे। दिल्ली, मुम्बई सर्राफा में तेजी को ब्रेक लगने से सिक्का तथा २४ कैरट सुवर्ण जेवरात के भाव तथा विस्कुट में मंदी आने के संकेत उपरोक्त ग्रह दे रहे हैं, पर देशी घी, वनस्पति तेजी पर जायेगा। लेकिन अलोह धातु, मैंथा, रसायन बाजारों में तेजी ही चलती रहेगी।

आषाढ़—इस मास में ५ गुरु ५ ही शुक्र हैं। अतः मोटी लाइन गत माह की चाल परिवर्तन होने के योग हैं। मृगे रवि और बुधास्त बदि १ ता. ७ जून को होने से ७ व ८ को ही गुड़, तेल, सरसों में तेजी मंदी फलेंगे। यहां २५ तेजी तो २५ मंदी भी डालें और हाथों-हाथ सौदा बराबर करें। बदी २ शुक्र को पिछले भौम के नीचे भाव जिस वस्तु में कटें, उनमें एक सप्ताह की मोटी मंदी जानें। इन्हीं योगों से सीमेन्ट शेयरों में तेजी का योग भी बनता है। बदी ६ को शनि देव उदय हो रहे हैं। लोहे सम्बन्धी वस्तु तेजी पर जायेंगी। गुड़, खंडसारी में पूर्व लाइन कल से बदलेगी पर विशेष रूप से सभी तिलहनों में भाव या तो पड़ जायेंगे अगर बदि ९ शुक्र को पिछले भौम के भाव नीचे कटेंगे तो मंदी न कटें तो तेजी की साप्ताहिक लाइन चालू होगी, यह असर संक्रांति के कारण निश्चित है क्योंकि यहां मिथुन संक्रांति का असर पड़ेगा। आलू में तेजी चालू होगी। सर्राफा में स्थिरता चलेगी। लहसुन, प्याज का भी स्यक लाभ देगा। मूंगफली के भाव पड़े रहेंगे परन्तु किराना में तेजी। गेहूं, चना के भाव गिर कर बदि १३ से बढ़ेंगे। बदि १४ को १ दिन पूर्व वक्री वृषे बुध होने से आज शनि के भाव गुड़ सट्टे वायदे के नीचे के नहीं कटेंगे तो तेजी चलेगी क्योंकि आषाढ़ शुदि ३ चौथ १ हैं और बुध का पूर्व में उदय शुदि ५ सोमवार को रात्रि के ४० घड़ी पर हो रहा है। मुंबई शेयर मार्केट, मैंथा में तेजी का उछाला आयेगा। शुदि ८ गुरुवार को गुरु ग्रह का उदय होने से पीली वस्तु में पूर्व मन्दी चल रही होगी तो तेजी का असर प्रारम्भ होगा। गुरु का असर सट्टे गुड़ में भी पड़ता है। इस वास्ते हल्दी, गुड़ तथा अन्य पीली वस्तु सभी में १ मंदी का झोंका आकर तेजी खड़ी होगी। सोना,चांदी के भाव भी बढ़ेंगे। पूर्णिमा को धन राशि में चांद ग्रहण होने से घृत, तैल, गल्ला, तिलहनों में तेजी आयेगी। ग्रहण पड़ जाने के बाद दूसरे दिन १० बजकर ५१ से १ घंटे में जिस-जिस वस्तु में जिधर लाइन चले अगर वह लाइन ४ या ६ घंटे बाद भी चलेगी तो जानो १ सप्ताह पूर्ण चलेगी काश धोखा दें तो सौदा काटकर डबल विपरीत बोलना, यह सांकेतिक चांस है।

श्रावण—इस मास में ५ शुक्र ५ ही शनि हैं। बदी १ को ३१ घड़ी पर स्वराशि मिथुन में व्यापार पति बुध प्रवेश होने से सभी व्यापारों पर असर पड़ेगा। जिस वस्तु में मंदी चल रही है। वह एकदम पलट बदि २ से होगी। गुड़, चांदी, सोना, लाहा, तेल, अलसी, खल, बिनौला परन्तु सट्टे वायदे और हल्दी में भी पलट का चांस चलेगा। बदि ७ को आर्द्रा बुध सारी बुध की वस्तु में तेजी कारक है परंच मार्गी भौम वृश्चिक राशि में मन्दी कारक है। कभी-कभी २ ग्रहों के विपरीत असर होने से दलहन, तिलहन, चांदी, सोना, गुड़, आलू, वायदे तथा मैंथा में तेजी अगर बदि ८ शनिवार को १२ बजे पर चले तो जानना की तेजी ५ दिन पूर्ण चलकर बाद ३ दिन मंदी का रियक्शन चलेगा। पंचमी को दिन के १४ घड़ी दिन चढ़े व्यापार पति बुध का अस्त होना आय में वृद्धि के बावजूद बैंक ऑफ इंडिया का मुनाफा घटने का चांस सम्पन्न होने से तेजी को प्रोत्साहन विशेष रूप से चांदी, कपड़े तथा मीठे में भाव बढ़ेंगे। मैंथा, हल्दी की व तिलहन की बनी लाइन शुदि ४ भौमवार की पूर्ण एक सप्ताह चलेगी। मेवा बाजार बढ़ेगा। छोटी इलायची, धनिया, अजवायन, चिरौंजी के भाव भी बढ़ेंगे। सट्टे में ता. २४ से २६ में नजराने तेजी भी सट्टे वायदों में फलेगी।

भाद्रपद—इस मास में ५ रविवार हैं अतः सूर्य की अधिकृत वस्तु तेजी पर जायेंगी। खांड, गुड़, खंडसारी पर बापन्दी लगेगी तो भी व्यापारी लाभ उठावेंगे और सुपीरियर लाइन के प्रभाव से जीरा, धनियां, इलायची, बादाम में भी अन्दरूनी तेजी बनी रहेगी। वायदा कारोबार, आलू, गुड़, तेल, सरसों, मैंथा, मार्केटों में खिंचाव रहेगा। पर एक नोट है प्रथम तो पूर्व की चालू माह की लाइन चलेगी। परन्तु सिंह बुध ता. ११ अगस्त मिती भादों बदि ७ को प्रवेश होने से ६ दिन में मोटी लाइन चलेगी। बदि १२ शुक्रवार को सिंह संक्रांति ४५ मु. मंदी कारक मानी जाती है। प्रौढ़ावस्था में बैठने से भारी तेजी में ब्रेक लगने का चांस ज्योतिष से सोना, दलहन, मैंथा व शेयर चांदी में चूरी, चना, हरड़, हैशियन, सुतली, बोरी, बारदाना में प्रभावशाली है। इसी दिन आर्द्रा ३ चर्णे गुरु प्रवेश भी है। १२ बजकर ४५ मिनट तक सभी वस्तु में नहीं जिस वस्तु में भी पिछले भौमवार के नीचे भाव कटें तो उसी सट्टे में मन्दी ५ दिन चलकर मार्केट ठप्प होगा। देहली मार्केट के साथ हापुड़, मुजफ्फरनगर पर प्रभाव पड़ने से राजस्थान, पंजाब, मारवाड़ की मंडियों में भी असर पड़ेगा। मुंबई, अरंडा, रुई पर भी ग्रहों का असर पड़ेगा। यह सीजन किसानों को उत्तम परन्तु आम व्यापारियों का खराब रहेगा। शुक्ल में चन्द्रदर्शन सोमवारी सभी सट्टों में मंदी कारक है पर शुदि ४ बुध को सूर्य निकलते ही कर्के शुक्र होने से पिछली चली लाइनें पलटेंगी परन्तु शुदि ६ शुक्र को मूले धनुषि भौम तेजी दाता है। इसी दिन पुष्ये शुक्र मंदी कारक लगने से यह क्लीअर सिद्ध होता है कि आगामी सोम शुदि ९ तक हर वायदे सट्टे में बनी लाइन चलती रहेंगी पर शुदि १० भौमवार को कन्या बुध का असर एक सा शुदि १५ तक चलता रहेगा। शुदि १० भौमवार की बनी १९ बजकर ४२ मिनट की लाइन पर ही आलू, गुड़, चांदी, सोना, तिलहन आदि पर व्यापार करें पर ऐसा होगा कि धातु पदार्थ तेज तो खाद्य पदार्थ मन्दे या खाद्य पदार्थ मंदी पर तो दीगर वस्तु विपरीत चल जाती हैं।

प्रथम आश्विन—इस माह में ५ सोमवार ५ ही मंगलवार हैं। बदि पक्ष में तिथि घटना, शुदि में दशमी तिथि का बढ़ना

कन्यामान्धी संक्रांति ३० मुहूर्त्ती तथा सोमवती अमावस्या—यह सभी ग्रह मोटी तेजी में ब्रेक का काम करेंगे। पर एक विशेष नोट है कि विश्व में चीनी की सप्लाई की चर्चा विशेष जोरों से उठेगी परन्तु भारत में ऊंचे भाव जो भी आशौज बदि या विशेष तुला बुध होने तक यानि तुला बुध शुदि १ भौमवार को संक्रमण करने के बाद और हफ्ते रवि शुदि १०वीं को, वक्री शनि भी इसी दिन होने से तथा रविवार को शुदि त्रयोदशी पर बुध उल्टी गति से चलने लगेंगे तब तो आलू भी घोर मंदी का वातावरण बनायेगा। पर लोहेतर धातुओं में तथा सर्राफा में तेजी का वातावरण छाया रहेगा। इस सं. में २ आश्विन हैं इस वास्ते भी कुछ निराला चांस शीरे में निकलेगा। बदि प्रतिपदा सोमवार को पिछले गुरुवार के ऊंचे भाव तिल तेल में न कटेंगे तो अच्छी मन्दी आएगी। यह मंदी ७ या १० दिन ही चलेगी। चांदी, सोना व अन्य धातुओं में बदि ४ शुक्रवार की १ बजे की बनी लाइन सीधी १५ दिन चलेगी। शुदि में प्रतिपदा भौमवारी चन्द्रदर्शन से मैंथा मार्केटों में तेजी आएगी। काश शुदि द्वितीया को तेजी न चलेगी तो १० दिन की मंदी आयेगी। तेल, तिलहन आदि सरसों व गुड़ में शुदि १० पर शनि वक्री होने से ५ या ७ दिन में ही मोटी लाइन चलेगी। नीचे के बने मंगल व शुक्र के भाव न कटें तो तेजी आयेगी वर्ना नहीं। ये बात ध्यान रख कर चांदी सोने में भी तथा हापुड़ गुड़, आलू व मुजफ्फरनगर, दिल्ली के सट्टों में भी व्यापार करें।

द्वितीय आश्विन—इस मास में ५ बुध ५ गुरुवार होने से मुंबई सटोरियों के दबाव से सेंसक्स बढ़ेगा। हमारी उपरोक्त दी गई पेशीनगोई सच साबित होगी। बुध ग्रह की हर वस्तु में तेजी खड़ी होगी और प्रारम्भ माह से ८ या १३ दिन में तेल के मूल्य बढ़ेंगे। बदि ५ रविवार को बुधास्त, गुड़, आलू, खल, सरसों की लाइन शुदि ६ सोमवार को १२ बजकर १८ मिनट की लाइन पकड़ कर ७ दिन में मोटा लाभ उठाना। चांदी, सोना, गिल्ट, कांशा, तांबा की तेजी भी दश रोजा आयेगी। शुदि ५ को रविवार है इस वास्ते ७ भौमवार को मार्गी बुध कन्या राशि में होने से पूर्ण असर कन्या राशि के अधिकार की वस्तु में शुदि ७ भौमवार को गत शुक्र के नीचे भाव कटें तो मंदी न कटें तो मन्दी समाप्त जानें, यह विचार कर व्यापार करें। पर बोरी, बारदाना को हर मंदी में तथा रुई, सूत को खरीद कर व्यापार से लाभ उठावें। चांस तो बहुत हैं पर इस माह तमाम में बेजोखों का सौदा नजराना तेजी मंदी लगाने का एक ही दिन सर्वोत्तम है। ता. ६ अक्टू. को घंटी बंद पर ८ के लिए काश ८ को न फले एक बजे तक तो २४ घंटे भी यह चांस काम करेगा।

कार्तिक—इस मास में ५ शुक्रवार तथा गुरुदेव वक्री बदि ३ को और इसी दिन से तुला बुध होने से मोटी तेजी में ब्रेक लगेगा। खंडसारी को अवसर पाकर निकालने का प्रयत्न करें। बदि पक्ष में सप्तमी टूटी है। अत: थोक व्यापारी सावधान हो जायें तथा आगे भारी मंदी की सूचना है। यद्यपि दीवाली पर तेल विक्रय खूब होता है तो भी तेजी में न रहें क्योंकि इस वर्ष में बुधास्त पूर्व में बदि १२ सोमवार को होने से हमारे विचार को बल मिलने की आशा पूर्ण है। बदि चौथ सोमवार को आलू, चांदी, मूंगफली, बिनौला, गुड़, सरसों में पिछले गुरुवार के ऊंचे भाव कटें तो तेजी ५ दिन की निकलेगी। काश ऊंचे भाव न कटें तो जोरदार मंदी आयेगी। यह चांस इस पक्ष का स्पेशल है। बदि १३ को धन तेरस तथा बुधास्त होने से जोरदार मंदी चलेगी पर यह जरूरी नोट है कि ठीक ११ बजकर १७ तक जिस वस्तु में मंदी न चले तो खरीद कर ५ दिवसीय चांस से लाभ उठाना। शुदि में सप्तमी तक मार्केट स्थिर रहेंगे पर शुदि अष्टमी शुक्रवार को जिस वस्तु में गत भौम के नीचे भाव क्रौस होंगे मन्दी पूर्ण माह चलेगी। काश ऊंचे भाव कटें तेजी ही तेजी पूर्णिमा तक चलेगी।

मंगशिर—इस मास में ५ शनि और ५ ही रविवार और सुपीरियर लाइन तमाम महीने चलने से तेजी कारक है। परन्तु बदि में तिथि क्षय, शुदि में तिथि वृद्धि मंदीकारक है। जब दो योग होते हैं तब या तो घटबढ़ होती है या प्रथक-प्रथक वस्तुओं में तेजी मंदी चला करती है। चाय का बाजार गर्म जोशी से वृद्धि पर होगा। गेहूं, चना, मैदा, सूजी, ज्वार, जौ में बदि ३ पर जब ज्येष्ठा पर बुध १३ घड़ी पर प्रवेश होगा तब से ७ दिन में तेजी का जोर होगा साथही रुई, सूत तथा काजू, बादाम, अखरोट आदि मेवों में तेजी का जोर होगा बाद में इस उपरोक्त पीरियड के रियक्शन आयेंगे, दालों में सुधार होगा। तिलहन, तेल मार्किटों में धनुषि बुध जब एकादशी भौम के दिन निकलने से पूर्व ही प्रवेश होने से खाद्य तेलों में गिरावट आयेगी। जो १५ दिन चलेगी पर काली मिर्च, कोचीन, बड़ी-छोटी इलायची में वक्री रोहिणी द्वितीय पादे शनि ३० घड़ी पर होने से अगले दिन शुदि १ शनिवार ४ दिन में तेजी आयेगी। शुदि ५ वृद्धि और छट शुक्र के दिन मूले धनुषि शुक्र तथा शुक्र अस्त होने पर चांदी, सोना, घी, देशी व वनस्पति, नमक, अमचूर, कलौंजी, अजवायन, मेथी, मखाना, काजू, किशमिश, बादाम, पिस्ता, छुहारा, गोला में मंदी १५ दिन की चलकर बाद मार्केट ठप्प होंगे और चीनी खंडसारी तथा सूत, बाजार कुछ दलहन भी मंदे होंगे। चावलों के भाव गिरेंगे अत: अभी स्टॉक न करें। रसायनों का स्टाक अन्तिम माह के ५ दिन में करना लाभप्रद रहेगा। मैंथा, गुड़, सरसों, आलू, तेल, सट्टे वायदे के चांस इस माह में प्रथम तो तेजी पर रहेगा परन्तु बदि की मंगला चौथ पिछले शुक्र के नीचे भाव कटें तो तेजी कतई समाप्त और ८ दिन में ही यह चांस मोटा लाभ देगा पर शेयर मार्केट तथा सोना और दालों में मार्केट विपरीत चलेगा। भूलकर हाजिर गुड़, खांड, चीनी का स्टॉक नहीं करना। हां सर्राफा में स्टॉक करने को ठीक है। बदि १२ का तिथि क्षय होना भी सट्टे वायदे में एक चांस मुम्बई महाराष्ट्र से लेकर दिल्ली, मुजफ्फरनगर, हापुड़ के मार्केटों में ३ दिन या ५ दिन की मंदी निकलेगी बाद मार्केट ५ दिन ही ठप्प होंगे। शुदि में गुड़, आलू, तेल, तिलहन, सरसों का विशेष चांस पुन: दो-दो चांस आते हैं। प्रथम तो बदि ४ मंगल जिसका विवरण हम पूर्व लिख आये हैं। दूसरा चांस शुदि ४ को भी मंगलवार होने से फिर चौथ के ४ ही दिन बाद आकाशी चक्र के पूर्व में शुक्रास्त है यह डबल चांस है इसे ही कमर तोड़ चांस कहते हैं। इस दिन गत शुक्र के नीचे भाव कटें तो ६ या ९ दिन की मंदी आयेगी। भाव न टूटे तो मार्केटों में सोदा है ही नहीं इस प्रकार घटाबढ़ी होगी। शुदि १२ गुरुवार को उपरांत १२ बजे बुध देव व्यापारपति जी उदय होते ही मार्केटों की चाल को बदल देंगे। मैंथा भी नया रंग दिखायेगा। लेकिन किशमिश, छुहारा, पिश्ता, हैशियन, जूट, पाट, बारदाना मंदे में लेना।

पौष—इस मास में ५ सोमवार पूर्ण रूप से मंदी कारक है। कृष्ण पक्ष ४ का टूटना भी मंदी कारक, चन्द्र ग्रह के अधिकार की वस्तुओं में विशेष मंदी का योग बन रहा है। चीनी, खंडसारी,

गुड़ तथा घी में भारी मंदी। बदी १ सोमवारी चावल, चांदी, खंडसारी पूर्ण माह मंदी चाहती है। इसमें चन्द्रवार तथा भौमवार-शुक्रवार ही वायदे सट्टे में मुंबई, दिल्ली, हापुड़, मुजफ्फर नगर आदि में चालू वायदों में बनेंगे। बदि २ से १ हफ्ता मंदी का है। चन्द्रमा सब ग्रहों से तेजी चलने में प्रसिद्ध है, चूंकि इस माह में पूर्ण रूप से अधिकृत है। चन्द्रदर्शन मित्र ग्रह भौम की शाम की टाइम में हो रहे हैं। चन्द्र का मित्र सूर्य भी मकर में प्रवेश संक्रांति वाल्य अवस्था में भूखी बैठी है। अत: ध्यान रखिये हिन्दुस्तानी सरकार का अन्य देशों के साथ विमानन नया करार होने से गुप्त व्यापार की जड़ें मजबूत होंगी। बदि १३ से शुदि ३ बुधवार तक भगवान भास्कर वर्गोत्तम में चलेंगे अत: तेल व दलहन, तिलहन, सोने में ६ दिन की लाइन गुड़ के साथ आलू में भी चलेगी। अगर पौष बदि १३ शुक्र को गत भौम के नीचे भाव कटें तो मंदी न कटें तो तेजी का चांस बिना रियक्शन के चलेगा। बाद सभी मार्केट स्थिर घटबढ़ में चलेंगे। गेहूं, चना, बाजरा, मक्की में तेजी। मूंगफली, काली मिर्च तथा पिस्ता, बादाम, अखरोट, हल्दी, नमक, अमचूर, लोबिया, मटर, बेसन में तेजी आयेगी या भाव पड़े भी रहेंगे तो लिवाल लाभ उठा सकेंगे तथा चालू गुड़, तेल, सरसों, आलू सट्टों में शुदि एकादशी शुक्रवार की लाइन १२ बजकर १७ मिनट की ही चालू लाइन पूर्ण माह चलेगी और धीरे-धीरे मंदी चांदी व सोने में तथा पीतल, तांबे व कांशी, अल्मोनियम में तेजी चलेगी।

माघ—इस माह के मध्य में ५ भौम ५ बुध होने से व्यापारियों में जागृति उत्पन्न होने से चहल-पहल होने से मार्केटों में रौनक नजर आयेगी। शुक्र भी उदय, चन्द्रदर्शन भी बुधवारी होने से और अपनी निजी राशि मेष में होने से कभी-कभी राजनैतिक परिस्थितियों का भी असर पड़ता है। भौम के असर से तांबा कंपनियां उत्पादों में दाम बढ़ायेंगी तथा घाटे पर नियंत्रण के लिए उत्तरदायित्व विधेयक आये या आगे आने की दशा बनेगी। दिल्ली शेयर बाजार और मुंबई शेयरों में नई मांग निकलने की संभावना है। बदि २ बुध को ४९ घड़ी रात को वक्री उ.षा. बुध प्रवेश से अगले दिन से राजस्थान की मांग उठने से मैदा, सूजी, दलहन, तिलहन, दाल, मसूर, अरहर, लोबिया, चना, गेहूं, बासमती तथा मूंगफली, अखाद्य तेल भी तेज होंगे तथा किराना बाजार व रसायन बाजार में तेजी का योग बनेगा। गुड़ में आज की १ बजे की लाइन एक सप्ताह तक चलेगी पर सरसों में आज से पलट का चांस सम्पन्न होगा। चांदी में स्थिर सोना तेज होगा। अगर लाल वस्तु तेज न चले तो घाटे से सौदा न करना क्योंकि बुधाष्टमी शुदि में जोरदार तेजी कारक है। बदि १० टूटी है जिसे मन्दा मानते हैं पर इस पर यकीन नहीं करते क्योंकि माघ बदी ११ कुंभ शुक्र और इसी दिन उदय शुक्र तथा फौरन ११ वृद्धि, मार्गी शनि हो रहे हैं और इसी टाइम में इन्फीरियर लाइन चलने से शंका उत्पन्न होती है कि यहां पूर्ण खोज करके ही सौदा करें। आज एकादशी को अगर गत बीते भौमवार के भाव नीचे जिस वस्तु में कटेंगे तो घोर मंदी न कटें तो तेजी उसी वस्तु में चलेगी यह लाइन माघ शुदि बुधाष्टमी तक चलेगी। चांदी, सोना, गुड़, तेल, खल, सरसों, आलू आदि में लाइन पकड़ कर ही व्यापार करना।

फाल्गुन—इस मास में खास विचार है कि ५ गुरुवार और भगवान भास्कर व्यापार पति बुध से आगे चलते रहेंगे और मार्केट वायदे, सट्टे जैसे गुड़, खल, सरसों, तेल, मेंथा, चांदी आदि में तारुणी करना लाभप्रद रहेगा। हाजिर मार्केट में भी तारुणी करना लाभप्रद सिद्ध होगा। आलू अब बेचना वायदे में लाभप्रद नहीं होगा। अगला नया वायदा खरीदना, चालू बेचना क्योंकि बदि ३ मंदीकारक है। सभी वायदे सट्टे बेचना पर मीने शुक्र बदि ५ रविवार को है अगर कबरिट, गुड़, सरसों, तेल, खल के मंदे के बनें तो मंदी ४ दिन में आ सकेगी। काश कबरिट दीखे कि तेजी कर रहे हैं तो तेजी ४ या ७ दिन चलेगी। इस पीरियड में रंग तेज होंगे तथा धातु पदार्थ मैंथा तथा मुंबई शेयर भी तेज होंगे। खाद्य पदार्थों जैसे गेहूं, चना, जौ आदि में इसी माह इस वर्ष की लास्ट तेजी होगी। शुदि प्रतिपदा से मीन संक्रांति के असर जिस वायदे सट्टे की वस्तुओं में पिछले भौम के नीचे भाव कटें तो मंदी वर्ना न कटें तो तेजी। एक सप्ताह का यह चांस कमाल दिखला देगा। अन्य मेवों में तथा रसायन वस्तुओं में तेजी की कमर टूट जायेगी। शेयर में बाजार इस माह के उतरते ५ दिन में तेजी होगी। मोटी तेजी मंदी शुदि ९ को शनि के दिन सोमवार की १०१ तेजी तो ५० मंदी गुड़, चांदी, सोना, सरसों, खल, मेंथा तथा तिलहन में डालकर लाभ उठाना।

आधा चैत्र—इस मास में फाल्गुन की लाइन ही चलेगी। और प्रथम तो बदि ४ तक कोई लाइन नहीं जंचती है पर पिछले स्टोक गेहूं, चना, जौ आदि को निकाल देना ही अच्छा रहेगा। आलू सदा नया लेना लाभप्रद रहेगा। तिलहन के सभी वायदे पड़े रहेंगे। परन्तु चैत्र बदि ५ भौमवार आर्द्रा के ३ चर्ण में गुरु भारी मंदी मिट्टी से लेकर सोने तक करने में समर्थ है पर आज ही इसी दिन रोहिणी ३ शनि का अपोजिट असर कारक है। इस वास्ते आज की बनी नहीं कल की ११ बजकर ५३ मिनट तक बनी लाइन ही सम्पूर्ण चैत्र बदि ३० तक असर कायम रहेगा। सिर्फ चैत्र बदि १३ बुधवार को अश्विनी मेषे बुध रियक्शन ही देगा पर उपरोक्त बात पर ही ध्यान रखकर व्यापार करें और बर्तनों में पीतल, कांसा तथा चांदी,सोना, गिल्ट तेजी पर जाएगा। सूत, रुई, महीन कपड़ों का स्टोक करना ही अच्छा लाभ कारक रहेगा।

सन् २००१ में शेयर बाजार की तेजी-मंदी का समीक्षा

ज्योतिषाचार्य : आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, करौन्दी, पो. सरॉव (नटवार) रोहतास (बिहार)-८०२२१८, दूरभाष : ०६१८५, ४६४८०, ४६५७५
(ज्योतिष विशारद : ज्योतिष वाचस्पति, डी.लिट मानद) अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णपदक प्राप्त एवं नेपाल राष्ट्र द्वारा ख्याति लब्ध सम्मान से सम्मानित

शेयर बाजार का तेजी या मंदी का अनुशीलन के बाद ही शेयर बाजार में निवेश करना सफल व्यापार की कुंजी है। भारतीय शेयर बाजार में वर्तमान समय में भी राजनीतिक अस्थिरता से गहरा ताल-मेल है जिसका कुछ न कुछ प्रभाव शेयर बाजार पर अवश्य ही पड़ता है। मेरे कई वर्षों के ज्योतिषीय दृष्टिकोण से यह आलेख गणितीय आधार एवं शेयर बाजार को प्रभावित करने वाला ग्रह स्थितियों के आधर पर उल्लेखित है। इस आलेख के आधार पर निवेशकगण, शेयर ब्रोकर, शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

जनवरी—इस नूतन वर्ष का शुभारंभ सोमवार, षष्ठी तिथि शुक्ल पक्ष, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि से यह मास प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में केतू, सूर्य धनु में, बुध मकर में, शुक्र कुंभ में, शनि-गुरु वृष में, राहु मिथुन में, मंगल तुला में भ्रमणशील रहेगा। ता. २ को मंगल उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २ से ५ तक शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं. दूरसंचार, साफ्टवेयर, रोल्टा, विप्रो, स्टारलाईट, हिन्दुस्तान लीवर, रिलायन्स इण्ड आदि शेयरों में संवेदी सूचकांक ऊपर की ओर बढ़ेगा। जबकी फार्मा. वित्तीय संस्थाओं आदि के शेयरों में गिरावट आने की संभावना है। ता. ८ को मृगशिरा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. ८ से १२ तक शेयर बाजार में ज्यादातौर पर सभी चुनिंदा शेयरों में एकाएक संवेदी सूचकांक आश्चर्यजनक तरीकों से ग्राफ ऊपर उठेंगे। ता. १५ को हस्त नक्षत्र में बाजार खुलेगा। अतः इसी तारीख को बुध पश्चिम में उदय होगा। जिससे ता. १५ से १९ तक शेयर बाजार में साधारण से भारी तेजी का चाल दृष्टिगोचर होगा। जिसमें सिलवर लाईन, विप्रो, रोल्टा, सत्यम कम्प्यूटर, इनफोसिस, लाईन एण्ड टुब्रो, वित्तीय संस्थाओं, जी. टी.वी. आदि के शेयरों में उछाल की संभावना है। ता. २२ को मूल नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २२ से २६ तक में ता. २४ को शनि मार्गी होगा। ता. २५ को बुध कुंभ में प्रवेश करेगा इसी तारीख को गुरु मार्गी होगा। ता. २६ को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करेगा। जिससे ता. २२ से २६ तक शेयर बाजार में निश्चित ही संवेदी सूचकांक असमंजस की स्थिति में तेजी की ओर बढ़ेगा। परन्तु ता. २६ को सावधानी अपेक्षित है। इस ता. को लगभग सभी चुनिंदा शेयरों का भाव आंधी की आम की तरह गिर जायेंगे। ता. २९ को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता.२९ से ३१ तक फार्मा वित्तीय संस्थाओं, मीडिया सूचना प्रद्यौगिकी कं., हिरो होण्डा, इनफोटेक, इण्टरप्राईजेज, रैन बॉक्सी, हिमाचल फ्यू, पेन्टाफोर साफ्टवेयर अन्य कम्प्यूटर निर्माता कं. के शेयरों में तथा प्रमुख सीमेंट उद्योग, तेल निर्माता कं. के शेयरों में साधारण से भारी उछाल की संभावना है।

फरवरी—यह मास गुरुवार, अश्विनी नक्षत्र, शुभ नाम योग, मेघ राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मकर में सूर्य, कुम्भ में बुध, मीन में शुक्र, वृष में शनि-गुरु, मिथुन में राहु, तुला में मंगल और धनु में केतू भ्रमणशील रहेगा। ता. १ से २ तक अधिकांश सभी चुनिंदा शेयरों में तेजी का माहौल रहेगा। ता. ५ को आर्द्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। अतः ता. ५ से ९ तक में ता. ६ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। जिससे दूरसंचार, मीडिया सूचना प्रद्यौगिकी क्षेत्र की कं. प्रमुख कम्प्यूटर उद्योग, प्रमुख फार्मा, वित्तीय संस्थाओं आदि के शेयर आंधी की आम की तरह बाजार गिर जायेंगे। ता. १२ को हस्त नक्षत्र में बाजार खुलेगा. इसी ता. को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। अतः ता. १२ से १६ तक शेयर बाजार में अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। निवेशकगण बाजार के रुख देखते हुए सौदा करें। ता. १९ को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। इसी दिन बुध पूरब में उदय होगा। अतः ता. १९ से २३ तक ए.सी.सी., आई.सी. आई.सी.आई., जे.पी. इण्ड., रिलायन्स इण्ड, सिलवर लाईन, हिमाचल फ्यू., विप्रो, पेन्टाफोर साफ्टवेयर, दूरसंचार मिडिया, सूचना प्रद्यौगिकी क्षेत्र, टिस्को, टेल्को, हिन्दुस्तान लीवर तथा प्रमुख तेल निर्माता कं. के शेयरों में एका-एक संवेदी सूचकांक ऊपर की ओर बढ़ेगा। ता. २६ को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २७ को बुध मार्गी होगा। अतः २६ से २८ तक जे.पी. इण्ड. एल.एम.टी. प्रमुख फर्टिलाइजर, रिलायन्स इण्ड., रिलायन्स पेट्रो., भारत पेट्रोलियम, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, प्रमुख फार्मा, इन्फोसिस, सत्यम कम्प्यूटर, विप्रो, रोल्टा, रैनबैक्सी आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। जबकि हिन्दुस्तान लीवर, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, हिमाचल फ्यू., आी.टी.सी. तथा गुजरात अम्बुजा सीमेंट, मद्रास सीमेंट, एसी.सी.आदि के शेयरों में उछाल की संभावना रहेगी।

मार्च—यह मास गुरुवार, भरणी नक्षत्र, ऐन्द्र नाम योग, वृष राशि में प्रारम्भ हो रहा है। सूर्य कुम्भ में, शुक्र मीन में, शनि-गुरु वृष में, राहु मिथुन में, केतु धनु में और बुध मकर राशि में भ्रमणशील रहेगा। ता. ९ को शुक्र वक्री होगा। ता. १२ को बुध कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। ता. १४ को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेगा और ता. २८ को शुक्र अस्त पश्चिम में होगा। अतः १ से २ तक शेयर बाजार में अधिकतर मंदी का दौर जारी रहेगा। इन समयों में विदेशी निवेशक एकाएक जोर से विकवाली करेंगे। जिससे शेयर बाजार प्रभावित हो सकता है। ता. ५ को आर्द्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. ५ से ९ तक फर्टिलाईजर, प्रमुख फार्मा, ए.सी.सी. गुजरात, अम्बुजा सीमेंट, रिलायन्स इण्ड., रिलायन्स पेट्रो., जे.पी. इण्ड., दूरसंचार, मीडिया सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., हिमाचल फ्यू., रोल्टा, रैनबैक्सी, टाटा टी, पेन्टा फोर साफ्टवेयर आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। अतः बाजार के रुख देखते हुए सौदा करना बुद्धिमानी होगा। ता. १२ को चित्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. १२ से १६ तक शेयर बाजार में अधिकतर जेनिथ कं. सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, हिन्दुस्तान लीवर, आई.टी.सी., ग्लोबल टेली., ए.सी.सी. आदि के शेयरों में तेजी का जोर रहेगा। ता. १९ को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। अतः ता. १९ से २३ तक अधिकतर शेयरों में विदेशी निवेशक जमकर खरीदारी करेंगे। जिससे अधिकतर शेयरों में तेजी दर्ज होगी। ता. २६ को रेवती नक्षत्र में बाजार खुलेंगे। ता. २६ से ३० तक दूरसंचार, मीडिया सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कं., रोल्टा, सिलवरलाईन, हिमाचल फ्यू, टाटा पावर, एल.एण्ड.टी., हिन्दुस्तान लीवर, सत्यम कम्प्यूटर, पेन्टाफोर साफ्टवेयर, हीरो होण्डा, रिलायन्स कैपिटल, प्रमुख फार्मा, वित्तीय संस्थाओं आदि के शेयरों में साधारण से भारी उछाल की संभावना है।

अप्रैल—यह मास रविवार, आर्द्रा नक्षत्र, अष्टमी तिथि, मिथुन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। इस मास के प्रारम्भ में सूर्य-शुक्र मीन राशि में, गुरु-शनि वृष में, राहु मिथुन में, मंगल वृश्चिक में, केतू धनु में, बुध कुम्भ में तथा चन्द्रमा मिथुन राशि में भ्रमणशील रहेगा। ता. १ को शुक्र पूरब में उदय, ता. २ को बुध मीन में, ता. १० को बुध अस्त पूरब में, ता. १३ को सूर्य मेष में, ता. १८ को बुध मेष में, ता. १९ को शुक्र मार्गी होगा। अतः इस माह की ग्रह स्थिति के अनुसार शेयर बाजार में अधिकतर असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। राजनीतिक स्थितियाँ भी अशांत बनी रहेंगी। ता. २ को पुनर्वसु नक्षत्र में बाजार खुलेगा। अतः २ से ६ तक शेयर बाजार में

ज्यादातौर पर दूरसंचार, मीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं., सत्यम कम्प्यूटर, जैनिथ कं., रोल्टा, रिलायन्स इण्ड., पेन्टाफोर साफ्टवेयर, हिन्दुस्तान लीवर, वित्तीय संस्थाओं आदि के शेयरों में संवेदी सूचकांक ऊपर की ओर बढ़ेगा। ता. ९ को स्वाति नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. ९ से १३ तक शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। टेल्को, टिस्को, टाटा पॉवर, रिलायन्स इण्ड., बोकारो स्टील, टाटा टी., हिन्दुस्तान लीवर, जे.पी. इण्ड., गुजरात अम्बुजा सीमेंट आदि के शेयरों में तेजी का जोर रहेगा. जबकि वित्तीय संस्थाओं, दूरसंचार, मिडिया और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं. तथा प्रमुख कम्प्यूटर उद्योग, फार्मा आदि के शेयर आंधी के आम की तरह गिर जायेंगे। ता. १६ से २० तक शेयर बाजार में सभी चुनिंदा शेयरों में जोर की उछाल की संभावना है। ता. २३ से २७ तक शेयर बाजार में रैन बैक्सी, सिलवर लाईन, टाटा टी, जी. टी.वी., हिन्दुस्तान लीवर, आई.सी.आई. सी.आई., आई.टी.सी., सत्यम कम्प्यूटर, विप्रो आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव के मध्यम संवेदी सूचकांक ऊपर की ओर बढ़ेगा। परन्तु इतना ध्यान रखें कि शेयर बाजार की स्थिति इस माह शुभ कारक नहीं है।

मई—यह मास मंगलवार, आश्लेषा नक्षत्र, सिंह राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मास के प्रारम्भ में सूर्य-बुध मेष में, गुरु-शनि वृष में, राहू मिथुन में, मंगल-केतु धनु में, शुक्र मीन में भ्रमणशील रहेगा। ता. २ को बुध वृष में, ता. ४ को मंगल वक्री होगा। इसी ता. को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. ७ को शनि पश्चिम में अस्त होगा। ता. १४ को सूर्य वृष में, ता. २२ को बुध मिथुन में, ता. ३० को शुक्र मेष में संचरण करेगा। ता. १ से ४ तक दूरसंचार, मीडिया सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं., सिलवर लाईन, पेन्टाफोर साफ्टवेयर, हिमाचल फ्यू, विप्रो, प्रमुख फार्मा, तेल निर्माता कं. के शेयरों में तेजी का चांस बनेगा। ता. ७ को स्वाती नक्षत्र में बाजार खुलेगा। इसी दिन शनि अस्त पश्चिम में होगा। अतः ता. ७ से ११ तक हिन्दुस्तान पेट्रो., भारत पेट्रो., रिलायन्स पेट्रो., हिन्दुस्तान लिवर, प्रमुख कम्प्यूटर उद्योग, फार्मा आदि के शेयरों में तेजी जोर पकड़ेगी। जबकि इण्डस्ट्रीज एवं टाटा पॉवर, टेल्को, टिस्कों, अशोक लिलण्ड आदि के शेयरों में गिरावट आने की संभावना है। ता. १४ को श्रवण नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. १४ से १८ तक शेयर बाजारों में अधिकतर असमंजस की स्थिति रहेगी। लगभग सभी चुनिंदा शेयरों में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। अतः बाजार के रुख देखते हुए सौदा करना बुद्धिमानी होगी। ता. २१ को रेवती नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २१ से २५ तक के बीच में बुध मिथुन राशि में संचरण करेगा। जिससे ग्लोबल टेली, हिमाचल फ्यू., हिन्दुस्तान लीवर, आई.टी.सी., इनफोसिस, पेन्टाफोर साफ्टवेयर, जी.टेलीफिल्म, रिलायन्स इण्ड., विप्रो आदि के शेयरों में जोरदार उछाल की संभावना है। ता. २८ से ३१ तक शेयर बाजार में ज्यादातौर पर दूरसंचार, मिडीया सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं., प्रमुख फार्मा, सिमेंट उद्योग, रिलायन्स पेट्रोलियम, रिलायन्स इण्ड., हिन्दुस्तान लीवर, टाटा टी, डिजीटल ईक्यू, आो.टी.सी. सत्यं कं., रोल्टा, एल.एण्ड टी. आदि के शेयरों में संवेदी सूचकांक ऊपर उठेंगे।

जून—यह मास शुक्रवार, हस्त नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मास के प्रारम्भ में सूर्य-शनि-गुरु वृष में, राहु-बुध मिथुन में, मंगल-केतु धनु में, शुक्र मीन राशि में भ्रमणशील रहेगा। ता. २ को बुध वक्री होगा। ता. ४ को गुरु अस्त होगा। ता. ७ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. १० को मंगल वृश्चिक में, ता. १२ को शनि पूरब में उदय होगा। ता. १४ को सूर्य मिथुन में, ता. १५ को गुरु मिथुन में, ता. १९ को बुध वृष में, ता. २५ को बुध पूरब में उदय, ता. २८ को गुरु उदय, ता. २९ को बुध मार्गी होगा। ता. ३० को शुक्र वृष में संचरण करेगा। अतः ता. १ को हस्त नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही लगभग सभी चुनिंदा शेयरों के भावों में तेजी जोर पकड़ेगी। ता. ४ को विशाखा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. ४ से ८ तक शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. ११ को श्रवण नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. ११ से १५ तक में हिन्दुस्तान लीवर, सत्यं कं., विप्रो, रोल्टा, गुजरात अम्बुजा सीमेंट, सिलवर लाईन, इनफोसीस, रिलायन्स इण्ड, टाटा पावर आदि के शेयरों में संवेदी सूचकांक ऊपर उठेंगे। ता. १८ को भरणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। अतः ता. १८ से २२ तक शेयर बाजार में ज्यादातौर पर असमंजस की स्थिति रहेगी। अतः बाजार के रुख देखते हुए सौदा करना बुद्धिमानी होगा। ता. २५ को आश्लेषा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २५ से २९ तक में दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं., रिलायन्स कैपिटल, टिस्को, टेल्को, रिलायन्स इण्ड., जे.पी. इण्ड, एल.एण्ड.टी., एल.एम.एल., रिलायन्स पेट्रोलियम, भारत पेट्रो., ए.सी.सी., हिन्दुस्तान लीवर, आई.टी.सी., टाटा टी, प्रमुख सीमेंट उद्योग तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में विदेशी निवेशक जमकर लिवाली करेंगे। जिससे शेयरों के भावों में बेतहास वृद्धि होगी। इस माह की ग्रह स्थिति के अनुसार तेजी अथवा मंदी ज्यादा दिन टिक नहीं पाएगा। अतः लिवाली अथवा बिकवाली से शीघ्र निपट लें।

जुलाई—यह मास रविवार, विशाखा नक्षत्र, वृश्चिक राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में मिथुन में, सूर्य-बृहस्पति, राहु, वृश्चिक में चन्द्रमा-मंगल, धनु में केतु, मेष में शुक्र, वृष में शनि-गुरु भ्रमणशील रहेगा। ता. ६ को बुध-मिथुन में, ता. १३ को मंगल मार्गी होगा। ता. १६ को सूर्य कर्क में, ता. २५ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. २९ को शुक्र मिथुन में तथा इसी ता. को बुध कर्क में प्रवेश करेगा। ता. २ से ६ तक शेयर बाजार में चहल-पहल दृष्टिगोचर होगा। जिसमें दूर संचार, मिडिया और सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कं. प्रमुख फार्मा तथा रिलायंस इण्ड, जे.पी. इण्ड एवं फर्टीलाइजर आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव पूर्व संवेदी सूचकांक ऊपर उठेंगे। ता. ९ से १३ तक मंगल मार्गी होगा। जिसमें लगभग सभी चुनिंदा शेयरों में संवेदी सूचकांक आश्चर्य जनक तरीकों से ग्राफ एकाएक ऊपर उठेगा। इन समयों में टाटा समूह, रिलायंस समूह तथा हिन्दुस्तान लीवर में विशेषे लिवाली होगी। ता. १६ से २० तक में रोल्टा, वि.प्रो., सत्यम कं., हिमाचल फ्यू, इंफोसिस, साफ्टवेयर आदि में तथा हिन्दुस्तान लीवर, सीमेंट उद्योग आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव, पूर्व संवेदी सूचकांक ऊपर उठेगा। ता. २३ से २९ तक में ता. २५ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. २९ को शुक्र मिथुन में, बुध कर्क में प्रवेश करेगा। ता. ३० से ३१ तक में टेल्को, टिस्को, टाटा पावर, रिलायंस इण्ड, जे.पी. इण्ड., जी टेलीफिल्म, रैनबैक्सी, एल.एण्ड टी., भारत पेट्रोलियम, रिलायंस पेट्रोलियम आदि के शेयरों में असमंजस की स्थिति में शेयर बाजार धीमी गति से ऊपर की ओर बढ़ेगा।

अगस्त—इस मास का प्रारम्भ बुधवार, मूल नक्षत्र, धनु राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य बुध कर्क में, चन्द्रमा धनु में, मंगल वृश्चिक में, केतु धनु में, शनि वृष में, राहु-शुक्र-वृहस्पति मिथुन में भ्रमणशील होगा। ता. ११ को बुध सिंह में, ता. १६ को सूर्य सिंह में, ता. १९ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. २२ को शुक्र कर्क में, ता. २४ को मंगल धनु में, ता. २७ को बुध कन्या में प्रवेश करेगा। अतः ता. १ से ३ तक पेन्टाफोर साफ्टवेयर,सिल्वरलाईन, टाटा टी, सत्यं कं., विप्रो, ग्लोबल टेली, जी. टी.वी., फार्मा, अम्बुजा सीमेंट, मद्रास सीमेंट आदि के शेयरों में धीमी गति से संवेदी सूचकांक ऊपर उठेंगे। ता. ६ से १० तक सभी चुनिंदा शेयरों का भाव आंधी की आम की तरह गिर जायेंगे। क्योंकि राजनैतिक स्थिरता के कारण विदेशी निवेशक एकाएक बिकवाली कर डालेंगे। जिससे शेयर बाजार प्रभावित होना स्वाभाविक है। ता. १३ से १७ तक सूर्य सिंह राशि में आने से

प्रमुख सीमेंट उद्योग, तेल निर्माता कं., हिन्दुस्तान लीवर, जी.टी.वी., टाटा टी, साफ्टवेयर तथा प्रमुख फार्माओं के शेयरों में तेजी जोर पकड़ेगी। ता. २० से २४ तक शेयर बाजार में विदेशी निवेशक जमकर लिवाली करेंगे। जिससे शेयर बाजार में एक बार फिर संवेदी सूचकांक का ग्राफ जोर से ऊपर की ओर बढ़ेगा। लगभग सभी चुनिंदा शेयरों में तेजी की अवधारणा बनी रहेगी। ता. २७ से ३१ तक समयों में बुध कन्या राशि में प्रवेश करेगा। जिससे दूर संचार, मीडिया सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कं., पेन्टाफोर साफ्टवेयर, विप्रो, रोल्ट, सत्यम कम्प्यूटर, एल.एण्ड टी., रैनबैक्सी आदि के शेयरों में तथा वित्तीय संस्थाओं आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। अतः बाजार के रुख देखते हुए सौदा करना बुद्धिमानी होगा।

सितम्बर—यह मास शनिवार, धनिष्ठा नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मास के प्रारम्भ में सूर्य सिंह में, बुध कन्या में, केतू-मंगल धनु में, शनि वृष में, राहु-गुरु मिथुन में, शुक्र कर्क में भ्रमणशील रहेगा। ता. १६ को शुक्र सिंह में, इसी ता. को सूर्य कन्या में, ता. १८ को बुध तुला में, ता. १६ को शनि वक्री होगा। ता. ३० को बुध वक्री होगा। अतः ता. ३ से ७ तक शेयर बाजारों में लिवाली और विकवाली विशेष होने से शेयर बाजार में असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। ता. १० से १४ तक वित्तिय संस्थाओं, प्रमुख फार्मा, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, एन.आई.आई.टी., पेन्टाफोर साफ्टवेयर, स्टार लाईट, सत्यं कं., जेनीथ कं., टेल्को, टिस्को,जी.टी.वी., रिलायंस पेट्रोलियम आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव के मध्य संवेदी सूचकांक ऊपर की ओर बढ़ेगा। ता. १७ से २१ तक एल.एण्डटी, एल.एम.एल., रिलायंस इण्ड, डि.एस. क्यू. साफ्ट, ग्लोबल टेली, हिन्डाल्को, रैनबैक्सी। टाटा टी, जी.टी.वी., हिमाचल फ्यू., हिन्दुस्तान लीवर आदि के शेयरों में असमंजस की स्थिति होते हुए भी तेजी दृष्टिगोचर होगी। ता. २४ से २८ तक के बीच में शनि वक्री होगी। जिससे इण्डस्ट्रिज, टाटा पॉवर, टेल्को, टिस्को, अशोक लिलण्ड, रिलायन्स इण्ड, जे.पी. इण्ड., मद्रास सीमेंट, अम्बुजा सीमेंट, एसी.सी., आई.टी.सी.आदि के शेयरों में एकाएक संवेदी सूचकांक तेजी से ऊपर की ओर बढ़ेगा। जो एक चांस है। ऐसे इस माह ग्रह स्थिति के अनुसार शेयर बाजार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। जिसके भय से विदेशी निवेशक जोर से विकवाली कर शेयर बाजार कभी-कभी प्रभावित कर सकते हैं।

अक्टूबर—इस मास का प्रारम्भ सोमवार, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में हो रहा है। मासारंभ में सूर्य कन्या में, बुध तुला में, मंगल केतु धनु में, शनि मेष में, राहु-गुरु वृष में, शुक्र सिंह में भ्रमणशील रहेगा। ता. ७ को बुध पश्चिम में अस्त, ता. १० को शुक्र कन्या में, ता. ११ को बुध कन्या में, ता. १९ को सूर्य तुला में, मंगल मकर में, ता. २० को बुध पूर्वोदय, ता. २३ को बुध मार्गी होगा। अतः ता. १ से ५ तक शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. ८ से १२ तक शेयर बाजार में लगभग सभी चुनिंदा शेयरों का भाव आंधी की आम के तरह गिर जाएंगे। विदेशी निवेशक राजनीतिक अस्थिरता के कारण भयभीत होकर इन समयों में जमकर विकवाली कर सकते हैं। ता. १५ से १९ तक सूर्य तुला में, मंगल मकर में आने से दूर संचार, मीडिया सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कं. में, हिमाचल फ्यू. डी.एस.क्यू. साफ्ट,सत्यम कं., हिन्दुस्तान लीवर, रिलायंस कैपिटल, जे.पी. इण्ड., आई.टी.सी. आदि के शेयरों में संवेदी सूचकांक में तेजी जोर पकड़ेगी। जो एक चांस है। ता. २२ से २६ तक सिलवर लाईन, सत्यं कं., स्टार लाईट, जी.टी.वी., प्रमुख फार्मा. तथा रिलायंस पेट्रो, भारत पेट्रो, कॉस्ट्रोल, एसियनपेन्ट, प्रमुख सीमेंट उद्योग आदि के शेयरों में जोरदार तेजी की अवधारणा बनेगी। ता. २९ से ३१ तक प्रमुख फार्मा, तेल निर्माता कं., वित्तीय संस्थाओं, विप्रो, सत्यं कं., रोल्टा, रैनबैक्सी, एसी.सी., आई.टी.सी., टाटा टी तथा वाहन निर्माता उद्योगों के शेयरों का भाव आंधी के आम की तरह गिर जायेंगे। बाजार के रुख देखते हुए सौदा करना बुद्धिमानी होगा। ध्यान रखें कि शेयर बाजार में ज्यादा तौर पर तेजी की अवधारणा का ही चांस है।

नवम्बर—यह मास गुरुवार, अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य तुला में, केतु धनु में, मंगल मकर में, शनि वृष में, गुरु-राहु मिथुन में, शुक्र-बुध कन्या में भ्रमणशील रहेगा। ता. ३ को शुक्र तुला में, बुध तुला में, ता. ४ को गुरु वक्री होगा। ता. १२ को बुध पूर्वास्त होगा। ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में, ता. २२ को बुध वृश्चिक में, ता. २७ को शुक्र वृश्चिक में, ता. ३० को मंगल कुम्भ में भ्रमणशील रहेगा। अतः ता. १ से २ तक सिलवर लाईन, डी.एक्स.यू. साफ्ट, जैनीथ कं., टाटा टी, आर.पी. एल., जी.टी.वी. आदि के शेयरों में तेजी की अवधारणा का चांस है। ता. ५ से ९ तक वित्तीय संस्थाओं, प्रमुख तेल निर्माता कं., सीमेंट उद्योग, सत्यम कंम्प्यूटर, विप्रो, रोल्टा, एल.एण्ड.टी, जी.टी.वी. आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव के मध्य संवेदी सूचकांक में बढ़त दर्ज होगी। ता. १२ से १६ तक शेयर बाजार आंधी के आम की तरह गिर जायेंगे। ता. १९ से २३ तक इनफोसिस टेक्नोलॉजी, एल.एण्ड.टी., रैनबैक्सी, पेन्टाफोर साफ्टवेयर, आर.सी.एफ.टी., रोल्टा, रिलायंस इण्ड, प्रमुख फार्मा, हिन्दुस्तान लीवर, एशिया कौफी, एशियन पेन्ट तथा प्रमुख तेल निर्माता कं. के शेयरों में संवेदी सूचकांक आश्चर्यजनक तरीकों से जोरदार ऊपर की ओर बढ़ेगा। जो एक अच्छा चांस है। ता. २६ से ३० तक टिस्को, टेल्को, अशोक लिलण्ड, रिलायंस इण्ड., हीरो होण्डा, टी.वी. एस. सुजुकी, जी.टी.वी., डिजीटलइक्यू., एसी.सी. गुजरात अम्बुजा सीमेंट, प्रमुख फर्टीलाइजर निर्माता कं., आइ.टी.सी. हिमाचलफ्यू., सत्यं कं., विप्रो. दूर संचार तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में उतार-चढ़ाव की अवधारणा बनी रहेगी।

दिसम्बर—इस मास का प्रारम्भ शनिवार, रोहिणी नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य-शुक्र-बुध वृश्चिक में, मंगल कुम्भ में, शनि वृष में, राहु गुरु मिथुन में, केतू धन में भ्रमणशील रहेगा। ता. १० को बुध धनु में, ता. १५ को सूर्य धनु में, ता. २१ को शुक्र धनु में, इसी ता. को शुक्र पूर्वास्त होगा। ता. २७ को बुध पश्चिमोदय होगा। ता. ३० को बुध मकर में भ्रमणशील रहेगा। ता. ३ से ७ तक दूरसंचार, मिडीया और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं., पेन्टाफोर साफ्टवेयर, आई.टी.सी., इन्फोसिस, टाटा टी., टिस्को, प्रमुख सीमेंट उद्योग, टाटा पॉवर, जे.पी. इण्ड., रिलायंस समूह के शेयरों में उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी की अवधारणा बनेगी। ता. १० से १४ तक लगभग सभी चुनिंदा शेयरों में आंधी के आम की तरह गिर जायेंगे। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. १७ से २१ तक बॉम्बे डाईंग, दिनेश, रेमण्ड, विमल, प्रमुख वस्त्र निर्माता कं., रोल्टा, विप्रो, हिमाचल फ्यू, हिन्दुस्तान लीवर, टाटा समूह तथा रिलायंस समूह आदि के शेयरों में उतार-चढ़ाव पूर्ण संवेदी सूचकांक ऊपर कीओर बढ़ेगा। जो एक अच्छा चांस है। ता. २४ से ३१ तक दूर संचार, मीडिया सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कं., सत्यम कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, टाटा टी., डी.एक्स.यू. साफ्टवेयर, पेन्टाफोर, आई.टी.सी, रिलायंस पेट्रोलियम, जे.पी. इण्ड, रिलायंस कैपिटल, सीमेंट उद्योग तथा प्रमुख फार्माओं के शेयरों में जोरदार तेजी की आवधारणा बनेगी। इन समयों में लिवाली अथवा विकवाली का एक अच्छा चांस है। यह ध्यान रखें कि इस माह तेजी या मन्दी की गतिविधियाँ ज्यादा दिन टिक नहीं पाएंगी। अतः बुद्धिमानी से सौदा करें।

नोट—उपरोक्त आलेख ग्रहों के गोचर संचार के आधार पर लिखा गया है। निवेशक गण स्टाक एक्सचेंज, शेयर ब्रोकर इसे भली प्रकार पढ़कर अपनी सूझ-बूझ के अनुसार सौदा करें। इसमें लाभ हानि की हमारी किसी भी प्रकार की कोई जिम्मेवारी नहीं है। यदि आप चाहें तो दैनिक एवं मासिक शेयर रिपोर्ट विस्तार से मेरे यहां से प्राप्त कर सकते हैं।

चन्द्र शृंगोन्नतः व्यापार वाणी सं. २०५८ वि.

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि" दूरा (आगरा), उ.प्र.

चैत्र शुक्ल पक्ष (पीत वर्ण, दक्षिण शृंग)

संवत् २०५८ वि. चैत्र शु. १ सोमवार दिनांक २६ मार्च सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से पीतवर्ण वाला दिखलाई देगा। पश्चिमी देशों में विग्रह, जनता में उथल-पुथल मच जाया करती है। रुई, कपास, ऊन, काष्ठ, लोहा, घी, तेल पर तेजी के योग दिखलाई देते हैं। धान्य में गेहूं, चना, उड़द, मटर, सरसों, मक्का में घोर तेजी के प्राय: योग बन रहे हैं। सोना, चांदी, ताम्बा,लोहा, जस्ता के भाव कुछ गिर जाते हैं। जूट, पाट, वारदाने, हींग, जीरा, धनियां, काली मिर्च, मखाने, दाख, किशमिश के भाव कुछ घटबढ़ के साथ तेजी पर जाया करते हैं। सुख साम्राज्य सर्वत्र बना रहता है।

वैशाख शु. पक्ष (रक्त वर्ण, सम शृंग)

संवत् २०५८ वि. वैशाख शुक्ल १ मंगलवार दिनांक २४ अप्रैल सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन समशृंग से लाल वर्ण वाला दिखलाई दे रहा है। गेहूं, चना, मटर, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ, चावल, घी, तेल,रुई, कपास, काष्ठ, घास, फूस के भाव कुछ गिर जाते हैं। केन्द्रिय मंत्रिमंडल में परिवर्तन संभव होता है। पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल के भाव कुछ तेजी पर आते हैं। दाख, किशमिश, काली मिर्च, मखाने, चिरौंजी, लौंग, कवलगट्टा, गूगल के भाव कुछ गिर जाते हैं। जूट, पाट, वारदाने, फल, दूध, दही, गुड़, खाण्ड के भाव अधिक नीचे पर जाते हैं। शीताधिक्य, शीतलहर न होकर ऋतु परिवर्तन संभव होता है।

ज्ये. शुक्ल पक्ष (श्वेत वर्ण, सम शृंग)

संवत् २०५८ वि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष गुरुवार दिनांक २४ मई सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन श्वेत वर्ण से दिखलाई देता है। इस मास में गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का,. उड़द, मसूर, रमास, मोंठ पर कुछ तेजी दिखलाई देती है। काष्ठ, मिट्टी के तेल, सरसों, चावल, आदि के भाव गिर जाते हैं। किशमिश, दाख, लौंग, गूगल, सोंठ, खटाई, चिरौंजी के भाव कुछ ऊंचे पर जाते हैं। प्रान्तीय मंत्रिमण्डल में परिवर्तन संभव होता है। देश के किसी वरिष्ठ नेता का निधन भी संभव होगा। राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में भीषण गर्मी हो।

आषा. शुक्ल पक्ष (पीत वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. आषाढ़ शुक्ल पक्ष १ शुक्रवार दिनांक २२ जून सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से पीत वर्ण संयुक्त दिखलाई देगा। जनता में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सुख शान्ति का वातावरण बन सकता है। गेहूं, चना, मटर, चावल, श्रीफल, घी, तेल, हींग, मखाने, काली मिर्च, किशमिश, दाख पर अच्छी तेजी होगी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता, लाहा पर घोर तेजी। दक्षिण भारत में प्रकृति-प्रकोप संभव होगा।

श्राव. शुक्ल पक्ष (रक्त वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. श्रावण शुक्ल २ रविवार दिनांक २२ जुलाई २००१ को उत्तर शृंग से लाल वर्ण वाला चन्द्रमा दिखलाई देगा। गेहूं, चना, जौ, चावल, मक्का, श्रीफल, घी, तेल पर अच्छी तेजी हो। हींग, मखाने, तिलहन, चिरौंजी, किशमिश, दाख, काली मिर्च आदि पर घोर तेजी होती है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा पर कुछ मंदी के योग दिखलाई देते हैं। उत्तर भारत में विग्रह की पूर्ण संभावना है। सुख शान्ति का वातावरण रहे।

भाद्र. शुक्ल पक्ष (रक्त वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. भाद्रपद शुक्ल २ सोमवार दिनांक २० अगस्त सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से रक्त वर्ण से दिखाई देगा। गेहूं, चना, मटर, मूंग, मसूर, मोंठ, जीरा, धनियां, हींग, काली मिर्च, दाख, किशमिश पर घोर तेजी होती है। दूध, दही, शहद, फल, घी, तेल के भाव कुछ गिर जाते हैं। पाक सीमा पर कुछ हरकतें पैदा हो सकती हैं। प्राकृतिक प्रकोप भी संभव है। जिससे जन धन का भारी विनाश संभव होगा।

प्र.आ. शु. पक्ष (पीत वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. प्रथम आश्विन शुक्ल १ मंगलवार दिनांक १८ सितम्बर सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से पीत वर्ण से दिखलाई देगा। इस मास में भ्रष्टाचार, पापाचार, झगड़े, लूटपाट, तोड़फोड़, उत्तराखंड की ओर वारदातें हो सकती हैं। राजस्थान, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश में अच्छी वर्षा से अच्छी राहत मिल सकेगी। धान्य, धातुवाने पर अच्छी तेजी हो। गेहूं, जीरा, सरसों के व्यापारी लाभ उठावें।

द्वि.आ. शु. पक्ष (श्वेत वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. द्वितीय आश्विन शुक्ल गुरुवार दिनांक १८ अक्टूबर सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से श्वेत वर्ण से दिखलाई देगा। अत: इस मास में पृथ्वी के पश्चिमी भाग में भूकम्प, प्राकृतिक प्रकोप के दुष्परिणाम दृष्टिगोचर होंगे। जापान, जर्मन, अमेरिका के लिए समय अच्छा नहीं कहा जा सकता। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, गेहूं, चावल, मटर, चावल, घी, तेल में घोर तेजी के प्राय: योग हैं।

कार्तिक शु. पक्ष (श्वेत वर्ण, उत्तरशृंग)

संवत् २०५८ वि. कार्तिक शुक्ल १ शुक्रवार दिनांक १६ नवम्बर सन् २००१ ई.को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से श्वेत वर्ण से दिखलाई देगा। इस मास में गेहूं, चना, जौ, चावल, मूंग, मसूर पर घोर तेजी। धान्य, धातुवाने, सोना, चांदी,लोहा, पीतल, ताम्बा पर अच्छी तेजी होती है। दक्षिण में भूस्खलन, भूकम्प आदि के प्राय: योग बनते दिखलाई देते हैं। पाक, बंगला देश, नेपाल में जन क्रान्ति की पूर्ण संभावना है। फल नेप्ट दिखाई देता है।

मार्ग. शुक्ल पक्ष (पीत वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. मार्गशीर्ष शुक्ल २ रविवार दिनांक १६ दिसम्बर सन् २००१ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से पीत वर्ण से हो रहा है। विश्व नये रोग से आक्रान्त हो सकता है। मासान्त में लोक सभा में हुल्लड़, मतभेदता हो सकती है। गेहूं, चावल, चना, चांदी, सोना, ताम्बा, दाख, किशमिश, हींग, जीरा, धनिया के भाव घोर तेजी पर जा सकते हैं। ईराक, इजरायल, मिश्र में जन क्रान्ति की संभावना है।

पौष शुक्ल पक्ष (श्याम वर्ण, उत्तर शृंग)

संवत् २०५८ वि. पौष शुक्ल २ मंगलवार दिनांक १५ जनवरी सन् २००२ ई. को चन्द्रदर्शन श्याम वर्ण से होगा। इससे अशुभ फल ही दृष्टिगोचर होता है। उत्तर पश्चिम में जनक्रांति भड़क सकती है। गेहूं, चना, मटर, मक्का, उड़द, मसूर, मोंठ, सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील पर घोर तेजी होती है। हींग, जीरा, धनियां, घी, तेल, काष्ठ के भाव भी ऊंचे पर जाते हैं।

माघ शुक्ल पक्ष (श्याम वर्ण, सम शृंग)

संवत् २०५८ वि. माघ शुक्ल २ गुरुवार दिनांक १७ फरवरी सन् २००२ ई. को. चन्द्रदर्शन सम शृंग से श्याम वर्ण से दिखलाई देगा। इस मास में गेहूं, चना, मटर, मक्का, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर पर कुछ सस्तापन होता है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, स्टील का भाव कुछ तेज होता है। प्रान्तीय मंत्रिमण्डलों में फेर बदल हो।

फाल्गु. शु. पक्ष (पीत वर्ण, दक्षिण शृंग)

संवत् २०५८ वि. फाल्गुन शुक्ल १ शुक्रवार दिनांक १५ मार्च २००२ ई. को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से पीतवर्ण से दिखलाई देगा। किशमिश, दाख, हींग, जीरा, मखाने, धनियां, गूगल, केवल गट्टा, पेट्रोल, डीजल के भाव विशेष तेजी पर जाते हैं। गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का, उड़द, मसूर, मोंठ के भाव गिर जाते हैं। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, स्टील पर घोर तेजी हो जाया करती है। व्यापारी लाभ उठावें।

स्पेशल रिपोर्ट

कपूर

दिनांक २६ मार्च से २६ अप्रैल तक— २६ मार्च से ४ अप्रैल तक मार्केट घटाबढ़ी में चलता रहे। ५ से १५ अप्रैल तक घोर तेजी के योग हैं। १६ से २६ अप्रैल तक प्राय: मंदी के योग हैं। **२७ अप्रैल से २७ मई तक**— २७ अप्रैल से ५ मई तक मार्केट घोर तेजी में चल सकता है। ६ से १५ मई तक मार्केट घटाबढ़ी में चलता रहे। १६ से २७ मई तक मार्केट मंदी पर जाकर तेज होगा। **२८ मई से २८ जून तक**— २८ मई से २ जून तक घोर तेजी के प्राय: योग हैं। ३ से १५ जून तक मंदी के प्राय: योग बन रहे हैं। १६ से २६ जून तक मार्केट घटाबढ़ी में चलेगा। २७ से २८ जून तक घोर तेजी के योग हैं। **२९ जून से २९ जुलाई तक**— २९ जून से ५ जुलाई तक मंदी के प्राय: योग हैं। ६ से १६ जुलाई तक मार्केट घटाबढ़ी के साथ चल रहे हैं। १७ से २५ जुलाई तक घोर तेजी के योग हैं। २६ से २९ जुलाई तक घटाबढ़ी के योग चलते हैं। **३० जुलाई से ३० अगस्त तक**— ३० जुलाई से ८ अगस्त तक घोर तेजी के योग हैं। ९ से १५ अगस्त तक घटाबढ़ी के प्राय: योग हैं। १६ से २५ अगस्त तक मंदी के प्राय: योग हैं। २६ से ३० अगस्त तक घोर तेजी के योग हैं। **३१ अगस्त से ३० सितम्बर तक**— ३१ अगस्त से ५ सितम्बर तक मार्केट घटाबढ़ी में चलेगा। ६ सितम्बर तक मार्केट में मंदी के योग हैं। ७ से १५ सितम्बर तक घोर तेजी के योग हैं। १८ से ३० सितम्बर तक घटाबढ़ी के प्राय: योग हैं। **१ से १५ अक्टूबर तक**— १ से ८ अक्टूबर तक मंदी के योग हैं। ९ से १५ अक्टूबर तक घोर तेजी के प्राय: योग आकस्मिक बन रहे हैं। १६ से २० अक्टूबर तक घटाबढ़ी चलती रहे। २१ से २७ तक तेजी हो। २८ से ३१ तक सामान्य मंदापन, १ से ८ नवम्बर तक घोर तेजी। ९ से १५ नवम्बर तक घटाबढ़ी। १६ से २५ तक मंदापन हो। २६ से ३० नवम्बर तक पुन: तेजी का वातावरण बनेगा। मंदे में खरीदकर तेजी में बेचें। १७ से २४ नवम्बर तक घोर तेजी। २५ से ३० तक मंदापन हो। १ से १६ दिसम्बर तक घटाबढ़ी चलती हैं। १७ से २३ नवम्बर तक बेचकर लाभ उठा सकते हैं। यह एक चांस है। १६ से २० दिसम्बर तक माल में घटाबढ़ी चलती रहे। २१ से २६ तक घोर तेजी के प्राय: योग हैं। अत: माल बेच देना चाहिए। २७ से ३१ दिसम्बर तक कुछ मंदापन आयेगा। अत: माल खरीद लें। १ से ८ जनवरी सन् २००२ ई. तक घटाबढ़ी चले। ९ से १६ जनवरी सायंकाल तक अच्छी तेजी पुन: आवेगी। १७ जनवरी से १५ फरवरी तक बाजार स्थिर न रहे। १६ फरवरी से १५ मार्च तक घोर तेजी। १६ मार्च से १२ अप्रैल तक मंदी।

हल्दी

दिनांक २६ मार्च से २६ अप्रैल तक— २६ मार्च से ५ अप्रैल तक प्राय: मंदी का योग है। ६ से १५ अप्रैल तक मार्केट घटाबढ़ी में चलता रहे। १६ से २६ अप्रैल तक घोर तेजी होगी। **२७ अप्रैल से २७ मई तक**— २७ अप्रैल से ८ मई तक मार्केट घटाबढ़ी में चलेगा। ९ से १५ मई तक मार्केट मंदी की ओर जावेगा। १६ से २७ मई तक घोर तेजी हो। **२८ मई से २९ जून तक**— २८ मई से ८ जून तक मार्केट घटाबढ़ी की ओर जावेगा। ९ से १५ जून तक मार्केट मंदी की ओर जा सकता है। १६ से २७ जून तक घोर तेजी हो। **३० जून से ३० जुलाई तक**— ३० जून से १० जुलाई तक मार्केट घटाबढ़ी के साथ चलता रहे। ११ से २० जुलाई तक मार्केट में एकदम मंदी आ सकती है। २१ से ३० जुलाई तक मार्केट घोर तेजी की ओर चल सकता है। **१ अगस्त से १ सितम्बर तक**— १ से १० अगस्त तक घोर तेजी के प्राय: योग हैं। ११ से २५ अगस्त तक मार्केट घटाबढ़ी की तरफ जावेगा। २६ अगस्त से १ सितम्बर तक मंदापन हो। **२ सितम्बर से १ अक्टूबर तक**— २ से १० सितम्बर तक मार्केट घटाबढ़ी की तरफ जा सकता है। ११ से २५ सितम्बर तक घोर तेजी के प्राय: योग हैं। २६ सितम्बर से १ अक्टूबर तक मंदापन हो। **२ से १५ अक्टूबर तक**— २ से १० अक्टूबर तक मार्केट घटाबढ़ी पर जा सकता है। ११ से १५ अक्टूबर तक घोर तेजी के प्राय: योग बनते हैं। १६ से १९ अक्टूबर तक तेजी। २० से २५ तक घटाबढ़ी। २६ से ३१ तक घोर तेजी का वातावरण बनेगा। १ से १० नवम्बर तक घटाबढ़ी का बाजार चले। ११ से २० तक घोर तेजी। २१ से २८ तक मंदापन एकदम होता है। २९-३० में पुन: घटाबढ़ी होती है। १७ से २२ नवम्बर तक मंदापन। २३ से ३० तक घटाबढ़ी चले। १ से ८ दिसम्बर तक अच्छी तेजी के योग हैं। ९ से १६ तक घटाबढ़ी पुन: चलती है। १६ से १९ तक अच्छी तेजी। २० से २५ तक घटाबढ़ी, २६ से ३१ तक मंदी की सुर्खी होगी। १ से ७ जनवरी तक मंदापन हो। ८ से १६ तक अच्छी तेजी होगी। इसमें अच्छा लाभ उठा सकते हैं। १७ जनवरी से १६ फरवरी तक घोर तेजी। १७ फरवरी तक घोर तेजज। १७ फरवरी से १५ मार्च तक मंदापन होता है। १६ मार्च से १२ अप्रैल तक घटाबढ़ी चले।

लाल मिर्च

दिनांक २६ मार्च से २६ अप्रैल तक— मार्केट घटाबढ़ी में चलता रहे। **२७ अप्रैल से २७ मई तक**— मासान्त में घोर तेजी के योग हैं। **२८ मई से २९ जून तक**— मासान्त में प्राय: मन्दी हो। **३० जून से ३० जुलाई तक**— मार्केट घटाबढ़ी में चलेगा। **१ अगस्त से १ सितम्बर तक**— घोर तेजी के प्राय: योग हैं। **२ सितम्बर से १ अक्टूबर तक**— मंदी का योग बन रहा है। **१ अक्टूबर से १५ अक्टूबर तक**— घोर तेजी होगी। **१६ से २० अक्टूबर तक** सामान्य तेजी। २१ से २६ तक घोर तेजी होगी। २७ से ३१ तक मंदापन होता है। १ से १० नवम्बर तक घोर तेजी। ११ से १७ तक घटाबढ़ी के बाजार चलते हैं। १८ से २२ तक तेजी। २३ से ३० तक फिर घटाबढ़ी हो जाया करती है। घोर तेजी में अच्छा लाभ उठा सकते हैं। १ से ७ दिसम्बर तक मंदापन हो। ८ से १६ दिसं. तक पुन: घोर तेजी। १६ से २० तक मंदापन, २१ से २४ तक घटाबढ़ी हो। २५ से ३१ तक अच्छी तेजी आवे। १ से ७ जनवरी तक मंदापन, ८ से १६ तक घटाबढ़ी चलती रहती है। १७ जनवरी से १६ फरवरी तक मंदी का योग है। १७ फरवरी से १५ मार्च तक घोर तेजी हो। १६ मार्च से १२ अप्रैल तक घटाबढ़ी हो।

धनियां

दिनांक २६ मार्च से २६ अप्रैल तक— घटाबढ़ी चले। **२७ अप्रैल से २७ मई तक**— घोर तेजी हो। **२८ मई से २९ जून तक**— मंदी का रुख हो। **३० जून से ३० जुलाई तक**— तेजी होगी। **१ अगस्त से १ सितम्बर तक**— घटाबढ़ी चलेगी। **२ सितम्बर से १ अक्टूबर तक**— मंदी बनी रहे। **१ से २१ अक्टूबर तक**— घोर तेजी हो। २२ अक्टूबर से २६ तक घटाबढ़ी। २७ से ३१ तक सामान्य तेजी रहे। १ से ७ नवम्बर तक मंदापन। ८ से १५ तक घटाबढ़ी। १६ से २२ तक अच्छी तेजी होती है। २३ से ३० तक मंदापन होता है। १७ से २४ नवम्बर तक मंदापन, २५ से २९ तक घोर तेजी। ३० नवं. से ७ दिसम्बर तक सामान्य तेजी। ८ से १५ तक घटाबढ़ी। १६ को घोर तेजी हो। १६ से १८ दिसम्बर तक अच्छी तेजी। १९ से २३ तक मंदापन हो। २४ से ३१ तक घटाबढ़ी हो। १ से ५ जनवरी तक अच्छी तेजी। ६ से १० तक घोर तेजी हो। ११ से १६ तक मंदापन होता है। १७ जनवरी से १४ फरवरी तक घटाबढ़ी चले। १५ फरवरी से १५ मार्च तक घोर तेजी। १६ मार्च से १२ अप्रैल तक पुन: मंदापन हो।

विशेष ज्ञातव्य–यह तेजी मंदी स्पेशल रिपोर्ट ग्रह स्थिति के अनुसार शोध दृष्टि से लिखी गई है। विशेष जानकारी लेखक के पते से कर सकते हैं।
—प्रकाशक

विशेष ज्ञातव्य–यह तेजी मंदी रिपोर्ट सत्य पर आधारित है। मार्केट का रुख देखकर अवश्य व्यापार करें। —सम्पादक

तेजी मंदी रिपोर्ट फीस

वार्षिक—२००१ रु., षट् वार्षिक—१००१ रु.,
त्रैमासिक—५०१रु., मासिक—२५१ रु. डाक खर्च ५० रु. अलग।

पता—पं. शंकर लाल गौड़ "शंभु कवि"
श्री शंकर साहित्य सदन, दुरा-२८३११० आगरा (उ.प्र.)

व्यापार भविष्य सन् २००१ ई.

लेखक—श्री रामावतार गुप्त "व्यापार भूषण", मु.पो. खोरी, जिला-रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

जनवरी मास—यह मास पौष सुदी छट सोमवार से शुरू होता है। इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ६, १६, २०, २३, २७ तथा मन्दी की ३, १५, २२, २९ हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी-मंदी के झटके संभव हों। मास में प्रथम रुई में भारी मंदी आकर बाद में अच्छी तेजी के योग भी हैं तथा कहीं-कहीं बर्फ ओले आदि प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान संभव है। ता. ४ जन. शते शुक्र दिन १० के अन्दर नशीले पदार्थों के ठेकेदारों को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़े तथा घी, सरसों, सोना, चांदी के भावों में चमक आयेगी। ता. ६ जन. सुदी ११ शनिवारी कृत्तिका नक्षत्र युक्त है। **पौष सुदी एकादशी को जो कृत्तिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे खूब लाभ सर्वत्र॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार लाल रंग की वस्तुओं जैसे लाल मिर्च, गुड़, अलसी आदि के व्यापार से लाभ हो एवं जब तक प्रथम वर्षा न हो तब तक अनाज के व्यापार से लाभ होगा। ता. ९ जन. मंगलवारी पूनम चतुर्दशी का क्षय तेजी कारक है। आज चन्द्रग्रहण होगा। ग्रहण से पूर्व चौदश तिथि का क्षय रुई में भारी मंदी का संकेत परन्तु आगे रुई में भारी तेजी भी आयेगी। सावधान! मन्दी में खरीद कर तेजी में बेचें। यह एक चांस है। ग्रहण मिथुन राशि में होने से मिथुन राशि से सम्बन्धित वस्तुओं में तेजी आयेगी तथा राई, मेथी, जस्ता का स्टाक चार मास बाद में अच्छा लाभ देगा। रुई, बारदाना, चावल, चना, अनाज, मटर, अरहर का स्टाक तीन मास पश्चात् लाभ देगा।

माघ मास फल—मास में अनाजों में जनरल लाईन तेज। बदी पक्ष में प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा तो सुदी पक्ष में ज्यादातर मन्दी का रुख रहे। मास में शनि-गुरु दोनों मार्गी हो रहे हैं। अतः घटबढ़ भी अधिक चल सकती है। ता. १० जन. बदी एकम् बुधवारी पक्ष में सभी खाद्य पदार्थों में प्रथम तेजी आकर पक्ष के अन्त में मन्दी भी आयेगी। यहाँ आलू, प्याज भी तेज होंगे तथा आगे तीन मास तक प्रायः बाजारों का रुख तेज रहेगा। यथा—**माघ मास प्रतिपदा को वार होय बुधवार। तीन मास तेजी रहे, भावी वर्ष विचार॥** *(भविष्य भारती)* ता. १२ जन. को यदि बादल गर्जे परन्तु वर्षा न हो तो जौ, गेहूं, आदि अनाजों का स्टाक निश्चय लाभ देगा। ता. १३ जन. माघ बदी ४ शनिवारी तेजी तथा नेष्ट फलकारी है। मकर संक्रांति प्रवेश से सफेद वस्तुओं चावल, चांदी आदि में तेजी का संचार होगा तथा इस संक्रांति काल में तूफान आदि से कहीं व्यापक हानि की आशंका रहेगी। एक सप्ताह के अन्दर तिलहन, सोना, चांदी में एक तेजी की लहर संभव है। **माघ मास में चतुर्थी को आवै शनिवार। चोर अग्नि भय धान्य क्षय, अति दुर्भिक्ष विचार॥** *(भविष्य भारती)* ता. १४ जनवरी को यदि आकाश दिशाएं निर्मल हों तो लाभ की इच्छा रखने वालों को कपास का स्टाक लाभकारी रहेगा। ता. २३ जनवरी श्रवणे सूर्य अनाज के भावों में वृद्धि करेगा। इसके अलावा सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, सुपारी, तिलहन में भी तेजी का संचार होगा। ता. २४ जनवरी गुरु मार्गी, रुई, सोना, चावल, सूत के भावों में मंदी कारक परन्तु घी के भाव तेज होंगे। ता. २५ जनवरी शनि मार्गी घटबढ़ कारक है। **वक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाए। चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाए॥** *(भविष्य भारती)* बाजार की चलती लाइन में एकदम बदलाव आयेगा। एक सप्ताह के अन्तर्गत लोहा, ताम्बा, सरसों, बिनौला में मंदी लायेगा। परन्तु यदि आज आकाश में बादल हों, बिजली चमके तो जानना चाहिए कि तेल, घी, तिलहन पदार्थों का बाजार आगे तेज होता जायेगा। ता. २७ जनवरी को यदि बादल नहीं हो तो गेहूं का बाजार तेजी की तरफ झुक जायेगा। आज मीने शुक्र दिन ७ में प्रायः वस्तुओं में मन्दी के झटके लायेगा। रुई में अच्छी मन्दी के झटके संभव हों।

फरवरी मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें २, ६, १०, १७, २४ तथा मन्दी की १२, १५, २२, २६ हैं। इन तारीखों में विशेष तेजी मंदी के झटके आने संभव। ता. १ फरवरी माघ सुदी ७ गुरुवारी भरणी नक्षत्र युक्त होने से अच्छी फसल का संकेत देती है। **माघ सुदी सातै दिना भरणी नखत विचार। रोग नाश हो धरा पर उत्तम पैदावार॥** *(भविष्य भारती)* एक अन्य योग से फरवरी मार्च में मिर्च मसालों में मन्दी की प्रधानता रहे तथा अच्छी मन्दी भी संभव हो। ता. ३ फर. वृश्चिके मंगल, शनि-गुरु से अपोजिशन योग बनायेगा। प्रायः व्यापारिक वस्तुओं के भावों में तेजी का संचार हो। परन्तु अधिक तेजी की उम्मीद नहीं। सरसों, तिलहन पदार्थ, लाल मिर्च, मसालों, सोना, चांदी, रुई के बाजार ज्यादा प्रभावित होंगे। मंगल वृश्चिक राशि में १२ अप्रैल तक भ्रमण करेगा। इस दौरान यदि बाजार मन्दा चलता है तो अच्छी मन्दी संभव हो। परन्तु तेजी चलने से अच्छी तेजी की आशा नहीं है। अतः रुख देखकर काम करें। ता. ६ फर. वक्री बुधास्त दिन १३ के लिए अस्त होगा। इस दौरान अनाजों, सोना, चांदी, धातुएं, गल्ला मसालों में तेजी चलेगी तथा चांदी में अच्छी तेजी आ सकती है। सावधान! ता. ८ फरवरी गुरुवारी पूनम दिन ३ के अन्दर तिलहन में तेजी का झटका तो अन्य वस्तुओं में मन्दी लायेगी। यदि आज वर्षा हो तो गेहूं तथा घी में तुरन्त तेजी का संचार हो जायेगा।

फाल्गुन मास—इस मास में बाजार प्रायः एक तरफा तेज रहें। परन्तु सफेद वस्तुओं (केवल खाद्य पदार्थ) चावल आदि में बाजार मन्दा चल सकता है। बदी पक्ष में तिथि वृद्धि होकर सुदी पक्ष में तिथि छय होना व्यापारिक वस्तुओं में तेजी सूचक है। यथा—**बदी पखवारे तिथि बढ़े किन्तु सुदी घट जाए। सभी वस्तुएं तेज हों, सस्तापन हट जाए॥** *(भविष्य भारती)* आगे फसल से पूर्व एक योग के अनुसार अनाजों में एक दफा जबरदस्त तेजी अस्थाई तौर पर आ सकती है। परन्तु प्रथम बाजार मन्दा होकर यह तेजी आयेगी। पूर्णिमा पूर्ण रूप से पू.फा. युक्त है। अतः आगे फसल पर अच्छी मन्दी आवे। ता. १० फर. अनुराधा, मंगल, रुई, गेहूं, लाल मिर्च आदि लाल रंग की वस्तुओं के बाजारों को प्रभावित करेगा। स्थूल रूप से उपरोक्त वस्तुओं में प्रथम १० दिन जो लाईन चले। आगे १० दिन विपरीत चले। अतः रुख देखकर काम करें। ता. १२ फर. कुंभ संक्रांति काल (१३ मार्च तक) में व्यापारियों को स्टाक नहीं करना चाहिए। अपितु खरीदते बेचते रहने से लाभ उठाया जा सकता है। परन्तु यदि आज वर्षा हो तो लाला रंग की वस्तुएं (जो सस्ती हों) का स्टाक करके चार मास बाद बेचने से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। ता.१९ फर. पूर्व बुधोदय अनाज, रस, पदार्थों में मन्दी कारक तो सोना, चांदी, गुड़, सूत में तेजी को सपोर्ट करेगा। ज्येष्ठा मंगल दिन १२ के अन्दर चांदी में मन्दी, रुई में घटबढ़ एवं अफीम, तम्बाकू, नशीले पदार्थों के भावों में चमक लायेगा। ता. २३ फरवरी शुक्रवारी मावस दिन ३ में चांदी, शेयर्स अनाजों में एक तेजी का झटका लायेगी तथा दिन २ के अन्दर प्रायः वस्तुओं में एक तेजी का झटका आयेगा। ता. २४ फर. सुदी एकम् शनिवार चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। सोना, चांदी, रुई, सरसों, मूंगफली, दलहन पदार्थों में तेजी कारक है तथा दिन १५ (पक्ष में) के अन्दर अच्छी तेजी भी संभव है। परन्तु एक मास के अन्दर पुनः वही भाव आ जायेंगे। ता. २५ फरवरी फुलरिया दोयज—**जल राशि के चन्द्र से नवें सातवें थान। शनि हो अथवा भूमि सूत वर्षा हो महान॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार २५ से २७ फरवरी तक कहीं भारी वर्षा होना संभव है। ता. २८ फरवरी को यदि बादल गर्जे, बिजली चमके तो समझना चाहिए कि बैशाख में अनाज मन्दे बिकेंगे।

मार्च मास फल—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ६, १२, १३, १७, २३, २४, २७, ३१ तथा मन्दी की १, ८, १९ हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके संभव होंगे। ता. २ मार्च सुदी ७ कृत्तिका नक्षत्र युक्त है। अतः आगे भादव अमावस्या को या आसपास कहीं भारी भयंकर वर्षा होगी। यथा—**फाल्गुन शुक्ला सप्तमी को कृत्तिका नक्षत्र। भादव मावस के दिवस वर्षा हो सर्वत्र॥** *(भविष्य भारती)* ता. ३ मार्च सुदी ८ रोहिणी नखत युक्त होने से प्रथम अनाजों में मन्दी आकर फिर बाजार अच्छा तेज होगा। यथा—**कुंभ मीन के अन्तरे अष्टमी रोहिणी होय। सवाया ड्योढ़ी दुगनी तेजी अन्न में होय॥** *(भविष्य भारती)* इस योग से आगे वर्षा में कमी भी आती देखी गई है। ता. ५ एवं ६ मार्च को यदि आकाश में बादल हो तो आगे आसोज में चौथ एवं पंचमी को अच्छी वर्षा होगी। ता. ६ मार्च रोहिणी गुरु, रुई में घटाबढ़ी करेगा तथा गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी के भावों में गिरावट लायेगा। ता. ९ मार्च शुक्रवारी पूनम पू.फा. युक्त होने से सुख सुभिक्षकारी है। **पू.फा. फागुन पूर्णिमा पूरन सुभिक्ष।** पू.फा. नक्षत्र में होलिका दहन आगे व्यापारिक वस्तुओं में अच्छा मन्दी भी ला सकती है। शुक्रदेव वक्री होंगे। मजीठ, सोना, चांदी, रुई, घी के भावों में तेजी आ सकती है।

चैत्र मास फल—(ता. १० मार्च से ८ अप्रैल) तक। इस मास पांच शनि-रविवार दुर्भिक्षकारी, छत्रभंग तथा जनता में महाभय का अवसर

उपस्थित हो। मास में प्राय: वस्तुओं में तेजी चले तथा कई वस्तुओं में भारी तेजी संभव हो। यथा—**चैत्र बदी में तिथि बढ़े किन्तु सुदी घट जाए। पैदावार कम रहे, खड़ी फसल हट जाए॥ चैत्र मास में आ पड़ै, पांच शनि रविवार। प्रजा नाश दुर्भिक्ष दुख, दिन दिन तेज बाजार॥** *(भविष्य भारती)* अनाज, तिलहन, किराना, रुई, पाट, बारदाना, रस पदार्थों, नशीले पदार्थों, तम्बाकू, घी आदि मास में तेजी रहे तथा किसी किसी वस्तु में अच्छी तेजी भी संभव होगी। ता. १२ मार्च कुंभे बुध-रस पदार्थों, चीनी, गुड़, घी आदि के भावों में वृद्धि होगी। शनि की दृष्टि से अच्छी तेजी संभव हो। ता. १४ मार्च बदी ५ बुधवारी अनाज गेहूं, घी के भावों में तेजी का संचार करेगी। यथा—**चैत्र बदी पांचै दिना मंगल या बुधवार। गेहूं अरु घी का तेजी चले बाजार॥** *(भविष्य भारती)* ता. १४ मार्च को यदि आकाश में बादल छाए रहें तो दो मास तक प्राय: वस्तु मन्दी बिकेगी। ता. १६ मार्च को यदि आकाश में बादल हों तो समझना चाहिए कि आगे लाल रंग की वस्तुओं में मन्दी चलेगी। ता. २५ मार्च मावस की वृद्धि प्राय: सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का उछाला ३ से ५ दिन के अन्तर्गत लायेगी। ता. २६ मार्च से २०५८ विक्रमी संवत् का शुभारंभ होगा। संवत् का राजा चन्द्रमा एवं मन्त्री शुक्रदेव होंगे। यह संवत् लोंद का होने से इस संवत् में गुड़, चीनी, दालों, किराना, तेल के बीज (तिलहन), अनाजों आदि में तेजी रहे। भड्डली जी कहते हैं। **दो आश्विन, दो भादव, दो आषाढ़ के माह। सोना चांदी बेचकर नाज वो साहो साह॥** के अनुसार अनाज का व्यापार लाभदायक रहेगा। ता. २८ मार्च को शुक्रास्त होगा। तथा एक सप्ताह के अन्तर्गत ही उदय हो जायेगा। दुर्भिक्षकारी है तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार करेगा। यथा—**उदय अस्त सप्ताह में अगर शुक्र हो जाए। भ्रान्त अशान्त प्रजा रहे, दु:ख नितांत अधिकाए॥** ता. ३१ मार्च को यदि आकाश में बादल बहुतायत में हो तो गेहूं, अनाज का स्टाक करके सावन में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

अप्रैल मास फल—इस मास तेजी की प्रमुख तारीखें—३, १०, १४, २१, २४, २८ हैं तथा मन्दी की ५, १२, १६, २६ हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में कुछ अच्छी तेजी मन्दी के झटके आ सकते हैं। ता. १ अप्रैल शुक्रोदय घी, तेलों, अनाजों, सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत, बारदाना में तेजी कारक है। अत: इनके भावों में वृद्धि होगी। ता. २ अप्रैल मीने बुध बिनौला तेज करेगा। गुड़, खाण्ड के भाव गिरेंगे। ता. ६ अप्रैल को यदि आकाश बादलों से ढंक जायें तो समझना चाहिए कि तीन मास पश्चात् अनाजों में अच्छी तेजी आयेगी। ता. ८ अप्रैल रविवारी पूनम दिन ३ के अन्दर तिलहन, तेलों, बारदाना में तेजी के उछाले लायेगी।

बैशाख मास फल—यह मास मन्दी प्रधान है। प्राय: वस्तुओं में बाजार मन्दा चलेगा। तिलहन पदार्थों में बदी पक्ष में मन्दा तो सुदी पक्ष में तेजी रह सकती है। मेष की संक्रांति भी मन्दी को सपोर्ट कर रही है। अक्षय तृतीया गुरुवारी रोहिणी युक्त तथा शुक्ला पंचमी शनिवारी आर्द्रा युक्त तथा अन्य कुछ योग सुभिक्षकारी प्रजा के लिए आरोग्य मंगल, कल्याणकारी उत्तम योग है। पैदावार भी अच्छी होगी। ता. २३ अप्रैल को प्रात: ३ से २५ अप्रैल प्रात: ९ तक पूर्वी दिशा में तथा ता. २९ अप्रैल सायं ६ बजे से १ मई सायं ९ बजे तक उत्तर दिशा में भूकम्प आ सकता है। ऐसे योग पाए गए हैं। एक अन्य योग के अनुसार १३ अप्रैल से १३ जुलाई के मध्य रुई में जबरदस्त मन्दा आ सकता है। ता. १४ अप्रैल धनु मंगल मूल पदार्थों आलू, हल्दी आदि तथा द्रव्य पदार्थों घी, तेलों आदि सोना, चांदी, बिनौला के भावों में शीघ्र वृद्धि करेगा। परन्तु घटाबढ़ी से भाव बढ़ेंगे। ता. १९ अप्रैल को यदि आकाश प्रबल मेघों से ढंका रहे तो अनाज का ८० प्रतिशत स्टाक बेच देना चाहिए। आज शुक्र देव मार्गी होंगे। दिन ५ तक सोना, चांदी, रुई, अलसी, गुड़, खांड, बिनौला में मन्दा चलकर आगे बाजार धीरे-धीरे तेज होगा। स्थूल रूप से मीन राशि गत मार्गी होने से प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में मन्दा ही लाता है। **शकुन—ग्यारस बारस तेरसे, बदी बैसाखे देख। बादल वर्षा होय तो दुख दुर्भिक्ष विशेष॥** *(भविष्य भारती)* ता. २३ अप्रैवल सोमवती मावस मन्दी कारक है। सफेद वस्तुओं में अधिक मन्दा तो अन्य प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में ३ से ५ दिन के अन्तर्गत बाजार मन्दा चलेगा। कभी-कभी इसका प्रभाव तीन दिन पूर्व से भी हो सकता है। अत: रुख देखना चाहिए। ता. २४ अप्रैल दिन २ के अन्दर लाल रंग की वस्तुओं सोना, आयरन, शेयर्स के भावों में अच्छी तेजी के उछाले आने के योग हैं। ता. २५ अप्रैल से दिन ८ के अन्दर अनाज चावलों के भावों में वृद्धि, आज का चन्द्रदर्शन दलहन पदार्थों, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों, रस पदार्थों, घी, गुड़ आदि में तेजीकारक परन्तु सोना, चांदी,. रुई, बारदाना में मन्दी को सपोर्ट करेगा। ता. २६ अप्रैल अक्षय तृतीया गुरुवार रोहिणी युक्त शुभ योग है। यह योग व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का संचाा करेगा। **अक्षय तृतीया के दिना रोहिणी युत गुरुवार। उपजै उत्तम धान्य सब घर घर मंगलाचार॥** ता. २८ अप्रैल को यदि सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त पूर्व का पवन चले तो अन्न का स्टाक आगे बेचने से उत्तम लाभ होगा। यदि दिन भर पूर्वी पवन भी चले। परन्तु सूर्यास्त समय चले तो भी अन्न का स्टाक करना लाभदायक है। ता. ३० अप्रैल को यदि पूर्व का पवन चले, आकाश बादलों से ढंका रहे तथा थोड़ी बहुत वर्षा भी हो तो अन्न का स्टाक करके भाद्रपद मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा।

मई मास फल—ता. २ मई वृषे बुध-गुरु, शनि के साथ राशि योग बनायेगा। दिन १५ के अन्तर्गत अनाज, सरसों, घी, गुड़, खांड, चांदी, रुई, नशीले पदार्थ तम्बाकू आदि में प्रथम मन्दी आकर तेज होगी तथा अन्य प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ ज्यादा रहे। ता. ३ से ५ मई तक यदि इन तारीखों में बादल वर्षा हो, बिजली चमके तो आगे अनाजों में शीघ्र तेजी आ जायेगी। ता. ७ मई को यदि वर्षा हो तो आगे अनाजों में शीघ्र तेजी आ जायेगी। ता. ४ मई को मंगल देव वक्री होंगे। **जिस राशि पर भ्रमण भौम का जब हो उसमें निश्चय वक्र। वक्री होने पर किरयाने में चलता तेजी का चक्र॥** वक्री मंगल अपने वक्री काल में (१३ जुलाई २००१ तक) किराने की प्राय: सभी प्रमुख वस्तुओं में धीरे-धीरे अच्छी तेजी लायेगा। परन्तु इस दौरान रुई,कपास में अच्छी मन्दी भी ला सकता है। सावधान! इसी दौरान संसार में जवान मौतों की अधिकता तथा भयंकर रोगों की उत्पत्ति हो। सोमवारी पूनम, रस पदार्थों में तेजीकारक तथा रुई, चांदी, प्रमुख शेयर्स आदि में विशेष मन्दी के झटके लायेगी। शनि भी अस्त होगा। रुई में मन्दी को सपोर्ट करेगा। तिलहन, रस पदार्थों में तेजी कारक है। उत्तम तो यही होगा कि दो तीन दिन बाजार की लाईन देखकर आगे उसी अनुसार काम करें।

ज्येष्ठ मास फल—मास में रसायन पदार्थ, रस पदार्थ, किराने की प्रमुख वस्तुओं में प्राय: जनरल लाईन तेज रहेगी। बदी पक्ष में चांदी में कुछ अच्छी मन्दी के झटके तो सुदी पक्ष में कुछ अच्छी तेजी के झटके आयेंगे। ज्येष्ठ मास में सूर्य के आगे गुरु चल रहा है। **रवि के आगे बृहस्पति, तब अग्नि का जोर।** के अनुसार मास में अग्नि काण्ड की काफी घटनाएं हो सकती हैं। ता. ११ मई कृत्तिका सूर्य, शनि योग गेहूं, चावल, गुड़, अनाज, सरसों, तिलहन आदि के भावों में तेजी का संचार होगा तथा सफेद वस्तुओं के भाव गिरेंगे। ता. १४-१५ मई शकुन—**श्रवण धनिष्ठा जेठ बदी मेघ रहे आकाश। न वर्षे तो वर्षा अधिक, वर्षे वर्षा नाश॥** ता. १४ मई से वृष राशि पर चार ग्रहों की मीटिंग एक सप्ताह तक चलेगी। चांदी में भारी मन्दी तथा अन्य प्राय: वस्तुओं के भावों में गिरावट आदि के बिल पास होंगे। सावधानी से काम करें। ता. २२ मई रोहिणी शनि रुई में शीघ्र इकतरफा अस्थाई तेजी के झटके, धातुएं तेज। ता. २५ मई सुदी तीज आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। आज वर्षा का होना खराब है तथा वर्षा न होना शुभकारी है। यथा—**दुतिया तृतीया जेठ सुदी आवे आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो करषे नमी, दर्से दु:ख दुर्भिक्ष॥** *(भविष्य भारती)* आज रोहिणी पर सूर्य-शनि योग अनाज, रस पदार्थों, घी, तिल तेल, तिलहन, सुपारी, मिर्च, राई, रेशम आदि के भावों में १५ दिन के अन्तर्गत तेजी लायेगा। ज्येष्ठ मास में किसी भी दिन यदि आकाश बादलों से ढंका रहे एवं दक्षिण की तरफ मेघ गर्जना सुनाई दे तथा दक्षिणी पवन चले तो यह शकुन किसी भी दिन दिखाई दे तो अनाज, तिल, तेल का स्टाक करके चार मास बाद बेचने से उत्तम लाभ हो। यदि यही शकुन ता. २७ मई को हो तो अनाज का स्टाक करके आसोज में बेचने से लाभ हो तथा यही शकुन २९ मई को दिखाई दे तो तिल का स्टाक करके कार्तिक में बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. ३० मई मेषे शुक्र—**मंगल घर में शुक्र हो, अन्न तेज तब जान।** के अनुसार अनाज के अलावा घी, दूध, चावल, चांदी आदि सफेद वस्तुओं के भावों में तेजी कारक है। मई मास में तेजी की प्रमुख तारीखें १, १२, १९, २२, २६, २९ तथा मन्दी की ७, १०, १४, २१, २४, २५ मई हैं। इन तारीखों में अच्छी तेजी मन्दी के झटके संभव होंगे।

जून मास फल—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें २, ९, १२, २३, २६ तथा मन्दी की १४, १८, २८ जून हैं। ता. २ जून वक्री बुध सुपारी, सोना, चांदी, रस पदार्थ, गुड़, चीनी आदि गेहूं, चना, बिनौला, तिलहन पदार्थों के भावों में तेजी लायेगा। दिन २४ के अन्दर अनाज, चादी, रुई में विशेष तेजी के झटके लायेगा। परन्तु हरी सब्जियों में मन्दी लायेगा। ता. ४ जून को गुरुदेव अस्त हो जायेंगे। सप्ताह दस दिन बाजार

भावों में मजबूती रह कर भाव गिरने शुरू हो जायेंगे। गुरु अस्त बाजार मन्दा रखेगा। ता. २ से ४ जून शकुन विचार—**चित्रा स्वाती विशाखा जो ज्येष्ठ मास वर्षाय। अन्न भाव महंगा रहे, सावन वर्षा नाय॥**

आषाढ़ मास फल—ता. ७ जून वक्री बुधास्त दिन १८ के लिए अस्त होगा। गल्ला, माल, चांदी में तेजी कारक है। इस दौरान विशेष तेजी के झटके भी चांदी में अस्थाई तौर पर ला सकता है। रुखथ देखकर काम करना चाहिए। ता. १० जून ज्येष्ठायां वृश्चिके मंगल, रुई, सोना, चांदी में अच्छी तेजी के चांस बनेंगे। आषाढ़ मास में वर्षा अच्छी होगी। मास में पांच गुरुवार तथा मावस व पूर्णिमा भी गुरुवारी तथा पूनम मास नक्षत्र से युक्त है। शुभ फलकारी है। ता. १४ से १६ जून तथा १ से ३ जुलाई कहीं भारी भयंकर वर्षा हो सकती है। मास में अनाजों में तेजी मन्दी प्रायः समान रूप से चलेगी। कृष्ण पक्ष में चांदी में अच्छी तेजी के झटके तो तिलहन किराना, घी, दलहन, पीले रंग की वस्तुओं में आषाढ़ मास में जनरल लाईन तेज रहेगी। प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में मास में मन्दी की बजाय कुछ तेजी का ही जोर रहेगा। बाजार रुख देखकर काम करें। ता. १५ जून मिथुने गुरु पश्चिमोत्तर दिशा में उपद्रव, खण्ड वृष्टि, ताम्बा, सोना, चांदी, सुपारी, अलसी, सरसों, मूंगफली, घी, तेलों आदि में अचानक तेजी कभी भी चले। यदि मार्गशीर्ष मास (दिसम्बर २००१) में कोई भी वस्तु अपने स्तर से मन्दी चले तो स्टाक करके बैशाख में बेचने से अच्छा लाभ हो। यह एक चांस है। नोट कर लें। अभी दिन १५ के अन्दर सफेद वस्तुओं चांदी, चावल, रुई आदि में अच्छी मन्दी संभव है तथा आगे २ मास के अन्दर कभी भी रुई में भारी तेजी भी आ सकती है। सावधान! यह एक चांस है। यहां गुरु के आगे सूर्य चल रहा है। रवि के **आगे वृहस्पति, तब अग्नि का जोर। गुरु के आगे सूर्य तो वर्षा हो चहुँ ओर॥** यह योग वर्षा कारक है। परन्तु राहू साथ में होने से कहीं भारी वर्षा तो कहीं वर्षा की भारी कमी रहेगी। ता. २० जून आषाढ़ बदी १४ रोहिणी युक्त। **साढ़ बदी चौदस दिना होय रोहिणी योग। करफ्यू अरु कंट्रोल से दुख पावें सब लोग॥** एक मास के अन्दर किसी इलाके विशेष में दंगे भड़क उठें। नेष्ट फलकारी योग है। ता. २१ जून गुरुवारी मावस वर्षाकारी है तथा दिन ३ में प्रायः सभी वस्तुओं में एक मन्दी का झटका लायेगी। **मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास, नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धान्त है वर्षा हो सर्वत्र॥** *(भविष्य भारती)* ता. २३ जून आज चांदी पारा में निःसंदेह अच्छी तेजी के उछाले आयेंगे तथा अन्य प्रायः वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा। ता. २५ जून सुदी चौथ का क्षय—**किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए। ग्राहक मागै मूंग घी बिक्रेता नट जाएं॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार आषाढ़ शुक्ल पक्ष में घी, दलहन आदि में जनरल लाईन तेज रहें। रात को बुध का उदय भय अवर्षण तेजी कारक है। जब तक अस्त न हो (एक मास) अनाजों में तेजी कारक तथा वर्षा की कमी करेगा। ता. २७ जून कृत्तिका शुक्र एक सप्ताह के अन्दर रुई, बिनौला, तिल, सरसों, तेलों, हींग, चावल, धातुओं में मन्दी लायेगा। ता. ३० जून मृगे ४ गुरु दिन ८ के अन्दर घी, चांदी, चावल आदि सफेद वस्तुओं में अच्छी मन्दीकारक है परन्तु अनाज तेज करेगा एवं यहां वृष राशि में शुक्र-शनि-बुध योग एक मास के अन्दर उपरोक्त वस्तुओं में कभी भी अच्छी तेजी भी ला सकता है। अतः रुख देखकर काम करना चाहिए।

जुलाई—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ३, ७, १०, १४, १७, २१, २३, ३१ तथा मन्दी की १२, १९, २६ जुलाई हैं। इन तारीखों में प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी-मन्दी के झटके संभव हों। ता. १ जुलाई रात्रि से चन्द्रमा जल राशि में तथा मंगल शुक्र का अपोजिशन योग अच्छी वर्षा कारक है। यथा—**समसप्तक शनि जीव हो, या मंगल भृगुनाथ। रखते हैं वर्षात् में, वर्षा अपने साथ॥** *(भविष्य भारती)* अतः २६ जुलाई तक वर्षा की स्थिति अच्छी रहेगी। ता. १ से ३ जुलाई तक कहीं भारी वर्षा से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। ता. ५ जुलाई आज ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होगा। **साढ़ी पूनम के दिवस चन्द्रग्रहण हो जाए। संग्रह कीजे अन्न का भारी तेज बिकाय॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार अनाज का स्टाक आगे उत्तम लाभ देगा। पीली वस्तुएं तथा सगुन्धित वस्तुओं का स्टाक भी आगे लाभ देगा। धनु राशि से सम्बन्धित वस्तुओं में तेजी चलेगी।

श्रावण मास फल—मास में रुई, सोना, चांदी के व्यापारी रुख देखकर काम करें। बदी पक्ष में चार ग्रहों का योग अच्छी वर्षा कारक है। परन्तु अनावृष्टि योग भी पाए गये हैं जोकि वर्षा में रुकावट पैदा करेंगे। अतः मास में कहीं भारी वर्षा तो कहीं वर्षा की कमी रहेगी। दोनों स्थिति में वर्षा नुकसान दायक ही सिद्ध होगी। व्यापारिक वस्तुओं में बदी पक्ष की अपेक्षा सुदी पक्ष में बाजार अधिक तेज रहेंगे। ता. २७ जुलाई से २३ अगस्त तक तिलहन में काफी तेजी आ सकती है। परन्तु इसी दौरान सोना, चांदी, रुई, बिनौला, मूंगफली, मसालों में भारी तेजी अथवा भारी मन्दी की कोई भी लाईन निकल सकती है। अतः रुख देखकर काम करें। कुल मिलाकर श्रावण मास तेजी प्रधान मास रहेगा। ता. ६ जुलाई एक सप्ताह के अन्दर दिलहन, सरसों के भावों में वृद्धि होगी। ता. ९ जुलाई रोहिणी शुक्र, चांदी, रुई में तेजी कारक है। इनके भावों में वृद्धि होगी। यदि आज सूर्योदय काल में नभ में घटा छाई हुई दिखाई दे तथा मन्द मन्द वृष्टि भी होने लगे तो भावद बदी में अच्छी वर्षा होगी। ता. १० जुलाई को यदि बादल तो खूब हो। परन्तु वर्षा न हो तो सर्व अनाज तेज हो जायेंगे। यदि वर्षा अच्छी हो जाए तो सर्व अन्न मन्दे हो जायेंगे। ता. १३ जुलाई को यदि हवा तेज चले, आकाश में बादल हो तो आसोज मास में गेहूं, चना, तांबा तेज होगा। परन्तु जूट, पाट, बारदाना मन्दा होगा तथा मक्की की विशेष पैदावार होगी। मार्गी मंगल-किराना सामान मन्दा होता चला जायेगा तथा रुई में शीघ्र अस्थाई तौर पर अच्छी मन्दी के झटके तो पशुओं के व्यापारियों को मार्गी होने से पूर्व ही पशु बेच देने चाहिए। अन्यथा आगे भारी हानि उठानी पड़ सकती है। ता. १६ जुलाई कर्क संक्रान्ति वर्षाकारी है। **सावन में दसमी दिना जो आवे संक्रान्ति। बढ़े धान्य धन सम्पदा वर्षा हो बहु भांति॥** *(भविष्य भारती)* संक्रांति दिन ५ के अन्दर चादी में अच्छी मन्दी का झटका लायेगी। सावधान! वृष राशि में चन्द्रमा शनि शुक्र के साथ योग बनायेगा। **वृष राशि पर बढ़ते शुक्र चन्द्र शनि तीन। युद्धादिक दुर्भिक्ष से प्रजा प्रपीड़ित दीन॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार कहीं भारी उपद्रव, स्थूल रूप से व्यापार पर तेजी का प्रभाव होगा। ता. २० जुलाई को यदि वर्षा न हो तो माघ मास में अनाज, मटर आदि में तेजी आयेगी। वर्षा होने पर विपरीत फल होगा। ता. २२ जुलाई पुनर्वसु बुध एक सप्ताह के अन्दर रुई, चांदी, सूत, बिनौला आदि में अचानक अच्छी मन्दी कभी भी आ सकती है। आज का चन्द्रदर्शन घटाबढ़ी कारक है। परन्तु बाजार एक मास के अन्तर्गत ऊंचा-नीचा चलता सम रहेगा। ता. २६ को यदि सूर्य समय बादल हो तो आगे वर्षा की भारी कमी। यदि वर्षा हो जाए तो अनाज मंगसिर में काफी मन्दा बिकेगा। ता. २७ जुलाई मिथुने शुक्र एक मास के अन्दर गेहूं, अनाज में तेजी तथा चावलों में विशेष तेजी तथा गुवार, घी में अच्छी मन्दी लायेगा एवं तूफान के साथ हवा चलेगी।

अगस्त मास फल—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ४, ७, १४, १८, २५ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें ता. ६, ९, २३, ३० हैं। इन ता. में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके संभव हों। ता. २ अगस्त आर्द्रा शुक्र वर्षा कारक है। चांदी, रुई, सोना, अलसी में ५ दिन तेजी चलकर मन्दी आयेगी. ता. ४ अगस्त शनिवारी पूनम श्रवण युक्त है। **पूनम को श्रवण रहे सुख सुभिक्ष सर्वत्र।** सुभिक्षकारी तथा शेयर्स में दिन ३ के अन्दर विशेष तेजी के झटके संभव तथा चार दिन बाद चना, मटर, सरसों, मूंगफली, बिनौले, गेहूं, गुवार, आलू आदि में अचानक तेजी आयेगी। अच्छी तेजी भी संभव हो। ता. ४ अगस्त यदि आज आकाश निर्मल रहे तो श्रेष्ठ है। यदि बादल हो तो घी, तेलों के व्यापार से आगे लाभ होगा।

भाद्रपद मास फल—इस मास में ५ रविवार, अमावस्या, पूनम भी रविवारी हैं। **क्रूरवार तेजी करे मावस पूनम दोय।** के अनुसार मास में बाजार तेज रहेगा। रविवारी मावस में घी मंहगा होगा। बदी पक्ष में वर्षा योग तो सुदी पक्ष में बड़े-बड़े बादलों की घटा चढ़े। मास तेजी प्रधान रहे। बदी पक्ष में अनाज कुछ मन्दा रहेगा। ता.५ अगस्त आश्लेषा बुध दिन ८ में गुजरात-सौराष्ट्र आदि प्रदेशों में भारी वर्षाकारक है तथा तिलहन, दलहन, गुड़, खाण्ड के भावों में वृद्धि होगी। बदी-२ सोमवारी उत्तम पैदावार की संकेत देती है। **भादव कृष्ण दूज को सोमवार शुभवार। पशुओं में वृद्धि घणी, उत्तम पैदावार॥** *(भविष्य भारती)* यदि आज आकाश बादलों से ढंक जाए तो अनाज मन्दा होगा। स्टाक करके फाल्गुन में बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. ११ अगस्त सिंहे बुध रस पदार्थों, गुड़, खाण्ड आदि में मन्दी कारक। अनाज, सोना, चांदी, रुई के भावों में तेजी कारक है तथा तिलहन में दिन १० के अन्दर एक दो उछालें अच्छी तेजी के संभव होंगे। ता.१६ अगस्त सिंह संक्रांति रस पदार्थ, तिलहन, धातुओं, हल्दी, लाल रंग के पदार्थों में तेजी कारक है। बुध का उदय वर्षा कारक है। भडुली जी कहते हैं—**सिंहा हुति दस दिन जो उगै बुध राय पो होवी रंग बधावना घर घर पाणी थाय॥** ता. २० अगस्त प्रतिपदा

का क्षय सुदि पक्ष में तेजी कारक है। यथा—**पड़वा पांचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे तेजी हो जब छीन॥** आज का चन्द्रदर्शन भी तेजी में सहायक है। अनाजों, धातुओं, तेलों, तिलहन पदार्थों के भावों में वृद्धि होगी। परन्तु एक मास के अन्दर भाव ऊंचे नीचे चलते सम रहे। सुदी ३ मंगलवारी उ.फा. युक्त है। **उ.फा. भादव तीज में मंगलवार बिचार। बादल दलबल से चढ़ै, पड़ै नहीं जलधार॥** वर्षा में रुकावट तथा यह योग बाजारों में तेजी का संचार करेगा। ता. २२ अगस्त कर्के शुक्र—रुई, घी में अच्छी मन्दी कारक तथा अनाजों में भी घटबढ़ से मन्दोकारक तथा अन्य प्राय: प्रमुख वस्तुओं में तेजी लायेगा। ता. २४ अगस्त धनु मंगल, मूल पदार्थो, द्रव्य पदार्थ, घी, सोना, चांदी, अनाज, चावल, मूंग, बिनौला, सरसों आदि के भावों में तेजी का संचार करेगा परन्तु रुई में आगे अच्छी मन्दी आ सकती है। सावधान! दिन १२ के अन्दर किसी प्रसिद्ध सट्टेबाज की धर-पकड़, चोर बाजार की रुकावट तथा रुई, सोना, लाख, चपड़ा गुड़, पारा, हींग, खाण्ड आदि में मन्दी का जोश भर जायेगा। अर्थात् अच्छी मन्दी आने के योग हैं। ता. २६ अगस्त को यदि दिन रात आकाश निर्मल रहे अर्थात् सूर्य चन्द्रमा साफ दिखाई दे तो जौ, मूंग, बाजरा, कांगनी, गुवार, मटर, चना, मोंठ, उर्द, चावल, तीसी आदि सभी तरह का नमक, सूत वस्त्रों में पांच मास तक तेजी चलेगी।

सितम्बर मास फल—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ८, १५, २२, २५, २९ तथा मन्दी की ६, २०, २७ हैं। इन तारीखों में कुछ विशेष तेजी मन्दी के झटके संभव होंगे। ता.२ सितम्बर रविवार पूनम तेजी का संचार करेगी। सरसों, गुड़, तेलों में दिन ३ के अन्दर तेजी के झटके आयें। शकुन—**भादव शुक्ला पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल में चन्दा उदय, बेचो शीघ्र अनाज॥** परन्तु आसमान साफ रहे तो अनाज स्टाक करें। आगे लाभ होगा।

प्रथम आश्विन मास फल—(ता. ३ सितं. से २ अक्टू.) इस मास में मिले जुले फल होंगे। बदी पक्ष में वस्तुएं तेज होकर मन्दी होंगी। तो सुदी पक्ष में वस्तुएं मन्दी होकर तेज होंगी तथा दलहन, चावल, घी,रुई, सोना, चांदी आदि में तेजी रहकर कुछ एक दो उछाले अच्छी तेजी के भी संभव होंगे। सुदी पक्ष के अन्त से शनि, बुध दोनों वक्री हैं जो कि २४ अक्टू. तक साथ-साथ वक्री रहेंगे। इस दौरान तिलहन बाजारों (तेल के बीज) में गिरावट आयेगी। यह संवत् लोंद का है। अत: गुड़, मीठा आदि के व्यापारी लाभ उठा सकेंगे। भड्डली जी कहते हैं—**दो आश्विन दो भादव दो आषाढ़ के माह। सोना चांदी बेचकर नाज वो साहों साह॥** अर्थात् सोना, चांदी भी बेचकर अनाज खरीद लेना चाहिए। लाभ होगा। मास में राजनीति में आपसी फूट कलह आदि अधिक तथा सूर्य की गर्मी अधिक एवं रोगों की बाहुलता रहेगी। ता. ४ सितं. आर्द्रा गुरु दिन २० के अन्दर सुगन्धित पदार्थ, सर्व रस पदार्थ, अनाजों के भावों में गिरावट तथा सोना, चांदी, रुई, चावलों में विशेष घटबढ़ की संभावना रहे। रुख देखकर काम करें। यदि आज आकाश बिल्कुल निर्मल (साफ) रहे तो अनाजों में मन्दी का रुख हो जायेगा। ता. ५ सितं. आश्लेषा शुक्र दिन १२ के अन्दर जहरीले कीट पतंगे, सर्पो आदि से जनमत को भय तथा चावल, चांदी, दलहन, अनाजों में मन्दी लायेगा। अचानक मन्दी भी संभव है। ता. १३ सितम्बर चित्रा बुध दिन ८ में रुई, चांदी में घटाबढ़ी। वर्षा की खैंच तथा अनाजों में कुछ तेजी का संचार होगा। घी, सरसों, रेशम, उर्द, सुपारी के भावों में भी मजबूती आएगी। ता. १५ सितं. बदी १३ शनिवारी—**आश्विन तेरस शनि दिना सूर नखत पर सूर। अन्नहीन भूमि रहे, मन्दी समझो दूर॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार अनाजादि में निसन्देह आगे तेजी का वातावरण बनेगा। ता. १६ सितं. को यदि हवा जोरों की चले तो दस दिन बाद ही अनाज, गल्ला, माल में तेजी आ जायेगी। आज सिंह शुक्र—वर्षा बन्द हो जायेगी। लाल रंग की वस्तुएं, अनाज, घी, रस पदार्थ, मजीठ आदि में तेजी कारक है। इनके भावों में आगे वृद्धि होगी। कन्या की संक्रान्ति अग्नि मण्डल में होने से एक मास के अन्तर्गत अग्निकाण्ड की घटनाओं में वृद्धि होगी तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। ता. १७ सितं. सोमवती मावस मन्दी कारक है। दिन ५ के अन्दर प्राय: वस्तु में गिरावट आयेगी। आसोज मास में हो से—**सोमवती मावस पड़े कभी जु आश्विन मास। अन्न खाण्ड गुड़ तेल में मन्दी का आभास॥** *(भविष्य भारती)* ता. १८ सितम्बर सुदी एकम् मंगलवारी पक्ष में दलहन, मूंग, घी, सोना, चांदी, रुई आदि में बाजार तेज रहे तथा कुछ तेजी भी संभव। आज का चन्द्रदर्शन भी तेजी को सपोर्ट करेगा। एक मास के अन्दर प्राय: व्यापारिक वस्तुओं के भावों में बढ़ोत्तरी होगी तथा चावलों में लगातार तेजी का रुख रह सकता है। ता. २५ सितं. सुदी ९ मंगलवारी—**नवमी मंगलवार जो शुक्ला आश्विन मास। मूंग मोंठ चोला उर्द संग्रह करो कपास॥** *(भविष्य भारती)* उपरोक्त दाल, अन्न एवं रुई का स्टाक करके आगे बेचें। उत्तम लाभ होगा। यह एक चांस है। पौष-माघ में कोहरा अधिक पड़ेगा। फसलों को नुकसान की आशंका रहे तथा कार्तिक मास में इसी के प्रभाव से गेहूं, चना भी तेज हो जायेगा। ता. २९ सितं. पुनर्वसु गुरु दिन १० में रुई, चांदी में मंदी चले तथा अनाज तेज होंगे। ता. ३० सितं. वक्री बुध, रस पदार्थो, सोना में तेजी कारक को तिलहन के भावों में गिरावट लायेगा।

अक्टूबर मास फल—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें २, ६, ९, १३, १६, २०, २३, ३० तथा मन्दी की ४, १८, २९ अक्टू. हैं। इन तारीखों में विशेष तेजी मन्दी के झटके संभव हैं। ता. २ अक्टू. मंगलवारी पूनम किराना शेयर्स, तिलहन के भावों में वृद्धि करेगी। यदि आज आकाश में बादल हों तो अनाज का स्टाक करके चैत्र में बेचने से लाभ होगा। यदि आज आकाश निर्मल रहे तो शुभ है। अनाज मन्दा हो जायेगा।

द्वितीय आसोज मास फल—(३ अक्टूबर से १ नवम्बर तक) इस मास में पांच बुधवार तथा पांच ही गुरुवार उत्तम फलदायक हैं। बदी पक्ष या इससे कुछ दिन पूर्व घी सस्ता हो तो स्टाक करके कार्तिक में बेचें लाभ होगा। यह एक चांस है। मास में रुई, अनाज के व्यापारियों को रुख देखकर काम करना चाहिए क्योंकि कभी भी भारी मन्दी अथवा तेजी आ सकती है। कुल मिलाकर बदी पक्ष में तेजी तो सुदी पक्ष में बाजार मन्दा रहे। बदी पक्ष में प्राय: सभी खाद्य पदार्थों, घी, तेलों, सब्जियों, आलू, प्याज में तेजी चलेगी तथा किसी-किसी वस्तुओं में अच्छी तेजी भी संभव है। ता. ७ अक्टूबर बदी ५ रविवारी-माघ की मावस के आसपास घी में तेजी लायेगी। परन्तु अभी घी मन्दा हो। **आश्विन कृष्ण पंचमी जो होवे रविवार। माघी मावस को अवश्य घी का तेज बाजार॥** वक्री बुधास्त दिन १३ के लिए गल्ला, अनाज, चांदी में अच्छी तेजी तो हल्दी, किराना, सामान के भावों में भी तेजी का संचार करेगा। ता.१० अक्टू. कन्या शुक्र तीन सप्ताह के अन्दर प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान, अनाज तेज,चावलों में विशेष तेजी तथा शाल की लकड़ी में भारी तेजी आयेगी। ता. १२ अक्टू. उ.षा. मंगल—मास के अन्त तक रुई में अचानक अच्छी तेजी अस्थाई तौर पर आने के योग हैं। सावधान! घी, तेल, सरसों के भाव भी बढ़ेंगे। ता. १६ अक्टू. से दिन ३ के अन्तर्गत प्राय: वस्तुओं में एक दफा तेजी के उछाले लायेगी। ता. १७ अक्टू. सुदी एकम् बुधवारी तेजी कारक है। **पड़वा आठै पूर्णिमा जो बुधवारी आए। सभी वस्तु बाजार की महंगे भाव बिकाय॥** *(भविष्य भारती)* परन्तु कन्या राशि में बुध-शुक्र योग मन्दी कारक है जो कि सुदी पक्ष के अन्त तक है। तेजी कारक योगों से अच्छी तेजी की उम्मीद नहीं है। परन्तु मन्दीकारक योगों से अच्छी मंदी संभव होगी। अत: रुख देखकर काम करें। ता. १८ अक्टू. से दिन १३ के अन्दर जो भी वस्तुएं तेज हों वह बेचना। जो वस्तुएं मन्दी हो खरीदना चाहिए। इस दौरान अन्न मन्दा हो तो खरीदें। आगे लाभ होगा। यह एक चांस है। ता. २७ अक्टू. सुदी एकादशी शनिवारी—**आश्विन सुदी एकादशी शनिवारी इकठौर। छत्र भंग हो, उपद्रव करे शत्रु अरु चौर॥** किसी राज्य के मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन हो तथा शत्रुओं, चोरों का उपद्रव बढ़ायेगी तथा दिन १२ के अन्दर महाराष्ट्र, गुजरात के इलाकों में भारी वर्षा होने के योग हैं तथा रुई में इस दौरान अच्छी तेजी मंदी के झटके आ सकते हैं। रुख देखकर काम करें।

नवम्बर मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ३, ७, ८, १७, २० हैं तथा मन्दी की तारीखें १२, १५, २६ हैं। इन तारीखों में विशेष तेजी मन्दी के झटके संभव हों। ता. १ नवं. श्रवण मंगल तेजी कारक है। **श्रवण नखत पर कोई ग्रह हो क्रूर। अन्न भाव मंहगा रहे, गेहूं, तेज जरूर॥** के अनुसार दो सप्ताह के अन्दर अनाजों में अच्छी तेजी, रुई में घटबढ़, नशीले पदार्थों, तम्बाकू, सोना, चांदी, धातुओं के भावों में भी चमक आयेगी।

कार्तिक मास—(ता. २ नवं. से ३० नवं.) यह मास व्यापारियों के हक में अच्छा नहीं है। मास तेजी प्रधान है। बाजारों में तेजी के बावजूद व्यापारी वर्ग कोई खास लाभ नहीं उठा सकेगा। यथा—**मावस्या तुल चन्द्रमा मंगल मकर विचार। रोगों से नासै प्रजा, निष्फल हो व्यापार॥** *(भविष्य भारती)* यह योग नेष्ट फलकारी है। मास में अनाजों में अच्छी तेजी केयोग हैं। दलहन, तिलहन, तेल, घी, रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, किराना, धातु आदि प्रमुख बाजार तेज रहें। परन्तु रुई मन्दी रह सकती है। रुख देखते हुए सीमित व्यापार करें। शकुन—**कार्तिक गर्जे**

मेघ तो उत्तम पैदावार। किन्तु अन्न का रोज ही मंहगा चले बाजार॥ *(भविष्य भारती)* कार्तिक मास में उल्कापात हो, भूल भरी आंधी चले, बिना बादल के वर्षा हो या अन्य कोई उत्पात हो, तो शीघ्र सर्व अनाजों का स्टाक करके चार मास बाद बेचने से अच्छा लाभ हो। ता. ४ नवं. गुरुदेव वक्री होंगे। किराने की प्रमुख वस्तुओं, धातुओं में तेजी कारक हैं तथा पशुओं के भावों में आठ मास तक तेजी चले। यहां शनि भी साथ वक्री चल रहा है। **साथ-साथ गुरु-शनैश्चर दोनों वक्राचार। जौ, गेहूं, मकई, मटर तेज, बाजार, जुवार॥** *(भविष्य भारती)* दोनों वक्री साथ-साथ फरवरी प्रथम सप्ताह २००२ तक रहेंगे। इस दौरान अनाजों में जनरल लाईन तेज चलेगी। परन्तु इस दौरान रुई मन्दी रह सकती है। ता. ६ नवं. बदी ५ आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। पशुओं का चारा तेज होगा। **कार्तिक कृष्णा पंचमी को आर्द्रा आ जाए। कम वर्षा हो, घास अन्न चारा तेज बिकाय॥** *(भविष्य भारती)* ता. ८ नवं. स्वाति पर बुध-शुक्र योग मन्दी कारक है। दिन १० के अन्दर रुई में भारी मन्दी अचानक तथा अनाज मन्दा एवं गुड़, घी में तेजी आयेगी तथा ता. ९ एवं १० नवं. २ दिन (सूर्योदय से ४८ घंटे) यदि अनाज मन्दा हो तो जरूर स्टाक करें। आगे लाभ होगा। ता. १० नवं. बदी १० शनिवारी सुपारी, घी में तेजी लायेगी तथा प्रजा में रोग बढ़ेंगे। **दशमी कार्तिक बदी में शनिवार संयोग। पूंगीफल घी तेज हो, बढ़े प्रजा में रोग॥** *(भविष्य भारती)* ता. १४ नवं. बदी १४ बुध श्री महालक्ष्मी पूजन टाईम १४ बजे उपरान्त अमावस्या कहा गया है। **बुध गुरु की आए दीवाली, जीवें रंक मरे भड़साली।** शुभ सुभिक्षकारी है। अमावस्या को स्वाति नक्षत्र का योग होने से फसलों को हानि की संभावना तथा योग न्यून होने से हानि की संभावना भी न्यून रहेगी। ता. १६ नवं. वृश्चिक संक्रान्ति लाल रंग की वस्तुओं में मन्दीकारक है। इस संक्रांति काल में (एक मास तक) जो वस्तुएं तेज हों खरीदने से परहेज करें। अन्यथा लाभ नहीं होगा। आज से बुध शुक्र की तुला राशि में मीटिंग होगी। अतः प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में गिरावट के बिल पास होंगे। गुरु का समर्थन भी हासिल होने से अच्छी गिरावट भी आ सकती है। यह मीटिंग एक सप्ताह तक चलेगी। इस दौरान सावधानी से रुख देखकर काम करें। ता. २५ नवं. सुदी १० रविवारी पूनम तक रुई में तेजी के झटके लायेगी। ता. २७ नवं. वृश्चिके शुक्र—**मंगल के घर शुक्र हो, अन्न तेज तब जान।** अनाज दलहन, अलसी में तेजी। यहां बुध-शुक्र-सूर्य का योग भी तेजी को बढ़ावा देगा। दस दिसम्बर तक यह योग है। यहां तीनों एक विशेष पोजीशन में होने से रुई, तिल तेलों, तिलहन, दलहन के भावों में वृद्धि होगी। यथा—**आगे सूरज बीच बुध पीछे भृगु महाराज। गल्ला रुई उर्द तिल तेजी तिलहन माल॥** *(भविष्य भारती)* ता. ३० नवं. शुक्रवारी पूनम यदि आज आकाश में बादल हो तो आगे रुई में अवश्य तेजी आयेगी। यह नोट कर लें। कुम्भ राशि में मंगल प्रवेश से अपने भ्रमण काल में लाल मिर्चों, अनाजों, धातुओं, रस पदार्थों में तेजी लायेगा। परन्तु रुई, चांदी में आगे भारी घटबढ़ चल सकती है। सो ध्यान दें।

दिसम्बर एवं मार्गशीर्ष मास—इस मास में पांच शनि तथा पांच ही रविवार हैं। **मार्गशीर्ष के मास में पांच होंय रविवार। पांच शनैश्चर हों तो तेजी होय अपार॥** *(भविष्य भारती)* के अनुसार प्रायः प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी चलेगी तथा मास तेजी प्रधान रहेगा। परन्तु बदी पक्ष की अपेक्षा सुदी पक्ष में अधिक तेजी रहेगी तथा सुदी पक्ष में गेहूं के व्यापार से लाभ एवं सोना, चांदी, रुई में कुछ भारी तेजी के उछाले संभव हों। ता. ३ दिसं. बदी ३ आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। **मंगशिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आए। राजा प्रजा सुखी रहे, मन्दा धान्य विकाय॥** *(भविष्य भारती)* सुभिक्षकारी योग है अनाज मन्दा होगा। ज्येष्ठा में सूर्य, बुध योग चावल, घी, रस, पदार्थ, गुड़, खाण्ड, गन्ना आदि के भावों में वृद्धि करेगा। ता. ४ एवं ५ दिसं. को यदि आकाश बादल से ढंक जाए तो यह समझना चाहिए कि आगामी संवत् में वर्षा उत्तम होगी। ता. ७ दिसं. को यदि आकाश दिनरात निर्मल रहे तो वैशाख में अनाज मन्दा बिकेगा। यदि बादल हो तो बैशाख में तेज बिकेगा। ता. १० दिसं. ज्येष्ठा शुक्र दिन १२ के अन्तर्गत सोना, चांदी, रुई, चावलों में मन्दीकारक तथा अनाज, सरसों, तिलहन में तेजी कारक है। ता. १२ दिसं. द्वादशी का क्षय नेष्ट फलकारी है। **मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाए। झगड़ा और फिसाद नित लोगों में अधिकाए॥** ता. १४ दिसं. शुक्रवारी मावस दिन ३ के अन्दर चांदी, शेयर्स में तेजी के झटके तथा रुई में मन्दी लायेगी। यदि आज सुबह सूर्योदय बादलों के बीच उगता दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि आगे अन्न की पैदावार कम होगी। ता. १५ दिसं. सुदी एकम् शनिवारी पक्ष में प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार करेगी। धनु संक्रांति घी में प्रथम तेजी तथा बाद में मन्दा लायेगी। इस संक्रान्ति काल में (अगली संक्रांति लगने से पूर्व) चावल मन्दे हों तो स्टाक करके आषाढ़ मास के करीब बेचें तो अच्छा लाभ हो तथा इत्र, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों का स्टाक करके एक मास बाद ही बेचने से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। यदि आज वर्षा हो तो चना, गेहूं की रिकार्ड पैदावार होगी। ता. १६ दिसं. आज का चन्द्रदर्शन दिन १५ के अन्तर्गत गुड़, तेल, सरसों में अच्छी तेजी आने का संदेश देता है। सोना, चांदी में भी विशेष तेजी के झटके आयेंगे। ता. २१ दिसं. धनु राशि में शुक्र का प्रवेश होकर पूर्व में अस्त हो जायेगा। जो कि ८ फर. २००२ को उदय होगा। तीन सप्ताह अनाजों में तेजी चलेगी। प्रजा में समानता एवं संगठन बढ़ेगा। घी, तेल, रेशम में मन्दी कारक। गुजरात में सुभिक्षकारी तथा फसल अच्छी, यदि शुक्रास्त समय वर्षा हो जाए तो प्रायः सर्व वस्तु, धातु, अनाजों में मन्दी की चाल बन जायेगी। ता. २७ दिसं. पू.भा. मंगल दिन २० के अन्तर्गत अलसी, सरसों आदि समस्त तिलहन पदार्थों, धातुओं, सुपारी, बारदाना आदि में तेजी का संचार करेगा। बुध का उदय भी तेजी को सपोर्ट कर रहा है। **मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु का अस्त। अन्न तृण चारा कम मिले, बेचो पशु समस्त॥** के अनुसार पशुओं के चारे तथा अनाजों में भी तेजी आयेगी। ता. ३० दिसं. रविवारी पूनम तेजी कारक है। यदि आज रात्रि को चन्द्रमा निर्मल रहे अर्थात् बादल आदि न हो तो अनाज का स्टाक आगे शीघ्र लाभ देगा।

आवश्यक सूचना-

नोट—यह लेख ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध, राशि परिवर्तन, वक्री-मार्गी, उदयास्त, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, ग्रहों के नक्षत्र, चरण परिवर्तन आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। एक ही समय में एक योग तेजी का तथा दूसरों योग मन्दी का हो तो सन्देह में न पड़ें। लाभ-हानि में हमारी कभी भी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। हमारे लेखों से लाभान्ति होने पर हजारों व्यापारियों नें हमें प्रशंसा पत्र भेजे हैं। हम उनके आभारी हैं। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा व्यौरा सिलसिलेवार, पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक **भविष्य फल प्रकाश सन् २००१ ई.** की मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अतः व्यापार की उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगा कर पढ़ें। प्रकाशित हो चुकी है।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पुर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत् ५२ सालों से लागातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में वर्ष भर की दैनिक तेजी-मन्दी, मासिक विश्लेषण, माल स्टाक करने के उचित मौके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की), अनाज, दलहन, किराना, बाजार, तिलहन बाजार, सरसों, सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी आदि रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, रुई,पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें), महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चैपटर देकर प्रकाशित किया गया है। मूल्य १००/- प्रति कापी तथा २५/- डाक व्यय अलग। कुल १२५/- होगा। रुपया मनीआर्डर पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टाक आदि कर सकें। आज ही आदेश भेजें।

हमारी दूसरी पुस्तक **भविष्य भारती** अर्घकाण्ड सम्बन्धी अद्भूत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी दोहों के रूप में हैं। इस पुस्तक पुस्तक में ज्योतिष के योग (फारमूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ४५/- डाक व्यय १५/- अलग होगा। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर भेजना आवश्यक है। दोनों पुस्तकों के लिए १५०/- का मनीआर्डर भेजने पर डाक व्यय फ्री।

१. भविष्यफल प्रकाश पुस्तक के लिए १००/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजन पर १०/- की वी.पी. के पुस्तक भेजी जायेगी। यानि १५/- की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें। खोरी के पते पर भेजने से डाक काफी लेट प्राप्त होती है। अतः भविष्य में निम्नलिखित पते से पत्र, मनीआर्डर आदि भेजें।

पता—श्री रामावतार गुप्ता "व्यापार भूषण"
राव उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी,
रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा) दूरभाष : ०१२७४-२३९४७

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव

निर्देशक–डॉ. वसंत लाल व्यास (स्वर्ण, रजत प्राप्त, ज्यो. सम्राट), लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा), उ.प्र. (पिन-२८१२०४, सम्पर्क सूत्र-०५६५-८३३३५३

"शशिनि खलु कलंक: कंटक पध्मनालम्"

अर्थात् चन्द्रमा में भी कलंक है, कमल की नाल में भी कांटे हैं, समुद्र अथाह है लेकिन जल खारा है। विद्वान जितना अधिक है उतना ही निर्धन है। रत्नों में भी अनेक दोष देखे जाते हैं। यह विधाता का विधान है। निर्दोष तो भगवान शंकर पाए गए हैं। प्रिय सज्जनों मेरी अल्प बुद्धि से निर्णण किए **लघु ग्रन्थ** में दूषण होना जरूरी है। फिर भी विद्वज्जनों से प्रार्थना है अगर आपको कोई दोष दिखाई दे। मुझे सूचना अवश्य कर दें जिससे सुधार हो सके। चन्द्रोदय का प्रभाव सिर्फ एक मास रहता है।

चैत्र—नव संवत् २०५८ का नवीन व प्रथम चन्द्रमा २६ अप्रैल चैत्र शु. १ सोमवार रेवती नक्षत्र में हो रहा है। यह चन्द्रोदय ३० मुहुर्त्ती है व उदित समय दक्षिण श्रंग्य उच्च होगा। उदित समय इसका रंग लाल होगा। **अरुण: शीतल किरण: करोति रस हानि रुग्नरणमरणम्** से रस हानि व उग्र युद्ध में मरण होता है व जौ, गेहूं के भाव तेज। गुड़, खाण्ड, शक्कर में मंदी, वस्त्र, रुइं, सूत, सोना व रंग में तेजी। चांदी में घटाबढ़ी से मंदी चलेगी। अन्न के भाव सर्पमुखी चाल में तेजी का मान करें। उड़द, चना, मटर, ज्वार, बाजरा, अरहर, चीनी मिश्री के भावों में तेजी का मान होगा। तृष, धान्य वृद्धि; सरसों, तिल, तेल, अलसी, सोयाबीन के भावों में तेजी का मान स्थिरता को बल देगा। घी के भाव घटाबढ़ी में चलकर चमक पाने की कोशिश करेंगे; लौंग,जायफल,सिन्दूर, गेरू के भावों में तेजी। प्रजा में क्षेम आरोग्यता व कहीं-कहीं आंशिक रूप से विद्रोह, राजनेताओं में परस्पर क्लेश का वातावरण रहेगा।

बैशाख—२५ अप्रैल सन् २००१ को बैशाख शुक्ल २ बुधवार को हो रहा है। इसका दक्षिण श्रृंग उच्च होगा। चन्द्रदर्शन कृत्तिका नक्षत्र व वृष राशि पर है। **"वृषेमासतिला गुरु तुष धान्य महर्घता"** से उड़द, तिल, लोहा, तेल, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी। अफीम, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल के भावों में मंदी का मान होगा; चांदी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, सन, वारदाना, जूट, खाण्ड के भावों में गिरावट; घी के भावों में तेजी बनी रहेगी। यदि उदित समय चन्द्रमा की आकृति कुण्डल जैसी हो तो व्यापारी को निर्देश है कि अन्न का संग्रह करें। विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। श्रृंगार प्रसाधन के सामानों में तेजी। रस, दूध के भावों में मन्दी। अल्प वर्षा, कहीं-कहीं ज्वर का प्रकोप अधिक फैले। झगड़े, फसाद आन्दोलन व किसी बड़ी अग्नि दुर्घटना का योग है।

ज्येष्ठ—२४ मई सन् २००१ को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्त्ती है। उदय के समय इसके दोनों श्रृंग शूल के समान होंगे। **"व्याधि चौर भयं शूले"** से दुख, रोग, चोर, तस्करों व बदमाशों, उग्रवादियों से भय बने। चन्द्रमा मिथुन का है। अत: कपास, सूत, धान्यों के भावों में तेजी। गेहूं, जौ, चना, रुई, सूत तेज। नशीली वस्तु, सूती व रेशमी वस्त्र, घी, दूध, दही, शहद के भावों में तेजी। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड के भावों में मन्दी का मान होगा।यदि चन्द्रमा पर कुण्डल मण्डल सफेद रंग का हो तो वर्षा। लाल रंग का हो तो वर्षा में कमी। सभी रसायन पदार्थों पर तेजी। गाय, भैंस आदि पशु पीड़ित रहें। गर्म हवाओं का प्रकोप से प्रजा में अनेक रोग हैजा आदि से पीड़ित रहें। किराना बाजार में भी तेजी। लाख, चपड़ा, गेरू, पत्थर, लहसुन के भाव में घटाबढ़ी के साथ भावों में स्थिरता को बल देंगे।

आषाढ़—२२ जून सन् २००१ ई. आषाढ़ शुक्ल मास को नवोदय चन्द्र का दर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त्ती है। उदित समय चन्द्रमा का वर्ण पीला रंग का होगा व उदित समय इसके दोनों श्रृंग समान होंगे। **अनावृष्टि: कर्क राशौ** अर्थात् अनावृष्टि का योग है। गुड़, रुई, खाण्ड, चीनी, चावल, बूरा के भावों में घटाबढ़ी के साथ तेजी का मान होगा। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, उड़द, चना, जौ, ऊनी वस्त्र में मन्दी का मान होगा। चांदी, सोना, रुई प्रथम मन्दी का मान कर तेजी की ओर अग्रसित रहेंगे यदि कुण्डलाकार आकृति में दूरी हो तो वर्षा बहुत होगी। यदि पास दिखाई दे तो वर्षा में रुकावट का योग है। राजनेताओं में वाद-विवाद, आरोप, प्रत्यारोप से राजनीति प्रभावित होगी। किरात, यवन प्रदेश के लोगों को कष्ट। कहीं-कहीं अधिक वर्षा से बाढ़ आदि से धन, जन की हानि होगी। घोड़ों में रोग से कष्ट।

श्रावण—२२ जुलाई सन् २००१ रविवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय इसका रंग पीत व दोनों श्रृंग सम रहेंगे। **सिंहे धान्य महर्घता** से सभी धान्य जैसे जौ, गेहूं, ज्वार, बाजरा, उड़द, चना के भावों में तेजी का योग व पश्चिमी प्रदेशों में वर्षा अधिक होगी। शेयर बाजार आवरेज व वायदा व्यापार में हानि व मन्दी का योग है। गुड़, तेल, घी, सोना, चांदी के भावों में घटाबढ़ी होगी। रुई के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी होगी। शक्कर, कपूर, मोती, जवाहरात, मूंगफली, शेयर, तिल तेल, अलसी, नारियल, मूंग, केसर, चीनी, चावल, मैदा, घी के भावों में घटाबढ़ी से स्थिरता को बल प्राप्त होगी व किसी-किसी में विशेष चमक।

भाद्रपद—२० अगस्त सोमवार को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय वर्ण पीत व दोनों श्रृंग शूल के समान होंगे जो पशुओं के व्यापारियों को शुभप्रद नहीं है। क्योंकि **चतुष्पद विनाशोपिरा** अर्थात् चौपाये पशु को बीमारी व रोगों से संख्या में कमी व कष्टदायक है व किसी ०क्षेत्र को लेकर बंटवारे में उपद्रव कारक भी है। विदर्भ प्रदेशों में युद्ध,आन्दोलन, बन्द, हत्या, प्रदर्शन होगा व नमक, चावल, जौ, उड़द, चना, अरहर, ज्वार, बाजरा के भावों में मंदी का मान होगा। किसी किसी जिन्स में विशेष मन्दी। सरसों, तिल, तेल, गुड़, कपास में तेजी। रुई गिरे भावों में सुधार बना लेगी। सूत, सन, सोना, रंगों के भावों में तेजी का मान होगा। उड़द, घी, मूंग के भावों में घटाबढ़ी से तेजी, अल्प वृष्टि, अधिक वर्षा से प्रकृति प्रकोप व जन-धन की हानि होगी।

प्र. आश्विन—१९ सितम्बर सन् २००१ को प्रथम आश्विन मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है व इसी दिन अधिक मास का आरम्भ हो रहा है। उदित समय चन्द्रमा का वर्ण श्वेत अर्थात् सफेद व दोनों श्रृंग समान होंगे। **"द्विज पीड़ा कन्यायां"** विप्र वर्ग को कष्ट प्रदायक है। शाली, घी के भावों में तेजी कारक व सूत, कापस में मन्दी कारक है। अन्न उत्पत्ति उत्तम व वर्षा उत्तम होगी। अफीम, गुड़, खाण्ड में तेजी। रुई में घटाबढ़ी से मन्दी व जौ में अच्छी मन्दी का योग है अन्यथा प्राय: अन्न व वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहेगा। सोना, चांदी, घटाबढ़ी के साथ तेज होंगे। गुड़, सरसों, मूंगफली भी तेजी बनायें।

द्वि. आश्विन—दिनांक १८ अक्टूबर सन् २००१ ई. गुरुवार को आश्विन द्वितीय मास का नवीन चन्द्र दर्शन हो रहा है। उदित समय इसके दोनों श्रृंग समान व वर्ण श्वेत रंग का होगी। **"वृश्चिके धान्य निष्पति"** से धान्य की पैदावार अच्छी। कुरू व पंजाब निवासियों को कष्ट प्रदायक। वर्षा सुन्दर, रस, कस, शाली, ईख, तेल, घी के भावों में तेजी आकर स्थिरता रहेगी। रुई, कपास, मूंग तेज। गेहूं, के भावों

में मन्दी का मान होगा। सूत, सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, ऊन, तिल, तेल घी के भावों में तेजी। सोना, चांदी, शेयर, खाण्ड, गुड़, घटाबढ़ी के साथ मन्दी का मान करेंगे। पशु, पक्षी, पीड़ित रहेंगे। अरहर, तेल, घी, इत्र आदि के भाव तेज। कंगनी, चावल भी मन्दी का मान करेंगे।

कार्तिक—तारीख १६ नवम्बर सन् २००१ शुक्र को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय चन्द्रमा का वर्ण श्वेत व आकृति टेढ़ी होगी और उसी दिन सूर्य नारायण भी चन्द्र के साथ युति करेंगे। अतः गेहूं, जौ, उड़द, चना के भावों में तेजी आएगी। गुड़, चीनी, खण्डसारी के भावों में मंदी का मान होगा। परन्तु यह मंदी स्थिर नहीं होगी। गेहूं, जौ, कपास, सूत, मक्की, सफेद वस्त्र, तिल तेल के भाव घटाबढ़ी के साथ मंदी का मान करेंगे। उड़द, मूंग, अरहर के भाव सम। लोबिया, रमास, चावल के भावों में मन्दी, लौंग, इलायची, ऊन, रेशम में घटाबढ़ी। सोना, चांदी प्रथम मन्दे बाद में तेज, अलसी, सरसों गिर कर संभल जायेंगे।

मार्गशीर्ष—१६ दिसम्बर सन् २००१ में शनिवार को मार्गशीर्ष मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। मुस्लिम वर्ग के व्यापारियों को मुबारकबाद, ईदुल फितर उदय समय इसका वर्ण पीत आकृति टेढ़ी होगी। धनुर्मकयोः शुभम् अर्थात् चन्द्र व्यापारिक वर्ग को भी शुभ है, इस समय में संग्रह किये माल में लाभ मिलेगा। गेहूं, जौ, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा के भाव सम रहेंगे। अफीम, गुड़, खाण्ड, सरसों, तेल, सोना, तेजी का मान करेंगे व मासान्त तक सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र, ऊन, रुई, चांदी, सोना घटाबढ़ी में चलकर तेजी बना लेंगे। मूंगफली आदि में अच्छी तेजी का योग है। अन्न भी तेजी का मान करेंगे।

पौष—तारीख १५ जनवरी सन् २००२ मंगलवार को पौष मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय इसका वर्ण श्याम काला व दोनों शृंग समान होंगे व मकर राशि में सूर्य के साथ युति भी होगी। अफीम, किराने की वस्तुएं व घोड़ा, खच्चर, गधा, सोना, चांदी, लोहा, मटर, मूंग, उड़द, मेवा, घी आदि में मन्दी होकर मासान्त तक तेजी का मान होगा। आवरेज, गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी। रुई घटाबढ़ी से तेजी का मान करेगी। यदि चन्द्रदर्शन के समय दोनों शृंग (कोने) बराबर हों तो प्रत्येक वस्तु, जिन्स में घटाबढ़ी होकर बाद में समानता का मान करेंगे।

माघ—१४ फरवरी सन् २००२ शनिवार को माघ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय इसका वर्ण काला व दोनों सींग बराबर होंगे। कांसी, लाख, मजीठ, लौंग, मिर्च, हींग, बारदाना, जीरा के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी। जुआरी लोग प्रभावित होंगे। लाल मिर्च, गेरू, घी, तेल, नमक, तिल, चन्दन के भावों में तेजी बनेगी। शीत लहर का प्रकोप चलेगा। कहीं-कहीं अग्निकाण्ड व कहीं कहीं हिमपात, झगड़े, फसाद यथा संग्रह सर्व धान्यानां, घृत, तेल, विशेषतः कुंकुम, अतः तुष, धान्य में भी तेजी का मान होगा व प्रजा में चन्द्रमा विशेष कल्याणकारी है। शान्ति का वातावरण व सरकार भी नवीन योजना जारी करेगी।

फाल्गुन—१६ मार्च सन् २००२ का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय इसका वर्ण लाल व आकृति दक्षिण की ओर से ऊंची होगी। चांदी, वस्त्र, रुई व किराना की वस्तुओं पर मन्दी का मान होगा। रुई, चांदी, सोना, सर्पमुखी चाल में चलकर तेजी का मान करेंगे। ऊनी वस्त्र, ऊन, सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द में मंदी का मान होगा। गाय के दूध की मात्रा में वृद्धि। प्रजा के लिए शासकीय सुविधाओं में वृद्धि। अलसी, सरसों में विशेष तेजी का योग है व किसी बड़े वाहन दुर्घटना का योग है। शूद्र जनों को कष्ट प्रदायक है।

सन् २००१ ई. में ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव

निर्देशक—डॉ. वसंत लाल व्यास (स्वर्ण, रजत प्राप्त, ज्यो. सम्राट) लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा), उ.प्र. (पिन-२८१२०४, सम्पर्क सूत्र-०५६५-८३३३५३

जनवरी—मास प्रारम्भ में शेयर उठ कर गिरेंगे। ८ जनवरी तेजी का मान करें, १० जनवरी भावों में सुधार १४ जनवरी भावों में तेजी को बल। १९ जनवरी भावों में गिरावट। २१ जनवरी भावों में सुधार, २३ जनवरी भावों में घटाबढ़ी से मन्दी। २५ जनवरी भाव चमकें, नवीन शेयरों का बाजार में आगमन। २८ जनवरी भावों में तेजी। ३० जनवरी भावों में परिवर्तन के साथ सुधार। नई नीति और चाल से बल मिले।

फरवरी—१ फरवरी शेयर बाजार भी सर्दी मानकर गर्मी की इच्छा करने लग जावें। ४ फरवरी भावों में तेजी के रुख का परिवर्तन। ५ फरवरी तेजी को बल, ११ फरवरी बाजारों में घटाबढ़ी, १५ फरवरी भावों में सर्पमुखी चाल से मन्दी का मान। २० फरवरी घटाबढ़ी से भावों में तेजी। २६ फरवरी शेयर बाजार में चमक बने। २८ ता. एकाएक भावों में गिरावट अतः व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें।

मार्च—१ मार्च बाजार में एक तरफा भावों में सुधार। ३ मार्च शेयर बाजार में मन्दी का मान। ५ मार्च भाव मजबूती में उठे, १६ मार्च सर्पमुखी चाल से भावों में आंशिक मन्दी का मान। २० मार्च बाजार रुख में परिवर्तन अतः बाजार रुख देखकर कार्य करें। २८ मार्च भाव स्थिरता को बल देंगे। आयरन, काटन शेयरों में विशेष घटाबढ़ी।

अप्रैल—शेयरों के भावों में अच्छी तेजी व अच्छी मंदी की भावना को बल मिलेगा। ५ को भावों में सुधार, १० अप्रैल घटाबढ़ी विशेष रहे। १५ अप्रैल वायदा व्यापार से लाभ, १८ अप्रैल भाव सर्पमुखीचाल से तेजी बनावें। २१ अप्रैल घटाबढ़ी से मन्दी, २३ भावों मं मन्दी का प्रभाव हो। तारीख २८ भाव उठकर टूट जाना चाहते हैं। अतः सतर्कता से कार्य करें।

मई—५ मई भावों में मन्दी का प्रभाव बने। ११ मई चलते बाजार में परिवर्तन भाव सुधार लें। १२ मई भावों में सुधार हो। १५ मई भावों में गिरावट का मान, २१ मई बाजारों में गर्मी व मौसम में भी गर्मी ला देगी। २३ मई दो सप्ताह तक अच्छी घटाबढ़ी से तेजी। २८ मई बाजार भावों में सर्पमुखी चाल से परिवर्तन। ३० मई भावों में चमक बने।

जून—२ जून भावों में सुधार बने, ५ जून से पन्द्रह दिनों तक विशेष घटाबढ़ी का रुख रहे। १० जून भावों में तेजी का मान। १६ जून प्रथम गिरकर तेजी का मान। १९ जून भावों में मन्दी। २० जून भावों में स्थिरता का मान रहकर तेजी को बल मिले। २५ जून भाव पलट कर गिरें, तारीख २८ जून भावों में घटाबढ़ी से तेजी। आयरन शेयरों में चमक।

जुलाई—४ जुलाई भावों में तेजी को बल, ८ जुलाई भाव सर्पमुखी चाल में गिरें, ९ जुलाई भाव में सुधार का योग। १६ जुलाई भावों में घटाबढ़ी से आंशिक मंदी। १७ जुलाई भावों में मन्दी अस्थाई है। २० जुलाई भावों में आलस्य का रुख बने। २३ जुलाई घटाबढ़ी विशेष रहे। २९ जुलाई शेयर सर्पमुखी चाल से तेजी का मान करेंगे। ३० जुलाई भावों में विशेष चमक।

अगस्त—३ अगस्त एक सप्ताह तक विशेष घटाबढ़ी से भाव चमक लें। तारीख १० अगस्त भावों में मन्दी का मान रहे। विकवालियों में बेचैनी। ११ अगस्त सर्पमुखी चाल से आंशिक तेजी बने। १३ अगस्त बाजार भावों में सुधार बने, १७ अगस्त घटाबढ़ी से तेजी बने, २४ अगस्त शेयर के भावों में अस्थिरता से भाव उठे। २५ अगस्त बाजार भाव में घटाबढ़ी से भावों में मन्दी, २९ अगस्त बाजार भावों में तेजी बने।

सितम्बर—सोमवती अमावस्या मंदी कारक है, अतः मास में घटाबढ़ी का विशेष रुख देखने को मिलेगा। ५ सितम्बर सभी शेयरों में मन्दी का झटका लगेगा। सावधानी से कार्य करें, १० सितम्बर बाजार भावों में घटाबढ़ी से अस्थिरता को बल मिलेगा। १७ सितं. को भावों में तेजी को बल मिले। २४ सितम्बर शेयर सप्ताहान्त तेजी का मान करेंगे। २९ सितं. बाजार भावों में सर्पमुखी चाल से तेजी को विशेष बल मिले।

अक्टूबर—सप्तमी छय वृद्धि कारक है। ६ अक्टूबर भावों में घटाबढ़ी से तेजी, आयरन शेयरों के भावों में चमक। १० अक्टूबर बाजारों में तेजी का प्रभाव हो, १५ अक्टूबर वर्षा हो तो प्रथम मन्दी लाकर तेजी को बल मिलेगा। २१ अक्टूबर भावों में घटाबढ़ी से सुधार बने। २४ अक्टू. भावों में मन्दी व्यापेगी। ता. २९ अक्टू. सावधानी से कार्य करें। भावों में घटाबढ़ी होगी।

नवम्बर—दीपावली सभी व्यापारी वर्ग को मंगलमय हो। ४ नवम्बर भाव तेजी का मान करेंगे। ९ नवम्बर घटाबढ़ी से मन्दी बने। ११ नवम्बर बाजार भावों में तेजी को बल। १७ नवम्बर भावों में सुधार, २० नवम्बर सर्पमुखी चाल से भाव तेजी का मान करें। २४ नवम्बर चलते भाव बदलेंगे, २९ को बाजार रुख में परिवर्तन धारक व दलालों में बेचैनी।

दिसम्बर—२ दिसम्बर शेयर मार्केट तेजी का मान करेंगे। ६ दिसम्बर भावों में सर्पमुखी चाल से सुधार। १६ दिसम्बर भावों में सुधार के साथ तेजी बने, १७ दिसम्बर भावों में परिवर्तन मन्दी की भावना को बल।२० दिसम्बर बाजारों में आलस्य बढ़े, २१ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक भाव सुधार लें। किसी-किसी शेयर में विशेष तेजी होगी। २८ दिसम्बर भावों में सुस्ती, ३० दिसम्बर भावों में साधारण मन्दी। विशेष रिपोर्ट से लाभ लें।

श्री पुरुषोत्तम (अधिक मास) के लक्षण और कर्त्तव्य

एकस्मिन वर्षे अधियुगे अधिक द्वये सति पूर्वोधिमासौ।
प्रथमोधि मासः प्राकृतः वज्ञेय अधिक वत्र त्याज॥
असंक्रांति मासो अधिक मासौ स्पुट स्यात।
द्वि संक्रांति मास क्षयोख्यः कदाचित॥ भास्कराचार्य॥

ज्योतिष की चन्द्र गणना से जब सूर्य की एक ही संक्रांति में दो अमावस्यायें आ जाती हैं तब दूसरी अमावस्या वाले अमान्त महीने की वृद्धि होकर वह मल (अधिक) मास बन जाता है। "भविष्य पुराण" के कथनानुसार चन्द्र और सौर मासों के अंतर को ही अधिक मास कहा गया है। कहा जाता है कि एक समय दुखी होकर मल मास ने भगवान विष्णु से कहा—हे नाथ! क्या आप मुझ अभागे की पीड़ा को जानते हो, क्षण, लव, मुहूर्त, पक्ष, मास, दिन रात्रि व नक्षत्र, राशियाँ सभी अपने अपने स्वामी की आज्ञा से निर्भय होकर विचरण किया करते हैं। हे नाथ! मुझ अभागे का नाम तो है लेकिन ना मेरा कोई स्वामी है और हे नाथ! कोई भी विवाह, मुहूर्त्त, उत्सव, मांगलिक कार्य भी मुझमें नहीं किये जाते। यहां तक कि देव गुण भी मेरा निरादर किया करते हैं इसलिए हे स्वामी! मैं तो मरना चाहता हूँ। मलीय मास की पीड़ा को समझकर भगवान विष्णु ने कहा—हे मल के रूप निंदित मलीय मास! आज से मैं तुझे अपना नाम पुरुषोत्तम प्रदान करता हूँ। जो लोग अधिक मास, लौंद, पुरुषोत्तम मास में जप, ध्यान, पूजा, दान, ईश्वर आराधाना करेंगे वे इस लोक में सुख भोगकर सद्गति को प्राप्त करेंगे। इसलिए आज भी अधिक मास में दान पुण्य का बड़ा ही महत्व है।

उदाहरणार्थ—वर्ष २००१ सन् ई. में आश्विन (क्वार) नामक मास अधिक मास है। क्योंकि १६ सितम्बर सन् २००१ ई. में स्टैं. टाईमानुसार रात्रि २२-०१ पर सूर्य की कन्या संक्रांति है और अमावस्या १७ सितम्बर की है व द्वितीय अमावस्या १६ अक्टूबर की है व सूर्य नारायण १७ अक्टूबर को स्टैं.टा. ९।५४ पर तुला राशि में प्रवेश करेंगे। इस प्रकार सूर्य की एक ही संक्रांति में दो अमावस्याओं के होने के कारण कार्तिक महीने में दो आश्विन मास हो गए। प्रथम आश्विन की अमावस्या से द्वितीय अमावस्या तक का मास श्री पुरुषोत्तम मास लौंद, मलमास अधिक मास बन गया। लेकिन भारत वर्ष में महीने की गणना चन्द्रमा के हिसाब से की जाती है। परन्तु मलमास, क्षयमास के उपाय द्वारा वर्ष को सूर्य के हिसाब से ठीक कर लिया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं होता जैसे कि मुस्लिम, इस्लामी हिजरी में प्रति वर्ष पांच-पांच दिन साल की गणना में ही न आयें और इस प्रकार १०००० वर्ष में १३७ साल ही गायब हो जाएं।

आश्विन रूपी पुरुषोत्तम मास का फल

आश्विने परचक्रेण तस्करै पीड़ित प्रजा। सुभिक्षं क्षेमामरोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिण पथे। राजा नस्त्र नाश्यति वृद्धि ब्राह्मण जातिषु॥ *(अथाधिमास फलम्)* सम्पूर्ण प्रजा कलह, चोरी, डकैती, कालाबाजारी, तस्करी, बन्द, आन्दोलन, हिंसा प्रदर्शनों से त्रस्त रहेगी। क्षेम, आरोग्य, आरोप-प्रत्यारोप से राजा व राजनीति प्रभावित, फूट, रोग वृद्धि, गेहूं, जौ, मटर,अरहर, चना, मूंग, उड़द के भावों में मंदी। रुई, घी, तेल, लोहा, आयरन शेयरों में तेजी।

अधिक मास में करने योग्य कार्य

तीर्थ श्राद्ध दर्शश्राद्ध सपिण्डनम्।
चन्द्र सूर्य ग्रहे स्नानं मल मासे विधियते॥ मनुस्मृतौ॥

मलमास में प्राण घातक रोगादि की निवृत्ति के लिये रुद्र, जपादि, अनुष्ठान, कपिल षष्ठी आदि व्रत, अनावृष्टि धारण के पुरश्चरण ग्रहण सम्बन्धी श्राद्ध दान, जप, पुत्र जन्म के कृत्य, पितृ मरण के श्राद्धादि, पुंसवन से सीमांस से संस्कार अवधि समाप्त करने के पूर्वान्त और सीमान्त जैसे संस्कार नियत अवाही करने के पूर्वगत प्रयोग आदि किये जा सकते हैं।

अधिक मास में न करने योग्य कार्य

अग्न्याधेय प्रतिष्ठा च यज्ञो दान व्रतानि च। वेद व्रत वृषात्सर्ग चूड़ा करण मेखला॥ गमनं देव तीर्थानां विवाहमाभिषेचनम्। यानं च गृह कर्माणि मल मासे विवर्जयेते॥ गर्ग संहिता॥

कूँआ निर्माण, बावली, बाग, बगीचा लगाना, देव प्रतिष्ठा, किसी भी प्रयोजन के व्रत, उत्सव, उद्यापन, विवाह, वधू प्रवेश, पृथ्वी, सोना, तुला का दान, सोमयज्ञ, नील वृष का विवाह, ऋषि पूजन, तीर्थ दर्शन, संन्यास, कूंआ पूजन, व्यापार का शुभारंभ, भोजन व नशीली वस्तु का सेवन मलमास में ना करें।

कुम्भ महापर्व प्रयागराज (इलाहाबाद) २४ जनवरी सन् २००१ ई.

विशेष कर्तव्य

गोवर्धन धर्म वन्दे गोपालं धर्म गोप रूपिणा।
गोकलोत्सव मीशानं गोविन्द गोपिका प्रिय॥
श्रीमद्भागवत॥

विशेष रूप में मलमास में प्रथम शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से द्वितीया कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तक श्री पुरुषोत्तम भगवान का जप, ध्यान, श्री गोवर्धन गिर्राज जी की परिक्रमा, श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण कीर्तन, गौ रक्षा, गौ सेवा, विधवा व अनाथ, असहाय साधु संत, ब्राह्मणों निष्काम भाव से सेवा व स्वयं धर्मानुसार आचरण से स्वयं की देश और समाज के साथ-साथ विश्व का कल्याण होता है। देवी भागवत्, भविष्योत्तर पुराण, हेमाद्रि पूजा, पंकज भास्कर, भविष्य पुराण, मनुस्मृती में श्री पुरुषोत्तम मास का विशेष वर्णन वर्णित है।

तेरह दिन का पक्ष

युग सहस्त्र बीतै थकौ विधि के होवे योग। तेरह दिन को पाख ही नाम करत सिक लोग॥ काल परत जम मारै सही रुण्ड-मुण्ड सगरी मही। छत्र भंग अरु हा हा कार क्षय होवें सब नर नारि॥ कौरव पाण्डव लरै राम रावण युद्ध कियो। हुयो लगत संहार काल नै बहु जन विद्धौ॥ अनेक उपद्रव जग करति तेरह दिन पाख इहु। धूमधाम जो युद्ध हो ऐसीफल मुनि मेघ कहूं॥

इस वर्ष देव योग अधिक (द्वितीय) आश्विन कृष्ण मास में तेरह दिन का पक्ष है। यह पक्ष दिनांक ३ सितं. २००१ से १७ सितं. तक, १८ सितं. से २ अक्टू. व ३ अक्टू. से १६ अक्टूबर २००१ तक तीनों पक्ष में तेरह दिनों के पक्ष हैं। यह पक्ष विशेष कर एशिया महाद्वीप, दक्षिण पूर्वी यमन राष्टों के लिए अशुभ फल प्रदायक हैं।

अनेक युग सहाख्यां देवयोगात्प्रजायते। त्रयोदश दिनै पक्ष स्तदा संहरते जगत्॥ विश्व के लिए अनिष्टप्रद सिद्ध होगा। भारत के लिए इस समय अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है। तेरह दिन के पक्ष के कारण पूर्व में महाभारत का संग्राम हुआ था। सन् १९३४ में तेरह दिन का पक्ष आया था। जिससे विनाशकारी भूकंप सन् १९६२ में चीन का आक्रमण व १९७१ में पाकिस्तान का आक्रमण व सन् १९९९ में उड़ीसा में विनाश कारी भूकंप व सीमा पर युद्ध हुआ था।

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

चतुरः कुम्भाश्चतुर्थी ददाभि क्षोरेण उदकेनदध्वां॥ (४,३,४,७) (अथर्ववेद)
जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रूरोज पुरो अरदन्न सिन्धून।
वभेद गिरि नवींमन्न कुम्भ भागा इन्द्रो अकृरूणुता स्वयुग्मि॥ (ऋगवेद १०,९,७)
पूर्णकुम्भोअधिकाल अहिततस्तंवैपश्यामोवाहुधानुसन्तः।
सइमा विश्वा भुवनानिं कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥ (अथर्ववेद १९,५३,३)

ब्रह्माजी कहते हैं—हे मनुष्यों! भोजन साधन से (धर्म), सेचन वा वृद्धि साधन से (अर्थ), धारण समर्थ से (काम) पोषण सामर्थ्य से (मोक्ष) से परिपूर्ण भूमि को पूर्ण करने वाले चार कुम्भ पर्वों को चार स्थान (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक), ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, गृहस्थ, संन्यास में प्रदान करता हूँ।

महाकुम्भ पर्व वेदों में उल्लिखित तथा सनातन वैदिक, पौराणिक धर्म का अत्यन्त प्राचीन महापर्व है, हर बारहवें वर्ष में विशिष्ठ ग्रहयोग वश यह महापर्व होता है।

देवानां द्वादशाहोमिगैत्यै द्वदिश वत्सरैः। जायते कुम्भ पर्वाणी तथा द्वादश संख्यया॥
तत्राधानत्वये नृषां चत्वारि भुवि भारते। अष्टौ लोकान्तरे प्रोक्ता दैवेर्गम्या च चेतरै॥

देवताओं के बारहदिन मनुष्यों के बारह वर्ष के बराबर होते हैं। कुम्भ पर्व भी बारह हैं। परन्तु पृथ्वी पर चार मनुष्यों को व देवताओं को आठ कुम्भ कहे हैं इस को देवता भी जानते हैं। पृथ्वी पर हरिद्वार,प्रयाग, उज्जैन, नासिक में होताहै। इस वर्ष तीर्थों के राजा प्रयाग राज में महापर्व होने जा रहा है। प्रयाग के कुम्भ के सम्बन्ध में शास्त्र वचन है।

१. माघे मेष गते जीवे मकरे चन्द्र भास्करौ। अमावस्यां तदा योगः कुम्भाख्यस्य तीर्थे नायके॥
२. मकरे च दिवानाथे वृष राशिस्थिते गुरौ। प्रयागे कुम्भ योगे वै माघ मासे विधुक्षये॥
३. मकरे च दिवानाथे हृजगे च वृहस्पतौ। कुम्भ योगे भवेत्तम प्रयागेह्यति दुलर्भः॥

सूर्य मकर में, गुरु वृष में, चन्द्र मकर में अमावस्या को प्रयाग राज (इलाहाबाद) में कुम्भ महापर्व होता है। कुम्भ पर्व में स्नान दान का विशेष महत्व है।

सहस्त्रं कार्तिके स्नाने माघ स्नान शतानि च। वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भ स्नानेन तत्भलम्॥

कार्तिक मास में एक हजार बार गंगा स्नान, माघ में सौ बार गंगा स्नान, वैशाख में करोड़ बार स्नान से जो फल मिलता है वह पुन्य कुम्भ में एक बार स्नान से मिलता है।

अश्व मेघ सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च। लक्ष्यं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्॥

अश्वमेघ यज्ञ एक हजार, सौ वाजपेय यज्ञ, लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो फल मिलता है वह कुम्भ स्नान से प्राप्त होता है।

प्रयागराज में कुम्भ स्नान का विशेष महत्व है।

**सितेसिते सरिते यम संगथे तमाअआतुता सो दिव मुत्पन्ति।
ये वै तन्वं विसृजन्ति धी रास्ते जना सो अमतत्वं भजन्ते॥**

श्वेत, श्याम वर्ण की श्री गंगा महारानी व यमुना महारानी के संगम में स्नान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है जो यहां शरीर त्यागते हैं उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

यह भूमि तीनों लोकों में प्रसिद्ध है व पृथ्वी पर अमृत तुल्य है।

**सूर्य ग्रहे कुरूक्षेत्रे कार्तिक्यां च त्रिपुष्करे।
माघ मासे प्रयागे च याः स्नायत् सोअपि पुष्यवानः॥
प्रयागे माघ मासे तुत्र्यहं स्नानस्य यदभवेत।
नाश्व मेघ सहस्त्रेणं तत्फलं लभते भुवि॥**

अन्यत्र कहा है— **त्रिवेणी कुम्भोअस्मिन् न नरक पातश्चन भवेत्।**

कुम्भ पर्व में त्रिवेणी स्नान से नरक की प्राप्ति नहीं होती है।

संवत् २०५७ सन् २००१ माघ मास की मौनी अमावस्या २४ जनवरी बुधवार को कुम्भ पर्व है। माघ मास में स्नान दान पुन्य आदि शुभ कर्मों का सहस्त्रों गुणा फल की प्राप्ति होती है।

**ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थो अथ भिक्षुकः।
वाल वृद्ध युवानश्च नर नारी नपुंशका॥**

कुम्भ पर्व योग के पावन पर्व स्नान, दान करने वाले सात्विक प्रवृत्ति के लोग पुनर्जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

प्रयागराज के तीन शाही मुख्य पर्व

१. दिनांक ९ जनवरी मंगल, पौष पूर्णिमा, प्रथम शाही स्नान
२. दिनांक २४ जन. बुध, माघ मौनी अमावस्या पर्व, द्वि. शाही स्नान
३. दिनांक २९ जन. सोम, माघ शु. वसंत पंचमी पर्व, तृ. शाही स्नान

इसके अतिरिक्त षटतिला एकादशी २० जन., जया एकादशी ४ फर., संकट चतुर्थी १२ जन., मकर संक्रांति १४ जन., ९ जन. रात्रि में खग्रास चन्द्रग्रहण के मोक्ष के पश्चात् पद्म पुराण के अनुसार जो मनुष्य माघ भर प्रयाग में बास व स्नान करते हैं व जन्म मरण के बन्धन से मुक्ति पाते हैं। अतः मनुष्य का कर्तव्य है वह अपनी स्वयं सुविधानुसार स्नान कर व अन्य पुन्यदान व विद्वान जन, महन्त, तपस्वी, योगीजनों के दर्शन कर अपने आपके कल्याण के साथ देश व धर्म के कल्याणों की वृद्धि करें।

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

६ गुरौ २६ जुला. हस्त रे. १० ।।।।।।।।। दिवा लग्न सिंह ७।१८ से ८।२४ तक, क्षय तिथि दोष आवश्यके
६ गुरौ २६ " चित्रा रे. ७ ऽरा. ।।।।ऽऽ।। लग्न अन्यगो., रात्रौ कुम्भ २१।०५ से २१।४६ तक, मंगल १० पूज्य:, क्षय तिथि दोष: आवश्यके
१० रवौ २९ " अनु. रे. ८ ।।।।।।ऽऽ। दिवा लग्न ९।०२ से सिंह, कन्या, तुला, सायं गोधूलि शुक्र ६ दोष:, रात्रौ २०।०५ से २१।०० तक, कुंभ, मंगल १० पूज्य, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव:
११ चन्द्रे ३० " " रे. ७ ।।।।ऽनृ. ।ऽऽ। दिवा लग्न सिंह ७।०२ से ८।५७ तक, गणितेन क्रांति साम्याऽभाव:
१३ गुरौ २ अग. उ.षा. रे. ९ ।।।।।।ऽ।। लग्न अन्यगो. शुक्र ६ दोष:, रात्रौ १९।५१ से २२।४४ तक, कुंभ, मीन, कुंभ लग्ने मंगल १० पूज्य:
१४ शुक्रे ३ " श्रव. रे. ६ ।।।ऽबु.ऽरो.ऽऽ।। लग्न मीन २२।१८ से २२।४० तक
१५ शनौ ४ " " रे. ६ ।।।ऽबु.ऽरो.ऽऽ।। दिवा लग्न ९।०१ से १३।३७ तक, कन्या, तुला रात्रौ १९।४३ से २०।५४ तक कुंभ मंगल १० पूज्य:

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

४ बुधे ८ अग. उ.भा. रे. ७ ।।।।ऽनृ.ऽऽ।। दिवा लग्न कन्या ८।४६ से, चन्द्र ७ पूज्य:, सायं गोधूलि शुक्र ६ दोष, रात्रौ कुंभ लग्ने १९।२८ से, मंगल १० पूज्य:
५ गुरौ ९ " रेवती रे. ९ ।।।।।।ऽ।। दिवा लग्न कन्या ९।३९ से ११।०१ तक, चंद्र ७ पूज्य:, सायं गोधूलि,. शुक्र ६ दोष:, रात्रौ १९।२४ से २०।५२ तक, कुंभ, मंगल १० पूज्य:
६ शुक्रे १० " " रे. ८ ।।।।।।ऽ।ऽ दि.ल. ८।३८ से १०।४५ तक, कन्या चन्द्र ७ पूज्य:, दग्धा तिथि दोष परिहार:
९ चन्द्रे १३ " रोहि. रे. ७ ऽबु।ऽश. ।।।।ऽ।। लग्न अन्यगोधूलि, शुक्र ६ दोष: शनि युति दोष परिहार:
१० भौमे १४ " " रे. ७ ऽबु. ।ऽश. ।।।।ऽ।। दिवा लग्न ६।०४ से १०।४० तक सिंह, कन्या, शनि युति दोष परिहार:

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

२ चन्द्रे २० अग. उ.फा. रे. ८ ।।।।ऽनृ.ऽ।।। लग्न २७।१५ से २९।३९ तक कर्क
३ भौमे २१ " " रे. ८ ।।।।ऽनृ.ऽ।।। दिवा लग्न तुला १०।११ से १२।३० तक
३ भौमे २१ " हस्त रे. ८ ।ऽ।।ऽनृ. ।।।। लग्न मीन २०।०३ से चन्द्र ७ राहु ४ पूज्य:, कर्क लग्न २७।११ से
४ बुधे २२ " चित्रा रे. ७ ऽरा. ।।।।ऽऽ।। लग्न १९।५९ से २१।२४ तक मीन चन्द्र ७ राहु ३ पूज्य:, अग्रे कर्क लग्ने २७।०७ से २९।२७ तक
५ गुरौ २३ " " रे. ६ ऽरा. ।।।ऽचो.ऽऽ।। दिवा लग्न कन्या ७।४५ से,
५ गुरौ २३ " स्वा. रे. ९ ।।।।ऽचो. ।।।। लग्न अन्य गोधूलि रात्रौ २७।०३ से २९।२९ तक, कर्क
६ शुक्रे २४ " " रे. १० ।।।।।।।।। दिवा लग्न ७।४१ से ९।५९ तक, कन्या
११ बुधे २९ " उ.षा. रे. ९ ऽ सू.मं. ।।।।।।।।। लग्न २२।१६ से मेष, अग्रे कर्क लग्ने २८।५८ से
१२ गुरौ ३० " " रे. ७ ऽसू.मं. ।।।ऽनृ.ऽ।।। दिवा लग्न कन्या-तुला ७।१९ से, नृप पंचक एकार्गल दोषऽभाव:, सायं अन्यगोधूलि, रात्रौ २०।५४ से २२।३० तक, मेष
१२ गुरौ ३० " श्रवण रे. ६ ऽसू ।।ऽशु.ऽनृ.ऽ।।। लग्न २६।३७ से २८।५८ तक कर्क, चन्द्र ७ पूज्य:
१३ शुक्रे ३१ " " रे. ७ ऽसू. ।।ऽशु. ।ऽ।।। दिवा लग्न ७।१९ से कन्या-तुला, नृप पंचक दोष: सायं अन्य गोधूलि, रात्रौ २०।५१ से २२।२७ तक मेष अग्रे कर्क लग्ने २६।३४ से २६।५५ तक, चन्द्र ७ पूज्य
१३ शुक्रे ३१ " धनि. रे. १० ।।।।।।।।। लग्न कर्क २८।०७ से २८।५४ तक, चन्द्र ७ पूज्य:
१४ शनौ १ सितं. " रे. ९ ।।।।ऽचो. ।।।। दिवा लग्न कन्या, तुला ७।१२ से ११।५० तक, चौर पंचकाऽभाव:, रात्रौ २०।४८ से २२।२३ तक मेष

द्वितीय आश्विन शुक्ल पक्ष

३ शुक्रे १९ अक्टू. अनु. रे. ९ ।।।।ऽअ. ।।।। लग्न २५।३७ से २९।३७ तक, सिंह, कन्या

ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

९ गुरौ २५ अक्टू. धनि. रे. ७ ऽमं.ऽ।।ऽरो. ।।।। लग्न अन्यगोधूलि, रात्रौ कन्या २७।३१ से
१० शुक्रे २६ " " रे. ७ ऽमं.ऽ।।।।।ऽ। लग्न गोधूलि, गणितेन क्रांति साम्याऽभाव:
१२ चन्द्रे २९ " उ.भा. रे. ८ऽसू. ।।।।ऽ।।। लग्न अन्य गोधूलि
१२ चन्द्रे २९ " रेवती रे. ९ ।ऽ।।।।।।। लग्न २८।३४ से कन्या, चन्द्र ७ पूज्य:
१३ भौमे ३० " " रे. ८ ।ऽ।।ऽनृ. ।।।। लग्न अन्य गोधूलि, रात्रौ २७।१२ से २९।२० तक कन्या, चन्द्र ७ पूज्य:
१४ बुधे ३१ " अश्वि. रे. ७।।।ऽबु.शु. ।ऽऽ।। लग्न २४।५० से २७।०७ तक सिंह

कार्तिक कृष्ण पक्ष

३ रवौ ४ नवं. मृग. रे. ७ ।।ऽरा. ।।ऽऽ।। दिवा लग्न १३।३८ से १५।०७ तक कुंभ, सायं गोधूलि, रात्री सिंह, कन्या २४।३४ से २९।०८ तक, राहु युति दोष परिहार:
११ रवौ ११ " हस्त रे. ७ ऽरा. ।।।।।ऽ।ऽ लग्न सिंह २५।४९ से २६।२४ तक, दग्धा तिथि दोष: आवश्यके

कार्तिक शुक्ल पक्ष

५ भौमे २० नवं. श्रवण रे. ८ ।।।।ऽनृ.ऽ।।। लग्न २५।४९ से कन्या, तुला
६ बुधे २१ " " रे. ९ ।।।।।ऽ।।। दिवा लग्न कुंभ १२।३२ से १४।०१ तक, सायं अन्यगोधूलि सोग्रांग:
१० रवौ २५ " उ.भा. रे. ७ ।।।।।ऽऽ।ऽ दिवा लग्न १२।१६ से १३।४५ तक, कुंभ सायं गोधूलि सोग्रांग: रात्री २५।२९ से २७।४७ तक कन्या, चन्द्र ७ पूज्य:, दग्धा तिथि दोष परिहार:
१२ भौमे २७ " अश्वि. रे. ६ ऽसू.ऽ।।ऽअ.ऽ।।। २४।२१ से २५।२१ तक सिंह, तुला लग्न २७।३९ से, चन्द्र ७ पूज्य:
१३ बुधे २८ " " रे. ७ ऽसू.ऽ।।।ऽ।।। दिवा लग्न १२।०४ से १४।५७ तक कुंभ-मीन, मीन लग्ने राहु ४ पूज्य:
१५ शुक्रे ३० " रोहि. रे. ७ ।।ऽश. ।ऽ।।ऽ।। लग्न-कन्या २५।१० से, शनि युति दोष परिहार:

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

१ शनौ १ दिसं. रोहि. रे. ६ ।।ऽश. ।ऽऽचो. ।ऽ।। दिवा लग्न ११।५३ से १४।४६ तक कुंभ-मीन, शनि युति दोष-परिहार:, मीन लग्ने राहु: ४ पूज्य:
१ शनौ १ " मृग. रे. ७ ।।ऽरा. ।।ऽचो.ऽ।।। लग्न २२।४८ से २७।२३ तक सिंह-कन्या, अग्रे तुला लग्न २९।१६ से, राहुयुति दोष परिहार:
२ रवौ २ " " रे. ८ ।।ऽरा. ।।।ऽ।।। दिवा लग्न १३।१७ से १४।४२ तक मीन, राहु ४ पूज्य:
६ गुरौ ६ " मघा रे. ६ ऽचं.ऽ।।ऽमं. ।ऽ।।। लग्न तुला २८।४७ से २९।२३ तक
८ शनौ ८ " उ.फा. रे.६ ऽबु. ।।।।ऽनृ.ऽऽ।। लग्न अन्य गोधूलि सोग्रांग:, रात्रौ तुला लग्न २६।५७ से २९।१७ तक
९ रवौ ९ " हस्त रे. ७ ऽशु.रा. ।।।।।ऽ।ऽ दिवा लग्न मकर ९।३९ से, मीन लग्ने १२।५१ से १४।१६ तक, चन्द्र ७, राहु ४ पूज्य:, सायं अन्य गोधूलि सोग्रांग:
१० चन्द्रे १० " चित्रा रे. ७ ।।।।ऽचो.ऽऽ।। दिवा लग्न ९।३५ से ११।१९ तक मकर, १२।४७ से मीन, चन्द्र ७, राहु ४ पूज्य:, सायं अन्यगोधूलि सोग्रां:, रात्रौ २४।३२ से २६।४९ तक, कन्या, शुक्र ३ पूज्य:, क्षय तिथि दोष: आवश्यके

माघ शुक्ल पक्ष

३ शुक्रे १५ फर. उ.भा. रे. ९ ।।।।।।।।ऽ दि.लग्न ९।४८ से ११।२४ तक मेष, रात्रौ २९।०७ से मकर, दग्धा तिथि दोष परिहार:
५ रवौ १७ " अश्वि. रे. ९ ।।।।ऽनृ. ।।।। लग्न अन्यगोधूलि, रात्रौ २२।१८ से तुला, चन्द्र ७ पूज्य:, अग्रे धनु मकर लग्ने २६।५६ से ३०।४३ तक, धनु लग्ने गुरु ७, शुक्र ३ पूज्य:
९ गुरौ २१ " मृग. रे. ७ ।।ऽरा. ।ऽके. ।ऽ।।। लग्न २८।४२ से मकर, राहु युति दोष परिहार:
१० शुक्रे २२ " " रे. ७ ।।ऽरा. ।ऽके. ।ऽ।।। दि.ल. ७।५५ से ९।१९ तक मीन, सायं गोधूलि, राहु युति दोष परिहार:

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

१ गुरौ २८ फर. उ.फा. रे. ८ ।।।ऽशु.ऽचो. ।।।। लग्न गोधूलि, रात्रौ २६।१२ से २९।१२ तक धनु, मकर, धनु लग्ने गुरु ७, शुक्र ३ पूज्य:

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२ शुक्रे	१ मार्च	चित्रा	रे. ५ ।ऽ।ऽशु.।ऽरो.।ऽ।ऽ लग्न मधु-मकर २७।३६ से २९।५५ तक, धनु लग्ने गुरु ७ शुक्र ३ पूज्यः, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः, दग्धा तिथि दोष परिहारः
७ भौमे	५ "	अनु.	रे. ७ ऽचं.बु.ऽ।।ऽअ.।।।। दिवा लग्न ७।३२ से ८।३८ तक मीन, सायं अन्यगोधूलि
८ बुधे	६ "	मूल	रे. ७ ।।।ऽरा.ऽनृ.।ऽ।। लग्न २७।५२ से २९।३६ तक मकर
९ गुरौ	७ "	"	रे. ७ ।।।ऽरा.ऽनृ.।ऽ॥ दिवा लग्न मीन ७।०५ से, सायं अन्यगोधूलि १८।३० तक
१२ रवौ	१० "	श्रवण	रे. ८ ऽशु.।।।।।ऽ।। दिवा लग्न ६।५२ से ८।२२ तक मीन, रात्रौ २५।३२ से धनु, गुरु ७ पूज्यः

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

सं. २०५८ विक्रमी, शाकः १९२३ मध्ये

वर्षारंभ से १३ अप्रैल शुक्रवार सायं तक मीन मल मास

१४ अप्रैल शनि मूल भौमयुति, भद्रा दोष
१८ " बुध धनि. भद्रा लग्नाऽभावः दोष
२० " शुक्र उ.भा. क्षीणचन्द्र दोषः अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोषः
३ मई गुरु उ.फा. मृत्युबाण भद्रा दोषः
६ " रवि स्वाति लग्नाऽभावः भद्रा दोषः
७ " सोम " व्यतिपात दोषः
८ " मंगल अनु. सूर्यवेध दोषः
९ " बुध " " "
१० " गुरु मूल भौमयुति दोषः
११ " शुक्र मूल " "
१२ " शनि उ.षा. मृत्युबाण दोषः
१३ " रवि उ.षा. मासान्त दोषः
१३ " रवि श्रवण लग्नाऽभावः भद्रा दोषः
१४ " सोम श्रवण संक्रांतिदिन दोषः
१४ " सोम धनि. " "
१९ " शनि उ.भा. लग्नाऽभावः दोषः
२० " रवि रेवती तिथ्यन्त क्षीणचंद्र दोषः
२४ " गुरु रोहि. शनियुति दोषः
२५ " शुक्र मृग. मृत्युबाण दोषः
१ जून शुक्र चित्रा व्यतिपात भद्रा दोषः अग्रे गुरु वृद्धत्व, गुरु अस्त दोषः
३० " शनि स्वाती गुरु बाल्यत्व दोषः
१ जुला. रवि अनु. लग्नाऽभावः दोष
४ " बुध मूल केतुयुति दोषः
५ " गुरु मूल केतुयुति भद्रा दोषः
६ " शुक्र उ.षा. वैधृति दोषः
७ " शनि उ.षा. रेखा ५ अल्प दोषः

८ जुला. रवि धनि. भद्रा पश्चात लग्नाऽभावः
११ " बुध उ.भा. लग्नाऽभावः दोषः
१२ " गुरु रेवती लग्नाऽभावः दोषः
१३ " शुक्र अश्विनी " "
१५ " रवि अश्विनी नक्षत्रात दोषः
१८ " बुध मृग. मृत्युबाण दोषः
२२ " रवि मघा लग्नाऽभावः व्यतिपात दोष
२७ " शुक्र चित्रा भद्रा दोषः
२७ " शुक्र स्वाति भद्रा-मृत्युबाण दोषः
२८ " शनि स्वाति लग्नाऽभावः दोषः
३१ " मंगल मूल केतुयुति दोषः
१ अग. बुध मूल " "
३ " शुक्र उ.षा. लग्नाऽभावः भद्रा दोषः
४ " शनि धनि. सूर्यवेध दोषः
५ " रवि धनि. " "
१० " शुक्र अश्विनी भुजंगपात दोषः
११ " शनि अश्विनी भुजंगपात भद्रा दोषः
१४ " मंगल मृग. मृत्युबाण भद्रा दोष
१५ " बुध मृग. मृत्युबाण दोषः
१८ " शनि मघा क्षीणचन्द्र दोषः
२२ " बुध हस्त भद्रा दोषः
२५ " शनि अनु. भद्रा वैधृति दोषः
२६ " रवि अनु. वैधृति दोषः
२७ " सोम मूल मृत्युबाण भौमयुति दोषः
२८ " मंगल मूल " "
२ सितं. रवि धनि. भद्रा दोष

अग्रे ३ सितं. सोम से १६ अक्टू. मंगल तक श्राद्ध पक्ष पश्चात् अधिक मास दोषः

१७ अक्टू. बुध चित्रा संक्रांति दिन दोषः
१७ अक्टू. बुध स्वाति संक्रांति दिन दोषः
१८ " गुरु स्वाति लग्नाऽभावः दोषः
२० " शनि अनु. भद्रा दोषः
२१ " रवि मूल केतुयुति दोषः
२२ " सोम मूल " "
२३ " मंगल उ.षा. राहुवेध दोषः
२४ " बुध उ.षा. " "
२४ " बुध श्रवण भुजंगपात दोषः
२५ " गुरु श्रवण " " "
२८ " रवि उ.भा. रेखा ५ अल्पदोषः
३० " मंगल अश्विनी लग्नाऽभावः दोषः
१ नवं. गुरु अश्विनी नक्षत्रांत दोषः
३ " शनि रोहि. लग्नाऽभावः परिघार्द्धम् भद्रा दोषः
४ " रवि रोहि. भद्रा दोषः
५ " सोम मृग. राहुयुति दोषः
९ " शुक्र मघा भौमवेध दोषः
१० " शनि उ.फा. वैधृति दोषः
११ " रवि उ.फा. वैधृति, विष्कुंभ-३ घटी पश्चात् लग्नाऽभावः दोषः
१२ " सोम हस्त लग्नाऽभाव दोषः
१२ " सोम चित्रा क्षीणचन्द्र दोषः
१६ " शुक्र अनु. संक्रांति दिन दोषः
१७ " शनि मूल मृत्युबाण, केतुयुति दोषः
१८ " रवि मूल केतुयुति दोषः
१९ " सोम उ.षा. राहु वेध दोषः
२० " मंगल उ.षा. " " "
२१ " बुध धनि. भौमयुति दोषः
२२ " गुरु धनि. " " "
२६ " सोम उ.भा. लग्नाऽभावः दोषः
२६ " सोम रेवती भद्रा, व्यतिपात दोषः
२७ " मंगल रेवती व्यतिपात दोषः
७ दिसं. शुक्र मघा लग्नाऽभावः दोषः
९ " रवि उ.फा. नक्षत्रांत दोषः
९ " रवि चित्रा भद्रा दोषः
१० " सोम स्वाति भौम वेध दोषः
११ " मंगल स्वाति " " "
१२ " बुध अनु. क्षीणचन्द्र दोषः

अग्रे १३ दिसं. गुरु से १० फर. रवि तक धनु संक्रांति मल मास, शुक्रास्त बाल्यत्व दोषः

१० फर. रवि श्रवण क्षीणचन्द्र दोषः
१६ " शनि उ.भा. लग्नाऽभावः भद्रा दोषः
१६ " शनि रेवती भौमयुति दोषः
१७ " रवि रेवती " " "
१८ " सोम अश्विनी लग्नाऽभावः दोषः
२० " बुध रोहिणी शनियुति दोषः
२१ " गुरु रोहिणी " " "
२६ " मंगल मघा लग्नाऽभावः भद्रा दोषः
२७ " बुध मघा लग्नाऽभावः दोषः
२८ " गुरु हस्त भुजंगपात दोषः
१ मार्च शुक्र हस्त " " "
२ " शनि चित्रा महापातदिन दोषः
२ " शनि स्वाति सूर्यवेध दोषः
३ " रवि स्वाति सूर्यवेध दोषः
४ " सोम अनु. भद्रा दोषः
८ " शुक्र उ.षा. राहुवेध दोषः
९ " शनि उ.षा. " " "
९ " शनि श्रवण परिघार्द्ध दोष
१० " रवि धनि. क्षीणचन्द्र दोषः

अग्रे १४ मार्च गुरु से वर्षान्त तक मीन (मल) मास दोषः

उपनयन मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

मास	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	शु.	३ गुरौ	२६ अप्रै.	रोहि.	अभिजिति
वैशा.	शु.	११ गुरौ	३ मई	पू.फा.	अभिजिति
वैशा.	शु.	१२ शुक्रे	४ मई	उ.फा.	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	२ बुधे	९ मई	अनु.	लग्न कर्क
ज्ये.	शु.	३ शुक्रे	२५ मई	मृग.	स्टैं.टा. ९।०८ तक
माघ	शु.	२ गुरौ	१४ फर.	पू.भा.	अभिजिति
माघ	शु.	३ शुक्रे	१५ फर.	उ.भा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	१ गुरौ	२८ फर.	उ.फा.	अभिजिति

गृहारम्भ मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

मास	पक्ष	ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
ज्ये.	कृ.	२ बुधे	९ मई	अनु.	लग्न वृष
ज्ये.	शु.	१० शुक्रे	१ जून	हस्ते	लग्न वृष उत्तरार्ध
श्राव.	शु.	११ चन्द्रे	३० जुला.	अनु.	लग्न सिंह
भाद्.	कृ.	२ चन्द्रे	६ अग.	शत.	लग्न सिंह व अभि.
फाल्गु.	कृ.	१ गुरौ	२८ फर.	उ.फा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	२ शुक्रे	१ मार्च	हस्त	अभिजिति आवश्यके

अन्य गृहारम्भ मुहूर्त्ताः (अति आवश्यकता में)

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	कृ.	११	गुरौ	१९ अप्रै.	शत.	अभिजिति
वैशा.	शु.	३	गुरौ	२६ अप्रै.	रोहि.	अभिजिति
वैशा.	शु.	७	चन्द्रे	३० अप्रै.	पुष्य	लग्न वृष
वैशा.	शु.	१३	शनौ	५ मई	हस्त	अभिजिति-पादवेधात्शुक्र वेधाऽभाव:
ज्ये.	कृ.	१०	शुक्रे	१८ मई	उ.भा.	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	११	शनौ	१९ मई	रेवती	अभिजिति
ज्ये.	शु.	१	गुरौ	२४ मई	मृग.	अभिजिति
श्राव.	शु.	५	बुधे	२५ जुला.	हस्त	लग्न कन्या स्टैं.टा. ११।०५ बाद
श्राव.	शु.	६	गुरौ	२६ जुला.	हस्त	लग्न सिंह
भाद्र.	कृ.	५	गुरौ	९ अग.	उ.भा.	लग्न सिंह
भाद्र.	कृ.	११	बुधे	१५ अग.	मृग.	लग्न सिंह, कन्या
भाद्र.	शु.	५	गुरौ	२३ अग.	चित्रा	अभिजिति
भाद्र.	शु.	६	शुक्रे	२४ अग.	स्वाति	लग्न सिंह
भाद्र.	शु.	१२	गुरौ	३० अग.	उ.षा.	अभिजिति
द्वि.आश्वि.	शु.	२	गुरौ	१८ अक्टू.	स्वा.	स्टैं.टा. १०।३८ तक
द्वि.आश्वि.	शु.	३	शुक्रे	१९ अक्टू.	अनु.	अभिजिति
द्वि.आश्वि.	शु.	१०	शुक्रे	२६ अक्टू.	धनि.	अभिजिति
द्वि. आश्वि.	शु.	१२	चन्द्रे	२९ अक्टू.	उ.भा.	अभिजिति
कार्ति.	कृ.	१२	चन्द्रे	१२ नवं.	हस्त	अभिजिति
मार्ग.	कृ.	१०	चन्द्रे	१० दिसं.	चित्रा	अभिजिति
माघ	शु.	३	शुक्रे	१५ फर.	उ.भा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	१३	चन्द्रे	११ मार्च	धनि.	अभिजिति

गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	शु.	७	चन्द्रे	३० अप्रै.	पुष्य	स्टैं.टा. ११।४२ तक
वैशा.	शु.	१२	शुक्रे	४ मई	उ.फा.	अभिजिति
श्रावण	शु.	६	गुरौ	२६ जुला.	चित्रा	अभि.-आवश्यके
श्राव.	शु.	११	चन्द्रे	३० जुला.	अनु.	लग्न सिंह
कार्ति.	शु.	८	चन्द्रे	२३ नवं.	शत.	अभिजिति
कार्ति.	शु.	११	चन्द्रे	२६ नवं.	उ.भा.	स्टैं.टा. ११।५१ तक
मार्ग.	कृ.	८	शनौ	८ दिसं.	उ.फा.	लग्न धनु स्टैं.टा. ९।२६ बाद

अन्य गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः (अति आवश्यकता में)

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	कृ.	८	चन्द्रे	१६ अप्रै.	उ.षा.	स्टैं.टा. १०।१७ तक
वैशा.	शु.	३	गुरौ	२६ अप्रै.	रोहि.	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	२	बुधे	९ मई	अनु.	ल.चिं.
ज्ये.	कृ.	१०	शुक्रे	१८ मई	उ.भा.	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	११	शनौ	१९ मई	रेवती	अभिजिति
ज्ये.	शु.	१	गुरौ	२४ मई	मृग.	अभिजिति
ज्ये.	शु.	३	शुक्रे	२५ मई	मृग.	स्टैं.टा. ९।०८ तक
श्राव.	कृ.	२	शनौ	७ जुला.	उ.षा.	अभिजिति पादवेधात् बुध गुरुवेधाऽभाव:
श्राव.	कृ.	६	गुरौ	१२ जुला.	उ.भा.	लग्न मिथुन
श्राव.	कृ.	७	शुक्रे	१३ जुला.	रेव.	अभिजिति
श्राव.	शु.	५	बुधे	२५ जुला.	उ.फा.	लग्न सिंह
माघ	शु.	३	शुक्रे	१५ फर.	उ.भा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	१	गुरौ	२८ फर.	उ.फा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	१३	चन्द्रे	११ मार्च	धनि.	अभिजिति

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	कृ.	७	रवौ	१५ अप्रै.	उ.षा.	अभिजिति
वैशा.	कृ.	८	चन्द्रे	१६ अप्रै.	उ.षा.	स्टैं.टा. १०।१७ तक
वैशा.	शु.	३	गुरौ	२६ अप्रै.	रोहि.	अभिजिति
वैशा.	शु.	७	चन्द्रे	३० अप्रै.	पुष्य	लग्न मिथुन
वैशा.	शु.	१२	शुक्रे	४ मई	उ.फा.	अभिजिति
वैशा.	शु.	१३	शनौ	५ मई	हस्त	अभिजिति-पादवेधात्शुक्र वेधाऽभाव:
ज्ये.	कृ.	२	बुधे	९ मई	अनु.	ल.चिं.
ज्ये.	कृ.	६	रवौ	१३ मई	उ.षा.	अभिजिति
ज्ये.	शु.	१	गुरौ	२४ मई	मृग.	अभिजिति क्षय तिथि दोष: आवश्यके
ज्ये.	शु.	३	शुक्रे	२५ मई	मृग.	स्टैं.टा. ९।०८ तक
ज्ये.	शु.	५	रवौ	२७ मई	पुष्य	अभिजिति
ज्ये.	शु.	१०	शुक्रे	१ जून	हस्त	लग्न वृष
माघ	शु.	३	शुक्रे	१५ फर.	उ.भा.	अभिजिति
माघ	शु.	६	चन्द्रे	१८ फर.	अश्वि.	अभिजिति
माघ	शु.	१२	रवौ	२४ फर.	पुन.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	१	गुरौ	२८ फर.	उ.फा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	२	शुक्रे	१ मार्च	हस्त	अभिजिति क्षय तिथि दोष: आवश्यके

तामसी देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
कार्ति.	शु.	११	चन्द्रे	२६ नवं.	उ.भा.	स्टैं.टा. ११।५१ तक
कार्ति.	शु.	१३	बुधे	२८ नवं.	अश्वि.	लग्न धनु
मार्ग.	कृ.	२	रवौ	२ दिसं.	मृग.	अभिजिति
मार्ग.	कृ.	८	शनौ	८ दिसं.	उ.फा.	अभिजिति स्टैं.टा. १२।१९ तक

कर्णविध-मुण्डन संस्कार मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	कृ.	११	गुरौ	१९ अप्रैल	शत.	अभिजिति
वैशा.	शु.	७	चन्द्रे	३० अप्रैल	पुष्य	स्टैं.टा. ११।४२ तक
ज्ये.	कृ.	२	बुधे	९ मई	अनु.	स्टैं.टा. १३।५४ तक
ज्ये.	कृ.	१३	चन्द्रे	२१ मई	अश्वि.	अभिजिति
ज्ये.	शु.	१	गुरौ	२४ मई	मृग.	अभिजिति
ज्ये.	शु.	३	शुक्रे	२५ मई	मृग.	स्टैं.टा. ९।०८ तक
कार्ति.	शु.	१३	बुधे	२८ नवं.	अश्वि.	लग्न धनु
मार्ग.	कृ.	१०	चन्द्रे	१० दिसं.	चित्रा	स्टैं.टा. ८।१६ बाद
फाल्गु.	कृ.	२	शुक्रे	१ मार्च	हस्त	अभिजिति क्षय तिथि दोष: आवश्यके
फाल्गु.	कृ.	१३	चन्द्रे	११ मार्च	धनि.	अभिजिति

विपणि व्यापार प्रा. मुहूर्त्ताः सं. २०५८ वि.

चैत्र शु. ९ चन्द्रे २ अप्रैल रामनवमी अनबूझ मुहूर्त

मास	पक्ष	ति.	वार	ता. मास	नक्षत्र	लग्न व अन्य विवरण
वैशा.	कृ.	१३	शनौ	२१ अप्रै.	उ.भा.	अभिजिति
वैशा.	शु.	३	गुरौ	२६ अप्रै.	रोहि.	अभिजिति
वैशा.	शु.	७	चन्द्रे	३० अप्रै.	पुष्य	लग्न मिथुन
वैशा.	शु.	१२	शुक्रे	४ मई	उ.फा.	अभिजिति
वैशा.	शु.	१३	शनौ	५ मई	हस्त	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	२	बुधे	९ मई	अनु.	लग्न कर्क
ज्ये.	कृ.	११	शनौ	१९ मई	रेवती	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	१२	रवौ	२० मई	रेवती	स्टैं.टा. ११।३९ तक
ज्ये.	कृ.	१२	रवौ	२० मई	अश्वि.	अभिजिति
ज्ये.	कृ.	१३	चन्द्रे	२१ मई	अश्वि.	स्टैं.टा. १०।२२ तक
ज्ये.	शु.	१	गुरौ	२४ मई	रोहि.-मृग	लग्न कर्क व अभि.
ज्ये.	शु.	३	शुक्रे	२५ मई	मृग.	स्टैं.टा. ९।०८ तक
ज्ये.	शु.	५	रवौ	२७ मई	पुष्य	अभिजिति
ज्ये.	शु.	९	गुरौ	३१ मई	उ.फा.	स्टैं.टा. १२।३० बाद
ज्ये.	शु.	१०	शुक्रे	१ जून	हस्त	स्टैं.टा. १०।०० तक
आषा.	शु.	१२	चन्द्रे	२ जुला.	अनु.	अभिजिति
श्राव.	कृ.	२	शनौ	७ जुला.	उ.षा.	स्टैं.टा. १०।४८ से १२।४९ तक
श्राव.	कृ.	७	शुक्रे	१३ जुला.	रेव.	स्टैं.टा. ११।३७ तक
श्राव.	कृ.	१२	बुधे	१८ जुला.	मृग.	लग्न कन्या
श्राव.	शु.	५	बुधे	२५ जुला.	उ.फा.	स्टैं.टा. ८।२३ तक
श्राव.	शु.	६	गुरौ	२६ जुला.	हस्त-चित्रा	अभिजिति
श्राव.	शु.	१०	रवौ	२९ जुला.	अनु.	अभिजिति
भाद्र.	कृ.	५	गुरौ	९ अग.	उ.भा.-रेव.	अभिजिति
भाद्र.	कृ.	७	शनौ	११ अग.	अश्वि.	स्टैं.टा. १२।४९ से १३।४७ तक
भाद्र.	शु.	४	बुधे	२२ अग.	गणेश चतुर्थी	स्टैं.टा. ७।४६ तक
भाद्र.	शु.	५	गुरौ	२३ अग.	चित्रा	अभिजिति
भाद्र.	शु.	१२	गुरौ	३० अग.	उ.षा.	अभिजिति
द्वि. आश्वि.	शु.	१	बुधे	१७ अक्टू.		नवरात्रा स्थापना अनबूझ मुहूर्त
द्वि. आश्वि.	शु.	३	शुक्रे	१९ अक्टू.	अनु.	अभिजिति
द्वि. आश्वि.	शु.	१०	शुक्रे	२६ अक्टू.		विजयादशमी अनबूझ मुहूर्त
द्वि. आश्वि.	शु.	१२	चन्द्रे	२९ अक्टू.	उ.भा.	अभिजिति
द्वि. आश्वि.	शु.	१५	गुरौ	१ नवं.	अश्वि.	स्टैं.टा. ८।०३ तक
कार्ति.	कृ.	२	शनौ	३ नवं.	रोहि.	अभिजिति
कार्ति.	कृ.	१२	चन्द्रे	१२ नवं.	हस्त	अभिजिति
कार्ति.	शु.	१०	रवौ	२५ नवं.	उ.भा.	स्टैं.टा. १०।१७ बाद
कार्ति.	शु.	१३	बुधे	२८ नवं.	अश्वि.	अभिजिति
मार्ग.	कृ.	१	शनौ	१ दिसं.	रोहि.	लग्न मकर
मार्ग.	कृ.	२	रवौ	२ दिसं.	मृग.	अभिजिति
मार्ग.	कृ.	५	बुधे	५ दिसं.	पुष्य	लग्न मकर
मार्ग.	कृ.	९	रवौ	९ दिसं.	हस्त	स्टैं.टा. १०।१५ बाद
माघ	शु.	३	शुक्रे	१५ फर.	उ.भा.	अभिजिति
माघ	शु.	५	रवौ	१७ फर.	रेव.	अभिजिति
माघ	शु.	१०	शुक्रे	२२ फर.	मृग.	लग्न मीन व अभि.
माघ	शु.	१३	चन्द्रे	२५ फर.	पुष्य	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	१	गुरौ	२८ फर.	उ.फा.	अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	२	शुक्रे	१ मार्च	हस्त	अभिजिति

लाभकारी नवग्रह यंत्र

अथ नव ग्रह-शान्ति स्तोत्रम्

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्। ग्रह शांति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे॥
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनैधूपैनैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च। वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टिजिनेशिनां॥
विमलानन्त धर्मेश, शांति कुन्थुनमेस्तथा। वर्धमानजिनेन्द्रस्य, पादपद्मंबुधोनमेत्॥
ऋषभाजितसुपार्श्वाः साभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः॥
सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चरे। नेमनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः।
जन्म लग्नं च राशि च, यदि पीडयति खेचराः। तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान्जिनान्॥
आदित्य सोममंगल, बुधगुरु शुक्रे शनिः (?) राहु केतु मेरवाग्रे या जिन पूजाविधायकः।
जिनान नमोग्न तपोहि, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे। नमस्कारशतं भक्त या जपेद्दृष्टोत्तरशतं॥
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुत केवली। विद्याप्रसादतः पूर्व, ग्रह शांति विधिः कृत्ता॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः। विपत्तितो भवेच्छांतिः, क्षेमं तस्य पदे पदे॥

नवग्रहों के जाप्य

१. सूर्य्य महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमो भगवते श्रीमते पद्मप्रभु तीर्थ कराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंब वर्ग) सर्व दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं कुरु कुरु सर्व शांति कुरु कुरु सर्व समृद्ध कुरु-कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निवारणं कुरु कुरु धन धान्य समृद्धि कुरु कुरु काम मांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट्॥७००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ जाप्य ७०००॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

२. सोम महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभु तीर्थकराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: सोम महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ ११००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्रों श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ जाप्य १००००॥

३. मंगल महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्य तीर्थकराय षण्मुखयक्ष गांधारीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: कुंज महाग्रह ममदुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १०००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ आँ क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ १०००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

४. बुध महाग्रह मंत्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्ली तीर्थकराय कुबेरयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १४००० जाप्य॥

२. **मध्यम मन्त्र:**-ॐ ह्रीं क्रौं आँ श्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनंतधर्म शांति कुन्थअरह नमिवर्धमान अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ८००० जाप्य॥

३. **लघु मन्त्र:**-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

५. गुरु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रों ह्रीं ह: गुरु महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १९००० जाप्य॥

२. **मध्यम मन्त्र:**-ॐ आँ क्रौ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक ऋषभ अजितसंभवअभिनंदन सुमति सुपार्श्वशीतल श्रेयांस अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥१९००० जाप्य॥

३. **लघु मन्त्र:**-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थकराय अजितयक्ष महाकालीक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: शुक्र महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं, फट्॥१६००० जाप्य॥

२. **मध्यम मन्त्र:**-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ १०००० जाप्य॥

७. शनि महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रतीर्थकराय वरुण यक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं: ह: शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारण सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ २३००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्रौं ह: श्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २३००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

८. राहु महाग्रह मंत्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थ कराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं: ह: राहुमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १८००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय नमः शांति कुरु कुरु स्वाहा ॥ १८००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

९. केतु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु फट् ॥ ७००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ७००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

मास पक्ष ति वार ... मास नक्षत्र लग्न व अन्य विवरण | मास पक्ष ति ...

पै. रोहि. अभिजिति

हमारे कार्यालय से हाथ द्वारा अपनी शुद्ध जन्म-पत्रिका बनवाकर लाभ उठाएं

हमारे यहां जन्म-पत्रिकाएं एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाये जाते हैं। जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। जैसे–शिक्षा, सरकारी, नौकरी, निजी व्यवसाय, विदेश यात्रा का योग, भाग्योदय तथा दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा। इत्यादि प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में विस्तार से लिखे होते हैं।

जन्म-पत्रिकाओं के विभिन्न प्रकार व उनकी फीस

१. **टेवा (टिपड़ा)**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशि चक्र, लग्न कुण्डली का विस्तार से वर्णन होता है। रु. ५१/-

२. **वर-वधू-जन्म पत्रिका (कुण्डली)**—मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु. ५१/-

३. **जन्माक्षर पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली, चन्द्र-कुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अति संक्षिप्त फल का वर्णन होता है। रु. १०१/-

४. **जन्माङ्क पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशि चक्र, लग्नकुण्डली, चन्द्र कुण्डली के साथ सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, विंशोत्तरी महादशा के साथ-साथ अन्तर्दशा और साधारण भविष्य फल का विस्तार से वर्णन होता है। रु. २०१/-

५. **षट्वर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियां, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि षट्वर्ग, विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा एवं विस्तार से भविष्यफल का वर्णन होता है। रु. ३५१/-

६. **सप्तवर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण, राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियां, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि कुण्डलियां, पंचधामैत्रि कोष्टक आदि विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। रु. ५५१/-

७. **वर्षफल**—हमारे यहां वर्षफल विस्तार से बनाये जाते हैं। जिसमें महीनों के क्रम से फलादेश हाथ से लिखा होता है। वर्षफल की फीस रु. २५१/-

परेशानियों से छुटकारा पाइये

- **साढ़ेसाती नाशक यन्त्र**—जिन बन्धुओं पर शनि की साढ़ेसाती ढैया चल रही हो वे हमारे कार्यालय द्वारा विधि पूर्वक तैयार किए इस यंत्र को धारण करें। अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगा। चालीस दिन के शनि के कुप्रभाव से राहत मिलेगी।
- **नवग्रह शान्ति यन्त्र**—यह यन्त्र नवग्रहों को शान्ति लिए तत्काल प्रभावी सिद्ध होगा। इसको धारण करने से सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। इस यत्र की दक्षिणा है— १५१/-
- **सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र**—इसके धारण करने से मुकद्दमा, परीक्षा, व्यापार, नौकरी आदि सब कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। दक्षिणा है— ५०१/-
- **लक्ष्मी सिद्धि यन्त्र**—इस यंत्र के धारण करने से व्यापार में सफलता, नौकरी में उन्नति तथा धन की कमी दूर होती है। दक्षिणा है— १५१/-

नोट—कृपया यन्त्र मंगवाने वालों से अनुरोध है कि वे हमें पूरी राशि अग्रिम भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा।

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र की अनुपम एवं उत्कृष्ट भेंट-

सन् १९०० ई. से २००० तक का सम्पूर्ण पंचांग

गत कई वर्षों से भारत के प्रमुख ज्योतिर्विदों द्वारा कड़े परिश्रम से तैयार किया गया उपरोक्त ग्रन्थ ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसका सम्पादन कई ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकों के रचयिता पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी.ए. प्रभाकर साहित्य-रत्न, ज्योतिष वाचस्पति ने अपनी देखरेख में बड़े सुन्दर और सुचारु ढंग से किया है।

विशेषताएं: — महादशा सारिणी, अन्तर्दशा सारिणी, प्रत्यन्तर दशा सारिणी व सूक्ष्मदशा सारिणी सहित विशिष्ट संस्करण सन् १९०० से २००० ई. तक के सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि के साप्ताहिक स्पष्ट तथा चन्द्रमा की दैनिक स्पष्ट, राहु, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो के मासिक स्पष्ट, वक्री-मार्गी, चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण, संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, लघुरिक्त गणित, ० से ६३ उत्तर एवं ० से २५ दक्षिण अक्षांश पर प्रति ६ दिन का सूर्योदय तथा सूर्यास्त का समय, भारत के प्रमुख नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त का समय, चन्द्रमा के राशि-अंशों से विशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना, १९, २१, २३, २५, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२ अंशाशों की लग्न सारिणी, भारतीय पद्धति से तिथि-योग-वार-करण-सन्-सम्वत-मास-पक्ष एवं नक्षत्र का ज्ञान व मान निकालना, सूर्य व चन्द्र स्पष्ट करने की सारिणी, सांपातिक काल का सम्पूर्ण गणित-जिसकी सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है-८ उदाहरण सहित।

इस अमूल्य ज्योतिष ग्रन्थ की सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जन्म-कुण्डली बनाने के लिये ज्योतिषियों को जिन बातों की आवश्यकता होती है, वे सभी इसमें उपलब्ध हैं। इस संस्करण में सूक्ष्म दशा सारिणी को १६ पेजों में बहुत सुन्दर ढंग से दिया गया है।

इस ग्रन्थ में कुछ और विषय बढ़ाकर बहुत उपयोगी बना दिया है। इसके चतुर्थ संस्करण को बढ़िया कागज पर अति सुन्दर और सुचारु रूप से छापा गया है।

आवश्यक नोट— ४०१/- रु. की राशि अग्रिम भेजने पर डाक व्यय नहीं लगेगा जोकि लगभग ३५/- रु. होता है। अत: लगभग ३५/- रु. की छूट रहेगी।

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४